Nagari-pracharini Granthmala Series No. 4

THE PRITHVÍRÁJ RÁSO

OF

CHAND BARDÁÍ,

VOL I

EDITED

BY

Mohanlal Visnulal Pandia, Radha Krishna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A

CANTOS I. TO XI.

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

भाग पहिला

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व-१ से ११ तक।

PRINTED AT THE MEDICAL HALL PRESS, BENARES

1904

मूल्य ४)

[Price Rs. 1

सूचीपत्र।

(१) आदि पर्व्व।

(पृष्ठ १ से १८० तक)

(२) दसम समय ।

(पृष्ठ १८१ से २५४ तक)

(३) दिल्ली किल्ली कथा ।

(पृष्ठ २५५ से पृष्ठ २७४ तक)

---

(४) लोहानो आजान बाहु समय।

(पृष्ठ २७५ से पृष्ठ २८० तक)

---

(५) कन्हपट्टी समय।

(पृष्ठ २८१ से पृष्ठ २९८ तक)

---

[६] आखेटक वीर बरदान वर्णन समय ।

(पृष्ट २९९ से पृष्ट ३२८ तक)

---

(४) लोहानो आजान बाहु समय ।

(पृष्ठ २७५ से पृष्ठ २८० तक)

---

(५) कन्हपट्टी समय ।

(पृष्ठ २८१ से पृष्ठ २९८ तक)

---

[६] आखेटक वीर वरदान वर्णन समय ।

(पृष्ट २९९ से पृष्ट ३२८ तक)

---

[७] नाहर राय कथा वर्णन ।

(पृष्ठ ३२९ से पृष्ठ ३६८ तक)

[८] मेवाती मुगल कथा ॥

(९) हुसेन कथा ॥

पृष्ठ

(१०) आखेटक चूक वर्णन ।

(पृष्ठ ४२५ से ४३८ तक)

---

[११] चित्ररेखा समय ।

(पृष्ठ ४३९ से ४४५ तक)



पृथ्वीराजरासो।

अथ आदि पर्व्व लिख्यते।

(पहिला समय)

आदिदेव, गुरु, वाणी, लक्ष्मीश, सुरनाथ और सर्वेश का मंगलाचरण ॥

साटक-ॐ॥ आदी देव प्रनम्य नम्य गुरयं, वाणीय वंदे पयं।
सिष्टं धारन धारयं वसुमती, लच्छीस चर्नाश्रयं॥
तं गुं तिष्टति ईस दुष्ट दहनं, सुर्नाथ सिद्धिश्रयं।
थिर्चर्जंगम जीव चंद नमयं, सर्वेस वर्द्धामयं॥ छंद ॥ १ ॥ रूपक ॥ १ ॥

---

१ यह मंगलाचरण जिस छंद में चंद कवि ने कहा है उसका नाम उसने साटक प्रयोग किया है और इस नाम से यह छंद आज कल जो छंद ग्रंथ प्रायः उपलब्ध हैं उनमें नहीं मिलता। यद्यपि इसकी परीक्षा करने से वह निःसंदेह शार्दूलविक्रीडित् नामक छंद मालूम होता है परंतु जब तक उसका लक्षण अथवा नामान्तर होने का कोई प्रमाण नहीं दिखलाया जाय तब तक पुरातत्त्ववेत्ता विद्वान संतुष्ट नहीं हो सकते। अतएव बहुत खोज करने से गुजराती भाषा के काव्यों में इस नाम के छंद मिले और The Revd Joseph Van S Taylor साहब अपने गुजराती भाषा के व्याकरण के पद्यबंध अथवा छंदविन्यास नामक प्रकरण के पृष्ठ २२३ में उसको साटक नाम से कुल ३८ अक्षर के दो तुक का छंद होना लिखते हैं कि जिसके प्रत्येक तुक में १२+७=१९ अक्षरें होते हैं। इसके सिवाय प्राकृतभाषा के किसी छंदग्रंथ से अनुवादित होकर सं० १९०६ में जो एक रूपदीप पिंगल नामक छंद ग्रंथ बना है उसमें केवल ५२ छंदों के लक्षण लिखे हैं। उसमें भी साटक का यह लक्षण लिखा है-

साटक छंद लक्षण।

पाले द्वादस अंक आद संग्या, मात्रा लिखो सागरे।
दुज्जी दी करिके कलाष्ठ दस दी, अष्टौ विरामाधिकं॥ १॥
अंते गुर्व विचार धार सब के, औरों कछू भेद ना।
तीसों मत्त इकीस अंक धरने, ऐसो भनैं साटिकं॥

हम इस साटक छंद को पिंगल छंद सूत्रम् नामक ग्रंथ में कहे शार्दूलविक्रीडित् छंद का नामान्तर होना मानते हैं और उसका लक्षण बहुत प्राचीन अमर और भरत कृत छंद ग्रंथों में अवश्य होना अनुमान करते हैं क्योंकि चंद कवि ने भी अपने इसी ग्रंथ के आदि पर्व के रूपक ३१ में जो कुछ कहा है उससे स्पष्ट मालूम होता है कि उसने अपने इस महाकाव्य की रचन में पिंगल अमर और भरत के छंद ग्रंथों का आश्रय लिया है॥

इस छंद के लक्षण का पता लगा कर अब हम इस रूपक के पाठ को शोधते हैं। उस की पहिली पंक्ति का पाठ A, S. B की छापी हुई पुस्तक की Fasciculus I जिस को Mr John Beames साहब ने शोध कर छपाया है उस में "**आदि प्रनस्य नस्य गुरयं वानीय वंदे पयं** ऐसा पाठ है और जो Mr F S Growse, C S, M A ने रासो के प्रारंभ के छंदो का अनुवाद करने में पाठ लिखा है वह भी ऐसा ही है। निदान साटक के लक्षण के अनुसार इस तुक में १२+७=१९ अक्षर होने चाहिए परंतु उस में १०+७=१७ अक्षर हैं। अब यह अत्यावश्यक है कि घटते हुए दो अक्षरों का पता लगाया जाय। यह कल्पना करनी कि चंद कवि अथवा उसके नाम से कोई यह जाली ग्रंथ बनानेवाला छंद ग्रंथों में भले प्रकार व्युत्पन्न न होने के कारण मूल में ही भूल गया है सर्वरीत्या अयोग्य और आश्चर्यदायक बात है। क्योंकि वर्तमान् पृथ्वीराजरासो का बिगड़ा हुआ काव्य भी अपने कर्त्ता का एक बड़ा व्युत्पन्न कवि होना स्वयम् स्पष्ट प्रकाश करता है अतएव उसका ऐसी भूलों का करना निर्मल प्रज्ञावाले विद्वानो के ध्यान में सर्वथा असंभव है।

इस प्रथम तुक में जो दो अक्षर घटते हैं वे पंक्ति भर में किस स्थान में लेखक अथवा शोधक की भूल से लोप हो गए हैं इस बात की शोध लेने के लिये यह एक बड़ी सरल युक्ति है कि हम इस तुक के अर्थ को ध्यान में लेकर उसके वाक्यखंडो को पृथक् पृथक् कर दें कि जिस से अपूर्ण वाक्यखण्ड अपने आप हम को घटते हुए अक्षर बतला देवे जैसे कि **वानीय वंदे पयं** और **नस्य गुरयं** और **आदि प्रनस्य** ऐसा करने से हम को मालूम हो गया कि आदि **प्रनस्य** वाक्य खंड अपूर्ण है और उसमें कोई संज्ञावाचक शब्द घटता है। अब विचारना चाहिए कि वह संज्ञा वाचक शब्द **आदि** शब्द के पहिले घटता है अथवा पीछे। जो हम **आदि** शब्द के पहिले उस का होना मानें तो "**आदिः पदान्ते गण सूचकः**" से दोष प्राप्त होकर हमारी कल्पना अन्यथा हो जाती है अतएव मानना चाहिए कि **आदि** शब्द के पीछे कोई संज्ञावाचक शब्द है क्योंकि ऐसा मानने में **आदि** शब्द उस शब्द के साथ मिलकर हम को कर्म्मधारय समास का होना स्पष्ट विदित करता है। जब कि यह निश्चय हो गया कि **आदि** शब्द के पीछे अर्थात् **आदि** और **प्रनस्य** के बीच में कोई संज्ञावाचक शब्द गया है तब हम को फिर सूक्ष्म विचार में निमग्न होना चाहिए कि वह संज्ञावाचक शब्द कौन सा है कि जिसको चंद कवि ने प्रयोग किया था। हम निःसंदेह कल्पना करते हैं कि यहां देव शब्द था अर्थात् **आदी देव** ऐसा पाठ चंद ने प्रयोग किया था क्योंकि प्रथम तो "**आदिः कारणं स च देवश्चेति कर्म्मधारयः**" तथा **जगदुपादानादि गुणवान् नारायणः**" दूसरे **आदिदेव** शब्द हमारी संस्कृतभाषा के प्रामाणिक ग्रंथों में अनेकबार। तथा ईश्वर की स्तुति तथा ईश्वर के ध्यान के वाक्यों में बहुधा प्रयोग किया गया है कि हम उदाहरण के लिये केवल दो ही प्रमाण यहां दिखाते हैं जैसे—"**परं ब्रह्म परं धाम। पवित्रं परमं भवान्॥ पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुं**" तथा "**त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानं**"॥ तीसरे चंद कवि ने स्वयम् अपने इस महाकाव्य में इस **आदि देव** शब्द का प्रयोग अनेक स्थानों में किया है जैसा कि: "**प्रनम्य प्रथम मम आदि**

देव ऊँकार शब्द जिन करि अछेव"॥ चौथे इस तुक में प्रथम मगण होने के कारण तीनो अक्षर दीर्घ होने चाहिए अतएव कवि ने आदी देव ऐसा पाठ कहा है आदि शब्द संस्कृत में इकारान्त है परंतु उसे कवि ने यहां मगण होने के कारण के अतिरिक्त गानविद्या संबंधी दोष दूर करने के अभिप्राय से भी ईकारान्त किया है क्योंकि चंद गानविद्या में भी निपुण था और साटक के गाने में तुक की पहिली चौथी मात्रा पर ताल आता है। यद्यपि हमारी कल्पना तो यह है परंतु जब हमने इस ग्रंथ का कुछ भाग कोटा राज्य के विद्वान कविराज श्री चंडीदानजी से पढ़ा था तब उन्हो ने यह बतलाया था कि आदि के पहिले ओ३म् शब्द का प्रयोग कवि चंद ने किया था और उसका अर्थ आदि ओ३म् प्रनम्य अर्थात् "पहिले ओंकार को नमन करके" किया था । यद्यपि यह प्रयोग भी कुछ बैठ जाता है और ठीक सा मालूम होता है और जितनी पुस्तकें रासो की हमारे देखने में आई हैं उनमें प्रायः ऐसा ही पाठ मिलता है परंतु हम इसकी अपेक्षा अपनी कल्पना को अधिक बलवान और युक्त मानते हैं और आशा करते हैं कि यदि वे अब विद्यमान होते तो हमारी इस कल्पना को प्रसन्नतापूर्वक मान लेते । यदि कोई ओ३म् आदि प्रनम्य ऐसा भी पाठ माने तथापि कुछ हानि नहीं है । और जब तक कि किसी बहुत प्राचीन पुस्तक में हमारे इस मानने के विरुद्ध कोई अन्य पाठ न मिल जावे तब तक हम इस को मानना अयोग्य नहीं समझते हैं ॥

अब दूसरी पंक्ति का पाठ "सिष्टं धारन धारयं वसुमती लच्छीस चरनाश्रयं" है। इस १२+८=२० अक्षर हैं कि यहां चरनाश्रयं शब्द को हमने चर्नाश्रयं किया है क्योंकि कोई छंद गान से खाली नहीं है और साटक की ध्वनि के अनुसार उच्चारण में यहां रकार स्वर रहित हो जाता है और जैसा उच्चारण और गान में रूप हो वैसा काव्य में लिखने में भी कोई दोष नहीं है। जो कवि गान के नियमो से अपरचित हैं उनके काव्य में ऐसे स्थलो में अनेक दोष रह जाते हैं क्योंकि गान छंद के लिये एक कसौटी है और ऐसे ही मौकों को कवि का अधिकार अर्थात् Poetical Licence कहते हैं। कोई कोई विद्वान कवि के अधिकार की छूट अर्थात् Poetical Licence को दोष मानते हैं परंतु वह एक भ्रम है क्योंकि सस्वर अक्षर का खोडा कर देना और खोड़े को सस्वर कर देना व्याकरणादि भिन्न शास्त्रों में दोष समझना चाहिए परंतु छंद रचना और गान में तो यह दोष नहीं कहाता है देखो चंद के इन वचनो के भीतरी आशयों से भी हम यही अनुमान कर सकते हैं—

लहु गुर मंडित खंडियहि । पिंगल अमर भरत्थ ॥ ३० ॥ १
चरन नीम अच्छिर सुरग । पाठलहु गुरु विधि मंडिय ॥
सुर विकास चारी सु मुख्य । उक्ति रस गौरव नि छंडिय ॥ ४० ॥ १

तीसरी पंक्ति के पाठ तम गुन तिपृति ईस दुष्ट दहनं । सुरनाथ सिद्धिश्रयं में १४+८=२२ अक्षर हैं। इनमें ऊपर कही हुई युक्तियो के सिवाय थोड़ा सा और ध्यान देने से ज्ञात हो सकता है कि रूपकर्त्ता ने तम गुन और सुरनाथ पाठ नहीं प्रयोग किये थे किन्तु जैसे हम ने अनुमान कर शुद्ध किये हैं तं गुं और सुर्नाथ क्योंकि प्रथम तो इस साटक छंद में मगण होने के कारण तं और गुं ही होने चाहिए और दूसरे चंद के ऐसे प्रयोग इस काव्य में बहुत से स्थलो पर देख पड़ेंगे । यह भी हमारे देखने में आवेगा कि त्वम् और अहम् के स्थान में तं और हं जैसे प्रयोग चंद ने किए हैं । इसमें हम को कुछ भी आश्चर्य नहीं करना चाहिए क्योंकि चंद के इस नीचे लिखे वाक्य से हम अच्छी तरह समझ सकते हैं कि उस ने अपने इस महाकाव्य की भाषा में षट भाषा और पुरान की भाषा का आश्रय लिया है—

श्लोक ॥ उक्ति धर्म विशालस्य । राजनीति नवं रसं ।
षट भाषा पुराणं च । कुरानं कथितं मया ॥ १ ॥

अब शेष चौथी पंक्ति का पाठ "थिर चर जंगम जीव चंद नमयं सर्वेस वरदा मयं" में १४+८=२२ अक्षर हैं। इसके स्थान में जो यह पाठ "थिर्चर्जंगम्म जीव चंद नमयं सर्वेस वर्दासयं" शुद्ध किया गया है उसके लिये ऊपर कही हुई युक्तियों से ही हमारा शोधन करना ठीक मालूम हो सकता है। इसमें इतना और भी आवश्यक है कि सोसाईटी की मुद्रित की हुई पुस्तक में जो **चंदनमयं** पदच्छेद किया है वह अयुक्त है और मिस्टर एफ॰ ग्राउज साहब ने जो **चंद** और **नमयं** पदच्छेद किए हैं वे ठीक हैं और हम भी मिस्टर ग्राउज के पदच्छेद से सम्मत हैं॥

जो पाठ हमने जिस रीति से इस रूपक में शुद्ध किए हैं वे अथवा वैसे ही भी पाठ जो कहीं आगे इस ग्रंथ भर में आवेंगे तो हम उन पर सर्वत्र टिप्पण नहीं करेंगे किन्तु वहां का मूल पाठ हमारे यहां पर वर्णन किए शोधन के प्रकार के अनुसार शुद्ध रहैगा। पाठक महाशय इन ही नियमों से उन पाठों को सिद्ध कर समझ लें अर्थात् जिस नियम को एक स्थान पर टिप्पण में वर्णन कर देंगे वह अन्यत्र नहीं कहा जावेगा। किन्तु जहा कोई नवीन प्रयोग आवेगा वहा उसका वर्णन कर दिखावेंगे ॥

जैसे चंद के प्रयोग किए हुए छंदों के नाम और उनके लक्षणों के शोध करने में पुरातत्त्ववेत्ताओं को परिश्रम पड़ता है वैसे ही उसके इस महाकाव्य के अर्थ लगाने में भी अनेक प्रकार की अड़चनें उपस्थित होती हैं। यद्यपि हमारा मुख्य काम इस ग्रंथ के मुद्रित करने में केवल इतना ही है कि उसके मूलपाठ को सार्थक शोध दें परंतु यह महाकाव्य वर्तमान समय में ऐसी बिगड़ी हुई दशा में उपस्थित है कि जो उस पर इतना परिश्रम न किया जाय कि जितना हम यह करते हैं तो हमारा किया हुआ शोधन पुरातत्त्ववेत्ता विद्वानों को भली भांति संतुष्ट नहीं कर सकता। अतएव हम चंद के काव्य की अर्थ संबन्धी कठिनता को दिखलाने के लिये केवल इस मंगलाचरण के रूपक का अर्थ उदाहरण के लिये करते हैं कि जिससे हमारे पाठकों को मालूम हो कि मूलपाठ का शुद्ध होना अर्थ पर दृष्टि दिए बिना असंभव है। महाकवि चंद अपने इस महाकाव्य के आरंभ में इस मंगलाचरण के रूपक में आदिदेव, गुरु, वाणी, लक्ष्मीश, सुरनाथ और सर्वेश को नमस्कार करता है वह कहता है कि "आदिदेव को नमन कर को और गुरु को नमस्कार करके, वाणी के पदों को वदन, स्वर्ग, पाताल, (और) पृथ्वी के स्रष्टा लक्ष्मीश के चरणों का आश्रय, दुष्टों के दहन करने को तम गुण (जिस) देश में रहता है [उस] सुरनाथ की पादुका का सेवन [और] थिर, चर, जंगम, [और] जीव के वरदायमय सर्वेश को [मैं] चंद नमन करता हूं"

हमारे किए इस अर्थ के विचार से विद्वानों को मालूम हो सकेगा कि यद्यपि इस के अनेक प्रकार के अर्थ हो सकते हैं परंतु यह अर्थ चंद के व्याकरण शास्त्र संबन्धी जो नियम उसके इस ग्रंथ से मालूम होते हैं उनके अनुसार सरल और कवि की उक्ति के अनुकूल है। इसमें कितनेक शब्द ऐसे ऐसे भी हैं कि जो अर्थ करने वाले को चमका और भड़का देते हैं परंतु हम इस रूपक के सब शब्दों के विषय में अर्थात् जिसके विषय में जितना कहना आवश्यक है वह कहते हैं—

आदीदेव [स॰ पु आदिदेवः। आदौ दीव्यति स्वयं राजते] नारायण। इस शब्द के विषय में हम ने ऊपर कहा है अतएव यहां विशेष नहीं कहते किन्तु उसके प्रयोग के दो प्रमाण और भी यहां देते हैं—सहस्रात्मा मया योत्र आदिदेव उदाहृतः ॥ या॰ स्मृ॰ ॥ वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरंदरः ॥ वि॰ सहस्रनाम ॥

पैलगी, पालागन, पाय और **पयदल**, इत्यादि। और संस्कृत में भी **पय गतौ** है। मिस्टर ग्राऊज साहब ने जो इस शब्द को पैर का वाचक अपने अंग्रेजी अनुवाद में माना है यह बहुत ठीक है और हम उनसे इस में सम्मत हैं॥

सिष्टं (सं० त्रि० सृष्टः=निर्मिते। रचिते) सृजनेवाला। यह चंद की हिन्दी में सं० सृष्टः सृजनेवाले का नपुंसकलिंग की प्रथमा का एकवचन है। इस को शिष्ट अथवा श्रेष्ठ आदि शब्दों का अपभ्रंश मानना अयुक्त है किन्तु यह चंद की हिन्दी में स० त्रि० सृष्टः का सिष्ट बना है इसी तरह स० भृष्ट, भ्रष्ट, घृष्ट, दृष्ट, के अपभ्रंश रूप हिन्दी में भिष्ट, घिष्ट, दिष्ट, होते हैं॥

धारण [सं० पु० धारण=स्वर्लोके] स्वर्गलोक॥ **धारयं** [सं० त्रि० धारय=धारके। नाग देशे॥ धारयैः कुसुमोर्म्मीणाम्। भट्टिः] पाताललोक॥ **वसुमती** [सं० स्त्री० भूलोके। स्वप्टम्] भूलोक यहां थोड़ा सूक्ष्म विचार कर हमारे किये अर्थ की सत्यता जांचने का काम है क्योंकि **सिष्टं धारण धारयं वसुमती लच्छीस चर्नाश्रयं** का अर्थ अनेक कवि अनेक प्रकार का करते है परंतु हम उन को चंद के अभिप्राय के अनुकूल नहीं समझते। इन शब्दों के पृथक् पृथक् अर्थ तो हम ने संस्कृत कोशों से लेकर वर्णन कर ही दिये हैं। इस के सिवाय **लच्छीस** शब्द जो विष्णु का वाचक है वह हम को यह अर्थ करने की स्पष्ट लक्षणा कराता है कि धारण=स्वर्गलोक। धारय=पाताललोक॥ और वसुमती=भूलोक का सिष्ट=सृजनेवाला [जो] लच्छीस=विष्णु [उस के] चर्नाश्रयं=चरणों का सेवन [करता हूं] यही बहुत ठीक अर्थ है क्योंकि यहां तत्पुरुष समास है और लक्ष्मीश का अर्थ विष्णु शास्त्रों में नीचे लिखे प्रमाण से स्पष्ट है उस से भी हमारा किया हुआ अर्थ अच्छी तरह पुष्ट होता है—

यस्मात् विश्वमिदं सर्वं तस्य शक्त्या महात्मनः।
तस्मात् देवोच्यते विष्णु विशधातोः प्रवेशनात्॥
ज्योतींषि विष्णुर्भुवनानि विष्णुर्वनानि विष्णुर्गिरयो दिशश्च।
नद्यः समुद्राश्च स एव सर्वो यदस्ति यन्नास्ति च विप्रवर्येति॥
अनादि निधनं विष्णु। सर्वलोक महेश्वरं।
लोकाध्यक्षं स्तुवं नित्यं। सर्व दुःखाति गो भवेत्॥ ८॥
लोकनाथं महद्भूतं। सर्वभूतभवोद्भव॥ १०॥
लोकाध्यक्षः सुरध्यक्षो। धर्माध्यक्षः कृतः कृतः॥ ३१॥
लक्ष्मीवान् समिति जयः॥ ५६॥ श्रीमाल्लोक चयाश्रयः॥ ८२॥
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः। केशवः केशिहा हरिः॥ ८६॥
लोकस्वामी त्रिलोक धृत्॥ ८७॥ लोकाधिष्ठानमद्भुतः॥ ११२॥
त्रीन् लोकान् व्याप्य भूतात्मा। भुंक्ते विश्व भुगव्ययः॥ १४४॥
वासनाद्वासुदेवस्य। वासितं भुवन त्रयं॥ १५३॥

चर्णाश्रयं (सं० चरण+आश्रय=) चरणों का सेवन॥ यह अनुस्वार सहित शब्द भी चंद की हिन्दी का संस्कृत-सम नपुंसकलिंग है॥

तं। गुं [सं० न० तमः और पु० गुणः] तम। गुण। चंद की हिन्दी के नपुंसकलिंग॥ प्राकृत-भाषा सम का प्रयोग॥

तिष्ठति (सं० तिष्टति) रहता है। चंद की हिन्दी के संस्कृत-समभेद का रूप है ॥

ईस(स० पु० ईशः = महादेव) सदाशिव ॥

दुष्ट (सं० न० दुष्टं = अधमो वंचके) दुष्ट ॥ दुष्ट दहनं = दुष्टों के दहन करने के लिये अथवा दुष्टों के दहनार्थ ॥

दहनं (सं० पु० दहनः = दाहे। भस्मी करणे।) दहन के लिये चंद की हिन्दी का नपुं० है ॥

सुनाथ (स० पु० सुर+नाथ = रुद्रे) महादेव की ॥

सिद्धि (सं० स्त्री० = सिद्धिः = पादुकायाम्) पादुका का ॥

अयं (स० पु० अयः = अयणे। आये ॥ श्रिञ् = सेवायाम्) सेवन ॥ सिद्धि अयं = पादुका का सेवन ॥

थिर (स० पु० स्थिरः = स्थिर पदार्थः) स्थिर वस्तु जैसेः – पर्वत और पृथ्वी आदि ॥

चर (सं० पु० चरः = चले) चर वस्तु अथवा पदार्थ जैसे वस्तु और जलादि ॥

जंगम (सं० त्रि० जंगमः = पशुपक्षी) कीट पतंगादि ॥

जीव (सं० पु० जीवः = प्राणिनि) मनुष्यादि ॥ ध्यान में लेने की बात है कि पंडितों ने सब पदार्थों को स्थावर और जंगम नामक दो भेदों में ही विशेष करके विभक्त किया है। परन्तु चंद ने सब पदार्थों के चार भेद माने हैं। प्रथम स्थिर, जो सदैव स्थिर रहते हैं, जैसे पर्वतादि, दूसरे चर, जो सदैव स्थिर नहीं रहते, जैसे स्थानादि, तीसरे जंगम जो जीव दूध नहीं पीते, जैसे कीट पतगादि, और चौथे जीव, जो दूध पीते हैं, जैसे मनुष्यादि। हम ने किसी किसी कवि को इन चारो शब्दों के प्रयोग करने के कारण चंद कवि को दोष देते हुए सुना है परन्तु यह उनकी भूल है, क्योंकि उन्हों ने कवि के सूक्ष्म आशय को ध्यान देकर नहीं समझा है ॥

चंद बरदई = इस महाकाव्य का ग्रंथ-कर्त्ता कि जो हिन्दुओं के अंतिम बादशाह पृथ्वीराज जी चौहान का लंगोटिया मित्र और उनके दरबार का कविराज था। वह भट्ट जाति जो आज कल राव करके कहलाती है उसके जगात नामक गोत्र का था और उसके पुर्षा पंजाब देश के लाहौर नगर के रहने वाले थे और उनकी यजमानी अजमेर के चौहानों की थी। उसकी जैसी शूरवीरता इस महाकाव्य से विदित होती है उसका मुख्य कारण यही है कि वह पंजाब देश की अद्यावधि प्रसिद्ध वीर भूमि के तत्त्वों से उत्पन्न हुआ था और राजपूताने के हृदयरूपी अजमेर नगर में बड़ा हुआ था। वह षट-भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य छंद शास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक, मन्त्रशास्त्र, पुराण, नाटक, और गान आदिक विद्याओं में अच्छा व्युत्पन्न पंडित था। उसके पिता का नाम वेण और विद्या-गुरु का नाम गुरुप्रसाद था। उस की दो स्त्रियों के नाम कमला अर्थात् मेवा और गौरी अर्थात् राजोरा और एक लड़की का नाम राजबाई और दस लड़कों के नाम सूर १ सुन्दर २ सुजान ३ जल्ह ४ वल्ह ५ बलिभद्र ६ केहरि ७ वीरचंद ८ अवधूत अर्थात् योगराज ९ और गुनराज १० थे। इस महाकाव्य के विषयों को वैसे तो उसने समय समय पर बना कर कंठ कर रक्खा था परन्तु उन को प्रकाशार्थ [illegible] में उस ने ६० ॥ दिन में रचा था और इन को उसने रासो की पुस्तक अपने लड़के जल्ह को दी थी। इस रासो के अतिरिक्त उस के रचे और भी कई एक ग्रंथ सुनने में आते हैं परन्तु उन में सब से बड़ा यह ग्रंथ यही है और अन्य सब ग्रंथ अब बिलकुल नहीं मिलते हैं। इसका सविस्तर जीवनचरित और वंशावली जहां तक हम ने जानने में ख्यातादि से पाई है सो हम इस ग्रंथ के समाप्त होने पर छाप कर प्रसिद्ध करेंगे।

धर्म्म-स्तुति ॥

बथूआ ॥ प्रथम सुमंगल मूल अतविय। स्मृति सत्य जल सिंचिय।
सुतरु एक धर अम्म उभ्यौ ॥
त्रिषट साष रम्मिय त्रिपुर। बरन पत्त मुख पत्त सुभ्यौ ॥
कुसम रंग भारह सुफल। उन्नति अखंब अमीर ॥
रस दरसन पारस रमिय। आस असन कवि कीर ॥
छं० ॥ २॥ रू० ॥ २ ॥

नमयं = नमस्कार अथवा नमन करता है अथवा करता हूं॥

सर्वेस = (सं० सर्वेश: = ब्रह्मा) ब्रह्मा ॥

वर्दामयं = वरद – स्वरूप ॥

२ इस रूपक के छंद का बथुआ नाम चंद कवि ने तो अपने समय का प्रसिद्ध ही लिखा है परन्तु वह सांप्रत काल में पुरातत्त्ववेत्ता और कविराजाओं को भी पूरा परिश्रम देनेवाला एक छंद है। हमने इस छंद के लक्षण के लिये अपने अंग्रेजी भरतखंड के कवियों के अतिरिक्त राजपूताने के कवियों से भी पूछा और सब ने आज कल के उपलब्ध छंद-ग्रंथो में भी उसे ढूंढा परन्तु जो कवि पक्षपात रहित और सज्जन हैं उन्हों ने तो स्पष्ट कह दिया कि इस नाम का कोई छंद हमारे जानने में नहीं आया है किन्तु चंदकृत इसी महाकाव्य में इस छंद का नाम देखने में आता है परन्तु जो कवि ऐसे है कि अपनी हठ – उक्ति के आगे और कुछ ध्यान में ही नहीं लाते उनमें से किसी ने आर्य्या का एक भेद और किसी ने कहा कि इसमें लेखक और शोधक कवि के दोष से काव्य छंद में अथवा उगाहा में दोहा मिल गया है परन्तु किसी का भी कहना पुरातत्त्ववेत्ताओ को संतोष देने वाला नहीं हो सकता है। इस छंद के विषय मे हमारा कहना यह है कि जो आज धमर और भरतकृत छंद-ग्रंथ उपलब्ध होते कि जिन का आश्रय चंद ने लिया है तो उस के शोध में कुछ कठिनता नहीं पड़ती–हम इस छंद को रूपदीप पिंगल में वर्णन किये हुए रिड्डुक का नामान्तर होना निःसंदेह मान कर उस का शोधन करते है। देखो रूपदीप पिंगल में रिड्डुक छंद में ही रिड्डुक का यह लक्षण कहा है–

रिड्डुक नाम छंद लक्षण।

कीजे कला प्रथम तिथ मान, दश एको दूसरे, तीजे गिन दश पांचरिये ॥
फिर चोथे दस एक। परख्यन में पांच मे करिये ॥
रोडा सत सठ मत्त है। कीनो सेस बखान ॥
ताभे फिर दोहा मिले। रिड्डु छंद पहिचान ॥

इससे मालूम होता कि यह बथुआ छंद ऐसा एक विचित्र छंद है कि जिसकी पहिली तुक में दो यति होने के कारण १५ + ११ + १५ = ४१ मात्रा होती है और दूसरी में एक यति होने से १५ + १२ = २६ मात्रा और सब मिल कर ६७। इन दो तुको के पीछे एक दोहा होता है। जो इसमें दोहा न लगावे तो वहां तक ६७ मात्रा होती है वहां तक का रोडा नामक छंद होता है।

कर्म्म-स्तुति ॥

कवित्त ॥ प्रथम मंगल प्रमान। निगम संपजय वेद धुर ॥
त्रिगुन साख त्रिहुं चक्क। वरन लग्गो सु पत्त छर ॥
त्वचा ध्रम्म उद्धरिय। सत्त फूल्यौ चावहिसि ॥
कम्म सुफल उदयत्त। अम्रत सुम्रत मध्य वसि ॥
डुल्लै न वाय न्रप नीति भति। स्वाद अमृत जीवन करिय ॥
कलि जाय न लगै कलंक द्रुहि। सत्ति मत्ति आढति धरिय ॥
छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

इस छंद की प्रथम तुक कि यति के प्रथम टुकड़े में वीय पाठ अशुद्ध है उस के स्थान में हम नें विय किया है। और दूसरी यति के दूसरे टुकडे में सिंचियइ के स्थान में सिंचिय और ध्रम्मं के स्थान में ध्रम्म और यत के स्थान में पत्त, भारहै को भारह, और परस को पारस शुद्ध किया है और ये शोधन ऐसे साधारण हैं कि जिनके लिये कोई तर्क लिखने की आवश्यकता नहीं है ॥

३ इस रूपक में ग्रथकर्त्ता वृत्त के रूपकालंकार से धर्म्म की स्तुति करता है ॥

कवि ने इस रूपक के छंद को कवित्त संज्ञा दी है। सांप्रत काल में यह छप्पय, छप्पै षटपद, षटपदी आदिक नामों से प्रसिद्ध है परंतु सत्रहवीं शताब्दी के पहिले वह कवित्त नाम से ही प्रसिद्ध था। रूपदीप पिंगलवाले ने भी जो नीचे लिखा छप्पय का लक्षण कहा है उसमें उसने भी यह कहा है कि—"सुन गरुड पंख पिंगल कहै छप्पै छंद कवित्त यह इससे सिद्ध होता है कि इस ग्रंथ के बनने के समय तक छप्पै का नामान्तर कवित्त करके प्रसिद्ध था ॥

छप्पै

लहु दीरघ नहि नेम। मत्त चोवीस करीजे ॥
ऐसे ही तुक्क सार। धार तुक चार भरीजे ॥
नाम रसावल होय। और वस्तू कभि जानहु ॥
उल्लाला की विरत। फेर तिथि तेरह आनहु ॥
द्वै तुक्क बनावो अंत की। यत यत मे अट वीस गहु ॥
सुन गरुडपंख पिंगल कहे। छप्पै छंद कवित्त यह ॥

इस के अतिरिक्त मंछ कवि कृत रघुनाथ रूपक में भी उसने छप्पै छंदों को कवित्त कर के ही लिखा है ॥

इस के पाठ को शोधन करने में ध्यान में लेने जैसी बात है कि प्रथम और मंगल शब्दों के बीच में जो बहुत सी पुस्तकों में किय शब्द है वह अधिक होने से अशुद्ध है क्योंकि इस पाद में कुल ११ मात्रा होनी चाहिये बेदलेवालों पुस्तक में संपजय शब्द है और एशियाटिक सोसाइटी की छापी हुई पुस्तक में जो संपूजय किया गया है—इसमें मेरी सम्मति यह है कि पाठ में तो संपजय ही रखना चाहिये परंतु अर्थ करने में संपूजय समझना चाहिये—क्योंकि संपूजय

मुक्ति-स्तुति ।

कवित्त ॥ मुगति भूमि किय क्यार । वेद सिंचिय जल पूरन ॥
वीय सुवय लय मध्य । ग्यांन अंकू रस जूरन ॥
चिगुन साख संग्रचिय । नाम वहु पत्त रत्त छिति ॥
सुक्रम सुमन फुल्लयौ । मुगति पक्की द्रव संगति ॥
दुज सुमन डसिय बुध पक्क रस । वट विलास गुन पिस्तरिय ॥
तरु वृक्क साख चयलोक मचि । अजय विजय गुन विस्तरिय ॥
छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

पूर्व कवियों की स्तुति और उच्छिष्ट संज्ञा कथन ॥

भुंजंगप्रयात ॥
प्रथंमं भुजंगी सुधारी ग्रहंनं । जिनें नाम एकं अनेकं कहंनं ॥

पाठ रखने से छंद टूटता है। गुजराती भाषा में ऐसे शब्द बहुत आते हैं जैसे मुकुन्दराम का मकन्दराम, तुलसी का तलशी, और शिव का शव । ऐसे मुख दोष के कारण से बिगड़े हुए शब्दों के रूपों के लिये एक यह श्लोक भी प्रसिद्ध है–

गुर्ज्जरो मुखदोषेण । शिवोपि शवतां गतः ॥
तुलसी तलशी जाता । मुकुन्दोपि मकन्दतां ॥

इसके अतिरिक्त चंद की हिन्दी में ऐसे प्रयोग बहुत से आवेंगे जैसे "विन्दलालाट प्रसेद कियो" यहां प्रस्वेद का प्रसेद हुआ है। चिहुं के स्थान में चिहुँ किया है क्योंकि यहां अर्ध अनुस्वार प्राप्त है। लग्गो के स्थान में लग्गो, उदयत के स्थान में उदयत्त । लग्गो के स्थान में लगे और सति मति के स्थान में सत्ति मत्ति सुधारे हैं क्योंकि ऐसे पाठ सुधारने में छंद के टूटने का दोष हम को स्वयम् सचेत करता है ॥

४ इस रूपक में भी चंद कवि रूपकालंकार से कर्म की स्तुति करता है ॥

इसके पाठ में एशियाटिक सोसाईटी आदि की पुस्तकों में जो अंकूर और सजूरन पाठ हैं वे एक बालक भी जान सकता है कि बड़े ही अशुद्ध हैं किन्तु दृष्टि देने से हमारे किये पद-च्छेद से सार्थक पाठ हो जाते हैं अर्थात् अंकू रस जूरन । हम ने रत्त के स्थान में रत्त, छित्ति के स्थान में छित पाठ किये हैं। हमारे डसिय पाठ के स्थान में आगरा कालेज और बेडले आदि की पुस्तकों में भसिय पाठ है परंतु वह अशुद्ध है। मालूम होता है कि उन के लेखकों ने ड को ऐसा भ समझ कर अशुद्ध पाठ लिख दिया है और अर्थ पर दृष्टि देकर प्रति नहीं की है ॥

५ स्मरण में रखना चाहिये कि इस रूपक में कवि रूपकालंकार से मुक्ति की स्तुति करता है अर्थात् चंद ने दूसरे तीसरे और इस चैाथे रूपकों में क्रम से धर्म्मेश्वर, कर्म्मेश्वर, और मुक्तेश्वर नामक ईश्वरों के मंगलाचरण किये हैं ॥

इस भुजंगप्रयात नामक छंद का लक्षण चंद कवि के माने हुए छंद ग्रंथों में से पिंगलमुनि

दुती लच्छयं देवतं जीवतेसं । जिनैं विश्व राख्यौ वली मंत्र सेसं ॥
चवं वेद बंभं हरी कित्ति भाखी । जिनैं ध्रम्म साध्रम्म संसार साखी ॥
तृती भारती व्यास भारत्थ भाख्यौ । जिनैं उत्त पारथ्थ सारथ्थ साख्यौ ॥
चवं सुक्खदेवं परीखत्त पायं । जिनैं उद्धर्यौ अब्ब कुर्वंस रायं ॥
नरं रूप पंचम्म श्रीहर्ष सारं । नलैराय कंठं दिनै पद्ध चारं ॥
छटं कालिदासं सुभाषा सुबद्धं । जिनैं वागवानी सुबानी सुबद्धं ॥
कियो कालिका मुक्ख वासं सुसुद्धं । जिनैं सेत बंध्योति भोज प्रबंधं ॥
सतं डंडमाली उलाली कवित्तं । जिनैं बुद्धि तारंग गंगा सरित्तं ॥
जयद्देव अट्ठं कवी कब्बिरायं । जिनैं केवलं कित्ति गोविंद गायं ॥
गुरं सब्ब कब्बी लहू चंद कब्बी । जिनैं दर्सियं देवि सा अंग हब्बी ॥
कवी कित्ति कित्ती उकत्ती सुदिक्खी । तिनैं की उचिष्टी कवी चंद भक्खी ॥
छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ ५ ॥

यह लिखते हैं कि "भुजं प्रयातं यः ॥३८॥ अर्थात् जिस के पाद में चार यकार (यगण) हों वह भुजंगप्रयात नामक छंद कहाता है ॥

इस पाचवें रूपक के जो पाठक एशियाटिक सोसाईटी की और अन्य पुस्तकों में बहुत अशुद्ध हैं वे ये हैं:-प्रथम। अहनं। कहनं। लक्ष्भयं। भारथ। उतपारथ। सारथ। सुखदेयं। परीपत। उद्धर्यौ अब। कुरुवंस पद्ध। कालिदास। मुज्य। सुसुद्ध। वंध्यौ। तिभोजन। बुद्धितारंग। गंगासरित्तं जयदेव। अठं। केवल। दरसिय।उक्ति। तिन। कवि। और भर्खी। इनमें से प्रत्येक को सिद्ध करने के लिये जो हम सतर्क विवेचना करें तो बहुत स्थान चाहिये परन्तु मैं आशा करता हूं कि पुरातत्ववेत्ता इन को हमारे शुद्ध पाठों से मिलाकर और जो कुछ चंद कवि की हिन्दी के नियम हम ने संक्षेप में पहिले प्रकाश किये हैं उनमें विचार कर सिद्ध कर लेंगे।

इस रूपक में चंद कवि अपने से पहिले हुए मुख्य मुख्य कवियों की स्तुति करके अंत को दो तुकों में उनको अपने गुरु मान कर और आप निरभिमानी होकर अपने काव्य को उनके कहे काव्य की उच्छिष्टी होने की संज्ञा देता है। जैसे कि इस महाकाव्य के किसी किसी रूपक में चंद के समय के पीछे बरते हुए वृत्त लिखे प्राप्त होते हैं और उन पर से इस ग्रंथ की प्रमाणिकता में संदेह किया जाता है वैसेही यह रूपक क्या इस ग्रंथ की प्रमाणिकता के सिद्ध करनेवाला एक प्रमाण रूप नहीं है? और अन्य कवि जैसे श्रीहर्ष और जयदेवादि के समय के निश्चय और निर्णय करने में पुरातत्ववेत्ताओं का सहायक और उपकारी नहीं हो सकता है?

चंद की स्त्री अपने पति के उच्छिष्ट संज्ञा कथन में शंका करती है॥

दूहा॥ उचिष्ट चंद छंदह बयन। सुनत सु जंपिय नारि॥
मनु पविच पावन कविय। उकति अनूठ उधारि॥
छं०॥ ११॥ रू०॥ ६॥

कवित्त॥ कहैं कंति सम कंत। तंत पावन बड़ कब्बिय॥
तंत मंत उच्चार। देवि दरसिय मभ्भि चब्बिय॥

जाते हैं उसका वाचक है परन्तु इस शब्द का हम पता लगाकर बतातें हैं कि यह बंभं वद का हिन्दी का भूतकालिक क्रियावाचक शब्द है और संस्कृत भाषा में यङ्लुगन्तप्रक्रिया के प्रयोगों में जो बंभणीत बभंति प्रयोग प्रसिद्ध होता है उससे बना है और उसका यहा फिर २ वा बार २ पढ़ा वा भणा का अर्थ है। क्योंकि "चवं वेद बंभं हरी किति भाखी" इस तुक का अर्थ यह है कि जिस "जीवतेस ने चारो वेदो को बार २ पढ़ा वा भणा और हरी की कीर्ति को भाखा" जो मनुष्य संस्कृत भाषा में अच्छा व्युत्पन्न और पक्षपात और हठ जैसे दोषों से विमुक्त और सत्य का दृढ़ अवलंबन करनेवाला है वह हम आशा करते हैं कि ऐसे प्रयोगों को देख कर कदापि यह नहीं कहेगा कि इस महाकाव्य का ग्रंथकर्ता चंद संस्कृत भाषा में अव्युत्पन्न था॥

इस रूपक में चंद कवि आठ कवियों को अपने गुरु मान कर उन की स्तुति और उनकी काव्य रचन-शक्ति का वर्णन करता है वह सब से पहिले भुजंगी नाम से परमेश्वर को कवि ग्रहण करता है क्योंकि वेदादिक में उस का कवि नाम कहा है यथा –

"होता वा देव्या कवी०" यजुः "प्रथम वरजं भेषजं कविम्०" यजुः
"कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभू ०" ईशोपनिषत्
"कविः क्रान्तदर्शी सर्वडक् नान्यतोऽस्ति द्रष्टा" इश्रुतेः॥ शा० भा०
"कवि पुराणमनुशासितारम्०" गीता॥

दूसरे जीवतेश से प्राणनाथ अर्थात् ब्रह्मा कि जो आदि कवि कहता है जैसे भागवत में कहा है कि "तेने ब्रह्महृदा य आदि कवये मुह्यन्ति यत् सूरय"॥

बाकी सब कवियो के विषय मे कुछ विशेष कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सर्व साधारण लोग व्यासादि के नाम से भले प्रकार विज्ञ हैं॥

६-८—कवि चंद ने जो पहिले रूपक में अपने काव्य को अपने से पहिले हुए कवियों के काव्य का उच्छिष्ट होना कहा है उसे सुन कर उसकी स्त्री उच्छिष्ट सज्ञा में आश्चर्य के साथ शंका और अपने पति के गुणों का वर्णन करती है अर्थात् इन रूपको में कवि चंद ने अपनी स्त्री के प्रश्नोत्तर के प्रसग से अपने काव्य की उच्छिष्ट सज्ञा के हेतु और अपने गुण प्रकाश किये हैं। इन मे सम, कंति और कंत शब्दों के प्रयोग विद्वानो की दृष्टि में रहने योग्य हैं। सम (स० अ० सम्=सर्व,—संबन्धे, समुच्चये,) को अथवा प्रति, और सम ब्रह्मरूप में सम शब्द तुल्य के अर्थ में कवि ने प्रयोग किया है, कंति (सं० स्त्री कम्=ति) पत्नी अथवा स्त्री, और कंत (सं० पु० कम्+त) पुरुष अथवा

तंत बीर उग्रंत । रंग राजन सुख दाइय ॥
बाल केल प्रत्यंग । सुरनि उद्धरि कविताइय ॥
कवखंड उकति उच्चार करि । जिहित सोहि कोविद रचै ॥
सम ब्रह्मरूप या सब्द कहुँ । क्यों उचिष्ट कवियन कचै ॥
छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ ७ ॥

चंद अपनी स्त्री की शंका का समाधान करता है ॥

कवित्त ॥ सम बनिता बर बंदि । चंद जंपिय कोमल कल ॥
सबद ब्रह्म इह सत्ति । अपर पावन कहि निर्मल ॥
जिहित सबद नहिं रूप । रेख आकार ब्रन्न नहिँ ॥
अकल अगाध अपार । पार पावन चयपुर महिँ ।
तिहिँ सबद ब्रह्म रचना करौं । गुरु प्रसाद सरसें प्रसन ॥
जद्यपि सु उकति चूकौं जुगति । तौ कमल वदनि कवितह हँसन ॥
छं० ॥ १३ ॥ रू० ॥ ८ ॥

चंद की स्त्री पुनश्च शंका करती है ॥

कवित्त ॥ तुम बानी बरचंद । नाग देखंत विमल मति ॥
छंद भंग गन रहित । कंठ कौमार काव्य हत ॥

पति, यह तीनो चद की हिन्दी के सस्कृत-सम प्रयोग है। और तंत और मंत शब्दो के प्रयोग भी दृष्टि देने जैसे हैं तत पावन में तत =तत्व और तंत मंत में तत=तंत्र और मंत=मत्र के वाचक कवि ने प्रयोग किये है ॥

अन्य पुस्तको में यह अशुद्ध पाठ है:- सु, जंपिय, कवि, सुख, दाईय, कविताईय, को, विद, समब्रह्मरूप, कहु कविय और न ॥

८ चंद इस रूपक मे अपनी स्त्री को उसकी शंका का उत्तर देकर समाधान करता है। शब्दब्रह्म (स० शब्दात्मक ब्रह्म) शब्द का प्रयोग चंद के व्याकरण और वेदान्त विद्या के ज्ञान का द्योतक है। गुरुप्रसाद शब्द यहा श्लेषार्थ में कवि ने प्रयोग किया है क्योंकि ख्यातियो के अनुसार चद के विद्या-गुरु का नाम गुरुप्रसाद था। यद्यपि कुछ विशेष वृत्त नहीं मिलते तथापि यह गुरु प्रसाद नामक पञ्जाब देश का रहनेवाला एक बड़ा पंडित हुआ है। कवितह यह भी हिन्दी का निज प्रयोग है और उस का अर्थ कवित्त अर्थात् काव्य रचनेवाले कवि का है। किसी किसी पुस्तक मे जो बरचंदि, अमल, चयपुर, महि, तिहि, और प्रसन पाठ है वे अशुद्ध है ॥

९ जिन पुस्तको मे ये पाठ है—अमोघ सुनर, और नमनरहि, वह अशुद्ध है इसमें दूसरी तुक का दूसरा पाठ 'कट कौमार काव्य छन' विद्वानो के ध्यान देने योग्य है। इसका आशय यह

बुधि तरंग सम गंग । उकति उच्चार अमिय कल ॥
सुरन सुनत बिचसंत । मंत जनु वस्य कारन अल ॥
अवतार भूप प्रिथिराज पहु । राज सुख तिन सम लचहि ॥
बीराधि बीर सामंत सब । तिन सु गल्ह अच्छी कहहि ॥
छं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ ९ ॥

चंद अपनी स्त्री की शंका का पुनरुक्त समाधान करता है ॥

कवित्त ॥ गज गवनी प्रति चंद । छंद कोमल उच्चारिय ॥
मनहरनी रस बेलि । सुरन सागर रस धारिय ॥
बंक नयन वय बाल । प्रान वल्लभ सुखदाइय ॥
अगुन निगुन गुरु अचनि । गवरि पूजा फल पाइय ॥
भए आदि अंत कविता जिते । तिन अनंत गति मति कहिय ॥
अनेक ग्रंथ तिन बरनवत । यों उचिष्ट मति मैं लहिय ॥
छं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ १० ॥

चंद अपनी स्त्री के आगे ईश्वर के ऐश्वर्य का वर्णन करता है ॥

॥ पद्धरी ॥

प्रनम्म प्रथम मम आदिदेव । उंकार सव्द जिन करि अछेव ॥
निरकार मध्य साकार कीन । मनसा विलास सह फल फलीन ॥ १६ ॥
चयगुनह तेज चयपुर निवास । सुर सुरग भूमि नर नाग भास ॥
फुनि ब्रह्मरूप ब्रह्मा उचारि । कथि चतुरवेद प्रभु तत्त सारि ॥ १७ ॥

है कि चंद की स्त्री अपने पति से कहती है कि तुम कठ कौमार काव्य क्षत हों अर्थात् तुम को कौमार काव्य कंठ है । क्या यह भी चंद के संस्कृत भाषा में व्युत्पन्न होने का एक अच्छा प्रमाण नहीं है ?

१० अन्य पुस्तकों में ये पाठ अशुद्ध हैं बेली, सुखदाईय, जिते, वरन, वत और में । इस रूपक में गवरि शब्द श्लेषार्थ में कवि ने प्रयोग किया है क्योंकि ख्यातियों में चंद की स्त्री का नाम गौरी करके प्रसिद्ध है ॥

११ इस रूपक के छंद का नाम पद्धरी है और उसका लक्षण यह है—
दस करो प्रथम फिर षट मिलाय । गिन षोडश मता पाय पाय ।
इस जगन अंत में धरत सोय । भनि शेष पद्धरी छंद होय ॥ रूप दी० ॥

इस रूपक में चंद अपनी स्त्री को ईश्वर का ऐश्वर्य वर्णन कर बताता है और पहिली तुक में प्रनम्य पाठ नहीं ग्रहण करना चाहिये किन्तु प्रनम्म पाठ ठीक है अर्थात् चंद अपनी स्त्री को

बरनयौ आदि करता अलेख । गुन रहित गुननि नह रूप रेख ॥
जिहि रचे सुरग भू सत पताल । जम ब्रह्म इन्द्र रिषि लोकपाल ॥ १८ ॥
पवन अग्गि जल धर अकास । सरिता समुद्द निधि गिर निवास ॥
असि लक्ख चार रच जीव जंत । बरनंत ते नहीं लहों अंत ॥ १९ ॥
अठ्ठार वन्न बेली सु कीन । नाना प्रकार सब गुन अधीन ॥
करि सकै न कोइ अग्याहि भंग । धरि हुकुम सीस दुख सहै अंग ॥ २० ॥
दिनमान देव रवि रजनि भोर । उग्गैइ बनैं प्रभु हुकम जोर ॥
ससि सदा राति अग्या अधीन । उग्गैं अकास होय कला हीन ॥ २१ ॥
दिगपाल दाबि रहै सबरि भूमि । चमक्कैं न कार रहै चांपि चूंमि ॥
परिमान पवन करि गवन गाह । घटि बढि अंग अंडै उछाह ॥ २२ ॥
इन्द्र सुर्ग मेघ अग्या अकास । बरखा सु बरख रक्खे हुलास ॥
धर रहि अचल होय प्रभु प्रताप । हलि चलि न निमख सक्कै सताप ॥ २३ ॥
उछंत लहरि लग्गी अकास । तठ समुद सत्त नहिं खोज नास ॥
परिमान अप्प लंघे न कोइ । करै सोइ काम प्रभु हुकम जोइ ॥ २४ ॥
अग्यान मेटि को सकै ताहि । भूत न भविष्य को व्रत्त माहि ॥
बरनयौ बेद ब्रह्मा अछेह । जल थलह पूरि रह्यौ देव देह ॥ २५ ॥
पुनि कहे व्यास दसअठ पुरान । अवतार रचित नाना विधान ॥
बरनयौ विमल मति देव देव । सब रहै सोधि नह लह्यौ भेव ॥ २६ ॥
पुनि बालमीक रामावतार । सत कोटि ग्रंथ कथि तत्त सार ॥
विध्वंसि सीय दस देव दाद । प्रारंभ रीझ कपि दहित वाद ॥ २७ ॥
पुनी पंच काल कवितान कीन । अग्यान नरन उर दीप दीन ॥
कितीक वात मो मति प्रकार । करि उदौ अब्ब तो होइ हास ॥

छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ ११ ॥

कहता है किन्तु प्रथम मेरे आदि देव को प्रणाम कर कि जिसने ऐसा र किया है । हमारा यह कहना अर्थ पर दृष्टि देने से बहुत ठीक प्रतीत हो सकता है । अन्य पुस्तकों में जो ये मिलते हैं वे अशुद्ध हैं जैसे-करम्म, मन, ब्रह्माइ, चार, सत्त पाताल, पवनह, जल, अग्गि, ध्यार, कोई, पवर, भार, रहो, सताप, नहि, करता, हि, रहे, न, हलहलौ, मोदक, उदेश, प्राकम और अब्ब ॥

इस छपक के छठे रूप में रहों तुम जो पहिले पाठ में था हमारे सवरि पाठ के स्थान में एशियाटिक सोसाइटी की छापी हुई पुस्तक में सबर पाठ है और इस को [illegible]

चंद की स्त्री अपने पति से अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका पूछती है ॥

दूहा ॥ सुनत काव्य कवि चंद कौ। चित आनन्दी नारि ॥
तुम बानी बानी प्रसन। हसन हुवंत विवारि ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ कहै कंति मतिवंत। तंत रसना रस सागर ॥
तुम गुन श्रवन सुहंत। जानि चमकंत कलाधर ॥
तुम देवी वरदान। दान दीजै मुहि कब्बिय ॥
अष्टादसह पुरान। नाम परिमानह सब्बिय ॥
तुम कथन कथन आनन्द मुहि। अग्ग पच्छ भव सुद्धरै ॥
अग्यान तिमर नठ्ठय सुनत। ऊध्व कमल हिय उद्धरै ॥
छं० ॥ ३० ॥ रू० ॥ १३ ॥

चंद अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका का कथन करता है ॥

पद्धरी ॥ ब्रह्मन्यदेव सम वासुदेव। अष्टदस पुरान तिन कहि सुभेव ॥
तिन कहों नाम परिमान ब्रन्न। जिन सुनत सुद्ध भव होत तन्न ॥ ३१ ॥
ब्रह्मह पुरान दस सहस जुट्टि। जिहि पढ़त सुनत तन तप्प छुट्टि ॥
पचास पंच हज्जार गन्नि। पद्मह पुरान तिन कह्यौ ब्रन्नि ॥ ३२ ॥
तेतीस सहस सैं चारि जानि। विष्णू पुरान विष्णू समानि ॥

साहब ने जो अरबी سفر सफ्र शब्द होना अनुमान किया है वह अयुक्त है क्योंकि अरबी سفر सफ्र शब्द का अर्थ यहां सर्व्वरीत्या अघटित है किन्तु मानना चाहिये कि चंद ने हिन्दी **सवरि** शब्द का छंद टूटने के कारण **सयरी** प्रयोग किया है और रासो की किसी २ पुस्तक में ऐसा पाठ भी मिलता है। जो इस शब्द को रकार और वकार के उलट पुलट लिखे जाने से **वरस** शब्द होना भी हम माने तथापि यह कुछ असगत नहीं है ॥

१२ इस में **प्रसन्न** शब्द का पाठ किसी २ पुस्तक में मिलता है परंतु यहां छन्द टूटने के कारण कवि ने **प्रसन** करके प्रयोग किया है ॥

१३ इस कवित्त के भिन्न २ पुस्तकों में जो पाठ मिलते हैं वे अयुक्त हैं जैसे-कन्हे, वरदानि, पछू, नठ्ठ, य, अध्वक, और मल ॥

१४ इस रूपक के अशुद्ध पाठान्तर अन्य पुस्तकों में ये हैं-अष्टादस, कहै, सभेव, ब्रन्निहो, तत्तनि, तप्य, पंचास, पंवह, च्यारि, तिष्णु, अठार, भागवत, तहा, तेईस, दुख, संपूर, अगिन, पठि दरपार, अछ, पछ, कूरभ, मछ, भक्ति, डरान, सहस, और नस ॥

इस रूपक के ४१ वे छंद की एक तुक भाषा के कवि घटती बताकर चंद पर दोषारोपण करते है परंतु यह उनकी भूल है क्योंकि चंद ने इस छंद को एक ही तुक में कहा है

चौवीस सहस कहि शिव पुरान। तिहि पढ़त सुनत सम अमिय पान॥ ३३॥
अठ्ठारह सहस भागवत्त भेव। करि पार परिक्खन सुक्कदेव॥
नारद पुरान कहि पाव लाख। तहं मुक्ति मोद आनन्द भाख॥ ३४॥
मारकंड नाम नेहस हजार। पौरान पवित्र सो दुःख जार॥
पंद्रह हजार संख्या सपूर। अग्नी पुरान पढि पाप दूर॥ ३५॥
चवदै हजार सैं पांच पट्ठि। भवषित पुरान सो पाप जट्ठि॥
ब्रह्मवैवत सहसं अठार। केवल गिनान कथि भक्ति सार॥ ३६॥
रुद्रह हजार लिंगह पुरान। आनन्द अर्थ आगम गुरान॥
चौवीस सहस बाराह भक्ति। पौरव पुरान तिन अमित सक्ति॥ ३७॥
हजार इक्यासी कहि विवेक। स्कंदह पुरान भव भक्ति एक॥
ग्यारह सहस बावन सु अच्छ। पौरान सुनत सुधि अग्ग पच्छ॥ ३८॥
सत्रह हजार कूरंम पुरान। भाग विनोद प्राक्रम पुरान॥
विद्या हजार मित मच्छ देव। विधि संख उद्धरे सेव भेव॥ ३९॥
उनईस सहस गरुड़ह पुरान। श्रोतान वक्त भक्ती उरान॥
ब्रह्मांड पुरान बारह सहस्स। करि व्यास भक्ति प्रभु कंस नस्स॥ ४०॥
पंद्रह हजार अरु चार लाख। सम ब्रह्म रा? कहि चंद भाख॥
छं० ॥ ४१ ॥ रू० ॥ १४ ॥

चंद अपनी लघुता वर्णन करता है॥

दूहा॥ फूलि कित्ति चहुआन की। जुग्गनि जुग्ग निवास॥
अप्प मत्ति सरसें सवल। मनो करौ कवि हास॥
छं० ॥ ४२ ॥ रू० ॥ १५ ॥

और श्लोकार्ध कहने और लिखने की रीति संस्कृत भाषा के काव्यों में प्रचलित है। चंद की यह संस्कृत-काव्य- सम शैली इस महाकाव्य में बहुत स्थानों पर देखने में आवेगी अतएव हम को इस पर आश्चर्य नहीं करना चाहिये। ऐसे उदाहरण पुराणों में बहुत मिलेंगे परन्तु जिन के पढ़ने में भाव काव्य भी प्राप्त होता वे जानते होंगे कि माघ के ग्रंथकर्ता ने पहिले सर्ग के दूसरे श्लोक के साथ तीजे लिखा अर्द्ध-श्लोक कहा है –

"द्विधा कृतात्मा किमयं दिवाकरो। विधूमरोचिः किमयं हुताशनः॥
गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः। प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः॥ २॥
पतत्यधो धाम विसारि सर्वतः। किमेतदित्याकुलमीक्षितं जनैः॥

१४ इसमें कुछ पाठान्तर ये हैं.–अप्प और मति।

गाहा ॥ पय सक्करी सुभत्तौ। एकत्तौ कनय राय भोयंसी ॥
कर कंसी गुज्जरीय। रब्बरियं नैव जीवंति ॥
छं० ॥ ४३ ॥ रू० ॥ १६ ॥

सत्त खनै आवासं। मच्छिलानं मद्द सद्द नूपरया ॥
सतफल बज्जुन पयसा। पब्बरियं नैव चालंति ॥
छं० ॥ ४४ ॥ रू० ॥ १७ ॥

रब्बरियं रस मंदं। क्यूं पुज्जति साध अमियेन ॥
उकति जुकत्तिय ग्रंथं। नथि कत्थ कवि कत्थिय तेन ॥
छं० ॥ ४५ ॥ रू० ॥ १८ ॥

याते वसंत मासे। कोकिल झंकार अंब वन करयं ॥
वर बब्बूर विरष्षं। कपोतयं नैव कलयंति ॥
छं० ॥ ४६ ॥ रू० ॥ १९ ॥

सहसं किरन सुभाउ। उगि आदित्य गमय अंधरं ॥
अय्यं उमा न सारो। भोडलयं नैव झलकंति ॥
छं० ॥ ४७ ॥ रू० ॥ २० ॥

कज्जल मसि कस्तूरी। रानी रेहंत नयन अंगारं ॥
का मसि घसि कुंभारी। किं नयने नैव अंजंति ॥
छं० ॥ ४८ ॥ रू० ॥ २१ ॥

ईस सीस असमानं। सुर सुरी सलिल निष्ट नित्यानं ॥
पुनि गलती पूजारा। गडुवा नैव ढालंति ॥
छं० ॥ ४९ ॥ रू० ॥ २२ ॥

१६–२२ गाहा छंद का लक्षण यह है –

गाहा पहिले बारह। दूजे अठारहै कला राजै ॥
तीजे बारह धारहु। पंद्रह चौथे तहां छाजै ॥

इन गाहा छंदों में अशुद्ध पाठान्तर ये हैं – सतफल, क्यूपजे, बं॰, रवि, रप्यं, नगय, सुरीस लिल, और फुनि ॥

बाईसवें गाहा के "ईस सीस आसमानं" में जो आसमानं शब्द है उस को जो मिस्टर जान बीम्स साहब फारसी आसमान آسمان होना अनुमान करते हैं उससे हम बिलकुल असम्मत हैं। हम इस को स० असमानं, त्रि० (नास्ति समानो यस्य।) अतुल्य, विजातीयं, सजातियभिन्नं, का वाचक समझते है अर्थात् ईस=परमेश्वर का सीस=शिर; आसमानं=अतुल्य है।

चंद उत्तापित होकर अपने के पूर्व-कवियों का दास होना, उनकी उक्ति को कहना और अपनी को बकना कहता है ॥

दूहा ॥ कहां लगि लघुता बरनवों । कविन दास कवि चंद ॥
उन कहि ते जो उब्बरी । सो बकहों करि छंद ॥
छं० ॥ ५० ॥ रू० ॥ २३ ॥

चंद खलों का स्वभाव वर्णन करके सुजनों के निमित्त अपना काव्य रचन करना कहता है ॥

दूहा ॥ सरस काव्य रचना रचौं । खल जन सुनि न हसंत ॥
जैसे सिंधुर देखि मग । स्वान सुभाव भुसंत ॥
छं० ॥ ५१ ॥ रू० ॥ २४ ॥

तौ पनि सुजन निमित्त गुन । रचिये तन मन फूल ॥
जूका भय जिय जानिकैं । क्यों डारियै दुकूल ॥
छं० ॥ ५२ ॥ रू० ॥ २५ ॥

सरस्वती की स्तुति ॥

॥ साटक ॥ मुक्ताहार विहार सार सुबुधा, अब्बुधा बुधा गोपिनी ॥
सेतं चीर सरीर नीर गहिरा, गौरी गिरा जोगनी ॥
बीना पानि सुबानि जानि दधिजा, हंसा रसा आसिनी ॥
लंबोजा चिहुरार भार जघना, विघ्ना घना नासिनी ॥
छं० ॥ ५३ ॥ रू० ॥ २६ ॥

गणेश की स्तुति ॥

कचंजा मद गंध राग रुचयं, अलिभूराक्षादिमा ॥
गुंजा हार अथार तार गुनजा, झंझा पथा भामिता ॥
अग्रेजा श्रुति कुंडलं करि कर, स्तुहीर उद्धारयं ॥
सोयं पातु गनेस सेस सफलं, पृथ्राज काव्यं कृतं ॥
छं० ॥ ५४ ॥ रू० ॥ २७ ॥

२३-२४ इनमें जो किसी २ पुस्तक में तेवो पाठ है वह अशुद्ध है । कवि चंद ने अपनी लघुता वर्णन करते २ अंत को उत्तापित होकर जो ये दो दोहे (२०-२२ । २३ । २४) कहे हैं वे इस महाकाव्य के पाठकों और खंडन करनेवालों के ध्यान में रहने योग्य हैं ।

२६-२७ इन छन्दों में यह अशुद्ध पाठान्तर है—गोपनी, जिरजोगनी, सुबानी, दधि, आदि

गणपति की उत्पत्ति कथा ॥

विराज ॥ रतं रत्त भारी । कहूना बिचारी ॥
लियौ मात नक्खं । बियो संख लक्खं ॥ ५५ ॥
मिल्ले एक दीहं । रमै काम सीहं ॥
इकं रिष्य आयौ । दियौ काम चायौ ॥ ५६ ॥
खिज्जा रिष्षि भारी । दियौ काम डारी ॥
भयौ पुत्र नब्बं । धजा कोद सब्बं ॥ ५७ ॥
सिरो कालधारी । गनेसं विचारी ॥
खिजे नब्ब ईसं । भयौ रोम बीसं ॥ ५८ ॥
अवल्ला इकल्ली । बियौ पुर्ष भिल्ली ॥
डके डोर नई । चन्या पुत्र वई ॥ ५९ ॥
खिजी मात भारी । सरायं बिचारी ॥
करी जाकु ईसं । धस्यौ पुत्र सीसं ॥ ६० ॥
सबै कज्ज अग्गै । तुही नाम लग्गै ॥
कलानंद रूपं । गनेसं सभूपं ॥ ६१ ॥
इकं दन्त दन्ती । विराजंत कंती ॥
सुभै दंत ऐसै । कविंदं प्रसंसै ॥ ६२ ॥
मनो भूमि धारी । बराहं उपारी ॥
इसी नट्ठ तेजं । कला सोम केजं ॥ ६३ ॥
नमो देव कई । प्रजा ईस मई ॥
भखै भूत प्रेतं । तिजारी न छेतं ॥ ६४ ॥

सरसा, लंबी, ना, विघना, छत्र, मदं, ना, अले, जा, करः, स्तु, दीर, पृथिराज, काव्य और कते। इन में एक पृथीराज शब्द के स्थान में जो हमने पृथ्राज पाठ रक्खा है वह एक रासो की पुस्तक मे है और चंद का ऐसा प्रयोग देखकर राजपूताने और बृज की ग्रामीण भाषाओ से परिचित विद्वानो को कुछ आश्चर्य न होगा क्योंकि उन्हो ने ऐसे ही गजराज के स्थान में गज्राज बोलते और खेलते लोगो को देखा और सुना होगा। यह चंद की हिन्दी के देशी प्रसिद्ध नामक भेद का उदाहरण है॥

२८ अन्य पुस्तकों में पाठान्तर ये हैं —कहना, सात, नष्य, दिये, रिषि, अवल्लाइ, कल्ली, पुहप, डोर, धर्वो, तुहि, दट्ठ, देहै, देह, भगतं, लछी, लच्छी, अयं, नय, समती, पती, धरं, चिलोक और ईसा। इस रूपक के छंद का नाम चंद ने विराज कहा है परंतु उस का नामान्तर सखा नारी और उस का लक्षण यह है —

दूकं दीह एकं । दुती दीह फेकं ॥
भगत्तं सुचक्की । दियो लच्छि वक्की ॥ ६५ ॥
पूकं चोख अथ्थं । करै नाक नथ्थं ॥
सुभत्ती सुमत्ती । जलं माहि पत्ती ॥ ६६ ॥
धरै आक सीसं । चिलें केस ईसं ॥
षयं वेद जक्की । पियं चंद भक्की ॥ छं० ॥ ६७ ॥ रू० २८ ॥

शंकर की स्तुति ॥

दूहा ॥ नमस्कार संकर कियौ । सरसैं बुधि कवि चंद ॥
सति लंपट लंपट नवो । अबुधि मंच सिसु दूंद ॥
छं० ॥ ६८ ॥ रू० ॥ २९ ॥

साधन भोग सँयोग रजि । मंडन आव अखूट ॥
नमो उमा उर आभरन । जय वंधन जट जूट ॥
छं० ॥ ६९ ॥ रू० ॥ ३० ॥

बिराज ॥ जटा जूट वंदं । लिलाटंत चंदं ॥
बिराजंत कंदं । भुजंगी गलिंदं ॥ ७० ॥
शिरो माल दूंदं । गिरीजा अनंदं ॥
स्रिरै सिंघि नद्दं । रनं वीर मद्दं ॥ ७१ ॥
करा चर्म सद्दं । करं काल खद्दं ॥
धुनें गंग छद्दं । चखी अग्गि दद्दं ॥ ७२ ॥
प्रलै जानि जद्दं । जयो जोग सद्दं ॥
घटा जानि भद्दं । जरै काम नद्दं ॥ ७३ ॥
हरै चाहि वद्दं । रचै मोह कद्दं ॥
षचै दूरि दद्दं । नटै भेख रद्दं ॥ ७४ ॥
नमो ईस दूंदं । वदै भट्ट चंदं ॥ छं० ॥ ७५ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

दहं वर्ष वारो । प्रगन्ने दुधारो ॥
रचे पाव चारी । करो संखनारी ॥ श्रीधर कवि कृत पिंगल ॥
३० पाठान्तर-सरसें । सती । सवोग ॥
३१ पाठान्तर-गिरिजा । रने । वीर । मद्दं । गंगहद्दं । दद्दं । मद्द ॥ इस रूपक का छंद ७५
चंद की संस्कृत नाम-सम-श्लोकाद्दं शैली का दूसरा उदाहरण है। देखो टिप्पणी ७० को।

दूह ॥ करिये भक्ति कवि चंद हर । हरि जंपिय इह भाइ ॥
ईस स्याम जू जू कहै । नरक परंतह जाइ ॥
छं० ॥ ७६ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

स्लोक ॥ परात्परतरं यांति । नारायण परायणं ॥
न ते तत्र गमिष्यंते । ये दुष्यंति महेश्वरं ॥
छं० ॥ ७७ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

साटक ॥ गंगाया भगुलत्त वसन्न मसनं,लच्छी उमा दोवरं ॥
संखं भूत कपाल माल असितं, वैजंति माला हरी ॥
चर्म्म मध्य विभूति भूतिक युगं, विभ्भूति माया क्रमं ॥
पापं विहरति मुक्ति अप्पन वियं, वीयं वरं देवयं ॥
छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ३४ ॥

कवि की आशा का स्वरूप वर्णन ॥

गाहा ॥ आसा महीव कव्वी । नव नव कित्तीय संग्रहं ग्रंथं ॥
सागर सरिस तरंगी । वोहथ्थयं उक्तियं चलयं ॥
छं० ॥ ७९ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

चंद का काव्य समुद्र कैसा है ॥

दूहा ॥ काव्य समुद्र कवि चंद कृत । मुगति समप्पन ग्यान ॥
राजनीति बोहिथ सुफल । पार उतारन यान ॥
छं० ८० ॥ रू० ॥ ३६ ॥

छंद प्रबंध कवित्त जति । साटक गाह दुहथ्थ ॥
लहु गुर मंडित खंडिय चि । पिंगल अमर भरथ्थ ॥
छं० ॥ ८१ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

---

३२ पाठान्तर—क्रियै ।
३३ पाठान्तर—यांति । जे यह श्लोक चंद के शुद्ध संस्कृत काव्य रचन का प्रथम उदाहरण है ॥
३४ पाठान्तर—भ्रगुलत्त । वसनमसनं । लछी । कपालमाल । चमभूतिकियुगं । मायाक्रमं । मुक्तिं । वरंदेवयं ॥
३५ पाठान्तर—क्रित्ती ॥
३६ पाठान्तर—ग्यान । यांन ।
३७ पाठान्तर—भरत्थ ।

कोई अशुद्ध पढ़नेवाला चंद को काव्य-संबन्धी दोष न दे ॥

कवित्त ॥ अति ढंक्यौ न उघार । सलिल जिमि सिथ्थि सिवालह ॥
वरन वरन सोभंत । हार चतुरंग विसालह ॥
विमल अमल वानी विसाल । बयन वानी वर ब्रंनन ॥
उक्तिन बयन विनोद । मोद श्रोतन मन ह्रनन ॥
युत अयुत जुक्ति विचार विधि । वयन छंद कुथ्यौ न कह ॥
घटि वढ्ढि मति कोई पढइ । तौ चंद दोस दिज्जो न वह ॥
छं० ॥ ८२ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

इस ग्रंथ में चंद ने क्या क्या कथन किया है ॥

श्लोक ॥ उक्ति धर्मं विशालस्य । राजनीति नवं रसं ॥
षट् भाषा पुराणं च । कुरानं कथितं मया ॥ छं० ॥ ८३ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

रासो का रसिया सरस उधारैं ॥

कवित्त ॥ चरन नीम अच्छिर सुरंग । पाट लहु गुरु विधि मंडिय ॥
सुर विकास जारी सु मुष्य । उक्ति रस गौरव नि छंडिय ॥
जुगति छोह विस्तरिय । सीढियन घाट सु ग्रहिय ॥
मधि मंडन मेधान । यादि मंडन जस सहिय ॥

३८–पाठान्तर–पिथ्थि । विशाल । विच्चार । पढई । दिज्जो । दिज्जै ।

३९–कवि का यह संस्कृत श्लोक हमारे पाठकों के सदा ध्यान में रखने योग्य है । इस के सूक्ष्म विचार से हम जान सकते है कि षटभाषा और कुरान की भाषा के जो जो शब्द इस महाकाव्य में प्रयोग हुए हम देखते है वह कवि ने जानकर प्रयोग किये हैं और कुरान की भाषा शब्दो के प्रयोग का विषय कोई आश्चर्यदायक भी नहीं है क्योंकि मुसलमानो का प्रवेश भरत-खंड में शहाबुद्दीन गोरी के बहुत ही पहिले हो गया था । इस के अतिरिक्त हम को यह भी निश्चय मानना चाहिये कि चंद संस्कृत भाषा में निपुण था और षट्भाषा और कुरान की भाषा से भी अपरिचित् नही था और जो जो छंद इस महाकाव्य में संस्कृत भाषा में लिखे हमारे दृष्टि आते हैं वे उस की संस्कृत-काव्य-रचन शक्ति के उदाहरण रूप हैं । यह श्लोक चंद के माने हुए पिंगल छंदसूत्रम् के अनुसार लौकिक अनुष्टुप अर्थात् अनुष्टुप् छंद है । इस श्लोक के विशेष पाठान्तर अन्य पुस्तकों में दृष्टि नहीं आते किन्तु केवल विशाल के स्थान में विसाल और पुराण के स्थान में पुरान पाठ है ।

४० पाठान्तर–अच्छिर । सुरष । समुष । मुष । गौरिव । निछंडिय । मेधान । यादि । विसाल । विश्वकर्म कर्म । इत्यादि ।

दूह ॥ करिये भक्ति कवि चंद हर । हरि जंपिय इह भाइ ॥
ईस स्याम जू जू कहै । नरक परंतह जाइ ॥
छं० ॥ ७६ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

स्लोक ॥ परात्परतरं यांति । नारायण परायणं ॥
न ते तत्र गमिष्यंते । ये दुष्यंति महेश्वरं ॥
छं० ॥ ७७ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

साटक ॥ गंगाया भ्रगुलत्त वसन्न मसनं,लच्छी उमा दोवरं ॥
संखं भूत कपाल माल असितं, वैजंति माला हरी ॥
चर्मे मध्य विभूति भूतिक युगं, विब्भूति माया क्रमं ॥
पापं विहरति मुक्ति अप्पन वियं, वीयं वरं देवयं ॥
छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ३४ ॥

कवि की आशा का स्वरूप वर्णन ॥

गाहा ॥ आसा महीव कव्वी । नव नव कित्तीय संग्रहं ग्रंथं ॥
सागर सरिस तरंगी । बोहथ्थयं उक्तियं चलयं ॥
छं० ॥ ७९ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

चंद का काव्य समुद्र कैसा है ॥

दूहा ॥ काव्य समुद्र कवि चंद कृत । मुगति समप्पन ग्यान ॥
राजनीति बोहिथ सुफल । पार उतारन यान ॥
छं० ८० ॥ रू० ॥ ३६ ॥

छंद प्रबंध कवित्त जति । साटक गाह दुहथ्थ ॥
लहु गुर मंडित खंडिय हि । पिंगल अमर भरथ्थ ॥
छं० ॥ ८१ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

---

३२ पाठान्तर–क्रिये ।
३३ पाठान्तर–यांति । जो यह श्लोक चंद के शुद्ध संस्कृत काव्य रचना का प्रथम उदाहरण है ॥
३४ पाठान्तर–भ्रगुलत्त । वसनमसनं । लक्षी । कपालमाल । चमभूतिक्रियुगं । मायाक्रमं । मुक्तिं । वरंदेवयं ॥
३५ पाठान्तर–कित्ती ॥
३६ पाठान्तर–ग्यान । यांन ।
३७ पाठान्तर–भरत्थ ।

कोई अशुद्ध पढ़नेवाला चंद को काव्य-संबन्धी दोष न दे ॥

कवित्त ॥ अति ढंक्यौ न उघार । सलिल जिमि सिथिर सिवालह ॥
वरन वरन सोभंत । हार चतुरंग विसालह ॥
विमल अमल वानी विसाल । बयन वानी वर ब्रंनन ॥
उक्तिन बयन विनोद । मोद श्रोतन मन द्वंनन ॥
युत अयुत जुक्ति विचार विधि । वयन छंद कुयौ न कह ॥
घटि बढ्ढि मति कोई पढइ । तो चंद दोस दिज्जो न वह ॥
छं० ॥ ८२ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

इस ग्रंथ में चंद ने क्या क्या कथन किया है ॥

स्लोक ॥ उक्ति धर्म विशालस्य । राजनीति नवं रसं ॥
षट् भाषा पुराणं च । कुरानं कथितं मया ॥ छं० ॥ ८३ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

रासो का रसिया सरस उद्धारैं ॥

कवित्त ॥ चरन नीम अच्छिर सुरंग । पाट लहु गुरु विधि मंडिय ॥
सुर विकास जारी सु कुष्य । उक्ति रस गौरव नि छंडिय ॥
जुगति छोह विस्तरिय । सीढियन घाट सु बद्दिय ॥
मद्धि मंडन सेधान । याद्धि मंडन जस सद्दिय ॥

३८-पाठान्तर-विधि । विशाल । विच्चार । पढई । दिज्जो । दिज्जै ।

३९-कवि का यह संस्कृत श्लोक हमारे पाठकों के सदा ध्यान में रखने योग्य है। इस के सूक्ष्म विचार से हम जान सकते हैं कि षटभाषा और कुरान की भाषा के जो जो शब्द इस महाकाव्य में प्रयोग हुए हम देखते हैं वह कवि ने जानकर प्रयोग किये हैं और कुरान की भाषा शब्दों के प्रयोग का विषय कोई आश्चर्यदायक भी नहीं है क्योंकि मुसलमानों का प्रवेश भरत-खंड में शहाबुद्दीन गोरी के बहुत ही पहिले हो गया था। इस के अतिरिक्त हम को यह भी निश्चय मानना चाहिये कि चंद संस्कृत भाषा में निपुण था और षट्भाषा और कुरान की भाषा से भी अपरिचित नहीं था और जो जो छंद इस महाकाव्य में संस्कृत भाषा में लिखे हमारे दृष्टि आते हैं वे उस की संस्कृत-काव्य-रचन शक्ति के उदाहरण रूप हैं। यह श्लोक चंद के माने हुए पिंगल छंदसूत्रम् के अनुसार लौकिक अनुष्टुप अर्थात् अनुष्टुप छंद है। इस श्लोक के विशेष पाठान्तर अन्य पुस्तकों में दृष्टि नहीं आते किन्तु केवल विशाल के स्थान में विसाल और पुराणं के स्थान में पुरान पाठ है।

४० पाठान्तर-अच्छिर । सुर । अनुप । सुप । गौरिव । विस्तरिय । मेधान । याद्दि । विस्तरिय । विश्वकर्म धर्म । उद्धारिय ।

दूह ॥ करिये भक्ति कवि चंद हर । हरि जंपिय इह भाइ ॥
ईस स्याम जू जू कहै । नरक परंतह जाइ ॥
छं० ॥ ७६ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

स्लोक ॥ परात्परतरं यांति । नारायण परायणं ॥
न ते तत्र गमिष्यंते । ये दृष्यंति महेश्वरं ॥
छं० ॥ ७७ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

साटक ॥ गंगाया भगुलत्त वसन्न मसनं,लच्छी उमा दीवरं ॥
संखं भून कपाल माल असितं, वैजंति माला हरी ॥
चर्मं मध्य विभूति भूतिक युगं, विभूति माया क्रमं ॥
पापं विहरति मुक्ति अप्पन वियं, वीयं वरं देवयं ॥
छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ३४ ॥

कवि की आशा का स्वरूप वर्णन ॥

गाथा ॥ आसा महीव कव्वी । नव नव कित्तीय संग्रहं ग्रंथं ॥
सागर सरिस तरंगी । वोहथ्ययं उक्तियं चलयं ॥
छं० ॥ ७९ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

चंद का काव्य समुद्र कैसा है ॥

दूहा ॥ काव्य समुद्र कवि चंद कृत । मुगति समप्पन ग्यान ॥
राजनीति बोहिथ सुफल । पार उतारन यान ॥
छं० ८० ॥ रू० ॥ ३६ ॥

छंद प्रबंध कवित्त जति । साटक गाह दुहथ्थ ॥
लहु गुर मंडित खंडिय चि । पिंगल अमर भरथ्थ ॥
छं० ॥ ८१ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

---

३२ पाठान्तर–करिये ।
३३ पाठान्तर–यांति । जे यह श्लोक चंद के शुद्ध संस्कृत काव्य रचन का प्रथम उदाहरण है॥
३४ पाठान्तर–भगुलत्त । वसनमसनं । लछी । कपालमाल । चमभूतिकियुगं । मायाक्रमं ।
मुक्तिं । वरंदेवयं ॥
३५ पाठान्तर–कित्ती ॥
३६ पाठान्तर–ग्यान । यांन ।
३७ पाठान्तर–भरत्थ ।

कोई अशुद्ध पढ़नेवाला चंद को काव्य-संबन्धी दोष न दे ॥

कवित्त ॥ अति ढंक्यौ न उघार । सलिल जिमि सिष्षि सिवालह ॥
वरन वरन सोभंत । हार चतुरंग विसालह ॥
विमल अमल वानी विसाल । बयन वानी वर ब्रंनन ॥
उक्तिन बयन विनाेद । मोद श्रोतन मन हर्नन ॥
युत अयुत जुक्ति विचार विधि । वयन छंद कुत्यौ न कह ॥
घटि बढ्ढि मति कोई पढइ । तो चंद दोस दिज्जो न वह ॥
छं० ॥ ८२ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

इस ग्रंथ में चंद ने क्या क्या कथन किया है ॥

स्लोक ॥ उक्ति धर्मं विशालस्य । राजनीति नवं रसं ॥
षट् भाषा पुराणं च । कुरानं कथितं मया ॥ छं० ॥ ८३ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

रासो को रसिया सरस उच्चारें ॥

कवित्त ॥ चरन नीम अच्छिर सुरंग । पाट लहु गुरु विधि मंडिय ॥
सुर विकास जारी सु मुष्य । उक्ति रस गौरव नि छंडिय ॥
जुगति छोह विस्तरिय । सीढियन घाट सु बद्दिय ॥
मद्दि मंडन मेधान । याद्दि मंडन जस सद्दिय ॥

३८—पाठान्तर—पिष्षि । विशाल । विच्चार । पढई । दिज्जो । दिज्जे ।

३९—कवि का यह संस्कृत श्लोक हमारे पाठकों के सदा ध्यान में रखने योग्य है । इस के सूक्ष्म विचार से हम जान सकते हैं कि षटभाषा और कुरान की भाषा के जो जो शब्द इस महाकाव्य में प्रयोग हुए हम देखते हैं वह कवि ने जानकर प्रयोग किये हैं और कुरान की भाषा शब्दो के प्रयोग का विषय कोई आश्चर्यदायक भी नहीं है क्योंकि मुसलमानों का प्रवेश भरत-खंड में शहाबुद्दीन ग़ोरी के बहुत ही पहिले हो गया था । इस के अतिरिक्त हम को यह भी निश्चय मानना चाहिये कि चंद संस्कृत भाषा में निपुण था और षट्भाषा और कुरान की भाषा से भी अपरिचित् नहीं था और जो जो छंद इस महाकाव्य में संस्कृत भाषा में लिखे हमारे दृष्टि आते है वे उस की सस्कृत-काव्य-रचन शक्ति के उदाहरण रूप हैं । यह श्लोक चंद के माने हुए पिंगल छंदसूत्रम् के अनुसार लौकिक अनुष्टुप अर्थात् अष्टाक्षर पद छंद है । इस रूपक के विशेष पाठान्तर अन्य पुस्तकों में दृष्टि नहीं आते किन्तु केवल विशालं के स्थान में विसालं और पुराण के स्थान में पुरान पाठ हैं ॥

४० पाठान्तर—अच्छिर । सुरंग । समुष्य । मुष्य । गौरिन । सिढियन । मेधान । याहि । चित्ररंग । विश्वकर्म कर्म । उच्चारिय ।

घन तर्क उतर्क वितर्क जति। चित्त रंग करि अनुसरिय॥
विश्वकर्म कवि निर्मइय। रसियं सरस उच्चरिय॥
॥ छं० ॥ ८४ ॥ रू० ॥ ४० ॥

रासो का तत्त्वज्ञान कैसे होगा॥

अरिल्ल॥ तर्क वितर्क उतर्क सु जत्तिय। राज सभा सुभ भासन भत्तिय॥
कवि आदर सादर बुध चाहै। पढि करि गुन रासैा निर्बाहैा॥
॥ छं० ॥ ८५ ॥ रू० ॥ ४१ ॥

धर्म्म अधर्म्म न बुद्धि विचारै। नयन नारि निय नेह निहारै॥
कोक कला कल केलि प्रकासै। अरथ करै गुन रासै भाहै॥
॥ छं० ॥ ८६ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

पारासर जो पुत्त विहासह॥ सतवंती ग्रभ्भं गुर भासह॥
प्रब्ब अठार सवा लष लष्षै। तै भारथ गुर तत्त विसष्षै॥
॥ छं० ॥ ८७ ॥ रू० ॥ ४३ ॥

जो रासो को सुगुरु से पढ़ता है वह कुमति नहीं दरसाता॥

कवित्त॥ रासै बर बुद्धि सिद्धि। सुद्धि सो सब्ब प्रमानिय॥
राजनीति पाइयै। ग्यान पाइयै सु जानिय॥
उकति जुगति पाइयै। अरथ घटि वढि उन मानिय॥
या समान गुन आप। देव नर नाग बखानिय॥
भविइन भून ब्रनह गुनित। गुन त्रिकाल सरसइय॥
जो षढय तत्त रासै सुगुर। कुमति मति नहिं दरसइय॥
॥ छं० ॥ ८८ रू० ॥ ४४ ॥

४१-४३-इस रूपक के छंद का नाम कवि ने अरिल्ल प्रयोग किया है कि जिस का लक्षण यह है-

अरिल्ल॥ लघु दीरघ को नेम न कीजे। ऐसे ही तुक चार भरीजे॥
षोडश कला कली विच धारैं। छंद अरिल्ला शेष उच्चारैं॥

पाठान्तर -सुजतिय। मतिय। पढि शब्द के पहिले तै शब्द का पाठ पुस्तकान्तर में विशेष है। पटि। नारिनिय। कैाक। कला-कल। अरथ शब्द के पहिले तै शब्द किसी किसी पुस्तक में विशेष है। ग्रभं। लप्प। लप्पै। नारथ॥

४४ पाठान्तर -राज। नीति। पाई। उक्ति। पाइयै। पाईयै। उन मानिय। ब्रनह। सरसइय शब्द के पहिले किसी किसी पुस्तक में मध्य शब्द का विशेष पाठ है। सरसईय। दरसईय॥

रासो किस को अच्छा और किस को बुरा प्रतीत होता है ॥

दूहा ॥ कुमति मति दरसत तिहिं। बिधि विना न अव्वान ॥
तिहिं रासौ जु पवित्र गुन। सरसै ब्रन्न रसान ॥
छं० ॥ ८९ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

इस ग्रंथ के काव्य की संख्या का कथन ॥

दूहा ॥ सत सहस नष सिष सरस। सकल आदि मुनि दिष्य ॥
घट वढ मत कोऊ पढौ। मोहि दूसन न वसिष्य ॥ छं० ॥ ९० ॥ रू० ॥ ४६ ॥

रासो के ढँके हुए अर्थ के विषय में कवि का कथन ॥

गाहा ॥ अरथं ढंकिन सहसा। उघारै वनथ्थि एकलया ॥
मभ्भं मभ्भ प्रमानं। चतुर स्त्री हारयं जेमं ॥ छं० ॥ ९१ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

इस ग्रंथ के विषय का संक्षेप कथन ॥

कवित्त ॥ दानव कुल छत्रीय। नाम ढूंढा रष्पस बर ॥
तिहिं सु जोत प्रथिराज। सूर सामंत अस्ति भर ॥
जीह जोति कवि चंद। रूप संजोगि भोगि भ्रम ॥
इक्क दीह ऊपन्न। इक्क दीहै समाय क्रम ॥
जथ कथ्थ होइ निर्मये। जोग भोग राजन लहिय ॥
वज्रंग बाहु अरि दल मलन। तासु कित्ति चंदह कहिय ॥
छं० ॥ ९२ ॥ रू० ॥ ४८ ॥

अरिल्ल ॥ प्रथम राज चहुवांन पिथ्थ बर। गजधान रंजे जंगल्ल धर ॥
सुप सू भट्ट सूर सामंत दर। जिहि बंध्यो सुरतांन प्रान भर ॥
छं० ॥ ९३ ॥ रू० ॥ ४९ ॥

---

४५ पाठान्तर-दर्सन। तिहि। तिहि। रसानं ॥

४६ पाठान्तर-कोऊ ॥ इस में "सत सहस" से कवि एक लाख की ग्रंथ संख्या बताता है और यह भी कहता है कि घट वढ पढ करके मुझे दोष मत देना। कोई कोई कवि जो यहां सत शब्द से सात का अर्थ अनुमान करते हैं वह हमारी सम्मति में अयुक्त प्रतीत होता है ॥

४७ पाठान्तर-ढक्किन। नवथ्थि। मझ। मझ।

४८-५० पाठान्तर-रष्पस। तिहि। जिह। संजोगी। भोगी। उपन्ने। जोगराज। नाल-हिय। वज्रद्दवाहु। अरि दल मलन। कुत्ती। चंद ॥ ४७ ॥ सुर ॥ ४८ ॥ मित। बंधो। क्रित्ति। अप्पो। तिथि ॥ ४९ ॥

अरिल्ल ॥ इं कवि चंद मित्त सेवह पर। अरु सुहित समंत सूर बर ॥
बंधों कित्ति प्रसार सार सह। अब्बों बरनि भंति थिति थह ॥
छं० ॥ ९४ ॥ रू० ॥ ५० ॥

राजा परीक्षित की तक्षक दंशन और जन्मेजय की सर्पसत्र कथा ॥

हनुफाल ॥ इति हनूफालय छंद। कल बरनि बरनि सुकंद ॥
नहि नाल पिंगल जोर। दुज हूँतो दुजनिय भोर ॥ ९५ ॥
संसार बंधन दोय। इक पढ्यौ विद्य समोय।
तन देइ अच्छर एक। नहिं पिंग पिंगल मेक ॥ ९६ ॥
किहि काल मरन सुविप्प। लहि नाग रूप सु अप्प ॥
हरि हयौ बाहन आइ। तिहिं कह्यौ पिंगल चाइ ॥ ९७ ॥
दै विद्य रूप सु अड्ड। सो गयो छल करि सद्ध ॥
सो तच्छ बीर प्रमान। जुग जुगनि निश्चल ध्यान ॥ ९८ ॥
इक हुतो सिंगिय रिष्य। तप करै बाल विसिष्य ॥
नृप गयो बर आखेट। दिषि अप्प मृतक वेट ॥ ९९ ॥
बाराह रूप प्रमान। लग्गयो सु ब्रह्म धियान ॥
दह बार बूझ्यौ राज। दुज दिय न उत्तर काज ॥ १०० ॥
लखि चित्त चिच सपूत। यों भयो रिष अवधूत ॥
भयो ताम तामस राज। लियो गोन मंच विराज ॥ १०१ ॥
कम्मान कोनक संधि। न्टपराज दुज गलबंधि।
फिरि गयो ग्रंह प्रमान। आयो सु बालक थान ॥ १०२ ॥

---

५० दृष्टि में रखने की बात है, जैसे महाभारतादि महापुराणों में समग्र ग्रंथ के आशय का सार एक अथवा दो अथवा तीन अथवा चार श्लोकों में वर्णन किया गया है वैसे ही चंद ने भी अपने इस महाकाव्य का सार इन (४८ से ५० तक) तीन रूपकों में वर्णन किया है ॥

५१ पाठान्तर–हनुफाल। हनूफाल। विद्यस। मोय। न। न। अछर। हयौ। तिहिं। वाथि। दे। तच्छ। जुगिनि। हुंतो। रीष्य। बालवि। सिष्य। बुझ्यौ। दियऊ। चित्र। चित्रस। कोनक। नवि। तुल्लि। तिहिं। अति लोल दिष्यि रिषि लोइ। लोई। समोई ॥

हमारे पाठकों को ध्यान में रखना चाहिये कि चंद कवि ने इस कथा को महाभारत के आदि पर्व के अध्याय ४९ से ५८ तक और भागवत के पहिले स्कंध के अध्याय १८ और १९ और दूसरे स्कंध के पहिले १ अध्याय से उद्धृत और संक्षिप्त करके वर्णन किया है। यदि कोई इस कथा

खिजि कह्यौ नैन भरीव। तम नाम रूप सरीव॥
पै जुन्न बालक बुद्धि। गनि गर्भ क्यौं न वितुद्धि॥ १०३॥
तिहि तजिय तात हमान। धरि कोप अंग निधान॥
करि क्रोध अंखि सुरत्त। हविजानि लग्गिय लत्त॥ १०४॥
जिहि जियत गुचह अप्प। को तात लभ्भय दप्प॥
रिस करौं जोव प्रमान। जरै तीन लोक अमान॥ १०५॥
रिस तेज कंपत बाल। दिष्यौ सु तात विसाल॥
वह लग्गि ब्रह्म धियान। भयौ कोटि तामस नाम॥ १०६॥
अति ना रत दिखि रिखि लोइ। दिख्या सु तात समोइ॥
छं० ॥ १०७ ॥ रू० ॥ ५१ ॥

कवित्त ॥ जोरि हथ्थ थुति मंच। फिर्यौ पर दच्छि लग्गि पय॥
रुधिर नयन आरत्त। कंठ लग्गयौ सु मुक्कि भय॥
भूत दार वीभार। गाजि आये सुत मग्गं॥
भर भर भर उच्चार। रोस दावानल लग्गं॥
जिहि हन्यौ अप्प मो तात गर। गनिव सत्त दिन में प्रमति॥
जो हत्यो अप्प तच्छक सुब्रत। कै काया अब्रत सुगति॥
छं० ॥ १०८ ॥ रू० ॥ ५२ ॥

साटक ॥ धंन्यो धंन्य सु बाल तापन तपं। बालं बलं विव्हलं॥
सोयं पुच कि सोस दोस चिविधं। बानीय गद् गद् गलं॥
एनं भूप विसाल भूमि भरसं। धर्म्मं धरा राजनं॥
तं तेजं नवि चोर व्याघ्र विघनं। नैवापि संतापयं॥
छं० ॥ १०९ ॥ रू० ॥ ५३ ॥

और चंद के काव्य को उक्त भारत औ भागवत से मिलाकर सूक्ष्म विचार कर देखे तो वह निः-सदेह यह अनुमान कर सकता है कि चंद संस्कृत भाषा अच्छी जानता था और यह बड़े बड़े ग्रंथ भी उसके पढ़े हुए थे क्योंकि चंद के कोई कोई छंद उक्त ग्रंथों के श्लोकों के ठीक अनुवाद प्रतीत होते हैं। इस हनूफाल छंद के चारों पाद बारह बारह मात्रा के होते हैं॥

५२ पाठान्तर–फिर्यौं। लग्यौ। विभार। जाज्जि। आइय। आईय। हत्यो। प्रमत्ति। प्रमित्त कैकाया। सुयति॥

५३ पाठान्तर–धन्यो धन्य। तनं। बाल। भरनं। तेजंन। विचोर। विघन॥

दत्वा आप मिदं श्रुतं गुरु वरं । मृत्यं च राजा नयं ॥
सत्यं सप्त दिनानि पानि पवरं । नैवं चलंते पयं ॥
त्वं आपं चय लोक जालति वरं । भुक्ते वरं पुत्रयं ॥
एकं दीह सुतप्य प्रापति पदं । त्रैलोकयं चासयं ॥
छं० ॥ ११० ॥ रू० ॥ ५४ ॥

दूहा ॥ सब रिषि में मो पुत्र तू । वय दिक्खौ परमान ॥
मानहु डम्बर में उदै । बढति कला वर भान ॥
छं० ॥ १११ ॥ रू० ॥ ५५ ॥

कवित्त ॥ पुत्र छंडि रिखिराज । जाइ न्रप थान सु वत्ता ॥
पंथ कुलच्छ संग्रह्यौ । रिष्पि आपान विरत्ता ॥
अति सु दीन सिर नीच । ऊंच नहिं भाल उचाइय ॥
दिष्टि दिष्ट राजन चरित । मंगन न्रव आइय ॥
एकंग एक जोगिन्द्र वर । धातु न वंधे हथ्थ पर ॥
करि काज रिष्पि आयौ घरहि । उरह धरद्धर लग्ग डर ॥
छं० ॥ ११२ ॥ रू० । ५६ ॥

गाहा ॥ जो जंप्यो रिष पुत्तं । प्रलयं होइ सत्तियं कालं ॥
जं भावइ तं भ्रंम्मं । सो किज्जै राजनं बलयं ॥
छं० ॥ ११३ ॥ रू० ॥ ५७ ॥

चोटक ॥ न्रप छंडि प्रजंक प्रजंक पला । मुहु मुंदिरु भानक मोद कला ॥
न्रप दीम चल्यौ बहु चित्त चितं । सुचल्या जनु पोंनय पीप पतं ॥
॥ छं० ॥ ११४ ॥

पतनं गुर जानि चरन्न लग्यौ । बहुस्यों रिषिराज सु प्राज दग्यौ ॥
छं० ॥ ११५ ॥ रू० ॥ ५८ ॥

---

५४ पाठान्तर–मृतंच । मृत्यंच । पानिपवरं । पय । आप ह्वालति । तैलाकयं ॥

५५ पाठान्तर–मै । मे । तूं । परसान । संवत् १६४७ की पुस्तक में हमारा लिखा पाठ है और इतर पुस्तकों में "मानहु इदी वर उदै" है ॥

५६ पाठान्तर–जाय । संपत्तो । आपन । ऊंच । नह । नहि । द्रिष्ट । न्रप । आईय । जोगिन्द । हथ । किहि । घरह । उर । घर । अद्धर । लगि ॥

५७ पाठान्तर–झो । झंप्यो । पुत्रं । भावै । भाव । इतं । जो । कीजे ॥

५८ पाठान्तर– त्रिप , न्रप । फला । इला । मुहुमंदिरु । भान । कमोद । न्रप । बहुचित । जुनु । पोनय । बहुर्यो । किसी पुस्तक में सु शब्द नहीं है ॥

गाहा ॥ मनो रिषि हथ्यं प्रानं । वल्मीकं जीवनं गुरयं ॥
जो फल लग्यौ पच्छ । तौ कालं रिप सो वरयं ॥
छं० ॥ ११६ ॥ रू० ॥ ५९ ॥

दूहा ॥ इय चिंतय रिषि राज गुर । पुच्छिय ग्रन रिष राज ॥
क्यों उधार होइ स्राप वर । कहो कृपा करि आज ॥
छंद ॥ ११७ ॥ रू० ॥ ६० ॥

कवित्त ॥ मद भंडी इक पुरुष । निसा भद्दव अध रत्ती ॥
वरगना अंगने । डस्यौ अहि परत धरत्ती ॥
सुरापान आमिष्य । गहो करहुं तव कुट्टिय ॥
उच्चारत हा राम । जाय वैकुंठ सु ठट्टिय ॥
परताप नाम सद गति भइय । कीर कहत परिषत्त सम ॥
भागवत्त सुनहि जो इक्क चित । तौ सराप कुट्टय अक्रम ॥
छंद ॥ ११८ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

ज दिन स्राप तुहि भयौ । त दिन परिसोक घर उघर ॥
पसू पंषि जल छंडि मुनिवर समाधि उर ॥
छंडि चक्र हरि रष्षि । कूष तूं मात परिष्षत ॥
पंडव वंस प्रतष्ष । तपत भ्रम धारी दिष्षत ॥
अचरिज्ज कहा तुम उद्धरन । होइ प्रसन सुकदेव कहि ॥
दिन सत्त अवधि अंतर वहुत । हरि सु उद्धरै छिनक महि ॥
छं० ॥ ११९ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

धरनि रूप करि धेन । भ्रम्म वक्करा संग लीये ॥
झारषंड महि चरत । देषि कलियुग कुपि हीये ॥
चरन तीन भज्जंत । प्रजा सब आय पुकारिय ॥
चढि करि तें न्रपराज । वध्य परि ताहि वक्कारिय ॥

---

५९ पाठन्तर -प्रान । वलीकं । लगो । पछू । पछं । तो ॥ इस के छंद का नाम सं० १६४७ की पुस्तक में गाथा है ॥

६० पाठान्तर-चितन । रिपिराज । पुछिय । होय । आप ॥

६१-६३-ये तीन रूपक सं० १७७० और सं० १६४७ की पुस्तक के अतिरिक्त उससे पीछे की जितनी पुस्तक अब तक हमारे देखने में आई हैं उन सब मे है परन्तु जब तक उन से भी पहिले की पुस्तकें न प्राप्त हों तब तक इन रूपकों को हम निश्चय रूप से क्षेपक नहीं कह सकते इनके

किहि कीर अंग लग्गौ परस। तिहि कारन द्रुह उपज्जिय॥
आषेट जाय पन्नग मृतक। सिंगी, गर घतिय, षिज्जिय॥
छं० ॥ १२० ॥ रू० ॥ ६३ ॥

चोटक॥ इति चोटक छंद सुमंत गुरं। दिन सात पढ्यौ हरि गंग कुरं॥
त्रितकाल विकालह चित्त धरं। छित पत्त छिमा पितु लाइ भरं॥
छं० ॥ १२१ ॥

नृपराज परीछत तत्त गुरं। धरि ध्यान कह्यौ बदलीय धरं॥
इन काल सु तप्पय देव नरं। नृप ग्यान सुन्यौ वपु व्यास वरं॥
छं० ॥ १२२ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

साटक॥ या विद्या बदलीत राजन गुरं। आपो रिषं तारयं॥
शून्यं राज सु इन्द्र धारन धरं। विद्या अमारा पुरं॥
अम्मोयं सुघनं तु मातुल इयं। मोहं हरित्तारयं॥
सो ध्यानं रिषिराज राजन बरं। पापापहारं परं॥
छं० ॥ १२३ ॥ रू० ॥ ६५ ॥

चौपाई॥ अति किसलय सुस कोमल अंग। जानु कि सुक्किय देहिय अंग॥
किष्ण दिपायन दीपन व्यास। कोपिन एकिन मंडल चास॥
छं० ॥ १२४ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

दूहा ॥ किसनदीप दीपायनह। कही रिषी सब बत्त॥
जु कछु सराप सु उद्धन्यो। परनराज गुरु गत्त॥
छं० ॥ १२५ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

कवित्त॥ तिते आय बर ब्रह्म। अप्प रिषि रिषि सु पुकारं।
कै तच्छक नृप हतहु। न तरु तच्छक मर धारं॥

पाठान्तर ये हैं—अधरत्ती। वारंगन। अंग। ने। काहुं। भगवत्त। जोइ क्कचित ॥ ६१ ॥ जदि। म। तदि। न। परिसोक। घर। रवि। परीवत। प्रतप्य। प्रतपि। प्रसच्च। धम। संग। लिये। हिये। वप्प। परितापि। घतिय ॥ ६३ ॥

६४ पाठान्तर—तोटछंद। किलं। पिवुलाइ। त्रितकाल। तत। नून॥

६५ पाठान्तर—गुरु। यम्मोयं। सुधन। मातुल। तारयं। ध्यान। राजं॥

६६ पाठान्तर—सु। सकोमल। देहीय। अयंग। किसा। दीपायन। चन्द्रायना॥

६७ पाठान्तर—रषी। वत। जु। उधयौं। आगत्त।

६८ पाठान्तर—तछक। हतहुं। तजक। भई। भइय। मान। तो। निधान। धरि। चित। ध्यान।

उभय चित्त चिंतयौ। भइय श्री नाग सु मानं ॥
न्रप न हतों तौ मरन। अहित न्रप रिष्य,निधानं ॥
दुअ भंति चित्त चिंता सुचित। धरिथ ध्यान चित जान जिय ॥
सत विप्प आइ लिय बोर बर। आय हथ्थ राजन सु दिय ॥
छं ॥ १२६ ॥ रू० ॥ ६८ ॥

कवित्त ॥ दिय हथ्थं मधि कीट। सुफल लेइ राजन धारिय ॥
क्रल लंङ्घन लागंत। निकरि कीटं क्रित कारिय ॥
क्षिनक मधि बाढंत। भए फुनि पंचनि नारिय ॥
न्रपय हुकम मुष दियौ। कनौ सो काम करारिय ॥
फिरि आय राय दिष्टह बचिय। क्रम्म मड्डि उसनह फनिय ॥
जं जाह जीह कलि हंस हत। भइय देह ब्रन अप्पनिय ॥
छं० ॥ १२७ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

तब जनमेजय पुत्त। दिहा दच्छिन जन मुक्किय ॥
तहां धन अंतर वेद। दरक चढ़ि लैन सु तक्किय ॥
करिय षेद चलि अप्प। सहस चेला संग धारिय ॥
आस्तीक जु धुर नाग। तब सु तक्कक विचारिय ॥
छल तक्कि रूप लकुटी भइय। ग्रहिय गुरु पुट्ठें डसिय ॥
भष काज सिष्य सिष्यां दइय। विप्र रूप तक्कक हँसिय ॥
छं० ॥ १२८ ॥ रू० ॥ ७० ॥

दूहा ॥ आस्तीक जु गूर वैर कजि। पढि विद्या ग्रह नाग ॥
जनमेजय न्रिप सों मिलिय। मंड्या अप्पन जाग ॥
छं० १२९ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

---

६९ पाठान्तर-भरा। किसी किसी पुस्तक में सो शब्द का पाठ नहीं है। आई राइ। दिष्ट। भईय। भईये ॥

७० पाठान्तर-दच्छिन। जनमु। किय। धन। अंबरवेद। सुत। किय। तिछक। छलन। कि। भईय। पुट्ठ। सिष्य। सिष्या। दरह। तछक।

७१ पाठान्तर-तिहित। बदस। यत। विर्प्य। सचारत्र। रष्य्य। जानलु। मात। नृहरिय। मछ। होम। मंत। तछक। पतौ। कनी। मंत्र ॥

कवित्त ॥ ति छित वैर सिहु बरन । सपत विप वोन्न सु चारव ।
नृप जनमेजय नाम । भयौ तामस उत गारव ॥
तात वैर सिसु दष्षि । जियन सोइ लोइ विचारै ॥
जानिहु वानन हरिय । मच्छ बंध्यौ जनु जारै ॥
होमंत सक्ति तच्छक सु नग । इन्द्र सरन पत्तौ तवै ॥
सुनि क्रन्न राज तामस भयौ । करहु मंत्त साधन सवै ॥
छं० ॥ १३० ॥ रू० ॥ ७२ ॥

भुजंगी ॥ करी अस्तुती यं स्वहा इंद्र जोगं । तहा इंद्र आयौ सुरं नाग भोगं ॥
इतं देव सादेव सारन्न आयौ । तिनं काटि दीयंत सो पाप पायै ॥
छं० ॥ १३१ ॥ रू० ॥ ७३ ॥

कवित्त ॥ अभय दान आतुरह । अंन उग्राह पान दत ॥
सरन रष्षि भय नरन । कढ्ढि मुक्त हित्त छंडि सत ॥
तथ लगि कग्ग कराल । स्वान मसन ज वासै ॥
रुधिर चरम अरु असति । वस्त वस्तन ज नासै ॥
जो इय जोइ जग उच्चरै । जननि जाय अभ्भह गरै ॥
तिन काज राज प्रारष्षियै । जियत तक्क तन उब्बरै ॥
छं० ॥ १३२ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ नृप चिंता बहु लग्गि मन । ज्यौं जुथ वाय चिकाल ॥
यौं नृप राजत राज कुल । पुनर जनम दुष ज्वाल ॥
छं० ॥ १३३ ॥ रू० ॥ ७५ ॥

---

७२ पाठान्तर--करि । अस्तुति । स्वाहा । सारन । तिन । सह ॥ इस रूपक के छंद का नाम हम ने शोध करके भुजंगी रक्खा है और सं० १६४० की तथा सं० १७७० की पुस्तकों में भी यही नाम लिखा है किन्तु इतर पुस्तकों में चंद्रायना नाम लिखा है वह अशुद्ध है ॥

७३ पाठान्तर-आतुरहे । अन । कढि । मु । कहित । तुय । उ । उं । जोइयै । समह । कारज । प्रार्थिय । उबरै ॥

७५ पाठान्तर-त्रिन । पुनरजनम ॥

वर्तमान आबू पर्वत के उद्धार की कथा ॥

उस तक्षक का आबू पर अपना अर्बुद नाम धर रहना ॥

कवित्त ॥ स तक्क आबू प्रमान । मंडीयौ सू अचल कर ॥
गरल गह्वर तें बिडुरि । सुडरु रष्यौ जु मंत धुर ॥
अचल ईस प्रति नाम । अचल आचित्त अचल घर ॥
देव देव प्रारथिय । इन्द्र मुक्किय छंडिय धर ॥
अरबुद नाम धर जुत्तिया । दूर नष्वित थहराइया ॥
कलपान पुहप अरु बस्त गुरु । छांह गुरु गुर छाइया ॥
छं० ॥ १३३ ॥ रू० ॥ ७६ ॥

गालव ऋषि के शिष्य उत्तङ्क का उपाख्यान ॥

दूहा ॥ सो आबू उद्धार विधि । कहों कथा*परबंध ॥
ज्यौं अनादिश्रा रिष्य मुष । सुनी सु गुर समबंध ॥
छं० ॥ १३४ ॥ रू० ॥ ७७ ॥
गुरु गालव उत्तंग सिष । बहु विद्या पढ़ि जाम ॥
पय लग्गौ गुर राज कैं । कहौ दक्कना काम ॥
छं० ॥ १३५ ॥ रू० ॥ ७८ ॥
गाथा ॥ गालव रिषि शिष्य उत्तंग । दिय विद्या बुध क्रम क्रम अंग ॥
गुर दष्षिन कज्जैं गुर जच्चै । गुर पतनी तब मंगि बिरच्चै ॥ १३६ ॥
कुंडल जच्छि बिच्छिया कानं । अप्पौ जासु दष्षिना दानं ॥
दिवस अठुमो ब्रत्त अषंडै । चरचों दान विप्र अुत मडै ॥१३७॥

---

७६ पाठान्तर–सो । तत्तक । आ । चित । वर । मुक्किय । छंडीय । जुत्तिय । तष्पित । छाईया ॥ स=वह का वाचक और तक्ष=सर्प=तत्तक का वाचक जैसे रू० ५१ की ८ तुक में तच्छ प्रयोग हुआ है ।

७७ पाठान्तर–रिष्य ॥

७८ पाठान्तर–उतग । जास । कै । दछना ॥

* हमारे पाठकों का ध्यान में रखना चाहिये कि चंद अर्बुद के उद्धार की कथा अर्बुद खण्ड अर्थात् आबू माहात्म्य नामक संस्कृत ग्रंथों से संग्रह करके वर्णन करता है । जिन पाठकों के पढ़ने में अथवा सुनने में ये ग्रंथ आए हैं वे जान सकते है कि कवि ने थोड़े में बहुत ही आशय लिया है और उत्तङ्क का उपाख्यान महाभारत के आदि पर्व के पौष्यपर्वाध्याय नामक द्वितीय अध्याय में से भी कवि ने संग्रहीत किया है ॥

७९ पाठान्तर–उत्तंग । दछिन । गुरपतनी । मंगि । दछिना । अपडे । मंडे । करे । सपनो । शिप । प्रससे । ससप्पै । तष्यक । वीव । रपै । अचल । दुपै । इपे । ठठैा । ताम विराम ।

चल्यौ रिष्षि चमंके ताम। गुर गुरनी कों करे प्रनाम॥
चिंतत दुष्ट चल्यौ बर राहं। संपत्तौ यौं सद न्रप ठाहं॥ १३८॥
जच्च कुंडल षिचिय पासं। सोइ समप्पै विधि बर तासं॥
विप्र प्रसंसै समपे कुंडल्ल। कच्चि डर तच्छक बीच नीच पल्ल॥ १३९॥
लै कुंडल चल्यौ हरषे मन। आप्यौ राज विप्र अन्यो अन॥
क्रम्यौ विप्र राह चंचल चर। छलि तच्छक लीने' कुंडल वर॥ १४०॥
क्रमयो विप्र पुठ्ठि अति चंचल। धरि अहि रूप सु गयो रसातल॥
बिल दूष्षे ठढ्ढौ रिषि तामं। दुमत चित्त भय विहत विरामं॥ १४१॥
अस्तुति इन्द्र करन लग्गो रिषि। नंष्यौ वासव षिनक वज्र सिषि॥
ब्रित अम्रित दीयो आषंडल। धर रिषि तक्कि षात बिल मंडल॥१४२॥
पैठो विप्र नागपुर ठामं। धोम प्रगट्टै मंच विरामं॥
दूष्यौ पुरुष एक षट आरं। फेरे चक्र तास फिरि तारं॥ १४३॥
दूष्षो बाह बाह सत बारं। उंच तेज आजेज अपारं॥
यैां नर नारि अषै बर नामं। वे अह हथ्थ वेइ सम कामं॥ १४४॥
चिसत सठ्ठि ता तंति ठायं। अड्ड सेत्त स्यामं अध तायं।
अहि धुत्तेन उपाइ सबाहं। फुंकन पुंक्क सधुम्म सराहं॥ १४५॥
पुंकत पुंक्क धार धुस चल्ली। लग्गै नाग अंग सह थल्ली॥
प्रगटे अंसू पलक उध धत्ति। अप्पो कुंडल नाग मान हनि॥१४६॥
ग्रिह कुंडल अप्पे गुर वामं। गुर विद्या अप्पी अभिरामं॥
दुज मर बज्र पैठ जेहा धर। बिल अम्रित तिह थांन मंडि थिर॥
छं० ॥ १४७॥ रू० ॥ ७९॥

दूहा॥ बिल अथाह तिहि थान भय। बहुत संवक्कर वित्त॥
पृथुल कराल कराल भैा। जिम जिम काल बितित्त॥
छं० १४८॥ रू०॥ ८०॥

षर्ज्र । आम्रत । दियो । रिकि । पैठो । बेठो । धोमं । ठाम । विराम । फेरे । वाह । जो । तामं । वे । हथ । वे । ईस । मकाम । वेदम । सठि । ता । तंति । ठायं । उपाय । स्याम । धुत्तेन । फूंकत । सधुम । धुम । लगे । थली । अमू । कुंड । अप्यौ । हित्ति । मनि । यही । राम । पेठि । आम्रेत । अम्रित ।
८० पाठान्तर–घित । ग्रिथुल । मयार । बिचित ॥

वशिष्ट ऋषि का आबू पर तप करना और उन की नंदनी गौ का अथाव बिल में गिरना ॥

पद्धरी ॥ किहि समय नाम वाचिष्ट रिष्षि ॥ धर अटन करत सम आइ सिष्य ॥
सिवपुरि सु सोभ तारन्न ब्रन्न । सुभ थान दृष्य आमोद मन्न ॥ १४९ ॥
बर दृष्षि ठाम विश्राम ताम । अनेक रिष्षि किय तत्त विश्राम ॥
तिहिं समय वरंतिय होम धेन । सामीप समंपी बिलह तेन ॥ १५० ॥
अध दृष्षि दृष्षि भ्रंमेव गाव । मुक्केव परिय मझ्झि बिल अथाव ॥
हुअ होम काल आवी न धेन । चिंतै सु रिष्षि कारन्न केन ॥ १५१ ॥
बल जंप्प लह्यौ गो पात थान । तहां गयो रिष्षि सिष्यह समान ॥
उतकंठ बिलह ठट्टौ सु रिष्षि । नंदिनिय नाम कहि सदिनि सिष्षि ॥ १५२ ॥
क्रन्दन्न गात्र संपत्त वत्त । हंभार कियै सुर उच्च तत्त ॥
सुन्ने वचन्न सात्त्व भम्म । चिंत्ते सु रिष्षि निक्कास क्रम्म ॥
छं० ॥ १५३ ॥ रू० ॥ ८१ ॥

वशिष्ट ने अपनी गाय निकालने को गंगा का आह्वान किया ॥

दूहा ॥　चिंत अनेकह विधि विवर । बिल नंदिनी निकास ॥
मंच रूप गंगा तवन । लगो करन रिष तास ॥
छं० ॥ १५४ ॥ रू० ॥ ८२ ॥

भुजंगी ॥ नमो देवि गंगे जयो मात गंगे । द्रवै रूपका मंडलं ब्रह्म संगे ॥
चयं पथ्य चेयं गुनं ते निवासं । वरं वृंद वृंदारका सेव जासं ॥ १५५ ॥
हिमं सैल भेदे सु भेदे धरायं । सजै रूप कायं सुरायं नरायं ॥
मधू छेदनं पाय प्रावेस कारी । सतं मुष्य सामुष्य सामुद्र धारी ॥ १५६ ॥
हली सेत भझ्झी जलद्धी समुद्दं । अवै सेष पीरं सु मानौ समुद्दं ॥
धराचह्लि भागीरथी विश्व भागं । मिटै अघ्घ ओघं तनं दुष्य दागं ॥ १५७ ॥

---

८१ पाठान्तर–वासिट्ट । सिव । पुरिस । सपन्न । दृपि । भ्रमेव । सपतीय । मुज्जेव । परित । हबिल । आव्रीत । व्रीन । आव्रीन । चितै । गोपात । सिष्यहि । उतकंठ । ठट्ठौ । सदति । क्रचेन । व्रचेन । क्रनेष । संभार । रंभार । दंभार । ऊंच वछन । सावछ । भ्रम । वित्तै । रष्यि निरक्कास । क्रम ॥

८२ पाठान्तर–अनेक । ह । निकासी लगै ॥

सुभं उच्च अंदोल बीचं बिराजं । मनो स्वग्ग आरोह सोपान साजं ॥
नरं नीच नीरं तटं स्रोन प्रम्मं । तवै अग्ग देवं गुनं अव्व अम्मं ॥ ११८॥
परै मभभ्क कल्लेवरं धंषि कुट्टी । भषी कान्नलं गिद्धि गोमाय लुट्टी ॥
तटं स्रोन भ्कल्लै थलं वारि हल्लै । पिनं मझ्झि अंदोल वीचं वहल्लै॥११९॥
तिनं आनमं देह आनूप धारै । वरं उर्वसी चामरं वंक नारै ॥
धरै ध्यान भावं तिनं दुक्ख दव्वै । मिटै मज्जनं अग्घ साजंम सव्वै॥१२०॥
भ्कलक्कंत गंगा तनं तेज सोहै । मनो दाहनं दाह दाहंन्न जो है ॥
सुयं गंग गंगे सु गंगा प्रकारं । हरै नाम गंगा जमं किं करारं॥ १२१॥
त्रिपथ्थी त्रिगामी विराजंत गंगा । महा स्वग्ग लोकं नरं नारि अंगा ॥
रहट्टं घरी ज्यौं फिरै तीन लोकं। महा दिव्य धुन्नी नवं निग्गम लोयं॥१२२॥
कलाली गुहीरं गुफा फारि नागं । प्रगट्टीय मातंगि मानुष्य भागं ॥
रही नष्य अष्षी सुयं ताप भंजै । महा वहराजं दिवं दुर्ग रंजै ॥ १२३॥
भयं भीषमं मात वहु पाप षंडै । जमं ज्वाल ज्वालं तमं तेज चंडै ॥
रहं रोह रंगी हरं सीस गंगे । महा मोहनी मात दुग्गा उतंगे ॥ १२४॥
वरं काल काला जलं स्वेत रूपं । तहां उप्पनी मात आभंग नूपं ॥
भई गाम सद्दं सु हासुद्द सेतं । इस्यौ नाम गंगा उतंगा विहेतं ॥१२५॥
हरद्दार द्वारं कला तूं प्रगट्टी । करो मुक्ति मग्गं महा पाप मट्टी ॥
तिनं नाम लोनै क्रियं तोय पीजै । क्रियं संम्रनं देव संज्यान कीजै॥१२६॥
कियौ गाहि तें पंथ उग्गाहि साजं । तुंही तापिनी तेज तूं तेज राजं॥
तुंही मध्य वारानसी मोष दैनी । कली काल दुष्षं कटन्नं क्रपैनी ॥
छं० ॥ १२७ ॥ रू० ॥ ८३ ॥

दूहा ॥ जव लगि रज तन मात की । रहै अंग सो लाइ ॥
तव लगि काल न संपजै । क्रम्म पाप सव जाइ ॥
छं० ॥ १२८ ॥ रू० ॥ ८४ ॥

---

८३ पाठान्तर-देय । द्रवे । रूपका । पृथ । गुनंत्रे । निकास । व्रद । व्रदारका । सुप । सामुप । जलधी । समद्दं । सामुनै । धरा । चल्ली । नीर नीचं । स्रग । कलेवरं । मधि । वीचिव । मंजने हल्लै । अप सा । जम । दाहनं । जोहै । त्रिपंथी । नाग । घटा ताम । मंगा । महादिव्य । नयं । निगम । महावद्रराजं । पदिव दुर्गं । भीषम । जाल । महामोहनी । अनूपं । धयौ । समरनं संभ्यान । मोक्ष । मोह । दुपन ॥

८४ पाठान्तर-सोलाइ ।

गाथा ॥ क्रम्मं अघं सब भंजै । दिव्यं करै देह सा रूपं ॥
सुरगं करै सु गामी । अह्वं नाम रसन उच्चारं ॥
छं० ॥ १६९ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

मंदाकिनी गंगा का उभरना और गौ का तिरकर निकलना ॥

दूहा ॥ सुनि गंगा सुवयन्न रिष । उभरी आय प्रमान ॥
ताहि तिरंतह नंदिनी । आई तट बिल थान ॥
छं० ॥ १७० ॥ रू० ॥ ८६ ॥

रिष्य सिष्य धाये सु सब । सब । धर कड्डी तँह गाव ॥
सो कड्डवि मंदाकिनी । गइ पयाल फिरि ठाव ॥
छं० ॥ १७१ रू० ॥ ८७ ॥

बिल अथाह दिष्यौ सु रिष । चित चिंता परवत्त ॥
को निकसै या माधिगत । गात भयानक्क षत्त ॥
छं० ॥ १७२ ॥ रू० ॥ ८८ ॥

वशिष्ट ऋषि का उस अथाह बिल बूरने को हिमालय के पास एक पुत्र मांगने जाना ॥

बिअष्षरी ॥ चिंते रिष्षि देखि बिल दुक्कित । उर लग्गी अति चिंत मभिक्क हित ॥
पूछवि रिष्य सिष्य कत कामं । लहै न कोइ बुद्धि बल तामं ॥१७३॥
चिंते ध्यान अप्प रिषि राजं । याहि सपूरन को थिर काजं ॥
चिंतत रिष्षि ध्यान उर भासं । है सत पुत्त हेम गिरि जासं ॥१७४॥
एक पुत्त जाचों तिन पासं । बिल पूरै पूरै उर आसं ॥
क्रम्यौ राज रिषी दिसि उत्तर । देषी मन आनँद दिव्य धर ॥१७५॥
गौ रिषि राज पास गिर राजं । दुष्य अग्ग पति आसन साजं ॥
मैंना सहित आय पग लग्गे । अरघ पाद करि अचवन लग्गे ॥
छं० ॥ १७६ ॥ रू० ८९ ॥

८५ पाठान्तर-क्रम । सारूपं । सुगामी ॥

८६ पाठान्तर-सुनयन । तिरंत ॥ ८६ ॥ धाए । कढी । तहां । कढवि । गई । ठांव ॥ ८७ ॥ परयत । मधि । पत ॥ ८८ ॥

८९ पाठान्तर-चिति दुक्रत । कोई । सपूरन । नास । हेमगिरि । पुत्र एक । पू । पूरं । रिषि । उत्तर । मान । रिषिराज । गिरि राजं । दुष्ये । मेना । पय । लागे ॥

दूहा ॥ सुनि सुवचन गिरि राज कौ। कहि रिषि कारन षात ॥
पुत्र एक जखं तुमहि। गरित सपूरन गात ॥
छं० ॥ १७७ ॥ रू० ॥ ९० ॥

हिमालय का अपने सब पुत्रों को ऋषि का अभिप्राय कहना ॥

कवित्त ॥ तब सुचिंत गिर ईस। पुत्र सद्दे निज स्रव्वं ॥
कहि कारन षिति षात। अप्प रष्यौ कुल अव्वं ॥
इह सुरिष्षि सुत ब्रह्म। नाम वाचिष्ट महा मति ॥
धर्म पार तप पार। पार श्रुत कर्म परम गति ॥
जच्चे सु सोइ तुम एक कहुँ। चिंतिय चा कारज्ज रिषि ॥
संब सो वास विल उद्धरौ। पद पामौ परमुच्च अषि ॥
छं० ॥ १७८ ॥ रू० ॥ ९१ ॥

हिमालय के बड़े पुत्र का उत्तर देना कि वह भूमि निषिद्ध है ॥

कवित्त ॥ तब अष्षहि अग्र पुत्त। सुनहु गिरि राज चिंत चित ॥
पिता वाच रिष काज। कोइ छंडहि सुकम्म हित ॥
उह सु भूमि निषेद। थान जानहु तुम सव्वं ॥
ध्रंम क्रंम अरु देव। सेव जाजन नहि अव्वं ॥
कुच्छित्त देस कारन विक्रम। तहँ सु केम किज्जै गमन ॥
अप्पियै प्रान मंगै जो रिषि। पै दुष्ट थान थप्पहिँ न तन ॥
छं० ॥ १७९ ॥ रू० ॥ ९२ ॥

वशिष्ट का प्रत्युत्तर दे कहना कि वह भूमि बड़ी रम्य है ॥

कवित्त ॥ तब जंपे सुत ब्रह्म। सुनौ गिरि राज पुत्र सम ॥
इहि सु भौमि विल थान। रम्य मंडहि सु तप्प छम ॥

९० पाठान्तर-गिरिराज। संपूरन ॥
९१ पाठान्तर-ईसं। रप्यो। महामति। परमगति। कहुं। संव। संवसो। परमुच ॥
९२ पाठान्तर-गिरिराज। सुक्रम। स्व्व। अब्व। तहा। कहहां। पै ॥
९३ पाठान्तर-जंपै। सुम्र। गिरिराज। तिय। गंधर्व। मूर्त्तिमान। सज्जै। तिसर। धाम्र। महि ॥

सबै देव इहि बास । तिथ्थ सब्बै रिषि सब्बं ॥
विप्र ब्रह्म बर वह्नि । सु गुन गंध्रव सव कब्बं ॥
किन्नरह क्रंम सुत धर्म धर । मुरति मान सज्जैनि सिर ॥
हरि ब्रह्म ईस संवास सह । जो आश्रम हि इक्क गिर ॥
छं० ॥ १८० ॥ रू० ॥ ९३ ॥

और वहां आगे बाल्मीकि ऋषित्व को प्राप्त हुए हैं ॥

पद्धरि ॥ रमनीक ठाम वाचिष्ट राज । तहां बसहि देव देवह बिराज ॥
इहि थान पुव्व क्रत युग प्रमान । रिषि कियो तप्प ज्जर्जिन विधान ॥१८१॥
वाल्मीक वीर इक वधिक रूप । अति पाप क्रंम आघात कूप ॥
भंजै सु मग्ग तिन भ्रम्म थान । पायौ सु हरिय दरसन विधान ॥१८२॥
चित संष चक्र गद पदम बाहु । तन स्याम सुभित पीतह प्रवाहु ॥
दिष्ष्यौ सु लछी तन रूप भील । कीनी नह तन तिन निमष ढील ॥१८३॥
आयौ सु दिठ्ठ गोबिन्द वीर । जानी न पुव्व भ्रम्मह सरीर ॥
छिति दिष्षि दिठ्ठ कामह करूर । बिंध्यौ सु पाप मथ्थां सन्मूर ॥ १८४ ॥
तब आय रिष्ष उपदेस दीन । किहि काज इहां यह क्रंम कीन ॥
भगनी रु बंध तिय मात पुत्त । बंटहि कि पाप पापह सजुत्त ॥ १८५ ॥
तिहि जाइ कह्यौ वर भील मान । बंध्यौ न पाप किन अंग थान ॥
लग्यौ चरन्न कर धनुष तोरि । आघात घात बानी सजोरि ॥ १८६ ॥
व्याघात नाम सो वधिक थान । भ्रम भम्यौ इक्क इक्कइह निधान ॥ *
छं० ॥१८७॥ रू० ॥ ९४ ॥

गाथा ॥ यों कहियं रिषि राजं । तुम कोइ दिवस भ्रमन करि अथ्थं ॥
फुनि हम दरसन प्रायं । सथ्थं गुर मंत्र दे कानं ॥
छं० ॥ १८८ ॥ रू० ॥ ९५ ॥

---

९४ पाठान्तर–जु । धर्म । दर्सन । लहि । धीर । धर्मह । धरवह । चिठ्यौ । मयांस । भूर । रिवि । इह्मा । रह्मा । क्रम । त्रिय । पुत । संजुत । चरन । तोरी । भम्यो । इक्क । इक्क ।
* यह पंक्ति कर्नैल टाड साहब वाली पुस्तक में नहीं है ॥
९५ पाठान्तर–कोई । प्रम । ससथ्य । मरा । मरा । गहिय । भट्टी । मत्र । चभयो ॥

मरां मरां यच्च कच्चियं । गच्चियं भगनाय अंगयं नेहं ॥
मिट्टे तु चक्रम मंटी । दट्टी निय अब यो देहं ॥
छं० ॥१८९॥ रू० ॥ ९६ ॥

दूहा ॥ बांबी फिर अंगच वच्चो । अंग उदेची जाम ॥
भीन सबद मुष निक्कसे । धीर धीर कै राम ॥
छं० ॥ १९० ॥ रू० ॥ ९७ ॥

तब धरि मधि कढ्यौ सु रिषि । दिष्षि प्रबल तप पार ॥
बालमीक रिषि सो भयौ । सुनि गिरि सुअन विचार ॥
छं० ॥ १९१ ॥ रू० ॥ ९८ ॥

हिमालय के मध्यम पुत्र नंद का वशिष्ट के साथ आना स्वीकार करना ॥

कवित्त ॥ सुनि सु बचन गिरि सुअन । सर्व विधि राम बाच रचि ॥
मध्य पुच गिरि नंद । सोय उच्चयौ बाव सचि ॥
हौं सु पंग बिन पाय । क्रम्मि सक्कों न राह दुर ॥
जाय परौं तिन थान । करौ उद्धार बाव धुर ॥
पित बाव राम सज्यौ सु बन । बाव सु हरिचंद अब्ब वहि ॥
सोइ बाच तात कत कज्ज रिषि । कोइ सचुक्कहि मुष्ष भचि ॥
छं० ॥ १९२ ॥ रू० ॥९९॥

वशिष्ट का अर्बुद नाग को कहना कि जो तू नन्द गिरि को उठा ले चले तो हमारा कार्य सिद्ध हो ॥

पद्धरी ॥ अर्बुदा अचल अर्बुदनि नाम । जिन काम पयह षेरौ सु काम ॥
धर नंद नंद नंदन प्रमान । उच्चार सार लै जाहु थान ॥ १९३ ॥

९६ पाठान्तर-वाकी । निकसै । कैं ॥

९७ पाठान्तर-द्रिषि । रिष ॥

९८ पाठान्तर-गिगिरं । सोइ । हों । उच्चयौ । पाइ । क्रमि । क्रमि । सक्रो । सक्कौ सक्कैं । परौ । करौ । कोई । चुकहि । मुख ॥ इस छन्द की पांचवीं तुक के बाच और सज्ज्यौ शब्दों के बीच में राम शब्द किसी किसी पुस्तक में लेखक ने लिखना छोड दिया है । तथा इसी तुक के दूसरे पाद का पाठ हमारे पाठ के सिवाय किसी किसी पुस्तक में "पिता बाव सिर धसु बाह" करके भी है ॥

१०० पाठान्तर-इस की पहिली तुक के पहिले पाद का पाठ हमने सं० १६४७ की

हंधी सु गाय वन व्याघ्र क्रोध । आयौ सु राज राजन समोध ॥
कुरु लाय करिय करुना सु धेन । छंडाय राज राजन बलेन ॥ १९४ ॥
तन धरिग कस्यौ जज्जर सरीर । दिष्ष्यौ न सिंघ तहां निमष तीर ॥
सु प्रसन्न गाय धेनक सु रिष्षि । कीनौं जु अंग द्रप्पक विसिष्य ॥ १९५ ॥
थन थान दिष्षि अर्बुदा राज । रिष कहै जोग है चलन साज ॥
छं० ॥ १९६ ॥ रू० ॥ १०० ॥

अर्बुद नाग का कहना कि जो मेरे नाम से तीर्थ प्रसिद्ध हो तो मैं नंद गिरि को उठा ले चलूं ॥

कवित्त ॥ तब तबि अर्बुद नाग । मित्त गिर नंद हित्त हिय ॥
हौं उद्धरि लै जाउँ । तिथ्थ मो नाम नाम दिय ॥
तब नंदी उच्चर्यौ । होहि तो नाम तिथ्थ हित ॥
सु रिष्षि कज्ज सुद्धरहि । सु रिन उद्धरहि वाच पित ॥
थप्पी सुवत्त अर्बुद उरग । सु रनि सीस नंषे सु मन ॥
पय परसि मात पित बंध व्रग । सुअ सुहेम कीनो गमन ॥
छं० ॥ १९७ ॥ रू० ॥ १०१ ॥

अर्बुद नाग का नंदगिरि को उठा लाकर बिल में रख देना ॥

कवित्त ॥ तब निय अर्बुद नाग । कंध उद्धर्यौ नंदि नग ॥
मग्ग अग्ग गिरि राज । रिष्षि संचर्यौ सथ्थ अग ॥
साध सिद्ध सुर सुरह । सुमन नंषे उच्चरि सह ॥
रिषि अग्ग गिरि पच्छ । आय संपत्त तथ्थ पह ॥

पुस्तक से रक्खा है । सोसाईटी की छापी हुई तथा अन्य पुस्तकों में "अर्बुदा सचल अर्बुदूत नाम" करके पाठ है । क्रत । पोरो । गाव । त्रिन । कुरुना । कर्यौ । सीह । तिहां । कितौ । द्रपक । द्रप्यक । नो । गहू ॥

१०१ पाठान्तर-हित । तिथ । उच्चर्यौ । हों । हितो । सुरसि । सुद्ध । रहि । उद्ध । रहि । घत । अरबुद । धय । इस रूपक की दूसरी तुक का दूसरा पाद और तीसरी तुक जो वेदले वाली पुस्तक सोसाईटी में है उस में लेखक की भूल से नहीं है अन्य सब में हमारा लिखा पाठ है ॥

१०२ पाठान्तर-उद्धर्यौ । नन्दिग । अग्गा । गिरिराज । रिषि । संचर्यौ । आग । सिध ।

प्रविस कियो गारत्त गिरि । जय जय वचन सरीर हुअ ॥
भो मगन सुतन सव्वै सु गिरि । उबस्यौ नाक सुनाग धुअ ॥
छं० ॥ १९८ ॥ रू० ॥ १०२ ॥

बलि का पुर जाना और पुष्प वृष्टि सहित जैजैकार होना ॥

दूहा ॥ उबस्यौ नाक सु नाग धुअ । दिव अस्तुति परमान ॥
पुहप वृष्टि हथ्थां करिय । जय जय वंध्यौ तान ॥
छं० ॥ १९९ ॥ रू० ॥ १०३ ॥

नग का हिलना ॥

दूहा ॥ गात सकल गिरि जात को । सब बूझौ सम नाग ॥
उबरि नास सैलह तहां । सो हलही बिन लाग ॥
छं० ॥ २०० ॥ रू० ॥ १०४ ॥

नग के हिलने से वशिष्ट चिंता कर ईश आराधन करने लगे ॥

दूहा ॥ नास सुहल हल्यौ सुनग । उर अति चिंता जग्ग ॥
अति आतुर वाचिष्ट रिषि । ईस अराधन लग्ग ॥
छं० ॥ २०१ ॥ रू० ॥ १०५ ॥

वाचिष्ट ऋषि ने महादेव का यह आराधन किया ॥

साटक ॥ ईसंजा गिरिजानने वगरयं । उच्छंग मातंगिनी ॥
चर्मंजा वद्दजामवं जलजं । बुंदं तयं उज्जलं ॥
रख्यं जारति कर्न कामति मलं । दलयंति तीयं पुरं ॥
त्रिपुरारिं तन तुंग तारन गुरं । जैजै हरं ईसयं ॥
छं० ॥ २०२ ॥ रू० ॥ १०६ ॥

उचरि । आगे । पक्ष । संपन । तय ॥ इस की अंत की तुक का पाठ किसी किसी पुस्तक में "भू मग सुतन सवे सुगिरि । उबर्यौ नाक सु नाक धुअ" है ॥

१०३ पाठान्तर–उबर्यो नाक । हथां ॥

१०४ पाठान्तर–यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है और जब तक कि वह इस से भी प्राचीन पुस्तक में नहीं मिले तब तक उस को क्षेपक नहीं कह सक्ते । सोह । लही । बुझौ ॥

१०५ पाठान्तर–नाग । वाशिष्ट । आराधन । लय ॥

१०६ पाठान्तर–उछंग । चलजं । जलदं । रिपं । करन । दलयंति ॥

भुजंगी ॥ नमो आदि नाथं स्वयंभू सनाथं। नहीं मात तातं न को मंगि वातं ॥
जटा जूठयं सेषरं चंद्र भालं। उरं हार उद्दारयं रुंड मालं ॥ २०३ ॥
अनीलं असन्नं उपव्वीत राजं। कलं काल कूटं करं सूल साजं ॥
वरं अंग ओधूत विभ्भूत ओपं। प्रलै कोटि उग्रंसि कालं अनोपं ॥ २०४ ॥
करी चर्म कंधं हरी पारिधानं। वृषं वाहनं वास कैलास थानं ॥
उमा अंग वामं सु काल पुरष्षं। सिरं गंग नेत्रं त्रयं पंच मुष्षं ॥ २०५ ॥
नमः संभवायं सरव्वाय पायं। नमो रुद्रयायं वरद्दाय सायं ॥
पसूपत्तए नित्तए मुग्गयाए। कपर्द्दी महादेव भीमं भवाए ॥ २०६ ॥
मषघ्नाय ईसानए त्रंबकाए। नमो ध्रम्मए धातए अङ्ककाए ॥
कुमारो गुरव्वे नमो नील ग्रीवे। नमो व्याधए बाधए दिव्व जीवे ॥ २०७ ॥
नमो लोहिते नील सिष्षंडए तं। नमो सूलिने चत्तुषे दिव्यए तं ॥
वसूरेतवे स्त्रव्वदेवस्तुतेवं। नमो पिंग जाटिल्लए देव देवं ॥ २०८ ॥
नमो तप्प मानाय ब्रष्षं भुजाए। नमो ब्रह्मचारी त्रयंब्रह्मकाए ॥
सिवं चातमे चातगे स्वर्गचाए। नमो विस्वमावित्तए विस्वराए ॥ २०९ ॥
नमस्ते नमस्ते नमो सीतताए। नमो सर्ववक्त्रायने संकराए ॥
नमो ब्रह्मवक्त्राय भूतं पिताए। नमो वाचपे त्रिस्वपे भूतपाए ॥ २१० ॥
नमो सीससाहस्त्रए नीतएसं। सहस्त्रंभुजा नैंन साहस्त्र तेसं ॥
नमो पादसाहस्त्र आसंखकर्नं। नमो बन्दि हीरन्य हीरन्यवर्नं ॥ २११ ॥
नमो भक्ति आकंपनं संभु देवं। थिरं रिद्धि दाना मनं वह्न सेवं ॥
प्रसन्नो भवो ईस तव्वै न कव्वै। तनं ताप विन्नासए चित्त तव्वै ॥
छं० ॥ २१२ ॥ रू० ॥ १०७ ॥

१०७ पाठान्तर–स्वभू। समार्यं। नही। मंगी। चंदभालं। उर। रुंडमालं। असनं। उपंवीत। कलंकालकूटं। विभूत। सिकालं। अलोपं। कारि। वधं। वृषवाहनं। वासं। थांनं। दामं। क्रुरष्ष। गंगा। नेंनं। उद्रपायं। सरवाय। वरदाय। पसू। पत्त। ए। नित। ए। मुग। जाए। कपद्दी। कर्पद्दी। मषंघ्नाय। इसं। नए। ध्रम्म। ए। धात। ए। गुव्वें। नल। व्याध। ए। बाध। ए। द्रिच्छ। सिष्षंड। एतं। दिव्य। एतं। वसूदेवते के सवदेव। स्तुतेवं। व्रषंध। जाये। त्रयब्रह्म। काए। स्वर्श। चाये। विश्वमा। वित्तए। नमस। ते नमस। ते। सीत। ताए। साहस। एनीत। एस। सहस। नैन। सहस। आसंष। कर्नें। हिरन्य। सभा विनास। ए। चित ॥ सं० १६४७ की पुस्तक में इस छंद की ८ वीं तुक में का नित्तए शब्द नहीं है ॥

वशिष्ट के वचन सुन महादेव का प्रत्यक्ष हो वर मांगने को कहना ॥

चौपाई ॥ सुनि मुनि वचन मोद मन ईसं । आय परौ रक्षौ उद्धरि सीसं ॥
बर! बर! बानि जानि मन मंग्गहु । जंपहि ईस आस जिहि जग्गहु ॥
छं० ॥ २१३ ॥ रू० ॥ १०८ ॥

मंगहु मुनि सज्जन गुन गुन बर । चन्नै कित्ति जित्ती जिहि धुर धर ॥
ना कित्ती मुकतीह सो लिज्जै । ब्रह्मासन आसन डोलिज्ज ॥
छं० ॥ २१४ ॥ रू० ॥ १०९ ॥

ईस का स्वरूप देख ऋषि का मुदित होना ॥

चौपाई ॥ देषि सरूप ईस मन उम्मदि । जै भै जीह धन्य बानी बदि ॥
गौर कपूर तेज तन उद्दित । रिषि रोमंचित तत्र मन मुद्दित ॥
छं० ॥ २१५ ॥ रू० ॥ ११० ॥

मुद्दित मन उद्दित तन भारी । हरि वैकुंठ ईस मनचारी ॥
अर्बुद गिरि धरि ध्यान सु ईसं । करै काल तिहि काल जगीसं ॥
छं० ॥ २१६ ॥ रू० ॥ १११ ॥

वशिष्ट ऋषि का महादेव को नमस्कार करना ॥

साटक ॥ चैनैनं चिजटेव सीस चितयं । चैरूप चीसूलयं ॥
चदेवं चिदिसा चिभू चिगुनयं । चीसंधि वेदचयं ॥
चैरग्निं चयलच्छि काल चितयं । ग्रामं चयं चैवयं ॥
गंगा चै चिपुरारि भासित तनुं । सोयं नमः संभवे ॥
छं० ॥ २१७ ॥ रू० ॥ ११२ ॥

१०८-१०९ पाठान्तर-मंगहुं । जगहुं ॥ चलै और कित्ति शब्दो के बीच में "ई" शब्द पाठ सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है और इधर के समय की लिखित पुस्तकों में है । धुर धुर । कीती । मुक्तीह ॥

११०-१११ पाठान्तर-उंमदि । गौरक । पूर ॥

११२ पाठान्तर-त्रिजटेवसीस । त्रयलछिकाल । त्रितयंयाम ॥

प्रमथाधिपति ने आनन्दित होकर वर मांगने को कहा ॥

दूहा ॥ आनंद्यौ प्रथमाधिपति। बर ! बर ! बंद्यौ बानि ॥
रिषि मंगहु उतकंठ मन। सोइ समप्पौं आनि ॥
छं० ॥ २१८ ॥ रू० ॥ ११३ ॥

वशिष्ट ऋषि का नंदगिरि को अचल करने का वर मांगना ॥

दूहा ॥ फिरि रिषि जंप्यो संभु सों। जो तुट्ठौ मुझ्झ भास ॥
नग्ग चलंतो अचल करि। फुनि सज्जौ सिर बास ॥
छं० ॥ २१९ ॥ रू० ॥ ११४ ॥
सो आबू गिरि राज गुरु। सुर गिर सम सैलास ॥
चिपथ ताम मुनि देव का। बसि रु किये कैलास ॥
छं० ॥ २२० ॥ रू० ॥ ११५ ॥

महादेव का पर्वत को अचल कर उस में अचल नाम से विराजना ॥

कवित्त ॥ तब सु ईस मन मुदित। पानि चंप्यौ गिर गौरव ॥
अचल अचल कहि अचल। भयौ अचलेस नात तब ॥
सुथिर भयौ नग नंदि। अप्प सिर बास सु सज्यौ ॥
उभय आय तिहि थान। सगन प्रमथाधिप रज्यौ ॥
गिरि नंद नाम हेमच सुतन। अबुद नाग सु मिच मन ॥
तिहि नाम चिविध भय निश्थ हर। पारस अप्पन अर्थ तन ॥
छं० ॥ २२१ ॥ रू० ॥ ११६ ॥
कवित्त ॥ अचल नाम कहि अचल। अचल विद्या अभ्यासिय ॥
अर्वुद गिरि थिर धस्यौ। वियौ वानारस वासिय ॥
उदित नाम इक बरष। मुत्ति लम्भे ति जगत गुर ॥
इहत नाम इक दीह। करैं उपवास सोइ नर ॥

११३-११५ पाठान्तर-प्रथमाधिपति। बानी। समप्पों ॥ ११३ ॥ मो। तुठो। भग्ग पास ॥११४॥ गुरं। स० १६४७ की में "मुदगिर सम सैलास" और सं० १७७० की में "सुर गिर सम सैलास" और स० १८५९ में "मेर समल सैलास" पाठ है ॥ त्रिपथा। ताप। सुनि बसि। हक्रियैा ॥ ११५ ॥
११६ पाठान्तर-अब। प्रथमाधिपं। रंज्यौ। नम। तिथ। अथि ॥

बाना रभंति बारानसिय। आबू अर्बुद उद्धरिय॥
जट बिकट जाल बिभूति रंग। सुरग मुकति ढिग ढिग फिरिय॥
छं० ॥ २२२ ॥ रू० ॥ ११७ ॥

आबू को अचल देख कर वशिष्ट का प्रसन्न होना और अन्य ऋषियों को वहां यज्ञ के लिये बुलाय जप तप और वास करना॥

पद्धरी॥ अग अचल दिष्षि वाशिष्ट रिष्य। मन मुदित भयौ सम आय सिष्य॥
हर वासदेव सब गुन समान। आवरन रिद्धि चित चिंत थान॥२२३॥
आभासि सिष्य गौतमच तथ्य। आचस्यौ बास अनि रिष्य सथ्य॥
आभासि रिष्य अनेक तान। संबोधि बोलि प्रयु प्रियुक्त नाम॥२२४॥
देवलह असित अंबावि सूत्र। सौमिच सप्प मालौ विभूव॥
मद्द मद्दन सनक जैनेय पैल। दालभ्य वक्क सुमंत औल॥ २२५॥
दीपाय किस थूलंसि राय। तैतरिय जन्नवक्की सुताय॥
जैमनिय भव्व वैसंपायन। हर्षनह लोम असुहोच जान॥ २२६॥
मंडव्य अरति कौसिक्क दाम। उष्णीष चिवन पर्णाद वाम॥
घटजात सुवल मोजायनेय। बलवाक परासर वायवेय॥२२७॥
सचिवाक जात क्रन क्रन्न माल। सनिवाक क्रिताश्रम सुचि पाल॥
सिषि वांनसु पर्पत पारिजात। अगस्ति मारकंडे सुभाति॥२२८॥
पाविच पानि सर्वन्य रभ्य। किरनाषकेत भगु भेष सभ्य॥
जंघाव भाजकी कोप वेग। गालम हरीय ब्रह्म अगेग॥२२९॥
कौडिन्न बंध माग्री सनक्क। सानंद सनातन कल वक्क॥
सांडिल करंक वाराह पंग। कौमार अश्व हय घोष मंग॥२३०॥
वेनीय जघन जघ नासकेत। कन्हं कलाप वक्रीव सेत॥
अष्टाह्वक्र उद्दालकेय। च्यवनह कपिल मातंग जेय॥ २३१॥

---

११७ पाठान्तर-धयौं। वीयो। लभ्यौ। तिजगत। वानार। भंति। वानारसीय। उद्दुरीय। मुति॥
११८ पाठान्तर-द्रिषि। वाचिष्ट। सिप। आयौं। प्रियक्र। अंक्रवा। विसूत्र। सप्प। ध्रुव। हरप। नद्द। मंडप। कौसिक्र। उष्णीक्र। पनदिवाम। घट। जात। वाल। वाक्र। वालजाक्र। वाय। वेय। सचि थाक। क्रच। क्रनमाल। सनि। वाक्र। क्रिताश्री। सिपि। वांनस। पर्वत। भाल। की। गालं। मह्वि। रिय। कोंडिन। सांडिल। वेनी। जय। घन। घना। सकेत। कन्ह। वसेत अष्टाह।

माधव्व गरग अनेक रिष्य । आए सु अन्य तहां समद्द सिष्य ॥
आहवान मंच बल तप्प सथ्य । सब देव रिष्य आए सु तथ्य ॥ २३२ ॥
कालिंद्र गंग सरसत्ति आय । अनुसरिय बद्द सब सोय नाय ॥
ऊषधी स्त्रब्ब मनि सब्ब धात । बर द्रष्य लता फल पुहप पात ॥ २३३ ॥
जाजन्य जजन अधियन अध्याय । लग्गेसु करन रुचि रिष्य आय ॥
आहवान बान उचान जाप । लग्गे सु करन रुचि द्रुष्ट ताप ॥ २३४ ॥
जप होम मंच धारना ध्यान । आरंभ रिष्य लग्गे सु ग्यान ॥
आराधि सकति आभासि ताम । संचास कीन गिर उंच धाम ॥ २३५ ॥
आदरस रिष्य संबास कीन । आश्रम्म अब्ब क्रम काज चिन्ह ॥
जगनद्द जाप अध्याप होम । आराध उंच आयास धोम ॥ २३६ ॥
प्रीनंत देव सुब्बास आय । सब मिले इंद इंदार काय ॥
वीसेष मंच जंचं गुरेन । बंधे जु मंच कर आप देन ॥ २३७ ॥
करि भसम देव देवत्त लहीव । विस्माद्द अम्रत पावै सु पीव ॥
अति भस्म क्रम्म दूष्षे अनंद । आए सु निसाचर कलन मंद ॥ २३८ ॥
करंत रिष्य मंगिय करूर । तिन समत भूमि षद्द नग्ग नूर ॥
चित अचित पंच आभासि देह । रस दुग्ध सही पुष्षा अछेह ॥ २३९ ॥
के भषैं वाय के ध्यान देव । जल दूध कंद मूलह सु केव ॥
छं० ॥ २४० ॥ रू० ११८ ॥

गाहा ॥ कंदं फलानि फलयं । कढ्ढंतं मुनिय काल वेकालं ॥
एकोपि धार धरयं । संतोषं सर्व निधानं ॥
छं० ॥ २४१ ॥ रू० ॥ ११९ ॥
संतोषं विना न लभ्भै । कलपंतं राजनं सुष्यं ॥
जो संतोषं देहं । तो सुषं द्रुय मूल काम लया ॥
छं० ॥ २४२ ॥ रू० ॥ १२० ॥

बक्र । उद्दाल । कीय । च्यव । नह । मातंग । लेय । तहां । तया । सय । देवरिष्य । कालिद्र । सरसति । ऊषधी । स्त्र । अधनय । अध्याय । लगे । आय । लगे । धारनाध्यान आदर । मरिष । क्रम । अध्याय । सु । वास । लिले । विसेष । जंत्र । अमृत । दूष्षे । भषैं । कंध । सकेव ॥
११९–१२० पाठान्तर–कढंतं । कालवेकालं । ए कोपि । सतोसं । सव्व । निहाण ॥ ११९ ॥
संतोषन । विण । लभइ । कल पंतं । संतोसं । तो ॥ १२० ॥

यज्ञ का अनुष्ठान सुन कर राक्षसों का एकत्र हो आना ॥

दूहा ॥ जंत्रकेत दानव दुसह । अरु रष्यस धुमकेत ।
अप्प सथ्थ लीने सकल । आ० दुष्टह हेत ॥
छं० ॥ २४३ ॥ रू० ॥ १२१ ॥

ऋषियों का अनलकुंड रचन कर ब्रह्म कर्म प्रारंभ करना ॥

कवित्त ॥ आबू करि रिषि जग्य । मंत्र कारन सु मंत्र जपु ॥
पंड हथ्थ नर उंड । अष्ट अंगुल ऊर्द्ध वपु ॥
हथ्थ तीन अरु अद्ध । मंडि चवकून समा सम ॥
स्वप्प समति सम कियो । फननि वचयो देव क्रम ॥
अगिनेव थान अगिनेव धर । बाय कुंड दष्षिन दिसा ॥
नैरत निवर्त धज मंडि कै । ब्रह्म क्रम्म लग्गे रिसा ॥
छं० ॥ २४४ ॥ रू० ॥ १२२ ॥

दैत्यों का ऋषियो के यज्ञ में विघ्न करना ॥

कवित्त ॥ पंच पर्व्व जग्योपवीत । पंच पर्व्वा अधिकारिय ॥
देवो मुनि दुजराज । वैश्य शूद्रह चितकारिय ॥
चर बिडाल पशु म्लेछ । क्रंम चंडाल षंड करि ॥
दूह प्रमान दस विधि * सुक्रम । जग्ग मंडे सुमंडि हरि ॥
दानव सु दुष्ट दुष्टंसु क्रम । दुष्ट म्रच वरिषा करै ॥
पसु मंस रुधिर नंषे सु जल । क्रंम विप्र संमुह डरै ॥
छं० ॥ २४५ ॥ रू० ॥ १२३ ॥

चो बेदी चो विप्र । गीत गायत्र मंत्र जप ॥
ता मंझो घन विघन । करै आरिष्ट असुर कुप ॥

---

१२१ पाठान्तर-यंत्रकेत । रापेस । धुम्रकेत । अप । सथ । अहेत ॥

१२२ पाठान्तर-आब्बू । रिष्पि । तप । हथ । वर । उरद्ध । वप । अर्द्ध । संमति । स्वप । कीयो । बंचयो । अग्गिनेव । आगे । नेत्र थांन । अगि । नेव । वाइ । क्रुंड । दषिन । क्रिसा रसा ॥

१२३ पाठान्तर-जग्यैापवीत । जुग्योपवीत । सं १६४७ और १७७० की पुस्तकों में यह पाठ है "दह बिंधि प्रमान दस विधि सुक्रम" । जंग । जग । सुमंडि । सुदुष्ट । दुष्ट । सुक्रम्म । वसु । मंसु । सुजल । कर्म । समुह ॥ * विधि विशेष है ॥

१२४ पाठान्तर-गाइत्र । मंडय । मंडे । पर्वत हलावे । मोहिनी । रूप कबहिक धरै । नट्टूहिं । कथक । वै । "वै हयिन तालि न धरै" भी सं॰ १६४७ की में पाठ है । हथ्यं ।

कबक भूमि हल्लवै। कबक पव्वंत हल्लावै॥
अग्नि दृष्टि कव करै। कबक बुझै बुझावै॥
मोहनी रूप कबहुक करै। कबक सिंघ नद्द करै॥
तुष्णीक रहै गावै कबहु। बे हथ्यो ताल्लह धरै॥
छं० ॥ २४६ ॥ रू० ॥ १२४ ॥

ऋषियों का संतापित होकर वशिष्ट के पास जाय पुकारना॥

दूहा॥ दिष्षि रिष्य मंडी सु रिध। जग्गिन होमह जाप॥
ताहि बिगारन मन मुदित। लगे सकल संताप॥
छं० ॥ २४७ ॥ रू० ॥ १२५ ॥

पद्धरी॥ रज दृष्टि उपल चिन नंषि थान। चासना बीर पहु लगि भयान॥
रिष गये सव्व वाचिष्ट पास। रष्यसन कह्यौ मंड्यौ बिनास॥ २४८॥
रिष राज दुष्ट बध चिंत आय। छंड्यौ जजन्न बल मंच भाय॥
छं० ॥ २४९ ॥ रू० ॥ १२६ ॥

जिस पर वशिष्ट का प्रतिहार चालुक्य और पँवार को प्रगट करना।

कवित्त॥ तब सु रिष्य वाचिष्ट। कुंड रोचन रचि रचि तामह॥
धरिय ध्यान जजि होम। मध्य वेदी सुर सामह॥
तव प्रगट्यौ प्रतिहार। राज तिन ठौर सुधारिय॥
फुनि प्रगट्यौ चालुक्क। ब्रह्मचारी व्रत धारिय॥
पांवार प्रगट्यौ बीर वर। कह्यौ रिष्य परमार धन॥
चय पुरष जुद्ध कीनौ अतुल। मष्ष रष्यस पुट्टंत तन॥
छं० ॥ २५० ॥ रू० ॥ १२७ ॥

---

१२५ पाठान्तर-दिष्यि दिष्यि। दिषि दिषि। दिषि। द्रिषि। लगे। सत्ताप। मंताप॥

१२६ पाठान्तर-लगि। यान। सब। सर्व। राष्यसन। राषिसन। वध। चिंति। जजन। बलं॥

१२७ पाठान्तर-रिषि। वासिष्ट। राचेता। तहिं। ध्यान। मध्यवदी। सरसा। महि। प्रिगट्यौ। परिहार। राह। चालुक। सं॰ १६४७ में "व्रह्म दिन चाल सुमारिय", सं॰ १८५९ की में "ब्रह्म तिन चाल सुसारिय" पाठ हैं। रष्य। रष। पंमार। घनु। धनु। रषस। तनु॥

तथापि राक्षसों का उपद्रव शमन न होना ॥

मलया ॥ कारयं जग्य बंभान निंमानयं। रचियं कुंड षंडं थिरं थानयं ॥
आसनं दिव्य देवान आव्हानयं। आसुरं कीन उच्चिष्ट ऊथानयं ॥
छं० ॥ २५१ ॥ रू० ॥ १२८ ॥

तब वशिष्ट का स्वयं कुंड रचन कर यज्ञार्थ बैठना और चिंतवन करना ॥

दूहा ॥ जब वाचिष्टह जग्य कजि। सजि कुंडह सुभ थान ॥
तब आसुर अन संक से। किय उच्चिष्ट उतान ॥
छं० ॥ २५२ ॥ रू० ॥ १२९ ॥

कवित्त ॥ तब चिंतिय वाचिष्ट। एह आसुर अविचारिय ॥
जग्य जीह उच्चिष्ट। करैं कातर क्रत हारिय ॥
सुरन अंस संग्रहे। हवै नह हव्य हुआवह ॥
सो उपाव संचिये। जो * याहि संवरै असुर सह ॥
न्त्रिम्यौ सु सूर संग्राम भर। अरि अलंघ षंडन सु षल ॥
सम धरहि जग्य कारन सकल। विमल सिष्ट सोभै सयल ॥
छं० ॥ २५३ ॥ रू० ॥ १३० ॥

अरिल्ल ॥ अघट घाट रिषि दृष्षि निसाचर। परिसि च्यार धरि ध्यान ग्यान वर ॥
चिंतिय ब्रह्म करम किहि कामह। भयौ रूप रिषि ब्रह्म सुनामह ॥
छं० ॥ २५४ ॥ रू० ॥ १३१ ॥

---

१२८ इस रूपक के छंद का नाम जो चंद ने मलया प्रयोग किया है वह स्रग्वणी नामक चार रगण का छंद है ॥

पाठान्तर-दंभाननि। मानयं। रचियं। आहवानयं। उचिष्ट।

१२९ पाठान्तर-वाशिष्ट। सुथांन। अनं।

१३० पाठान्तर-चिंतिय। जिष्ट। जिह। करैं। हवै न हव्यहु आवह। संयाम। पंडं। समं। सोभै ॥ (जो *) विशेष है ॥

१३१ पाठान्तर-द्रषि। निसाचरं। वरं। ब्रह्मक्रम ॥ सं० १७७० की पुस्तक में "ग्यान" शब्द नहीं है ॥

वशिष्ट का चाहुवानजी को उत्पन्न करना ॥

कवित्त ॥ अनल कुंड किय अनल । सज्जि उपगार सार सुर ॥
कमलासन आसनह । मंडि जग्योपवीत जुरि ॥
चतुरानन स्तुति सद्द । मंत्र उच्चार सार किय ॥
सु करि कमंडल बारि । जुजित आव्हान थान दिय ॥
जा जन्नि पानि श्रव अहुति जजि । भजि सु दुष्ट आव्हान करि ॥
उप्पज्यौ अनल चहुवान तब । चव सु बाहु असि बाह धरि ॥
छं° ॥ २५५ ॥ रू° ॥ १३२ ॥

दूहा ॥ भुज प्रचंड चव च्यार मुष । रत्त ब्रन्न तन तुंग ॥
अनल कुंड उपज्यौ अनल । आहुवान चतुरंग ॥
छं° ॥ २५६ ॥ रू° ॥ १३३ ॥

ऋषियों का चाहुवानजी का स्वरूप देख कर उन को चाहुवान कहना । उन को राक्षसों से युद्ध करने की शक्ति देने को आशापूरा देवी का स्मरण करना । देवी का प्रत्यक्ष होकर चाहुवान जी को राक्षसों से युद्ध करने में सहायता देना । राक्षसों का रसातल को जाना । देवी का चाहुवान जी को अपनी कुल देवी मानने की आज्ञा करना और उस का अपने वंश भर की कुल देवी मानना स्वीकार करना । देवी का उन को वर देकर पधारना । वशिष्ट का चाहुवान जी का आशीर्वाद देकर अन्य अनलों का वर्णन करना और दुर्वासा को शाप देकर पठाना ॥

गाथा ॥ उपज्यौ अनल अनूपम रूपं । नहि आकृत्ति अवर नर रूपं ॥
ब्रंन अभूत सु उन्नत जिष्टं । बंदन भर कि बद्ध मनु पिष्टं ॥ छं° ॥ २५७ ॥

१३२ पाठान्तर–अनलकुड सजि । मडि । जग्योपवित । आहवान । जाजन्ने । आवहान । उपज्यो । चहुआन ॥ पुरातत्त्ववेत्ताओं के स्मरण में रहै कि प्रायः यह कहा जाता है कि अग्निकुलों की कब उत्पत्ति आबू पर हुई उसका कोई पौराणिक प्रमाण भी नहीं मिलता । अतएव हम एक यह प्रमाण विदित करते हैं कि कालिंदिका प्रकाश नामक ग्रंथ में पुराणोक्त यह श्लोक लिखा है–

श्लोक ॥ दूषयिष्यन्ति यवना, स्सहस्राब्दे गते कलौ ।
तदा रक्षां करिष्यति, याज्ञिकाः क्षत्रियर्षभाः ॥

१३३ पाठान्तर–रत । व्रन । वन्न ।

स्याम रोम कपोल विसालं। उन्नित कंध छतिय दूसालं॥
लाल माल सोभै उर सोभं। मधु प्राकष्ट दिच्छ कर दोभं॥ छं०॥ २५८॥
नयन प्रथुज भ्रकुटी सु करूरं। मुख आकत्ति बाल हर नूरं॥
कवच चोन उर चान सरीसं। दल आकत्ति भयानक दीसं॥ छं०॥२५९॥
तोन पूरि सर बद्धि सु कासं। धरिय पांन सरवी रवि रासं॥
षेटक षग्ग उनंगी धारं। चाहिवान दिष्यो रिप सारं॥ छं०॥ २६०॥
चाहि आइ रिषि आइ समंगे। चहुआन कहि सद सुरंगे॥
सम्भरी सकति रिषि गिर वासी। दिय साहाय युद्ध काजि तासी॥ छं०॥ २६१॥
आई सकति सिंघ आरोही। द्वादस भुजा सु आयुद्ध सोही॥
षेटक षग्ग बरहह पासं। घंटा बान कती सिर आसं॥ छं०॥ २६२॥
षप्पर सकति शूल मद पाचं। देषे रूप क्रंम क्रम क्षाचं॥
आसा पूरि कहै रिषि राजं। चाहुवान मंडी क्रत काजं॥ छं०॥ २६३॥
चाली सकति सहाइ अनसं। हसे सूर सवै कसि वसं॥
सब आए कढि रष्षस ठानं। मंड्यौ जुद्ध सवै असमानं॥ छं०॥ २६४॥

१३४ इस रूपक के छंद २५७ के पाठ में बड़ा गड़बड़ है। एशियाटिक सोसाईटी बंगाल की छापी हुई पुस्तक में "उपज्यौ अनल अनूपम रूप। नहि आक्रति अवरन रूपं॥ व्रन अभूत सू उंनत जिष्टं। वंदन भर कि बद्रुम नुपिष्टं"॥ और स० १७७० की पुस्तक में "उपज्यौ अनल अनोपम स्तपं। महि आक्रति अवरम रूपं। वंत अभूत असु उत्तमा जिष्टं। वंदन भरकि बद्रु मन मिष्ट" और संवत् १७४७ की में "उपज्यौ अनल अनूपम रूपं। नहि आक्रति अवरम स्तूपं। व्रत अबूत असु उन्नत जिष्टं। वंदन भरा के बद्रु मन पिष्ट"॥ किन्तु हमारा पाठ कर्नैल टाड साहब के गुरु बारहट कृष्णसिंहजी ने जिस सं० १८५९ की पुस्तक से रासो पढ़ा था उसके अनुसार है॥ इस में "दूपं" शब्द हमारे पाठकों को अर्थ करते समय परिश्रम देगा क्योंकि जिस संस्कृत शब्द "दूप" का यह अपभ्रंश हिन्दी है वह संस्कृत के अच्छे विद्वानो के पढ़ने में भी उस का बहुधा प्रयोग न होने के कारण बहुत ही कम आया होगा और वह वाचस्पत्यबृहदभिधान और शब्दार्थचिन्तामणि जैसे बड़े कोशों में भी नहीं मिलेगा परन्तु प्रोफेसर विलसन साहब के कोश में मिलेगा। वे इसको त्रिलिंग में strong अर्थात् बलवान अथवा पुष्ट का वाचक लिखते हैं॥

पाठान्तर-उनित। उंनित। उन्नत। दुसालं। प्राकुष्ट। दिछ। आक्रति। बालहर। आक्रति। सरि वीर विरासं। उनंगी। चाहि। बान। गिरवासी। बरदह। कर्ता। क्रम। मंडो। सहाई। ठानं। आवटि। धुंमकेत। सकतिय सहतिय। अध। पास। तास। तछ्य। प्रसनिय। यप्पे। नाम। ताम। संवत् १६४७ और संवत् १७६० की में "धास्यो कर सिर लै चहुवान" पाठ है। धर्यौ। चाहुवान। अधहु। बंस। मान। चहुवान। असमान। गई। है है। चहुवानं। उपज्जि।

बाढै आवधि सकती सारं । धड आवट्टि पडै धर भारं ॥
सद्दे धुमरकेत सकतीयं । जंत्रकेत चहुआन सु * हतीयं ॥ छं० ॥२६५॥
अद्ध सु रष्यस दानव सद्दे ॥ गए रसातल नट्ठे अद्दे ॥
देवी आइ अनल्लह पासं । जंपी तथ्थ प्रसन्नी तासं ॥ छं० ॥ २६६ ॥
आसापूर कहै मो नामं । पुज्जै पुत्र पौत्र परिनामं ॥
कुलह गोत्र भुम्म थप्पै नामं । अप्पों रिद्धि अचल्लह तामं ॥ छं० ॥२६७।
धाल्यौ सिर लै कर चहुवानं । ब्रह्महु बंस अंस जस मानं ॥
जीती अप्प देवी चहुवानं । दिय वर दान गई असमानं ॥ छं० ॥२६८॥
गइ असमान कियौ सद भारी । धुं ! धुं ! कार जै ! जया सारी ॥
है ! है ! करि हं ! हं ! चहुवानं । अनल कुंड उपजे परिमानं ॥ छं०॥२६९॥
चौ मुष्षौ चौ वेद प्रकारं । ऐसो मुष देष्यौ अधिकारं ॥
वेदं स्याम अथर्वन रूपं । रिगु जिजु वेद देव गुन नूपं ॥छं० । २७० ॥
चित चमकार चिहूं दिसि लग्गिय । पढत ताहि ब्रह्मंड सु जग्गिय ॥
बानी धुनि मुनि हरषि वसीसं । वर बचिष्ट तहां दई असीसं ॥छं० ॥२७१॥
तोहि वंस होइ कुंडल धारी । जनु कि अर्क राका विस्तारी ॥
थुति करि सेव देव तिहि पानं । जै जै तप्प जिते चहुवानं छं० ॥२७२॥
परिहरि वीर बीर नर केकं । तिहि चालुक्क भयौ गुन मेकं ॥
परहरि वर पावार ति वारं । क्रोध रूप जाजुल्य निधारं ॥ छं० ॥२७३॥
जाजुल्लनि परिहार न दिष्ष्यो । षिजि करि विप्र पौरि मह रष्ष्यौ ॥
तिन कारन वाचिष्ट रिषीसं । अबुद नाम गिरि नंद जगीसं ॥ छं ॥ २७४ ॥
ता ऊपर दुरवासा आए । दै सराप वाचिष्ट पठाए ॥
अब वे दानव दुष्ट सु दाषै । तो रष्या चव कुली सु राषै ॥ छं० ॥२७५॥
बंस छतीस गनीजै भारी । च्यार कुली कुल तिन अधिकारी ॥
सब सु जात जोनी मग दिष्षिय ए ब्रह्मा अविसेष विसिष्षिय ॥
॥ छं० ॥ २७६ ॥ रू० ॥ १३४ ॥

चिहू । पढ्य । हरषिव । सीसं । वशिष्ट । रासा । तप । नरकेकं । तिवारं । पारहारन । तहं । उपर । रष्य । छतीस । गति । जै । जेत्ती । (सु *) विशेष है ॥

क्षत्रियों के छत्तीस बंशों की नामावली ॥

कवित्त ॥ रवि ससि जादव वंस। ककुस्थ परमार सदावर ॥
चाहुवान चालुक्क। छंद सिलार आभीयर ॥
दोय मत्त मकवांन। गरुअ गोहिल गोहिल पुत ॥
चापोत्कट परिहार। राव राठौर रोस जुत ॥
देवरा टांक सैंधव अनिग। योतिक प्रतिहार दधिषट ॥
कारट्टपाल कोटपाल हुल। हरितट गोर कलाप मट ॥
छं० ॥ २७७ ॥ रू० ॥ १३५ ॥

दूहा ॥ धन्यपालक निकुंभ वर। राजपाल कविनीस ॥
काल कुरक्कैं आदि दै। बरने वंस छतीस ॥
छं० ॥ २७८ ॥ रू० ॥ १३६ ॥

चारों अग्निकुल क्षत्रियों ने वशिष्ट का यज्ञ निर्विघ्न किया ॥

कवित्त ॥ पठन मंच रिष जाप। च्यार पिची उप्पाए ॥
कुचिल दीन परिहार। पैरि रष्हु सत भाए ॥

१३५-३६ पाठान्तर-यादव । परमार-स । तोंवर। चालुक। छिंद। छंदक। आभीवर। गुरुअ गोह। गही भुत। राठोर। सिंधव। अनग। अनंग। योतिक। प्रतिहा। दधीपट। करेटपाल। हुन। हरीतट। गोरक। भाड। जट ॥१३५॥ ध्यानपालक। ध्यान पालकनि। कुंभ। कविनीस। दे। छत्तीस ॥

कवि चंद के समय में जो छत्तीस कुल क्षत्रियों के प्रसिद्ध थे उनके नाम उसने वर्णन किये हैं अर्थात् रवि-सूर्यवंशी १ ससि=चंद्रवंशी २ जादव=यदुवंशी ३ ककुस्थ=कछवाहे ४ परमार ५ सदावर=तोंवर ६ चौहान ७ चलुक=सोलंकी ८ छंद=रादेल ९ सिलार १० आभीयर ११ दोयमत्त=दाहिमा १२ मकवान १३ गोहिल १४ गहिलोत १५ चापोत्कट=चावडा १६ परिहार=पडियार १७ राठोर १८ देवडा १९ टांक २० सैंधव=सिधव २१ अनिग=अनग २२ योतिक २३ प्रतिहार २४ दधिपट २५ कारट्टपाल=काठी २६ कोटपाल २७ हुल=हुन, हुण २८ हरितट=हाडा २९ गोर=गोड ३० कमाप=कमाड, जेठपा ३१ मट=जट ३२ ध्यानपालक वा धान्यपालक ४३ निकुंभ ३४ राजपाल ३५ कलकुरक्कैं=कालछर ३६। इन के विषय में कवि दलपत रामजी अपने जाति निबंध नामक ग्रंथ में लिखते हैं कि रत्नकोश नामक संस्कृत ग्रथ की टीका मे लिखा है कि क्षत्रिय कुल का आदि पुरुष मनु उसके वंश में से ये छत्तीस हुए हैं ॥

सं० १६४७ और सं० १७७० की पुस्तकों में इन रूपकों के स्थान में रूपक १३७ और उस के स्थान में इन को लिखा है अर्थात् उलट पुलट हैं। हम ने उनका क्रम इस लिये ग्रहण नहीं किया है कि रूपक १३४ के छंद २७६ की पहिली तुक का अर्थ उसके पीछे इन रूपकों का ही होना प्रकाश करता है ॥

चतुर बीर चहुवान । च्यार मुष्यौ चैावाहं ॥
अष्ट अश्र आरिष्ट । देव चारिष्ट सु साहं ॥
पंमार वाह धन धन करह । कह्यौ रिष्य परमार धन ॥
चालुक्क वाह चालुक्क दुज । कुसिल कुसन मंडित तन ॥
छं० ॥ २७९ ॥ रू० ॥ १३७ ॥

अनल कुंड आभंग । उपजि चैाहान अनिल थल ॥
सुकर संठि करि वार । धनुव संग्रह्यौ बान बल ॥
तिन रष्षिस परिवार । धार सुष धरनि नि घट्टिय ॥
षल जुषित्त संमुहे । तिनह सिर सरअन तुट्टिय ॥
बंभान जग्य निर विघन किय । पुहप वृष्टि सुर सीस रजि ॥
रष्षि सु धरनि षग भुज्ज वर । रिष्ट निवारिय दुष्ट भजि ॥
छं० ॥ २८० ॥ रू० ॥ १३८ ॥

जिन्होंने द्विजों की रक्षा की उनके वंश में पृथ्वीराज हैं ॥

दूहा ॥　तिन रक्षा कीनी सु दुज । तिहि सु वंस प्रथिराज ॥
सो सिरषत पर वादनह । किय रासे। जुविराज ॥
छं० ॥ २८१ ॥ रू० ॥ १३९ ॥

चाहूवानजी के वंश के राजाओं की कथा ॥

चाहूवानजी से माणिकराजजी पहिले तक तेरह पीढ़ी का वर्णन ॥

पद्धरी ॥　ब्रह्मान जग्य उतपन्न भूर । चहुवान अनल अरि मलन सूर ॥
उत्तंग अंग प्रचंड बाह । पहुमीस इंद अरि गिलन राह ॥ छं० ॥ २८२ ॥
प्रतिपाल धरनि अंगह सु भ्रम्म । श्रुत मान कीन उत्तंग क्रम्म ॥
रत्तो सु जोग भव भोग रास । पुर अमर नाग नर कित्ति जास ॥ छं० ॥ २८३ ॥

१३७—१३८ पाठान्तर—जाय कुलिल । चहुवान । मुषैा । सुसाहं । वाह । रिषि । पंमार । मंहि । ततन ॥ १३७ ॥ कुंद । चैाहान । रष्पि । सपरिवार । मुप । निघट्टिय । जुषित । निरविघन । भुज्जवर ॥ १३८ ॥

१३९ पाठान्तर—रष्या । तिहिं । पृथ्वीराज । पृथिराज । प्रवादनह ॥

१४० पाठान्तर—ब्रह्मान । उत्पन्न । चहुवांन । मल । मसूर । उतंग । पहुवीसु । इन्द्र अरिगिलन । धरनी । अंग । श्रुतमान । उतंग । रतो । सुजोग । भास । किति । तासू । अन । सु । षन । माहंत । संका । विडार । मानिक । राजत । सु । अन । माह । भूत । भयंकर । रत ।

ता सुअन सूर सामंतदेव। अरिमंत मत्त मत्ता जु रेव ॥
महदेव सुअन मोहंत तास। सु प्रसन्न ईस सेवंत जास ॥ छं० ॥ २८४ ॥
वर अजयसिंघ सिंघह सु राम। नर बीरसिंघ संग्राम नाम ॥
सुअ बिंदसूर उद्दारहार। आसोक श्रीय संकाविडार॥छं० ॥ २८५ ॥
सुअ बैरसिंघ वैरी बिहंड। अुव बीरसिंघ अरि बीर डंड ॥
अरिमंत सकल कलि कलनचूर। मानिक्क राव चहुआन सूर॥छं०॥२८६॥

महिसिंहजी से धर्म्माधिराजजी तक का वर्णन ॥

राजत्त * सुअन ता सहस मध्य। महसिंघ सिंघ संग्रम पथ्य * ॥
सुअ चंद्रगुपत सम चंद्ररूप। प्रतापसिंघ आरेन दूप ॥ छं० ॥ २८७ ॥

नूप। तत। पूर। बालन। प्रथम। जग्ग। दुप। पहु। मंह। रत। क्रोडी। क्रियो। चल्यौ। प्रमान। मांन। थांन। चल्यौ। मुकजो। मुकयौ। निगम। मुक्कयो। जित। क्रिति। चैासठि। चित। पायैा। जंम। बिष। जंम। कदंम। कदम। दानेवसल। थांन। स। आनि। उगत। उगात। उतग। पुकस्या। जरन जाहुजाहु। जाह जाह। द्वन्द। सं० १७७० और १६४७ में "नैर पुर रुद्र डरि हक बलि। मांनि। जज्जेरी। जज्जरीय। पांनि। लगे। डक्के। सुरूप। मृग। सर्प। अ म। अप। सद। पुत्र॥

* * पक्षपात रहित वृद्ध और विद्वान कवि कहते हैं कि यहां अर्थात् छंद २८६ और २८७ के बीच में कितनेक छंद लोप हो गये है किन्तु चंद कवि ने तो मूल पुरुष श्री चाहुवानजी से लेकर पृथ्वीराजजी तक पीढ़ावली वर्णन की थी जिनको सब ऐतिहासिक ग्रंथ और सर्वसाधारण मनुष्य हिन्दुओं का अंतिम बादशाह होना प्रकाश करते और मानते हैं। और क्वचित् चंद का नाम विध्वंस करनेवाले यह कहते हैं कि ग्रंथकर्त्ता ने अपने अज्ञात होने के कारण खंड विखंड वंशावली वर्णन की है। इन दोनों सम्मतियों में से हम पहिली से सम्मत हैं क्योंकि प्रथम तो चंद कवि अपने वंश परंपरा से इस राजकुल का मुख्य कवि और ख्यात वर्णन करनेवाला था और यह कदापि संभव नहीं है कि आज तो हम चैाहान वंश की शुद्ध अथवा अशुद्ध पीढ़ावली जान सकें और हम से सात सैा वर्ष पहिले जो उक्त राजकुल का निज कवि हुआ वह न जानता हो और न वर्णन करे। दूसरे चाहुवान वंश की पीढ़ावली जो श्रीमान श्री बूंदी राव राजाजी महोदय ने निश्चय कराया है और जो एक चाहुवान वंश मात्र की पीढ़वली हम भी सन् १८७३ से सिद्ध कर रहे है और वह बूंदीवाली से विशेषांश में मिलती हुई है। उन दोनो के अनुसार श्री चाहुवानजी से पृथ्वीराजजी एक सो सतत्तरवीं १७७ पीढी में हुए सिद्ध होते हैं। अब यहां सूक्ष्म बुद्धि से विचार कर देखने की बात है कि छंद २८२ से २८६ तक में जो तेरह १३ नाम क्रम से कवि ने कहे हैं वे उक्त दोनों वंशावलियों से बराबर मिलते हैं और "राजत्त सुअन ता सहस मध्य" का अर्थ इन प्रथम माणिक्यराजजी के विषय में घट नहीं सकता क्योंकि इतना वंश यहां तक बढ नहीं सकता। इस के सिवाय जो पाठक चाहुवान वंश की इस परम प्रसिद्ध कथा को जानते होंगे कि तीसरी पीढ़ी में महादेवजी (जिनका उपनाम परभंजनजी भी है) के हाथ से अनजाने प्रमति ऋषि की एक गाय मर गई थी कि जिस पर ऋषि ने शाप दिया था कि "तुमारा वंश नाश हो" तदनन्तर ऋषि को

सुत मोह सिंघ बर मोह रूप । भूतच्च भयंक रन रत्त भूप ।
सुत सेनराइ वह सेन वंत । संप्रत्ति राइ सुभ तत्त मंत ॥ छं० ॥ २८८ ॥
सुअ नागहस्त सम नाग राज । अस्थूल नंद आनंद राज ॥
गिर लोहधीर सुत ध्रम्मसार । सुअ बीरसिंघ संकाबिडार ॥ छं० ॥ २८९ ॥
सुअ बिबुधसिंघ सम जोगसूर । जस चंदराय बर अजस दूर ॥
सुन किस्नराज जस किस्न चिंत । हरहरहराइ नर बुद्धिमंत ॥ छं० ॥ २९० ॥
बालन्न राइ बलि अंग तास । सुअ प्रथव राइ पहुमी प्रकास ॥
तिन अनुज अंग राजत अनेय । कलि अलप आउ कित्ती अछेय ॥ छं० २९१ ॥
धर्माधिराज रति जोग भोग । षट षुंट षित्ति षग्गह सु भोग ॥

मनाने पर उन्होंने अपराध क्षमा कर के कहा कि कितनीक पीढ़ियों तक तो तुम्हारे वंश में एक एक ही पुत्र होता रहैगा फिर वंश बढ़ैगा । इस से भी इस तुक का अर्थ माणिकराजजी में नहीं घट सकता ।

तथा उक्त दोनों पीढ़ावलियों को इस रूपक के साथ मिलाने से यह भी ज्ञात होता है कि छंद २८७ से अर्थात् उस में कहे महिसिंहजी एक सौ अड़तालीसवीं पीढ़ी में हुए और उन से फिर सब नाम बराबर क्रम से एक सौ सतत्तरवें पृथ्वीराजजी तक मिलते हैं । क्या अब जो चौदहवीं पीढ़ी से एक सौ सैंतालीसवीं पीढ़ी तक के बीच के नाम वह भी क्रम से चंद कवि बिलकुल ही नहीं जानता था अथवा क्या वह उनको निगल कर परलोक में जा बैठा है ? जो कि हमारी वृत्ति सदैव प्रत्येक विषय के अनुकूल अनुमान करने और उस के साधर्म्य को मान्य करने की है इसलिये प्रतिकूल अनुमान ही क्यों करें और वैधर्म्य की ओर क्यों दृष्टि डालें । क्योंकि जो आज विद्वान लोग अन्य बड़े बड़े प्रसिद्ध ग्रंथों के विषय में ऐसे ही प्रतिकूल ही अनुमान करने लग जावें और वैधर्म्य का ही आश्रय कर लें तो बड़ा अनर्थ हो जाय । अब हम चौदहवीं पीढ़ी से एक सौ सैंतालीसवीं पीढ़ी तक के नाम अपने तथा बूंदी राज्य के शोध किए हुए हमारे पाठकों के जानने के लिये यहां लिखते हैं । पुष्करजी (विजयपालजी) १४ असमंजसजी १५ प्रेमपूरजी १६ भानुराजजी १७ मानसिंहजी १८ हनुमानजी (धर्म्मपाल) १९ चित्रसेनजी २० शंभूजी २१ महासेनजी) रुद्रीशजी) २२ सुरथजी २४ रुद्रदत्तजी (कर्णपालजी) २४ हेमरथजी (रामपालजी २५ चित्रांगदजी २६ चंद्रसेनजी (चित्ररथजी) २७ वाल्मीकजी (वत्सराजजी) २८ धृष्टद्युम्नजी (वरुणजी) २९ उत्तमजी ३० सुनोकजी ३१ सुबाहुजी (मोहनजी) ३२ सुरथजी ३३ भरथजी (मद्रसेनजी) ३४ सत्यकीजी (सात्यकजी और सात्विकजी) ३५ शत्रुजितजी (केसरीदेवजी) ३६ विक्रमजी ३७ सहदेवजी (इन को जीतकर कुरुवंशी राजा ने दिल्ली ले ली) ३८ वीरदेवजी (भीमसेनजी) ३९ वसुदेवजी ४० वासुदेवजी ४१ रणधीरजी ४२ शत्रुघ्नजी ४३ सुमेरजी (शालिवाहनजी) ४४ कृतवर्म्माजी ४५ सुवर्म्माजी ४६ दिव्यवर्म्माजी ४७ यौवनाश्वजी ४८ हरियश्वजी ४९ अजैपालजी (अजमेर बसानेवाले) ५० भटदलनजी ५१ अनंगराजजी ५२ भीमजी ५३ गोगाजी ५४ शुभकरणजी ५५ उदयकरणजी ५६ जयकरणजी ५७ हरीकरणजी ५८ कीर्तीशजी ५९ बालकृष्णजी ६० हरिकृष्णजी

वीसल देव जी का वर्णन॥

जग दुष्ष वीसल नरिंद। बहु पापरत्त द्रव्यान अंध॥ छं०॥ २९२॥
क्रत अक्रित काम कित्तच सु कीन। जिन असुर घोर षनि द्रव्य लीन॥
संसार थागि फुनि द्रव्य काज। उपजाइ मत्ति अजमेर राज॥ छं०॥२९३॥
कौडी सु मोल गज कियौ एक। लीयो न किनच फिरि सच्चर नेक॥
कामंध अंध सुझ्झौ न काल। इक अचक जोरि गिरि इक्क माल॥छं०॥२९४॥
चल्ल्यौ न राजनीतच प्रमान। आनीत वंधि न्रप थान थान॥
सुझ्झौ न ध्रम्म चाल्यौ प्रमान। मुकजौ निगम्म करि अगममान॥ छं०॥२९५॥
अवलोच कोच कंडिय सु कित्ति। मुक्कयौ ध्रम्म आध्रम्म जित्ति॥
दरबार अतिथ दीसै न कोइ। अप्प सुह कित्ति संभरै लोइ॥ छं०॥ २९६॥
चौसठ्ठि बरस बर राज कीन। पायौ न पुच फल सुष्य चीन॥
बल अबल चित्त चिंत्यौ सुकाल। पायौ न सुक्रत कछु करन साल॥ छं॥ २९७॥
गति अंत सुमति सो होइ बीर। पावै सु जन्म जज्जर सरीर॥
द्रवि गयौ सुमन वीसल नरिंद। उप्पनौ बीर क्षिति वीष्य कंद॥ छं०॥ २९८॥
घन मदन सदन भरि स्रब्ब जन्म। तिह परत उठ्ठि क्रत्या कदम्म॥

६१ रामकृष्णजी ६२ बलदेवजी ६३ हरदेवजी ६४ भीमजी ६५ सहदेवजी ६६ रामदेवजी ६७ वसुदेवजी ६८ श्यामदेवजी ६९ हरिदासजी ७० महीधरजी ७१ वामदेवजी ७२ श्रीधरजी ७३ गंगाधरजी ७४ महादेवजी ७५ शारंगधरजी ७६ मानसिंहजी ७७ चक्रधरजी ७८ शत्रुजितजी ७९ हलधरजी ८० महाधनुजी ८१ देवदत्तजी ८२ दामोदरजी ८३ काशीनाथजी ८४ लीलाधरजी ८५ धरणी धरजी ८६ रमणेशजी ८७ भगवतदासजी ८८ कृष्णदासजी ८९ शिवदासजी ९० हरिपूर्णजी ९१ देवीदासजी ९२ कर्मचंद्रजी ९३ रामदासजी ९४ महानन्दजी ९५ विष्णुदासजी ९६ महारामजी ९७ रेवादासजी ९८ अमरसिंहजी ९९ गंगादासजी १०० मानसिंहजी १०१ विश्वंभरजी १०२ मथुरादासजी १०३ द्वारिकादासजी १०४ माधवजी १०५ सुदासजी १०६ वीरभद्रजी १०७ गोपालजी १०८ गोविन्ददासजी १०९ माणिक्यराजजी दूसरे (इन के दो पुत्र बड़े हनुमानजी और छोटे सुग्रीवजी जिन में से पाटवी हनुमानजी सांभर का राज्य अपनी प्रसन्नता से सुग्रीवजी को देकर आप पटना जीत वहां के राजा हुए कि जिन के वंश में इकतीस ३१ प्रकार के पूर्विये चौहान हुए) ११० सुग्रीवजी (सांभर के राजा हुए) १११ अंगदजी ११२ केसरीजी ११३ जयंतजी ११४ जगदीशजी ११५ जयरामजी ११६ विजयरामजी ११७ कृष्णजी ११८ जीतयुद्धजी ११९ गोवर्द्धनजी १२० मोहनजी १२१ गिरिधरजी १२२ उदयरामजी (उद्धमजी) १२३ भारथजी १२४ अर्जुनजी १२५ शत्रुजीतजी १२६ सोमदत्तजी १२७ दु:खतजी १२८ भीमजी १२९ लक्ष्मणजी १३० परशुरामजी १३१ रघुरामजी (मारोट के राजा से सात दिन लड़कर सांभर छोड़ बुरहानपुर अपने सुसरे के यहां भाग गए और वहीं मरे) १३२ समरसिंहजी १३३ माणिक्यराजजी तीसरे (सांभर इन्हों ने पीछे विजय कर लिया १३४ मधुकर्मजी

ढुंढा दानव की उत्पत्ति और उसका अजमेर के बन में रहना ॥

कत्या कदम्म उद असुर रज्जि। धर ढुंढ नाम दानव उपज्जि ॥छं०॥२९९॥
जगि जोग नयर जुगनीय थान। पुज्जै सु आय उग्गति विहान ॥
रथ च्यार चक्र उत्तंग बाह। असि असिय हथ्थ मुष अग्ग दाह ॥ छं०॥३००॥
संभरिय धरा धरनीय ठाह। पुक्कस्यौ नरनि रे जाहु जाह ॥
सिर कोपि रीस धुनि दसन बज्जि। उभरे षग्ग जनु इन्द्र गज्जि॥छं०॥३०१॥
प्राहार पाय धुकि धरनि धुज्जि। पुर नयर रुद्र उर धक्कि बज्जि ॥
कंपी सु भूमि नव षंड मान। जज्जरिय नाव ज्यौं बाय पान ॥ छं० ॥३०२॥
लग्गै न पलक द्रग देव चक्खि। डक्के डकार द्रगपाल गक्खि ॥
दिष्यौ सरुप दानव उतंग। वैराट रूप हरि धर्यौ अंग ॥ छं० ॥ ३०३॥
पंषीहू स्रग्ग नर स्त्रप्प भाजि। आघात सद्द दानव सु गाजि ॥
चित चिंत चिंत्त जुगिगनि प्रधान। पुज्जै सु आनिउग्गति विहान ॥छं०॥३०४॥
चहुआन रूप दानव प्रमान। भज्या सु पुच आबू सथान ॥
छं० ॥३० ॥ रू० ॥ १४०॥

(दामोदरजी) १३५ रामचंद्रजी १३६ संग्रामसिंहजी १३७ शिवदत्तजी (श्यामदत्तजी) १३८ भोगादत्तजी १३९ शिवदत्तजी १४० रुद्रदत्तजी १४१ ईश्वरजी १४२ उमादत्तजी १४३ चतुरजी १४४ सोमेश्वरजी पहिले (इन के दो लडके भरयजी १ और उरयजी २ उन में से भरयजी पाटवी के वंश में पृथ्वराजजी हुवे और उरयजी के वंश में बूंदी और कोटा आदि के हाड़ा चौहान हुए हैं) १४५ भरयजी १४६ युद्विष्टरजी ॥

इसके छन्द २८८ की पहिली तुक के पहिले पाद "सुत मोहसिंह वर मोह रूप।" में कवि का गूढ आशय यह समझना आवश्यक है कि वह उसमें तीन नाम वर्णन करता है मोहसिंह (सिंहदेवजी) सिंहवर और मोहनरूप कि जिसके सिंघ शब्द का अर्थ करने के समय मोह शब्द के साथ और वर के साथ दोबार लगाने से पृथक दो नाम सिद्ध हो जाते हैं अतएव हमने सिंघ शब्द के नीचे दो लकीर करी है। और इसी तरह छन्द २९१ की पहिली तुक के दूसरे पाद में "प्रथम" शब्द से पृथ्वीराज नाम का निःसन्देह कहना षट् भाषा में व्युत्पन्न विद्वान कर सकते। तदनन्तर वीसलदेवजी के जो वृत्त चंद ने जैसे के तैसे उत्तापित होकर लिखे हैं उनको मनन करने से विद्वान पाठक सहज ही में यह अनुमान कर सकते हैं कि यद्यपि चंद उनके कुल का वंश परंपरा से राज-कवि था पर वह निःसंदेह बड़ा ही स्पष्ट-वक्ता और पक्षपात रहित पुरुष था क्योंकि आज इस उन्नीसवीं शताब्दी में भी जब कि स्वतन्त्रता और सभ्यता का सूर्य पूर्ण प्रकाशित होरहा है तब भी कोई राज-कवि ऐसा स्पष्ट-वक्ता और पक्षपात रहित अपने यजमान की दुर्गतियों को उसके भावी संतानो के शिक्षार्थ निडर होकर प्रकाश करनेवाला प्रायः किसी की दृष्टि न आया होगा। इस के साथ भाषाओं के शोध करनेवाले विद्वानों को चंद

दूहा ॥ सो दानव अजमेर बन । रहि तह दिन घन अंत ॥
सून्य दिसान न जीव को । थिर थावर द्रिगमंत ॥
छं० ॥ ३०६ ॥ रू० ॥ १४१ ॥

मुरिल्ल ॥ संभरि सोर नरिंदह संभरि । पंथ प्रजा पसरै रन जंगर ॥
रम्य अरम्य करी सु धरन्निय । रहे मठ कोट अफोट करन्निय ॥
छं० ॥ ३०७ ॥ रू० ॥ १४२ ॥

सारंगदेवजी की राणी गैारीजी का अनलगर्भ सहित रणथंभ पधारना ॥

दूहा ॥ गैारी चलि रनथंभ गिरि । सारंग सचौ राह ॥
प्रजा पुलंदी मद्दिम धरि । ग्रभ्भ अनल गैाराह ॥
छं० ॥ ३०८ ॥ रू० ॥ १४३ ॥

अनल ग्रभ्भ धरि गैारि सिसु । गय रनथंभ दिसान ॥
राजद्दव राबत पनी । मातुल पष चहुवान ॥
॥ छं० ॥ ३०९ ॥ रू० ॥ १४४ ॥

का यह वाक्यखंड "हक अहक" भी ध्यान देकर समझने योग्य है कि "हक" अथवा "हक्क" जो हिन्दी भाषा में प्रयोग होता है वह अरबी अथवा फारसी नहीं है किन्तु संस्कृत स्वक शब्द से है और "अहक" शब्द स्वतः इस बात की स्पष्ट साक्षी देता है। इसी रूपक के छन्द ९९९ से ढुंढा राक्षस की उत्पत्ति चंद कवि वर्णन करता है ॥

१४१ पाठान्तर-रहितह । रहतह । दिसानन । जीवक्यै । द्रिग । मंत ॥

१४२ पाठान्तर-पसरी । अवन्निय । रहै ॥

१४३-१४४ पाठान्तर-सारंग । ग्रभ । गैारास । शुभ । रिनथंभ । राजदव । पति ॥

इन रूपकों के पढ़ने के पहिले हमारे पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि वीसलदेवजी ने अपने लडके सारंग देव जी को अपने हाथ से मार डाला था कि जिस के पीछे वे आप भी सांप के काटने से मर गये और अजमेर अर्थात् संभर का राज्य विना राजा के रह गया और अजमेर के बन में ढुंढा नामक दानव रहने लगा किन्तु वीसलदेवजी के लड़के सारंगदेवजी की रानी गैारी के गर्भ था। रानी जो राज्य की यह दशा देखकर अपने पिता रणथंभ के राजा के यहां चली गई और वहां सारंगदेवजी के अनल अर्थात् आना राजा उत्पन्न हुए । यह सब कथा आगे के रूपकों में जब आना राजा अपनी माता से अपने पिता का नाम और सब वृत्तान्त पूछेंगे तब कवि माता और पुत्र के संवाद में वीसलदेवजी की कथा सविस्तर वर्णन करेगा। इन रूपकों में अभी गैारी रानीजी का सगर्भा रणथंभ जाना ही कवि ने वर्णन किया है ॥

आना राजा का जन्म होना और उन का बालपन ॥

भुजंगी ॥ धरै गौर जन्नं म आनल्ल राजं । बसे देव गामं दुनी छत्र लाजं ॥
नवं वृत्त नित्तं नवं वृत्त सिष्षै । नरं तार तारं नत्रं भत्त भिष्षै ॥ छं० ॥३१०॥
चरं संभरी बात पुच्छंत मित्तं । धरै ध्यान दिष्षै अजम्मेर चित्तं ॥
कला स्रब्ब सिष्षिं महा मल्लवीरं । गिनै मग्ग ओमं पढै मंत्र धीरं ॥छं०॥३११॥
दिनं सीह अब्बीह आषेट षिल्लै । ननं नेह निद्रा सुरं सिद्ध मिल्लै ॥
करं पाइकं बिद्ध साइक्क नष्षै । भरं भै अभैनं सुयं सब्ब रष्षै ॥ छं॥ ३१२॥
वधै काम कामं अलीहो न भष्षै । सुभै राजसं तामसं सत्त चष्षै ॥
रमै जम्म सेना ग्रहै जम्म भारी । सुई संभरी बात दिष्षै करारी॥छं०॥३१३॥
कहै काल कालं अकालंति बंधै । इतं जोर मा वित्त सैां चित संधै ॥
दुअं बाह परचंड दुग्गं सरूपं । इसे दिष्षियै राज आना अनूपं ॥
छं० ॥ ३१४ ॥रू० ॥ १४५ ॥

कवित्त ॥ अति बल बंड प्रचंड । हिंड आषेटक षिल्लै ॥
हिरन रोज बाराह । बंधि बागुर वर मिल्लै ॥
वन परवत्त झिरना । निवान राइ* राजन संग हिंडै ॥
राग रंग भाषा* कव्वित्त । दिव्य वानी चित मंडै ॥
हय हथ्थि देय संकै न मन । षग्ग मग्ग पूनी वहै ॥
चहुआन वंस अवतंस इम । रँग अनेक आना रहै ॥
छं० ॥ ३१५ ॥ रू० ॥ १४६ ॥

---

१४५ पाठान्तर–आनल । वृत । नितं । वृत । भृत । बान । पुछंत । सेतं । चितं । स्रब्र । सिषिं । सिष । महामल्ल । गिनी मंगि आमं । ओमं । अबीह । सिद्ध । पायकं । साइकं । नष्षै । भरभे । अभैन सोई सब्ब रष्षै । भरं भेय भैनं सोई सब्ब रष्षै । भर भेय भैनं सोयं सब्ब रष्षै । वधे । अली । होन । सत्तं । चषै । जम । यहे । जम । सोई । साई । सोइ । संभरि । तिसंधै । जो । रमावित्त । सों । दुर्गा । दिषियै । अनूप ॥

इस रूपक से कवि ने आना राजा के जन्मादि की कथा वर्णन करनी प्रारभ की है ॥

१४६ पाठान्तर–राइ । सग । हिडै । कवित । संषै । रंग । राइ * भाषा * विशेष हैं ॥

आना का बालापन व्यतीत होना और वीरत्व को प्राप्त हो माता से पूछना ॥

दूहा ॥ तन मंडी मचि अप्पनी। छंडी बालक बुद्धि ॥
रोस रम्यौ अरि अंग में। तब पुछि मातह सुद्धि ॥
छं० ॥ ३१६ ॥ रू० ॥ १४७ ॥

आना की माता का उसको सर तर और अष्षर विद्या का उपदेश करना ॥

गाहा ॥ सर तर अष्षर विद्या। सा विद्या अन्य सारसी नथ्थी ॥
सो आना अन भंगं। मंत्तनं प्रिय यो सष्पि ॥
छं० ॥ ३१७ ॥ रू० ॥ १४८ ॥
जा सिसु वीरं पतनी। वीरं होइ वीर भज्जायं ॥
नवं तीन वत्त तरंगं। सा मातं वीरया पुत्तं ॥
छं० ॥ ३१८ ॥ रू० ॥ १४९ ॥

आना का माता से पूछना कि मैं किस वंश में उत्पन्न हुआ हूं ॥

दूहा ॥ बीर पुत्त मातुलं सुमति। गवरि सपन्नो जाइ ॥
वो किहि बंसहि ऊपज्यौ। तूं मुझ जंपहि माइ ॥
छं० ॥ ३१९ ॥ रू० ॥ १५० ॥

गौरी माता का कहना कि यह बात न पूछो उसके कहते मुझे भय और करुणा होती है ॥

दूहा ॥ गौरि मात कहै पुत्र सौं। पुत्त न पुव्वहु बत्त ॥
जिहि भय जल लोचन भरहि। बर पूछन पर तत्त ॥
छं० ॥ ३२० ॥ रू० ॥ १५१ ॥

---

१४७ पाठान्तर–मत। मही। बुधि। पुछिय।

१४८–१४९ पाठान्तर–अरकर। मत्रंनं। अनभग। साखे ॥ १४९ ॥ वीर। भजाइं ॥ नवती नवत तरंगं। नव तीन वत्त तरंगं। नवती नव तत रंगं ॥ यह तीन प्रकार के पदच्छेद कोई कोई कवि करते हैं ॥

१५० पाठान्तर–पुत्ति। संपन्नो। जाई। जाइं। किहिं। ऊपनो। मांइ। माइ ॥

१५१ पाठान्तर–गौरी। सो। पुत। पुछहु। जिन। भरहिं। पूछत। परतत।

आना का माता से अपने वंश की कथा हठ करके पूछना ॥

पद्धरी ॥ उच्चर्यौ मात सों पुच सच्चि । जानों न वंस मो पिता वच्चि ॥
मो तात नाम बंदी न लेहि । नन करों आद्ध कबहू न गेह ॥छं०॥३२१॥
अप्पौं न अंब अंजुलिय तात । उप्पनौ वेद हूं किन सु गात ॥
के नाम लेय मातुलह वंस । पित वैर लेउं बर बीर हंस ॥छं०॥३२२॥
छंडों कि प्रान मुक्कूं व देह । संसार भार अप्पौं कि छेह ॥
आना नरिंद यह कहिय वात । सुनि श्रवण अप्प धर परिय मात ॥
छं० ॥ ३२३ ॥ रू० ॥ १५२ ॥

आना की माता का उसे कथा प्रगट न करने को कहना और ढँक करके संक्षेप में कहना ॥

दूहा ॥ पुत्र प्रगट्ट न कीजिये । मो तिय हूय अंदेह ॥
आदि हुते दानव प्रवल । धर धुंमी असुरेह ॥
छं० ॥ ३२४ ॥ रू० ॥ १५३ ॥

भिरन कहत दानव सरिस । मानव मनुषी देह ॥
मो गंधारि निहारि मुष । पुच विलासनि गेह ॥
छं० ॥ ३२५ ॥ रू० ॥ १५४ ॥

अरिल्ल ॥ हूश मातुल बंस प्रधानह मान । भये दम पुत्त सु मानिक थान ॥
विचारि दर्यौ तहां संभरि ग्राम । वस्यौ अजमेर सुमंत विश्राम ॥
छं० ॥ ३२६ ॥ रू० ॥ १५५ ॥

---

१५२ पाठान्तर–उचर्यौं । उचस्यो । रूच्च । जानौ । मुष्फ । वच्च । लेंहि । कस्यौ । सु । वेदहु । किनसु । कै । लेह । लैऊ । लेऊ । छडों । कै प्रानं । मुक्कौ । व अछेह । आनां । दह । रम । कहीय । अप । वरिय ॥

१५३–५५ पाठान्तर–पुत्र । पुत्त । प्रगट । कीजीइ । जिय । अंदेस । हुंते । असुरेस ॥ १५३ ॥ विलासन । विलास । न ॥१५४॥ प्रधानह । मांन । माकिन । थांन । गाम । सुमंत । विश्रांम ॥१५५॥

अन्य उपलब्धों के द्वारा आना का संभरि की पूर्व कथा सँभारन॥

कवित्त ॥ धर मुक्किबलि राय। मात लभ्यौ न कित्त रिस ॥
धर मुक्किय सुअ पंड। सुष्य मुक्यौ सु दुष्य बसि
धर मुक्किय श्रीराम। सिया षोइय वल गोइय ॥
धर मुक्की नल राय॥ सिरचि कालंकित ज्योइय ॥
धर मुक्कि वीर हर चंद न्टप। नीच घरह घट जल भर्यौ ॥
ढंकन सु इला न्टप जानियै। न्टप ढंकन इलचर कर्यौ ॥
छं ॥ ३२७ ॥ रू० ॥ १५६ ॥

न्टप ढंकन इल होइ। इलह ढंकन सु राज भर ॥
षह ढंकन वर देव। देव ढंकन वर अंबर ॥
अपजस ढंकन कित्ति। कित्ति ढंकन जस धारिय ॥
औगुन ढंकन विद्य। सुगुन विद्या उचारिय ॥
ढंकनह काल वर ध्रंमको। ध्रंम काल ढंकन करिय ॥
मावत्ति गुरू ढंके जु सिसु। सिसु ढंकन पित उच्चरिय ॥
छं० ॥ ३२८ ॥ रू० ॥ १५७ ॥

अरिल्ल ॥ इहि विधि आनल बत्त उचारिय। पुब्ब कथा संभरि संभारिय ॥
किहि विधि राषस ढुंढ उपन्ना। सारंगदे कैसे जुद्ध किन्ना ॥
छं० ॥ ३२९ ॥ रू० ॥ १५८ ॥

आना का माता से पूछना कि नर अर्थात् वीसलदेव दानव कैसे हुआ ॥

दूहा ॥ एक बत्त तुम सम कहौं। मात कथा समझाइ ॥
नर किहि बिधि दानव भयौ। इह अचिरज मो आइ ॥
छं० ॥ ३३० ॥ रू० ॥ १५९॥

१५६--१५७ पाठान्तर-वल। राइ। लिन्यौ। रिस। मुकीय श्री। सुप। दुप। मुकीय। स। १५८ ...य। गोईय। मुक्किय। सिगं। सिरह। कालंक। तन्यौ। जोइय। मुकि। घरहिं। भर्यौ। इल। भूमि। इल वर। कर्यौ। अप। जस। किति। किति। धारीय। औगन। सगुन। उचारीय। कों। मा। वित्त ॥ १५७ ॥ षत। उचारीय। किहिं। अपन्नो। कीनौ ॥

१५८--१५९ पाठान्तर-वत। सों। समझाय। अचरिज ॥ १५९ ॥ जो। सौ। हूं। जानियौ। नव निहचे नि संदेह ॥

दूहा ॥ जो मोसों साच न कहै। तौ हैां छंडों देह ॥
दूह अप्पनि जिय जांनि जहु । नव निहचे निज ओह ॥
छं० ॥ ३३१ ॥ रू० ॥ १९० ॥

गाहा ॥ कथि मा कांनन कथयं । जो मो ऊपर पुच हितायं ॥
जीवन हथा परंनी । आना नह आंन उपायं ॥
छं० ॥ ३३२ ॥ रू० ॥ १९१ ॥

आना की मा का कहना कि दानव की कथा न सुन चित्त भंग होगा ॥

दूहा ॥ पुच नि सुनि दानव कथा । श्रवन सुनत होइ भंग ॥
इह अरिष्ट अँग उप्पजै । पित परिपिता प्रसंग ॥
छं० ॥ ३३३ ॥ रू० ॥ १९२ ॥

आना का उत्तर दे कहना कि ऐसे मुझे क्यों डराती है ॥

मुरिल ॥ ऐसी कहि मो कहुं डरपावहु । मेरै कछु इह दाय न आवहु ॥
रामाइन भारथ की वाता । सो हैां सबै सुनत हैां माता ॥
छं० ॥ ३३४ ॥ रू० ॥ १९३ ॥

आना की मा का कहना कि जिस से कार्य सिद्धि न हो उसका कहना व्यर्थ है ॥

कवित्त ॥ जिहि पुर गवन न होइ । ताहि कोइ पंथ न बुझ्झै ॥
जिहां दिष्ट नह भिदै । तहां कैसें करि सुझ्झै ॥
जो श्रवन न नह सुनी । सु* कहै कैसी परि कहियै ॥
जाकै देह न होइ । ताहि कैसै कै गहियै ॥
इह कथा असम अदभूत अति । हठ निग्रह सुत जिन करै ॥
सुनत ही श्रवन दुष उप्पजै । सिद्ध न कोइ कारिज सरै ॥
छं० ॥ ३३५ ॥ रू० ॥ १९४ ॥

---

१९१ पाठान्तर—१६४७ में ॥ कथि कथावत कथियं । जो उपर पुत हितायं ॥

१९२ पाठान्तर—पुत्रहि । होय । अंग । उप्पज्यौ । उपज्यौ ॥

१९३ पाठान्तर—कूं । स्यू । पावहि । मेरे । कछूई । आवहि । वात । हूं । हूं । हों । हो मातं ॥

१९४ पाठान्तर—गमन । तासु । को । बूझै । जहा । कैसें । सूझै । श्रवनहु । नहु । न । कहु । कहीर । कैसें । गहियै । उपजे । कोय ॥　　सु * विशेष है ॥

आना का प्रत्युत्तर देना कि आगे कितने नर, ऋषि और राइ दानव हुए हैं कथा सुनने से क्या होता है ॥

कवित्त ॥ मात सुन हु मुझ बात । कथा सुनतें कहा लग्गै ॥
केते नर रिष राइ । भए सुर दानव अग्गै ॥
तिन की कथा प्रसंग । सुनहि सब को समुझावहि ॥
तिन कौ जुद्ध विरुद्ध । लोक वेदन में गावहि ॥
इह जांनि मात श्रवननि सुनौं । कहतें कछु लग्गै नहै ॥
जेजे न्त्रिमांन विधि न्त्रिम्मए । तेते निहचै न्त्रिब्बहै ॥
छं० ॥ ३३६ ॥ रू० ॥ १६५ ॥

आना की माता का बीसलदेवजी की सविस्तार कथा कहना ॥

बीसलदेवजी का जन्म होना ॥

मुरिल ॥ पुत्त सुनहु इह बत्त पुरानी । कहतैं होइ गद गद वानी ॥
अनल कुंड आबू रिषि कीनौ । राज उपाइ राज सिर दीनौ ॥
छं० ॥ ३३७ ॥ रू० ॥ १६६ ॥

दूहा ॥ ताके कुल तैं उप्पनौ । महाराज धंमाधि ॥
ताके बीसल देव न्टप । सबै राज आराधि ॥
छं० ॥ ३३८ ॥ रू० ॥ १६७ ॥

बीसलदेवजी का पाट बैठना ॥

कवित्त ॥ आठ सैं रु इक ईस । बैठि बीसल सु पाट ब्रष ॥
सुक्रवार प्रतिपदा । मास्र वैसाष सेत पष ॥

---

१६५ पाठान्तर-बात । सुनतें । मुनि । कोइ । वेदनि । जानि । कहेतें । कहे । तं । जै जै । न्रमान । न्रमए । न्रिंमए । निरवहै ॥

१६६ पाठान्तर-वत । पुरानी । गहेतें । कहे । ते । वांनी । रिष ॥ १६६ तें । । ऊपनो । धम्माधि । ताकै । न्रप ॥

१६७ पाठान्तर-वसल । पाठ । वर । प्रतिपादा । प्रतिपट्टी । सारै । उचारे । उव्वरै । अंगवर । धम । नरै ॥

१६८ हमारे पाठकों को भले प्रकार ज्ञात है कि कुछ दिनो से कोई कोई विद्वान इस ग्रन्थ को आदि से अंत पर्यंत जाली बना हुआ अनुमान करते हैं और जितनी तर्क वे अपने अनुमान को सिद्ध करने को लाते हैं उनमें सब से बडी तर्क कि जिस पर दूसरी तर्कों का भी सर्वरीत्या

आये बंस छतीस । विप्र बंदी जन सारे ॥
दियौ छच सिर तिलक । वेद मंचह उचारे ॥

आधार है वह यह है कि इस ग्रन्थ में लिखे हुए संवत् संप्रत शोध हुए और मुसलमानी तवारीखों में लिखे हुए संवतो से नहीं मिलते । अतएव इस संवत् विषयिक झगड़े का प्रारम्भ इस रूपक १६८ और छन्द ३३९ से समझना चाहिये क्योंकि रासो के जितने छन्दो में संवत् मिती कहे गए हैं उनमें से प्रथम छन्द यही है । इससे हम को विदित होता है कि संवत् ८२१ वैशाख शुदी १ शुक्रवार को बीसलदेवजी राज-गद्दी पर विराजे किन्तु इसी आदि पर्व में इस रूपक से थोड़े से ही और आगे बढ़कर हम को बीसलदेवजी के पट्टन विजय करने के संवत् सूचन करनेवाले नीचे लिखे रूपक मिलेंगे–

(सवत् १८५९ की पुस्तक में)

दोहा ॥ सो संवत् नव सत अट्ठ । बरस तीस छह अग्ग ॥
पुर पट्टन वीसल नृपति । राजत सयलह जग्ग ॥
कवित्त ॥ संवत् नव सत अट्ठ । बरस दस * तीय सत्त अग्ग ॥
पुर प्रविष्ठ वीसल नरिंद । राज्यंव सयल जग्ग ॥

(संवत् १८७० की पुस्तक में)

दोहा ॥ सो संवत् नव सत्त अध । वरस तीस छह अग्गि ॥
पुर पट्टन वीसल न्रपति । राजत सयलह जग्गि ॥
कवित्त ॥ सर संवत् नव सत्त । वरस दस * पंच सत्त अग्ग. ॥
पुर प्रविट्ठ वीसाल । न्रपति राजंत समल जग ॥

(गुजरात देश की पुस्तक में)

दोहा ॥ सो संवत् नव शत अधिक । वर्ष तीस छह अग्ग ॥
पुर प्रतिट्ठ विशल नृपति । राजत सकल जग्ग ॥

जितनी पुस्तकें हम इस टिप्पण के लिखते समय देख सके उन सब में ऊपर लिखे पाठ पाए अर्थात् किसी में हमारी स० १८५९ का पाठ मिलता है तो किसी में संवत् १८७० वाली का। शोक की बात है कि हमारी १६३१ तथा १६३२ वाली पुस्तक में तो यह पर्व्व ही नहीं है और संवत् १६४७ वाली में यह पृष्ट नहीं है कि जिसमें इन छन्दो का होना सम्भव है । यह तो जानने में ही है कि पिछले रूपक १४० में चंद कह आया है कि "नौसट्ठि वरस वर राज कीन" चौसठ

* हिन्दी भाषा के ऐसे काव्यों में चंद जैसे महाकवियों की गूढ़ बातो को खोलने की कुंजियों में से हम एक का यहां प्रकाश करते हैं कि दश दस और दशि दसि शब्दों का अर्थ जहां वे शुद्ध लेख्या [illegible] प्रयोग हुए हो वहां सूक्ष्मता रखते हैं अर्थात् दश अथवा दस = १० का वाचक और दशि अथवा दसि = शून्य० अर्थात् केवल दहाई का वाचक होता है और जहां लेखक दोष से इन शब्दों के लिखने में गड़बड़ हो जाती है वहां संख्या में भी गड़बड़ पड़ जाती है कि इस के उदाहरण इस महाकाव्य में यहां से लेकर अनेक स्थलो में आवेंगे ।

आनंद अग्गदर इन्द्र सम । अंम नंद जस उद्वरै ॥
अजमेर नयर अरि जेर करि । विमल राज बीसल करै ॥
छं० ॥ ३३९ ॥ रू० ॥ १८ ॥

बरस बीसलदेवजी ने राज्य किया । अब विद्वानों के विचार देखने जैसी बात है कि इस रूपक के संवत् को इसी प्रकरण के दूसरे रूपकों में कहे संवतो से मिलाने से एक सौ वर्ष का फरक पड़ता है और जो ९१ वर्ष का एकसा अन्तर रासो में लिखे सब संवतो को सप्रत शोध से मिलाने और जो पत्राने हमने पृथ्वीराजजी के शोध किये हैं उनसे पड़ता है वह इस से सिवाय हैं। जगत का एक यह सर्व साधारण नियम है और उसका भार सब पक्षपात रहित विद्वानों पर है कि प्रत्येक समय के विद्यमान बड़े बड़े विद्वान सब परम पद-प्राप्त ग्रन्थकर्त्ताओं के ऊपर जो कोई व्यर्थ आक्षेप करे उस को खण्डन कर के छिन्न भिन्न कर दें क्योंकि यदि यह भार विद्वानों पर स्वतः सिद्ध न रहा होता तो सब कीट क्रिकिट सब अमूल्य ग्रन्थों को काट कर खाजांय और बड़े बड़े कवियों के नामों पर पोता फेर दें । अतएव ऐसी जिम्मेदारी को शुद्ध अन्तःकरण से समझने वाला कोई विद्वान क्या यह कहेगा कि भिन्न भिन्न पुस्तकों में यह भिन्न भिन्न अशुद्ध पाठ चन्द कवि जैसा महाकवि बीसलदेवजी की तरह दानव होकर लिख गया है? क्या इन भूलों का अपराधी चन्द है? नहीं—नहीं—कभी नहीं । हम क्या एक छोटा सा बालक भी कह सकता है कि यह सब भूलें अयोग्य लेखक और कवियों ने जान कर अथवा अनजाने की हैं । अब हमारी सम्मति इस विषय में चन्द की शैली और ख्यातिओं की पुस्तकों में लिखे सं० ९३१ को देखते हुए ऐसी है कि यहां ऐसा पाठ था कि "नौ सैं अरु इकतीस" और इस हमारे अनुमान को पट्टन विजय करने के संवत् वाले रूपक पुष्टि करते है । देखो :—

बीसलदेवजी का पाट बैठना	...	...	...	...	९३१ वर्ष
उनका राज्य करना जोड़ो	...	...	...	...	६४ वर्ष
रासो के संवतो और विक्रम में जो सर्वत्र एकसा अन्तर है वह जोड़ो—					९१ वर्ष
				विक्रमी संवत्	१०८६

रासो के रूपकों के जो मूल पाठ अशुद्ध हैं उनको अभी हम जैसे लिखित पुस्तकों में हैं वैसे ही रक्खेंगे क्योंकि जब तक सब विद्वान एक मत न हो जाँय तब तक उनको हम पुरातत्त्व विद्या के नियमों के अनुसार बदल नहीं सकते हैं । इस के अतिरिक्त हम पुरातत्त्व वेत्ताओं को चेत कराते हैं कि फीरोज़शाह की लाट पर की प्रशस्तियों को अब एक बार प्रथम बीसलदेवजी के और पृथ्वराजजी के चरित्रों को भले प्रकार ग्रन्थान्तरो में पढ़कर उन आशयों के सहारे से फिर विचारें तो उन को मालूम हो सकेगा कि पहिली प्रशस्ती जिसमें का नीचे लिखा अनुवाद है उस को बीसलदेवजी की नहीं समझना चाहिये किन्तु पृथ्वीराजजी की समझना उचित है और केवल यही विशेष समझना होगा कि बीसलदेवजी के उपलक्ष का सम्बन्ध उस में इतना ही है कि जिस मिती को यह प्रशस्ती निर्माण हुई है वह मिती बीसलदेवजी के पाट बैठने की है अर्थात् बैशाख शुदी १ और पृथ्वीराजजी को बीसलदेवजी का अवतार होना लोग मानते है अतएव इन प्रशस्तियों के लिखनेवालो ने अपने इस गूढ भाव को प्रकाश करने में उन दोनों का सादृश्य दिखाया

बीसलदेवजी का अंत समय पट्टन विजय करने को छत्र धारण करना ॥

दूहा ॥ बर पट्टन अट्टन अमित । समित वेद फुनि राज ॥
समय अंत बीसल्ल सिरह । धर्यौ छत्र सम साज ॥
छं० ॥ ३४० ॥ रू० ॥ १६९ ॥

पद्धरी ॥ सिर धारि छत्र बीसल्ल नरिंद । आसनह सिंघ बर बरन इंद ॥
भूदेव मंडि वेदी विसाल । रस पंच मेधि मेलैं ति काल ॥ छं० ॥ ३४१ ॥
बर बढी ज्वाल खंडन विभाग । जमि रहे जमल पुट पलति लाग ॥
मष समुष दिष्ष परसपर बैंन । तिनपुटह बीच तन धूम ऐन ॥ छं० ३४२ ॥
जानीत वेद मुख रहै मौंन । सुभ समय असुभ उचार कौंन ॥
संपूर वेद किन्नो भिषेक । दुज दइय बंदि आसिष असेष ॥ छं० ॥ ३४३ ॥
विधि और राज दिय सु लप माल । जै जया सबद बीसल्ल भुआल ॥
छं० ॥ ३४४ ॥ रू० ॥ १७० ॥

है कि जिस से निर्णय करने में यह झगड़ा पड जाता है कि अमुक प्रशस्ती प्रथ्वीराजजी की है अथवा बीसलदेव जी की । हमारे पास इन प्रशस्तियो संबन्धी सब संज प्रस्तुत नहीं हैं और न इतना अवकाश है नहीं तो हम ही परिश्रम करके कुछ विशेष सारांश प्रकाश करते । इस के अतिरिक्त जो सं० १२३० जैसी प्रशस्तियो को बीसलदेवजी की मानें तो फिर पृथ्वीराजजी को तेरहवें शतक में मानना पड़ेगा कि उस दशा में भी पृथ्वीराजजी चितोड की और आबू की प्रशस्तियो के अनुसार रावल समरसीजी के समकालीन होंगे और मुसलमानी तवारिखो के सन झूठे ठहर कर संप्रस्त प्रसूत हुई तर्क के अनुसार मुसलमानी तारीख जाली सिद्ध होगी ॥

OM

In the year 1250, on the first day of the bright half of the month Vaishakh (a monument) of the Fortunate—Visal—Deva—son—of—the--Fortunate--Amilla--Deva--King—of—Sacumbhari,

Popular Ed of the Asiatic Researches, page 315

पाठान्तर-पाठ । घर । घर । प्रतिपादा । प्रतीपट्टी । छत्तीस । सारे । दीयो । उच्चारे । नेर ।

१६९ पाठान्तर-पुनि । समैं । सरह । धर्यो । जास ॥

१७० पाठान्तर-मंडि । छत्रधारि । संबरन । इन्द्र । मधि । मेले । मले । मेलिय । बढिय । बटी । दिषि । बेन । पुट । हवी । सतन । चेंन । रहे । मले मोन । शुभ । अशुभ । कोन । कीनो । बध । बंधि । एन । शद्द । भूपाल ॥

बीसलदेवजी पाट बैठकर कैसे राज करते थे॥

दूहा॥ लसय पाट बीसल न्टपति। विकल दुच्छ घन मार॥
घंडन चिय दंडन करै। बिन अपराध अतार॥
छं०॥ ३४५॥ रू०॥ १७१॥

कवित्त॥ दूसै। बीर बीसल्ल। नरिंद अजमेर नेर पर॥
रचि रचना पुर दिव्य। मनों विसक्रम्म कीय कर॥
अध्रम धंम उप्परैं। क्रंम दुक्कित मन दुच्छै॥
चक्क द्रव्य संग्रहै। विना चक लोभन वंछै॥
चव बरन सरन चहुआन कै। वंस क्रनिस सेवंत ची॥
बीसल नरिंद ध्रंमाधिधरि। देव कला देवत्त ची॥
छं०॥ ३४६॥ रू०॥ १७२॥

बीसलदेवजी का अपने पुत्र सारंगदेवजी को उपदेश करके सांभर भेजना कि जो अपनी धा-बैन के पति के विनाश से दुचित हो गए थे॥

कवित्त॥ पट रागिनि परिहार। ग्रभ्भ सारंग उपन्नौ॥
पुत्र होत भइ म्टत्य। बाल बानिक कौं दिन्नौ॥

१७१ यह रूपक संवत् १७७० और १६४७ की पुस्तकों में तो नहीं है किन्तु सं० १८५९ तथा सोसाईटी की छापी हुई पुस्तकों में है जब कि इन से भी बहुत पुरानी पुस्तकों में यह न मिले तब तक उसको क्षेपक संज्ञा हम नहीं दे सकते यहां यह भी समझ लेने योग्य बात है कि १६९ रूपक से १७० रूपक तक बीसलदेवजी की पाटन की चढाई के लिये छत्र धारण करने का वर्णन है। प्राचीन समय में जब कि राजा किसी पर चढाई करते थे छत्र धारण विधि का वैदिक कर्म करके प्रस्थान करते थे। पाठकों को यह बीसलदेवजी की कथा बहुत सावधानता से पढनी चाहिये क्योंकि इस के बीच बीच में उन के लडके सारंगदेवजी आदि के भी वृत्त आते जाते हैं परन्तु उन सब को कवि ने बीसलदेवजी के वृत्तों मे मिलाकर वर्णन किया है॥

पाठान्तर–इच्छ।

१७२ पाठान्तर–वीसल। नेर। मनौं। विश्वक्रम्म। विसक्रम्म। विसकर्म्म। करि। अधंम। धम। ऊपरै। क्रम। दुक्तित। नन। इच्छै। विनां। हक्क। लोभ। न। वछैाच। चहुवांन। छतीन। ध्रमाधिधार। देव। ताही॥

१७३ पाठान्तर–पाट। रानि। ग्रभ। उप्पनौ। भय। मृत्ति। को। दीनौं। वनिक। दिनी। सम। पै। इक्क। लगें। कीयो। वीना। हुवे। गये। बिनस्सयो।

ता बानिक नंदिनिय । नाम गौरी सारंग सन * ॥
इक थान पय पान । इक्क सिज्या इक आसन ॥
नव बरस लग्गि कन्या रही । व्याह राज बीसल कियौ ॥
बीवाह हुऔ बर बन गयौ । तहां सिंघ बर विनसयौ ॥
छं० ॥ ३४७ ॥ रू० ॥ १७३ ॥

दूहा ॥ सिंघ विनास्यौ वनिक सुत । कन्या किया अंदोह ॥
हत्त धस्यौ ब्रह्मचर्य कौ । तप पहुकर तजि मोह ॥
छं० ॥ ३४८ ॥ रू० ॥ १७४ ॥

पद्धरी ॥ अति दुचित भयौ सारंग देव । नित प्रत्ति करै अरहंत सेव ॥
बुध ध्रम्म लियौ बंधै न तेग † । सुनि श्रवन राज मन भौ उदेग ॥ छं०॥३४९॥
बुल्लाइ कुंअर सनमान कीन । किहि काज तुम्म इह ध्रम्म लीन ॥
तुम छंडि सरम हम कहौ वत्त । बांनिक्क पुत्र हन तैं दुचित्त ॥ छं० ॥ ३५० ॥
इह नष्ट ग्यांन सुनियै न कान । पुरषातन भज्जै कित्ति हान ॥
तुम राज वंस राजनह संग । मृगया सर षेलौ वन दुरंग ॥ छं० ॥ ३५१ ॥
परमोध तजो बोधक्क पुरान । रामाइन सुन भारथ निदान ॥
अभिमान दान रिन सरन ध्रम्म । चास्यौ प्रकार सुनि राज क्रम्म ॥ छं० ॥३५२॥
परमोध मानि राजन कुमार । तत काल मंगि बंधे हथ्यार ॥
भय प्रसन राज कीनौ पसाव । संभरि रजधानी करहु जाव ॥ छं० ॥ ३५३ ॥
गजराज पाट दैं वर उनंग । सिंघासन दीनो जटित नंग ॥
तुम जाहु कुंअर संभरिय थान । किरपाल करिय कायथ प्रधान ॥ छं० ॥३५४॥
प्रोहित मुकंद ‡ सारँग चुहान । साचौर धनी नरसिंघ भान ॥
षंधार लार बहबल्ल बलोच । दिय बहुत हसम कीयौ न सोच ॥ छं० ॥३५५॥

---

* यह पाठ हम ने सं० १६४७ तथा १७७० की पुस्तको से रक्खा है इधर की सब पुस्तकों में सम पाठ है। सनोतिपणुदाने तथा त्रि० अखण्डिते ॥ अथवा सं० सून वा सूनु का अपभ्रंश है।

१७४ पाठान्तर-कन्या । कीयौ । वृत धर्यौ । पुहुकर ॥

† हिं० तेग from Sk (तैग्म्य (तिग to assail, to seek, to injure, to attempt, to kill) or तिग्म = sharp as a weapon) इसी तरह हिं० तेज is not from the A Tyz or P Tez, but from the Sk तेज m Sharpness, pungency, sharpness of a weapon, brilliancy, spirit

‡ यह नागर जाति का ब्राह्मण था ॥

१७५ पाठान्तर-प्रति । ध्रम । कीयौ । बधे । स्रवन । भय । बुलाय । कुयर । तुम । ध्रम । धर्म । हृत । वानिक्र । ते । दुचित्त । ग्यांन । सुनिये । सुनाये । कान । भज्जै । क्रित्ति ।

अनेक जाति उमराव सथ्थ । द्वै गै नर बाहन सुनर हथ्थ ॥
तिहि बार धाय बानिक बुलाय । जिन जाहु कुंअर की सथ्थ काय ॥ छं० ॥ ३५६॥
तुम कियौ पुत्र सों मेक मुंड । पिभ्भि वैन कह्यौ कहा देहुँ दंड ॥
अजमेर मेल्हि संभरि दिसान । जो जाहु तब्ब पंडौ परान ॥ छं० ॥३५७॥
इतनी कथ्थि नृप चल्यौ सथ्थ । रथ च्यार भरे तिन वार अथ्थ ॥
जोजनह एक कीनौ मिलान । अनेक भष्य तहां पान पान ॥ छं० ॥ ३५८॥
भय प्रात प्रसन पग लग्गि पुत्त । चलि सीष मंगि संभरि पहुत्त ॥
सर जाय पहूंचिय संभ राय । मन वच सुद्ध करि क्रंम नाय ॥ छं० ३५९ ॥
दस महिष भंजि तहां बलि सु दीन । जज होम धोम सुर प्रसन कीन ॥
कीनौ प्रवेस सुर महिम मौलि । तोरन कलस बंधि राज पौलि ॥
छं० ॥ ३६० ॥ रू० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ किय प्रवेश सारंग । देव संभरिय थान थिर ॥
आयेह वैस्य पिचिय । अनेक पग लग्गि नम्मि नर ॥
तब कायथ किरपाल । सबन कौं आग्या दीनो ॥
सस्त्र वस्त्र दत चित्त । देय दिल्लासा कीनी ॥
जहवनि गौरि आइय जवहि । पाइ लगी परमार कै ॥
नव सगुन भए सगुनी कह्यौ । कुंअर होइ कुमार कै ॥
छं० ॥ ३६१ ॥ रू० ॥ १७६ ॥

दूहा ॥ देवराज रावन सुता । देवत्तनि जहौंन ॥
गौरि नाम सारंग वर । मनरति मूरति जौंन ॥
छं० ॥ ३६२ ॥ रू० ॥ १७७ ॥

पोलो । सुनहु । रिण । धम । चाय्यो क्रम । कुंआर । बंधे । हथ्यार । हुव । प्रसन्न । रजधान संभरिय करह जव । हें । कुमर । थांन । करीय । प्रधांन । सारंग । चुहांन । चैहान । धनीय । भांन । दिये । हसम । कियैा । वांनिक । वुलाई । सथ सों । मूठ । वन । कह्यो । दिसन । सरान । कथ । सथ । मथ्य । सयि । जोजन । भरक । लगि । पहुंत । वव । नाइ । भंजि । बाली । प्रसन्न । तोरंन कलस वधेति पोल ॥

१७६ पाठान्तर–थांन । आय । आइ । पिचि । कौ । अग्या । ससत्र । शस्त्र । चित्त । दिलासा । किनी । जदवनि । पाय । कुंअर । कुमार ॥

१७७ पाठान्तर देवतनि । जदौन । मनौ । रनि । मनोरति ॥

बीसलदेवजी का मृगया से बहुरना, एक तालाब बनाने की आज्ञा देना और दरबार करना ॥

दूहा ॥ तब बाहुरि बीसल नृपति। मृगया षेलन बन्न ॥
देषि थान सर* उड्डरन। मतौ उपायौ मन्न ॥ छं० ॥ ३६३ ॥ रू० ॥ १७८ ॥

पद्धरी ॥ तब देखि नरिन्द अनूप ठाम। निर्झर गिरिन्द बन अभिराम ॥
बुल्लाय लिए मंत्री प्रधान। सर * रचौ दृढ़ं पहुकर समान ॥ छं० ॥ ३६४ ॥
फुरमाय † काम अप आय गेह। आनंद अंग उपज्यौ अछेह ॥
बैठो सिंघासन भ्रम्म नंद। बीसल नरिन्द नर लोक इंद ॥ छं० ३६५ ॥
सिर छत्र पास दुय चमर ढार। अति रूप जानि अस्वनि कुमार ॥
आईय सु कुलि कत्तोस नाम। पावासर तोंवर गौर राम ॥ छं० ॥ ३६६ ॥
हजूर लए राजन बुलाइ। तंबोलि दियो सनमुष्ष चाइ ॥
पढि बंदि छंद बोले विरद। मुसकाय सीस नायौ नरिन्द ॥ छं० ॥ ३६७ ॥
सब सभा पूरि जैसैं नछित्त। चहुआन बीच जनु चंद रत्त ॥
सनमान करे सब दइय सीष। फिरि बंदी जन दीनी असीष ॥ छं० ॥ ३६८ ॥
निसि गई पंच पल एक जाम। राजन्न मह्हल ‡ प्रविस ताम ॥
करपूर अगर मृगमद सु वास। सैांधे छिरक्कि उत्तिम अवास ॥
छं० ॥ ३६९ ॥ रू० ॥ १७९ ॥

* यह बीसल का तालाव अब तक अजमेर के पास विद्यामान है। उस के किनारे पर जहांगीर पादशाह ने एक महल बनाया था कि जिस मे उसने इंगिलस्तान के पादशाह जेम्स पहिले के एलची से मुलाकात की थी। इस टिप्पण को हमने इस तालाब के किनारे पर खड़े होकर लिखा है। यदि कोई पुरातत्ववेत्ता इस तडाग की वर्त्तमान दशा अपनी आंख से देखे तो उस को बड़ा शोक और आश्चर्य होगा कि अंग्रेज सरकार के राज्य समय मे ऐसे प्राचीन स्थलों का जीर्णोद्धार राज-कोश के द्रव्य से होता है परंतु रेलवाले अपनी रेल इस पर दौड़ा दौड़ा उस को छिन्न भिन्न करे डालते हैं कि पांच सात वर्ष पीछे वह समूलनष्ट हो जायगा। हमारी सम्मति मे यह विषय पुरातत्ववेत्ता विद्वानों और समस्त भारत प्रजा को सरकार हिन्द की सेवा मे मिमोरियल करने योग्य है कि जिससे यह ऐतिहासिक चिन्ह यथास्थित बना रहे।

† यह भी हिन्दी शब्द है संस्कृत स्फुरितम् अथवा स्फूर्तिः=स्फुरणे, मनसः कल्पनायाम् से ॥

‡ यह भी हिन्दी है संस्कृत महल्ल=अंत पुर inner appartments, palace और महल्लिक=अंतःपुर रक्षक से ॥ १७८ पाठान्तर-नृपति। वन। य न। मतो। मन ॥

१७९ पाठान्तर-नरिंद। निझर। नझरन। गिरंद। अभिराम। वुलाय। लये। रचो। समांन। बैठो। सुसिंघासन। ध्रम। नरिंद समीप। दीय। जानि। अस्वनि। आइय। कुर्ना। द्त्तोस। ताम। पावासिर। तूंवर। वुलाय। वुलाहि। दीयो। सनमुख। चाहि। चाय। छद। वंदि। विरद। नाम्यौ। जैस। चहुआन। सनमान। दईय। जाम। राजन। धाम। कपूर। सोंधे। छिरकि। उत्तम ॥

बीसलदेवजी का रणवास में पधारकर विश्राम करना और उन की एक अप्रिय रानी का उनको नपुंसक करना ॥

कवित्त ॥ सुरँग धाम अभिराम। तहाँ विश्राम राज किय ॥
राग रंग नाटक। विनोद सुष महल बोल लिय ॥
पट रागिनि पांवार। रूप रंभा गुन जुब्बन ॥
प्रमुदा प्रान समान। नहीं विसरत्त इक्क छिन ॥
रति भोग सुरनि तिन सैां सदा। कबहु आन न द्रिच्छ चिय ॥
षिझि सैाति सकल एकत्त भय। पुरषातन तिन बंध किय ॥
छं० ॥ ३९० ॥ रू० ॥ १८० ॥

पद्धरी ॥ तब सकल भइय एकत्त नारि। पुरषातन तिन बंध्यौ विचार ॥
प्रचार सहर दूतिका च्यार। लै षबरि सहर पहुची मझार ॥ ३७१ ॥
प्रसताव भाव तिन कहि उचार। जोगिनिय बोल आदीतवार ॥
पहराइ वेस बदलाय भेस। इम किये राजद्वारह प्रवेस ॥ ३७२ ॥
लै अथ्थ दई दरवान हथ्थ। इम किय प्रवेस सहचरिय सथ्थ ॥
जोगिनिय गई रागिनी मद्धि। सब बोलि कह्यौ ह्वै सिद्ध सिद्ध ॥ ३७३ ॥
आदेस कियो सब पाइ लग्गि। आसन्न जोरि कर उभ्भ अग्ग ॥
किहि काज आज हूं बोलि लीन। किहि नार तुमहि इह सीष दीन ॥ ३७४ ॥
सब सैाति कह्यौ दुष सुनहु तुम्म। राजन्न तनय हम सैां न क्रम्म ॥
को जानि मात बिँझनी पीर। सैाति कैासाल सालै सरीर ॥ ३७५ ॥
तुम कहैा करहु जीव तै बद्ध। तुम कहो करों नारी विरुद्ध ॥
तुम कहो करों काम तै भंग। ज्यैां नारि अंग त्यैां पुरुष अंग ॥ ३७६ ॥
सब चित्त बसी इह सैाति बात। अब हो इह कारज करो मात ॥
मंगाय अगिनि तब कियो होम। षर स्वान मांस प्रति बान धोम ॥ ३७७ ॥
उच्चर्‌यौ मंत्र आराधि इष्ट। तत काल भयो काम तै नष्ट ॥
दस दिसा लग्गि इह करो विद्धि। गत भैा पुरुषातन रहि न सिद्धि ॥ ३७८ ॥
दै द्रव्य कह्यौ माता सिधाव। इह सहर छंडि अनि सहर जाव ॥

१८० पाठान्तर-सुरंग। सुष ताम। विश्राम। सुष। पंवार। जुवन। प्रान। समान। इक। स्यं। नि। दरस। सोझि। भई ॥

बीसलदेवजी का पुरुषत्व नाश होने से दुचित्त हो गोकर्णेश्वर की यात्रा करने को गुजरात में जाना ॥

अति दुचित राज भय काम नास । ब्रह्मचर्य नेम लियौ चतुर मास ॥३७९॥
कातक्क करत पहुकर सनान । गोकन्न * महातम सुनत कान ॥
बुल्लाय जैतसिंघ गोन्नवाल । तुम भूमि पास नागरह † चाल ॥३८०॥

---

* इन गोकर्णेश्वर महादेवों की उत्पत्ति-कथा स्कंध पुराणान्तरगत जो नागर ब्राह्मणों का एक परमपूज्य संस्कृत भाषा में २४००० हजार श्लोक की संख्या का नागरखंड नामक ग्रंथ है उस के २६ वे अध्याय में लिखी है। यह संपूर्ण ग्रंथ मेरे पुस्तकालय में है ॥

आज जो बडनगर और बीसल नगर नामक नगर गुजरात में प्रसिद्ध हैं उन का प्राचीन नाम चमत्कारपुर था, उस की सीमा का प्रमाण उक्त ग्रंथ के १६ वें अध्याय में नीचे लिखे प्रमाण लिखा है अर्थात् इन गोकर्णेश्वरों को उस की दक्षिणोत्तर सीमा पर होना प्रकाश किया है–

ऋषय ऊचुः ॥ चमत्कारपुरोत्पत्तिः श्रुतास्मत्तो महामते ।
तत्क्षेत्रस्य प्रमाणं यत्तदस्माकं प्रकीर्तय ॥ १ ॥
यानि तत्र च पुण्यानि तीर्थान्यायतनानि च ।
सहितानि प्रभावेन तानि सर्वाणि कीर्तय ॥ २ ॥
सूत उवाच ॥ पंचक्रोश प्रमाणेन क्षेत्रं ब्राह्मण सत्तमा ।
आग्रामत्यास तश्चैत्र चमत्कारपुरोद्भवं ॥ ३ ॥
प्राच्यां सस्यां गयाशीर्षे पश्चिमेन हरेः पदं ।
दक्षिणोत्तरयोश्चैव गोकर्णेश्वर संज्ञिकं ॥ ४ ॥
हाटकेश्वर संज्ञं तु पूर्वमासी द्विजोत्तमाः ।
तत्क्षेत्रं प्रथितं लोके सर्वपातकनाशनं ॥ ५ ॥
यतः प्रभृति विप्रेभ्यो दत्तं तेन महात्मना ।
चमत्कारेण तत्स्थानं नाम्ना ख्यातिं ततो गतं ॥

† नागरह–उक्त नागरखंड जिसके भले प्रकार पढ़ने में आया होगा वह कह सकता है कि अनर्त देश में हाटकेश्वर क्षेत्र है उस में जो आज बडनगर नाम से प्रख्यात है वह नगर यही है। इस के सतयुग में आनन्दपुर, त्रेता में चमत्कारपुर, द्वापर में मानपुर अर्थात् मनीपुर, और कलि में नगर अर्थात् बडनगर नाम प्रसिद्ध हुए है। इस के अतिरिक्त यह भी ध्यान में रखने योग्य बात है कि नागर ब्राह्मणों में से जो आज बीसलनगरा नामक नागर ब्राह्मण प्रसिद्ध है वे बडनगरों में से इन्हीं बीसलदेवजी के समय में उन के दान लेने से पृथक हुए हैं और बीसलनगर नामक जो नगर आज गुजरात मे प्रसिद्ध है वह इस समय का इन ही बीसलदेवजी का प्रदान किया हुआ है। नागरखंड से यह भी ज्ञात होगा कि बीसलदेवजी के समय में जिन नागर ब्राह्मणों को दान दिया गया है उन मे से कुछ उस समय पुष्कर में भी रहते थे और वेही लोग बीसलदेवजी को पुनश्च पुंसत्व प्राप्त कराने को गोकर्णेश्वर की यात्रा जिस का

तुम देस कन्हीजै गोउक्रन्न। परवत्त सरोवर नदी रन्न।
महाराज उहां महादेव थान। वानास नदी कौमारि कान॥ ३८१॥
गिरवर उतंग इक तीन कोस। निझरना झरत मन आव जोस॥
केतोक दूर अजमेर हूंत। दिन दोय मंझ नीके पहूंत॥ ३८२॥
चढ़ि चल्यौ राज गोक्रव दिसान। मै मंत गुरिय घूंमत निसान।
आवाजि पहूंचिय दस दिसान। अरि भ्रमें वन्न तजि थान थान॥
छं०॥ ३८३॥ रू०॥ १८१॥

दूहा॥ अरि उद्यान भ्रमि थान तजि। बजि पर षंड ऊवाज *॥
तच्छितपुर † गोक्रन्न दिसि। पहुंच्यौ बीसल राज॥
छं०॥ ३८४॥ रू०॥ १८२॥

कवित्त॥ गिरि उतंग सलिता। विहंग उद्यान थान वर॥
सघन छांन पंषी। असंषि रचि लता भ्रुंमि तर॥

वर्णन यहां कवि ने किया है ले गए थे और अजमेर के चाहुवान राज्य के पुरोहित भी यही नागर ब्राह्मण थे कि उन में से एक पुरोहित मुकुन्द का नाम १७५ रूपक में आ चुका है। नागरों की पुरोहिताई छुटने पर अन्य ब्राह्मण चौहानों के पुरोहित हुए हैं॥

* यह संस्कृत अ+वाज तथा आ+वाज अथवा अवाद तथा आवाद से है॥

† जो हाल में गुजरात प्रान्त में **वड़नगर** कहलाता है उसी का नाम है। **नागरखंड** के पढ़ने से उस के कितनेक अन्य नाम भी ज्ञात होंगे जैसे वृद्धपुर वृद्धनगर आदि। उक्त ग्रंथ में यह भी पढ़ने में आवेगा कि इस स्थान में एक समय सर्पों का बड़ा उपद्रव हुआ था और वह महादेवजी के त्रिजात ब्राह्मणों को "**नगरम् नगरम्**" मन्त्र प्रदान करने से दूर हुआ कि इसी से वह **नगर** कहाया। इस नगर के रहनेवाले नागर ब्राह्मण अब तक प्रसिद्ध हैं। यह कथा नागरखंड के ११३ वें अध्याय में सविस्तर लिखी है॥

पाठान्तर-भई। वंधन। प्रच्यार। सहस। प्रस्तार उच्यार। जोगनीय। अथि। चहुवान। कीय। सहचरा। सय। जोगिनी। आदेस। कीयौ। आमच। उभ्भ कर जोगि आग किंह। हम। ताम। काम। जानै। वाझनी। कौ। साल। सालें। करौं। करौ ते। सौ। करौ अगनि। उवस्यौ। आराध। तें। लगि। विहु। रहित। कालिग। करंन। सानाना। सुनहु कांन। पासल। पास कल। कहीजै। गोक्रन्न। परवत। माहाराज। वनास। कोमारिकान निझरना। मझ। नीकै। मैं घुम्मन। दिसान। थान॥

१८२ पाठान्तर-उद्यांन। थान। तच्छितपुर। गोक्रन। पहुंच्यौ॥

१८३ पाठान्तर-उध्यान। उद्यान। छाह। असख्य। भ्रुंमि। वरन। पुहुप्प। पीक। चकोर च्चकोर। सारस। दिपि। अनूप। ठाम। आरांम। फरसत॥ इस रूपक को पहिली दो तुकों की पहिली यतियों में दस दस मात्रा है और दूसरी में चौदह चौदह कि यह कोई ऐसा दोष नहीं कि जिस के लिये हम ग्रंथ-कर्त्ता को दोष दें। ऐसे उदाहरण अन्य बड़े २ कवियों के काव्यों में

बरन बरन्न पल्लव। पहुप द्रुम वेलि केलि फल ॥
कीर पिक्क चक्कोर। मोर कोकिल कौतूहल ॥
वाराह सिंघ मृग जूथ जहां। दिष्षिराज अचरिज भयौ ॥
अन्नूप ठाम आराम अति। सिव परसत सब सुष भयौ ॥
छं० ॥ ३८५ ॥ रू० ॥ १८३ ॥

कवित्त ॥ परबत में कंदरा। तहां किन्नर सु विराजै ॥
वारि बूंद सिर झरै। पास सिंघ जूथ समाजै ॥
आनि अचानिक राज। पाइ लगो करि प्रन्न पति ॥
ॐ नमो सिव सकल। नमो अकलेस अकल मति ॥
फल पहुप द्रव्य पंचा अमृत। धूप दीप अग्गें धरिय ॥
अस्नान दान चष्षुवान करि। तव अस्तुति सेवा करिय ॥
छं० ॥ ३८६ ॥ रू० ॥ १८४ ॥

बीसलदेवजी का गोकर्णेश्वर महादेव की स्तुति करना ॥

भुजंगी ॥ नमो धाय भूताय थानं भयानं। जटा मांझि गंगा झलक्कै प्रमानं ॥
त्रयं नेत्र ज्वाला जलं चंद्र भालं। विषं कंठ माना रुलै रुंड मालं ॥३८७॥
महा आदि मुद्रा नषं सिंगि नादं। सिधं देव देवं कथं साथ साधं ॥
धरा धूरि धूसं विभूतं घसते। नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ ३८८ ॥
चर्मं आछादितं अंम नासं। रहै वीर भैरों गनं आस पासं ॥
आसनं पुष्टि नंदी प्रचंडो। चवं वेद आमोद चौसट्ठि चंडी ॥ ३८९॥

हैं अतएव इस को कवियो की एक शैली मानना चाहिये। ऐसे स्थलो में प्रायः ...य में बहुत वाद विवाद कर सिर फोडा करते हैं अतएव हम एक ओर भी सूक्ष्म ...हैं कि चंद और सूर जैसे आर्द्र-कवि गान विद्या में पारंगत होने के कारण जहां ...में अनेक स्वर स्वरित हो गये हों वहा की एक दो मात्रा को दूसरी यति में मिला ...जिस में स्वर न बिगड़े देखो यहा उतंग के तं और सलिता के ता पर स्वर ...गये हैं ॥

१८८ पाठान्तर-प्रवत्त। किंनर। बुंदि। नवै। सिंघ। पाय। प्रनति। उं। द्रव्य। दंत्रै। ...न।

१८९ पाठान्तर-झलकै। चंदे। सधं। दूरि। दून। मैहं। आमा। पासं। पट्टमासनं। ... चौसठि। हक। होहं। तहकै। मेरे। धूजै। धनुंक। धरे। श्राम। मूलपाठां।

बजै डक्क डौंरू डमंकं तडक्कै । धकै मेह धुज्जै हकै गैन चक्कै ॥
धनुकं पिनाकं धरै वाम हस्ते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ ३९० ॥
सिधं साध आराधयं शूलपानी । सिवा प्रेम साधेति के साध ज्ञानी ॥
नरं किंनरं गंध्रवं नग्ग जष्यं । सुर आसुरं अच्छरी हूर रष्यं ॥ ३९१ ॥
सनक्कादिकं सप्त रिषि मान कालं । प्रथीवायुगेनाय तेजंस लालं ॥
नमो भान चंद्रं नवं ग्रह समस्ते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥
मिटै संकटं वाट घाटं विघट्टं । रटै नाम तो कोटि काटै कसट्टं ॥
षरं षेचरं भूचरं जंत्र मंत्रं । जपै व्याधि आसाधि भाजै अनंतं ॥ ३९३ ॥
महादी पुहुषं महीमा मुरारी । नवं कौंन तो सों निपातिक पगारी ॥
गिरा गौरि अर्धंग कैलास वस्ते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥
छं० ॥ ३९४ ॥ रू० ॥ ३९५ ॥

साधेति । ग्यंनी । यंध्रवं । नखं । अछ्वदी । दिखं । सनकादिकं । सपत रिषी । सप्त रिषी । प्रथीवायगेंनाय तेजं । भांन । मिटैं । नाम । तैा । महा आदि । पुरिषं । पुहवं । नवें । कोन । नपातिग । अरधंग । कयल्लास ॥

हमारे जो पाठक ऐसे हैं कि जिनको न तो कभी यह शंका हुई न अब है और होगी कि हिन्दी भाषा का यह अति प्राचीन महाकाव्य आदि से अंत परियत जाली है के को उचित है कि यूरोप देश निवासी मिस्टर ग्रौस, डाकटर हैार्नली, मिस्टर बीम्स और यह निवासी डाक्टर राजेन्द्रलालजी मित्र जैसे महाशयों को अनेक धन्यवाद दें कि उन के महा- अनेक लेखों के कारण से यह महाकाव्य सर्वसाधारण लोगों के जानने में आ कि दूसरों से वह समय और व्यतीत होने पर कोई मनुष्य जैसी कि तर्क वितर्कों से अब दोष देता नागरखड रूपक में "नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते" का पाठ देख करके कदाचित यह अ इस वो स्वामी श्रीदयानन्द सरस्वतीजी के सिद्धान्तानुयायी किसी कवि ने भूलय । अधि क्योंकि नमस्ते शब्द का प्रचार या तो वैदिक समय में था अथवा इन दिनों ... आग में है और आदि के चार रूपकों से वेद के धर्म सबन्धी विचार वैदिक समय के से । करो है । यद्यपि आज यह महाकाव्य इतना प्रसिद्ध हो गया है परंतु भावी दोष देनेवाले मनु कुछ बाधक नहीं हो सकता क्योंकि जो कुछ प्रमाण इस समय की प्रसिद्धि के उसको कान मिलेंगे उन सब को वह निःशंक होकर वर्तमान समय के दोष देनेवालों की भांति जाली है जैसे कि इस समय में सब राजपूताने के राज्यों के प्राचीन सवत इस रासे के ९१ वर्ष सवत के अनुसार मिलते हैं और उन सब को इसी रासा ने अशुद्ध कर दिया यह कहना तरह वह भी कह सकता है कि इस समय में जाल ही जाल फैल गया था क्योंकि उ चंद्र स्वयम् साक्षी नहीं दे सकता वैसे हम लोग भी उस समय में न होंगे । सारांश यह है एक नशा सो दुःख हरता है और योगी हठ के आगे किसी की कुछ नहीं बटती ॥

बीसलदेवजी से गोकर्णेश्वर के सिद्ध का उनका नाम ग्रामादि पूछना ॥

दूहा ॥ इति अस्तुति राजन मुषह । पढि पुज्जिव पग बंदि ॥
देषि सिद्ध चकित भयौ । भाजन बुद्धि नरिंदि ॥
छं० ॥ ३९५ ॥ रू० ॥ १८६ ॥ *

कहत सिद्ध किहि पुरहु तैं । कौन गोन किहि नाम ॥
इहि तीरथ आये हुतें । कै अगैं कोइ काम ॥
छं० ॥ ३९६ ॥ रू० ॥ १८७ ॥

बीसलदेवजी का अपना नाम गाम आदि बताना ॥

दूहा ॥ पुर अजमेर सु वास हम । गोन ग्याति चहुआन ॥
बीसल दे मो नाम सिध । अयौ करन सनान ॥
छं० ॥ ३९७ ॥ रू० ॥ १८८ ॥

सिद्ध का गोकर्णेश्वर के तीर्थ की महिमा वर्णन करना ॥

रेसा ॥ सिद्ध कहत सुन राजन वत्तिय । जो तू तजि अयौ निज षत्तिय ॥
इह गोपेसुर थान अपूरव । नित प्रति निसा उतरै रंभ ॥
छं० ॥ ३९८ ॥ रू० ॥ १८९ ॥

इन थानक चारन वर पाए । तिनके नाम कहि रु समझाए ॥
भसमाकर रावन मधु कीटक । तिन उपास जिराहर षट टक ॥
छं० ॥ ३९९ ॥ रू० ॥ १९० ॥

इहै तिथ की महिमा गाए । धेनु दुगधतें आनि न्हवाए ॥
जैसैं ध्याए तैसैं पाए । इतनी कह सिध उठि सिधाए ॥ छं० ॥ ४०० ॥ रू० ॥ १९१ ॥

---

१८६ पाठान्तर—भौ ॥

* यह रूपक सं० १६४७ और १७७० की लिखी पुस्तकों में नहीं है जो इन से भी पुरानी कों में यह न मिले तो इस को क्षेपक मानना चाहिये । किन्तु अभी तो हम इस को क्षेपक प्रदान नहीं कर सकते ॥

१८७ पाठान्तर परहुं । तें । क्वौन । नांम । आगे । काम ॥

१८८ पाठान्तर—नाम । सनान ॥ बीसल दे शब्द में जो दे है यह देव शब्द का संक्षिप्त है इसी तरह समरसी में सी सिंघ या सिंह का संक्षिप्त है ॥

१८९ से १९१ पाठान्तर—वत्तीय । इह । षत्तीय । इहां । गोपेसर । थान । इते । थानक । न वर । च्यार नर । नाम । उपवास । टक ॥ ए हैं । धेनु । तें । आनि । जैसे । तैसे ॥

बीसलदेवजी का तीन दिन निराहार उपवास कर गोदानादि करना और महादेव का अपछरा को उन्हें उठाने भेजना ॥

दूहा ॥ राजन मन चकित भयौ । सुनि थानक की विद्धि ॥
जो तो अभि अंतर * वसत । कहि ते तौ सिध सिद्धि ॥
छं० ॥ ४०१ ॥ रू० ॥ १९२ ॥

अरिल्ल ॥ सहसं गौ मंगाइ सवच्छिय । देइ द्रव्य लै अच्छी अच्छिय ॥
सहस घट्ट सिव ऊपर कीनौ । तीन उपास नेम तब लीनौ ॥
छं० ॥ ४०२ ॥ रू० ॥ १९३ ॥

तीन दिवस रहै राव निराहर । जल फल तज्यौ पवन कौ आहर ॥
एक निसा इक अपछर आई । सब अपछरा न्रत्ति करि गाई ॥
छं० ॥ ४०३ ॥ रू० ॥ १९४ ॥

बहुत बेर पीछैं बोल्यौ हर । अपछर जाइ उठेउ वहै नर ॥
सो अपछर नर देषन आई । देषति न्रपति वसि नींदा माही ॥
छं० ॥ ४०४ ॥ रू० ॥ १९५ ॥

अपछरा का बीसलदेवजी को महादेव के प्रसन्न होने और मन की कामना पूरण होने का कहना ॥

दूहा ॥ तुम कौं सिव सु प्रसन्न भय । कह्यौ मोहनि वर मोहि ॥
जाहु थान घरि थान तजि । तूठे सभर तोहि ॥
छं० ॥ ४०५ ॥ रू० ॥ १९६ ॥

तेरे मन की कामना । ऊपर शिव कौ पाइ
इतनी कहि करि मोहनी । दियौ सु न्रपति उठाइ ॥
छं० ॥ ४०६ ॥ रू० ॥ १९७ ॥

---

* चंद की भाषा का व्याकरण तो हम कुछ समय में बनाकर प्रकाश करैंगे परन्तु एक सूत्र उस का यह स्मरण में रखना चाहिये कि उस में षट-भाषा-वत् संधि विकल्प करके होती है। होने के उदाहरण बहुत आवेंगे परन्तु न होने के उदाहरण यह अभि+अंतर और पंचा+अमृत है ॥

१९२ पाठान्तर-विधि । जि । तोक । तो । सिद्ध । सिध ॥

१९३ से १९५ पाठान्तर-सहस । गऊ । मंगाय । सवछिय । देय । ले । अछीय । घट । शिव । तिन । द्योस । रहै । निशा । एक । आईय । अपछर । नृतत । गाईय । पीछे । बोले । उठाउ । वहे । आइय । देषि नृपति वसिं नीद अमाइय ॥

१९६-९७ पाठान्तर-को । सो । शिव । हुव । थांन । संभू । को । पाय । दीयौ । नृपति । उठाव

बीसलदेवजी का अपने को पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त होना देखकर वहां बीसलपुर बसाय महादेव का देवालय बनने का हुक्म देना॥

कवित्त ॥ पहुर रात पाछिली। राज आ० डेरा मधि ॥
बढिय काम कामना। भई पुरिषातन की सिधि ॥
प्रातकाल करि न्हान। धेन विप्रन कौं दीनी ॥
पंचा अम्रत धूप। दीप सिव सेवा कीनी ॥
तिहि बार हुक्कम * देवल करन। पुर † बसाइ बीसल † धरुह ॥

---

* यह हिन्दी शब्द **हुकम** अथवा **हुक्कम** संस्कृत शब्द सूक्ष्म से बना है ॥

† चाहुवान वंश की ख्यातिओं में बीसलदेवजी का उपनाम पुण्यक होना लिखा है और जो आज कल गुजरात में विशल नगर अथवा विसन नगर करके प्रख्यात है वही यह बीसलपुर बीसलदेवजी का बसाया हुआ है और उसी दिन से बडनगरे नागरो में के कुछ नागरों की विसननगरा नामक संज्ञा पडी है। हमारे इस अनुमान की कविराज श्रीदलपतरामजी सी० आई० ई० अपने ज्ञातिनिबन्ध नामक ग्रंथ में नीचे लिखे प्रमाण से पुष्टि करते हैं–

जे रीते औदिच्यप्रकाश तथा श्रीमाली महात्म्य स्कंध पुराण मा छे, तेमज नागर ब्राह्मणोनी उत्पत्ति नो ग्रंथ "नागरखंड" नामे घणो मोटो छे, ते पण स्कन्ध पुराण मा छे। ते नागरो नी उत्पत्ति गुजरात मां वडनगर गाम मां थई। पण ते क्यारे थई, तेनो संवत कांई ए पुस्तक मा लख्यो नथी तेनूं कारण अेज जाणवूं के संवत लखवा थी तथा बनावनार नूं नाम लखवा थी ग्रंथ जूनो केहवाय नही। पण नागर ब्राह्मणो नो **प्रवराध्याय** नामे ग्रंथ मा जोयो छे तेमा लखे छे के,

श्लोक ॥ श्रीमदानंदपुर महास्थानीय पंचदशशतगोत्राणां।
संवत् २८३ पूर्वतिष्ठमान गोत्राणां समानप्रवरस्य निर्बंधः ॥

अर्थ ॥ शोभायमान अेवा आनंदपुर, मोटास्थानवाला पंदरसे गोत्रोमाथी संवत् २८३ थी पेहेला रहेला गोत्रोना अेकज सरखा नामोवानो निर्बंध लखूं छूं ॥

अे उपर थी आशरे मालम पडे छे के अे वखत मा नागरो नी नात वधाई छे। अने त्यार पछी तेमा थी विसलनगरा नी नात जुदी पडी तेनूं कारण केहे छे के विसलदेव राजाअे विसल नगर वसावीने त्या जग्न कीधो हतो। त्यारे वडनगर थी केटलाअेक नागरो त्या तेडाया गया हता। त्यारे राजाअे तेओ ने दक्षणा आपवा मांडी। त्यारे अे नागर ब्राह्मणोअे कह्यूं के अमे कोई नी दक्षणा लेता नथी। त्यारे राजा अे कह्यूं के तमने पानना बीडा आपीश। अेम कहीने पानना बीडा मा गाम ना नाम लखी ने अे नागर ब्राह्मणो ने आप्या। त्यारे ते ब्राह्मणो अे पानना बीडा लीधा। तेमा जोयूं त्यारे गामना नाम लख्या हता। तेथी पछी ते अे गाम तेओ ने सूपत कीधा। ये वात वडनगरना नागरोअे जाणी त्यारे तेओ अे कह्यूं के जेणे राजा नूं दान लीधूं माटे अेओ

मंगाइ हस्ति असवार * हुइ। फिरयौ राज घर आतुरह ॥
छं० ॥ ४०७ ॥ रू० ॥ १९८ ॥

आपणी नातथी बाहर छे। ते दिवस थी विसलनगरानी नात जूदी थई। कोई केहे छे के तेज राजाओ तेज वखतमां साठोद ग म नू नाम पान मा लखी ने जेने आप्यूं हतूं ने साठोदरा नागर थया। चित्रोड़ लखी ने जेने आप्यूं ते चित्रोडा नागर थया। तेमज प्रश्नोरा तथा कृष्णोरा पण थया। ६ प्रकार ना नागरो नां नाम। वडनगरा नागर १ विसल नगरा नागर २ साठोदरा नागर ३ चित्रोडा नागर ४ प्रश्नोरा नागर ५ कृष्णोरा नागर ६॥हवे विचार करो के विमलदेने विसल नगर सं० ९३६ थी साल मां वसाव्यूं ओ पृथिराजरासा मा चंद कविये लखेलूं छे ॥ दोहा ॥ सो सवत नव शत अधिक। वर्ष तीस छह अग ॥ पुर प्रतिष्ट वीसल नृपति। राजत सकले जग ॥ १ ॥ त्यार पछी विसलनगरानी नात बंधाई छे। तेथी साफ जणाय छे के परमेश्वरे कांई नातो बाधी नथी। फकत माणसोओ जुदा जुदा वाडा बाध्या छे। त्यारे ते बंधाया थी हालमा जे हरकतो थती होय ते बंध करवा चहाय तो करी शके खरा। विसल नगराओ राजानूं दान लेवा थी जो वटल्या होय तो हाल मा वडनगराओ मुसलमाननी सेवा करे छे तेओ ओनाथी पण वटल्या कहेवाय। वास्ते ओवो जूठो वेहेम छोड़ी देवो जोइये। अने जरूर समझवूं के तेओ ओक बीजा थी काइ वटलाशे नहीं। इत्यादि ॥ ज्ञाति निबन्ध पृष्ठ ४३ से ४५ तक ॥

नागरखंडना अध्याय २३ पछे तेमा १०८ मा अध्याय थी ४ था अध्याय मां लखे छे के आनर्त्त देशना राजाओ चमत्कारनामे शेहेर वसावी ते ७२ गोत्र ना ब्रह्मणो ने आपवा मांड्यां, तेमा ८ गोत्र-नाओ लीधा नही ने ६४ गोत्रनाओ लीधा। पछी त्या कांई कारण थी नागनी उत्पत्ति घणी थई तेओओ घणां माणसोने करडी खाधां तेथी केटला ब्राह्मणो नाशी छुट्या। पछी ओक अपमान करेले ब्राह्मणे (त्रिजातकें) मन्त्र नो उपाय कर्यो तथा ओ सऊ ब्राह्मणो ओ मलीने लाकडी पथरा वगेरे थी हजारो नागने मारी नाख्या त्यारे ओ शेहेरनू नाम नगर (झेर विनानुं) ठरयूं ने ते ब्राह्मणो नागर कहेवाया। पछी १५८ मा अध्याय मा लखे छे के ओक पुष्पक नामने पुरुषे पर स्त्रीनो सग घणा वर्ष कर्यो, ते पछी पस्तावो करीने तेनूं प्रायश्चित करवा वडनगर मा आव्यो त्यारे सऊ नागरो ओ कह्यूं के ओ पाप मटवानो उपाय नथी। त्यारे ओक चंडशर्मा नामने नागरे कांई प्रायश्चित कराव्यूं, तेथी नागरोओ चडशर्माने नात बाहर मुक्यो तेथी ब्राह्म नगरानी नात जुदी बन्धाई ॥

पृथ्वीराजरासा मां लख्यूं छेके बीसलनगर बसावनार बीसलदेव राजाओ पुष्कर तेत्रमा परस्त्रीनो सङ्ग कर्यो हतो, तेथी ते स्त्रीओ श्राप दीधो हतो जे तूं असुर थईश। पछी ओ पाप मटवानो उपाय बीसलदेव शोधतो हतो। मा टे पुष्पक नामनो पुरुष नगर खण्ड मा लख्यो छे ते बीसलदेव सम्भवे छे। ने ब्राह्म नगरा जे लख्या छे ते बीसलनगरा, साठोदरा वगेरे सम्भवे छे इत्यादि० ज्ञात निबंध पृष्ट ७५-७६ ॥

* यह हिन्दी शब्द संस्कृत अश्ववार अथवा अश्व + अर अथवा अश्व + आर से बना है अरबी अथवा फारसी से अनुमान करना व्यर्थ है॥

१९८ पाठान्तर-पहुर। कामन। हुई। न्हान। विप्र। कों। वसाय। बीसल पुरह। मगाय। होइ ॥

बीसलदेवजी का पीछे अजमेर आना और सब कथा प्रसंग पवांर जी राणी से कहना ॥

दूहा ॥ दो दिन के मग एक दिन । आए बीसल गेह ॥
किय प्रवेस न्रप सहर * में । सुचित भये अह मेह ॥
छं० ॥ ४०८ ॥ रू० ॥ १९९ ॥

ऊंच धाम विसराम किय । रंग साज चतुरंग ॥
प्रौढा महल पवार सों । कहिय सु कथा प्रसंग ॥
छं० ॥ ४०९ ॥ रू० ॥ २०० ॥

सब काम-लुब्धाओं को सोच होना कि शंभू ने ऐसा क्या वर दिया ?

चौपाई ॥ काम लुबध बोनी सब कामनि । च्यार जाम गई जागत जामिन ॥
सब नारिन कों सोच उपन्नौ । ऐसौ कहा संभु वर दिन्नौ ॥
छं० ॥ ४१० ॥ रू० ॥ २०१ ॥

बीसलदेवजी का कामान्ध हो अकर्तव्य कर्म करना ॥

कवित्त ॥ राति दिवस एकसी । काम कामना सु वढ्ढिय ॥
प्रौढ मुगध वय हड । सबैं घर हरि चिय गढ्ढिय ॥
पर घरनी लै बोल्लि । घरां नह विलंब लगावै ॥
जो विलंब करि रहै । ताहि हनिवे कों आवै ॥
भै भीत काम बिसराम विन । नाम सुनत ओदिक परै ॥
अजमेर नैर बीसल न्रपति । प्रमुदा देषत प्रज्जरै ॥
छं० ॥ ४११ ॥ रू० ॥ २०२ ॥

---

* हिन्दी सहर अथवा सहरि शब्द अरबी अथवा फारसी से नहीं है किन्तु संस्कृत स+हलि से ॥ SK स+हलि=Agriculture, furrows Hence a place where agriculturists reside. Dwelling &c habitation, &c The Hindi हर is also from the SK हल A plough, the earth In the same manner नगर a town is from नग a tree, a mountain & लद off

१९९–२०० पाठान्तर–कै । कैं । सेव ॥ धाम । महिलह । वारि । कौ ।

२०१ पाठान्तर–काम । याम गय । जांम । को उपनौ । ऐसैा । सिंभु । दीनौ ।

२०२ पाठान्तर–कांम । कामना । वाढय तस । सबे । हरत नारी तम । कौं । बिलंब । ताहि के पहिले ता विशेष है । भय । काम । बिसराम । नहि । नाम उन्दकि मरे । नृपति । पजरै ॥

दूहा ॥ पट्टन धनक्कनि देह दुष। ग्रेह कटन ग्रह हथ्थ ॥
धरैं धन्न निज कोस मधि। दुहै वानि समरथ्थ ॥
छं० ॥ ४२२ ॥ रू० ॥ २०३ ॥

कवित्त ॥ जिते जाइ दुह मान। काम कामना सु बढ्ढिय ॥
अवर नाहि उप्परह। नयन अरप पर चढ्ढिय ॥
तिन दिष्यत वर बस्त। मंगि अप्पन मुष अप्पहि ॥
अवला संग उल्हास। काहु की कानि न रप्पहि ॥
दुज षत्रि बैस सूद्रह बरन। तजै न किह तक्कत नयन ॥
बीसल नरिंद इह भय अकनि। लहै न कहुं निस दिन चयन ॥
छं० ॥ ४१३ ॥ रू० ॥ २०४ ॥

बीसलदेवजी के दुराचरणों से दुःखी होकर नगर के लोगों का प्रधान के पास पुकारने जाना ॥

दूहा ॥ दीरघ जन मिल नयर के। गए द्वार परधान ॥
वढि अचैन नर नारि सब। नहीं रहै रजधान ॥
छं० ॥ ४१४ ॥ रू० ॥ २०५ ॥

२०३ पाठान्तर-धनक्कन। मुप। गिह। कट्टन। हय। निसि। वांनि। समरथ।

२०४ पाठान्तर-मान। काम। कामना। बढ्ढय। उपहर। चढिय। दिषत। मुष्य। सग काऊ कांणि। रपहि। चीय। बईस। किहि। इहै। लहैं। निसि ॥

हमारे पाठकों में से जो ऐसे हैं कि वे Political officers रहे हैं अथवा जिन्होंने बीसल देवजी की जैसी अनीतियों के वृत्त गोप्य Political Reports में पढे है अथवा जो Mysteries of the Native Courts के ज्ञाता हैं अथवा जिन्हों ने वाजिदअली शाह की सायदी का पूरा ज्ञान उपार्जन किया है, वे चन्द के लिखे बीसलदेवजी के वृत्तान्त पर अविश्वास नहीं करेंगे और न उसे अत्यन्ताभाव का समझेंगे किन्तु कवि के स्पष्ट-वक्तृत्व की प्रशंसा करेंगे। इतिहास लिखनेवाले का यह मुख्य काम है कि वह चाल चलन के विषय में स्पष्ट वृत्त लिखे कि जिस से उस की भावी सन्तान शिक्षा ग्रहण करें। हमारे इस देश में हम लोग इस बात को फांसी लगने जैसा अपराध समझते हैं और रात्रि दिन ऐसी ही अनीतियों में लगे रहते हैं अतएव पुरुषार्थ का वडा टोटा हमारे यहा आ गया है।।।

२०५ पाठान्तर-मिलि। कै। परधांन। बढिं। अचैन। नही। रहसि। रजधांन। रिहांन ॥

सब का आपस में सलाह करके बीसलदेवजी को राजधर्म अरज करना ॥

कवित्त ॥ तिन मति तिहिं पुर होइ । होइ मति समथ समंडव ॥
बहुत भूमि भूमियां । चढवि तिन हर पुर षंडव ॥
इह सु ध्रम्म राजेन्द्र । दुष्ट कंकट सिर कट्टै ॥
अनड अनड संहरै । धरा रष्षन धर अट्टै ॥
इह कह्यौ मंत तिन मंत्रियन । अरु सब सहर सु पंच जन ॥
इह कथिय बत्त न्रिप सम तिनह । हवरि विसेषक भूमि यन ॥
छं० ॥ ४१५ ॥ रू० ॥ २०६

बीसलदेवजी ने उत्तर दे कहा कि यह सब मैं जानता हूं पर काम ज्वाला के बढ़ने से मैं लाचार हूं अब तुम जो कहोगे वह करूंगा ॥

कवित्त ॥ दुज्जर काय सु कहत । राज मन मांहि समझ्झौं ॥
काम ज्वाल मो बढिय । तुम हि तिन कै दुष दझ्झौं ॥
हौं इह जानौं सवै । पै मुहि मन वसि न होई ॥
सदा पहर जिम छाह । रहै कूई की कूई ॥
तुम कहौ सु हौं करि हौं अवसि । बोलि लेहि किरपाल हौं ॥
जहँ जहां दिसा तुम संचरौ । तहं तहँ आऊं चढ्ढि हौं ॥
छं० ॥ ४१६ ॥ रू० ॥ २०७ ॥

इस पर बीसलदेवजी का किरपाल को बुलाना और उसका आना ॥

दूहा ॥ दै फुरमान * प्रधान तब । बुल्लाये किरपाल ॥

२०६ पाठान्तर-मत्तिह । समथ्थ । सडव । भूमीयां । ध्रंम । कहे । अनड अनड । रषन । कहिय । तिनहि । विशेषक । भुंमियन ॥

२०७ पाठान्तर-दुजर केत । समझौ । कांम । वढीय । कै । दझौ । हैं । जानौ । सबै । पं । मोहि । छांह । हैं । कू । तहां तहां । चढि । हू ॥

* यह हिन्दी शब्द संस्कृत स्फुर+मान से है जैसे कि स्फुरिमान्, स्फूर्तिमता और स्फूर्तिमत् इत्यादि । इस फुरमान अथवा फुरमाना आदि शब्दों का प्रचार राजस्थानों अथवा बड़े प्रतिष्ठित लोगों की मंडली में आज भी बहुत है । वास्तव में यह इस <u>कहने</u> अथवा <u>आज्ञा</u> के अर्थ में

संभरि सौं आयौ सद्दर। लियै अनूप रसाल ॥

छं० ॥ ४१७ ॥ रू ॥ २०८ ॥

बीसलदेवजी का किरपाल को कहना कि तरवारि की पृथ्वी है सो हम नव खंड की षड्ग खोसने को षड्ग बांधते हैं तुम खजाना संग ले बीसल सरवर पर डेरा करो ॥

कवित्त ॥ आय नवै किरपाल। पाइ राजन कै लग्गौ ॥
मुष अग्गैं दुअ षाग। धरै नग जरित उनग्गौ ॥
बंधिय तेग विचार। सु गुन राजन इह कथ्थिय
जिम जिम विद्या दान। तिमह तिम षगकी प्रथ्थिय ॥
इहै सगुन हम कौं भयौ। षग षोलौं नव षंड धर ॥
ब्रह्मांड मंड सब बसि करौं। मंडौ मेर सुमेर धर ॥

छं० ॥ ४१८ ॥ रू० ॥ २०९ ॥

दूहा ॥ सुनि क्रिपाल सो मुष वचन। कढि षजीन सँग लेहु ॥
बीसल सरवर ऊपरैं। ध्रुव दिसि डेरा देहु ॥

छं० ॥ ४१९ ॥ रू० ॥ २१० ॥

प्रयोग होता है कि जो किसी के द्वारा कहा जाय अथवा आज्ञा किया जाय। जैसे हमारे रजवाड़ों में जहां अभी प्राचीन देशी रीति प्रचलित है वहां जिससे राजा स्वयम् नहीं बोलते। तब राजा जी तो किसी अन्य पुरुष को कहते जाते हैं और वह पुरुष उस दृष्ट मनुष्य को कहता जाता है। तथा किसी अपने से छोटे अथवा आधीन को कागद पत्र के द्वारा कहा अथवा आज्ञा किया जाय उसको फुरमान वा फुरमाना कहते हैं

२०८ पाठान्तर फुरमान। प्रधांन। बिल्लाये। बुलाए। सो। अमूप ॥

२०९ पाठान्तर–पाय। आगे। दुय। धरे। उनगो। सगुन। कथियं। दानं। तेम षग की इह पृथ्वीय। इह सगुन अबैं हमकों भए। सों ब्रह्म मड मंड। ब्रह मंड मंड। कर्यो। दंडों ॥

* हिन्दी में खजाना और उस से बने शब्द आते हैं उस का वाचक यह प्राचीन हिन्दी शब्द सब के ध्यान में रहने योग्य है। यह संस्कृत खज्जूर रौप्य silver का अपभ्रंश है। इन शब्दों को अरबी और फारसी के अभ्रंश अनुमान करना व्यर्थ है। देखो, सं० खज शब्द भी युद्ध और स्वार्थ के अर्थों में प्रयोग होता है। और वह भी इतने प्राचीन समय से कि ऋग्वेद ८। १ ७ में "यलपि युष्म खजकृत पुरन्दर०" कहा है ॥

पाठान्तर–क्रिपाल। संग। उपरें। उपरैं। दू। दिशि ॥

बीसल सरवर पर बीसलदेवजी के आधीन तथा सहायक इष्ट मित्र राजाओं का उनके दिग्विजयार्थ अटन के लिये एकत्र होना और गुजरात के चालुक्क राजा का वहाँ न आना अतएव बीसलदेवजी का उस पर चढ़ाई करना और वालुका राय का यह सुनकर सामना करने को आना ॥

पद्धरी ॥ भरि चले सुतर*रथ एक राह । बीसल तडाग दिय वारि गाह ॥
फुरमान दए लिषि दस दिसान । सब आय मिले अजमेर थान ॥ छं०॥४२०॥
परिहार महनसी मिल्यौ आय । मंडोवर के नर लगे पाय ॥
गहिलौत मिले सब सभा भैर । पावासर तोंवर राम गौर ॥ छं० ॥ ४२१ ॥
मेवात धनी आए महेस । मोहिल्ल दुनांपुर दिए देस ॥
बल्लोच मिले सब पाइ बंधि । बांभन्या न्टपति तजि गए संधि ॥ छं० ॥ ४२२
भटनेर राय की आइ भेट । मुलतांन नाल बँध थटा थेट ॥
फुरमान गए जैसलहमेर । भेम्या सब भाटी भये जेर*॥ छं० ॥ ४२३ ॥
जादौं रु वघेला मल्हवास । मैरी बड गूजर आइ पास ॥
अंतरहवेध कूरंभ आइ । सब मेर जेर होय लगे पाइ ॥ छं० ॥ ४२४ ॥
आए सपाइ चढि जैतसीह । तच्छिनपुर के नर संग लीह ॥
आये सु चढ्ढि उदया पवार । निरवान डाड चढि चले लार ॥ छं० ॥ ४२५ ॥
चंदेल दाहिमा चरन लग्गि । वसि किये भूमिया धूनि षग्ग ॥
चालुक्क कोइ आयौ न पाइ । रहे मुकरि जोर *मरवार* साहि ॥ छं० ॥४२६॥
सुनि बोल जैतसी गोलवास । घर बार नगर को रष्पपास ॥
सौं पौं सु तुमहि अजमेर थान । वालुक्क कितक पावे न जान ॥ छं० ॥ ४२७ ॥
दर* कूच कूच* चढि चल्यौ वीर । गिरि मग्ग होइ सर सुक्कि नीर ॥

* इस रूपक में के कई एक शब्द भाषा के शोधक विद्वानों के ध्यान में लेने योग्य हैं जैसे-हि० सुतर (SK सु+तर or तरि तरु), जेर (SK जूर) or जूरी to reduced, to injure, to hurt, to decay, to grow old, to wound or kill) जोर (SK जुड to bind, to join, as in [illegible] ing, to direct, to grind or pound &c, or जुर speed, velocity, motion in general) तरवार (SK तरवारि) दर (SK दृ to divide, cut or break, to preserve, &c, and [illegible] यप्) कूंच or कूच (SK कुञ्च to go, to go to or towards.)

इस के अतिरिक्त यह भी पाठकों को ज्ञान हो कि इस प्रसंग में कहीं चालुक्क और कहीं वालुक्क पाठ है सो जहां जैसा पुस्तकों में मिला वैसा रक्खा गया है किन्तु जितनी पुस्तक जानियां

सोझति सोलं की पच्छिलि चोट। सैं लोट किये घर पारि कोट॥ छं० ॥ ४२८
जारौर भंजि गढ रौर पार। अरि भाजि गए गिर बन मझार॥
आबू चढ़ि भेद्यो अ उलेस। तत्काल लियौ गिरिनारि देस॥ छं० ॥ ४२९॥
वागरि सोरठ छपना सुद्ध। दंड मानि मिले नह मिले जुद्ध॥
गुजरात देस सित्तर हजार। वालुका राइ चालुक झुझार॥ छं० ॥ ४३०॥
सुनि बत्त चढ्यो अहंकार बंध। शिव सक्ति पूजि धरि कुन्त कंध॥
असवार लार हज्जार तीस। मद झरत नाग पंचास वीस॥ छं॥ ४३१॥
जोजनह एक पर करि मिलान। आवाज सुनिय तब चाहुवान॥
छं० ॥ ४३२॥ रू० ॥ २११॥

बालुकराव का आना सुनकर बीसलदेवजी का सेना ले चढ़ना॥

दूहा॥ सुनि अवाज बीसल नृपति। आयौ बालुक राव॥
राज मंगि है वर चढ्यौ। दियौ निसान * निघाव॥
छं० ॥ ४३३॥ रू० ॥ २१२॥

पद्धरी॥ दल चढ्यौ साजि बीसल सु राज। बज्जिय सु जांनि अरि पुर अवाज॥
सित्तर हजार सेना सु बाज। झिंगरि सलूर पावस निगाज॥ छं० ॥ ४३४॥

की लिखी हुई हैं उनमें च और व में बहुत ही कम फरक देखने में आया है कि जिस से मै अनुमान करता हूं कि लेखकों ने धोका खाकर चालुक का वालुक पाठ न लिख दिया हो॥

* हिं० निशान अथवा निसान (S K नि+शाण। e नि before and शाण coarse cloth, sack cloth, Canvas. A mall tent or screen used especially as a retiring room for actors and tumblers, &c) Hence a standard, an ensign, flag, banner & colours, &c इस निशान शब्द का प्राचीन देशी राज्यों में अभी तक प्रचार है और troop और Company के अर्थ में भी प्रयोग होता है जैसे अमुक राजा ने अपने अमुक सरदार पर दो निशान चढा दिये। अमुक अमुक निशानो में झगड़ा वा लड़ाई हो गई। मैं अमुक निशान का हूं और वह अमुक का॥

२१ पाठान्तर-दीय। फुरमान। दिसान। थान। आई। गहिलोत। पावासर। तूअर। मोहिल। वलोच। वंभन्या। सिध। आय। वंध। फुरमान। जेसलहमेर। जदो। मल्हनवास। आय। अंतरहवध। आय। पाय। सपाय। जैतसिह। तक्षितपु। साय। सय। सच्या। लीय। घठि। पवांर। निरवांन। भूमिया। मुसक्करि। रपवाल। सोपोसं। थान। कहाक। कितहु। जान। कूत्त कुत्त। मंगि। सोझत्ति। सोकति। सोलंकि। सें। जालौर। पारि। मझारि। लीयौ। छपंन। डड। सतरि। राय। कूंत। पचास। जोजन। मिलान। चाहुवान॥

२१२ पाठान्तर–आवाज। मग। हैवर। चढ्यौ। दीयो। निसान। न। घाव॥

२१३ पाठान्तर जान। सत्तरि। वाजी। झिंगर। कि गाज। ठलकति। कूंत। जुत। जुंतु। सिप। पप्पर। वंधि। भूमिया। मंडि। स० १६४१ और १७६० में "करि अगम गम्य दल अटुल रक" है। जव। अजलौ। अज्जलौ पदक। मुकाम। मुक्काम। गाम।

ढलकंत ढाल झलकंत कुंत। बिकसंत सूर सकसंत जंत ॥
हल हलत सिंधु वर चल अनूप। झल मलत सिष्प पष्पर सनूप॥ छं०॥४३५॥
वर विजय बद्धि चालुक्क देश। बहु मिलत भूमियां लेय पेस ॥*
अरि गहत गाढ तिन धरनि षंड। इहि रीत राज बसु विजय मंड ॥ छं०॥४३६॥
करि अग्ग मद्द गल सहस इष्य। वर माघ मास उज्जलौ पष्य ॥
दस कोस जाय मुक्काम† कीन। बिच गाम नगर पुर लूट लीन ॥
छं० ॥ ४३७ ॥ रू० ॥ २१३ ॥

बीसलदेवजी की खबर सुन बालुका राव का जलभुन जाना ॥

दूहा ॥ सुनिय षबरि‡ बालुक तवै। तमकि सु ऊठ्यौ ताम ॥
मानौं प्राजारिय अगिन। नर निरधूम बिराम ॥
छं० ॥ ४३८ ॥ रू० ॥ २१४ ॥

बालुका राव का नित्य नेम करके लड़ने को तयार होना ॥

पद्धरी ॥ बालुका राइ चालुक्क वीर। अंगाइ नीर मंज्यौ सरीर ॥
हरि चरन अंब अंजुली कीन। परि कंठ विप्प धारिय कुलीन ॥ छं०॥४३९॥
जुध आज करौं कहि कहा कानि। जो जाउँ भज्जि तौ गोत गानि ॥
इतनी भूमि पिची न कोइ। अड्डौ न फिर्‍यौ भिल्लि लेय लोह ॥ छं०॥ ४४०॥
पषरैत तुरिय पषरैत गज्ज। नर कस्से वगतर सिलह सज्जि ॥
असवर भये तब षबरि दीय। बालुका राइ अयौ अबीह ॥ छं० ॥ ४४१ ॥

---

* हिं० पेस (SK प्रैष्य m A servant, a slave n Service, servitude Hence a tribute or present such as is only presented to conquerors, princes, great men and superiors)

हिं० पेश अथवा पेस+कशी अथवा कसी (SK प्रैष्य and कृष्=to draw, to draw out of, to attract, to raise, to draw up, &c)

† हिं० मुक्काम or मुकाम (SK मुक्त+क्राम=परिश्रम labour) Hence a halt, a stop in a march, &c Some think it from the SK मकुष्ट [illegible] going lazily, slowly, &c or SK मक or मकि or मुक्क to go, to move, &c, & अमनि a road or SK मुक्त+श्राम [illegible]

‡ हिं० खबरि or खबर (SK ख्या to relate, to recount, to say or tell, [illegible] to [illegible] known &c

२१४ पाठान्तर-पद्धरि । जमि । ताम । स० ५८५८ की मे "मनो प्रजारिय अगनि वन" [illegible] बिराम ॥

बालुका राव का बीसलदेवजी के पास श्रीकंठ भट्ट को भेज संदेसा कहला ॥

श्रीकंठ भट्ट चहुवान पास । तुम जाय कहौ इहि विधि प्रकास ॥
श्रीकंठ भट्ट गय अरि सु थान । बीसलदे भेट्यौ चाहुवान ॥ छं० ॥ ४४२ ॥
आसीस दई उभ्भारि हथ्थ । बालुका राइ की कही कथ्थ ॥
जितनैं न्टपति सौं मुदै काम । तितनैं रयति सौं कौंन काम ॥ छं० ॥ ४४३ ॥
तुम बुरी करी करि रयति बंदि । ऐसी न करैं हिंदू नरिंद ॥
अब छंडि रयनि फिरि जाहु धाम । अजमेर सहर मंडौ विश्राम ॥ छं० ॥ ४४४ ॥
हौं वह्ल राय जुध करन जोग । जुध भाजि जाउ तौ परै सोग ॥
हम मरन दिवस है मंगलीक । मो पास जिते न्टप सुद्ध लीक ॥ छं० ॥ ४४५ ॥
हम तुम्म नहीं कबहू विरुद्ध । इह जानि जाहु फिरि तजौ जुद्ध ॥
हम तुम्म काम इहि षेत आज । को रहै षेत को जाइ भाजि ॥ छं० ॥ ४४६ ॥

यह सुनते ही बीसलदेवजी का लड़ने को आज्ञा देना ॥

इतनी जु सुनत ही चाहुवान । तिहि वार हुकम करि द्यौ निसान ॥
पषरेत किये है वर मतंग । संनाह पहरि सब नरनि अंग ॥ छं० ॥ ४४७ ॥
दोउ फौज निजर दिठाल मिल्लि । उपट्टै सिंधु जनु लहरि जल्लि ॥
छं० ॥ ४४८ ॥ रू० ॥ २१५ ॥

बीसलदेवजी का चक्रव्यूह और बालुकराय का अहिव्यूह रचना ॥

दूहा ॥ चक्रव्यूह चहुआन किय । अहि मन बालुक राइ ।
कै भेदै कै मधि रहै । दई करय निरवाह ॥
छं० ॥ ४४९ ॥ रू० ॥ २१६ ॥

---

२१५ पाठान्तर-राव । चालुक्र । मंगाय । मझ्यौ । अजुलि । धारीय । जुद्ध । करां । काल्हि । काल । जैा । जाउं । जाऊं । भजि । गोतमालि । काय । अडो । फिर । पषरैं । पषरैंत । गज । कसे । सजि । भए । जाहुं । कहो । थांन । स.१८७० में "भेट्यो बीसलदे चाहुवान" । दीन । दइ । उभारि । हथ । राय । कथ । जितनें । सो । कांम । तितनें । सां । कोंम । काम । वुरीय । करी । करै । हिंदू । धाम । विश्रांम । हों । वह्ल वस । भागि । जाजं । पासि । शुद्ध । तुम । तुम । नही । बिरुध । तुंम । कांम । जाय । चाहुआंन । निसांन । हैवर । हैं वार । दोऊ ।
२१६ पाठान्तर-चाहुवान । बालुका । राय । दइ ।

बीसलदेवजी और बालुकराय की फौजों का परस्पर युद्ध करना ॥

भुजंगी॥ मिले प्रात कालं दुअं दिष्ट फौजं। मनों देषिये जानि सामुद्र मौजं ॥
गजं आय झूमे भले सात रोटं। षट्टे षंड सुंडं करे अप्प चोटं ॥ छं०॥४५०॥
भई तीर कारी छुटे नाल बानं। परी सोर की धुंध सुझ्झै न भानं ॥
भले सूर बीरं धरे कुंत कंद्धं। उपारैं तुरी दो दिसा फौज मद्धं ॥ छं० ॥ ४५१ ॥
निसंकं तुरी थप्पि पष्षरेत नष्पै। मनो बुंद सिंधं परै कौन दिष्पै ॥
भए एककेकं परे भार भारे। ननं तेग तुट्टे बढ़े फूल धारे ॥ छं० ॥ ४५२ ॥
भई फौज चालुक्क की पच्छ पायं। तबै बालुका राइ कीनी सहायं ॥
जपै भाय भायं करै मार मारं। लरै दोय जोधा कटैं सार सारं ॥ छं० ॥ ४५३ ॥
उपट्टै घटें गाबरं तुंड तुट्टै। बढ़ै संग छुट्टी फिरी अंग फुट्टै ॥
चपे चक्रव्यूहं नृपं अप्प चल्लै। फिरै मुष्प परिहार गहिलौत मिल्लै॥ छं०॥४५४॥
चल्यौ भज्जि गहिलोत तूंवर दिसानं। फटे चक्रव्यूहं भए एक थानं ॥
तिनं बार स्याबासि पावासु रानं। सनं मुष्प धाए मनो सिंघ जानं ॥ छं०॥४५५॥
परी भूमि लोथं मिले हथ्थ बथ्थं। करैं जोर जोधा अकथ्थं सु कथ्थं ॥
तिनं बार षंधार पेले वलोचं। जुरे आय संमुष्प कीयौ न सोचं ॥ छं० ॥ ४५६॥
भभक्कं भकं हस्ति बोले भसुंडं। परे पंड षंडं रनं रुंड मुंडं ॥
बने लाल बागें झिले लोह मिल्लै। दुहू ओर जोधा मनों फाग पिल्लै॥ छं०॥४५७॥
गजं श्रोन चल्लै रजं आस पासं। मनों माधुरी मास फूले पलासं ॥
मिली दिष्ट बालुक्क बीसल्ल नरिंदं। मनो सूर दूषे भये चंद्र मंदं ॥ छं० ॥४५८॥
तुरी चढ्ढि चालुक्क हस्ती चुहानं। भयौ राज सों जुद्ध भारी भयानं ॥
उनें बाजि नंष्यौ दुनें गज्ज पेल्यौ। दिए दंत पारं दुअं लोह मिल्यौ॥ छं० ॥४५९॥
फिस्यौ गज्जराजं उनें बाजि फेस्यौ। दुअं बीर बाबा भई पेन हेल्यौ ॥
छं० ॥ ४६० ॥ रू० ॥ २१७ ॥

२१७ पाठान्तर-दुय। दिठ । देषिये। अैन। जानि । झूमे। रोट। रोट्ट। सर्प। सोट। सोट्टं। धुंधु। सुझै । भान। शूर। धरे। कधं। उपारै। मंध। यष्परे। कथ नये। नष्ये। परं। कोन। भट्ट। पछ पाई। पछ। राय। सहाई। जपे। भाई भाई। जोद्धा। रटै। दट। तुंर। करी। चपे। अप। चलं। फिरें। मुदव। मिलं। भजि। तोवर। फटै। मुष। पुहवि। पष्षान। हथ बथं। करे। अकथं। कथ। पेल्यो। सनदुष। भभक्कन हस्ती सु बोलै भसुंड। रुड। मुंडं। मिले। दुहुं। मनो। पिले। चल्ले। रजे। मनो। बालुक। मनो। दूये। दुन्द। दट। चढ़ि। वालुकं। करी। चाहुवानं। चौहानं। सो। नष्यौ। गज। दुर। दुव। गजराज। दुर। भयं।

चालुक का कहना कि रात में युद्ध नहीं करना प्रात हुए युद्ध करेंगे ॥

दूहा ॥ राज सुनो चालुक कहै। है थप्पि दुह कंध ॥
रानि परी जुध नहि करैं। प्रात करैं फिर जुद्ध ॥
छं० ॥ ४६१ ॥ रू० ॥ २१८ ॥

दोनों योद्धाओं का अपने अपने डेरों पर आना और चालुक के मंत्रियों का एक झूठी पत्री बनाना ॥

अरिल्ल ॥ अपने अपने डेरा आए। सब घायल के घाव बंधाए ॥
मिले सकल चालुक के मंत्रिय। झूठी एक बनाई पत्रिय ॥
छं० ॥ ४६२ ॥ रू० ॥ २१९ ॥

चालुक के मंत्रियों का उसे एक झूठी पत्री देकर घर भेज देना ॥

अरिल्ल ॥ सो कर जाइ राज कै दिन्निय। तुम घर जाहु कहा वक थन्निय ॥
डोली करि चालुक्क चलाए। सब मंत्री मिलवे कों आए ॥
छं० ॥ ४६३ ॥ रू० ॥ २२० ॥

चालुक के मंत्रियों का बीसलदेवजी के मंत्रियों से मिल संधि कर लेना ॥

अरिल्ल ॥ सब मंत्री परधान थान पर। बोलि लए पावासुर तोंअर ॥ *
हम सु तुम्हारैं पिंडन आए। कपट निपट करि राव चलाए ॥
छं० ॥ ४६४ ॥ रू० ॥ २२१ ॥
इह सु बोल गज तोल चलावौ। राज कहै सो माल मँगावौ ॥
छं० ॥ ४६५ ॥ रू० ॥ २२२ ॥

---

२१८ पाठान्तर–करें। करैं। भये। करैं ॥

२१९–२२ पाठान्तर–अपनें २। घाउं। वंधाए। मंत्री। पत्री ॥ २१९ ॥ जाय। दीनीय। थंनिय। चालुक। करी। को। कू। आये ॥ २२० ॥ परधान। थांन। तुम्हारे। पायन ॥ २२१ ॥ इहां। सोल। चलायौ। मंगायौ। तहं ॥ २२२ ॥

* यह तुक सं० १६४० और १७७० की पुस्तकों में नहीं है ॥

पावासुर का बीसलदेवजी को संधिकर लेने के समाचार कहना ॥

अरिल्ल ॥ राजन पास गए पावासुर । तहाँ बोलि किरपाल लए नर ॥
चालुक के मंत्री आये मिल । मंगो मान्न करै प्रभु पग तल ॥
छं० ॥ ४६६ ॥ रू० ॥ २२३

बीसलदेवजी का संधि स्वीकार कर वहां महल बनाने और नगर बसाने को कहना ॥

अरिल्ल ॥ फिर राजन्न कही तुम जानौ । मेरो इहाँ महल्ल हु थानौ ॥
एक मास में नगर बसायौ । इतनी कहि अरु पाइन आयौ ॥
छं० ॥ ४६७ ॥ रू० ॥ २२४ ॥

माल मँगाकर बीसलपुर बसाना और वहां से पीछे फिरना ॥

दूहा ॥ पावासर तोंअर कहै । भरैं कोरि कौ भाग ॥
जब हो माल मंगाइ करि । नगर बसावन लाग ॥
छं० ॥ ४६८ ॥ रू० ॥ २२५ ॥

जीति षेत चहुआन न्टप । चालुक धाय अघाय ॥
फिरि बाहुरि बीसल चल्यौ । बीसल नगर बसाय ॥
छं० ॥ ४६९ ॥ रू० ॥ २२६ ॥

सो संवत नव सत्त अध । बरस तीस छच अग्ग ॥
पुर पट्टन बीसल न्टपति । राजन सयलह जग्ग ॥*
छं० ॥ ४७० ॥ रू० ॥ २२७ ॥

२२३–२२४ पाठान्तर –कें। कै। पाइन। ताले ॥ २२३ ॥ राजन। राजंन्न। जानैं। इन। मेल्हिहू। हो। मैं। वसायौ। वसाउ। पायना आयौ ॥ २२४ ॥

२२५–२२७ पाठान्तर–कहै। भरे। भरै। मंगाय। बसाउन ॥ २२५ ॥ जीती। चहुआंन। चहुवान। नप। धाय। फिरि ॥ २२६ ॥ सत। अध। आगि। जगि ॥ २२७ ॥

* इस रूपक में कहे संवत् के विषय मे हमारा टिप्पण १६८ पढ़ो और विचार करो। इस पद्य के रूपक १६८ मे बीसलदेवजी के पाट बैठने का संवत् ८२१ कहा है परंतु ख्यातियों में ८० ८३१ भी मिलता है। उन के राज्य करने के वर्ष ६४ कवि ने बताये दिये हैं अतएव यह रूपक पाट बैठने के रूपक १६८ मे **आठ सैं** के स्थान मे **नौ सैं** अथवा **नव सैं** का पाठ होना स्वयम् सिद्ध करता है क्योंकि जो ऐसा न माने तो। ११८ वर्ष का राज्य समय होगा। ख्याति मे लिखे बीसलदेवजी के पाट बैठने के संवत् के अनुसार जो लेखा लगाकर हमने टिप्पण १६८ में संवत् १०८३ सिद्ध किया है वही कर्नल टोड साहब भी नीचे लिखे प्रमाण से अनुमान करते हैं:–

एक दूती का बीसलदेवजी को एक बहुत सुन्दर बनिकसुता की खबर देना ॥

दूहा ॥ बनिक सुता कौमारिका । एक अनूप नरिंद ॥
कामलता दूती कहै । मनों सरद कौ चंद ॥
छं० ॥ ४७१ ॥ रू० ॥ २२८ ॥

बीसलदेवजी का बीसलपुर में प्रविष्ट होना ॥

कवित्त ॥ संवत नव सत अड्ड । वरष दस तीय सत्त अग ॥
पुर प्रविष्ट बीसल्ल नरिंद । राजंत सयन्न जग ॥
निहि पट्टन इक वनिक । मंडि अच्छ राज विनाहति ॥
रच्चिव देव न्रप सबद । दिष्षि तिय देव इवाहति ॥
जै जै सबद बंदिन चवहि । मागध पुच पविच मति ॥
अन धन प्रवाह बहु पुहवि परि । बरष्यौ जेम पुरंद गति ।
छं० ॥ ४७२ ॥ रू० ॥ २२९ ॥

" Mahmood's final retreat from India by Sindh to avoid the armies collected "by Byramdeo and the prince of Ajmere," to oppose him, was in A H. 417, A D 1026, or S. 1082, nearly the same date as that assigned by Chund, S 1086," Vol II, page 119

इस के सिवाय पाठकों को यह भी विचार करना होगा कि इस समय गुजरात देश के पट्टन का चालुक राजा कौन सा था कि जिससे बीसलदेवजी का युद्ध हुआ। अतएव हम जैन ग्रंथ प्रबंध चिन्तामणि और कुमारपाल चरित्र आदिक के अनुसार शोध हुए संवत् मूलराजजी सोलंकी से लेकर करण तक के नीचे लिखते हैं:-

१ मूलराज	=	संवत् ९९८ से	५५	वर्ष	राज किया	
२ चामुंडराय	=	,, १०५३ से	१३	वर्ष	,, ,,	
३ वल्लभराज	=	,, १०६६ से	११॥ मास	६	दिन राज किया	
४ दुर्लभराज	=	,, १०६६ से	११॥	वर्ष	राज किया	
५ भीम	=	,, १०७८ से	५०	वर्ष	,, ,,	
६ करण	=	,, ११२८ से	३२	वर्ष	,, ,,	

२२८ पाठान्तर-कोमारिका । कहै । मनहुत ॥

२२९ पाठान्तर-सं० १७७० की पुस्तक में "सर संवत् नव सत्त । वरप दस पंच सत्त अग" पाठ है। बीसल्ल । नृपति । राज्यत । तिन । पट्टन । यह । दिषि । तीय । इवाहि । पुत्त । पहु । पुहमि । पद । पुरिंद ॥

इस रूपक के संवत् के विषय में टिप्पण १९८ और २२५-२८ और बीसल नगर अथवा बीसलपुर के विषय में टिप्पण १८० और १८२ अवलोकन करो ॥

बीसलदेवजी का पीछे अजमेर आना और वहां उन का हास होना ॥

दूहा ॥ इह विधि मंड्यौ राज वरि । जग्य बनिक अजमेर ॥
बरष चयोदस मद्धि वय । भयौ हास सब नैर ॥
छं० ॥ ४७३ ॥ रू० ॥ २३० ॥

बनिकसुना गोरी का पुष्कर में तप करना और बीसलदेवजी का उस पर मोहित होना ॥

पद्धरी ॥ आषाढ मास उज्जास पष्य । दिन तीय सोम वंदन सरुष्य ॥
मटिवाय गज्जि नीसान गेन । अति उंचि मंडि न्निप अवधि अेन ॥ छं० ॥ ४७४ ॥
किलकंत उषल अकाल अभ्भ । विथुर्यौ मद्धि जल पहुमि गभ्भ ॥
विलसंत राज तिय देव साय । निकसै बार कहु एक भाय ॥ छं० ॥ ४७५ ॥
चिहुं कोद घूंमि घन पुव्व पूर । दिन पांच आनि दरसाइ सूर ॥
रस बार सोम वीरंम दिन्न । ते वंस सेव जन वंद किन्न ॥ छं० ॥ ४७६ ॥
सो षंड मास लगि रत स मान । घर हरे धुंम जल महिर आन ॥
छं० ॥ ४७७ ॥ रू० २३१ ॥

साटक ॥ स्यामंग रवरंग अंग रवनी । अन्नी सु रंगेसवे ॥
साईसं सक पाइ राइ मुगता । जुग्ता सरित्तारए ॥
नीलं वास वनूर वंध विषना । हरि हार धारा तनं ॥
भूमिं संकि स्वधीन पुन्य तनयं । देवा रहस्यं मनं ॥
छं० ॥ ४७८ ॥ रू० ॥ २३२ ॥

कवित्त ॥ धरतिय हरि उर वास । वान धर उर तिय धारिय ॥
दिग कज्जल लगि धार । धार कज्जल दिग धारिय ॥

---

२३० पाठान्तर–परि । मधि ॥

२३१ पाठान्तर–उज्जास । पष । हरुष्य । सरूप । मिटिंवाय । गज्ज । नीसान । गैन । उन्न । वैन । उपिल । अभ । विथूर्यौ । मधि । पुहमि । गभ । निरसै । चिहु । घुमि । पुव । पव । दरसाई । विरम । दिन । ते । वंध । किन । स नान । आभ ।

२३२ पाठान्तर–स्यामागं । अवनी । पाय । जुगता । सरितारए । विधिना । हार । भूमि ॥

२३३ पाठान्तर–धरतिय उर । धारि । मधि । हिय । रतिय । नूरर । सा । दुहुय । पहुय । रहसि ॥

रच्यौ चार त्रिय मद्धि । मद्धि त्रिय चार सु रंभिय ॥
नूपुर पय सो श्रवत । श्रवन नूपुर पय अंगिय ॥
अविसय न पुहप छन बन रसिय । रसय वनी घन पुष्फ सम ॥
भू इंद रहसि रसि बसि रंभिय । बीसल रस भू इंद रम ॥

छं० ॥ ४७९ ॥ रू० ॥ २३३ ॥

पुष्कर की तपस्वनी की बीसलदेवजी के प्रति अरदासि ॥

दूहा ॥ हैां राजन संगों यहै । इह मेरी आरदासि ॥
पुहकर की कहै तपसनी । रूप रंग को रासि ॥

छं० ॥ ४८० ॥ रू० ॥ २३४ ॥

अरिल्ल ॥ पिच सनेह सपूत सवानिय । देवनि भूमिन सब्ब समानिय ॥
सो रति मान थटे घन डंबर । अस्सय मद्धि निज उज्जल अंबर ॥

छं० ॥ ४८१ ॥ रू० ॥ २३५ ॥

दूहा ॥ उज्जल पष दसमी दिवस । अरु दशरथ के नंद ॥
नयर बंद्ध अर कंध दस । रचिश्री किए निकंद ॥

छं० ॥ ४८२ ॥ रू० ॥ २३६ ॥

दीप माल दीपै सुरग । ग्रह ग्रह महल अवास ॥
हरिपुर हर मानत मनह चितवत चिंतत वास ॥

छं० ॥ ४८३ ॥ रू० ॥ २३७ ॥

बीसलदेवजी का पुष्कर में बनिकसुता गैारी का सतीत्व भ्रष्ट करना और उसका उनको दावन होने का शाप देना ॥

कवित्त ॥ एकादसमी दिवस । देव नर नाग सब्ब मिल ॥
सुर सक्कव तजि वास । आनि पुहकर प्रसाद पिल ॥
तहां बनिक नंदिनी । पुचि गवरी तप मंड्यौ ॥
दिष्यि ता ह बीसल नरिंद । बढि मार प्रचंड्यौ ॥

२३४–३७ पाठान्तर–हो । इहे । अरदास । है । तपशनी ॥ २३४ ॥ मुरिल्ल । सवानिय । सवानीय । सवानीय । सव । समानिय । मान । मधि । उजल ॥ २३५ ॥ नैर । वध । अरि । निकव ॥ २३६ ॥ सुरग । चिंतवत्त ॥ २३७ ॥

२३८ पाठान्तर-एकादशमी । दाव । मिलि । पास । आंनि । पिलि । दीष । द्वादशी । असू । सद । तितहिं । दिपिति । तहु । मन । । कहु ॥

द्वादसी दिवस दिन अस्त करि । असद सह कीनी न्टपति ॥
जिन तिनह दिष्षि निद्दि मन दुचित । न दिय राज कछु छिन विपति ॥
छं० ॥ ४८४ ॥ रू० ॥ २३८ ॥

री ॥ वर विमल लोक पुहकर प्रकास । सुर नर सु नाग रिषि मुनि अवास ॥
धर धरम करम सुभ परम पाइ । जय सुर चवंत गुन अगम गाइ ॥ छं० ॥ ४८५ ॥
तिथि अगनवार दिन कर प्रकास । गय दार तपनि करि कपट पास ॥
तन रचित नीर उर ध्यान देव । न्रप मानि रहस करि वर अषेव ॥ छं० ॥ ४८६ ॥
वढि विकल झाल तम धूम नैंन । गहि कुस सकुध्य दइ दुसिष वैंन ॥
धर हरति अंग जल धार भार । हथ पटकि गंग जट समुष पार ॥ छं० ॥ ४८७ ॥
धरि ध्यान ध्यान तिन अगनि ईस । षंडे सु जग्गि तंफे जगीस ॥
रवि पदम पाय सासन सहृढ । उर धरे देव तिन देव गूढ ॥ छं० ॥ ४८८ ॥
जुग पानि नाभि ताली लगाय । रमि द्रिष्टि द्रष्टि गिरि बंभ राय ॥
तिर पुटिय भाल झिल कमलझूर । इह भांति ताव तप तपनि जूर ॥ छं० ॥ ४८९ ॥
तप चवल मुक्कि किय विरथ काम । कर मंझि राज मुझ श्राप ताम ॥
छं० ॥ ४९० ॥ रू० ॥ २३९ ॥

दूहा ॥ पुत्री बनिक सराप दिय । भर पुहकर नर लोइ ॥
असुर होइ बीसल न्टपति । नरपलचारी सोइ ॥
छं० ॥ ४९१ ॥ रू० ॥ २४० ॥

गौरी का बीसलदेवजी को भयभीत देखकर कहना कि तुम्हारा पोता तुम्हारी सुकीर्त्ति करेगा ॥

दूहा ॥ दिष्षि राज भय भीत तन । तन मन धूजत तथ्य ॥
सो उद्धारन पय गहन । कथ कुसुमन वर कथ्य ॥
छं० ॥ ४९२ ॥ रू० ॥ २४१ ॥

---

२३९ पाठान्तर-वर । प्रकाश । रिष । करकन । पाय । गाय । अन । । छिन कर । ध्यान । वाल । नेन । कुश । सकुध । दय । वैन । वेंन । हरत । पिट्टि । ध्यां । ध्यान । जगि । तई । झे । सुहट । पानि । नाभा । द्रष्टि द्रष्टि । राइ । तरपटीय थाल झिलकमल मूर । नाति । प्प चवल मुनि कियय विरथ वंम । सराय । ताम ॥
२४०–४१ पाठान्तर-वणिक । नृपति । नर मच्छन करे सोय । २४० । दिषि । तय । कथ । कुसुम । वर । कथ ॥ २४१ ॥

दूहा॥ तो सुअ सुत्त उदार मति। गति तिन देव प्रकास॥
धर मंडन डंडन भरन। सो तुम करहु सुवास॥
छं०॥ ४९३॥ रू०॥ २४२॥

तपस्वनी के कोप से बीसलदेवजी का सांप के काटने से अलोप होना॥

कवित्त॥ सपत दिवस अनुसिष्य। सुष्य मधि दिग्ग प्रजारिय॥
असि विष वर्द्धन अंग। अगनि गल दनुज उदारिय॥
सहस अद्ध तन बड्ड। झार मुष चार विकारिनि।
सर्व असन करि असम। सैन छिन चैन निकारनि॥
आहुट्ठ दीह साहुट्ठ मधि। पलप पदम बिन कदम बिन॥
गुर गर्वरि ग्यान गन गन्द करि। रम्य राज्य आरन्न छिन॥
छं०॥ ४९४॥ रू०॥ २४३॥

दूहा॥ भय दिवाह आहुट्ठ दुति। तपसरनी कौ कोप॥
जल बेली बिहु बाग त्रिष। ते जिन भये अलोप॥
छं०॥ ४९५॥ रू०॥ २४४॥

जिस तपस्वनी के श्राप से बीसलदेवजी असुर हुए उसके तप का आना की मा सविस्तर वर्णन करती है॥

दूहा॥ सुनह पुत्र तिन तपनि तप। भिन्न भिन्न परिमान॥
जिहि दुसिष्य न्रप असुर हुअ। रच्या सवर बरमान॥
छं०॥ ४९६॥ रू०॥ २४५॥

बनिक पुत्र मन इम धरिय। मो पनि ताप अपार॥
जो तप्पह मंडौं प्रबल। तौ कुहौं संसार॥
छं०॥ ४९७॥ रू०॥ २४६॥

---

२४२ पाठान्तर–सुत सुत। उद्दार। मंड॥

२४३ पाठान्तर–अनुसिष। सुप। दिग। उद भच्चिय। वार। विकारनि। सैंन। चैंन। आहुठ। साहुट। ग्यांन। गल्ह। आरंन॥

२४४–४६ पाठान्तर–भये। भए। आहुठ। को कोपु। विहुं। वृष। भए॥ २४४॥ भिंन। भिन। परिमान। जिहि। दुसिप। नृप। भय। वरमान॥ २४५॥ धरीय। मो तन पाप अपार। मो पित ताप अपार। जो तप मडौ निय प्रवल॥ २४६॥

कवित्त ॥ षन अप्पिय सब ब्रह्म। उअर तिय ध्यान सु धारिय ॥
चिंतवि पुहकर तिथ्थ। रित्तु ग्रीषम मति चारिय ॥
पंच अगनि वर सीस। मेघ धारा धर मंडिय ॥
बरषा काल प्रचंड। सीत जल मद्धि सु बुड्डिय ॥
छंडिय सु वास संसार सुष। जोति निरंजन उर सचिय ॥
इम कंक नालि मंडिय गगन। पीयै वाम दक्खिन मुचिय ॥
छं० ॥ ४९८ ॥ रू० ॥ २४७ ॥

पद्धरी ॥ पहु समय तिथ्थ वर सजर किन्न। उर नयर धारि तिन भुवन चिन्न ॥
रुष च्यार देव पद भेटि ठौर। मन धरयौ ध्यान सब तिथ्थ मौर ॥ छं० ॥ ४९९ ॥
बढि बाह मास तिन पान कीन। सिर अद्ध उद्ध दिग वरन दीन ॥
सचि वेद अर्ध हवि पंच मंडि। दहि दर्प्प दर्प मन मयन षंडि ॥ छं० ॥ ५०० ॥
विहसित्त नगर नन प्रसध साध। सिर द्रवत उदक विष प्रातमाघ ॥
चव वरष अभ्भ घर धार भूमि। गिरि गुरनि गिरनि गन लूम झूमि ॥ छं० ॥ ५०१ ॥
परि मुद्ध उद्ध उपलंत विन्द। गहराय वाय दस दिसनि दून्द ॥
धर हरत अंग जल धार धार। हर थटिय गंग जट मुकट पार ॥ छं० ॥ ५०२ ॥
धरि ध्यांन ग्यांन तिन अग्र ईस। षंड्यौ स जग्य मंड जगीस ॥
उर धरे देव तिन अंग गूढ। रचि पद्म पाय सासन सरूढ ॥ छं० ॥ ५०३ ॥
जुग पानि नाभि ताली बनाय। रमि दिष्ट सिष्ट गिरवान राय ॥
नरपटी साल सिल कमल भूर। इहि भंति भाव तप तपनि जूर ॥
छं० ॥ ५०४ ॥ रू० ॥ २४८ ॥

---

२४७ पाठान्तर-ब्रह्म। ताय। ध्यान। तिथ। रितु। चारीय। शीस। महय। शीत। मधि। वुडय। साव। ज्योति। वंक। वांम। दषिन ॥

२४८ पाठान्तर-तिथ। किंन। धार। चिन्ह। ध्यांन। तिय। पांन। कौंन। संचि। दर्प्प दर्प्प। मंन। विहसित। विहसीत। नगन। माध। अभ्य। अभ। धर। भूम। लूंघि। झूंमि। मूर्द्ध। विंद। महराव। वाव। दह। दिसा। द्वद। भार। सुमुव। ध्यान। ग्यान। सरूढ। पानि। शिष्ट। गिरवरन। राइ। मूल। इहिं ॥

इस रूपक के अंत की पांच तुकों को कवि पिछले रूपक २३९ में भी कह आया है। यह चंद की संस्कृत-काव्य-सम शैली का एक उदाहरण है और ऐसे उदाहरण इस महाकाव्य में अनेक आवेंगे। कवियों की ऐसी निज शैलियों को देखकर भाषा के वृद्ध और पंडितम्मन्य कोई कोई जैसे हिन्दी भाषा के वास्तविक कविराज को दोष देने लग जाते हैं परन्तु संस्कृत भाषा के

कवित्त ॥ देव चरित रमि धाइ । इक्क कर हीय मद्धि धरि ॥
सु रचि तिथ्य अडसट्ठि । मान पञ्चकर प्रकास करि ॥
दिग अंबर उर धारि । तारि तारी तप तारनि ॥
मन सुर भाग समान । लाइ राष्यै परि पारनि ॥
वर तर्प चंद अन दर्प करि । तामस द्रिग विकराल मन ॥
सम गवरि अंग अँग सिष उसिष । नृपति समंनन असुर बन ॥
छं० ॥ ५०५ ॥ रू० ॥ २४९ ॥

शाप से विमुक्त होने के विचार से बीसलदेवजी का गोकर्ण की यात्रा के लिये बीसल सरवर पर प्रस्थान करना ॥

दूहा ॥ तजि नरिंद अजमेर पुर । चित गोक्रन हर थान ॥
बीसल सरवर ऊपर । बीसल दिय प्रस्थान ॥
छं० ॥ ५०६ ॥ रू० ॥ २५० ॥

तपस्विनी के शाप से बीसलदेवजी की बुद्धि का चल विचल होना॥

दूहा ॥ काम कुमत्तौ उप्पनैं । दीय तपसनी स्राप ॥
बीसल दे बुधि चल विचल । प्रगटि पुव्व कौ पाप ॥
छं० ॥ ५०७ ॥ रू० ॥ २५१ ॥

महाकाव्यादि के पठित विद्वानों को चंद कवि पर तो नहीं किन्तु इन दोष देनेवालों की कुशाग्र बुद्धि पर बड़ा आश्चर्य्य होगा क्योंकि संस्कृत काव्यो तथा अन्य बड़े बड़े ग्रंथो में प्रायः ऐसे उदाहरण मिलते हैं । देखो माघ के चतुर्थ सर्ग के २१ वें श्लोक में सहरितालसमाननवांशुकः । दो बार प्रयोग हुआ है और रघुवंश के दूसरे सर्ग के श्लोक ३१ की अंत की पंक्ति चित्रार्पितारम्भइवावतस्थे ॥ कुमारसंभव के तीसरे सर्ग के ४२ वें श्लोक में भी महाकवि कालिदासजी ने ऐसाही प्रयोग किया है ॥ तथा रघुवंश के सातवें सर्ग के ६ श्लोक से लेकर ग्यारहवें ११ तक के सब श्लोक जैसे के तैसे कुमारसंभव के सातवें सर्ग के सत्तावनवे श्लोक से बासठवें तक महाकवि कालिदासजी ने प्रयोग किये हैं ॥

२४९ पाठान्तर–द्वार । इक । रहिय । रहीय । मधि । तिय । अडसठि । मांन । उधारि । समांन । रपे । पारन तर्प । तप्प । अंग - ग ॥

२५०–५१ पाठान्तर–तजिं । नरेंद । चिंत । गऊक्रन । थांन । उपरे । प्रस्यांन ॥ २५० ॥ कांम । कुमतो । ऊपनै । दिय । तपशिनी । सराप । को ॥ २५१ ॥

बीसलदेवजी को सांप का काटना और उससे उनका मरना ॥

दूहा ॥ वार रवी तिथि सत्तमी । चल्लि रथ सु आर मतंग ॥
निद्दि बेरां आयौ कहै । डेरा माहि पनंग ॥
छं० ॥ ५०८ ॥ रू० ॥ २५२ ॥

कवित्त ॥ देषि राज करि क्रोध । बान को दंड धरिय कर ॥
बेधि पनग फन जिक्कि । पर्‍यौ धर तरफत बेसिर ॥
कुट निद्दि बेर मतंग । षेल देखन कौं धायौ ॥
एक मोजरी मद्धि । पनग फन आनि लकायौ ॥
फिरि राय आय हैंवर चढ्यौ । पद्दरत मोजे पग डस्यौ ॥
भवितव्य वात आघात गति । इतनी कहि राजन चस्यौ ॥
छं० ॥ ५०९ ॥ छ० ॥ २५३ ॥

दूहा ॥ ओषद मंच अनंत जप । कितने करे उपाय ॥
ज्यौं ज्यौं तन लहरत चढत । त्यौं त्यौं दुचितौ राय ॥
छं० ॥ ५१० ॥ रू० ॥ २५४ ॥

कवित्त ॥ राज मरन उप्पनो । सब्ब जन सोच उपन्नौ ॥
पट रागिनि पावार । निकसि तब ही सत किन्नौ ॥
तिन मुष इम उच्चर्‍यौ । होइ जदवनि सपुत्तय ॥
मो असीस इह फुरो । तुम्म भोगवहु धरत्तिय ॥
जिन रथी मद्धि उठे असुर । षपै ज्वाल तिन मुष विषय ॥
नर भषय जहां लसकर* सहर । मिल्लै मनिष ते ते भषय ॥
छं० ॥ ५११ ॥ रू० ॥ २५५ ॥

२५२ पाठान्तर–तिथ । सपतमी । तिथि । कहै । डेरां । मांहि । माहि । पन्नग ॥

२५३ पाठान्तर–बांन । वंड । नाग । छिरु । वेसिर । कुट्यौ । सं० [illegible] और [illegible] में "मिलि राजन मौजरीय" । को । आयौ । मधि । पनग । आंनि । आय राय ॥

२५४ पाठान्तर–उपद । उपाइ । ज्यो ज्यों । लहरी त्यौं त्यौ । दुचितौ ॥

२५५ पाठान्तर– ऊपनौ । उपनौ । उपंनौ । निकसी । कीनो । इह । उचस्यौ । सपुतय । सुतह । फुरै । भोगवो । धरतय । इन । मधि उट्टै । भपै । सहर । मिले । मनुष । भषै ॥

* हि० लसकर (SK लश [illegible] clever, to do anything [illegible] or लस To play or sport, to [illegible] and कर [illegible]

बीसलदेवजी के मरण और असुर हो नर भक्षण करने की बात सुनकर सारंगदेवजी का अपनी रानी को रणथंभ भेजना और आप उन से युद्ध करने को तयार होना ॥

दूहा ॥ सुनिय बात ता तात तब। चौं पठई रि थं। ॥
मंच वद्दि तिन तेग बल। जुद्ध जुरन आरंभ ॥
छं० ॥ ५१२ ॥ रू० ॥ २५६ ॥

सारंगदेवजी की रानी गवरी का चिंता करना ॥

दूहा ॥ उन गति सो गति इक्क होइ। कै अवगत्ति चिन्तंत ॥
हास मिटै दुष को सचै। हृदय चित्त सो चिंत ॥
छं० ॥ ५१३ ॥ रू० ॥ २५७ ॥

सारंगदेवजी का सेना लेकर ढुंढा राक्षस से युद्ध करने को अजमेर पहुंचना ॥

दूहा ॥ एक सहस भरि सथ्य करि। सबल सकर दिय फेरि ॥
दै निसान चहुवान चढि। पहुँचिय गढ अजमेर ॥
छं० ॥ ५१४ ॥ रू० ॥ २५८ ॥

सारंगदेवजी का तीन दिन कोट में रहना, वहां असुर का न मिलना और अजमेर की भ्रष्ट और भयानक दशा देखकर चिंता करना ॥

कवित्त ॥ अति उद्यान सब थान। भये गढ धाम भयानक ॥
दिष्ट देखि सारंग। दैव चिंते तब बानिक ॥
ताकै कुल उपनीय। तपनि हम कै कुल षोयौ ॥
तात पुकारे नीर। भरे नैंनह घन रोयौ ॥
दिन तीन रहत हुअ कोट मधि। असुर नयन दिष्यौ नहिय ॥
तब सुचित भए सारंग दे। पुरी बसाऔं इह कहिय ॥
छं० ॥ ५१५ ॥ रू० ॥ २५९ ॥

५६-५८ पाठान्तर-बत्त। हो। सो। रन। वंदि। बर। जुध ॥ २५६ ॥ इन। इक। हुव। कें। अवगति। चित ॥ २५७ ॥ भर। सथ। निसांन। चहुआंन। चहुवांन। पहुचिय ॥ २५८ ॥
२५९ पाठान्तर-उद्यांन। थांन। धांम। बांनिक। वाकै। नेनन। रहैत। बसावौ। बसावौं। कहीय ॥

सारंगदेवजी और उनके पिता ढुंढा दानव का परस्पर युद्ध होकर सारंगदेवजी का मारा जाना ॥

कवित्त ॥ एका दसमी दिवस । प्रात दानव पुर आयौ ॥
सकल सेन लै सस्त्र । उठि लरिबे कौं धायौ ॥
वे बाहैं तरवारि । दूहै मुष पकरि सु कट्ट ॥
ज्यों बेली द्रुम सघन । देषि मरकट फल चुट्टै ॥
किय पिता पुत्त जुध सम असम । गिर सौ जनु सारँग गिर्यौ ॥
मन जानि असुर नर घुसि रहै । सब ढुंढा ढुंढत फिर्यौ ॥
छं० ॥ ५१६ ॥ रू० ॥ २६० ॥

२६० पाठान्तर-दशमी । सेंन । शस्त्र । उठि । को । वाहे । ज्यो । चुट्टैं । किय पिता जुध सम अरु असम । सो । सारंग ॥

पाठक महाशयो ! चंद की वर्णन की हुई बीसलदेवजी की यह दानव कथा आपको अद्भुत मालूम होगी और इस में कुछ संदेह भी नहीं है कि मनुष्य मरकर फिर दानव नहीं हो सकता और न ऐसे चरित्र कर सकता है कि जैसे चंद ने वर्णन किए हैं। देखो अद्भुत वही पदार्थ है कि जो स्वयम् तो अद्भुत हो और दूसरों को अद्भुत ही प्रतीत हो परंतु जो आप किंचित् सूक्ष्म विचार करें तो आप को ज्ञात होगा कि चंद ने जो कुछ कहा है वह सत्य है अर्थात् जो आप को अद्भुत मालूम होकर असत्य निश्चय होता है वह वास्तविक सत्य ही है। जब तक मैं जो कुछ अंत में आप को कहना चाहता हूं वह नहीं कहूंगा तब तक मेरा यहां तक का कहना भी आप को अद्भुत ही प्रतीत होगा और वह वास्तव में है भी ऐसा ही क्योंकि जब तक कोई ताला कि जिस का खुलना विचार करने से भी कठिन दीखता हो और वह ऐसी सरलता से खुल न जाय कि जैसे कि '**एक तिनके की ओट पहाड़**" तो वह निःसंदेह अद्भुत ही प्रतीत होगा पर, अब आप चंद की इस कठिनता के ताले को इस कुंजी से खोलकर अद्भुत वस्तु को देखिये, कि जो कुछ वृत्त चंद ने बीसलदेवजी की दानव कथा में लिखे हैं, वे सब उनके जीवन समय में बरते थे अर्थात् वे वाजीकरण की औषधियों के खाने, कुकर्म्मों के करने और साप के काटने से बहुत ही पागल हो गये थे और उन्होंने इस पागलपने में अपने इकलौते पुत्र सारंगदेवजी तक को अपने हाथ से मारडाला था और राज्य को नष्ट भृष्ट कर दिया था। इस वृत्तान्त को चंद ने अपनी काव्य शास्त्र सबन्धी विद्वत्ता दिखाने के लिये अद्भुत रस में लिखा है। अब आप इस प्रसंग को ध्यान देकर पढ़के समझ लेंगे कि महाकवि चंद ने ठीक अद्भुत रस दिखा दिया है। यह आप के ध्यान में होगा कि ग्रंथकर्त्ता ने पृष्ट २३ छंद ८३ रूपक ३९ में कि जो चंद की अनेक कठिनताओं के खोलने की कुंजियों के गुच्छा में से एक बड़ा भारी गुच्छा है इस में कवि ने इस महाकाव्य को '**नवं रसं**' से नव रसों में लिखा कहा है कि अब यह हमारा काम है कि इस हिन्दी भाषा के महाभारत में से नवों रसों के प्रसंग खोज कर निकालें। यहां तो हम इस अद्भुत

आना की मा का उसे कहना कि मनुष्यों को ढूंढ ढूंढ कर खाने से ढूंढा नाम पड़ा और उसने रम्य अजमेर को वेराम कर दिया॥

दूहा॥ ढूंढि ढूंढि षाये नरनि। तातैं ढूंढा नाम॥
देवपुरी अजमेर पुर। रम्य करी वेराम *॥
छं०॥ ५१७॥ रू०॥ २६१॥

आना का माता से कहना कि अभी जाकर मैं उसे मार आऊं॥

दूहा॥ मात सुनौ तपमनि वचन। अरु दिय असिस पवारि॥
अबहि जाय अजमेर गढ। अरि कौं आऊं मारि॥
छं०॥ ५१८॥ रू०॥ २६२॥

गवरी का आना को अमंतन मंत कहकर शिक्षा करना॥

दूहा॥ गवरि अमंतन मंत कहि। रष्षसि तोहि कुमार॥
अरि रष्षस भर नग्ग में। प्रजा राज संघार॥
छं०॥ ५१९॥ रू०॥ २६३॥

कवित्त॥ गवरि मात सिष्षवै। पुत्त आनल इहि सिष्षिय॥
मानव सों मानवह। भिरंत दानव न पिष्षिय॥
बहुत काल बहि गए। भरे जंगल धर पूरन॥
मृग मयंद षंडियहि। छंडि पंषिय पनि सूरन॥
जं जीव हनजि मातुल घरह। भंजन घट भंगन करहि॥
उर धरनि और रष्षस कहत। आनिन रष्षस उर भरहि॥
छं०॥ ५२०॥ रू०॥ २६४॥

ऐसी अन्य कथाओं को जो आगे आवेंगी अद्भुत रस में लिखी हुई न मानें तो फिर आप विचार करें कि अद्भुत रस क्या होता है और उसका लेख कैसा होता है। मेरी सम्मति में तो चंद ने जहां जहां जो जो रस लिखा है वह ऐसा ही उत्तम लिखा है कि यदि हम उसको न भी मानें तथापि हमको लाचार होकर उसे वही सज्ञा देनी पडती है जैसे कि यहां हम अद्भुत रस में लिखी हुई यह दानव कथा न भी मानें तथापि हम को यही कहना पड़ेगा कि यह अद्भुत बात है कि मनुष्य मरकर दानव नहीं होता न ऐसे चरित्र कर सकता है॥

* विराम से वेराम बना मालूम होता है॥

२६१–६३ पाठान्तर–ढूंढ। पाए। तातें। नांम। वे रांम॥ २६१॥ दीय। असीस। अबै। जाई। कूं। कों। आऊं॥ २६२॥ मत। करि। रषसि। अहिर रकस भर नगंम॥ २६३॥

२६४ पाठान्तर–सिषवै। पुत्र। सिषिय। सों। मानव। दांनव। नह। पिषिय। म्रग। पंषि। पंषि जीवनहु तजि मातुल घरह। रषस। गहंत। आंनन। रष्यस। करहि॥

दूहा ॥ उच्चरि मात समंत इह । जीवन मरन न सिद्द ॥
दुहुं बिधि धर बासन करौ । आराधन कि विरुद्द ॥
छं० ॥ ५२१ ॥ रू० ॥ २६५ ॥

पुत्त अमंत जु सिष्यौ । सिष्यौ उरह दहंत ॥
ढुंढौ नर ढुंढै भषन । तू सेवनह कहंत ॥
छं० ॥ ५२२ ॥ रू० ॥ २६६ ॥

आना का माता से कहना कि या तो मैं सिर समपूंगा या छत्र धारूंगा ॥

दूहा ॥ तब आनन्न ऐसी कहिय । मुहि सुभ्भिय यह बत्त ॥
कै सिर उनहि समप्पि दैां । कै सिर धरिहैां छत्त ॥*
छं० ॥ ५२३ ॥ रू० ॥ २६७ ॥

आना का माता से कहना कि सेवा ऐसी है कि जिस से सब कार्यसिद्धी होती है ॥

कवित्त ॥ सेव देव रंजियै । सेव रष्यस बसि सब्बह ॥
सेव सिंघ पत्तियै । सेव विष जरै न जल्लह ॥
सेव वैर भंजियै । सेव रच्च पति पावन ॥
सेव दहै नह दहन । सेव बहु द्रव्य उपावन ॥
जिहिं सेव देव रष्यस धरहि । जियन मान तन जाइ नन ॥
आमूढ ढुंढ धावत भषन । नहि सु देव नहि दानवन ॥
छं० ॥ ५२४ ॥ रू० ॥ २६८ ॥

२६५-६६ उचरि । सु मन्न । सिद्धि । दुहुं । वर । करो । करौ ॥ २६५ ॥ पुत । सिषियो । सिष्यौ । भवन ॥ २६६ ॥

* यह रूपक सं० १६४० और १८८० की पुस्तकों में नहीं है और जब तक वह किसी और प्राचीन लिखित पुस्तक में न मिले तब तक हम उसे प्रसन्नतापूर्वक क्षेपक संज्ञा नहीं प्रदान कर सकते ।

२६७ पाठान्तर-सुभ्भिय । वत । कैं । उनहि । हो ।

२६८ पाठान्तर-रंजीजै । न सेव सिंघ पत्तियै । जल्लह । भंजीयै । रच्चे । सेवह नह दहन । द्रिब्य । जिहि । नह । सो नह ॥

आना की माता का तो उसे शत्रु न सेवने को कहना किन्तु उसका अजमेर जाना ॥

दूहा ॥ मात बरज्जत रत्त हुअ। सत्तु न सेव न सेव ॥
आइ अनल अजमेर बन। असुर निरष्पन भेव ॥
छं० ॥ ५२५ ॥ रू० ॥ २६९ ॥

ढूंढा दानव का अजमेर बन में बहुतदिनों तक मन्तु होकर रहना ॥

सो दानव अजमेर बन। रह्यौ दीह घन अंत ॥
सुन्न दिसानन जीव को। थिर थावर जग मंत * ॥
छं० ॥ ५२६ ॥ रू० ॥ २७० ॥

अजमेर की नष्ट भ्रष्ट दशा और आना का खड्ग लेकर प्रेत के पास जाना ॥

चोटक ॥ तहँ सिंघ न म्रग्ग न पंषि बनं। दिसि सून भई डर जीव घनं ॥
नह मानह मंत अमंत कियं। पिय की धरनी रह तंत लियं ॥ छं० ॥ ५२७ ॥
तहँ ठाम भयानक सोच तयं। तहं ठाम कना कल सोधि वयं ॥
तिहँ ठाम भरं नर नारि ननं। तिहँ ठाम न पंथिय पंथ कनं ॥ छं० ॥ ५२८ ॥
तिहँ ठाम गजं बर बाजि ननं। तिहँ ठाम न सिङ्घय साथ कनं ॥
तिहँठाम न दारिद्र द्रव्य गनं। हिय मात न तात न मोह मनं ॥ छं० ॥ ५२९ ॥
लय षाग रमक्किय प्रेत दिसं। बर बीर सु मंडिय चित्त रसं ॥
अविलंघ करो सकरं विपनं। रिपु थान सपंत सु भै न मनं ॥ छं० ॥ ५३० ॥
नर दिष्ष अचंभ कियौ सु हियं। कहि आज बिधं भल भष्य दियं ॥
क्रुध प्यास रु निंद्य राज ननं। सु गयौ वर दानव ताप तनं ॥
छं० ॥ ५३१ ॥ रू० ॥ २७१ ॥

---

२६९ ६० पाठान्तर–वरजत। रत। आय। अनल। निरपन् ॥ २६९ ॥ सून। सुचा रथिर ॥ २७० ॥

* हि० मन=म० मन्तु=राजा से बना है। यहां यह मंत्र का अपभ्रंश नहीं है ॥

२७१ पाठान्तर–तहा। तहं। मृग। उर। वनं। मसु। पीयकी। तत। तत्ति। लीय। तहां। तिहा। ठाम। भयांनक। तहां। ठांम। तिहां। ठाम। तिहा। ठाम। नमं। तिहा हक्क सु पथि रु पथि जन। तिहा। ठाम। तिहा। ठाम। तिहां। ठाम। द्रव। लै। लग। रु। मुक्किय। अविलंग। थान। संपत। सपत्त। द्रिषि। कीयौ। कोई। कोई आज भलो इह भप त्रिय। क्षुध। न निद्रय। दानव ॥

आना का अपने मन में विचार कर कहना ॥

श्लोक ॥ मनसाधार्यं पुंसा स्याद् । विधिश्चिंतति नान्यथा ॥
ब्रह्माज्ञा लंघनेनापि। स्वयंपूरकमाधवः ॥ छं० ॥ ५३२ ॥ रू० ॥ २७२ ॥

कवित्त ॥ सो पूरक माधव्व । जगत जानन अधिकारिय ॥
थावर जंगम दैन । कठिन चिंता न विचारिय ॥
सरव भूत है जाम । मध्य हरि दैन भूगत्तिय ॥
किं कारन नर झुरे । देइ मन वंछित बत्तिय ॥
सा पुरस चित्त धरकै नही । धरक चित्त कायर करहि ॥
तिहि काज देषि दानव बलिय । बल बलिष्ट पुन उच्चरहि ।
छं० ॥ ५३३ ॥ रू० ॥ २७३ ॥

२७२ पाठान्तर-स्यात् । विधिचिर्तति । ब्रह्माज्ञा । माधव ॥

हमारे पाठकों को ज्ञात होगा कि इस ग्रंथ को कृत्रिम बना हुआ कहनेवालों ने ऐसा अत्यन्ताभाव का वचन भी कहा है कि इस महाकाव्य के बनानेवाले को अनुस्वार और विसर्ग तक का भी ज्ञान न था। परंतु हमने इसी ग्रंथ में और इसी आदि पर्व में इस रूपक के पहिले आए हुए संस्कृत भाषा के श्लोक आप की दृष्टि के आगे धरे हैं कि आप न्याय कर सकें और ऐसे श्लोक आगे इस ग्रंथ में बहुत आवेंगे क्योंकि हमने इस महाकाव्य को कई आवृत्ति करके पढ़ा है। वैसेही इस श्लोक को भी आप पढ़कर देखें कि पढ़ने में तो यह कैसा सरल है और अभिप्राय में कैसा विद्वानो के विचारने योग्य है। साधारण संस्कृत जाननेवाले से यह श्लोक लगना कठिन है अतएव हम उसका अन्वय नीचे संस्कृत भाषा में भी लिखते हैं-

अन्वयः ॥ पुंसा मनसा आधार्यं यत् स्यात् तत् स्वयंपूरक=माधवः, विधिः ब्रह्माज्ञालंघनेनापि चिन्तति अन्यथा न चिन्तति ॥

अर्थ । पुरुष करके मन से धार के जो काम हो सकता है उसको स्वयं पूरा करनेवाला परमेश्वर (विधि) दैव विधान वा कर्म ब्रह्मा की आज्ञा को उल्लंघन करके भी सोचता है अन्यथा अर्थात् उससे उलटा नहीं सोचता ॥

सारांश यह है कि उद्योग के अनुसार ही फल दैव भी देता है चाहे प्रारब्ध उससे उलटी भी हो। इससे केवल उद्योग की प्रधानता कही है ॥

हे पाठको। क्या आप के अपक्षपात से विभूषित हृदय में यह दोष कुछ भी लग सकता है कि इस महाकाव्य का ग्रंथकर्ता चाहे कोई भी हो ऐसा निर्बोध था कि जिसको अनुस्वार और विसर्ग तक का बोध न था ?

२७३ पाठान्तर-सें । माधव । जांनन । अधिकारीय । देन । दैन । विचारीय । सर्व । जाम । दन । देन । भुगतिय । दैव । नहीं । तिहि । दानव । उचरहि ।

आना का दानव को कंदरा में देखना और उसके खड्ग मारने पर दानव का गाजना ॥

पद्धरी ॥ दिष्यौ सु वीर कंदला गेह । सैं पच हथ्थ ता हथ्य देह ॥
असि असी हथ्थ झारहि झनंक। मन सहस पाइ तो डर धनंक॥ छं०॥ ५३४॥
अग्रोष्ट उष्ठ ऊठिय भनंक । उठतै सु रोमनि सनंक ॥
बुल्यौ सु बैन निय सत्त मान। देषंत चष्य बालक्क विनान॥ छं०॥ ५३५॥
अति सुषम वचन मधु मधुर कंत । दिष्यौ सु अंस राजन सुभंत ॥
जंभाइ वीर दसनं लहक्क। उथ्यौ सु रोम रोमह पहक्क॥ छं०॥ ५३६॥
उर चंपि षग्ग सिर नाइ राज । गहराय इंन्द्र दानव सु गाज ॥
छं० ॥ ५३७ ॥ रू० ॥ २७४ ॥

इस पर दानव का आना से उसके मा बाप आदि के नाम पूछना ॥

कवित्त ॥ भेद वचन तन षेद । सुतन पंडुर चढि आइय ॥
उष्ट धरद्धर कंपि । सुतन प्राक्रम जंभाइय ॥
चरन सु थिर मन लीन । जीव धर धर धर कांनिय ॥
कौन भाव कवि चंद । बलिय सात्वक रस भांनिय ॥
पुच्छन सु बाल बुल्यौ बलिय । करि सु चिंत अतिंत चित ॥
को मात तात कहि नाम को । को साँइँ साधक सु मति ॥
छं० ॥ ५३८ ॥ रू० ॥ २९५ ॥ *

ढुंढ दानव का आना के सिर पर हाथ धर गल्ह पूछना ॥

दूहा ॥ खरग हथेली वाम पर । ढुंढै मेलि अनल्ह ॥
करुना करि सिर हथ्थ धरि । पूछि विवर सब गल्ह ॥
छं० ॥ ५३९ ॥ रू० ॥ २७६ ॥ *

२७४ पाठान्तर—कंदरा । येह । हथ । हथ । हथ । पाय । टोडर । उठिय । रोमह । बैन । सत । मांनि । चषु । विनांन । सूषम । वाचन । करंति । राज राजन । जंभाय । हसन । लहक । नांइ । गहरा इंन्द्र द्रा दानव कि माज ॥

२७५ पाठान्तर—दुर दुर । कंप । प्राकंप । प्राक्रंम । धरा धर । कांनीय । कोन । भाइ । भांनीय । पुछन । बुल्ल्यौ । चित । अत्यत । चिंत । कुमति ॥

* रस के आगे के अर्थात् रूपक २९६ से २९८ तक सं० १६४७ और १७७० की लिखित

गाथा ॥ असुर हथेलो चंदं । बिसतारं कन्ही यत्त थवा ईसं ॥
मुकता फल परिमानं । ता मध्ये सोहीयं आना ॥
छं ॥ ५४० ॥ रू० ॥ २७७ ॥ *

आना का मन में चिंता करना कि जो ढूंढा मुझे निगलेगा तो मैं उसका पेट चीरकर निकलूंगा ॥

दूहा ॥ आनें चिंतिय राम । जो मुचि ढूंढा निगलिहै ॥
इंद्र ब्रतासुर जेम । निकसैां उदर बिदारि षग ॥
छं० ॥ ५४१ ॥ रू० ॥ २७८ ॥ *

आना का उत्तर देना कि जिससे बीसलदेवजी का मन मैन होगया ॥

दूहा ॥ गवरि मात उर उद्धस्यौ । पित बीसल मन मैंन ॥
दूत आवन मन तरसयो । सूत्र तन देषन नैंन ॥
छं० ॥ ५४२ ॥ रू० ॥ २७९ ॥

साटक ॥ किं दारिद्र सु दुष्ट कुष्ट तनयं । किं भूमि सत्रू हरं ॥
किं वनिता च बियोग दैव विपदा । निर्वासितां किं नरं ॥
किं जन मानस रुष्ट जुष्ट जुगता । किं आपितं सद्गुरं ॥
किं माता म्रित रंग भंग सरसां । आलिंगता सुंदरी ॥
छं० ॥ ५४३ ॥ रू० ॥ २८० ॥

पुस्तकों में नहीं हैं किन्तु इधर की लिखी पुस्तकों में मिलते हैं। जब तक इन से भी पुरानी पुस्तको में ये रूपक न मिलें तब तक उनको हम क्षेपक कहना योग्य नहीं समझते है ॥

२७६ पाठान्तरा–करग । कर । गह । येली । मेह्रि । अनल्ल । हय ॥

२७८ पाठान्तर–ढुंढा । निकसो । विहारी ॥

† यह आज कल सोरठा छंद कहलाता है किन्तु प्राचीन समय में हिन्दी भाषा के कवि इसको दोहा भी कहते थे क्योंकि दोहे के जितने भेद भाषा के छंद ग्रंथों में लिखे हैं उन में सोरठा भी है अतएव चंद का यह दूहा संज्ञा देना कुछ आश्चर्यदायक नहीं है ॥

२७९ पाठान्तर–वल । मंन । आवनम । तुम । नेन ॥

२८० पाठान्तर–सत्रु । दैवपिवपदा । निर्वासित । मानस । जुगता । आगता । समगुर सरसा । आलिंगिता ॥

यह भी ध्यान में रहने योग्य बात है कि पुरानी हिन्दी भाषा की लिखित पुस्तकों में नृप बेर नृप जैंप शब्द म्रित और त्रिय लिखे देखने में आते हैं ।

साटक ॥ नो दारिद्र न कुष्ट दुष्टन ननं । सत्रू धरा नो त्तरं ॥
नो वनिता च वियोग दैव विपदा । निर्व्वासिते नो नरं ॥
नो सन्मानस रुष्ट जुष्ट जगता । नो आपिता सत् गुरं ॥
मातुर्नाम्रित रंग भंग सरसा । ना लिंगिता सुंदरी ॥
छं० ॥ ५४४ ॥ रू० ॥ २८१ ॥

दूहा ॥ ना दारिद्र न कुष्ट तन । ना मुगधा रस भेव ॥
नानुरत्त संसार सुष । तो पग रत्तो सेव ॥ छं० ॥ ५४५ ॥ रू० ॥ २८२ ॥

साटक ॥ नैवां दुष्य न सुष्य साहस रने । नैवांन कालं क्ततं ॥
नैवां मात पिता न चैव धनयं । नैवांन कित्ती रतं ॥
नैवांनं हित्त मित्त साजन रसं । नैवांन किं रुष्टयं ॥
त्वं देवं तुअ सेव देव मरनं । तोयं जयं राजयं ॥
छं० ॥ ५४६ ॥ रू० ॥ २८३ ॥

दूहा ॥ तब लगि कुष्ट दरिद्र तन । तब लगि लघु मुचि गात ॥
जब लगि दैां आयो नहीं । तो पाइन सेवात ॥
छं० ॥ ५४७ ॥ रू० ॥ २८४ ॥

दानव का आना से पूछना कि तू क्यों राज अरत्त है ॥

दूहा ॥ आलिंगन दै हथ्थ धरि । अरु पुच्छिय दूह बत्त ॥
जा जीवन रत्तौ जगत । तू क्यौं राज अरत्त ॥
छं० ॥ ५४८ ॥ रू० ॥ २८५ ॥

आना का बीसलदेवजी दानव को उत्तर दे कहना ॥

दूहा ॥ जिय न रत्त नह एन दुष । भूमि न घर मुझ देव ॥
तिन उचाट निउँ कै मरौं । तुम पय रत्तौ सेव ॥
छं० ॥ ५४९ ॥ रू० ॥ २८६ ॥

२८१ पाठान्तर-नां । धरा न । ना । विनता । नां । ना । ता । सन्मांनस । आपिता । गुरुं । मातुर्नाम्रित ॥

२८२ पाठान्तर-न । न मुगद्ध । नानुरत । नरतु । तूअ पग रता सेव ॥

२८३ पाठान्तर-दुष । सुष । रस । पितं । मित । सजन । तुं । तुय ॥

२८४-८५ पाठान्तर-नब । हूं । नहीं । तैा ॥ २८४ ॥ दे । हथ । पुछिय । रतैा । सो तू केम अरत्ति ॥ २८५ ॥

२८६ पाठान्तर-रत । तहि । भूंमिन । तिहिं । जीऊं । जिउं । कि । मरो । पं । रत्ता ॥

दूहा ॥ राजा ज ढिन बुलाइ कै । मुह सुभझै इह मत्त ॥
के सिर तुम हि समप्पि हौं । कै सिर धरि हौं छत्त ॥
छं० ॥ ५५० ॥ रू० ॥ २८७ ॥

इह धरनी मुझ पित प्रपित । आदि अनादि सु देव ॥
सो मंगन तुम पाय हौं । आयौ आतुर सेव ॥
छं० ॥ ५५१ ॥ रू० ॥ २८८ ॥

ढूंढा दानव का प्रसन्न होकर आना को अजमेर का राज देना ॥

त्रोटक ॥ सु प्रसन्नह देवित ईत तनं । नर रूप धरन्न कियौ सु मनं ॥
तुअ पुच्छ पौच बधू उरनं । जन मानस राज करौ धरनं ॥ छं० ॥ ५५२ ॥
असि हथ्थ लियै असमान गयौ । पग टोडर कंदन्न कौ जु ठयौ ।
तब पुज्जन कौं रविवार कह्यौ । चहुआन सु आनल राज दयौ ॥
छं० ॥ ५५३ ॥ रू० ॥ २८९ ॥

ढूंढा का आना को राज देकर गंगा की ओर उड़कर जाना ॥

दूहा ॥ दयौ राज आनल्ल गढ । उडि ढुंढा षह मग्ग ॥
दिसि गंगा तब गमन किय । उग्र चिषा अति लग्ग ॥
छं० ॥ ५५४ ॥ रू० ॥ २९० ॥

ढूंढा का नेमऋषि के उपदेश से गंगा की ओर जाते हुए दिल्ली पहुंचना ॥

पद्धरी ॥ नव द्वार रुक्कि नप पवन जोर । आयौ सु नेम रिष तथ्य ठौर ॥
दिषि रिष्य लग्गि निसचर सु पाय । कहि रिष्य कवन तो काय ॥ छं० ॥ ५५५ ॥
बीसलह राज कथि पुब्ब कथ्थ । जरौं ताप उधरौं केम नथ्य ॥
तुम पिचि कौन इह ठांउ धारि । कासी सु जाइ जै निथ्य धार ॥ छं० ५५६ ॥
तैं पाप कीन आनन्त मर्म । तिहि टौर रुब्ब कुट्टै सु कर्म ॥
सुनि श्रवन उझ्झौ राषिस अकास । आयौ सु पंथ कमि दिल्ली वास ॥ छं० ॥ ५५७ ॥

२८७-८८ पाटान्तर-जा । दिंन । मुहि । सूझै । मषि । के । हो । के । हू । हो । छत्र ॥ २८० ॥ प्रमित । हो ॥ २८८ ॥

२८९ पाटान्तर-प्रसन्नह । धरंन । कीयौ । मानस । करै । हथ । असमान । कु । दुत्तन । सो । चहुआन । चहुवान । आनल ॥

२९० पाटान्तर-ढींढा । आनलहु । कीय ॥

सुर थान निगम बोधह सुरंग। जल जमन आइ राषिस स्रमंग॥
कालिन्द्र दह सु अति गहर वारि। पावन्न परम सीतल्ल सु चारि॥
छं० ॥ ५५८ ॥ रू० ॥ २९१ ॥

ढूंढा का हारिफ ऋषि से मिलना, अपनी पूर्व कथा कहना और तीन सौ अस्सी वर्ष महातप करके ऋषि से उपदेश ग्रहण करना॥

कवित्त॥ सीतल्ल वारि सु चंग। तहां गय चल्लि निसाचर॥
लगि पिपास स्रम अंग। वारि पिन्नौ अँदोलि वर॥
भौ सीतल्ल सब अंग। करै अति वारि विहारह॥
रिष हारिफ गुह बगै। सोर सुनि आय निहारह॥
दिषि प्रबल रिष्षि पूछ्यौ प्रसन। कवन रूप कीलै सु जल॥
निसि मद्धि अद्ध राषिस वचहि। पाइ परस पुब्बह सकल॥
छं० ॥ ५५९ ॥ रू० ॥ २९२ ॥

दूहा॥ ढिंग जुग्गिनिपुर सरित तट। अचवन उदक सु आय॥
तहं इक तापस तप तपत। बौली ब्रह्म लगाय॥
छं० ॥ ५६० ॥ रू० ॥ २९३ ॥

कवित्त॥ ताली षुल्लिय ब्रह्म। दिष्षि इक असुर अदभुत॥
दिघ्घ देह चष सीस। मुष्प करुना जस जप्पत॥
तिन रिषि पूछिय ताहि। कवन कारन इत अंगम॥
कवन थान तुम नाम। कवन दिसि करिव सु जंगम॥

२९१ पाठान्तर–नैंम। तथ। ठार। रिष। लागि। पाइ। रिषि। वीसलह कथ कथि राज कथ। जोरां। उद्वुरै। नथ। तुव। कोन। दहि। ठाउ। जाउं। त्यो। तिय। आनत। आनत। अधम्म। तिहि। ठोरि। सब। ति। क्रम्म। उझो। दिलि। सुर सुर। थान। आय। राषिश्रमंग कालिंद। पावन। परंम। सू सारि॥

२९२ पाठान्तर–तिहां। चलि। सु निसाचर। श्रम। पीनो। अदोलि। भय। सब्ब। देह। वरें। रिषि। पुछ्यौ। कीलो। मद्ध। चवहि। पाय परसि गध अप्प सकल॥

२९३ पाठान्तर–तहां। आइ। लगाई। लगाइ॥

२९४ पाठान्तर–षोलिय। ब्रह्म। दिषि। अदभुत। दिग्घ। चषु। रस जपत। पुछिय। थान। नाम। करीय। नांम। नृपति। आप। लभीय दद्दत। तजन। क्रत॥

सो नाम ढुंढ बीसल न्रपति । साप देह लभ्भिय दयत ॥
कुह्हन सु तेह गंगा दरस । मजन देह जन मंत ह्रत ॥
छं० ॥ ५६१ ॥ रू० ॥ २९४ ॥

दूहा ॥ मजन देह जन मंत ह्रत । सजन अजैपुर राज ॥
नियतन असि वर षंडि हौं ॥ मधि गंगा रिषराज ॥
छं० ॥ ५६२ ॥ रू० ॥ २९५ ॥

मन सु पाप तापह तपन । किम उधार मो होइ ॥
तुम रिषिराज वसिष्ट वर । द्यौ उपदेसह मोइ ॥
छं० ॥ ५६३ ॥ रू० ॥ २९६ ॥

तब मुनि वर हसि यौं कहिय । बिन तप लहिय न राज ॥
अन धन सुत दारा मुदित । लहै सबै सुष साज ॥
छं० ॥ ५६४ ॥ रू० ॥ २९७ ॥

तब सु तहां उपदेस लिय । लगि धारन हरि ध्यान ॥
तपत तप्प नित रिषि गुहा । अंग उप्पज्यौ ग्यान ॥
छं० ॥ ५६५ ॥ रू० ॥ २९८ ॥

रिष सु उट्ठि तीरथ गयौ । दरी सु दानव छंडि ॥
जौ लौं आऊं तिथ्थ करि । तौ लौं तू तप मंडि ॥
छं० ॥ ५६६ ॥ रू० ॥ २९९ ॥

गाथा ॥ तपत निसाचर तप्पं । बीते बरष तीन सै असीयं ॥
भय बाधा बिण अंगं । लग्गौ राम धारना ध्यानं ॥
छं० ॥ ५६७ ॥ रू० ॥ ३०० ॥

दूहा ॥ ढुंढा रिषि उपदेस लिय । तिहि ढिग दरिय उधार ॥
बरष तीन सत असिअ लगि । महा प्रबल तप घोर ॥
छं० ॥ ५६८ ॥ रू० ॥ ३०१ ॥

२९५-९९ पाठान्तर-ह्रत । हो । हो ॥ २९५ ॥ सोह । सोइ ॥ २९६ । यो । तहां । मद्धे ॥ २९७ ॥ उहां ध्यांन । तप तप्पि । जग अंग उपज्यो ग्यांन । अंग उपज्यौ ग्यांन । २९८ ॥ छंडि । दानव । लों । कऊं । तिथ तू ॥ २९९ ॥

३००.पाठान्तर-तनिचर । तापं । से । मो । [illegible] । [illegible] । ध्यान ।

३०१ पाठान्तर-तिहिं । [illegible] । बरष तीन से [illegible] । [illegible]

अनंगपाल राजा का दिल्ली बसाना ॥

दूहा ॥ पंडव बंस अनंग न्रप। पति हथिनापुर ठाम ॥
एक समै जमुना तटह। वसिय राज तहं गाम ॥
छं० ॥ ५६९ ॥ रू० ॥ ३०२ ॥

अनँग पाल तूअर तहां। दिल्ली बसाई आनि ॥
राज प्रजा नर नारि सब। बसे सकल मन मानि ॥
छं० ॥ ५७० ॥ रू० ॥ ३०३ ॥

अनंगपाल की सुता का निगमबोध कालिंद्री तट पर गौरी पूजने जाना ॥

कवित्त ॥ अनंग पाल तूअर। नरिंद धरमाधि राइ गुर ॥
सुता तास अति सुभग। बरष अठ्ठह रूरूप वर ॥
सषी सु आनि समानि। सील गुन वर अठ्ठह तर ॥
सावन भावन मास। गवरि नित करै पुज्ज उर ॥
निगम-बोध कालिंदि तट। गई सकल पूजन गवरि ॥
तिहि काल मेघ ब्रष्पह प्रबल। * भई लगिग भींजन कुअरि ॥
छं० ॥ ५७१ ॥ रू० ॥ ३०४ ॥

अनंगपाल की सुता का ढूंढा को पूजना और उसका कारण पूछना ॥

कवित्त ॥ अनगपाल न्रप सुता। संग पुत्री ति पंच सित ॥
प्रोहित पुत्री एक। पुत्रि सा चंडि सेव चित ॥
सब मिलि जमना तीर। गई अस्नान सवारिय ॥
दिषि देवल म्रत पिंड। तेह ढूंढा तप धारिय ॥

३०२-३ पाठान्तर-ठाम। यमुना। तहां। गाम। तोअर। दिल्लि। आनि। प्रज। बसे सकल तहां आंनि। मांनि ॥

* भई लगि भींजन=यह प्राचीन हिन्दी का वागरीति अर्थात् मुहावरा है ॥

३०४ पाठान्तर-तूबर। राय। अठह। सषी आनि समांग। आंनि। समांनि। सील। अठोत्तर। सावन। स पुज्ज यर। निगमोध। कालिंदि। गइ। वरसि। लगि। भीजन। कुवरि ॥

३०५ पाठान्तर-अनगपाल पुत्री सु एक। सथ साथियी पंसच सत। पंच सत। ता मइ। मंहि। जमुना। वपु स्नान। मृत। तिहि। ढुंढा। धारीय। पूजा। करीय। इय। देत। पूज्यो। तिनहि ॥

सब मिलि सु नारि पुज्जा करिय । बरष पंच दुअ मास दिन ॥
दिन अवधि दइन पूछिय तिनह । को तुम कारन काम किन ॥
छं० ॥ ५७२ ॥ रू० ॥ ३०५ ॥

अनंगपाल की सुता का ढूंढा को वर चाहने को पूजने का कहना ॥

गाथा ॥ इह सुनि अनंग नरिंदं । पुची सित पंच अवर दुज राजं ॥
बर चाहत तुम पासं । ए बर बीर वास इक ठामं ॥
छं० ॥ ५७३ ॥ रू० ॥ ३०६ ॥

ढूंढा का राज-त्रियों की सेवा से संतुष्ट होना ॥

दूहा ॥ ढिल्ली ढिग गहरिय गुफा । ढूंढा तहां बयट्ठ ॥
अट्ठोत्तर सौ राज त्रिय । सेवा करत सु तुट्ठ ॥ छं० ॥ ५७४ ॥ रू० ॥ ३०७ ॥

ढूंढा का वर देकर काशी को उड़ जाना ॥

पद्धरी ॥ दिय बाच बाल दानव सु राज । सउज्यौ सु अप्प बर बचन साज ॥
उडि चल्यौ अप्प कासी समग्ग । आयौ सु गंग तट कज्ज जग्ग ॥ ५७५ ॥
सत अट्ठ षंड करि अंग अव्वि । होमे सु अप्प बर मद्धि चव्वि ॥
मंग्यौ सु ईस पहि वर पसाय । सत अड्ड पुच अवतरन काय ॥ ५७६ ॥
तन रह्यौ जोति मय देव थान । मिलि नारि अच्छरिय करत गान ॥
छं० ॥ ५७७ ॥ रू० ॥ ३०८ ॥

ढूंढा का फिर जन्म लेना और उसका वृत्तान्त चंद का वर्णन करना ॥

दूहा ॥ इम आतम उद्धार करि । जनम लियो भुअ आइ ॥
सो हतंत कवि चंद कहि । बरन्यौ कवित बनाइ ॥ छं० ५७८ ॥ रू० ॥ ३०९ ॥

ढूंढा का वर देना और काशी में यज्ञकर तन त्यागना ॥

दूहा ॥ तब ढूंढा वर दान दिय । सुनि सत अट्ठ प्रसन्न ॥
कासी जाय रु जग्य किय । सित्त षंड किय तन्न ॥ छं० ॥ ५७९ ॥ रू० ॥ ३१० ॥

---

३०६ पाठान्तर-अगग । पुत्ती सय । काम वास ॥

३०७ पाठान्तर-ढिल्ली । गुफा । ढुंढा । बयठ । अठोत्तर । सो । तुठ ।

३०८ पाठान्तर-दीय । दानवह । स । अप । पवन । चल्यो मग । समग । कज्ज जग । तट चवि । स । मधि । हवि । सच्च । स । पसाई । पसाइ । अट्ठ । अट । अवतार । काइ । ज्योति । थान । अछरीय । थान ॥

३०९-१० पाठान्तर-उधार लीयो । भुव । आइ । हतान्त । बरनै । बरन्यो सकल बनाद ॥ ३०९ । ढुंढै । बरदान । अट्ठ । कीय । सत । कीय । ३१० ।

ढूंढा के दानव शरीर का मान और स्वरूप वर्णन ॥

कवित्त ॥ अंगह मात्र प्रमान। पंच सैं हथ्थ उने कह ॥
हह उंचौ उममान। विनय लक्खिनह विवेकह ॥
हथ्थ षडग विकराल। मुष्ष ज्वालंघन सद्दह ॥
आनल दिन्नो राज। गयौ रापिस तन मद्दह ॥
जोगिनिय गुफा बोधह निगम। तप आदर किन्नो सु तम ॥
साधंत पवन तप उग्र करि। भ्रम रष्यौ उद्दार मन ॥
छं० ॥ ५८० ॥ रू० ॥ ३११ ॥

ढूंढा का दिल्ली में पाषाणरूप हो जाना और स्त्रियों का उसे पूजना ॥

कवित्त ॥ असी बरस सत मीन। गुफा किन्नौ तप भारिय ॥
वैस वंस विधिस्त्र भ्रम। भरै जमुना जल नारिय ॥
सारंग बज्ज्यौ वाउ। घटा बंधे जल वुट्टौ ॥
दौरी सब गुह मझ्झ। रूप पाषान सु दिट्ठौ ॥
मिलि नारि सबन अचरिज्ज करि। जल धोए उज्जल कस्यौ ॥
साषंड धूप दीपह चरिच। सित मन सिद्धौ आचस्यौ ॥
छं० ॥ ५८१ ॥ रू० ॥ ३०२ ॥

ढूंढा का अनंगपाल की सुता को वीर पुत्र होने का वर देना ॥

कवित्त ॥ दिय बीसल बरदान। कुष्ष उपजै माद्दा भर ॥
बीरा रस उत्तान। जुद्ध मंडै न कोइ नर ॥
बीर जोनि अवतार। भद्द जिह्वा तन भारिय ॥
नयन जोनि संजोगि। पस्सि कुल पिता संघारिय ॥

३११ पाठान्तर–कहि अंग। मांन। प्रमांन। हथ। उन। लछनह। हथ। मुष। आनल। दीनो। जो गिनीय। कीनो। पवच। रष्यौ ॥

३१२ पाठान्तर–अशी। बरष। शत। कीनो। भारीय। पत्री अधम। विजीय अधंम। विचिय अधम। भरे। जमना। भारीय। नारीय। सारंग। बज्यौ। वज्या। वाय। वधे। वुठो। दोरी। मझ। सुद्विठो। दीठो। अरिज। धोय। उजल। तन मंनि सुधि आवय्यो। तन मन सुधि आवय्यो ॥

३१३ पाठान्तर–दीय। बीशल। वरदांनि। कुष। कुष्य। उपजे। मद्दा। रस। उतांन।

दिष्षे सु नयन पुष्ट करि प्रसिध । कियौ पाप द्रून ध्रुव करि ॥
उप्पजै नारि अति रूप तिन । तेन लिम्म जायै सु धर ॥
छं ॥ ५८२ ॥ रू० ॥ ३१३ ॥

ढूंढा का वर देकर काशी जाना, वहां दानव योनि से मुक्त हो अवतार लेना-सोमेसर की परिग्रह के प्रबंध के लिये क्षत्रियों का उत्पन्न होना-जिन में से बीस अजमेर में और अन्य अन्यत्र हुए-सोमेस के वीर पुत्र पृथ्वीराज हुए ॥

कवित्त ॥ बर दिनौ ढूंढा नरिन्द । जाय कासी तट रिद्धौ ॥
अस्त लियौ अवतार । भट्ट रसना रस पिद्धौ ॥
सोमेसर परिगद्द । प्रबंध खिन उपने षित्रि नर ॥
हुए बीस अजमेर । विए उप्पने अपर धर ॥
सोमेस बीर सुत पिथ्थ हुअ । ठौर ठौर ऊपजि वल्लिय ॥
विधि विधि विनान अवलोक गति । अवर सूर आए मिलिय ॥
छं ॥ ५८३ ॥ रू० ॥ ३१४ ॥

पृथ्वीराज जी के परिग्रह के सामंतों के नाम और जन्म स्थानादि का वर्णन ॥

कवित्त ॥ हुअ निभ्भर कनवज्ज । जैत सलष अब्बूगढ ॥
मंडोवर परिहार । करषि कंगुर चाहुलि दिढ ॥
बलि भद्र सु नागौर । चंद उप्पजि लाहौरह ॥
दिल्लिय अत्ता ताइ । बिया धर सामत सोरह ॥

व्योति । जीट्ठा । भारीय । पति । संघारिय । संधारीय । दिवे । प्रसिद्ध । कीयौ । द्रुव । उप्पजी मारी । रूपजौ । तेन लिन जाइ सुधिर । तेन लिंत जाखे सुधर ॥ *

३१४ पाठान्तर-दीनौ । दीधौ । सिधो । सिधौ । असि । लीयो । रसना । रस । सोमेसर । परिघह । सित । शत्त । उप्पने । बिन । हूए । भये । बीर । वीरा । ऊपने । अवर । दिय वल्लिय । बिनान । आय मिलीय ॥

---

* पाठकों को इस छपक से फिर सावधान होकर पढ़ना चाहिये क्योंकि कवि इस छंद में पृथ्वीराज के जन्मादि की कथा की भूमिका बांधकर मूल वर्णन करता है ॥

राम दे राव जालौर धर। गोइंद गढ्ढ धामनि अभै ॥
दाहिम्म बयाने उप्पनौ। प्रिथिराज परिघह बसै ॥
छं० ॥ ५८४ ॥ रू० ॥ ३१५ ॥

३१५ पाठान्तर निभ्भर। चिभ्भर। कनवज्ज। जेर सल्लप अनुगढ। हाहुल्लि। उप्पजि। अता ताय। समंता रामदे गोइंद। गढ। दाहिम। बयाने। प्रिथीराज। परिगह ॥

इस रूपक से कवि ने पृथ्वीराजजी के सामंतो के नाम और उनकी उत्पत्ति के स्थानादि का वर्णन करना प्रारंभ किया है। यह विषय पुरातत्ववेत्ताओं के ऐतिहासिक शोधो में बहुत उपयोगी होने जैसा है—किन्तु इस ग्रंथ के अक्रित्रिम होने में भी एक प्रमाण रूप हो सकता है—और यह भी भले प्रकार ध्यान में रखने जैसी बात है कि यहां चंद अपनी उत्पत्ति लाहौर की अर्थात् "चंद उप्पजि लाहौरह" कहता है। इस महाकाव्य में बहुत से पंजाबी भाषा के शब्द मिलने से पुरातत्ववेत्ता विद्वान चंद की जन्मभूमि के विषय में पंजाब देश का अनुमान किया करते थे और पंजाबी अति वृद्ध यहस्य भी अपने देश के महाकविचंद का नाम वंशपरंपरा से आज तक सुनते चले आते हैं परंतु अब हमको इस बात का निश्चय हो गया और पंजाब देश हिंदी भाषा के काव्यो की अनुक्रमणिका में पहिली सख्या पर जा स्थापित हुआ क्योंकि अब तक इस महाकाव्य से प्राचीन कोई अन्य काव्य नहीं उपलब्ध हुआ है। कोई कोई विद्वान जो यह कहते हैं कि चंदकवि का होना केवल इसी महाकाव्य से विदित होता है। उनको अजमेर नगर के कैसरगंज में **चांद बावडी** अपने नेत्रों से देखनी चाहिये और चंद के पुरुषाओं का बनाया हुआ **भाटाबाव** भी उसी नगर में तारागढ़ को जाते हुए दृष्टिगोचर करना उचित है कि जो अजमेर के भाटो के कब्जे से निकलकर बहुत समय तक टोंक के नव्वाब साहब के अधिकार में रहे हैं। फिर उन्होने एक मोची को **चांद बावडी** दे दी थी कि अब म्युनीसीपेल कमेटी ने उस की चारो ओर की दीवार बना दी है और इस बावडी के चारों ओर एक बगीचा भी था जिसका हांसल कुछ थोड़े दिनों तक म्यूनीसीपैलीटी में जमा होता रहा है और अब वह बगीचा कटकर वहा बस्ती बसा दी गई है। चांद बावडी में नीचे उतरते दहिने हाथ की दीवार में प्रशस्ति का स्थान बना है कि जिसके पाषाण लेख को एक ८३ वर्ष का मुसलमान फकीर कर्नैल टाड साहब का लेजाना कहता है। इस के महाबरडान द्वार के दोनों ओर एक एक पत्थर के फूल खुदे हुए है कि जिसको अंग्रेज़ी में lotus अर्थात् कमल की जाति का फूल कहते है। यह फूल शिल्पशास्त्र के सिद्धान्तो में विज्ञ विद्वानों को बावडी की अति प्राचीनता सूचन करनेवाला दृष्टि आवेगा। चंद के विषय में कुछ और भी प्रमाण हमारी रचित **पृथ्वीराज रासे की प्रथम संरक्षा** में पाठक देख लें। इस महाकाव्य में प्रायः फारसी शब्द भी प्रयोग हुए है उन के विषय मे हमने अन्यत्र कई एक प्रमाण प्रकाशित किये हैं परंतु यह भी विशेष करके हमारे पाठकों के ध्यान में रहने जैसी बात है कि चद जिस समय लाहौर मे उत्पन्न हुआ था उसके १०० सौ वर्ष पहिले से वहा **महमूदी सन्तान** का राज्य था। फिर क्या कोई यह अनुमान कर सकता है कि उस समय की हिन्दी मे एक भी फरासी भाषा का शब्द नहीं मिल सकता था ? इन रूपको मे जिन जिन सामंतो के नाम आये हैं उनका पूरा पूरा वर्णन हम ग्रंथ के पूरे छप जाने पर लिखेंगे क्योंकि अभी हमारा काम केवल मूल पाठ शोधकर प्रकाशित करने का है॥

पद्धरी ॥ उतपत्ति वास सामंत चंद। पाधरी छंद ब्रनै सु बंद ॥
दस तीन हुए दिल्ली प्रमान। हरिसिंघ बसै गढ्ढह बयान ॥ छं० ५८५ ॥
जैसलह्मेर अचलेस भान। पज्जून बसै चीतौर थान ॥
कलि कुंड हुओ जंघार भीम। चहुआन आन रष्षैत सीम ॥ ५८६ ॥
बड भ्रात कोरि लग्गो सु पाइ। चहुवान सु वर सामंत राइ ॥
समियांन गढ्ढ नरसिंघ राइ। पित मात छोरि आए सु भाइ ॥ छं० ॥५८७॥
देवरा धीर रिनधीर सथ्थ। पछ्छिवान देस प्रिथिराज नथ्थ ॥
जंघार भीम गढ जून वास। किन्नो सु जुद्ध भीमंग आस ॥ छं ॥ ५८८ ॥
लग्गो सु लोह लिन्नौ दिलेस। सारंग राइ कोरी नरेस ॥
बारडह राइ सहसी करन्न। अभ्भिर वसै गढ आसमन्न ॥ छं ॥ ५८९ ॥
जुध करै जित्त कन्हानि राइ। चहुआन सूर उप्पारि घाइ ॥
सेवक्क कीन अप्पै सु जोर। तेजल्ल डोड वासी जुनोर ॥ छं ॥ ५९० ॥
कैमास सद्धि बलवंत बीर। लग्गो सु साइ चहुआन धीर ॥
तारन्न सूर भटनेर वास। प्रिथिराज पाइ कीनी सु आस ॥ छं० ॥ ५९१ ॥
भींहा चँदेल गजनीय सेव। लग्गो सु घाव भूभ्भंत नेव ॥
उप्पारि लियौ सामंत राव। कीनी सु सेव अप्पह सु भाव ॥ छं० ॥ ५९२ ॥
अरसी चँदेल मार्यौ सकज्ज। भींहा चदेल दीनौ सरज्ज ॥
पानीय पंथ उत्तन्न देस। दीनौ सु फेरि दिल्लि नरेस ॥ छं० ॥ ५९३ ॥
कनवज्ज राइ भूभ्भंत नाम। रष्यौ सु अप्प कलि जुग्ग नाम ॥
चालुक्क पाट भोरा भुअंग। रष्यै सु कचरा पिथ्थ रंग ॥ छं० ॥ ५९४ ॥

३१६ पाठान्तर—उतपति। उत्तपत्ति। वाश। वरनैति। चंद वरनैति। बंध। दश। हूए। प्रमान। गढह। बयांन। जेशलह। जेसल्लह। भांन। पांजुन। पजून। वसे। थान। कूड। हूवै। हुवो। वहुआन। चहुवान। आन। रपेति। आनर रषैति। धान्ट। लगा। सू। पाय। चहुआन राई राय। समीयान। गठ। राय। छारि। भाय। निरधीर। रनधीर। पछिवान। देश। प्रिथीराज। पृथीराज। तथ। जूंन। वाश। कीनौ। सू लिन्नौ। दिलेश। राय। नरेश। राय। सह। सो। करन। आसमन। करे। जित। कन्हानराय। वहुवान। उपार। उप्पार। सेवक। कीन। थपै। ते बल। जुनौर। सद्दु। लगा। पाय। चहुंवान। वहुवान। तरंन। बाय। प्रिथीराज। पाय। सू। भोहा। भोहा। गनीय। बूंदी राज्य के पुस्तकालय की पुस्तक जिल्द ३० पृ० २२४ में लगा-नेव के स्थान में "हस सम अप्पह सु भेव" करके पाठ है। और छंद ५९। जिसकी तुक उस में है वहीं। लग्गा। भुभंत। उपारि। लायो। किन्नौ। चंदेल। सकज्ज। भोहा। भोहा। चदेल। सरज। दुरज्ज। पानीय। उतन। उतन। देश। सू। नरेश। कनवज्ज राज भूभंत नाम।

जावलो जल्ह दष्षिनी देस। प्रिथिराज राइ किन्नौ प्रवेस ॥
सतनंज नगर दीनौ उतन्न। पूरन्न माल प्रिथिराज तन्न ॥ छं ॥ ५९५ ॥
सूरत्ति वास चहुआन राइ। कह्यौ सु भ्रात रष्यौ सु दाइ ॥
बडगुज्जरहराम अल्ली नरेस। दिन प्रत्ति पांन भंजै सदेस ॥ छं ॥ ५९६ ॥
मुक्कले दूत प्रिथिराज तथ्थ। सेवा सु पाइ उप्पर जु हथ्थ ॥
प्रिथिराज ताहि दो देस दिद्ध। माल्हन पांन अल्ली प्रसिद्ध ॥ छं ॥ ५९७ ॥
करि वास तब्ब गुज्जर निसंक। मारयौ पांन आलीन वंक ॥
हड्डा हमीर नैन वारिद्ध। लग्गे सु पाइ दस देस दिद्ध ॥ छं ॥ ५९८ ॥
षेता षंगार दै थान राइ। परयौ दु काल देसं सु भाइ ॥
दिल्लीय देस गुड्ढा सु मंडि। रष्यै सु वास भट सुभट झुंड ॥ छं ॥ ५९९ ॥
परमार कनक जैचंद वास। किन्नौ सु पूंन इक पाचि दास ॥
लिय पाच अद्धौ प्रिथिराज देस। लग्यौ सु पाइ आयौ नरेस ॥ छं ॥ ६०० ॥
सांषुलौ सहसमल मात पष्ष। तप करत ऊनंगढ गयौ रष्ष ॥
लग्यौ सु पाइ प्रिथीराज आइ। दीनौ सु देस पट्टय साइ ॥ छं० ॥ ६०१ ॥
अवतार लियो दिल्ली नरेस। तब हुए सत्त सामंत भेस ॥
छं० ॥ ६०२ ॥ रू० ॥ ३१६ ॥

कवित्त। ढुंढा नाम * दानव उतंग। दियो फल अंब विसालं ॥
बंदि लोन नृप राज। आय फिर गेह सु चालं ॥
सत्त भाग कय अग्ग। बंटि दिय भ्रत्त समानं ॥
तिनह सूर सामंत। कित्ति रष्षन चहुवानं ॥

मुग। फग। नांम। चालूक्क। रष्यें। पिथ। रष्यै सुकचरापिथ रंग। जावल्ले जल्ल दिषिनीय। देश। दषनीय। प्रिथीराज। राय। कीनो। दीनौ। उतंन। पूरन माल। प्रथीराज। तन। सूरति। व्रात। बडगुज्जर रांय। अली। नरेश। सुदेश। मुकले। पृथीराज। तब। पाय। सु। प्रिथीराज। देश। दिध। अली। प्रसीद्ध। तह। गुजर। मारीयो। हाडा। हामा। हमीर। नेन। लगे। पाय। षेतल षंगर। परियो। देसां। भय। दिलिय। दलीय। देश। गूठा। भट्ट। भेद। पात्रदास यहो। प्रथीराज। देश। आये। मानि। पथि। करित। रिधि। प्रथीराज। आय। कीनो। पटूच। लीयौ। दिली। सित्त ॥

३५७ पाठान्तर—ढुंढुं (नाम * विशेष है) उतग। विसालं। गेहे। सु चालं। कय। भृत। समानं। चहुंवान। अति प्रथम। अमिय प्रकाल। सगह। हंक। सवंत। सवत। संवत ॥

रजमेल चंद फल अमिय प्रथु । सबर साहि मोषन सु गहु ॥
इकदस ससंत पंचह समै * । भए थान पंचम सु पहु ॥
छं० ॥ ६०३ ॥ रू० ३१७ ॥

आना राजा का उजड़ी हुई अजमेर को फिर बसाकर राज करना ॥

दूहा ॥ अनल आनि मातह मिल्यौ । कहि सब बत्त सुनाइ ॥
लोग महाजन संग लै । भूमि बसाई जाइ ॥ छं० ॥ ६०४ ॥ रू० ॥ ३१८ ॥

पद्धरी ॥ आना नरिंद अजमेर वास । संभरीय कीन सोब्रन्न रास ॥
नियनाम कह्यो आना नरिंद । अरि धरनि बीर मंड्यौ सु दंद ॥ छं० ॥ ६०५ ॥
ग्रामान ग्राम तोरन उतंग । बन बट्ठि कट्ठि निधि निधि पुरंग ॥
पसु पंपि सद श्रुत मंडलेस । जल न्हान दान ब्रह्मान सु देस ॥ छं० ॥ ६०६ ॥
हारम्य रम्य फिरि मंडि लोइ । दालिद्र दीन दीसै न कोइ ॥
चौघटि † सत्त वरषं प्रमान । आना नरिंद तपि चाहुवान ॥ छं० ॥ ६०७ ॥

जैसिंह जी का गद्दी पर विराज राज करना ॥

पग भ्रम्म देस दिय पुत्र हथ्थ । जैसिंघदेव तपि राज तथ्थ ॥
छिति छत्र सीस जैसिंघदेव । निधि लई बीर बीसल्ल पनेव ॥ छं० ॥ ६०८ ॥
बिंदु लीय बीर आना नरिंद । बीसल्ल तडाग मधि द्रव्य कंद ॥
पाधे न बीर तिन द्रव्य छेह । कंचनह कान मंडाय गेह ॥ छं० ॥ ६०९ ॥
सब द्रव्य दीन तिन विप्र हस्त । भंडार धरिय धन भ्रम्म वस्त ॥
श्रुति सुनहि श्रवन जंपत पुरान । साधरम करम चलि चाहुवान ॥ छं० ॥ ६१० ॥
कलि नीति गरुअ गहि मुक्कि । कुल रीति वित्त रंचक न चुक्कि ॥
सो वरस अट्ठ तप राज कीन । आनंद मेव सिर छत्र दीन ॥ छं० ॥ ६११ ॥

---

* यह पाठ हमने सं० १८५८ की पुस्तक का रक्खा है किन्तु स० १६४०, स० १७७० और स० १८४५ की में "इक दस संवत पंचह समै" है कि इनमें से जिसे विद्वान ठीक समझें उसे ग्रहण करें ॥

†

३१८ पाठान्तर-अनिल । अनलि । सुनाय । लोग । बसाईइ । बसाइय । जाय ।

३१९ पाठान्तर-आनां । नरिंद । नरद । सभरीय । सोब्रन । रासि । नाम । ग्रामा । मध्या तोरन । वद्दि । कद्दि । पुरंग । पंच । सदस्सुत । मंडलेस । न्हान । दान । हारम्य । मंडि । कोई । लोय । दारिद्र । दीन दीन । दीसे । कोई । चौ घडा । सत । प्रमान । नरिंद । चहुआन । प्रम दप । हथ्थ । तप । छत्रसीस । जैसिंह । निध । बीर छल । पनेव । चहुआन । बिंदआय ।

आनन्दमेवजी का राज करना ॥

तहां तप्पि तेज आनन्द मेव । बराह रूप दिष्यौ सु देव
धरनी विहार आयास साद । मंड्यौ सु राज पहुकर प्रसाद ॥ छं० ॥ ६१२ ॥
सो * वरष राज तप अंत कीन । सिर छच सोम पुनह सु दीन ॥

सोमेश्वरजी का सिंहासन पर विराज राज करना ॥

सोमेस सूर गुज्जर नरेस । मालवी राज सब पग्ग पेस ॥ छं० ॥ ६१३ ॥
मारू बजाइ भट्टीन थान । घल्ल भोमि लई बल्ल चाहुवान ॥
दिल्लेस व्याह तोंवर घरेस । तिह ग्रभ्भ भयो पीथल्ल नरेस ॥ छं० ॥ ६१४ ॥
आनन्द राज नंदन सु सोम । मोरिया दलनि तिन कियो होम ॥
निय पुर सु नयर सुर लग्गि धोम । आनन्द केलि अजमेर भोम ॥
छं० ॥ ६१५ ॥ रू० ॥ ३१६ ॥

सोमेश्वर जी की शूरता का संक्षेप वर्णन ॥

कवित्त ॥ जिहि सोमेसर सूर । सूर जित्त षुरसानी ॥
जिहि सोमेसर सूर । चढिवि गुज्जर धर भानी ॥
जिहि सोमेसर सूर । लियो नाहर परिहारिय ॥
बल्ल उप्पम कवि चंद । चंद राहा जिम मारिय ॥

नरिंद । छेह । देह । कांम । गेह । ग्रेह । दिन । भंडारि । श्रवन सुनहि । जपत । पुरांन । चाहुवांन । गरुव । गरुव मुक्ति । ऊलि । रीत । त्रित । रवक्ष । चुकि सो । अठ । तिहां । तपि । रूप्प । देष्यौ । सद्द । प्रसद । सो । सोम । सोमेस । शूर । गुजर । पग । पेस । मांरू । वजाय । भट्टी । थांन । लइ । बंल । चाहुंवांन । दिलेस । दिल्लेश । तुंवर । घरेश । गर्भ । ग्रभ । पित्यज्ञ । पीथ्यल । नरेश । मोरीयां । दल । दलह । कीयो । नेर । लगि । कल ॥

* चोषट्टि सत्त=इस के विरुद्ध कोई दूसरा पाठ हमारे पास की पुस्तकों में नहीं मिलता किन्तु कोई कोई वृद्ध कवि **चोसट्टि सत्त** करके मूल में पाठ होना कहते हैं और उससे ६४+७=७१ वर्ष की संख्या निकालते हैं और कोई १०० वर्ष और चार घडी और कोई ७ वर्ष और चार घडी का वाचक पाठ कहते हैं किन्तु ऐसे सब स्थल पक्षपात रहित विद्वानों के सूक्ष्म विचार करने योग्य हैं

* इस **सो** शब्द का पाठ किसी किसी पुस्तक में **सो** भी है कि जिससे वर्ष की सख्या के समझने में बडी गडबड हो जाती है। यह स्थल भी विद्वानों की बुद्धि का श्रम देने जैसा है। यदि कोई शुद्ध अंतःकरण से पूर्वापर का लेखा लगा देखेगा तो वह चंद कवि की संवत संबन्धी कठिनता को जान कर बहुत प्रसन्न होगा ॥

३२० पाठान्तर–जिहि । सोमेस्पर । जिने । षुरसांनी । चडे । चढे । भांनी । भांती । लीयो । परिहारी । परिहारीय । वलि । उपम । राहा । सारी । मारीय । वेरन । दोरि । राजोर । बर । पां । मड । गुजर । गूजर । गजयो ॥

बर बीर धीर धारह धनी । संभरि वैरिन भंजयौ ॥
दूक दौरि गौर राजौर वह । षां बड गुज्जर गंजयौ ॥

छं० ॥ ६१६ ॥ रू० ॥ ३२० ॥

दिल्ली के राजा अनंगपाल जी पर कमधज्ज का चढ़ना ॥

कवित्त ॥ ढिल्लीवै आनंग । राज राजंग अभंगं ॥
ता उप्पर कमधज्ज । सेन सज्जी चतुरंगं ॥
अग आतस आभून । पुट्टि बंधे गज पत्तं ॥
ता पुट्ठै विजपाल * । सुभर सज्जै रन मत्तं ॥
धजनेज मोज नीसान ढल । मनु बसंत रंज्जिय त्रिपन ॥
करि कूच कूच उप्पर धरा । बेध अंतर सपन ॥

छं० ॥ ६१७ ॥ रू० ॥ ३२१ ॥

कमधज्ज की चढ़ाई सुन अनंग का कालिंद्री उत्तर मुकाम करना ॥

कवित्त ॥ सुनी वत्त आनंग । अंग लग्गो रस वीरह ॥
भ्रकुटि वक्र रत द्रिग्ग । चित्त जुध रत्त सरीरह ॥
बोल्लि भ्रित्त अप्पान । कहिय सू वान मत गुन ॥
चढत राइ दिल्लेस । करिय नीसान वीर धुन ॥
गज बाजि रथ्थ पइ भर गषर । सजिय सेन सनमुष चलिय ॥
उत्तरि कालिंद्रि मुक्काम किय । दस दिसान यत्ती मलिय ॥

छं० ॥ ६१८ ॥ रू० ॥ ३२२ ॥

---

* स्मरण में रखने की बात है कि सत्य शोधों के अनुसार श्री कन्नौज के राजा विजयपाल जी, दिल्ली के राजा अनंगपालजी और अजमेर के राजा सोमेश्वर जी परस्पर समकालीन थे ।

३२१ पाठान्तर-ढिल्ली । ढिल्लीवे । राइज । अभंगम । कमधज्ज । सज्जी । चतुरंगम । अग्ग । अथ । पुट्ठि । पुट्ठि । बंधे । पत्त । तन । पुट्ठे । पुट्ठि । विजैपाल । सज्जै । मत्त । [illegible] नीसान । ढल । मनो । बसंत । रंजिय । त्रिपन । कुच [illegible] । उप्परि । [illegible] । [illegible] । बेधा । सपन ।

३२२ पाठान्तर सुनिय । सुनिय । वत्त । लगो । लग्गे । वीरह । भ्रकुटि । वक्र । द्रिग रत । [illegible] । सुत । अप्पान । अप्पान । स बान । दिल्लेस । नीसान । [illegible] । रथ । पद । मन गुष । सनमुष । उत्तरि । कालिंद्रि । मुकाम । दस । दिसान । बनी । रुल्लिय ।

कमधज्ज की चढ़ाई सुन सोमेस का अनंग की सहायता को दिल्ली जाना और वहां पहुँच अनंगपालजी से एकान्त में मंत्रणा करना ॥

पद्धरी ॥ संभरिय वत्त संभरि नरेस। आभासि चित्त अप्पां असेस ॥
कमधज्ज राज तोंवर नरिंद। मत्तौ सु दुनै आनद्ध दंद ॥ छं० ॥ ६१९ ॥
अप्पन सहाय सज्जौं सपूर। बैठन्न ग्रेस नह ग्रप्प सूर ॥
करिकैं सु जीति आवें अपान। कै सजें बास कैलास थान ॥ छं० ६२० ॥
मन्नेव सूर भर मंत वाम। घुम्मरे नद्द नीसान ताम ॥
चढि चल्या सेन सजि चाहुवान। उप्पटे जानि सत सिंधु पाज ॥ छं० ॥ ६२१ ॥
अग्गे सु सोम दिल्ली सहाय। अग्गेव विष्य हर कंठ लाय ॥
अग्गेव मनी लभ्भी फुनिंद। अग्गेव सरद निसि उग्गि चंद ॥ छं० ॥ ६२२ ॥
अग्गे सु चक्र लिन्नौ गुविंद। अग्गै सु वज्र कर चक्री इंद ॥
बिहु बाह सूर सज्जे समंत। बेनै विरद्द बंधे अनंत ॥ छं० ॥ ६२३ ॥ *

---

* यह छंद सं० १६४० । १७७० और १८४५ की पुस्तकों में नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी में है ॥

इस छंद की अंत की तुक में "बेनै विरद्द बंधे अनंत" है कि जिसका अर्थ यह होता है कि वेन ने अनेक विरद बांधे अर्थात् कहे। यह वेन कवि इस महाकाव्य के रचनेवाले चंद का पिता था और वह सोमेश्वरजी के इस समय साथ था। अब तक चंद से पहिले का कोई काव्य किसी भी कवि का किसी के जानने में नहीं है किन्तु हमने जो एक चंद छंद वर्णन की महिमा नामक पुस्तक सं० १६२९ की लिखी शोध की है उस के पीछे मेवाड़ राज के महाराणा जी श्री उदयसिंहजी के महाराज कुमार श्रीसगतसिंहजी के पंडित विष्णुदासजी ने अकबर बादशाह के भाट गंगजी से अजमेर में पटोलावाय के मुकाम पर चंद के बाप कवि राव वेन का नीचे लिखा छिप्पय अर्थात् कवित्त लिखा था वह हम प्रकाश करते है। छप्पय में वेन ने पृथ्वीराजजी के पता सोमेश्वरीजी को आसीस दी थी-

छप्पय ॥ अटल ठाट महि पाट। अटल तारागढ थानं ॥
अटल नग्र अजमेर। अटल हिंदव अस्थानं ॥
अटल तेज परताप। अटल लंका गढ डंडिव ॥
अटल आप चहुवान। अटल भूमी जस मंडिव ॥
संभरी भूप सोमेस नृप। अटल छत्र ओपै सु सर ॥
कवि राव वेन आसीस दें। अटल जुगां रजेस कर ॥ १ ॥

अग्गैं सुदंति पंतिय विहूर । षलकंत अंदु मद झरत भूर ॥
धजनेज चमर बंबर बिनान । मन हू कि पव्व पल्लव किसान ॥ छं० ॥ ६२४ ॥
धमकंत धरनि अहि सिर निहाय । दल चलिय द्रिग्ग उद्रिग्ग थाय ॥
षुरधूरि पूरि जुहिन भमित्ति । दिसि व दिसि राज पसरंत कित्ति ॥ छं० ॥ ६२५ ॥
रच्च षरहि सोम पर चाड कज्जि । मन हू कि दुलह बर व्याह रज्जि ॥
संपत्त जाय दिल्लिय पुरेस । अानंग राज मिल्लं असेस ॥ छं० ॥ ६२६ ॥
अघ बत्त कुसल पूछिय असेन । रस हास पेम बढ्ढे सु हेत ॥
विधि विद्धि भोज भोजंत राय । रुचि सु चित षट रस्स भाइ ॥ छं० ॥ ६२७ ॥
अाहार पान घन सार पूर । बैठे सु आइ एकंत सूर ॥
सब कहिग विद्धि कमधज दिसान । सुद्धरै बत्त सो करहु पान ॥
छं० ॥ ६२८ ॥ रू० ॥ ३२३ ॥

अनंग की बात सुन सोमेस का रोस में आय लड़ने के तयार होना ॥

कवित्त ॥ सुनिय बत्त जंपि सोम । रोस उब्भार झार असि ॥
रसन दसन दब्बंत । रत्त द्रिग जुच्छ चथ्य कसि ॥

इसी के साथ उसी पुस्तक में चंद के नाम पर किसी का कहा हुआ यह नीचे लिखा दोहा भी लिखा है-

दोहा ॥ ले कूंजा नृप पीथुला, सांमत चमूं समंद ॥
बेन नँदन कनवज गमन, छद करन कइ दद ॥

३२३ पाठान्तर-सभरीय । नरेचा । अभासि चित आपां । अपा । अशेश । अमधज । राध । तूंवर । नरिंद । दुन्है । आवद्दु । टुंट । सज्जो । वैवच । येह । धम । केकरैं जान आना नरिंद । आनिग । अपान । थान । कैं सज्जे थान कैलास इंद । मनेव । मचेव मत भर सुर ठाम । घुघुमरट्ट नीसान ताम । मनेव । घुमरे । वाहुवान । उपटे । जानि । लिधु । पानि । पानि । अग्गे अागें । अवें । अगेंव । अगेव । अचेव । विप । लाइ । अगेव । अचेव । अचेव । मनि । मचि । लभी । फुनिंद । अचेव । अचेव । रत अग्गे । अगे । वेन । यानि । थंव मद्दन । पभूर । पडुर । झरन । धनान । मत हू । पव । किसान । सर । हलौर । दुग । उदुग । दुग । अदुग । धुर धूर रिपुरि तुहिन भमित्त धुरि धुरि धुरि सुहिन नमित्त । चि । पसरांन । पहर । पहह । कज । मान हू । मानहु । रज । सपत्त । दिल्लियपुरेव । राय । मिले । पुछ । असेन । पुछिय । असेन । रस हास । बड्डे । विधि विधि । चित । रस । पान । आय । सब । चढ़ । कनवज । दिसान । सुद्धरहि । बत । सुं । पान ॥

३२४ पाठान्तर- बत । बत । जंप । रोस । उभार । नारि । दुब्बिंत । दृग । जुथ । चिता रिय । कथ्यांह । कनवीय । कवि । नरिंद । दाहुवान । वंदुवान । करे । दया । मानहु ।

दुहु कमंध आमंध । राज सम जंग विचारिय ॥
सजौ सेन अप्पनी । भिरौ भंजौ अरि भारिय ॥
चहुआन राय आनन्द सुअ । अति उमाह भारथ मनह ॥
अह मग्ग लग्गि झंपो दलह । बात चक्र मानहु तिनह ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ ३२४ ॥

दोनें राजाओं का डेरें पर जाना और पिछली रात को युद्धारंभ होना ॥

दूहा ॥ दुहु परिट्ठि * राजन उठे । गय अप्पाने ठाव ॥
निसा जाम रहि पाछली । भयो निसान निघाव ॥
छं० ॥ ६३० ॥ रू० ॥ ३२५

सोमेस की सहायता से अनंग की विजयपालजी के साथ लडाई ॥

भुजंगी ॥ रही जाम एकं निसा पच्छि यानं । बजे नद्द नीसान बीसान जानं ॥
चढ्यौ राज आनंग सोमं समेतं । बढे हास रासं चितं प्रीति हेतं ॥ छं० ॥ ६३१ ॥
सुभै सेत छत्रं धजा नेज माही । मनें बद्दलं मझ्झ रंज्जै सु राही ॥
सजे पष्षरं बाज दंती सनेनं । सनाहंत षीतं चितं जुड्ड जेनं ॥ छं० ॥ ६३२
इतै आनि दूतं कही बत्त साजं । सजे सेन आयो विजैपाल राजं ॥
स्रपं व्यूह आकार सज्जे सभारं । दढं फन्न पुंछं रचे भ्रित्त सारं ॥ छं० ॥ ६३३
सुने बत्त आनंग चित्तं बिचारी । कही सोम सीवी बँधो बंध भारं ॥
सजो सेन अप्पान व्यूहं गरुरं । गिलै स्रप्पतामं हुवै जित्ति सूरं ॥ छं० ॥ ६३४ ॥

* हिं० परिट्ठि (सं० स्त्री० परीष्टि = Inquiry, research, &c.) से है ॥
३२५ पाठान्तर–परट्ठि । परठि । अप्पानै । ठाह । जाम । पछली । निसान । नघाय ॥
३२६ पाठान्तर–जांम । इक्क । इक्कं । पछियनं । बजै । नीसान । वरजांन । चढे । सोमे । सोम । समेंत । चढे । हाश । रास । राशं । चित । सुभे । छेत्र । नेन । माही । मनैा । बदलं । बदल्ल । मझ्झ । रचे । रच्च्ये । पषरं । सनेनं । सनाहंति । षितं । चित्तं । जूट्ठ । जैनं इत्ते । इतं । आनि । आय । सभ्झे । आयो । विजिपाल । बिजैपाल । अपं । स्रप । सज्जे । सु भारं । दंढं । फन । फन्न । पुछं । भृत्ति । भ्रित । सुनै श्रवन वैनं वतं विचारी । सिरक । सिपं । वधो । सजो । अपान । कहरं । गिले । अप । जिति । चंवु । राय । तिन । राजं । पिछ । चोरंग । तय तुट्टु । अत । उधीर । पिछ । धरा धार उधार बीरं सु नेवं । पंड पिंड । पंड पंड । लज्ज । सेज्जे । सजै । पुछ । पथ्य । कूरभ । जिने । जित्तीया । जितिया । अनेक । अथ । नंगं । तिन । अग । आतस । भ्रारे । दुयं । गेन । उडे । कंपे । बढे । झंडा । दिपानं । वजै । अचट्ठ । आनंट्ठ । अनट्ठ । गज्जे । निसांनं ।

सज्यौ चंच ग्रीवा सु सोमेस रायं। तिनं संभरी लाज राजं सहायं॥
दिसा दाहिनी पक्ख चौरंग बीरं। कुलं चाहुवानं जयं युद्ध भीरं॥छं०॥६३५॥
बियं पक्ख बीरंम बीरंग देवं। धरा धार उद्धार धारं सु नेवं॥
पगं एंड आनंग राजंग पालं। षंड पंडं भुजं लज्ज झालं॥ छं०॥ ६३६॥
सजे पुछ्छ कोरंभ जैसिंघ नामं। जिनें जित्तिया जुद्ध अन्नेक ठामं॥
सजे अग्ग पंती मदं मोष नग्गं। तिनं अग्ग आतस्स झारं उतंगं॥ छं०॥ ६३७॥
दुवे सेन मिल्ली उडी रेन पूरं। कँपे कायरं सूर बढ्ढे सनूरं॥
धजा नेज ढालं पताषी दिसानं। बजे सिंधु आनद्द गज्जे निसानं॥
छं०॥ ६३८॥ रू०॥ ३२६॥

कवित्त॥ बज्जि गहर नीसान। अग्गि अग बान बिछुट्टिय॥
* दरिया दधि किय मथन। † भोम फट्टिय षह तुट्टिय॥
करषि मुट्ठि कम्मान। तानि क्रन बान छनं किय॥
मनहु चिल्ह दिसि सदल। ‡ भोरं वासं नमनं किय॥
रुधि मग्ग मिच षह मुहयौ। सुभर सोम मत्तौ गहन॥
सर सार सार उप्पर सिलह। मनु मेघ बुँद मच्ची महन॥
छं०॥ ६३९॥ रू०॥ ३२७॥

विराज॥ चुरंगी सु बीरं। जुटे जुद्ध भीरं॥
छुटे मोष बानं। मुटे आसमानं॥ छं०॥ ६४०॥
परे बष्प धायं। करै कूह कायं।
उभारंत सेलं। हुवं सेल भेलं॥ छं०॥ ६४१॥
ननं छिद्र कालं। रुधिंजा प्रनालं॥
वहै धार पग्गं। निनारंध रग्गं॥ छं०॥ ६४२॥

---

३२७ पाठान्तर-नीसान। अगि अगिवान बिछुटीय। * कि। दरिदा। कीय। मथन। † कि। फटीय। तुटीय। मुष्ठ। कमान। कम्मान। क्रन। क्रिन। वान। छनकिय। मनहु। दिसि। ‡ कि। मोर। भोर। मोर। वास। नमन। मग। मुहयो। सुभर सोम। मनो मेघ बुंदह महन। मनो मेघ बुंद मह महन। महि॥

३२८ पाठान्तर-बीरंगांश। जुटें। जुटे। भारं। छुटै। छुटे। वान। मुटे। बप। धाय। करे। कहु। हुए। सेल। तिन। छद्र। रुधिज्जा। रुधिजा। बहे। पग्गां। रुग्गा। रग। बुटे। तुटे। दल। दारो। ओसे। विहारो। परे। परे। दान। दल छोट लग्गो। छोट। सप। घोर। ६८। लु। लोप मत। कटे बदन मदन। कटे। नन। दोरया। हमिय। हमिय। वय। टुक। मत। उम। छुटे। वड। बरहिह। बरहिय। मिन। करे। बढि। मिल। पल। मार। कटे। लगे। डाडे। जिते।

तुटे दंत जारी। करै गै विचारी॥
परे भूमि थानं। कलं कूट जानं॥ छं० ॥ ६४३॥
हयं षंड षंडं। धरं रुंड मुंडं॥
लुथं लुथ्थ मत्तं। कटं बंन भत्तं॥ छं०॥ ६४४॥
चुरंगी सु तत्तं। वरं सिंघ उत्तं॥
भिल्यौ वथ्थ आनं। दुश्रं मल्ल जानं॥ छं०॥ ६४५॥
भिलै जंम दड्ढं। गलं लग्गि बड्ढं॥
बरं सिंघ षेतं। परे बंध नेतं॥ छं०॥ ६४६॥
भयं पंच भीरं। कटे पास बीरं॥
भगे दड्ढ वानं। जिते चाहुवानं॥ छं०॥ ६४७॥ रू०॥ ३२८॥

गाथा॥ भग्गो दल नर सिंघं। जंगं जिताइ राइ चौरंगी॥
बाई दिसि बर बीरं। लग्गे जुद्धाइ षग्ग मग्गायं॥
छं० ॥ ६४८॥ रू०॥ ३२९॥

रसावला॥ * षग्ग साहिं नगा। सेन सेनं अगा॥
सार धारं मगा। कूह कूहं वगा॥ छं०॥ ६४९॥
धाययों ठंनकी। आहिरं घंनकी॥
कंठ गीरं मता। बारुनी पी मता॥ छं०॥ ६५०॥
बीर लुथ्थं लुथं। मिल्ल बथ्थं वथं॥
तुट्टि तंतं अती। गज्जनीयं दंती। छं०॥ ६५१॥
नालि ज्यों कढ्ढती। सूर यों बिढ्ढती॥
उड्डि लोहं लुहं। मिल्ल जोहं जुहं॥ छं०॥ ६५२॥ रू०॥ ३३०॥

---

३२९ पाठान्तर-भगो। बरसिंघं। बरसिंह। जंग। जिताइ। राय। चउरंगी। बाइ। दीसि। लगे। मग्गइ। मगाइ॥

* इस छंद का नामान्तर विमोह अर्थात् विमोहा भी है और वह दो दो रगण का होता है॥

३३० पाठान्तर-षगं। सग। साहि। साहं। नंगा। सजे सैन अगा। सजे सेन अगा। सारं धार। क्रूह कूह वमा। क्रुहं क्रूह वगा। विधायं ठनकी। अहीरन धनंकी। ऋहिचं धनकी। कठंगी रमता। कठंगी रमता। वारुणी पिमत्ता। वारुणि पिमंता। परी लुथ लुथं। परी लुथा लुथ्य। मिले वथ वथ्य। वथं। तुटीतंन अती। तुटी तंति अंती। गरजंत दंती। नालि ज्यौ कढती। सूरयौ वढंती। सूर ज्यौ वढती। उडे लौह लोहं। उडे लोह लोहं। मिलें जोह जोहं। मिले जोह जोह॥

इस रूपक के पाठान्तरों को विचारने से पाठकों को ज्ञात होगा कि वे कैसे कैसे अद्भुत और विद्वानों को भी भुला देनेवाले हैं॥

कवित्त ॥ वढन बीर बीरम्म । बीर कमधज सौं जुथ्यौ ॥
ता उप्पर गजराज । आइ मद मोष उपथ्यो ॥
इहित संग उभ्भारि । विरचि बाही गज मथ्थह ॥
जाइ ठनंकिय घंट । कंठ सोभा सुभि तथ्थह ॥
गहि संग सूर लीनी हबकि । जै जै सुर आकास कहि ॥
रुधि धार छुटि संमुह चली । मनों मेर सरसत्ति वहि* ॥
छं० ॥ ६५३ ॥ रू० ॥ ३३१ ॥

भंजि मुष्ष गजराज । अप्प सेना उर धारिय† ॥
ता मध्ये से तीन । फिरग संमुष ह्वै डारिय† ॥
ता मध्ये वाघेल । राइ रिपु सल्ल मया भर ॥
घरी एक रन रंग । तुट्टि धर धार गही धर ॥
जित्तौ सु जंग धारह धनिय । बिभछ बीर† बित्तौ जहां ॥
भजि और भत्त छंडे रिनह । गे राज विजपाल तहां ॥
छं० ॥ ६५४ ॥ रू० ॥ ३३२ ॥

दूहा ॥ बीर देव सम बीर लरि । भग्गि सेन कमधज्ज ॥
ता पच्छैं सोमेस पर । उड्डि सार वज रज्ज ॥ छं० ॥ ६५५ ॥ रू० ॥ ३३३ ॥

---

* ये तुकें बूंदी राज के पुस्तकालय की पुस्तक सं० १८४५ की में नहीं हैं ॥

३३१ पाठान्तर-वीरम । कमधज्ज । सो । सु । उपर । गजराजं । आय । इहन । उभारि । धाहि । मथह । जाय । कंति । तपह । सगि । सनुह । सनुह हेहा रिय । वनिय । मनहु । सति । विहि ॥

† पाठको ! हम वीसलदेवजी की दानव कथा को अद्भुत रस में कवि का लिखना लिख आये [illegible] २८० में कह आये इसी तरह इस दिल्ली के राजा अनंगपाल जी और कनौज के राजा कमध... विजैपालजी की लड़ाई का वर्णन वीभत्स और वीर रसों मे कविने लिखा है कि इस बात को [illegible] हम को युक्ति से सूचना करने "बिभत्त वीर बित्तौ जहां" वाक्य से करता है। यह बड़ा [illegible] कवि ने नव रसों में लिखा है अवश्य जहां हम [illegible] को सदेन न भी कहें वहां आप विचार कर रस को समझ लीजिएगा ॥

कवित्त ॥ परी भीर सोमेस । सोम वंसी सहाय भय ॥
मार मार उच्चरंत । सेन चतुरंग सयग्गय ॥
गजदंता बिकुरंत । बीर भेरी झननंकत ॥
टोप टूक बिकुरंत । पाग भागन रननं कत ॥
रस रास बीर कमधज्ज भय । संमुह बीर निहाइया ॥
संभरी राव संभारि कुल । लग्गौ लोह उचाइया ।
छं० ॥ ६५६ ॥ रू० ॥ ३३४ ॥

पद्धरी ॥ उच्चाय लोह लगि व्योम थान । मानों कि हरिय वल कलन बान ॥
जुट्टै सु अरिन दल मझ्झ जाइ । मानों कि सिंघ गज जूथ पाइ ॥ छं० ६५७॥
दून बिद्ध सोम मिल लोह पूर । आवद्ध रीठ मत्ती करूर ॥
कन नंकि बान बजि गोम धंक। कायर पुलंत सूरा निसंक॥ छं॥ ६५८॥
हल मिलग सेन बे बाह बीर । बरसें अनंग ग्रज्जंत धीर ॥
माचंत कूह बजि लोह सार । जुट्टंत सूर रिन करि पचार ॥ छं० ६५९॥
राजंत राग सिंधू * कराल । बाजंत वज्ज जनु मेघ काल ॥
हलकंत घाव वाहंत धीर । किलकंत नद्द नारद्द बीर ॥ छं० ॥ ६६० ॥
डहकंत डक्क डारून डरान । गहकंत गिद्धि सिद्धनिय थान ॥
नाचंत देव मचकंत फूल । लहकंत दुथ्थ मन गथ्थ झूलि ॥ छं० ॥ ६६१ ॥
उररीय सेन सजि अनगपाल । भर हरी भीर कमधज विसाल ॥
सत पैंड जाइ फिर लगिग घाय । आ[illegible]र रीठ मत्तौ उराय ॥ छं० ॥ ६६२॥

३३४ पाठान्तर-परी । सोमेव । वंसी । हय गय । गजदिता झननंकतः । टौक । बिकूरंत । पग । भगंत । रननंकित । रननंकत । रस सुर । वीर । समुह वीर । विहाइया । निहाईया । संभरी । लंग्गै । लग्गों । उचाईया उचारिया ॥

* संगीत शास्त्रवेत्ता और अन्य सब को स्मरण में रखने की बात है कि संगीत के आचार्य **भरत** जो सिंधू राग को वीर रस में मानते हैं उसका प्रचार इस समय तक पाया जाता है अर्थात् लड़ाई में सिन्धु राग गाया और बजाया जाता था और व्यूह रच के लड़ना भी पृथ्वीराजजी के समय तक प्रचलित रहा है ॥

३३५ पाठान्तर-उचाय । लौह । व्योम । योम । थांन । मांने । मनो । हरि । हरी वलि बलन वानं । हरीय । वान । जुंद्दो । जुटो । जुटो । मझ । जाय । मानौ । मानौ । जुथ । पाय । दूनि । विध । विधि । सैाम । मिलि । लौह । पुर । रीठु । मती । वान । सूरा । हलि । मिलिग । वे वाह । बरसै । यजंठ । मांवन्न । जुटंत । सिंदु । मैघ । घातय । घायु । वहंत । नद । नारद्र । डक ।

तिन मुष्प सोम मिल चाहुवान। मांनों कि रिप्पि दरिया ग्रसान ॥
तिन सीस बज्जि धारा निहाय। घरियार बज्जि मनु वज्र घाय॥ छं०॥ ६६३॥
परि सोम सूर अरि बधिय जंग। चैासट्ठि घाय बेध्यौ सु अंग॥
तिन अग्ग परिग पहु मान वीर। छिन भिन्न होय धारा सरीर॥ छं०॥ ६६४॥
सत पंच परिग है गै कहूर। सें पंच हून परि पित्त सूर॥
सहसं च पंच कमधज्ज सेन। जीतौ अनंद सुत बीर सेन॥ छं०॥ ६६५॥
भाजंत सेन बर विजैराज। है गै बीर रिन छोरि लाज॥
पलकंत श्रान धर चलिग षल। वैा[ ]ग्ग देव हर रुंड माल॥ छं०॥ ६६६॥
पल चरन चार बर रंभ कीन। जै जया सद्द बंदीन दीन॥ ६६७॥ रू०॥ २२५॥

सोमेश्वरजी का दिल्ली में बड़ा साहस करना ॥

कवित्त॥ दिल्ली वै सोमेस। कियैा साहस चहुवानं॥
सो कमधज्ज नरिंद। वीर विजपाल भगानं।
अजरां परि अजमेर। मान वंधव परि चहुं॥
अस्त्र वस्त्र अरु चर्म। टंक लभ्भै नन चहुं।
रघुवंस वीर दिष्यौ निजरि। पहु पंपिनिय रुडारयां * ॥
अप मंस अप्प कर काढि कैं। पील्हां कंक्रि उआरयां * ॥
छं०॥ ६६८॥ रू०॥ २२६।

कमधज्ज का पराजित हो घर जाना और सोमेस का अजमेर को चलना ॥

दूहा ॥ जित्ति भत्ति भारथ्थ भौ। गौ फिरि ग्रह कमधज्ज ॥
उप्पारे अजमेर पहुं। डोला पंच सुरज्ज ॥ छं० ॥ ६६९ ॥ रू० ॥ ३३७ ॥

अनंगपाल जी का सोमेश्वर जी को कन्यादान करना ॥

कवित्त ॥ अनग तूंअर नरिंद। अस्म मंड्यो उछंग वर ॥
सुभ सोमेस नरिंद। ग्रहन पानिंग मंडि कर ॥
हेम हय गय भार। दासि दीनी जु पंच सय ॥
सत हस्ती चै सहस। अथ्थ अप्पौ सु देस लय ॥
हिंसार कोट पक्खर विहर। मुत्ती मान सुरंग घन ॥
चल्यौ नरिंद अजमेर दिसि। बन्नि नरिंद इक बंध मन ॥
छं० ॥ ६७० ॥ रू० ॥ ३३८ ॥

सोमेश्वरजी का अजमेर आना और वहां बड़ा उत्सव होना ॥

कवित्त ॥ श्रृंगारिय गजराज। आय ग्रिह जीतिव जानय
पच्छिरान परिवार। जानि रिति माधव मानिय ॥
बाल वृद्ध जुब्बनह। मुष भगावत अति मंगल ॥
रुचि रुचि विविध बचन्न। परसपर जानि सुष्प गल ॥
तह अंब गौष तारुन त्रिविध। सषिय गौष उभ्भिय सरस ॥
प्रतिबिंब मुष्ष राका दरस। सुह गावत चहुआन जस ॥
छं० ॥ ६७१ ॥ रू० ॥ ३३९ ॥

---

३३७ पाठान्तर-जिति। भिति। भारथ। भय। गय। ग्रिह। कम धज। डोला सुरज ॥

३३८ पाठान्तर-अनंगपाल। तुंवर। शुभ। सोमेव। पांनिग। मडि। हैन हय गय। ज। सित। हथी। हय। हय। सुं। देअसलय। कोट। प्पवर। पचर विहार। मुत्ति। मुत्तिय। दिशि। बल ॥

३३९ पाठान्तर-श्रृंगारीय। ग्रिह। ग्रह। जीतिव। पारिवार। जांनि। मांनिय। बुद्धि। जुंवनह। मुष गावत। मुंष्पि गावत। विविधि वचन। जांनि। सु पिंगल। तारुनि। त्रिविधि। सषीय। गौषि। उभीय। प्रति बिंब मुष्क राका दरसन। प्रतिव्यंब। मुष चहुंवांन। चहुवान। चहुआंन ॥

पृथ्वीराजजी की कथा का आरंम्भ करना ॥

पद्धरी ॥ अब कहौं कथ्थ चहुआन राइ । जिम लई भूमि षल षग्ग धाइ ॥
जिम अनग राज दिल्ली दान । बषनैंत बन्निय कुल चाहुवान ॥ छं० ॥ ६७२ ॥
जिम अगम द्रुग्ग गढ लष कूटि । जिहि कित्ति कित्ति जिति संसार लूटि ॥
जिम मेच्छ सेन षग धार षंडि । कै बार साहि जिन बंधि छंडि ॥ छं० ॥ ६७३ ॥
जिम कमध सेन धर धरिय कीन । विध्वंसि जग्ग संयोगि लीन ॥
अब्बुआ राव रष्यौ वलेस । चालुक्क भजि पट्टन नरेस ॥ छं० ॥ ६७४ ॥
परिहार सिघ जिम जेर कीन । बरनी विवाहि रस बसि अधीन ॥
देवगिर द्रुग्ग द्वै दुरनि गाहि । बालुका जीति दै जग्य धाहि ॥ छं० ॥ ६७५ ॥
रिनथंभ द्रुग्ग जद्दव नरेस । कंन्या विवाहि तिन रष्षि देस ॥
भंजे मै वास बहु भील कंक । भर नीर ग्रेह तिन कढ्ढि बंक ॥ छं० ॥ ६७६ ॥
अनमी मसंद तिन नाम वारि । जुगवंत जीव म्रख गवार ॥
अवतार अप्प करतार होइ । हूओ न और ह्वै है न कोइ ॥ छं० ॥ ६७७ ॥
अजमेर द्रुग्ग न्रप सोम राइ । अदभूत तेज अरि धरन लाइ ॥
दिल्लिय अनंग तोंअर नरिंद । अनसंक कंक पहुमीस इंद ॥ छं० ॥ ६७८ ॥
तिह सुत्त नांहि ग्रह पुत्ति दोय । किय व्याह कमध चहुआन सोइ ॥
छं० ॥ ६७९ ॥ रू० ॥ ३४० ॥

सोमेश्वरजी का तेज बल से तपना ॥

कवित्त ॥ तपै तेज चहुआंन । सूर सोमेस अप्प बल ॥
तिन सु तेज तरवारि । मुक्कि अरु सुद्धि मुष्य जल ॥

सुभट भाट संग थान। चित्त चारन चतुरंगम ॥
जहँ तहँ लच्छि निवास। सु बसि बिलसंत सुरंगम ॥
सुनिये न पर श्रवन चक्र भय। सुजस सकल जंपै जगत ॥
मानिक्क राइ कुल उद्धरन। सोम पलनि जहं तह पगत ॥

छं० ॥ ६८० ॥ रू० ॥ ३४१ ॥

अनंगपालजी का अपनी दो पुत्रियों में से सुन्दरी विजैपालजी को और कमला सोमेश्वर जी को प्रदान करना ॥

दूहा ॥ अनग पाल पुत्री उभय। इक दीनी विजपाल ॥
इक दीनी सोमेस कौं। बीज ववन कलि काल * ॥

छं० ॥ ६८१ ॥ रू० ॥ ३४२ ॥

एक नाम सुर सुंदरी। अनि वर कमला नाम ॥
दरसन सुर नर दुल्लही। मनों सु कलिका काम ॥

छं० ॥ ६८२ ॥ रू० ॥ ३४३ ॥

जिन दिन सोमेस का विवाह हुआ उस दिन क्या क्या हुआ ॥

कवित्त ॥ ज दिन व्याहि सोमेस। त दिन असरन मन उड्डित ॥
त दिन बीर बेताल। काल कलहागम कुड्डित ॥
त दिन अवनि उमहौय। पुत्र इहि भार उतारै ॥
छत्र तेज छित छज्जि। देव दानव पुंतारै ॥

---

३४१ पाठान्तर—तपे। चहुआंन। चहुवांन। मुछ। मुंछ। आछ। मुप। सुभट थाट सग। भाट चित्त चोरन चतुरंगम। जहा तहां। जिहां तिहा। जह। तह। लछि। वशि। सुनीयै। जंपे। मानिक। कुंल। पलन। जिहा। जह। तह ॥

३४२—३ पाठान्तर—अनंगपाल। दिनी। विजैपाल। विजैचंद। सोमेस। व्रिप वपुन। चाल। दंद ॥ ३३२ ॥ नाम। सूर सुंदरी। सुदरी। वीअ कहेला वइ नाम। वै। अनि वर मलया नांम। दुल। मनो। सु काम ॥ ३४३ ॥

* चंद कवि का यह वाक्य "बीज बवन कलि काल „ हमारे पाठकों के ध्यान देकर समझने योग्य है कि यद्यपि चंद सोमेश्वर जी के घर का कविराज था परन्तु वह कैसा यथार्थ वक्ता था। क्या आजभी कोई कवि अथवा कविराज ऐसा स्पष्ट कह अथवा लिख सकता है ?

ता दिन सु सार सज्या समह । भ्रम अंतर कायर कपे ॥
मानिक्क राइ अनगेस घर । पानि ग्रहन ज दिन थपे ॥
छं० ॥ ६८३ ॥ रू० ॥ ३४४ ॥

सोमेश्वरजी की रानी के गर्भ रहना और उसका प्रतिदिन बढ़ना ॥

कवित्त ॥ कितिक दिवस अंतरह । रहिय आधान रानि उर ॥
दिन दिन कला वढंत । मेघ ज्यों बढत भइ धुर ॥
चंद्र कला सित पष्प । जेम बाढंत दिनं दिन ॥
मुगधा जोवन चढत । मिलत भरतार पिनंषिन ॥
उदित अधान सुभ गानन्ह । जेम जलधि पुन्निम बढहि ॥
कुलसंत चीय जे प्रीय त्रिय । जिम सु जोति जनिता चढहि ॥
छं० ॥ ६८४ ॥ रू० ॥ ३४५ ॥

सोमेश्वरजी की तुँअरि रानी का पृथ्वीराजजी को जनना ॥

दूहा ॥ सोमेसर तोंअर घरनि । अनगपाल पुत्तीय ॥
तिन सु पिथ्थ गर्भं धरिय । दानव कुल छत्तीय ॥
छं० ॥ ६८५ ॥ रू० ॥ ३४६ ॥

सोमेसजी के प्रथम पुत्र का ढुंढा के वर से होना स्मरण कर गंधर्वादि का प्रसन्न होना और उत्सव मानना ॥

कवित्त ॥ प्रथम पुत्र सोमेस । गंधपुर ढुंढा गढ्ढिय ॥
भई सुद्धि गंध्रवन । पुहप मंगल दुज पढ्ढिय ॥
अद्ध रैनि अनु जानि । छिदौ बालुक सिर सिढ्ढिय ॥
गयन वयन घन सद्द । युद्ध जीवन जय ढिढ्ढिय ॥

---

३४४ पाटान्तर-व्याह । सोमेस । ना । अमरत । अमरन । उदित । काम । कनहागम मुदित । उमहिय । उमहिय । नाथ मोहि भार उतारै । तत्त । छिति । छत्ति दिय धारिय पुतारं । पै । दीन कहु दवि पुतारै । कत्तीय । कत्तीय । मानिक । राय । अनगैन । ज दिन । थपिय । थपीय । थपै ॥

३४५ पाटान्तर-कितक । आधान । रानि । ज्यो मेघ बढत भइ धुर । ज्यो । ज्यों मेघ बढत भइ धुर । पष । पषि । जैम । योवन । पिन पिन । पिनि पन । उदित अधान सुभानन जेम । पुंनिम । पुनिम । कुलसत । जै । चीय । ज्योति

३४६ पाटान्तर-सोमेसर । तुंअर । धम्म दिय । पिथ्थ । छित्तीय ।

स्ति सुभट सूर छह सथ्थ चल्लि । चंद भट्ट कीरति करन ॥
संजोगि जोति तप राषि सन । बरष तीस दसह करन ॥
छं० ॥ ६८६ ॥ रू० ॥ ३४७ ॥

कवित्त ॥ बल तापस्स तप तपिय । आप बीसल्ल सिर धारिय ॥
बरष असी तीन सै । गुहा ढिल्ली ढिग तारिय ॥ †
सिल अंजर रजनीय । पुरनि गंध्रव पग धारिय ॥ †
* * * * * *
अवतार लियौ प्रिथिराज पहु । ता दिन दान अनंत दिय ॥
कनवज्ज देस गज्जन पटन । किलकिलंत कालंकनिय ॥
छं० ॥ ६८७ ॥ रू० ॥ ३४८ ॥

जिस दिन पृथ्वीराजजी का जन्म हुआ उस दिन देशान्तरों में क्या क्या हुआ ॥

कवित्त ॥ ज दिन जनम प्रिथिराज । षरिग बत्तह कनवज्जह ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज । त दिन गज्जन पुर भज्जह ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज । त दिन पट्टन वै सड्डिय ॥
ज दिन जनम प्रथिराज । त दिन मन कालन षड्डिय ॥
ज दिन जनम प्रथिराज भौ । त दिन भार धर उत्तरिय ॥
बतरीय अंस अंसन क्रमम । रची जुगें जुग बत्तरिय ॥
छं० ॥ ६८८ ॥ रू० ॥ ३४९ ॥

---

३४७ पाठान्तर-सोमेस । गयपुर । ढुंढां धारीय । भइ सुद्धि गंध्रवन । गंधृवन । पढिय । रैंन । रैनि । जांनि । लयौ । लीयो । वालिक्र । वालक्र । सुर । सड्डिय । गैंन वैन । घसद । गैंन । वैंन घन सद । सुद्ध जोगीन जय दिट्ठीय । सतं । सुर । जोति । सन ॥

† ये दोनो तुक स० १८४५ की पुस्तक में नहीं हैं ॥

* यह तुक हमारे पास की किसी भी पुस्तक में नहीं है ॥

३४८ पाठान्तर-वलि । सिल । धारीय । रंजनिय । गंध्रुव । धारीय । लीयौ । प्रिथीराज । दांन । कनवज । दैस । गजन । पटन । पट्टन । किलकलं । कालक नीय ॥

३४९ पाठान्तर-दिनि । जनमि । प्रिथीराज । परिग वत्तह कनवज्जह । जनमी । गंजन पुर भंजन । गजन पुर भजह । जा । ता । वे । सट्टीय । जनमी । ता । जनिमि । भय । जद्दिन जनंम प्रथिराज भुम्र । भुय । ता । उतरिय । अवतरिय । अवतरीय । जुगे । जुग । बतरीय ॥

अनंगपालजी का अपनी पुत्री के पुत्र को देखना और उत्सव करना ॥

कवित्त ॥ अनग पुह्वै नरेस। व्यास जग जोति बुलाइय ॥
लगन लिद्धि अनुजा सुत। नाम चिह्नु चक्क चलाइय ॥
पुप्फ पानि धरि धूप। पिख्य पाइन दो अंसह ॥
कलि अवतार कुलाह। अंसपति पारन कंसह ॥
बहु जुद्ध रुद्र कलि जुग्ग बर। ध्रित्त सित्त दैनन भिरन ॥
कवि चंद दिली थह कारने। इह अपुब्ब अवतार लिन ॥
छं० ॥ ६८९ ॥ रू० ॥ ३५० ॥

पुत्री पुत्र उछाह। दान मानह घन दिद्धिय ॥
धाम २ * गावत धमारि। मनहु अछि वन मनि लिद्धिय ॥
कनवज जैचँद मात। भयौ संभरि वहनी सुत ॥
तिन पवंन दुज पठिय। थार जर चीर थपिय थुत ॥
पहिराइ परीघह दान दुज। क्रिय समाप सब्बन विथरि ॥
दस दिवस रष्षि अप्पन अवर। अति उछाह आनंद करि ॥
छं० ॥ ६९० ॥ रू० ॥ ३५१ ॥

---

* इस को कोई नई बात नहीं समझना चाहिये किन्तु बहुत पुरानी रीति है कि काव्य में जहां शब्द दो वार प्रयोग होता है और दो वार उस का पृथक् २ प्रयोग करने से छंद टूटता हो तो उस को एक वार लिख कर उसके आगे २ का अंक कर देते हैं और उस में अभिप्राय यह रहता है कि उसको गद्य मे करने के समय अथवा उसका अर्थ करते समय उस शब्द को दो वार प्रयोग कर लेना कि उसके गौरव का नाश न हो जाय। ऐसे प्रयोग प्राचीन कवियों के काव्यों में आते हैं परन्तु अब लोगों ने उनके स्थानों में नये पाठ धर दिये हैं और इस सूक्ष्म कारण पर ध्यान नहीं दिया है। किन्तु गद्य मे तो अब तक यह रीति भले प्रकार प्रचलित है ॥

३५०–५१ पाठान्तर अनगपाल। पुहवी। योति। बुलाईय। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। नाम चिहु चक्र चलाइय चलाईय। पुप्फ पानि। पिय। पायन। दो। [illegible]। [illegible]। [illegible] बहु। जुदु। जुग्ग। जुग। भ्यत। ध्रित सित। देरन। भिरिय। [illegible]। [illegible] ॥ ३५० ॥ दान। मान दिद्दीय। धाम धाम। धमारि। [illegible]। कनवजह। कनवज्जह। जैचंद। जेचंद। पिता [illegible] सुत। [illegible]। [illegible]। पुति। थुति। पहिराय। परिग्गह। परिगह दान। [illegible]। [illegible]। दिस। [illegible]। अपन ॥

पृथ्वीराजजी का जन्म होना सुन कर सोमेसजी का उत्सव करना॥

दूहा ॥ सुनि सोमेस वधाइ दिय। द्वै गै चीर गुराव ॥
अति उछाह अनंद भरि। न्रप सुप चढ्ढिय आव ॥
छं० ॥ ६९१ ॥ रू० ॥ ३५२ ॥

सोमेसजी का पृथ्वीराजजी को अपने घर लाने को कहना॥

दूहा। तब बुलाय सोमेस बर। लोहानौ अरु चंद ॥
लै आवहु अजमेर घर। पचौतै घरच सु इंद ॥
छं० ॥ ६९२ ॥ रू० ॥ ३५३ ॥

सोमेसजी का पृथ्वीराजजी को अजमेर ले आना॥

दूहा ॥ करि आनौ * उछ्छाह किय। चलिय राज अजमेर ॥
सहस बाजि द्वै सुभर बर। सत्त सषी मनि मेर ॥
छं० ॥ ६९३ ॥ रू० ॥ ३५४ ॥

पृथ्वीराजजी का जन्म संवत् और उनके प्रागट्य का हेतु॥

दूहा ॥ एकादस सै पंच दह। विक्रम साक अनंद ॥
तिहि रिपु जय पुर हरन कौं। भय प्रिथिराज नरिंद ॥
छं० ॥ ६९४ ॥ रू० ॥ ३५५ ॥

पथ्वीराजजी के शाक की संज्ञा का सूत्ररूप कवि का वाक्य॥

दूहा ॥ एकादस से पंच दह †। विक्रम जिम ध्रमसुत्त ॥
चतिय साक प्रथिराज कौ। लिष्यौ विप्र गुन गुप्त ॥
छं० ॥ ६९५ ॥ रू० ॥ ३५६ ॥

---

३५२ पाठान्तर-दीय। द्वे। गे। वीर। भर। मुंष। चढिय। आव॥

३५३ पाठान्तर-चलाय। सौमेस। लोहंनौ। पुर गज्जब अति आसनह। महन तथ कवि चंद पुर गज्जन अति हरि आसनह। पुहन तथ कवि चंद। आवहु। घर।

* स्त्री को उसका पति अथवा पति के सगे सबन्धी आदि उसके पिता के घर से अपने घर लाते हैं वह आना अथवा आनो कहलाता है॥

३५४ पाठान्तर-उछाह। कीय। चलीय। द्वे। वर सत। मति। मेर॥

३५५ पाठान्तर-एकादस। से। सें। शाक। तिह रिपु पुर जय हरन कों। हुंअ। हुय। भे। पृथ्वीराज॥ बूंदीवाली सं० १९४५ की पुस्तक में इसके स्थान में ३५६ रूपक है और उस के स्थान में यह है॥

†इसकी पहिली आधा तुक का पाठ हमारे पास की सब पुस्तकों में "एकदस समयै सु कृत" करके है किन्तु जो हमने रक्खा है वह बूंदी राज की पुस्तक से उद्धृत किया है।

३५६-पाठान्तर-एकादस। समत्रै। समयै। ध्रंम। सुत। त्रीयधि। त्रीयनि। शाक। पृथीराज। प्रिथीराज। कों॥

इन रूपक ३५५ और ३५६ पर हम यह टिप्पण अत्यन्त आनन्द के साथ लिखकर हिन्दी भाषा के महा कवि चंद बरदाई की संवत् सबन्धी बडी कठिनता के इस शोध को पुरातत्व वेत्ताओं की सेवा में भले प्रकार विचार करने को उपस्थित करते हैं। यद्यपि हमारे ज्योतिष शास्त्रादि के अच्छे अच्छे विद्वान इष्ट मित्रों मे से कितनेक महाशय कि जिनको यह शोध विदित हो गया है हमको First discovery प्रथम शोध करने का मान देते हैं किन्तु हम उनकी परम प्रीति और न्याय बुद्धि के साथ गुण ग्राहकता के लिये अत्यन्त आभारी होकर यह कहते हैं कि जब अन्य पुरातत्ववेत्ता विद्वान् भी हमारे इस शोध को उसके गुण दोषों का अन्वेषण करके स्वीकार करेंगे तब हम अपने को सर्वरीत्या कृत कृत्य समझेंगे।

अब आप चंद की संवत् संबन्धी कठिनता को इस प्रकार से समझने का प्रयत्न करें कि प्रथम तो रूपक ३५५ को बहुत ध्यान देकर पढें। तदनन्तर उसका अन्वय करके यह अर्थ करें कि [एकादस से पंचदह] ग्यारह से पंदरह [अनन्द विक्रम साक अथवा विक्रम अनन्द साक] अनन्द विक्रम का साक अथवा विक्रम का अनन्द साक [तिहि] कि जिसमें [रिपुजय] शत्रुओं को विजय करने [पुरहरन] और नगर अथवा देश देशान्तरों को हरन करने [को] को [प्रिथिराज नरिंद्र] पृथ्वीराज नामक नरेंद्र [भय] उत्पन्न हुए ॥

तदनन्तर इसके प्रत्येक शब्द और वाक्यखंड पर सूक्ष्म दृष्टि देकर अन्वेषण करें कि उसमें चंद की (Archaic style) प्राचीन गूढ भाषा होने के कारण संवत् सबन्धी कठिनता कहा और क्या घुसी हुई है। कवि के प्रतिकूल नहीं किन्तु अनुकूल विचार करने पर आपकी न्याय-बुद्धि झट खोज कर पकड लावेगी कि विक्रम साक अनन्द वाक्यखंड में—और उसमें भी अनन्द शब्द में हम लोगों को इतने वर्षों से गडबडा कर भ्रमा रखनेवाली चंद की लाघवता भरी हुई है। इतनी बात हाथ में आ जाने पर अनन्द शब्द के अर्थ की गहराई को ध्यान में लेकर पक्षपात रहित विचार से निश्चय कीजिये कि यहां चंद ने उसका क्या अर्थ माना है। निदान आपको समझ पडेगा कि अनन्द शब्द का अर्थ यहां चंद ने केवल नव-सख्या-रहित का रक्खा है अर्थात् अ-रहित और नन्द=नव ९। अब विक्रम साक अनन्द को क्रम से अनन्द विक्रम साक अथवा विक्रम अनन्द साक करके उसका अर्थ करो कि नव-रहित विक्रम का शक अथवा विक्रम का नव-रहित शक अर्थात १००-९=९०। ९१ अर्थात् विक्रम का वह शक कि जो उसके राज्य के वर्ष ९०। ९१ से प्रारंभ हुआ है। यहां थोडी सी और उत्प्रेक्षा करके यह भी समझ लीजिये कि हमारे देश के ज्योतिषी लोग तो सैकडों वर्षों से यह कहते चले आते हैं और आज भी वृद्ध लोग कहते है कि विक्रम के दो संवत थे कि जिनमें से एक तो अब तक प्रचलित है और दूसरा कुछ समय तक प्रचलित रहकर अब अप्रचलित होगया है। और हमने भी जो कुछ इस के विषय की विशेष दंतकथा कोटा राज्य के विद्वान कविराज श्री चंडीदानजी से सुनी थी वह इस महाकाव्य की मरता में तैसी की तैसी मिल रही है अतएव विदित हो कि विक्रम के दो संवत् हैं। एक तो सनन्द जो आज कल प्रचलित है और दूसरा अनन्द जो इस महाकाव्य में प्रयोग में आया है। दोनों के मध्य इतना [illegible] का पता। और भी अन्वेषण कर लीजिये कि हमारे शोध के अनुसार जो ९०। ९१ वर्षों का अन्तर इन दोनों संवतों का प्रत्यक्ष हुआ है उसके अनुसार इस महाकाव्य के संवत् मिलते हैं कि नहीं। पाठकों को विशेष श्रम न पड़े अतएव हम स्वयम् नीचे के कोष्टक में कुछ संवतों को मिला कर दिखाते हैं -

पृथ्वीराजरासे के अनन्द संवतों का कोष्टक।

पृथ्वीराजजी का	रासो में लिखे अनन्द संवत् में	सनन्द और अनन्द सवतों का अंतर जोड़ो	यह सनन्द सवत् हुआ उस में	पृथ्वीराजजी की शेष वय जोड़ो	परीक्षा के लिये अंतिम लड़ाई का सिद्ध संवत्
जन्म	११९५	९० । ९१	१२०५ । ६	४३	१२४८ । ९
दिल्ली गोदजाना	११२२ *	९० । ९१	१२१२ । ३	३६	१२४८ । ९
कैमास जुद्ध	११४०	९० । ९१	१२३० । १	१८	१२४८ । ९
कन्नोज जाना	११५१	९० । ९१	१२४१ । २	७	१२४८ । ९
अंतिम लड़ाई	११५८	९० । ९१	१२४८ । ९	०	१२४८ । ९

जो कुछ हमने यहा तक कहा है उससे और सब बातें तो हमारे पाठकों के मन में बैठ गई होगी किन्तु ३५५ रूपक में जो अनन्द शब्द प्रयोग हुआ है उसमे किसी किसी को कुछ संदेह रहेगा, अतएव हम फिर उसके विषय में कुछ अधिक कहते है। देखो संशय करना कोई बुरी बात नहीं है किन्तु वह सिद्धान्त का मूल है। हमारे गौतम ऋषि ने अपने न्याय-दर्शन में प्रमाण और प्रमेय के पीछे सशय को एक पदार्थ माना है और उसके दूर करने के लिये ही मानो सब न्यायशास्त्र रचा गया है। यदि **अनन्द** का नव-सख्या-रहित का अर्थ किसी की सम्मति मे ठीक नहीं जंचता हो तो उससे इस स्थल में बहुत अच्छी तरह घटता हुआ कोई दूसरा अर्थ बतलाना चाहिये। परतु बात तब है कि वह सर्वतंत्र सिद्धान्त(universally true)से उसी तरह सिद्ध हो सकता हो कि जैसे हमने यहा अपना विचार सिद्ध कर दिखाया है। सब लोग जानते हैं कि हमारे इस शोध के पहिले तक युवा और मध्य वय के कोई कोई कवि लोग इस अनन्द संज्ञा वाचक शब्द का गुण अर्थ शुभ (auspicious)का करते रहे हैं और चारण जाति के महामहोपाध्याय कविराज श्रीश्यामलदासजी ने भी अपने इस महाकाव्य के खंडन-ग्रथ में यही अर्थ माना है। परंतु विद्वानों के विचारने और न्याय करने का स्थल है कि इस दोहे में आनन्द पाठ नहीं है और न चंद के लक्षण के अनुसार वह बन सकता है किन्तु स्पष्ट अनन्द पाठ है। यदि तहा संज्ञा वाचक आनन्द पाठ भी होता तो भी उसका गुण वाचक शुभका अर्थ नहीं हो सकता था परंतु सस्कृत भाषा का थोडासा ज्ञान रखनेवाला भी यह जान सकता है अथवा जिनके पास सस्कृत भाषा के कोशों की पुस्तकें है वे उनके बल से भी जान सकते हैं कि वाचस्पत्यवृहत् सस्कृताभिधान के पृष्ठ १४९ और शब्दार्थचिंतामणि के पृष्ठ ६९ में स्पष्ट अनन्द के यह अर्थ लिखे हैं कि "त्रि० न नन्दयति नन्द, आनन्दयितृभिन्ने, अनानन्दे असुखे" इत्यादि। देखो जब अनन्द शब्द का सत्य अर्थ दुःख का है तो फिर क्या सुख और शुभ का अर्थ करना अयोग्य नहीं है। यदि कवि लोग जैसे अलंकार और नायका भेद की सूक्ष्मता जान लेने के लिये परिश्रम करते हैं वैसे ही जो सूक्ष्म दृष्टि देकर देखते तो झट जान लेते कि यहा कवि गूढार्थ में संवत् का भेद बता रहा

* यह संवत् हमने पृथ्वीराजजी के जो पखाने हमको मिले हैं उनकी छाप में लिखा हुआ है उनसे ग्रहण किया है किन्तु रासो की अब तक प्राप्त हुई पुस्तकों में तो किसी में ११३८ और किसी में ११२८ लिखा मिलता है॥

है और **सुख** अथवा **दुःख** और **शुभ** अथवा **अशुभ** के स्थूल अर्थों को प्रयोग में नहीं लेता है। व्याकरण शास्त्र की रीति से भी **आनन्द** और **अनन्द** शब्दों की प्रयोग सिद्धि में अन्तर है। अब हमारे अर्थ की पुष्टि में विचार कीजिये—

१ प्रथम तो विचार करने के पहिले ऐसे ऐसे दुराग्रहों से अपने अपने हृदय को अपवित्र नहीं कर रखना चाहिये कि चन्द ऐसा मूर्ख था कि उसे अनुस्वार और विसर्ग तक का ज्ञान न था और न वह संस्कृतादि किसी भाषा में व्युत्पन्न पंडित था और जितनी भूलें इस महाकाव्य में मिलती हैं वह सब उसने ही की हैं॥

२ दूसरे देखो कि कवि यहां विक्रम के शक की संख्या के विशेषण में **अनन्द** शब्द का प्रयोग करता है और तहां संख्या वाचक अर्थ का ही प्रसंग है। और इस बात की भी कुछ अत्यावश्यकता नहीं है कि हम यहां **अनन्द** को **आनन्द** का अपभ्रंश आदि समझकर **शुभ** का ही अर्थ करें क्योंकि कवि इस के साथ ही रूपक ३५६ में स्पष्ट "**तृतीय साक पृथिराज कौं लिष्यौ**" कहता है। और संज्ञा वाचक **आनन्द** का अपभ्रंश रूप **अनन्द** कि जो तथापि संज्ञा वाचक ही होगा, उसका गुण वाचक अर्थ **शुभ** (auspicious) कदापि नहीं बन सकता॥

३ तीसरे इस स्थल के प्रसंग से **अनन्द** शब्द को **अ** + **नन्द** से बना मानना चाहिये। और **अ** का यहां **रहित** अर्थ करने के लिये इस श्लोक को प्रमाण में लेना चाहिये :—**तत्सादृश्यमभावश्च, तदन्यत्वं तदल्पता। अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थाःषट प्रकीर्त्तिताः**"॥ और **नन्द** के नव संख्या वाचक अर्थ के ग्रहण करने को वैसे ही समझे तो रूपि शब्द ७ सात के वाचक की भांति "**नव नन्दा भविष्यन्ति-चाणक्यो यान् हनिष्यति**' स्क॰ पु॰। तथा श्रीधर स्वामी कृत भागवत की टीका मे **तेषां सपुत्राणां नवसंख्यत्वेन तत्तुल्य संख्या**" के अर्थ स्पष्ट ही हैं अतएव अधिक प्रमाण नहीं लिखते हैं॥

४ चौथे चन्द का अनन्द शब्द प्रयोग करने से उस का यह आन्तरीय अभिप्राय होना ज्ञात होता है कि विक्रम का जो प्रचलित संवत् है उसकी मूल संख्या में संकर राजा नन्द का कुछ समय मिला हुआ है अर्थात् वह संवत् जिस गणित के अनुसार है वह उक्त नन्द के समय सहित थी और चन्द ने जिस प्रकार से काल निरूपण किया है वह नन्द के समय रहित है अर्थात् चन्द का लिखा विक्रमी संवत शुद्ध विक्रमी है। इसी लये हमने इन दोनो संवतो को **अनन्द** और **सनन्द** नामो से इस टिप्पणी भर मे ग्रहण किया है। यदि कोई मनुष्य यह हठ कर बैठे कि हमको चन्द का अनन्द संवत् केवल प्रत्यक्ष प्रमाणो से ही सिद्ध कर दिखाओ तो क्या यह हमारा उसको उत्तर देना अन्यथा होगा कि जिस प्रमाण रूप प्रचलित विक्रमी संवत की अपेक्षा से तुम चन्द के लिखे **अनन्द** संवत् रूपी प्रमेय को सिद्ध करना चाहते हो तो प्रथम तुम अपने प्रमाण को वैसे ही प्रत्यक्ष प्रमाणो से निर्दोषी सिद्ध कर दिखाओ तो फिर हम उसको प्रमाण रूप मानकर चन्द के **अनन्द** संवत् रूपी प्रमेय को सिद्ध कर उसकी अशुद्धता समझ लें क्योंकि यह दावा तुम्हारा है कि चन्द का लिखा संवत अशुद्ध है। अतएव वादी के करने का काम हम ही करके प्रचलित विक्रमी संवत् की सत्यता की परीक्षा करते हैं। परीक्षा करने के पहिले यह सिद्ध हुई बात स्मरण कर लेनी चाहिये कि आज तक सर विलियम जोन्स, मिस्टर सैम्युएल डेविस, कोलब्रुक, बेन्टली, हाल, लैसन, डाक्टर [illegible], [illegible], डाक्टर हंटर और डाक्टर [illegible] आदि ने [illegible] विक्रमी संवत का ठीक समय निश्चय करने के लिये कई एक प्रकारों से [illegible] और [illegible] आदि ने [illegible] [illegible]

कर लेने के कि वर्तमान विक्रमी में से १३५ वर्ष घटाने से शालिवाहन का शक और ५६ वा ५७ घटाने से ईसवी सन् और इसी प्रकार सेअन्य सवत् भी और इसी हिसाब से ईसा मसीह के ५६ वा ५७ वर्ष पहिले कोई विक्रम नाम का राजा हुआ था कि जिसका यह संवत् प्रचलित है, न तो कोई और फल निकला है और न कोई वैसा प्रामाणिक प्रत्यक्ष प्रमाण किसी को मिला है और न कोई आज दे सकता है कि जैसा विचारे स्वर्गवासी चंद कवि के लिखे सवतो को सिद्ध करने के लिये बडी धूम धाम से हम चाहते हैं। क्या यह न्याय है कि विक्रम के प्रचलित सवत् को सिद्ध करने के समय तो हम गोलमाल कर जावें और चंद के संवत् को सिद्ध करने के लिये दूसरे से प्रत्यक्ष प्रमाण मांगे ? फिर विचार कीजिए कि संस्कृत भाषा के कोषादि में जो यह- **तत्र शककारकस्य विक्रमादित्यस्य हननात् शालिवाहनस्य शककर्तृत्वम्"** लिखा प्राप्त होता है और आईन अकबरी के ग्रंथकर्त्ता ने भी यही आशय ग्रहण किया है। इस से विक्रमादित्यजी का मरण तो १३५ में होना निश्चित ही है तथा १३५ वर्ष तक राज्य करना भी स्वतः सिद्ध है। अब रहा यह कि विक्रम के सवत् का प्रारंभ उनके जन्म से अथवा गद्दी पर बैठने के दिन से अथवा गद्दी पर बैठने पीछे किसी बड़े कार्य के करने के दिन से हुआ है यदि ज्योतिर्विदाभरण को कदाचित् सत्य होने की अपेक्षा असत्य ही मानें और उसे किसी भी समय में बना क्यों न ग्रहण करे तथापि उसके अतिरिक्त कोई अन्य प्रमाण दृष्टि में नहीं आता कि जिसके इस -"निहन्ति यो भूतलमडले शकात्। सपंचकोट्यब्जदलप्रमान् कलौ ॥ राजपुत्रः शककारको भवेत्। नृपाधिराज्ये स्तुतशाककर्तृ हा॥" वाक्य के अनुसार पचपन करोड़ शकों को अथवा किसी शक-कर्त्ता को मारने से विक्रमी सवत् का प्रारभ होना ही अधिक संभवित प्रतीत होता है। तदनन्तर यह अनुमान करना भी अनुचित नहीं है कि विक्रम ने कुछ अपने बालकपन में तो ऐसा बडा साका किया ही न होगा किन्तु उस समय उसकी कम से कम २५ वर्ष की वय तो भी होगी कि जिससे १३५+२५=१६० एक सौ साठ वर्ष की सब वय सिद्ध होती है। निदान उसको हम पृथ्वीराजजी और समरसीजी के ९२ वर्ष तक न जी सकने के अनुमान की अपेक्षा से बहुत ही असभव समझ सकते हैं। सारांश यही है कि चंद ने विक्रम की १६० वर्ष की वय की असंभाव्यता से जो अपने लिखे सवतो को **अनन्द** संवत् संज्ञा दी है वह अन्यथा नहीं है और प्रचलित विक्रमी सवत् कि जिसको हम **सनन्द** कहते हैं उसमें अवश्यमेव कुछ **नन्द** का समय मिला हुआ है और वह चंद के संवत् को दोष देने जैसा स्वयम् निर्दोषी प्रमाण रूप नहीं है। जब कि प्रचलित विक्रमी संवत् अपने को भले प्रकार सिद्ध कर प्रमाण नहीं दे सकता तो वह जिस प्रकार से आज माना जाता है उसी प्रकार पृथ्वीराजरासो के संवत् ९०। ९१ वर्ष के अन्तर के माने जाने में भी कुछ हानि दृष्टि नहीं आती। हमको एक बडा शोक इस बात का है कि यदि विद्वानो ने रूपक ३५५ और ३५६ को एक दूसरे की सगति लगाकर विचारा होता और रूपक ३५६ को बिलकुल हीं न छोड़ दिया होता तो रासो के सवतो के विषय में संदेह ही नहीं हुआ होता क्योंकि वे दोनों रूपक मानों खड़े हुए पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि हमारे आशय ये हैं॥

५ पांचवें चंद के नवें नन्द के समय को नहीं ग्रहण करने का एक यह भी प्रबल कारण सब के ध्यान में आ सकने जैसा है; कि महानन्द को नौ पुत्र थे, आठ तो विवाहिता रानियो से और एक चंद्रगुप्त नामक मुरा नाम की नाइन उपस्त्री से। हमारी इस बात को भी स्मरण में रखना चाहिये कि मुरा नाम की नाइन से उत्पन्न होने के कारण चंद्रगुप्त और उस के वंशज मौर्य्य कहलाये हैं। अन्य देश देशान्तर के मनुष्यों की अपेक्षा हमारे स्वदेशीय बन्धुओं के

समीप कुलीन और अकुलीनों में परस्पर डाह वैर का होना कोई आश्चर्यदायक बात नहीं है क्योंकि यह व्यवहार सदा से चला आया है और आज भी सब छोटे बड़ों में विद्यमान है अर्थात् कोई अकुलीन चाहे जितनी उन्नति की दशा को क्यों न प्राप्त हो जाय और कोई कुलीन चाहे कैसा दरिद्री भी क्यो न हो जाय किन्तु वह कुलीन उस अकुलीन को सकर ही समझेगा। और इससे सदा दोनो में परस्पर द्वेष रह कर जो जब प्रबल होगा तब वह उस निर्बल को अवश्य नाश कर देगा और वे दोनो अपनी अपनी वंशावली में अपने अपने वैरी का नाम तक नहीं गिनेंगे। इसी कारण से हमारे आर्य-काल-निरूपको (The Arya Chronologists) की भी यह शैली होगई है कि जो स्वयम् कुलीन हैं अथवा कुलीनो के पक्षपाती हैं वे उस अकुलीन राजा के नाम और समय को अपनी सपादित ख्यात में नहीं लिखते हैं और उसके समय आदिक को या तो उसके आगे पीछे के किसी कुलीन राजा में मिला देते हैं अथवा ऐसे स्थलो में यह लिख देते हैं कि इतने समय तक "कटार अथवा तरवारि ने राज किया इत्यादि"। इसके अनेक उदाहरण राजपुत्रो की वंशावलियो में मिल सकते हैं परन्तु एक ऐसा आधुनिक उदाहरण है कि जिस को सर्व साधारण जानते हैं वह मेवाड राज की वंशावली में **बनवीर** का है कि उससे ही विचार देखिये। क्या मेवाड देश के परम कुलीन महाराणाजी साहब और क्या और कुलीन उमराव सरदार और पासवानादि लोग और क्या हम जो कदाचित् मेवाड की ख्यात (Chronicles) लिखे तो बनबीर का नाम और उस का समय अपनी कुलीन अवली में न तो किसी २ ने मिलाया है और न हम मिलावेंगे किन्तु उसका वृत्त सब के जानने के लिये हम एक पृथक टिप्पण में लिख देंगे कि जिससे हम को पुरातत्ववेत्ता वृत्त का चोर न ठहरावें और जो कोई कदाचित् हम को ऐसा करने के कारण मुतअस्सिब अर्थात् तुरफदारी भी कहेंगे तो हम उसको अपनी एक अति प्रिय पदवी समझकर उस पर अभिमान करेंगे। इसी लिये कुलीन क्षत्रियो के अभिमानी चंद बरदाई ने विक्रमादित्यजी के समय में से अकुलीन मौर्य्य समय ९० । ९१ वर्ष का ह्रास करके शुद्ध क्षत्रिय समय ग्रहण किया है और उसका नाम विक्रम का **अनन्द** सवत् अर्थात् पृथ्वीराजजी का तृतीय शक रक्खा है। हम यह यहा तक भी मान कर कह सकते है कि यदि आज इस विषय को समर्थन करने को कोई भी प्रमाण न मिले तथापि चद की निज-काल निरूपण शैली तो स्वयम् सिद्ध ही है॥

६ छठें चंद के प्रयोग किये हुए विक्रम के **अनन्द** सवत का प्रचार बारहवें शतक तक भी राजकीय व्यवहार की लिखावटो मे भी हमको प्राप्त हुआ है अर्थात् हम को शोध करते करते अपने स्वदेशी अंतिम बादशाह पृथ्वीराजजी और रावल समरसीजी और महाराणी पृथा बाईजी के कुछ पट्टे परवाने मिले हैं कि उनके सवत् भी इस महाकाव्य मे लिखे सवतो से ठीक ठीक मिलते है और पृथ्वीराजजी के परवानो मे जो मुहर अर्थात् छाप है उसमे उनके राज्याभिषेक का स० ११२२ लिखा है। इन परवानो के प्रतिरूप अर्थात् [illegible] हमने अपनी ओर से [illegible] एशियाटिक सोसाईटी बंगाल को भेट करने के लिये अपने स्वदेशी परम प्रसिद्ध [illegible] राव बहादुर राजा राजेन्द्रलाल जी मित्र एल० एल० डी०, [illegible] और उनके कृत्रिम होने के विषय मे उनसे बहुत कुछ [illegible] राजा साहब अकस्मात् रोग ग्रस्त न हो गये होते तो उन्होंने [illegible] हुए [illegible] लेख तो अपने [illegible] [illegible] इन परवानो के अतिरिक्त हम को और भी [illegible]

कर लेने के कि वर्तमान विक्रमी में से १३५ वर्ष घटाने से शालिवाहन का शक और ५६ वा ५७ घटाने से ईसवी सन् और इसी प्रकार सेअन्य सवत् भी और इसी हिसाब से ईसा मसीह के ५६ वा ५७ वर्ष पहिले कोई विक्रम नाम का राजा हुआ था कि जिसका यह संवत् प्रचलित है, न तो कोई और फल निकला है और न कोई वैसा प्रामाणिक प्रत्यक्ष प्रमाण किसी को मिला है और न कोई आज दे सकता है कि जैसा विचारे स्वर्गवासी चंद कवि के लिखे सवतो को सिद्ध करने के लिये बडी धूम धाम से हम चाहते हैं। क्या यह न्याय है कि विक्रम के प्रचलित सवत् को सिद्ध करने के समय तो हम गोलमाल कर जावें और चंद के संवत् को सिद्ध करने के लिये दूसरे से प्रत्यक्ष प्रमाण मांगे? फिर विचार कीजिए कि सस्कृत भाषा के कोषादि में जो यह- तत्र शककारकस्य विक्रमादित्यस्य हननात् शालिवाहनस्य शकर्तृत्वम्" लिखा प्राप्त होता है और आईन अकबरी के ग्रथकर्त्ता ने भी यही आशय ग्रहण किया है। इस से विक्रमादित्यजी का मरण तो १३५ में होना निश्चित ही है तथा १३५ वर्ष तक राज्य करना भी स्वतः सिद्ध है। अब रहा यह कि विक्रम के संवत् का प्रारंभ उनके जन्म से अथवा गद्दी पर बैठने के दिन से अथवा गद्दी पर बैठने पीछे किसी बड़े कार्य के करने के दिन से हुआ है। यदि ज्योतिर्विदाभरण को कदाचित् सत्य होने की अपेक्षा असत्य ही मानें और उसे किसी भी समय में बना क्यों न ग्रहण करें तथापि उसके अतिरिक्त कोई अन्य प्रमाण दृष्टि में नहीं आता कि जिसके इस-"निहन्ति यो भूतलमंडले शकात्। सपंचकोट्यब्जदलप्रमान् कलौ॥ स राजपुत्रः शककारको भवेत्। नृपाधिराज्ये ध्रुतशाककर्तृ हा॥" वाक्य के अनुसार पचपन करोड शकों को अथवा किसी शक-कर्त्ता को मारने से विक्रमी संवत् का प्रारंभ होना ही अति संभवित प्रतीत होता है। तदनन्तर यह अनुमान करना भी अनुचित नहीं है कि विक्रम ने कुछ अपने बालकपन में तो ऐसा बडा साका किया ही न होगा किन्तु उस समय उसकी कम से कम २५ वर्ष की वय तो भी होगी कि जिससे १३५ + २५=१६० एक सौ साठ वर्ष की सब वय सिद्ध होती है। निदान उसको हम पृथ्वीराजजी और समरसीजी के ९२ वर्ष तक न जी सकने के अनुमान की अपेक्षा से बहुत ही असंभव समझ सकते हैं। सारांश यही है कि चंद ने विक्रम की १६० वर्ष की वय की असंभाव्यता से जो अपने लिखे सवतों को अनन्द संवत् संज्ञा दी है वह अन्यथा नहीं है और प्रचलित विक्रमी संवत् कि जिसको हम सनन्द कहते है उसमें अवश्यमेव कुछ नन्द का समय मिला हुआ है और वह चंद के संवत् को दोष देने जैसा स्वयम् निर्दोषी प्रमाण रूप नहीं है। जब कि प्रचलित विक्रमी संवत् अपने को भले प्रकार सिद्ध कर प्रमाण नहीं दे सकता तो वह जिस प्रकार से आज माना जाता है उसी प्रकार पृथ्वीराजरासे के संवत् ९० । ९१ वर्ष के अन्तर के माने जाने में भी कुछ हानि दृष्टि नहीं आती। हमको एक बडा शोक इस बात का है कि यदि विद्वानो ने रूपक ३५५ और ३५६ को एक दूसरे की सगति लगाकर विचारा होता और रूपक ३५६ को बिलकुल हीं न छोड दिया होता तो रासे के संवतो के विषय में संदेह ही नहीं हुआ होता क्योंकि वे दोनों रूपक मानों खड़े हुए पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि हमारे आशय ये हैं॥

५ पांचवें चंद के नवें नन्द के समय को नहीं ग्रहण करने का एक यह भी प्रबल कारण सब के ध्यान में आ सकने जैसा है; कि महानन्द को नौ पुत्र थे, आठ तो विवाहिता रानियो से और एक चंद्रगुप्त नामक मुरा नाम की नाइन उपस्त्री से। हमारी इस बात को भी स्मरण में रखना चाहिये कि मुरा नाम की नाइन से उत्पन्न होने के कारण चंद्रगुप्त और उस के वंशज मौर्य्य कहलाये हैं। अन्य देश देशान्तर के मनुष्यों की अपेक्षा हमारे स्वदेशीय बन्धुओं के

समीप कुलीन और अकुलीनों में परस्पर डाह वैर का होना कोई आश्चर्यदायक बात नहीं है क्योंकि यह व्यवहार सदा से चला आया है और आज भी सब छोटे बड़ों में विद्यमान है अर्थात् कोई अकुलीन चाहे जितनी उन्नति की दशा को क्यों न प्राप्त हो जाय और कोई कुलीन चाहे कैसा दरिद्री भी क्यों न हो जाय किन्तु वह कुलीन उस अकुलीन को सकर ही समझेगा । और इससे सदा दोनो में परस्पर द्वेष रह कर जो जब प्रबल होगा तब वह उस निर्बल को अवश्य नाश कर देगा और वे दोनो अपनी अपनी वंशावली में अपने अपने वैरी का नाम तक नहीं गिनेंगे । इसी कारण से हमारे आर्य-काल-निरूपकों (The Arya Chronologists) की भी यह शैली होगई है कि जो स्वयम् कुलीन हैं अथवा कुलीनो के पक्षपाती हैं वे उस अकुलीन राजा के नाम और समय को अपनी संपादित ख्यात में नहीं लिखते हैं और उसके समय आदिक को या तो उसके आगे पीछे के किसी कुलीन राजा में मिला देते हैं अथवा ऐसे स्थलो में यह लिख देते हैं कि इतने समय तक "कटार अथवा तरवारि ने राज किया इत्यादि" । इसके अनेक उदाहरण राजपुत्रो की वंशावलियो में मिल सकते हैं परन्तु एक ऐसा आधुनिक उदाहरण है कि जिस को सर्व साधारण जानते है वह मेवाड़ राज की वंशावली में **बनवीर** का है कि उसमे ही विचार देखिये । क्या मेवाड़ देश के परम कुलीन महाराणाजी साहब और क्या और कुलीन उमराव सरदार और पासवानादि लोग और क्या हम जो कदाचित् मेवाड़ की ख्यात (Chronicles) लिखे तो बनवीर का नाम और उस का समय अपनी कुलीन अवली मे न तो किसी २ ने मिलाया है और न हम मिलावेंगे किन्तु उसका वृत्त सब के जानने के लिये हम एक पृथक टिप्पण में लिख देंगे कि जिसमे हम को पुरातत्ववेत्ता वृत्त का चोर न ठहरावें और जो कोई कदाचित् हम को ऐसा करने के कारण गुरुप्रतिमाज अर्थात् गुरुघाती भी कहेंगे तो हम उसको अपनी एक अति प्रिय पदवी मानकर उस पर अभिमान करेंगे । इसी लिये कुलीन क्षत्रियों के अभिमानी चंद बरदाई ने विक्रमादित्य जी के समय में से अकुलीन मौर्य्य समय ९० । ९१ वर्ष का ह्रास करके शुद्ध शाकेश समय ग्रहण किया है और उसका नाम विक्रम का अनन्द संवत् अर्थात् पृथ्वीराजजी का तृतीय शक रक्खा है । हम यह यहां तक भी मान कर कह सकते हैं कि यदि आज इस विषय को समर्थन करने को कोई भी प्रमाण न मिले तथापि चंद की निज-काल निरूपण शैली तो स्वयम् सिद्ध ही है ।

हम उस समय विद्वत् मंडली में प्रवेश करेंगे कि जब कोई विद्वान् उनको क्रित्रिम होने का दोष देगा। देखिए जोधपुर राज्य के काल-निरूपक राजा जयचंदजी को सं० ११३२ में और शिवजी और सेतरामजी को सं० ११६८ में और जयपुर राज्यवाले पज्जूनजी को स० ११२७ में होना आज तक निःसंदेह मानते हैं और ये संवत् भी हमारे अन्वेषण किये हुए ९१ वर्ष के अंतर के जोड़ने से सनन्द विक्रमी होकर संवत काल के शोध हुए समय से मिल जाते हैं। इसके अतिरिक्त रावल समरसीजी की जिन प्रशस्तियो को हमारे मित्र महामहोपाध्याय कविराज श्यामलदासजी ने अपने अनुमान को सिद्ध करने को प्रमाण में माना है वे भी एक अन्तरीय हिसाब से (indirectly) हमारे शोध किये इस अनन्द संवत् को और उस के प्रचार को पुष्ट और सिद्ध करती है। देखिए और इन दो ध्रुवो को अपने ध्यान में रख लीजिए कि प्रथम तो रावल बापाजी के नाम पर सब ख्यात की पुस्तको में सदैव से स० १९१ लिखा चला आता है कि जिसको कर्नैल टाड साहब ने तो वल्लभी के नाश से चीतोड़ प्राप्त होने तक का समय माना है और मेवाड के छोटे छोटे लड़के तक इतना अवश्य जानते हैं कि बापाजी सं० १९१ में हुए और उन्होंने १०१ वर्ष राज्य किया अथवा उनकी वय १०१ वर्ष की हुई और ऐसे आज तक के इस बड़े निश्चय के साथ सर्वसाधारण के मानने को महामहोपाध्याय कविराजजी भी कदापि अस्वीकार नहीं कर सकते हैं। दूसरे रावल समरसीजी के नाम पर भी उसी तरह सर्व साधारण के दृढ़ निश्चय के साथ ११०६ का संवत् ख्यातिओ में लिखा हुआ बराबर चला आता है। अब हमारे पाठक उक्त सब प्रशस्तियो के सब संवत् अर्थात् १३३२, १३३५, १३४२, और १३४४ में से बापा जी के पूर्व का समय १९१ घटाकर देखें तो ११४१, ११४४, ११५१ और ११५३ पावेंगे कि जो हमारे अनन्द विक्रमी से मिलजाते हैं। क्या यह प्रशस्तिये भी हमारे अनन्द विक्रमी संवतो से आंतरीय हिसाब से नहीं मिल जाती हैं? यह क्यों मिल जाती है इस बात के भेद को हम अपनी समझ के अनुसार जानते हुए भी अभी प्रकाश नहीं करते हैं किन्तु किसी उचित समय पर उसे शास्त्रार्थ के साथ प्रकाश करके अपने मेवाड राज की वंशावली को शुद्ध और प्रतिपादन कर मेवाड देश की एक अमूल्य सेवा करेंगे॥

७ सातवें यदि कोई यह तर्क करे कि राजा नन्द के विक्रमादित्यजी से पहिले अथवा पीछे होने का मतान्तर प्राचीन समय के विद्वानो में होना कुछ भी सिद्ध हो जाय तब हम यह अनुमान कर सकते हैं कि अनन्द और सनन्द संवतों के भेद अवश्य हो सकते है। अतएव हमारा कहना यह है कि जिस किसी को इस विषय का कुछ मतान्तर हो वह एशियाटिक सोसाईटी बंगाल के स्थापन-करनेवाले सर विलियम् जोन्स साहिब (Sir William Jones) लिखित (The Chronology of the Hindus) हिन्दुओं का काल निरूपण नामक विषय के अंतिम दो तीन लेख-खंड अर्थात् फिकरे पढ़कर समझ ले [देखो एशियाटिक रिसर्चेज पुस्तक २) परन्तु स्मरण रहें कि हम राजा नन्द का विक्रम से पहिले होना अपने देश शास्त्रों के अनुसार मानते हैं॥

पाठको! रूपक ३५८ भी पुरातत्व विद्या में बड़ा उपयोगी है। उस में आपको मालूम होगा कि चंद यह तात्पर्य्य वर्णन करता है कि जिस ११०० अथवा १११५ में पृथ्वीराजजी उत्पन्न हुए है वह संख्या कैसी है कि उसी ११०० अर्थात् १११५ मे धर्म-सुत हुए थे तथा उसी ११०० अथवा १११५ में विक्रमादित्यजी भी हुए थे और उसी में अर्थात् विक्रम से ११०० अथवा १११५ वर्ष पीछे पृथ्वीराज जी हुए हैं कि जिनका यह तृतीय शक मैं ने विग्रगुप्त [ब्रह्मगुप्त]

सोमेश्वरजी के अपूर्व तप से पृथ्वीराजजी उत्पन्न हुए ॥

स्लोक ॥ सोमेश्वर महाबाहो। तस्यापूर्वं तपो गुणैः ॥
तेने पुण्यं जगज्जेता। गर्भान्ते पृथुराडयम् ॥ छं० ॥ ६९६ रू० ॥ २५७॥

सोमेश्वरजी का राव (वेन) को वधाई देना ॥

पद्धरी ॥ अनगेस पुत्ति हुअ पुत्त जन्म। विज्जल चमंकि जनु मेघ घन्म ॥
वद्धाइ राव * सोमेस दीन। इक सहस हेम हय हुकम कीन ॥ छं ६९७ ॥

को गुन कर लिखा है (ग्यो विप्र गुन गुप्त) क्या चंद यह अमूल्य पुरातत्व इस रूपक में नहीं कहता है? नहीं वह हमको निःसंदेह यही कहता हुआ दृष्टि आता है॥ यदि यहां धर्मसुत का अर्थ युधिष्ठिर का ग्रहण हो सकता है तो हमारे देशी महाकवि का विक्रम से युधिष्ठिर तक का ११०० अथवा १११५ वर्ष का अंतर मानना मिस्टर वेन्टली साहब के अनुमान ११२३ के से बहुत मिलता हुआ है अर्थात् उस में केवल २३ अथवा ८ वर्ष का ही अंतर है। और यह हमारे स्वदेशी काल निरूपकों की गणना से भी मिलता हुआ है क्योंकि ११०० अथवा १११५ युधिष्ठिर से शेमक तक तथा उससे विक्रम तक ११०० अथवा १११५ और विक्रम से पृथ्वीराजजी तक ११०० अथवा १११५ और इस गणना के अनुसार ८१४ कलिगत में युधिष्ठिर हुए। तथा चंद के कहे विप्रगुप्त कि जिसको हम ब्रह्मगुप्त होना अनुमान करते हैं उसके विषय में मिस्टर वेन्टली साहब यह कहते हैं कि वह विक्रमी ५८३ तदनुसार ५२० ई० में हुआ था। उसने ब्रह्म-कल्प की गणना का प्रकार स्थापन और प्रकाश किया था कि जिस पर आधुनिक ज्योतिष का आधार है और ऐतिहासिक संवत् भी उसी के अनुसार परिवर्तित हुए हैं (देखो एशियाटिक रिसर्चेज़ पुस्तक ८ पृष्ठ २३६-७ इस ब्रह्मगुप्त की गणित में और अन्य ज्योतिषाचार्यों के सिद्धान्तों में कुछ अन्तर है कि जिसके लिये अन्य कोई कोई इस ब्रह्मगुप्त को दोष देते हैं कि इस ने कुछ किया॥ Mr Samuel Davis के लिखित हिन्दुओं का ज्योतिष विद्या [illegible]

दिय ग्राम एक हय इक्क हथ्थ। परिग्रह प्रसाद सह कीन तथ्थ॥
नीसांन बाजि दरबार जोर। घन गर्ज्ज जान दरिया हिलोर॥ छं०॥ ६९८॥
पधाराइ राइ मुष दरस कीन। क्रित क्रम्म पुब्ब फल मान लीन॥
करि जान क्रम्म मति ग्रंथ सोधि। वेदोक्त विप्प वर बुद्धि बोधि॥ छं०॥ ६९९॥
मंगल उच्चार करि न्रत्य गान। अक्करि अलान सुर भुवन जान॥
छं०॥ ७००॥ रू०॥ ३५८॥

पृथ्वीराजजी के जन्मोत्तर गुणों का वर्णन॥

साटक॥ जन्मोत्तरि गुन जन्म राजन् वरं, चालीस वर्षं चती॥
सा भोगं धर लच्छि टिल्लति वरं, पंजाव पंचा पथं॥
इन्द्रंप्रस्थय संभरी ववरयं, सोमेसजा जोनयं॥
भुंक्तं मुत्तय बंधि गज्जन वरं, जन्मं करं सुक्तयं॥ छं०॥ ७०१॥ रू०॥ ३५९॥

सोमेसजी को पृथ्वीराजजी के जन्मोत्तर गुन सुन कर हर्ष और शोक होना॥

कवित्त॥ सोम वत्त सुनि श्रवन। हर्ष अरु सोक उपन्नो॥
दैव काल संजोग। तपै ढिल्ली घर थन्नौ॥
कहै व्यास संभरी। क्रन्न दूह वत्त प्रमानं॥
किं जानै किं होइ। घरी इक घट्टन जानं॥
न्रिम्मान मान संभर धनी। सुनी कित्ति अनगेस वर॥
मंची प्रमान सब इष्ट गुरु। कहै राज प्रथिराज वर॥ छं०॥ ७०२॥ रू०॥ ३६०॥ †

---

३५८ पाठान्तर–अनगैस। हुव। विजलं। बिजुंलि। चमक। जुंतु। मेघ। जन्म। वद्धाय। राज। सोमेस। दीय। यांम। इक। इक। हयः। हथ। परिगह। परीयह। कीन। तथ। वज्जि। गर्ज्जि। नांचि। पधराय। राय। मुप। सरसन। हरप। कर्म। पुव। मांनि। क्रंम्म। मनि॥ वेदोक्त। विप्र। बुधि। प्रमोधि। गांम। श्यांन। अक्किर। अछर। सुरं। भूवन। जांनि।

३५९ पाठान्तर–जन्मोतर्रि। राजन्म। वर। च्यालीस। वर्षं। घटी। सोभाग्यं। सौभाग्यं। लच्छि। दिलित। दिल्लित। वर। पंचं। पंच। इद्रप्रस्क। ववरय। जोतियं। भुक्त। वर। जन्यं॥

३६० पाठान्तर–सौम। वती। उपनै। उप्पनै। देव। सजोग। ढिली। धर। थंनो। क्रन। वत। जाने। होय। यक्र। घटिन। जान नमान। संभरि। सुतिकित्ती। प्रमान। प्रिथीराज। पृथीराज॥

† यह रूपक हमारे पास की और सब पुस्तकों में तो है किन्तु सं० १७७० वाली में नहीं है॥

विक्रम के सदृश पृथ्वीराजजी हुए कि जिन की बुद्धि का वर्णन चंद करता है ॥

दूहा ॥ विक्रम राज सरीस भौ। बुधि ब्रनन कवि चंद ॥
भूत भविष्यत व्रत्तमन। कहत अनूपम छंद ॥ छं० ॥ ७०३ ॥ रू० ॥ ३६१ ॥

पृथ्वीराजजी के जन्म समय के ग्रहों की स्थिति ॥

दूहा ॥ ग्रह स पंच चव हंस हथ। लगन सु अष्टम मंद ॥
दुतिया गुरु मेषह तरनि। चित्रह जनम नरिंद ॥ छं० ॥ ७०४ ॥ रू० ॥ ३६२ ॥

सोमेश्वरजी का दरबार में बैठ ज्योतिषियों से पृथ्वीराजजी की जन्मपत्री का फल पूछना और पंडितों का फल वर्णन करना ॥

पद्धरी ॥ दरबार बैठि सोमेस राइ। लीने हजूर जोतिग बुलाइ ॥
कहौ जन्म कर्म बालक्क विनोद। सुभ लगन महूरत सुनत मोद ॥ छं० ॥ ७०५ ॥
संवत्त इक्क दस पंच अग्ग। बैसाष मास पष कृष्ण लग्ग ॥
गुर सिद्धि जोग चित्रा नित्रत्त। तारना। करन सिसु परम हित्त ॥ छं० ॥ ७०६ ॥
ऊषा प्रकास इक्क घरिय रात। पल तीस अंस तथ बाल जाति ॥
गुरु बुद्ध सुक्क परि दस्सैं थान। अष्टमैं नार आनि फल विनान ॥ छं० ॥ ७०७ ॥
पंच दुत्र थान परि सोम। स्यारनैं राह धन करन होम ॥ छं० ॥ ७०८ ॥
बारमैं सूर सो करन रंग। [illegible] तिन करैं भंग ॥

संषेप विरद उच्चार कीन । क्यौं सकौं जंपि मो बुद्धि चीन ॥
सुनि रइ दान मंड्यौ अपार । है गै सु वस्त्र द्रव्या न पार ॥ छं० ॥७१२॥
सब सहर नारि स्रृंगार कीन । अप अप्प झुंड मिलि चलि नवीन ॥
थपि कनक थार भरि द्रव्य दून । पट कूल जरफ जर कसी ऊन ॥ छं० ॥ ७१३॥
अक्छित अनूप रोचन सुरंग । मृदु कमल चाम लोइन कुरंग ॥
इक जात मद्धि इक फिरत गेह । पहिराइ परस पर वढत नेह ॥ छं० ॥ ७१४॥
दरबार भी बरनी न जाइ । सुगंध वास नासा अघाइ ॥
बिगसंत बदन छत्तीस वंस । जदुनाथ जन्म जनु जदुन वंस ॥
छं० ॥ ७१५ ॥ रू० ॥ ३६३ ॥

हरें । स्तूत्र । शत्र । दिलिय । दिल्लिय । मडे । बूंदीवाली मे=चालीस वर्ष तिम मांस साज । चालिस । पुहवि । हरे । भूंम । सुंप । भूंम । वरणीय । वरनीत्र । अष्ट बल । लेइ । व्यांहि । तुंनग । टुंग । थैपि । चाहि । विरुद । उचार । सकों । जंपि । मै । सुनि । राय । दांन । हय । गाय । द्रव्यान । त्रव्याम । श्रंगार । झूंड । नवान । कुंल । कल । उव्य । अछित । रौचन । लोइन । कुरग । जाय । मधि । येह । नैह । जाय । सुगंध । नाशा । अघाय । विगसत । छत्रीस । लदुनाय । यदुन ।

जैसे कवि चंद रूपक ३५५ और ३५६ में अपनी प्राचीन गूढ़ भाषा के गूढ़ार्थ में पृथ्वीराजजी का जन्म संवत् वर्णन कर आया है, वैसे ही यहा भी वह इन रूपक ३६२ और ३६३ में उन की जन्मपत्री तथा उस के ग्रहों का फलादेश वर्णन करता है । इन देनो रूपको के पाठ जहा तक हमारे पास की पुस्तको से शुद्ध हो सके वहां तक हमने शोध दिये हैं; कि उनके इतने ही शुधने पर जो कई एक शंका अब तक लोग करते थे वह दूर हो गई । और जो इसीतरह और भी कुछ प्राचीन पुस्तकें मिल जावे और उन से यह रूपक फिर शोध दिये जावें तो आशा है कि इन रूपकों में लिखी ज्योतिष शास्त्र सबन्धी सब बात मिल जावे और विद्वानो की जो जो शंकाए अब भी बाकी रहती हैं वे भी निवारण हो जांय । इसके अतिरिक्त हमारे पाठक यह अच्छी तरह जानते हैं कि इस रासो जैसी भ्रष्ट लिखित प्राचीन पुस्तको में अथवा वैसे ही कोई कोई बड़े प्रतापी मनुष्यों की जन्मपत्री अथवा ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जिसका कुछ अन्वेषण किया जावे ऐसा कुछ विषय हम को वर्त्तमान समय मे कहीं लिखा हुआ प्राप्त होता है उसको यथायोग्य रीति शोध लेना कैसा कठीन है । उसमें भी चंद की जैसी गूढार्थ की कठिनता और ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्तियो के मतान्तर पर दृष्टि दी जावे तो प्रत्येक सज्जन मनुष्य सुखपूर्वक कह सकता है कि यह कार्य बहुतही कठिन है और जो कदाचित् ऐसी कठितना का कुछ पता लगा सकें तो हमारे स्वदेशी जगत विख्यात ज्योतिष शास्त्राचार्य पंडित वर श्री बापूदेवजी शास्त्री अथवा उन के शिष्य वर्ग में से भी कोई लगा सकते हैं, किन्तु अन्य के वश का यह कार्य नहीं है । इस जन्मपत्री को शोधने के लिये हमने बड़ा परिश्रम कर रक्खा है अर्थात् जितने पाठान्तर रासो की भिन्न भिन्न पुस्तको में से मिलते जाते हैं और जितनी भिन्न २ प्रकार की पृथ्वीराज जी की जन्मपत्रियें भरतखड में से मिलते हैं वे भी एकत्र किये जाते हैं और ब्रह्मगुप्त का रचित ज्योतिषशास्त्र की पुस्तक भी प्राप्त करने का उद्योग कर रहे हैं, कि

जिसका चंद का आश्रम करना उसकी शैली से अनुमान होता है । इस प्रकार से शोध होने पर हम इस जन्मपत्री के विषय में जिस विद्वान के गणित के अनुसार जो बात निश्चय होगी वह प्रकाश करेंगे। किन्तु अभी हम कुछ उन शंकाओं के विषय में भी कहते हैं कि जो इस विषय में महामहोपाध्याय कविराज श्री श्यामलदासजी ने कवि का सरल और स्पष्ट अर्थ न समझकर केवल प्रतिकूल-अनुमान-जन्यभ्रम के वश हो अपने खंडन-ग्रंथ में की हैं-

१　प्रथम कविराजजी ने पृथ्वीराजजी के जन्म संवत् के प्रकाश करनेवाले रूपक ३५५ के साथ का रूपक ३५६ जैसे अपने खंडन-ग्रंथ में छोड़ दिया है वैसेही यहां भी उन्होंने रूपक ३६२ को छोड़ कर केवल रूपक ३६३ के आधार पर जन्मपत्री के सम्बन्धित दोष दिये हैं । इन दोनों स्थलों को हमारे विद्वान पाठक विचार कर समझ सकते हैं कि रूपक ३५६ और ३६२ को छोड़ देना उचित था कि नहीं और उनका रूपक ३५५ और ३६३ के साथ पूर्ण सम्बन्ध है कि नहीं। यदि पूर्ण सम्बन्ध है तो निर्णय करने के समय उनका त्याग देना किसी वास्तविक पुरातत्ववेत्ता के लिये कैसा अनुचित कर्म है ॥

२　दूसरे जो कुछ दोष इस विषय में दिये गये हैं वे मालूम होते हैं किसी एक पुस्तक के पाठ पर से ही दिये गये हैं। किन्तु मैं आशा करता हूं कि डाक्टर होर्नली साहब कि जिन्हों ने अपने हाथ से रासो के कुछ भाग को बड़ी सूक्ष्म दृष्टि देकर शोधा है वे भले प्रकार साक्षी दे सकते हैं कि इस ग्रंथ के पाठान्तर, अपपाठ, विशेष पाठ और न्यून पाठ आदिक की क्या दशा है और क्या किसी एक पुस्तक के पाठ पर ही किसी बात का निर्णय होना उचित है ॥

३　तीसरे यदि रूपक ३६२ न छोड़ दिया गया होता और पुरातत्ववेत्ताओं के निर्णय करने की रीति से ध्यान दिया गया होता तो कविराजजी अपनी कितनी ही शंकाओं के समाधान स्वयम् इन रूपकों और भिन्न भिन्न पाठान्तरों से जान सकते थे जैसे कि-

(अ)　रूपक ३६२ से पृथ्वीराजजी के जन्म की दूज तिथि ज्ञात होती है। यदि तिथि की संख्या का शब्द अशुद्ध भी हो तो भी हम कवि के कहे चित्रा नक्षत्र से स्पष्ट अनुमान कर सकते हैं कि या तो यह दूज कवि ने पड़वा उपरान्त की ग्रहण की है अथवा लिपि और तिथि की संख्या वहां भ्रष्ट हो गई है। हम ज्योतिष शास्त्र तो नहीं जानते हैं किन्तु [illegible] शास्त्रियों में अभी तक प्राचीन प्रणाली देखी जाती है कि [illegible] होने पर सात वर्ष के बालक को भी पितादि देवाङ्गो के कुछ [illegible] गृह लिखाया करते हैं। उन के अनुसार हम यह कह सकते हैं कि हमारे चार्य मासों के नाम नक्षत्रों २८ में बड़े हैं और प्रत्येक महिने का नक्षत्र शुदी १४ किंवा पूनम अथवा वदी प्रतिपदा के दिवस में होता है अतएव इस दूज के स्थान में कोई ऐसी ही तिथि [illegible] भ्रष्ट हो गई है। देखो कविराजजी ने 'वैशाख तृतीय पक्ष कृष्ण लग्न' पाठ लिया है [illegible] वैसाख मास पष कृष्ण लग्न वा [illegible] [illegible]

(ख) कविराजजी ने कवि के कहे ' **बारमै सूर सो करन रंग** पर ही विशेष दोष दिया है और उसका बारहवें घर में होना असंभव माना है तथा इतनी ही बात पर दोष देकर अन्य ग्रहो का कुछ शोध नहीं किया है। परंतु जो वे श्लोक ३ २ के तीसरे चरण पर कुछ थोडी सी भी दृष्टि देते तो उनको मालूम हो जाता कि चंद कवि मेष का सूर्य होना स्वयम् कहता है कि जो संभव भी है "**दुतिया गुरू मेषह तरनि** " इससे यह भी समझ सकते थे कि जब मेष के सूर्य का बारहवें घर में होना कवि कहता है तब वृष लग्न भी है और "ऊषा प्रकाश इक घरिय रात" से कवि का गूढार्थ भी यह है कि पृथ्वीराजजी का सूर्योदय के पश्चात् जन्म होने से ऊषा एक घड़ी थी अर्थात् ऊषा के एक घडी पीछे उनका जन्म हुआ ॥

(ग) कविराजजी के खंडन ग्रंथ में "**गुरु सिद्ध जोग चित्रा नखत्र**" पाठ से सिद्ध योग ग्रहण किया है कि जो चित्रा नक्षत्र के साथ वा पास आना असंभव है परंतु थोड़ी सी भी सूक्ष्म दृष्टि देकर देखते अथवा पुस्तकान्तर में पाठ देखते तो कितनीक पुस्तकों मे सिद्धि पाठ जैसे हमको मिल गया वैसे मिल जाता ॥

(घ) कविराजजी ने अपने खंडन ग्रंथ में बडी बडी सूक्ष्म युक्तिओं मे सूक्ष्मतर अनुमान किये हैं परंतु इस स्थान पर वे बडी ही बेतरह चूक गये है। उन्होने " **गुरु नाम करन सिसु परम हित्त**" का **गुरु** पाठ से धोखा खाकर यह अर्थ किया है कि "गुरु ने बडे प्रेम से बालक का नाम रक्खा" किन्तु यह अर्थ बिलकुल ही असत्य है। यद्यपि इस **गुरु** पाठ का पुस्तकान्तर में **गर** पाठ स्पष्ट मिलता है परंतु वह न भी मिले तथापि पुरातत्ववेत्ता विद्वान इस छंद की प्रत्येक तुक की एक दूसरी से संगति मिलाकर भले प्रकार जान सकते हैं कि कवि **तिथि वारं च नक्षत्रं योगं करणमेव च**" के अनुसार यहा यह कहता है कि "गर नामक करण शिशु को परम हितकारी है" न कि यह कि-गुरु ने बड़े प्रेम से बालक का नाम रक्खा-हमारे हे सज्जन पाठको! आप सोचो, विचारो, न्याय करो, और सत्य सत्य कहो कि यह महा अनर्थ करने वाली भूल है कि नहीं और जो हम इतना परिश्रम केवल स्वदेशवत्सलता से उत्तापित होकर न करते तो हमारे देश की हिन्दी भाषा और ऐतिहासिक विद्याओ की कितनी हानि संभव थी। राजपूताने के कितनेक कवि लोग अपने को हिन्दी भाषा के काव्यो मे ऐसा उत्कृष्ट समझते हैं कि मानो अन्यदेशीय उनके आगे कुछ मालही नहीं है परतु इस अवसर पर हमको मिस्टर जोन बीम्स साहब का यह कहना स्मरण आता है कि " The Pandits of Rajputana even do not understand Chand beyond the general drift of the poem. " "राजपूताने के पंडित भी चंद के काव्य को उसके एक साधारण भावार्थ के सिवाय नहीं समझते हैं" ॥

(ङ) कविराजजी के लिखे पाठ में "**पंचमें थान परिसोम भोम** ' है और हम को पुस्तकान्तर मे **पंच दुअ थान परि सोम भोम**" पाठ मिला है। क्या इस से जन्म पत्री के ग्रहों में कुछ अंतर नहीं पड जाता है? और क्या जब तक कि अनेक प्राचीन पुस्तको से इन रूपको का पाठ मिलानकर के शुद्ध न किया जावे तब तक जन्मपत्री को अशुद्ध कह देना मानो सहसा सिद्वान्त कर लेना नहीं है? यदि कोई कोई विद्यमान पुरातत्ववेत्ता अपने सहसा सिद्धान्त कर लेने को अच्छा समझ लेना अयोग्य नहीं समझेंगे और वे इस प्रचार को एक क्षमल बंद नहीं कर देंगे तो पुरातत्व विद्या को निःसीम हानि पहुंचनी संभव है। यहा कन्या का चंद्रमा और पृथ्वीराजजी का पृथ्वीराज नाम होने के कारण उनकी कन्या राशी का होना स्पष्ट है। और

पृथ्वीराजजी के जन्म होने पर क्या क्या आश्चर्यदायक बातें हुईं ॥

कवित्त ॥ भयौ जनम पृथिराज । द्रुग्ग धर चरिय सिषर गुर ॥
भयौ भूमि भूचाल । धर्मंसि धस धम्म अरिनि पुर ॥
गढन कोट सें लोट । नीर सरितन बहु बढ्ढिय ॥
भै चक्क भय भूमिया । चमक चक्कित चित चढ्ढिय ॥
षुरसान थान पल भल परिय । ग्रभ्भ पात भय ग्रभ्भनिय ॥
बेताल बीर बिकसे मनह । हुंकारत पह देवनिय ॥
छं० ॥ ७१६ ॥ रू० ॥ ३६४ ॥

पृथ्वीराजजी की बाल अवस्था के चरित्रों का वर्णन ॥

कवित्त ॥ बरष बधै बिय बाल । निध्य बद्धै इक मासह ॥
घरी दीह पल पष्य । मास लष्यय क्रष तासह ॥
मनिगन कँठला कंठ । मड्डि केहरि नष सोहत ॥
घूघर वारे चिहुर । रुचिर बानी मन मोहत ॥ छं० ॥ ७१६ ॥ रू० ॥ ३६७ ॥

ज्योतिष शास्त्र के एक अचल ध्रुवों के अनुसार यह अनुमान कर लेने का काम भी चंद ने हमारे ऊपर ही छोड़ दिया है कि कन्या के चंद्रमा के साथ केतु भी है क्योंकि राहु और केतु सदा परस्पर साथ मे रहते है ॥

३६४ पाठान्तर–जन्म । प्रिथीराज । पृथीराज । प्रथिराज । दुग । द्रुग । भुचाल । धस । कोट । सें । लोट । बहि । बढिय । भैचक्क भय भूमियान । भय चकित भूमिया । नर्मा... । चढिय । षुरसान । थान । परीय । ग्रभ । बैताल । बिकसे । नयन । हुंकारत । देवनीय ॥

इस रूपक मे जो कुछ आश्चर्यदायक बातों के भाव कवि ने कहे हैं वे कोई वास्तविक आश्चर्य नहीं हैं किन्तु कवि लोग बड़े बड़े प्रतापी पुरुषों के जन्मादि के वर्णन में [illegible] प्रायः ऐसा प्रसंग लाया करते हैं । देखो जैसे यहां 'धर्मसि धस धम्म अरिनि पुर' अथवा 'षुरसान थान पल भल परिय' कवि ने कहा है । [illegible] तवारीख मे देखो कि महमूद गजनी जिस रात्रि को उत्पन्न हुआ था उसी समय [illegible] किनारे के एक मंदिर का फट जाना इस मे लिखा है । [illegible] मंदिरों को भ्रष्ट करने और मूर्तियों को तोड़ने [illegible] ने इसके जन्म समय भी [illegible]
[illegible]

३६५ पाठान्तर– [illegible]

केसर सु मंडि सुभ भाल छवि। दसन जोति हीरा हरत ॥
नष नलप दूक्क थह पिन रहत। हुलसि उठि उठि गिरत ॥
छं० ॥ ७१७ ॥ रू० ॥ ३६५ ॥

दूहा ॥ रज रंजित अंजित नयन। घूंठन डोलत भूमि ॥
लेत बलैया मात लषि। भरि कपोल मुष चूमि ॥
छं० ॥ ७१८ ॥ रू० ॥ ३६६ ॥

पद्धरी ॥ अंगुरिन लग्गि रगि चलत लाल। सर मद्धि उठत गज हंस बाल ॥
मिलि बाल जाल फबि रची केलि। बढि रची दूंद जनु बीज बेलि ॥ छं० ७१९ ॥
जनु रमत कमल चलत कमल अग्ग। तप तेज बढ्ढि मुष षिच नग्ग ॥
सब देव तेज देषंत अंग उक्कार अंग अदभुत प्रसंग ॥ छं० ॥ ७२० ॥
सँग बाल बैठि भोजन करंत। परिवार वस्तु लै हठ धरंत ॥
आदर अदव्व सथ्थीन देत। बगसीस करत हिय परम हेत ॥ छं० ॥ ७२१ ॥
है हथ्थि चढत बढ्ढत आनंद। मन मौज चौज कवि पढत छंद ॥
जिन हृदय कमल विग्गाह हेत। छल छेद भेद तिन बुद्धि लेत छं० ॥ ७२२ ॥
पाइक्क संग कायक्क केलि। धरि धूप हथ्थ वाहंत झेलि ॥
गहि बग्ग हथ्थ फेरत तुरंत। नट न्नत्य निपुन धावत कुरंग ॥ छं० ॥ ७२३ ॥
जल केलि करत मिलि सजन संग। अल्लोल कलभ जनु सरति रंग ॥
पकवांन पांन सूगंध पूर। मादक सु मोद सुष सुघन नूर ॥ छंद ॥ ७२४ ॥
षेलत अषेट संग स्वानडोर। बग्गु वधंत पर गोस कोर ॥
सुष घरिय पहर दिन पष्ष मास। सोमेस सूर चित बढत आस ॥ छं० ॥ ७२५ ॥
जिम राम कृष्ण सुख नंद गेह। संभरिय राय तिम दसा देह ॥
छं० ॥ ७२६ ॥ रू० ॥ ३६७ ॥

---

३६६ पाठान्तर–अजांत। घूठन। डौलत। वलइया। भुंप। चूंम ॥

३६७ पाठान्तर–लगि। लगि लगि। लाल। कैलि। अय। तैजि। वठि। पत्रिग। पत्रि। पग। तैज। देवत। उदार। अदभूत। सुरंग। सग। वैठ करत। वस्तू। वस्त। हठि। अदब। सथीन। हीय। हयि। वढत। मोज। चोज। रिदे। सुंहैत। विग्रा सु। छल। वेदि। भेदि। छेदि। वुधि पाइक। काइन। कैलि। धोप। धौप। हय। वाहंत। वग। हय। मृत्य निपुन्य। तुरंग। कलि। अलोल। सरमि। सुगध। पुर। पैलत। अपेट। सगि। स्वान। डोरी। वगुरि।

कवित्त ॥ कै दसरथ ग्रह राम । कै * धाम वसुदेव क्रष्ण वर ॥
कै कलि कस्यप कूष । जानि उपज्यौ किरनाकर ॥
क्रष्ण ग्रेह कै काम । कै * काम अंगज जनु अनुरध ॥
कै * नल कस्यप अवतार । किधौं कौमार दुस्व रुध ॥
लषिन बतिस्स बहुतरि कला । वाल वेस पूरन सगुन ॥
क्रीडत गिलोल जब खेल कर । तब * मार जानि चारक सु मन ॥

छं० ॥ ७२७ ॥ रू० ॥ ३६८ ॥

दूहा ॥ छुटत गिलोला हथ्थ तैं । पारत चोट पयख ॥
कमल नयन जनु कांमिनी । करत कटाछ कयख ॥

छं० ॥ ७२८ ॥ रू० ॥ ३६९ ॥

पृथ्वीराजजी का गुरु राम से सब प्रकार की विद्या सीखना ॥

दूहा ॥ कोइक दिन गुर राम पैं । पढी सु विद्या अप्प ॥
चवदसु विद्या चतुर वर । लई सीप पट लिप्प ॥

छं० ॥ ७२९ ॥ रू० ॥ ३७० ॥

बंधत । पगौस । कैरि । कारि । धारीय । परक । पव । सोमोम । सुर । चित । थडि । वढ्ढि । दास । कणु । सुभि । येह । जिम रांम नद सुप क्रष्ण येह । सभरांय । राव । देत ॥

* यह। शब्द पाठ मे विशेष है । ऐसे उदाहरण इस ग्रंथ की लिखित पुस्तकों में बहुत हैं और वह भी किसी किसी में ऊपर से लिखे हुए हैं । इसका कारण हमें विचार करने से यह मालूम होता है कि किसी कवि ने पढने के समय अर्थ के लगाने की सुगमता के लिये इन मतलब के सूचन करनेवाले शब्दो को संकेत की भांति लिख लिया होगा और ऐसी पुस्तक से प्रति करनेवाले लेखकों ने उनको पाठ मे मिलाकर प्रति कर दी है इस हमारे समाधान की पुष्टि में कई एक ऐसे स्थल हम अपने पास की प्राचीन पुस्तकों मे बतला सकते हैं । अतएव इनको कवि का मूल अथवा Poetical licence नही समझना चाहिये ।

पद्धरी ॥ लिषि सिष्य कुँअर प्रिथिराज राज । गुरु द्रोन पास सुत अस्म ताज ॥
ॐ नमो सिद्धि प्रथमं पढाय । सब भाव भेद अप्पर बताय ॥ छं० ॥ ७३०॥
दस पंच † दिन्न अध्येन कीन । दस च्यारि सार सब सीष लीन ॥
सीषी सु कला दस अठ्ठ च्यारि।तिन नाम कहत कवि अग्ग सारि॥छं०॥७३१॥
गुरु गीत वाद बाजिन न्टत्य । सो चक्क सु वाच्य सुविचार हृत्य ॥
मनि मंच जंच बास्तुक विनोद । नैपथ्य विलास सुनि तत्त मोद ॥छं०॥७३२॥
साकुन्न कला क्रीडन विसार । चिचन सु जोग कवि चवत चारु ॥
कुसु मेष कला जुत इंन्द्र जाल । सुचि क्रम विचार आचार लाल छं०॥७३३॥
सौभग प्रयोग सूगंध वस्त । पुनरोक्त छंद वेदोक्त हस्त ॥
बानिज्ज विनय भाषित्त देस । आवद्ध जुद्ध निर्जुद्ध सेस ॥ छं० ॥ ७३४ ॥
बरनंत समय हस्ती तुरंग । नारी पुरुष्य पंषी विचंग ॥
भू भू कटाक्ष सुलेष सल्य । हष छद्म प्रष्ण उत्तर विजल्य ॥छं० ॥ ७३५ ॥
सुभ सास्त्र कहे गनिकाह पढन्न । लिषतव्य चित्र कविता वचन्न ॥
व्याकन्न कथा नाटक्क छंद । अविधांन दरस अलंकार बंध ॥छं० ॥७३६॥
धातक्क सु कर्म सुभ अर्थ जानि । सुर सरी कला बहुतरि बषान ॥
छं० ॥ ७३७ ॥ रू० ॥ ३७१ ॥

दूहा ॥ कला बहुत्तर करि कुसल । कनि निबद्ध जिय जानि ॥
छेत आदि जानन निपुन । चतुरासीत विग्यान ॥ छं० ॥७३८॥रू० ३७२॥

† इस दसपंच शब्द को पंद्रह ही दिन का वाचक नहीं समझना किन्तु कुछ दिन अथवा कुछ समय अथवा थोड़े दिनों का वाचक समझना उचित है क्योंकि रूपक ३७० में स्पष्ट कोइक दिन पाठ आ गया है ॥

३७१ पाठान्तर–लिपि । शिष्यि । सिषि । कुअरं । कुंअर प्रिथीराज । प्रथीराज । गुरं । गुर । द्रोण । पासि । ध्रम । नमः सिद्धिं । पढाइ । भेद । अष्यर । बताइ । बताई । अध्ययन । अध्यैन । दस पंच दिद्ध अध्यैन कीन । सीषि । अठ । नांम । कहित । नग । सार । गुरु । न्रत्य । सौचक्क । व्रत्य । वास्तुन । विनोद । नैपंथ । सुंनि । तत । साकुन । शाकुन । वितार । विचार । सू जोग । कुंस । युत । सोभग । प्रयोग । पुनरुक्ति । वेदोक्त वस्त । वांनिज । भाषित आवध । युद्ध । निरयुद्ध । सेस । पुरुष । वचंग । भूं भूं । सुलेप ब्रप । छंद । उतर । विजल्यं । कहे । पढंन । लिषित व्याचित्र । लिपितव्य । वचन । व्याक्रन । नाटक । नाटिक । दरसन । अलंकार । शुभ । जांनि । जांण । वषानि ।

३७२ पाठान्तर–बहुतरि । जांनि । जांनन । विग्यांन । विग्यांन ॥

अरिल्ल ॥ चतुरासीत विग्यानन जानन। भर मन मन आसंका भाजन ॥
मनिहा बीर सदा मन मोदन। बहुतरि बिचित्र छत्तीस विनोदन॥ छं० ॥ ७३९॥
दरसन श्रवन गीत बर वादी। न्रत्य व्रत्य पाठक्क पुनि आदी॥
लेषक चित्त बाज बक्कवनि। सब्ब सास्त्र जुद्धाकर तत्वनि॥ छं० ॥ ७४०॥
जुद्ध गनित पंषी गज तुरगा। आषेटक्क दूतन जल उरगा॥
जत्र मंच महोछव पचन। पुष्फ कला फल कथा सु चिंतन॥ छं० ॥ ७४१
करन पदारथ आयुध केली। बलकरि सूचह तत्व पहेली॥छं०॥७४२॥रू०॥३७६॥
दूहा ॥ कमल बदन रवि तेज कर। लष्यन संति बत्तीस॥
काल नित प्रति सीषत कला। आवध धरन छतीस॥ छं०॥७४३॥ रू०॥३७७॥
साटक ॥ विद्या बंस विचार सत्य विनयं, सौच्चं समाधीनता॥
सज्ञानं संस्थान सौष्य विजयं, सौजन्य सौभाग्ययं॥
संपूर्णं च सरूप रूप प्रसुनं, चित्तं सदा चारनं॥
सांगीतं च सजोग चारु सकलं, विस्तारयंते कला॥ छं०॥७४४॥ रू०॥ ३७८॥
दूहा ॥ गुन गरिष्ठ गौ विप्र प्रति। पूजक दान वरीस॥
सब्द आदि दै निपुन अति। सालष सतावीस॥ छं०॥ ७४५ रू०॥ ३७९॥
श्लोक ॥ संस्कृतं प्राकृतं चैव। अपभ्रंशः पिशाचिका॥
मागधी सूर सेनी च। षट् भाषाश्च ज्ञायते ॥ छं० ॥ ७४६॥ रू०॥ ३८०॥

पृथ्वीराजजी के बत्तीस लक्षणों का वर्णन॥

श्लोक ॥ विनयी सरजनज्ञाता। सर्वज्ञः सर्वपालकः॥

काव्यजाति ॥ अरि तर वर तुंगो। कट्टनार्थे कुठारो ॥
कुल कमल प्रकासो। तेज तप्तो दिनेस ॥
दरसन रस सेवी। कामिनी काम मूर्त्ति ॥
पर वर प्रति पंचं। पालनं पार्थवानां ॥ छं० ॥ ७४८ ॥ रू० ॥ ३८२ ॥

अरिल्ल ॥ सूरज ज्यों नप सत्रु कमोदन। फूलत अंग महा मन मोदन ॥
भूपति भूप प्रतापन भारी। हठ करि रावन ज्यों अहंकारी ॥
छं० ॥ ७४९ ॥ रू० ॥ ३८३ ॥

श्लोक ॥ ज्ञानधर्मार्थकामं च। बल शत्रु सिंहासनं ॥
सभारंभचितेश्चैवा। भिधानं अष्टधा स्मृतं ॥ छं० ॥ ७५० ॥ रू० ॥ ३८४ ॥

दूहा ॥ पाघ बीराजत सीस पर। जरकस जोति निहाय ॥
मनों मेर के सिषर पर। रह्यौ अहप्पति आय ॥ छं० ॥ ७५१ ॥ रू० ॥ ३८५ ॥
ता पर तुररा सुभत अति। कहत सोभ कवि नाथ ॥
मनु सूरज के सीस पर। धिषन धर्‍यौ धनु हाथ ॥ छं० ॥ ७५२ ॥ रू० ॥ ३८६ ॥
श्रवन बिराजत स्वाति सुत। करत न बनै वषान ॥
मनु कमल पच अग्रज रहै। ओस उडग्गन आन ॥ छं० ॥ ७५३ ॥ रू० ॥ ३८७ ॥
कंठ माल मोतीन की। सोभत सोभ विसाल ॥
मेरु सिषर पारस फिरत। जानि नछिचन माल ॥ छं० ॥ ७५४ ॥ रू० ॥ ३८८ ॥
मिस भींने सु मयंक मुष। निपट बिराजत नूर ॥
मनौं बीर उर काम के। उगे आनि अंकूर ॥ छं० ॥ ७५५ ॥ रू० ॥ ३८९ ॥

भाषां। चैब। ग्यायते। विनयं। जनं। ग्याता। सर्व्वज्ञं। पालकं। शरीरे। सरीरे। सोभ्यते। सोभते। श्रेष्टं। दुत्रिंसमपि लक्षणे ॥

३८२ पाठान्तर-अति। घर तुंगो। कट्टनार्थे। कुठारो। प्रकाशो। तप्तो। दिनेसः। सेवी। मूर्त्ति। पंच। पार्थवाना ॥

३८३ पाठान्तर-सूरिज। सुरज। ज्यो। ज्यों। शत्रू। फूलति। भुप। ज्यों ॥

३८४ पाठान्तर-ग्यांन। सत्रु। सिघासनं। चत्ते चैव। अभिधानं॥

३८५-८९ पाठान्तर-शीस। ज्योति। कै। शिषर। शिपर। परि। अहप्यति। अहपति। तुरा। सोभै मनुं। मनो। सूरिज। मनौं सूरज। कै। शीस पर। परि। धषन। विराजित। वषांन। मनो। मनो। अग्रजु। रहे। औस। पयोकन। पयोकण। आनि। शोभत्व। शोभ। विशाल। सोभति। मेर। शिषर। पास। जनन। छित्रन। मिसि। निपट। मनों। काम कै। ऊगे। उगै। आनि। अक्रूर ॥

अरिल्ल ॥ आनन इंदु उद्दोत सु मानौं । जानन भोज विचष्यन जानौं ॥
रवि ज्यौं सत्रुन के तन तापन । कामिनि कों मकरध्वज मानन ॥
छं० ॥ ७५३ ॥ रू० ॥ ३९० ॥

अरिल्ल ॥ जा सरनागत मानव वंछै । जा सरनागत दानव इंछै ॥
जा सरनागत देव विचारै । सो प्रिथिराज प्रिथीपति सारै ॥
छं० ॥ ७५७ ॥ रू० ॥ ३९१ ॥

दूहा ॥ प्रिथ्थिराज पति प्रिथ्थिपति । सिर मनि कुली छतीस ॥
नप सिष पर मित लस तजै। ते गुन बरनि बतीस ॥ छं० ॥ ७५८ ॥ रू० ३९२ ॥
तिन सहाय असुरह सुभट । सत सामंत रु सूर ॥
तिन सु कित्ति प्रगटी करन । कही चंद कवि पूर ॥ छं० ॥ ७५९ ॥ रू० ॥ ३९३ ॥

कवित्त ॥ चहूआन कै बंस । वीर मानिक्क पुत्र दस ॥
ता सु कित्ति कवि चंद । जनम लग्गै जंपत जस ॥
ज्यौं बीत्या भारथ्थ । आदि अंतह ज्यौं जंपौं ॥
वय वानी सु प्रमान । लग्न मरनह गुन थप्पौं ॥
ज्यौं भयौ जनम कवि चंद कौ । भयौ जनम सामंत सग ॥
इक थान मरन जनमह सु इक । चल.ि त्र कित्त ससि भाग रघ ॥
छं० ॥ ७६० ॥ रू० ॥ ३९४ ॥

एक दिन रात्रि को चंद की स्त्री का रस में आकर पृथ्वीराज जी की आदि से अंत तक कीर्त्ति वर्णन करने के लिये चंद को कहना ॥

गाथा ॥ समयं इक निसि चंदं । वाम वत्त वदि रस पाइं ।
दिल्ली ईस गुनेयं । कित्ती कहो आदि अंताइं । छं० ॥ ७६१ ॥ रू० ॥ ३९५ ॥

चंद का अपने घर में कथा कहना और उसकी स्त्री का उसे सुनते हुए जो स्मरण आवे वह पूछते जाना ॥

दूहा ॥ एक दिवस कवि चंद कथ । कही अप्पनें भोन ॥
जिम जिम अवनत संभरी । तिम पुछ्छि सारंग नैंन ॥ छं० ७६२ ॥ रू० ॥ ३९६ ॥

चंद की स्त्री का उससे पूछना कि कौन दानव, मानव, और नृप कीर्त्ति करने योग्य है ।

दूहा ॥ कह्यौ कंत सों कंति इम । हौं पूछों गुन तोहि ॥
को दानव मानव सु को । को न्रप क्रित्तिक होहि ॥ छं० ॥ ७६३ ॥ रू० ॥ ३९७ ॥

चंद का अपनी स्त्री को गूढ़ उपलक्षों के द्वारा उत्तर दे कहना कि केवल हरि की कीर्त्ति करने योग्य है क्योंकि उसकी भक्ति के बिना मुक्ति नहीं है ॥

कवित्त ॥ पेट काज चढि बंस । परें फर हरैं अवनि पर ॥
पेट काज रिन भोम । मरैं मारैं सु ढुरैं धर ॥
पेट काज बहि भार । पार पाहारन परैं ॥
पेट काज तरु तुंग । चिन्न परि घर पर ढारै ॥
इनि पेट काज पापी पुरुष । बधै बहु लछ्छी हरन ॥
नर वर सुकम्म कहा नह करै । इहै उदर दुस्भर भरन ॥
छं० ॥ ७६४ ॥ रू० ॥ ३९८ ॥

इस रूपक से अन तक कवि इस आदि पर्व का तो उपसहार और दशम की कथा का प्रसंग अपनी स्त्री के वार्त्तालाप के द्वारा बडे गूढार्थ मे वर्णन करता है । हम आशा करते हैं कि काव्य के रसिक इस प्रसंग के दोहो और उनके अर्थ के गांभीर्य को अनुभव करके बहुत ही प्रसन्न होगे ॥

३९६ पाठान्तर–सुदिन । वद । कहीय । अप्पनै । भोन । अवनंत । अवनत । श्चवनह । पूछीय । सारंग । नेन ॥

३९७ पाठान्तर–कंति । सो । सों सौ । कत । ईम । हो । हौ । पुछ्छौ । पूछूं । गुन । तोहि कौ । दानव । मानव कौ । कौ । कै नप । क्रसि । करोहि ॥

३९८ पाठान्तर–काजि । वस । वंश । परयइं फरअरहरै । परइ । फरहरइ । पेठ । काजि । रन । भोमि । मरं । मारे । मरै । मरें । मारे । सुं । ढरे । ढरइं । पैट । काजि । पाहारम । पेट्ट । काजि । तरु । त्रिन्न । त्तिन । त्रिन । परि । परिय । टारै । इन । इत । काजि । पुरुष । बंधे । अधे । लछी । चर । सुकम्म । कह । करहि । इहइ । ईंह । भरण ॥

कवित्त ॥ नेह बिना नहि तेह । नेह बिन गेह अरस रस ॥
प्रिय बिन तिय न उमंग । अंग शृंगार रूप रस ॥
नायक बिन नह सेन । दंत बिन भुक्ति न होई ॥
तेग त्याग तैं रहित । कहै कीरति को लोई ॥
बिन नीर मीन राजत कहूं । छपो बिन सूर तरनि ॥
मन बच क्रम्म तिम जानि जिय । न है मुक्ति हरि भक्ति बिन ॥
छं० ॥ ७६५ ॥ रू० ॥ ३६६ ॥

चंद की स्त्री का उसे कहना कि चित्रनेवाले को चित्र कि जिससे तू दुस्तर के पार उतरे-चहुवान की कीर्त्ति कविने से वह क्या रंजेग

दूहा ॥ चित्रनहारे चित्रि तूं । रे चतुरंगी नाह ॥
का चहुआन सु क्रित्ति कवि । मन मनुछ हरि ताह ॥ छं॥ ७६६॥ रू० ॥४००

कवित ॥ तत्त हीन पुत्तरी । पंच बंधी कर नंचै ॥
आसा नदी सपूर । जीय मनोरथ संचै ॥
बहु तरंग तिस्नाह । राग बहु ग्रेह कुरंगी ॥
का चहुआना क्रित्ति । कंत धीरज तिर भंगी ॥
मन मोह ब्रढ बिस्तरि रह्यौ । चिंता तट घट भंजइय ॥
उत्तरहि पार दुत्तर कवी । का चहुआना रंजइय ॥
छं० ॥ ७६७ ॥ रू० ॥ ४०१ ॥

चंद का अपनी स्त्री को कहना कि मैं चहुआन का ऋण उतारता हूं ॥

दूहा ॥ कहै गुपत गुन तैं भले । सो प्रिय इय चंदेन ।
रिन अप्पौं चहुआन कौ । पुव्वह प्रिय नरेन । छं० । ७६८ । रू० । ४०२ ।

चंद की स्त्री का कहना कि राजा को ऋण देता है तौ गोविन्द को क्यों नहीं सुमरता ॥

दूहा ॥ चित्तनहारे हेरि चित । चित्तन हेरि कविंद ॥
जो रिन अप्पै राज कौं । तौ सुमरै न गुविंद ॥ छं० ॥ ७६९ ॥ रू० ॥ ४०३ ॥
अस जत्र मन मंद्दान करि । भ्रम जत्र भेष न फेरि ॥
चित्त न अप्प चित्र कौं । चित्तनहारे हेरि ॥ छं० ॥ ७७० ॥ रू० ॥ ४०४ ॥

चंद का उत्तर देना कि मैं कमलासन को देखकर अकुलाया हूं, केवल भक्ति विलंब करनेवाली है ॥

दूहा ॥ कमलासन देषत थक्यौ । भगत विलंबन हार ॥
क्रोध अप्प सब जग ग्रसै । ग्रसत न लग्गै वार ॥ छं० ॥ ७७१ ॥ रू० ॥ ४०५ ॥

तथा चंद का कहना कि संसार में जो कुछ और सर्वव्यापी है वह कमलासन ही है उसी की उपमा करके मैं पृथ्वीराज जी की कीर्त्ति वर्णन करता हूं ॥

भुजंगी ॥ वही तत्त त्रैलोक संसार सारं । वही तारनं सत्त भौ सिंध पारं ॥
जगत्तं अधारं निराधार वोही । वही अब्बदा संपदा नित्य सोही ॥ छं० ॥ ७७२ ॥
वही भेद मंत्रं गजानंत लोयं । वही पूरनं ब्रह्म संसार भोयं ॥
नवं भत्ति कौ संव ही क्रच धारी । भम्यौ ब्रह्म बुभ्यौ वही सिद्ध तारी ॥ ७७३ ॥
जगत्तं सुरत्तं वही हैं निनारं । वही वासना वासुदेवं प्रकारं ॥
वही भत्त हथ्थं नच्यौ कप्पिमानं । वहीयै वही यै वही यै निधानं ॥ छं० ॥ ७७४ ॥
इकं एक आचिज्ज कीनें गुसांई । चवै चंद जो रंग गोव्यंद पाई ॥
वही की उपम्मा करै कित्ति भासौं । वही सब्ब संसार मझ्झै प्रकासौं ॥ छं० ७७५
वही अंतरंगी सुरंगी निनारं । वहै राज राजीव लोचन्न सारं ॥ छं० ७७६ ॥ रू० ४०६ ॥

४०३-४०४ पाठान्तर-चित्रनहारे चित्र तूं । कवि चंद । ज्यौ अप्पौ । अपैं । कौ । तो । समरै । समरि । गोविंद ॥ ३९८ ॥ मंदा करि । भेष न फेरि । चित्रन अप्पो । अपैं । कौं । चित्रनहारै ॥
४०५ पाठान्तर-देषत । क्रोध । सप्प । ग्रहै । लगो । लगैं ॥
४०६ पाठान्तर-तत । नारणं । भव । सिधु । जगतं । सोही । ऊंही । ऊही । सरदा । सोही । भैद । मंत्र । गजा मत । लोयं । पुरनं । सोय । भोयं । नव । भाति । शव । भ्रम्यौ । जगतं । सुरंतं । हेनि । हैनि । वासता । वास । हैवं । वास हेवं । भक्ति । हथं । कप्पिमानं । कपिमानं । नधानं । वही ये वही ये निधानं निधानं । इक । अेक । अेक । अश्चिर्ज । कीनै । कीने । गुसाइ । गुसाई । जो । रंगी । गोविंद । उपमा । करै । भासो । कही । सकल । मझै । प्रकासौ । कहै । लोयंच ॥

चंद की स्त्री उसे कहती है कि ब्रह्म को ब्रह्म में देख जो उसे देखता है उसे वह दीखता है, नर की कीर्त्ति मत गा क्योंकि उससे और कोई बलवंत नहीं है॥

दूहा॥ ब्रह्म देषि ब्रह्मान्तरव। हरि दिषियन दिष्पाइ॥ ३॥
बिज्ज छटा अग्यांन मन। गोपी हरि गो गाइ॥ छं०॥ ७७७॥ रू०॥ ४०७
ब्रह्म ब्रह्म हरगत वर। नर जानी न गुविंद॥
सकल घटं घट हरि रमै। ज्यौं अनेक घट चंद॥ छं०॥ ७७८॥ रू०॥ ४०८
जस अपजस लाभिष्ट दोइ। अवगति गति न बुझाइ॥
गोप ग्वाल बूझे नहीं। गोपन बूझी गाइ॥ छं०॥ ७७९॥ रू०॥ ४०९

कवित्त॥ कहि महियल बल कित्तौ। एक दट्टं हरि धारिय॥
कहि वासिग बल कित्तौ। सु फुनि करि नेचां सारिय॥
सुमुंद कित्तौ गरुअत्त। अप्प भुज जोर हिलोरिय॥
कित्तौक सबल मेरु गिरि। कमठ होइ पिठ्ठह तोलिय॥
लघु बली सेस बंभानवै। सुर असुरायन दिठ्ठ सध॥
कवि चंद अवर बल वैम कहि। कह तो हरि बलवंत कध॥
छं०॥ ७८०॥ रू०॥ ४१०॥

चंद का अपनी स्त्री को उत्तर दे कहना कि अंग अंग में हरि रूप रस है॥

दूहा॥ त्रिय वर ज्यौ नर ज्यौ सु कवि। नर कित्ती नन गाइ॥
अंग अंग हरि रूप रस। ब्रह्म दिषाइ सुनाइ॥ छं०॥ ७८१॥ रू०॥ ४११॥

४०७ पाठान्तर–ब्रह्मातरवर। हरिपिदिषियंन दिषायं। [illegible]
४०८ पाठान्तर–ब्रह्म ब्रह्म। जानी। गोविंद। घटनै। ज्यौ। मै रामचंद।
४०९ पाठान्तर–लाभिष्टजो। बुझाय। [illegible] बुझो। गाय।
४१० पाठान्तर–दट्ठ। धारीय। [illegible]
[illegible]
[illegible]
४११ पाठान्तर–[illegible]

चंद की स्त्री का कहना कि राजा को ऋण देता है तो गोविन्द को क्यों नहीं सुमरता ॥

दूहा ॥ चित्रनहारे हेरि चित । चित्रन हेरि कविंद ॥
जो रिन अप्पै राज कौ। तौ सुमरै न गुविंद ॥ छं० ॥ ७६९ ॥ रू० ॥ ४०३ ॥
भ्रम जल मन मंदान करि। भ्रम जल भेष न फेरि ॥
चित्त न अप्प चित्र कौ। चित्रनहारे हेरि ॥ छं० ॥ ७७० ॥ रू० ॥ ४०४ ॥

चंद का उत्तर देना कि मैं कमलासन को देखकर अकुलाया हूं, केवल भक्ति विलंब करनेवाली है ॥

दूहा ॥ कमलासन देषत थक्यौ। भगत विलंबन हार ॥
क्रोध अप्प सब जग ग्रसै। ग्रसत न लग्गै वार ॥ छं० ॥ ७७१ ॥ रू० ॥ ४०५ ॥

तथा चंद का कहना कि संसार में जो कुछ और सर्वव्यापी है वह कमलासन ही है उसी की उपमा करके मैं पृथ्वीराज जी की कीर्त्ति वर्णन करता हूं ॥

भुजंगी ॥ वही तत्त त्रैलोक संसार सारं। वही तारनं सत्त भौ सिंध पारं ॥
जगत्तं अधारं निराधार वोही। वही अव्वदा संपदा नित्य सोही ॥ छं० ॥ ७७२ ॥
वही भेद मंत्रं गजानंत लोयं। वही पूरनं ब्रह्म संसार भोयं ॥
नवं भत्ति कौ संव ही क्रच धारी। भम्यौ ब्रह्म बुझ्यौ वही सिद्ध तारी ॥ ७७३ ॥
जगत्तं सुरत्तं वही हैं निनारं। वही वासगा वासुदेवं प्रकारं ॥
वही भत्त हथ्थं नच्यौ कप्पिमानं। वहीये वही ये वही ये निधानं ॥ छं० ॥ ७७४ ॥
इकं एक आचिज्ज कीनें गुसांई। चवै चंद जो रंग गोव्यंद पाई ॥
वही की उपम्मा करै कित्ति भासौं। वही सव्व संसार मझ्झै प्रकासौं ॥ छं० ७७५
वही अंतरंगी सुरंगी निनारं। वहे राज राजीव लोचन्न सारं॥ छं० ७७६ ॥ रू० ४०६ ॥

४०३-४०४ पाठान्तर-चित्रनहारे चित्र तूं। कवि चंद। ज्यौ अप्पौ। अपैं। को। तो। समरे। समरि। गोविद ॥ ३९८ ॥ मंदा करि। भेप न फोरि। चित्रन अप्पो। अपें। कों। चित्रनहारे ॥

४०५ पाठान्तर-देपत। क्रोध। सर्प्प। ग्रहे। लगो। लगैं ॥

४०६ पाठान्तर-तत। तारणं। भव। सिधु। जगतं। सोही। ऊंही। ऊही। सरदा। सोही। भेद। मंत्र। गजा मंत। लोयं। पुरनं। सोय। भोयं। नव। भाति। शव। भ्रम्यो। जगत। सुरंत। हेनि। हैनि। वासता। वास। हेवं। वास हेवं। भक्ति। हथं। कप्पिमानं। कपिमान। नधानं। वही ये वही ये निधानं निधानं। इक। अेक। अेक। अश्चिर्ज। कीने। कीने। गुसाइ। गुसाईं। जो। रंगी। गोविद। उपमा। करे। भासो। कही। सकल। मझै। प्रकासो। कहे। लोयच ॥

चंद की स्त्री उसे कहती है कि ब्रह्म को ब्रह्म में देख जो उसे देखता है उसे वह दीखता है, नर की कीर्त्ति मत गा क्योंकि उससे और कोई बलवंत नहीं है ॥

दूहा ॥ ब्रह्म देषि ब्रह्मान्तरव । हरि दिषियन दिष्षाइ ॥ ३ ॥
बिज्ज छटा अग्यांन मन । गोपी हरि गो गाइ ॥ छं० ॥ ७७७ ॥ रू० ॥ ४०७ ॥
ब्रह्म ब्रह्म हरगात बर । नर जानी न गुविंद ॥
सकल घटं घट हरि रमै । ज्यौं अनेक घट चंद ॥ छं० ॥ ७७८ ॥ रू० ॥ ४०८ ॥
जस अपजस लाभिष्ट दोइ । अवगति गति न बुझाइ ॥
गोप ग्वाल बूझै नहीं । गोपन बूझी गाइ ॥ छं० ॥ ७७९ ॥ रू० ॥ ४०९ ॥

कवित्त ॥ कहि मद्दियल बल कित्तौ । एक दट्टं हरि धारिय ॥
कहि वासिग बल कित्तौ । सु फुनि करि नेचां सारिय ॥
सुमुँद कित्तौ गरुअत्त । अप्प भुज जोर हिलोरिय ॥
कित्तौक सबल मेरु गिरि । कमठ होइ पिठ्ठह तोलिय ॥
लघु बली सेस बंभानवै । सुर असुरायन दिट्ठ सह ॥
कवि चंद अवर बल वैम कहि । कह तौ हरि बलवंत कह ॥
छं० ॥ ७८० ॥ रू० ॥ ४१० ॥

चंद का अपनी स्त्री को उत्तर दे कहना कि अंग अंग में हरि रूप रस है ॥

दूहा ॥ त्रिय वर ज्यौ नर ज्यौ सु कवि । नर कित्ती नन गाइ ॥
अंग अंग हरि रूप रस । ब्रन्न दिषाइ सुनाइ ॥ छं० ॥ ७८१ ॥ रू० ॥ ४११ ॥

---

४०७ पाठान्तर—ब्रह्मांतरवर । हरिपिदिषियंन दिषायं । बिज । अग्यांन । गोपी । गो । पाय ॥

४०८ पाठान्तर—ब्रंह्म ब्रंह्म । जांनी । गोविंद । घटमै । ज्यो । मै रामचंद ॥

४०९ पाठान्तर—लाभिष्टकी । बुझाय । ग्वाप । बुझो । बुझै । गोपन । बुझी । गाय ॥

४१० पाठान्तर—दढह । धारीय । कितौ । किनौ । फुंनि । सारीय । सारी । समुद । किसौ । गुरु बत्त । गुरुबत्त । अप्प व । भूज । जोर । हिलोरीय । कितक । मेरु । मेर । गिर । होइ । पिठह । तोलिय । सेस । असुराईन । दिठ । कहै । त । वलिवंत । कहि ॥

४११ पाठान्तर—त्रीय । सु किती लाई । गाय । ब्रनि । दिषाई । त्रिपाय । सुंनाई । सुनाय ॥

चंद की स्त्री का उसे कहना कि अंग अंग में हरि रूप रस वर्णन कर दिखाओ॥

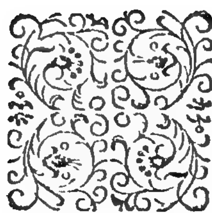
दूहा॥ अंग अंग हरि रूप रस। त्रिविधि विवेक वरेन॥
मुकति समप्पन कंत रस। जुग तिनि जोग सरेन॥ छं०॥ ७८२॥ रू०॥ ४१२॥

चंद का उत्तर दे कहना कि कान दे सुन मैं वर्णन कर दिखाता हूं॥

दूहा॥ कह्यौ भांमि सौं कंत इम। जो पूछै तत मोहि॥
कान धरौ रसना सरस। व्रन्नि दिषाऊं तोहि॥ छं०॥ ७८३॥ रू०॥ ४१३॥

इति श्री कवि चन्द विरचिते प्रथिराज रासके आदि पर्व नाम प्रथम प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥

४१२ पाठान्तर—विविध। वरन्नं। मुगति। जुंग। जैाग। सरन्न॥
४१३ पाठान्तर-भामिन। सैा। जो। पुछइ। पुछै। कांन। दिपांऊं तैाहि॥



उपसंहारिणी टिप्पण ॥



यद्यपि इस महाकाव्य के महाकवि चंद बरदाई ने इस आदि पर्व्व का उपसंहार अपनी निज काव्य रचन-शैली के अनुसार ३९५ रूपक से लेकर ४१३ तक में बड़े गूढार्थ के साथ वर्णन कर दिया है परन्तु यह भी उचित और अत्यावश्यक है कि हम भी अपनी शैली के अनुसार अपनी टिप्पणी के उपसंहारार्थ कुछ थोडा सा अपने पाठकों की सेवा में सविनय निवेदन करें कि जिससे सर्व साधारण को हिन्दी भाषा के इस महाकाव्य का कुछ स्वरूप-ज्ञान हो ॥

इस महाकाव्य का नाम **पृथ्वीराजरासो** है और यह दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात् **पृथ्वीराज** और **रासो**। इस सज्ञा का अर्थ यह होता है कि 'पृथ्वीराज का रासो" ग्रंथकर्त्ता ने **पृथ्वीराज** नामक संज्ञा से, हमारे उन पृथ्वीराजजी चौहान को अपने इस महाकाव्य का नायक

ग्रन्थ-संज्ञा

वर्णन किया है, कि जो विक्रम के बारहवें शतक में हमारे स्वदेशी अंतिम राजराजेश्वर अर्थात् बादशाह हुए हैं, कि जिनकी सूरवीरता का अभिमान आज तक प्रत्येक आर्य को है और जिनके नाम का ओठा रात्रिदिन की बोल चाल में हमारे देश के सर्व साधारण किया करते हैं। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि वे एक कैसे बड़े कट्टर आर्य और सूरवीर राजा हुए हैं, कि जिन्होंने सुलतान शहाबुद्दीन गोरी को कई बेर घोर युद्ध कर कर के पराजित किया था परंतु होनहार परम बलवान होती है कि जिससे अचिंतित् घटना भी झट उपस्थित हो जाती है। देखो ईश्वरही की इच्छा हिन्दुओं की बादशाहत स्थिर रखने की न थी, कि दैवयोग से पृथ्वीराजजी चौहान जैसे सूरवीर राजा, सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के हाथ से, अपनी अंतिम लड़ाई में, अंत को प्राप्त हुए। वह भी फिर कैसे-कि वे हिन्दुओं की बादशाहत के सब ठाठ पाटरूपी सर्वस्व को मानो अपने साथ ही लोकान्तर में लेगये और जगत को यह निर्देश कर गये कि लौकिक में जो प्राय: यह कहा करते हैं कि किसी के अंत समय उसके साथ कुछ नहीं जाता है वह एक प्रकार से असत्य है-अब रहा हिन्दी **रासो** शब्द, वह संस्कृत **रास** अथवा **रासक** से है और संस्कृत भाषा में **रास** के "शब्द, ध्वनि, क्रीडा, शृंखला विलास, गर्ज्जन नृत्य और कोलाहल आदि" के अर्थ और **रासक** के काव्य अथवा दृश्यकाव्यादि के अर्थ परम प्रसिद्ध हैं। मालूम होता है कि ग्रंथकार ने संस्कृत **भारत** शब्द के सदृश **रासो** शब्द को भावार्थ से महाकाव्य के अर्थ में ग्रहण कर प्रयोग किया है। यह **रासो** शब्द आज कल की ब्रज भाषा में भी अप्रचलित नहीं है किन्तु अन्वेषण करने से वह काव्य के अर्थ के अतिरिक्त अन्य अनेक अर्थों में भी प्रयोग होता हुआ विद्वानों की दृष्टि आवेगा, जैसे-"हमने चौदे के गदर को एक रासो जोड्यो है कल बहादर सिंघजी की बैठक मे बदर ने गदर को रासो गायो तो फिर मैं ने भरतपुर के राजा सूरजमल को रासो गायो सो सब देखते ही रह गये अजी ये कहा रासो है मैं तो कल्ल एक रासो मैं फँस गयो या सू तुमारे वहा नाय आय सक्यो-अजी राम गोपाल बडो दिवारिया है, वाके रासे मे फँस के रुपैया मत बिगाड दीजो-हमनै आज विन को रासो निमटाय दीनो है-देखो सब रासो के संग रासो है, बुरी मत मानो"-तथा लुगाईयें भी गाया करती है-

गीत ॥ मत काची तोन्ह रखियो घानी
नान्ह करूंगी अंत **रासा**
गुर राख, पकाश्रा, मत काचा । इत्यादि ॥ १ ॥
जिव लोगन की **रास** उठेगी तोन्ह के खाक उठावेगा,
हल जोत, नहीं पछतावेगा । इत्यादि ॥ २ ॥

२ यद्यपि इस महाकाव्य का केवल नाम सुनते ही उसका विषय यह प्रतीत होने लगता है कि उसमें पृथ्वीराजजी चौहान के जन्म से लेकर मरण तक के ही सब चरित्र वर्णन किये गये हैं,

विषय

परंतु उसके गर्भित वृत्तों की परीक्षा करने से जानने में आता है कि महा कवि चंद ने उसमें पृथ्वीराजजी के चरित्रों के साथ ही उनके सब समकालीन सूर, सामंत, आधीन राजा, इष्ट मित्र और सगे संबन्धी और सहायक यावदार्य राजकुलों के भी कुछ न कुछ चरित्र और शौर्य्य वर्णन किये हैं । अतएव यह कदापि नहीं समझा जा सकता कि यह महाकाव्य पृथ्वीराजजी चौहान के नायक होने के कारण से केवल चौहानो की ही बापौती का ग्रंथ है किन्तु वह वास्तव में यावदार्य राजकुलों का सर्वस्व है । देखो, पृथ्वीराजजी से लेकर जिन जिन सूर वीरों के चरित्र उसमें वर्णन किये गये हैं उन सब की विद्यमान संतान वर्तमान काल की हमारी श्रीमती भारत-राजराजेश्वरी विक्टोरिया के सिंहासन के चारो ओर उपस्थित होकर अपनी अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार तन मन और धन के द्वारा परम राजभक्ति को प्रकाश कर रही है और श्रीमती के प्रस्वेद के साथ मानों अपना रक्त तक बहाने को प्रस्तुत खड़ी है । क्या पृथ्वीराज जी के एक बड़े सूर वीर सामंत पज्जूनजी के वंश में श्रीमहाराज साहब जयपुर और उनके राज वंशीय सरदार नहीं हैं ? क्या पृथ्वीराजजी के सगे संबन्धी जयचंदजी के वंशज श्रीमहाराज साहब जोधपुर और कृष्णगढ़ और उनके भाई बेटे नहीं हैं ? क्या पृथ्वीराजजी के बहनेऊ और परम सूर वीर सहायक रावल समरसीजी की कुलीन संतान में श्रीमहाराज साहब नेपाल, श्रीमहाराणा जी साहब उदयपुर, श्रीदरबार डूंगरपुर और प्रतापगढ़ अपने अपने राजवंशी उमराव और सरदारों के सहित नहीं है ? क्या चौहानजी के अनेक वंशज बूंदी, कोटा सिरोही, नीमराणा, भदावर बेदला, कोठारिया, और पारसोली आदि के राजा महाराजा और सरदारो को आज हम अपनी आंखों से नहीं देखते हैं ? इसी तरह अन्य सब की विद्यमान संतानों को भी हमारे पाठक स्वयम् विचार देखें और इस थोड़े में ही बहुत करके समझ लें कि इस महाकाव्य का विषय बारहवें शतक के यावदार्य राजकुलों के संवलित चरित्रों से परम विभूषित है ॥

३ इस पृथ्वीराज रासो को जो हम अपने लेखों में महाकाव्य कर के लिखते हैं वह कुछ

काव्य

अन्यथा और आश्चर्यदायक नहीं है किन्तु साहित्यदर्पण में महाकाव्य का जो नीचे लिखा हुआ लक्षण लिखा है उससे वह विशेषांश में मिलता हुआ है-

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः । सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः ॥
एकवंशभवाः भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा । शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते ॥
अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः । इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम् ॥
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत् । आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा ॥
क्वचिन्निन्दा खलादीनां सताञ्च गुणकीर्त्तनम् । एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः ॥
नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह । नानावृत्तमया क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते ॥

सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत् । सन्ध्या सूर्य्येन्दुरजनीप्रदोशध्वान्तवासराः ॥
प्रातर्मध्यान्हमृगयाशैलर्तुवनसागराः । सम्भोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वराः ॥
रणप्रयाणोपयम मन्त्रपुत्रोदयादयः । वर्णनीया यथ.योगं साङ्गोपाङ्गा अमी इह ॥
कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा । नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्ग नाम तु ॥
सा० द० ५५९ ॥

जब कि वह महाकाव्य के लक्षण के अनुसार वास्तविक एक महाकाव्य है तो फिर उस के रचनेवाले का भी साहित्यशास्त्र में एक अच्छा व्युत्पन्न महाकवि होना क्या अनुमान नहीं किया जा सकता है? जैसे कि इस महाकाव्य का विषय पृथ्वीराजजी चैाहान और उनके समकालीन यावदार्य राजकुलो के चरित्रों से संवलित है वैसे ही उसका काव्य भी भिन्न भिन्न प्रकार के छंदो से विभूषित अनेक प्रकार के काव्यो का एक ऐसा सर्वलित काव्यात्मक है कि उसको हम किसी एक प्रकार के काव्य की संज्ञा प्रदान नहीं कर सकते हैं। उसके काव्य को **श्राव्य काव्य** की संज्ञा देने में हम आशा करते हैं कि किसी विद्वान को भी कुछ शंका न होगी किन्तु सूक्ष्मतर अन्वेषण करने से ज्ञात होगा कि उसको कोई **दृश्य-काव्य** का अच्छा व्युत्पन्न परीक्षक झट शोधकर जान सकता है । क्या हम यह नहीं विचार सकते कि इस महाकाव्य के छंदों को कवि ने रूपक के क्रम से क्यों गिना है? इस महाकाव्य की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से यहा तक भी स्पष्ट विदित हो सकता है कि महाकवि चंद ने उसको काव्य की अनेक उत्तमताओं के इन तीन मूलों से भी भले प्रकार विभूपित किया है । प्रथम तो महाकवि ने अपने वचन को शृंगार, रस, अनुप्रास, और अलंकारादिक से परम विचित्र किया है। दूसरे उसने भाव में चोज रक्खा है। तीसरे इस महाकाव्य के सब छंद प्राचीन और नवीन प्रकार की गानविद्या के अनुसार गाये भी जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त महाकवि ने पृथ्वीराजजी और उनके समकालीन यावदार्य राजकुलादि के इतिहास भी जहा तक उससे हो सके हैं भले प्रकार से वर्णन किये हैं। हिन्दी भाषा में साहित्यशास्त्र और सब पौराणिक अनुवाद विषयिक ग्रंथ जो अब तक प्राप्त हो सके हैं वे बारहवें शतक के अथवा उसके पहिले के नहीं है किन्तु वे सब इधर के समय के रचित हैं अतएव हम को समझना चाहिये कि चंद ने संस्कृत भाषा के अनेक ग्रंथों के आधार से ही यह महाकाव्य रचा है और जब कि यह बात ऐसी ही है, तो फिर हमको उसके परम परिश्रम के लिये कितना आभारी होकर उसकी प्रशंसा करनी चाहिये । क्या हमको इस महाकाव्य की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से चंद की उक्ति, साहित्यशास्त्र विषयिक नियम, और पौराणिक कथा आदि में उसका संस्कृत भाषा के अनेक विद्या ग्रन्थों का अनुकरण करना नहीं दृष्टि आता है? जहां तक हिन्दी भाषा के ऐसे अनेक ग्रंथ कि जो चंद के पीछे के रचित हैं हमारे पथ में आये हैं, उन सबसे यही ज्ञात होता है कि उनके रचनेवाले चंद कवि जैसे संस्कृत भाषा से भले प्रकार परिज्ञात नहीं थे और उन्होंने चंद की शैली का ही निःसंदेह अनुकरण किया है। हमारे कहने का सारांश यह है कि इस महाकाव्य का उसके अति क्लिष्ट और हमारी बुद्धि को चल विचल कर देनेवाला होने के कारण निन्दनीय ठहराना नहीं चाहिये किन्तु साहित्यशास्त्रादि के संस्कृत भाषा के अनेक ग्रंथों को हाथ में लेकर और अपने हृदय को चारण और भाटादि के वंश परंपरा के हाड-वैर के दुराग्रह से शुद्ध करके सूक्ष्मतर परीक्षा करनी चाहिये कि उससे हमको निःसंदेह यह ज्ञात हो जायगा कि हमारे स्वदेशी और यूरोपियन बड़े बड़े विद्वान जो इस महाकाव्य की प्रशंसा अब तक करते चले आये हैं वह वास्तव में वैसा ही अमूल्य महाकाव्य है और वह ऐसा है भी—कि मानों चंद अपने समय

तक के हिन्दी भाषा के सर्व प्रकार के काव्यों का एक अमूल्य संग्रह हमारे लिये प्रस्तुत कर के हमारी हिन्दी भाषा को अति धनाढ्यकर गया है। क्या यह बात पक्षपात रहित विद्वानों को अति आश्चर्य और अट्टाट्टहास कराने वाली नहीं है, कि हम इस महाकाव्य को अभी तक बहुत ही अच्छी तरह से पढ़ पढ़ा और समझ समझा तो सकते ही नहीं और न इस महाकाव्य में यूनीवर्सिटी (University) की परीक्षा की शैली के अनुसार परीक्षा दे कर उत्तीर्ण हो सकते हैं किन्तु उसको दोष देकर विध्वन्स करने को तो हम सबसे आगे आखड़े होने को प्रसन्नतापूर्वक तयार हैं? निदान किसी कवि के कहे अनुसार जो जिसके गुण को नहीं जानता वह उस की निन्दा निरंतर करता है:—"न वेत्ति, यो यस्य गुणप्रकर्षं स तस्य निन्दा सतत करोति। यथा किराती करिकुंभजाता मुक्ताः परित्यज्य विभाति, गुंजाः" ॥

जैसे इस महाकाव्य का काव्य अनेक प्रकार के काव्यों का एक संकलित काव्य है वैसेही उसकी भाषा भी उसके ग्रंथकर्त्ता के समय तक की अनेक प्रकार की प्राचीन हिन्दी भाषाओं की एक अति सवलित हिन्दीभाषा है। यदि किसी को इसमें कुछ संदेह हो तो वह इस आदि पर्व्व को ही ध्यान देकर पढ देखे कि उसके किसी छन्द की तो कैसी भाषा है और किसी की कैसी। क्या विद्वानों से यह बात छिपी हुई है कि भाषा और काव्य का नित्य-सवन्ध नहीं है? जब कि उनमें नित्य-संबन्ध का होना यथार्थ है तो फिर क्या प्रत्येक का अपने अपने अनेक प्रकारों से संवलित होना भी स्वतः सिद्ध नहीं है? इस महाकाव्य की भाषा के बीज को वे विद्वान भले प्रकार से जान सकते हैं कि जो वर्तमान समय में फिलोलोजिष्ट (Philologists) अर्थात् शब्दोत्पत्तिविद्याज्ञ कहलाते हैं। और वैसे तो हमारे पढने में वर्तमान समय के ऐसे ऐसे सहसा सिद्धान्त कर लेने वाले विद्वानों के भी लेख आये हैं कि जिन्हों ने ऐसा अत्यन्ताभाव का वाक्य भी कहा है, कि इस महाकाव्य के महाकवि को अनुस्वार और विसर्ग तक के प्रयोग करने का बोध नहीं था। और विद्वान भलेही ऐसा कहने में सम्मत हों परंतु हमारे मुख से तो इस महाकाव्य के काव्य को देखते हुए ऐसा सुन कर वारंवार यही निकलता है कि—त्राहि गोविन्द! त्राहि गोविन्द!! ग्रंथकर्त्ता ने इस ग्रंथ को जिस भाषा में लिखा है वह उसने स्वयम् ही इस आदि पर्व्व के रूपक ३९ में स्पष्ट कह दी है और जैसा उसने कहा है वैसी ही भाषा हम इस महाकाव्य की पाते भी हैं। फिर आश्चर्य क्या है? वह यही है—कि न तो हम इस ग्रंथ को आदि से लेकर अंत पर्यंत पढते हैं, न समझते हैं, न कवि के अभिप्राय को लक्ष में लाते हैं, न यह विचारते हैं कि बड़े बड़े विद्वान कि जिन के वचन पर अनेक मनुष्य विश्वास करते हैं उनके सिर पर कुछ सम्मति देते समय बड़ी भारी जिम्मेदारी अर्थात् अनुयोज्यता का बोझ भी रक्खा हुआ है कि नहीं—किन्तु जो मन में आया वही हम लिख डालते हैं, क्योंकि न तो चंद कवि, न पृथ्वीराजजी चौहान, और न रावल समरसीजी हमसे हमारे ऐसा कहने के लिये अब लडने को आ सकते हैं, और न किसी क्षीर-नीर का सा न्याय करने वाले विद्वान का हमको डर है। देखो, हमने अपनी प्रथम टिप्पणी में ही कह दिया है कि इस महाकाव्य की हिन्दी भाषा तीन प्रकार की है। प्रथम षट-भाषा-और-कुरान-की भाषा-की-योनिवाली दूसरे षट-भाषा-और-कुरान-की-भाषा-के-सम, और तीसरे देशी प्रसिद्ध। इसके अतिरिक्त विद्वानों को इस महाकाव्य की भाषा की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से ज्ञात होगा कि चंद कवि ने साहित्यदर्पण में लिखे हुए भाषा के प्रयोग के निम्न लिखित नियमों का भी अपने निज विचार और शैली के संस्कार सहित इस महाकाव्य के रचने में कुछ अनुकरण किया है—

भाषा

पुरुषाणामनीचानां संस्कृतं स्यात्कृतात्मनाम् । शौरसेनी प्रयोक्तव्या तादृशीनाञ्च योषिताम् ॥
आसामेव तु गाथासु महाराष्ट्रीं प्रयोजयेत् । अत्रोक्ता मागधीभाषा राजान्तःपुरचारिणाम् ॥
चेटाना राजपुत्राणां श्रेष्टीनां चार्द्धमागधी । प्राच्या विदूषकादीनां धूर्तानां स्यादवन्तिका ॥
योधनागरिकादीनां दाक्षिणात्या हि दीव्यताम् । शकाराणा शकादीनां शाकारीं सम्प्रयोजयेत् ॥
वाह्लीकभाषा दिव्यानां द्राविडी द्रविडादिषु । आभीरेषु तथाऽभीरी चाण्डाली पुक्कसादिषु ॥
आभीरी शावरी चापि काष्टपत्रोपजीविषु । तथैवाङ्गाकारादौ पैशाची स्यात् पिशाचवाक् ॥
चेटीनामप्यनीचानामपि स्यात् शौरसेनिका । वालानां षण्डकानाञ्च नीचग्रहविचारिणाम् ॥
उन्मत्तानामातुराणां सैवे स्यात् संस्कृतं क्वचित् । ऐश्वर्य्येण प्रमत्तस्य दारिद्रोपस्कृतस्य च ॥
भिक्षुबन्धधरादीनां प्राकृतं सम्प्रयोजयेत् । संस्कृतं संप्रयोक्तव्यं लिङ्गिनी पूत्तमासु च ॥
देवीमन्त्रिसुतावेश्या स्वपि कैश्चित्तथोदितम् । यद्देशं नीचपात्रन्तु तद्देशं तस्य भाषितम् ॥
कार्यातश्चोत्तमादीनां कार्य्यो भाषाविपर्यः । योषित् सखीबालावेश्यां कितवाप्सरसां तथा ॥
वैदग्ध्यार्थं प्रदातव्य संस्कृतं चान्तरान्तरा ॥ स०द० ४३२ ॥

इस बात की कुछ परीक्षा हम इस आदि पर्व्व में ही कर सकते हैं। देखिये रूपक ३३, ३९, आदि शुद्ध संस्कृत भाषा में हैं और रूपक १६, २२, ४७, ५७, ५९, इत्यादि में षटभाषाओं का सादृश्य और साटकों में प्रायः संस्कृतादि भाषाओं का सादृश्य है। इसी प्रकार हमारे पाठक इस भाषा सम्बन्धी सब बातों को इस समय ग्रन्थ में अन्वेषण कर जांच देखें। यदि इस प्रकार की परीक्षा करने पर सब विद्वनों की सम्मति में यही तुलेगा कि चंद कवि वज्र-मूर्ख था तो हम भी उस को वड़ा वज्र-मूर्ख कहने लगेंगे क्योंकि वह हमारा कोई सबन्धी नहीं है और न हम को अपने कहे का कुछ हठ है वरन हमारा सिद्धान्त यही है कि सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग हो। इस महाकाव्य की भाषा मे दो एक वर्ष से एक यह भी बड़ी भारी शंका लोगो ने खडी की है कि उस में आठ या १० दस भाग में एक भाग के फारसी शब्द हैं और फारसी शब्द अकबर बादशाह के समय से हिन्दी भाषा में मिले हैं अतएव यह महाकाव्य सं० १६४० से १६७० के बीच में कृत्रिम बना है। हम इस बात से बिलकुलही असम्मत हैं और ऐसा अनुमान करने वाले को हम समझते है कि उसने न तो यह पृथ्वीराज रासो कभी आदि से अंत परियंत अच्छी तरह से पढा है और न उसको ऐतिहासिक विद्या का पूरा पूरा बोध है क्योंकि यह अनुमान बिलकुलही अदृढ़ और अपरिपक्व है। वरन अब तक के ऐतिहासिक शोधो के अनुसार हमारी सम्मति में फारसी शब्दों का मेल हमारे भरतखण्ड की बोलचाल की भाषाओं में सातवें शतक तक पाया जा सकता है कि फिर इस बारहवे शतक की हिन्दी भाषा की तो क्याही कथा कहनी है। टुक विचार कर देखिये कि किसी देश की भाषा में अन्य देशीय भाषा के शब्दादि का मेल बहुधा करके प्रथम बोलचाल की भाषा मे ही हुआ करता है न कि किसी मृतप्राय भाषा मे और वह विदेशियों के किसी देश में आने जाने, बसने बसाने, रहने सहने, मिलने मिलाने वाणिज्य करने कराने, राज्य के बदलने बदलाने, मत के बिगडने बिगडाने आदि कारणो से ही हुआ करता है। तदनन्तर आप नीचे लिखे कारणो को विचार कर देखिये और निर्णय कीजिये कि चन्द की हिन्दी में जो फारसी शब्दों के प्रयोग सबन्धी दोष दिये जाते है वे वास्तव में यथार्थ हैं अथवा नहीं—

१ पृथ्वीराज रासो के किसी भी समय में आठ या दस भाग में एक भाग के फारसी शब्द नहो है और जब प्रत्येक समय में नहीं हैं तब समय ग्रन्थ में भी न होना स्वतः सिद्ध है।

यदि किसी को निश्चय करना हो तो इस आदि पर्व्व से ही गिन कर निश्चय करले। हां ऐसा तो निःसंदेह कह सकते हैं कि उसमें अनेक फारसी शब्द हैं किन्तु विना गिने ऐसी असत्य संख्या स्थिर नहीं कर सकते हैं॥

२ ग्रन्थकर्त्ता ने रूपक ३९ में स्वयम् कहा है कि उसने कुरान की भाषा का भी आश्रय लिया है॥

३ ग्रंथकर्त्ता महाकवि चंद पंजाब देश के लाहौर नगर में उत्पन्न हुआ था, जहां कि उस के जन्म होने के १०० वर्ष पहिले से ही महमूदी सलतनत का होना और उसका पृथ्वीराज जी के साथ ही साथ नाश होना **तबकात नासरी** से ही सिद्ध है। फिर क्या कोई विद्वान यह अनुमान कर सकता है कि इस सो १०० वर्ष के समय में लाहौर नगर की भाषा में कोई एक भी शब्द मुसलमानी भाषा का नहीं मिल सका था और न चंद कवि एक भी फारसी शब्द जानता था और न उसके सुनने में कभी कोई एक भी फारसी शब्द आया था किन्तु वह इस वाक्य "न वदेत यावनी भाषां कंठै प्राण गतैरपि" का ही अनुरूप था? क्या महमूदी सलतनत के राज्य समय में कोई एक भी हिन्दू मुसलमान नहीं हुआ था, न कोई मसज़िद बनी थी, न कोई नगर आदि मुसलमानी नाम से बसे थे?।

४ क्या पृथ्वीराजजी के राज्य की और महमूदी सलतनत की परस्पर सीमा नहीं मिली हुई थी? क्या इन दोनों राज्यों के दूत एक दूसरे के राज्य में आते जाते और नहीं रहते थे? यदि परस्पर लिखा पढ़ी का काम पड़ा था तो क्या वह शुद्ध वैदिक संस्कृत भाषा में लिखा पढ़ी हुई थी और क्या महमूदी सलतनत वाले भी संस्कृतादि मृतःप्राय भाषाओं में ही अपना राज का काम चलाते थे?

५ क्या हसन निज़ामी आदि से हम को यह ज्ञात होता है कि पृथ्वीराजजी के राज्य समय में उनकी सेवा में अथवा उनके राज्य में न तो कोई फारसी जानने वाला था न कोई सुलतान की ओर से कभी कुछ संदेसा लेकर पृथ्वीराजजी के पास गया, न कोई मुसलमान सिपाही था, न कोई मुसलमान सौदागर था, न कोई मुसलमान यात्री वहां आया था, न कोई मुसलमान उनके आधीन देश में रहता था, मानो पृथ्वीराजजी के राज्य समय की हिन्दी भाषा को मुसलमानी भाषा की किंचित् वायु ही नहीं लगी थी? क्या चित्ररेखा नाम की सुलतान शहाबुद्दीन गोरी की एक परम प्रिया पासवान को हसन नामक व्यक्ति का उडा लाना तबकातनासरी से कुछ भी सिद्ध नहीं होता और क्या यही सुभगा पृथ्वीराजजी की शरणागत में रह कर हमारी हिन्दुओं की बादशाहत को समूल नाश को प्राप्त कराने वालों में नहीं हुई है?

६ क्या सुलतान शहाबुद्दीन गोरी ने कई बेर पृथ्वीराजजी और लाहौर की महमूदी सलतनत पर चढ़ाईयां नहीं की थीं? क्या इन अवसरों में भी जो फारसी शब्द चन्द ने प्रयोग किये हैं वे चंद और पृथ्वीराजजी की सेना के सुनने और समझने में कभी नहीं आये थे और न उनमें का कोई एक शब्द भी उनकी भाषा में मिल गया था? क्या जब शहाबुद्दीन ने लाहौर की महमूदी सलतनत पर चढ़ाईयां कीं तब लाहौर वालों ने पृथ्वीराजजी से कुछ मंत्रणा नहीं की थी और न उनकी कुछ सहायता ली थी?

७ क्या मसूद ने हासी पर चढ़ाई नहीं की थी? क्या वह लाहौर के एक वाईसराय (Viceroy) के साथ बनारस तक नहीं आया था और न उसने उस शिवपुरी को लूटा था क्या इस समय में भी कोई एक भी शब्द मुसलमानी भाषा का हमारी हिन्दी भाषा मे नहीं मिला था?

८ क्या महमूद गजनवी की १६ वा १७ चढ़ाइयां (सन् ९९६ से १०३० तक) हमारे देश की भाषाओं में कोई एक भी मुसलमानी शब्द नहीं मिला सकी थीं? क्या हमारे गुजराती बन्धुओं को महमूद गजनवी के निज मुख के "बुतशिकन्" और "बुत्फरोश" शब्द सोमनाथ के नाश के दिन से आज तक नहीं याद रहे हैं? क्या गुजरात के नागर ब्राह्मणों में से जिन्होंने अपने देश की रक्षा के लिये पुरुषार्थ किया और मुसलमानी बादशाहों की सेवा करना अंगीकार किया उनका नाम "सिपाही नागर" नहीं पड़ा है? क्या महमूद के समय में कोई भी हिन्दू मुसलमान नहीं हुआ था? क्या मथुरापुरी में उसके लर में अनेक हिन्दू गुलाम दो दो रुपयों पर नहीं बिके थे? क्या उसकी एक लाख सवार और बीस हज़ार पैदल फौज के साथ हमारे स्वदेशी व्यापारियों की बोलचाल देववाणी में होती थी और कोई एक भी मुसलमानी शब्द उसकी फौज हमारे देश के अनेक नगरों में अपने पीछे अपने स्मारकचिन्ह की भांति नहीं छोड़ गई थी? क्या महमूदबाद नामक कोई भी नगर महमूद का बसाया हुआ हमारे देश में नहीं है?

९ क्या अब्दुलअसी ने सन् ६३६ ई० के लगभग **बंबई** के समीप के **थाना** पर चढ़ाई नहीं की थी? क्या **इराक** के परम प्रसिद्ध जालिम गवरनर **हज्जाज** के समय में राजा **दाहिर** से सिंध विजय नहीं किया गया था? क्या फिर सन् ७१२ ई० में **महम्मद कासिम** ने सिंध पर चढ़ाई करके सिन्ध को नष्ट भ्रष्ट और लूट खसोट नहीं किया था और राजा **दाहिर** को नहीं मारडाला था? क्या राजा **दाहिर** का लड़का **जयसिंह** इस समय कितनेक और छोटे मोटे सिन्ध के राजा और सरदारों सहित मुसलमान नहीं होगया था और क्या तब से ही मुसलमानी धर्म का आज तक सिन्ध में बराबर चला आना ऐतिहासिक शोध नहीं सिद्ध करते हैं? क्या सिन्धी मुसलमान पृथ्वीराजजी के पीछे हुए हैं? क्या इस दशा में कोई एक भी **अरबी** शब्द हमारी देश भाषाओं में उस समय नहीं मिला है?

१० क्या ऐतिहासिक शोध हमको यह नहीं विदित करते हैं कि पारसी लोग सैसेनियन् वंश की अवनति के समय फारस से भागकर हमारे देश के बंबई नगर के आस पास आकर बसे हैं? क्या इन लोगों ने अपनी मातृभाषा का कोई एक शब्द भी पृथ्वीराज जी के समय तक हमारी देश भाषा में नहीं मिलाया था? क्या उनको हमारे देश के लोग पारसी के बदले कोई अन्य वैदिक शब्द से पुकारते थे?

११ क्या गुजराती भाषा में फारसी शब्दों के मिलने का शोध सं० १३५६ तक शास्त्री व्रजलाल कालिदासजी के रचित गुजराती भाषा के इतिहास नामक ग्रन्थ से पहुंचना नहीं विदित होता है? जो इसी तरह हमको देशभाषा के प्राचीन ग्रन्थादि बराबर मिलते जाय तो क्या हम सातवीं सदी तक कोई एक भी मुसलमानी शब्द अपनी देशभाषाओं में मिला हुआ नहीं शोध सकते हैं।

१२ क्या पुरातत्त्ववेत्ताओं ने यह शोध लिया है कि हिन्दी भाषा का अमुक समय में प्रागट्य हुआ है? क्या बारहवें शतक के पहिले और उसके एक दो शतक पीछे के कोई पुस्तक ताम्रपत्र प्रशस्ती पट्टे परवाने [illegible] के अनुमान अद्यापि नहीं हैं कि जिनसे हम यह कह सकें कि बारहवें शतक के पहिले अथवा उसके कुछ पीछे के समय तक भी मुसलमानी भाषा के शब्द हिन्दी में नहीं मिले थे? क्या अब तक के प्राप्त हुए पुरातत्व संस्कृतादि मृतप्राय भाषाओं में नहीं हैं और उनकी अपेक्षा से हिन्दी भाषा के विषय में कल्पना करना बहुत ही आश्चर्य दायक और अयोग्य नहीं है?

१३ क्या संस्कृत भाषा के उन ग्रंथो में, जिनको पुरातत्त्ववेत्ता बारहवें शतक के पहिले के बने हुए मानते हैं, ऐसे ऐसे शब्द हमको प्राप्त नहीं होते हैं कि उन नाम के देश और मनुष्य यूरोप आदि अन्य खंडो में आज भी विद्यमान है? क्या विक्रमादित्यजी की "शाकारि" पदवी साधु संस्कृत भाषा की है? क्या रावल समरसीजी की आबू की प्रशस्ति के ४५ वें श्लोक में 'तुरुष्क" शब्द नहीं प्रयोग हुआ है? क्या व्याकरण महाभाष्य से बहुत सी धातुओं का प्रयोग द्वीपान्तरों में होना विदित नहीं होता है? क्या महाभारत में पांडवों का यावनी भाषा में बात करना नहीं लिखा मिलता है?

१४ क्या वर्तमान समय के अच्छे हिन्दी लिखनेवालों में से कोई किसी विद्वत मंडली में खड़ा होकर यह कह सकता है कि चिट्ठी पत्री से लेकर ग्रन्थ तक जो कुछ उसने आज तक हिन्दी भाषा में लिखा है उन सबकी हिन्दी एक सी ही है अर्थात् उसके अनेक लेखों में से ऐसे ऐसे उदाहरण बिलकुल नही मिल सकेंगे कि उनके किसी लेख मे तो एक भी फारसी शब्द नहीं आया होगा और किसी में अनेक फारसी शब्द प्रयोग हुए होगे? यदि पृथ्वीराज रासा की भांति एक हजार वर्ष के पीछे कोई ऐसे हमारे स्वदेशीय बन्धु को ऐसे लेखो को हाथ मे लेकर वाद विवाद करें तो क्या दोनों पक्षकारों को प्रत्येक के अनुकूल तर्क नहीं मिल सकेंगे? जब आज ही हम लोगो की यह दशा है कि कभी कैसी हिन्दी लिखते हैं और कभी कैसी तो फिर प्राचीन समय के ग्रंथकर्त्ताओं में से जिसने यह स्पष्ट कह दिया है कि मैं कुरान की भाषा को भी प्रयोग में लेता हूं उसको हम क्योंकर दोष दे सकते है? क्या हम अनुमान नहीं कर सकते कि प्राचीन ग्रंथकारो में से जिसने जैसी हिन्दी चाही उसने वे[illegible]ी ही लिखी है?

१५ क्या आज कल के विद्यमान देशी राजस्थानों में आस्मार्त्त समय से अब तक मुसलमान बादशाह सिपहसालार, सरदार, सौदागर, मौलवी, मुल्ला और काजी आदि के नाम अपनी देशभाषा हिन्दी और मृतप्राय भाषा संस्कृतादि के होते हुए भी फारसी अक्षरो और उसी भाषा में चिट्ठी पत्री और फ़रमान खरीते आदि के लिखे जाने का प्रचार नहीं प्रचलित है? क्या आज के एक-डंकी, अंग्रेजी राज्य शासन समय में भी राजपुताने के अन्तरगत राज्यो से श्रीमान् वाइसराय और गवरनरजनरैल साहब बहादुर के नाम उभय को विदेशी फ़ारसी भाषा और लिपि में ख़रीते नहीं लिखे जाते हैं? बहुत समय के व्यतीत होजाने पर जब कि वर्त्तमान समय के वृत्त पुरातत्त्व संज्ञा से माने जावेंगे और वे ऐसे ही अलभ्य होगे जैसे कि आज पृथ्वीराजजी के समय के हैं तब फिर क्या उस समय के विद्वानों का वैसे ही तर्कों से कि जैसो से आज हम लोग रासे में दोष देते हैं इन देशी राज्यो की इन फ़ारसी लिपि और भाषा में गवर्मेण्ट हिन्द के नाम लिखे हुए ख़रीतो को भी जाली समझना यथार्थ होगा? क्या यह व्यवहार भी वर्तमान समय में देशी राजस्थानों में प्रचलित नहीं है कि जब गवर्मेण्ट हिन्द के नाम खरीता लिखने का काम पड़ता है तब फ़ारसी भाषा के विद्वानों को घेर घार कर, फारसी कोषो मे शब्दों को ढूंढ ढांढ कर, और एकान्त में बैठ बाठ कर, कई दिनों तक अति परिश्रम कर के वे नहीं लिखे जाते हैं; उसी तरह जब किसी मन्दि[illegible] पड़ता है तब वैसेही देशी और विदेशी पंडितों को चाहे वे उनकी [illegible] सहायता [illegible] नहो घेर घार कर संस्कृत भाषा में प्रशस्तिया नहीं लिखाई जाती है और जब किसी राजा की बिरदावली का कोई कवित्त बनवाने का काम पड़ता है तब पट भाषाओ की भाषा से बिगड़ कर बनी हुई डिंगल भाषा में काव्य नहीं रचवाया जाता है और जब लाट साहब की पधरावनी का उत्सव किया जाता

है तब उसमें Address अर्थात् अभिवादन अंग्रेज़ी भाषा में नहीं दिया जाता है ? क्या ये सब भाषएं आज प्रचलित हैं और क्या आज मुसलमानों की बादशाहत है ? क्या जो आज हम महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के राज्यशासन समय के सर्व प्रकार के सब राजकीय लेख एकत्र करके देखें तो वे सब एकही भाषा में हमको लिखे मिलेंगे ? क्योंकि क्या सब राजा साहबों के स्वर्गवास होने पर राज की मोहर, छाप और स्टाम्प और सिक्के आदि में उसी दिन नवीन राजा साहब का नाम पलट करके वैसेही हुक्म जारी हो जाते हैं कि जैसे आज अंग्रेजी राज्य में होते हैं कि जिस राजकीय व्यवहार के संस्कार से विद्यमान पुरातत्ववेत्ता उपलब्ध पुरातत्वों को जांचा करते हैं ? क्या मेवाड राज्य मे महाराणाजी श्री शंभूसिंहजी के नाम का स्टाम्प आज तक नहीं जारी है ? क्या महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के नाम की छाप वर्त्तमान महाराणाजी साहब के राज्य शासन समय में कई वर्षों तक नहीं जारी रही है ? क्या ऐसे स्टाम्प पर लिखी हुई दस्तावेजें और ऐसी छाप लगे पत्र बहुत समय के व्यतीत हो जाने पर जाली समझे जांयगे और जिन जिन के पास ये राजकीय लेखादि उस समय में मिलेंगे वे सब जाल के अपराधी समझे जाकर फांसी लगाये और कालेपानी भेजे जावेंगे ?

साराश हमारे निवेदन करने का यह है कि हिन्दी भाषा में अन्य देशीय भाषाओं के शब्दादि के मिलने का प्रश्न बडाही सूक्ष्म और कठिन है और जो हमारी तरह विद्वान लोग यह मान लें कि जब जिस अन्य देशीय का आना हमारे भरतखंड में हुआ तब ही से उसकी भाषा के शब्दों का भी मेल होना अति संभवित् है तो यह प्रश्न बडाही सरल हो जाता है। हमारे सिद्धान्त को माने बिना इस प्रश्न का निर्णय करना बहुत दुस्तर है क्योंकि जो चंद कवि के पहिले अथवा उसके समय के भी हिन्दी भाषा के पुस्तकादि मिल जांय और उनमे मुसलमानी भाषाओं के शब्द न भी मिलें तो भी हम सुख से यह अनुमान कर सकते हैं कि उनके रचनेवालों ने उनको जानकर प्रयोग नहीं किया और चंद ने रूपक ३९ की प्रतिज्ञा पूर्व्वक उनका प्रयोग किया है जैसे कि वर्तमान समय में भी हिन्दी भाषा के अनेक विद्वान अनेक प्रकार की हिन्दी लिखते हैं॥

कविराजजी ने इस महाकाव्य की भाषा के प्रसंग में जैसे मुसलमानी शब्दों के प्रयोग होने का दोष दिया है वैसे ही उन्होंने इन **सत्त। चावद्दिसि। भारत्थ। पारत्थ। सारत्थ।** और चुक शब्दों को भी राजपुताने की कविता के ही शब्द होना समझकर इस महाकाव्य का मेवाड राज्य में जाली बनना भी अनुमान किया है। तथा इस ग्रंथ में बहुत से शब्द अनुस्वार सहित प्रयोग हुए है उनके विषय में भी उन्होंने महाकवि चंद पर आक्षेप करके यह कहा है कि "अनुस्वार लगाने से यह स्पष्ट ज्ञान पडता है कि यह संस्कृत कुछ भी नहीं जानता था क्योंकि उसको बिन्दु विसर्ग का भी ठीक ज्ञान न था" परन्तु हमारी तुच्छ सम्मति में महामहोपाध्याय कविराज श्री श्यामलदासजी महाशय का यह सब कहना बिलकुल्ल ही असत्य और निर्मूल है। अब जो प्रमाण हमारे इस कहने को समर्थन करने को हम आगे दिखावेंगे उनसे यह भी स्पष्ट सिद्ध होगा कि जिन जिन ग्रंथो से हमने उनको उद्धृत किया है वे कविराजजी के [illegible] होगे नहीं तो वे ऐसे अत्यन [illegible] अनुमान कदापि नहीं करते–

१ यद्यपि **सत्त** शब्द क
अपनों लिखित **प्रथम संरच**।
अबै थारूं सत्त चढ आयो-तबै वो स।

र॥ कृति तुम दीनह
सयर। धं
। गाज। उं। उत्तर॥ 'न। मनौ। दं८

१३ क्या संस्कृत भाषा के उन ग्रंथों में, जिनको पुरातत्त्ववेत्ता बारहवें शतक के पहिले के बने हुए मानते हैं, ऐसे ऐसे शब्द हमको प्राप्त नहीं होते हैं कि उन नाम के देश और मनुष्य यूरोप आदि अन्य खंडों में आज भी विद्यमान है? क्या विक्रमादित्यजी की "शाकारि" पदवी साधु संस्कृत भाषा की है? क्या रावल समरसीजी की आबू की प्रशस्ति के ४५ वे श्लोक में "तुरुष्क" शब्द नहीं प्रयोग हुआ है? क्या व्याकरण महाभाष्य से बहुत सी धातुओं का प्रयोग द्वीपान्तरों में होना विदित नहीं होता है? क्या महाभारत में पांडवों का यावनी भाषा में बात करना नहीं लिखा मिलता है?

१४ क्या वर्तमान समय के अच्छी हिन्दी लिखनेवालों में से कोई किसी विद्वत मंडली में खड़ा होकर यह कह सकता है कि चिट्ठी पत्री से लेकर ग्रन्थ तक जो कुछ उसने आज तक हिन्दी भाषा में लिखा है उन सबकी हिन्दी एक सी ही है अर्थात् उसके अनेक लेखों मे से ऐसे ऐसे उदाहरण बिलकुल नहीं मिल सकेंगे कि उनके किसी लेख मे तो एक भी फारसी शब्द नहीं आया होगा और किसी में अनेक फारसी शब्द प्रयोग हुए होंगे? यदि पृथ्वीराज रासो की भांति एक हजार वर्ष के पीछे कोई ऐसे हमारे स्वदेशीय बन्धु को ऐसे लेखो को हाथ मे लेकर वाद विवाद करें तो क्या दोनों पक्षकारों को प्रत्येक के अनुकूल तर्क नहीं मिल सकेंगे? जब आज ही हम लोगों की यह दशा है कि कभी कैसी हिन्दी लिखते हैं और कभी कैसी तो फिर प्राचीन समय के ग्रंथकर्त्ताओं में से जिसने यह स्पष्ट कह दिया है कि मैं कुरान की भाषा को भी प्रयोग में लेता हूं उसको हम क्योंकर दोष दे सकते है? क्या हम अनुमान नहीं कर सकते कि प्राचीन ग्रंथकारों में से जिसने जैसी हिन्दी चाही उसने वैसी ही लिखी है?

१५ क्या आज कल के विद्यमान देशी राजस्थानों में आस्मार्त्त समय से अब तक मुसलमान बादशाह सिपहसालार, सरदार, सौदागर, मौलवी, मुल्ला और काजी आदि के नाम अपनी देशभाषा हिन्दी और मृतप्राय भाषा सस्कृतादि के होते हुए भी फ़ारसी अक्षरों और उसी भाषा में चिट्ठी पत्री और फ़रमान खरीते आदि के लिखे जाने का प्रचार नहीं प्रचलित है? क्या आज के एक-डंकी अंग्रेजी राज्य शासन समय में भी राजपुताने के अन्तरगत राज्यों से श्रीमान् वाइसराय और गवरनरजनरैल साहब बहादुर के नाम उभय को विदेशी फ़ारसी भाषा और लिपि में ख़रीते नहीं लिखे जाते हैं? बहुत समय के व्यतीत होजाने पर जब कि वर्त्तमान समय के वृत्त पुरातत्व संज्ञा से माने जावेंगे और वे ऐसे ही अलभ्य होंगे जैसे कि आज पृथ्वीराजजी के समय के हैं तब फिर क्या उस समय के विद्वानों का वैसे ही तर्कों से कि जैसो से आज हम लोग रासो में दोष देते हैं इन देशी राज्यों की इन फ़ारसी लिपि और भाषा में गवर्मेण्ट हिन्द के नाम लिखे हुए ख़रीतों को भी जाली समझना यथार्थ होगा? क्या यह व्यवहार भी वर्तमान समय में देशी राजस्थानों में प्रचलित नहीं है कि जब गवर्मेण्ट हिन्द के नाम खरीता लिखने का काम पड़ता है तब फ़ारसी भाषा के विद्वानो को घेर घार कर, फ़ारसी कोषो में शब्दों को ढूंढ ढांढ कर, और एकान्त में बैठ बाठ कर, कई दिनों तक अति परिश्रम कर के वे नहीं लिखे जाते हैं; उसी तरह जब किसी मंदि[illegible] पड़ता है तब वैसेही देशी और विदेशी पंडितों को चाहे वे उनकी [illegible] सहायता [illegible] घेर घार कर संस्कृत भाषा में प्रशस्तियां नहीं लिखाई जाती है और जब किसी राजा की विरदावली का कोई कवित्त बनवाने का काम पड़ता है तब षट भाषाओं की भाषा से बिगड़ कर बनी हुई डिंगल भाषा में काव्य नहीं रचवाया जाता है और जब लाट साहब की पधरावनी का उत्सव किया जाता

है तब उसमें Address अर्थात् अभिवादन अंग्रेज़ी भाषा में नहीं दिया जाता है? क्या ... भाषएं आज प्रचलित हैं और क्या आज मुसलमानों की बादशाहत है? क्या ... महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के राज्यशासन समय के सर्व प्रकार के सब राजकीय ... एकत्र करके देखें तो वे सब एकही भाषा में हमको लिखे मिलेंगे? क्योंकि क्या सब राजा साहबों के स्वर्गवास होने पर राज की मोहर, छाप और स्टाम्प और सिक्के आदि में ... नवीन राजा साहब का नाम पलट करके वैसेही हुक्म जारी हो जाते हैं कि जैसे आज अंग्रेजी राज्य मे होते हैं कि जिस राजकीय व्यवहार के संस्कार से विद्यमान पुरातत्ववेत्ता उपलब्ध पुरातत्वों को जांचा करते है? क्या मेवाड राज्य में महाराणाजी श्री शंभूसिंहजी के नाम का स्टाम्प आज तक नहीं जारी है? क्या महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के नाम की छाप वर्त्तमान महाराणाजी साहब के राज्य शासन समय में कई वर्षों तक नहीं जारी रही है? क्या ऐसे स्टाम्प पर लिखी हुई दस्तावेजें और ऐसी छाप लगे पत्र बहुत समय के व्यतीत हो जाने पर जाली समझे जांयगे और जिन जिन के पास ये राजकीय लेखादि उस समय में मिलेंगे वे सब जाल के अपराधी समझे जाकर फांसी लगाये और कालेपानी भेजे जावेंगे?

सारांश हमारे निवेदन करने का यह है कि हिन्दी भाषा में अन्य देशीय भाषाओं के शब्दादि के मिलने का प्रश्न बडाही सूक्ष्म और कठिन है और जो हमारी तरह विद्वान लोग यह मान लें कि जब जिस अन्य देशीय का आना हमारे भरतखंड में हुआ तब ही से उसकी भाषा के शब्दों का भी मेल होना अति संभवित् है तो यह प्रश्न बड़ाही सरल हो जाता है। हमारे सिद्धान्त को माने बिना इस प्रश्न का निर्णय करना बहुत दुस्तर है क्योंकि जो चंद कवि के पहिले अथवा उसके समय के भी हिन्दी भाषा के पुस्तकादि मिल जांय और उनमें मुसलमानी भाषाओं के शब्द न भी मिलें तो भी हम सुख से यह अनुमान कर सकते हैं कि उनके रचनेवालो ने उनको जानकर प्रयोग नहीं किया और चंद ने रूपक ३९ की प्रतिज्ञा पूर्व्वक उनका प्रयोग किया हैं जैसे कि वर्तमान समय में भी हिन्दी भाषा के अनेक विद्वान अनेक प्रकार की हिन्दी लिखते हैं ॥

कविराजजी ने इस महाकाव्य की भाषा के प्रसंग में जैसे मुसलमानी शब्दों के प्रयोग होने का दोष दिया है वैसे ही उन्होंने इन **सत्त। चावद्दिसि। भारत्थ। पारत्थ। सारत्थ।** और **चूक** शब्दों को भी राजपुताने की कविता के ही शब्द होना समझकर इस महाकाव्य का मेवाड राज्य में जाली बनना भी अनुमान किया है। तथा इस ग्रंथ में बहुत से शब्द अनुस्वार सहित प्रयोग हुए हैं उनके विषय में भी उन्होंने महाकवि चंद पर आक्षेप करके यह कहा है कि "अनुस्वार लगाने से यह स्पष्ट जान पड़ता है कि वह संस्कृत कुछ भी नहीं जानता था ... उसको बिन्दु विसर्ग का भी ठीक ज्ञान न था" परन्तु हमारी तुच्छ सम्मति में महामहो... कविराज श्री श्यामलदासजी महाशय का यह सब कहना बिलकुल्ल ही असत्य और ... है। अब जो प्रमाण हमारे इस कहने को समर्थन करने को हम आगे दिखावेंगे उनसे ...ह भी स्पष्ट सिद्ध होगा कि जिन जिन ग्रंथों से हमने उनको उद्धृत किया हैं वे कविराजजी के पढने में ... होगे नहीं तो वे ऐसे अत्य... [illegible]

चार नित्त हैं—तथापि एक यह दोहा भी हम **कविवचनसुधा** से उद्धृत करके प्रमाण में प्रवेश करते हैं–"सत्त सुवचन कबीर के, चित्त देय सुन लेहु ॥ अरु नानक गुरु के वचन, सत्त मत्त करि गेहु" ॥ तथा खालशाकृत विनयपत्रिका में–"दात्य मोत पाद देख हर्पे सर्व **सत्त** लेष मो दीन रेख मेख मार भाल मन्द के" यह शब्द ऐसा अप्रसिद्ध नहीं है कि जिसके प्रयोग के विषय में हिन्दी भाषा के विद्वनों को किंचित् भी सदेह हो अतएव हम अधिक उदाहरण नहीं लिखते ॥

२ श्रीमद्वल्लभ संप्रदाय में जो अष्ट–छाप करके प्रसिद्ध हैं उनमें के एक कुंभनदासजी ने "चार्वद्दिसि हरि रूप रम्यो" अपने एक कीर्त्तन में कहा है ॥

३ इन **भारत्थ, सारत्थ,** और **पारत्थ** शब्दों के प्रयोग के विषय में हमने **प्रथम संरक्षा** में बहुत कुछ कहा ही है परन्तु फिर भी हम एक प्रमाण अष्ट–छापवाले छीत स्वामी के एक कीर्त्तन में से यह बाताते हैं "भारथ्थ में सारथ्थ ह्वै हरि जू कहाये सारथी" और पडित कन्हैयालालजी कृत छंदप्रदीप नामक ग्रंथ से वैसे ही अन्य शब्दों के प्रयोगों के उदाहरण भी विदित करते हैं यथा–(१) करि गहि भार **समथ्थ** । (२) यश पायो नृप **मथ्थ** । (३) **मत्थन** नत करि **लज्जित** दिगज । (४) **सुसज्जिय** भ्रमगति । (५) **उत्थिय** समुद **वट्टिय** लहरि । (६)रहि **तदत्थकि** जियसु अरि(७)लखि **दव्वत** सब नृपति(८)सिहवली **समरत्थ हत्थिवर मत्थ** विदारन

४ अब शेष **चूक** शब्द के विषय में भी हमारी लिखित संरक्षा मे लिखे के सिवाय हमको यह कहना है कि उसके शब्दार्थ तो वही हैं कि जो डाक्टर हार्नली साहब ने हिन्दी शब्दो की धातुओं के संग्रह में वर्णन किये हैं किन्तु यह शब्द जिस विषय के प्रसंग में प्रयोग होता है वैसाही उसका भावार्थ हो जाता है जैसे कि छल के अर्थ में अष्ट–छापवाले परमानन्ददासजी ने उसका प्रयोग किया "**अहो हरि वलि सौं चूक करी**" इसी तरह समझ लेना चहिये कि जब वह छल से मारने के प्रसंग में प्रयोग होता है तब उसका वैसा भावार्थ ग्रहण किया जाता है। राजपुताने के किसी किसी कवि को हमने ऐसा भी कहते हुए सुना है कि यह **चूक** शब्द राजपुताने की भाषा में ही प्रयोग हुआ मिलता है और हिन्दी भाषा के किसी काव्य में किसी भी अर्थ में यह शब्द प्रयोग नहीं हुआ है परन्तु उनका यह कहना हमारे नीचे लिखे प्रमाणों से बिलकुल ही असत्य प्रतीत होता है ॥

वृन्द सतसई ॥

दोहा ॥ पिशुन छल्यो नर सुजन सों, करत विसास न चूक ।
जैसे दाध्यो दूध को पीवत छाछहि फूंक ॥
मूरख गुन [illegible] है नहीं, तो न [illegible] चूक ।
कहा भयो [illegible] के विद्वविभो, [illegible] न उलूक ॥

नाथ कवि [illegible] नाकूजी चौबे कृत ॥

कवित्त ॥ सुखद रसाल को रिसाल तरु तापै बैठि, ऐंठि बौल बोले पिक, मधुप टुहू टुहू ॥
कुंज कुंज कारे हैं कुटिल अलि पुंज [illegible], गुंज गुंज फूल रस, चुहके चुहू चुहू ॥
चूक बिन प्यारी कीन्ह मेरो मन [illegible] टूक, कूक सुने हूक परे, करत उहू उहू ॥
नाथ दिसि चार अंधियार ही [illegible] माहि तातें किल कोकिला, कहत कुहू कुहू ॥

सूरसागर ॥

राग काफी ॥

मैं अपने कुलकानि डरानी । कैसे श्याम अचानक आये मैं सेवा नहीं जानी ॥
वहे चूक जिय जानि सखी सुनि मन लै गये चुराई । तनतें जात नहीं मैं जान्यौ लियो श्याम अपनाई ॥
ऐसे ठगत फिरत हरि घर घर भूलि कियो अपराध । सूर श्याम मन देहि न मेरो पुनि करिहो अनुराध ॥

राग विहागरो ॥ कहा करों गुरजन डर मान्यो ।

आये श्याम कौन हित करि कें मैं अपराधिनि कछु नहिं जान्यों ॥
ठाढे श्याम रहे मेरे आँगन तब तें मन उन हाथ बिकान्यो ।
चूक परी मोकों सबही अंग कहा करों गई भूलि सयान्यों ॥
वे उनही को नए हरष मन मेरी करनी समुझि अयान्यों ।
सूर श्याम संगम उठि लाग्यौ मो पर बारं बार रिसान्यो ॥ ३७ ॥
बीच कियो कुल लज्जा आई ।
सुन नागरी वकस यह मोकों सनमुख आये धाई ॥
चूक परी हरि तें मैं जानी मन लै गये चुराई ।
ठाढे रहे सकुच तो आगें राखा बदन दुराई ॥
तुम हो बड़े महर की बेटी काहे गई भुलाई ।
सूर श्याम हैं चोर तुम्हारे छाड़ि देहु डरपाई ॥ ९० ॥

कवि लल्लूलाल कृत ॥

दोहा ॥ धरम राज सों चूक करि । दुरजोधन लै लीन्ह ॥
राज पाट अरु वित्त सब । बनोबास दै दीन्ह ॥
करी चूक प्रहलाद पै । हिरन असुर परचंड ॥
हरि सहाय हित अवतरे । असुरन किये विखंड ॥

रामायण ॥

समहु चूक अनजानत केरी । चहिये विप्र उर कृपा घनेरी ॥

स्त्रियें गाया करती हैं ॥

मेरा भया चुकान हियारी । कार करत मैं वर घर चूकूं
फुंका जात सई जीया री ॥

कबीर ॥

काशी का मैं वासी कहिये, करम दशा का हीना ।
राम भजन में चूक पड़ी, तब पकर जुलाहा कीना ॥

कहावत ॥

आहार चूके वह गये व्योहार चूके वह गये ।
दरबार चूके वह गये सुसराल चूके वह गये ॥

चूरनवाले ॥

है चूरन खट्टा चूक । जिस में नित्त लगैगी भूक ॥

५ हम अनुस्वार सहित शब्दों के प्रयोग के विषय में जो ऊपर कह आये हैं उसके नीचे लिखे उदाहरणों को अवलोकन करने से आशा है कि हमारे पाठकों पूर्ण संतोष हो जायगा-

सूरसागर ॥

राग भैरवी ॥ भजि श्री विट्ठल चरण सरोजं । नखमणि दीधिति दमित मनोजं ॥
इच्छसि यदि सततं सुख सारं । त्यजसि न किमिति विषय धृतभारं ॥
यदि वांछसि हरि भक्ति सुरत्नं । कुरु चपलं शरणागत यत्नं ॥
प्राप्य सुदुर्ल्लभ नर वर देहं । परिहर सकल निगम संदेहं ॥
मानय हृदय प्रयोदित वचनं । तदया सिनो वेददतिशय पचनं ॥
वत्सपदं भावय भव जलधिं । अत समै भवधिन ववधिं ॥
नाथ तवाह मतीरण रावं । पूरय सततमिमं मयि भावं ॥
तव गुण गण कथिता मृत गाये । प्रार्थ्यमिदं दिश तव रघुनाये ॥

रामायण ॥

छंद ॥ दै भक्ति रमा निवास त्रास हरण शरण सुखदायकं ॥
सुपधाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं ॥ १०४ ॥
सुर वृंद रंजत द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलित वलं ॥
ब्रह्मादि शंकर सेव्य राम नमामि करुणा कोमलं ॥ १०५ ॥

तोटक छंद ॥ गुण ज्ञान निधान अमान मजं । नित्ति राम नमामि विभुं विरजं ॥
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं । पल वृंद निकंद महाकुशलं ॥ १०६ ॥
बिनु कारण दीन दयालु हितं । छवि धाम नमामि रमा सहितं ॥
भव तारण कारण कार्य परं । मनसं भव दारुण दोष हरं ॥ ९० ॥
शर चाप मनोहर तूणि धरं । जलजारुण लोचन भूप वरं ॥
सुप मंदिर सुंदर श्रीरमणं । मद मार महा ममता शमनं ॥ ९१ ॥

खालभा कृत विनयपत्रिका ॥

भैरवी ॥ रे मन सन्त चरण धरु माथं ।
निस बासर जिनके जग नायक वास करत हैं साथं ॥ १ ॥
तिन को छोड विश्व में भटकै वेश्या को करि नाथं ।
भक्ति सहित सेवा तुम करते वह मारत है लाथं ॥ २ ॥
तत्रापी कछु लाज न आवत मलत चरण धरि हाथं ॥
सिह मदन गोपाल साधु पद गहु अघहर सम पाथं ॥ ३ ॥

गोस्वामी श्री लक्ष्मीनाथजी परमहंस कृत पदावली ॥

नमो नमो गीता हरि वंशं । सुर नर मुनि सज्जन अवतंशं ॥
कोमल पद उपनिष श्रुति अंसं । हरि मुष कथित सन्त हिय हंसं ॥
विमल व्यास भाषित गन संशं । देव दनुज मानव अहि वंशं ॥
भक्ति बिराग ज्ञान परगाशं । काम क्रोध मद मोह विनाशं ॥
सकल शास्त्र सम्मत निति शाशं । अर्थ धर्म सुख दायक हंसं ॥
सुचि सागर तीरथ फल देशं । कलिमल तिमिर प्रकास दिनेशं ॥
गुण अनन्त कहि गावत सेशं । चतुरानन गण देव महेशं ॥
सुनत सकल मन होत हुलाशं । लछमीपति अति पाप विनाशं ॥ १ ॥

नरहरदास कुल अवतार चरित्र ॥

भुजंगी । सुगन्धं विगन्धं न अस्तूति गारी । विभेदं न सत्रं न मित्रं विचारी ॥
न महिमा न माया न मद्दं न मोहं । न रंग विरंगं न दाया न द्रोहं ॥
न सीतं न तापं न संगं कुसंगं । न भावं न भिध्यान अंगं अनंगं ॥
सुखं भूमि सज्या न डासं न वास । ग्रहे वाहें आनै ततो पंच ग्रासं ॥
समं विष्षहं भूमि पंथं सहज्जं । वसन्नं दिशं वीत रागं विलज्जं ॥
विमोहं विदेहं न इन्द्री विकारं । अघानैं रहे नित्ति वातं अहारं ।
विलेपं न श्रीषंड आगी विचारं । धरी पुष्प माला गलै विष्प धारं ॥
प्रकासी जु निद्रा महा मोद पावै । हसे ताल दे आप औरै हसावे ॥
अलेपं अछेपं रहे अप्रकासं । निरापेक्ष निर्वंध नग्नं निरासं ॥
अनाजूत अवधूत माया अतीतं । अमोहं अछोहं अद्रोहं अभीतं ॥
अनामं अकामं अठामं अजेयं । अनाधार आकार महिमा अमेयं ॥
पशू वृत्ति लीनै भषै पान पानी । विचारं प्रचारं विहारं विमानी ॥

अकित्रिमता

यह महाकाव्य आज तक महाकवि चंद का बारहवीं शताब्दी का रचा हुआ एक बडा प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ करके हमारे स्वदेश मे प्राचीन काल से चला आता है और उसकी यथार्थता में आज तक क्या तो स्वदेशी और क्या किसी विदेशी विद्वान को कोई वैसी शका नहीं हुई है कि जैसी हमारे परम प्रिय मित्र महामहोपाध्याय कविराजजी श्री श्यामलदासजी को बैठे बैठाये हो गई है। यद्यपि हम इस महाकाव्य को अभी तक अनुकूल दृष्टि से ही देखते हैं किन्तु उसी के साथ हम उसकी परीक्षा करने में प्रतिकूल दृष्टि देकर उसके गुण-दोषो को भी देखते जाते हैं और जब हमको उसमें कोई दोष देने जैसी बात नहीं मिलती तब उसी स्थान पर हम अपनी टिप्पण में अपना अभिप्राय लिख प्रकाश करते है। हमारे पाठको को यह भले प्रकार समझ रखना चाहिये कि जिस दिन जिस स्थान में जो कुछ हमको क्रित्रिम दीखेगा उसे हम इतनेही बल पूर्व्वक दोष देकर प्रकाश कर देंगे कि जैसे हम गुणो को प्रकाश करते हैं और जो कोई बात हमको उसमें दोष देने जैसी मिलेगी ही नहीं तो फिर हम अशक्त हैं। इस महाकाव्य को क्रित्रिम अनुमान करने में जितने हेतु दिये गये है उनमें से प्रत्येक के विषय में हम निम्न लिखित कुछ निवेदन करते हैं—

१ इस महाकाव्य में जो संवत् लिखे हुए हैं वह मुसलमानी तवारीखों में लिखे और संवत शोध हुए संवतों से नहीं मिलते और उनमें ९० वा ९१ वर्ष का अन्तर पड़ता है अतएव इस बात का निर्णय करने को हमारी टिप्पणी १६८ और ३५५ । ५६ आदी पढें कि उनके पढने और पक्षपात रहित मनन करने से हम आशा करते है कि आदी की संवत् के अन्तर विषयिक शंका निवारण हो जायगी ॥

२ इस ग्रंथ में मुसलमानी भाषादि के शब्द प्रयोग हुए दृष्टि आते हैं उनके विषय का समाधान हमारी इसी उपसंहारिणी टिप्पणी का भाषा संबन्धी चौथा लेख-खंड अवलोकन करने से भले प्रकार हो सकता है ॥

३ अब तक पृथ्वीराजजी के समकालीनों में से केवल रावल समरसीजी को ही आक्षेप करने वाले ने उदाहरण में ग्रहण किया है कि उसके विषय मे केवल आबू और चितौड की पांच चार प्रशस्तियों से ही संशय-करनेवाले को संशय होता है अर्थात् संशय का आधार उन ही प्रशस्तियों पर है । यदि उन प्रशस्तियो के संवतो को विद्वान लोग भले प्रकार परीक्षा करके यह निश्चय कर लें कि वे रावल समरसीजी के ही समय की हैं और उनके संवत् अमुक प्रकार के हैं और हमको पृथ्वीराजजी समरसीजी और पृथाबाईजी के जो परवाने प्राप्त हुए हैं उनके संवतों को भी उसी प्रकार जांच देवे तो फिर रावल समरसीजी के समकालीन होने में कुछ झगडा ही न रहैगा क्योंकि झगडा तभी तक रहता है कि जब तक किसी विद्वान को किसी प्रकार का पक्षपात होता है और वह दर्पण लेकर मुख दिखते हुए भी नहीं दूर होता है । जहां तक हमने रावल समरसीजी के विषय मे शोध किया है वहा तक हमको इस बात में कुछ संदेह नहीं है कि वे पृथ्वीराजजी के बहनेऊ और समकालीन थे । आबू और चितौड की प्रशस्तियो के संवतों को समझ लेने के लिये एक खोज की बात हमने अपनी टिप्पणी ३५५ । ५६ में अति संक्षिप्त रूप से कही है । इसके अतिरिक्त हम एक बडी अद्भुत बात पर विद्वानों का ध्यान दिलाते हैं कि कविराजजी ने इस महाकाव्य के संवत १६४० से १६७७ के भीतर जाली बनने के सिद्ध करने में नीचे लिखे प्रमाण कहे हैं –

"इस किताब में मेवाड के राजाओं की बहुत सी प्रशंसा रावल समरसिंहजी के नाम से की है और एक स्थान में उनको आशीस देने मे ये शब्द लिखे हैं–

(१) कंलंकियां राय केदार ॥
(२) पापियां राय प्रयाग ॥
(३) हत्यारां राय बणारसी ॥
(४) मवबान राय राजान री गंग ॥
(५) सुलतान ग्रहण मोरवन ॥
(६) सुलतान मान मलन ॥

इन पदवियों से मेवाड़ के महाराणा संग्राम सिंहजी (सांगा) की ओर संकेत है"–इत्यादि ॥

अब विद्वानों को रासो के उस रूपक को अवलोकन कर के परीक्षा कर समझना चाहिये कि जिसमे से यह वाक्यखंड उद्धृत किये गये है, वह रूपक यह है–

छंद पद्धरी ॥ सामंत सब्ब मनुहार कीन । प्रोहित्त राम आसीस दीन ॥
हरि सिद्धि दिट्ठ बरदान भट्ट । उच्चरयौ चंद पेषे सु थट्ट ॥
दुहु पष्प चवर सिर धरिय छत्र । बरदाइ देत आसी तत्र ॥

उठियो सिंघ बरदाइ देषि। बोलंत बिरद बहु बिधि विसेषि ॥
चीतोर राज क्राइम्म कीनं। पुम्मान पाट पग अचल दीन ॥
मेर गिरि सरिस चित्तोर मानि। किरनाल तेज बढ्ढे पुमान ॥
जैचंद समह जिन जुद्ध कीन। मानो कि उरग जनु मोर पीन ॥
कलंकिया राय केदार राय। कव्वेत बिरद मनउमँग चाय ॥
पापी राय प्राग वड समान। कप्पन दरिद्र करतार जान ॥
हित्यार राइ कासी अभंग। मदुआन राइ गंगा उतंग ॥
सुरतान मलन बंधन समीप। हिंदून राइ टालन्न दीप ॥
उज्जैन राइ बंधन समथ्थ। आचार राइ जुजष्टरह पथ्थ ॥
भीमंगराइ भंजन सुषेत। जस लयौ धवल राजिंद जैत ॥
रिनथभ राय सिर दंड कीन। अब्बुआ राइ गढ लेइ दीन ॥
उथ्थाप राइ थापन समथ्थ। सोपन सरीर प्रथिराज सथ्थ ॥
दष्पनी साह भंजन अलग्ग। चंदेरि लिद्ध किय नाम जग्ग ॥ ४१ ॥

हमारे पाठको को इस रूपक का तात्पर्य निकालने के पहिले यह जान लेना अत्यावश्यक है कि वह रासे के **समरसी दिल्ली सहाय** नामक समय में का है। रासे की किसी पुस्तक में तो यह समय पृथक है और किसी मे वह **बड़ी लड़ाई** नामक समय के आदि में ही मिला हुआ है। इस रूपक के अन्तरगत वृत्त का प्रसग यह है कि रावल समरसीजी अपनी महाराणीजी श्री पृथाबाईजी सहित अपने साले पृथ्वीराजजी की सहायता करने को चितोड से दिल्ली पहुंचे और वहा उनका आदर सम्मान वहां के सब राज-पुरुषों ने करना प्रारंभ किया कि उसी प्रसंग में महाकवि चद बरदाई ने भी वैसे ही रावलजी को आशीस दी कि जैसे वर्तमान काल में प्रत्येक देशी राजस्थानो में चारण और राव आदि स्तुति पाठक दिया करते है। रावलजी श्रीसमरसीजी में जो जो मुख्य गुण थे और उन्होंने जो जो बडे वडे काम अर्थात् शौर्य्य किये थे उन सब को उनकी प्रशसा में कवि चंद ने प्रयोग करके यह विरदावली कही है। अब इसमें यह वात विचारने की है कि कविराजजी ने जो इस रूपक में के-"कलंकिया राय केदार" "जैसे विशेषणों का महाराणाजी श्रीसंग्रामसिंहजी (सांगा) की ओर संकेत होना अनुमान करके रासे के जाली वनने के समय के प्रारंभ का सं० १६४० निश्चय किया है वह इस मूल रूपक के अवलोकन करने से सत्य मालूम होता है कि नहीं। यदि हम कविराजजी के अनुमान का यथार्थ होना भी मान ले परन्तु इस रूपक में-"कलंकिया राय केदार"-आदिक के साथ ही-"जैचंद समह जिन जुद्ध कीन-और"-"सोपन सरीर प्रथिराज सथ्थ" जैसे स्पष्ट विशेषणों के वाक्य खंडो को हम महाराणा जी श्रीसागाजी में कैसे घटा सकते हैं। क्या यह बात विद्वानों के कहने की है कि-"जैचद समह जिन जुद्ध कीन"-और-"सोपन सरीर प्रथिराज सथ्थ"-जैसे स्पष्ट विशेषणो को छोड देना-और-कलंकिया राय केदार"-आदिक को ग्रहण कर लेना। यदि कविराजजी ने इन-"कलंकिया राय केदार" आदियों को सागाजी पर घटा कर केवल उनही तुकों को क्षेपक बताया होता तो भी यह एक प्रकार से कुछ ध्यान में बैठने जैसी बात होती। हम यह भी नहीं समझ सकते है कि इस रूपक से स० १६४० कैसे सिद्ध होता है क्योंकि महाराणाजी श्रीसागाजी का राज्य समय कविराजजी के मानने के अनुसार स० १५६५ से स० १५८४ तक ही होता है। और सवत् १६४० का अर्थ महाराणाजी श्री वड़े प्रतापसिहजी के राज्य समय सं० १६३३ से १६५३ तक में आता

है। रासो की सं० १६३१। ३२ और १६४५ की लिखित पुस्तकें हमारे पास विद्यमान हैं। तथा अकबर बादशाह ने पृथ्वीराज रासो की कथा अपने दरबारी भाट गंगजी से सं० १६२७। २८ में सुनी थी कि जिसके वृत्तान्त की एक सं० १६२९ की लिखी हुई चंद छंद वर्णन की महिमा नामक पुस्तक हमको प्राप्त हो चुकी है और उसीके साथ जो समय सं० १६४० से १६७० तक का रासो के जाली बनने का अनुमान किया गया है उस समय में मेवाड़ में एक राणारासो नामक ग्रंथ राव दयाल कवि ने बनाया है कि जिसको भी हमने शोध काढ़ा है। इस राणारासो की पुस्तक सं० १६७५ की लिखी हुई प्रति से हमने अपने पुस्तकालय के लिये एक प्रति करवाई है और हमारी प्रति से बहुत से अन्य भद्रपुरुष प्रतियें करवाते हैं। खैर यह सब बातें तो जाने दीजिये और एक इस छोटी सी बात पर ही ध्यान दीजिए कि रासो की उन सब पुस्तकों के अंत में की जो मेवाड़ राज की एक पुस्तक से प्रति हुई है मूल पुस्तक के लिखनेवाले लेखक के लिखे हुए नीचे लिखे छंद प्राप्त होते हैं कि जिनमें यत्किंचित वृत्त लिखा हुआ है। ये छंद हम आशा करते हैं कि उन पुस्तकों में भी अवश्य होंगे कि जो एशियाटिक सोसाईटी बंगाल के पुस्तकालय में हैं—

कवित्त ॥ मिली पंकज गन उदधि। करद कागद कातरनी ॥
कोटि कवी काजलह। कमल कटिकतें करनी ॥
हितिथि संख्या गुनित। कहै कक्का कवियाने ॥
इह श्रम लेषन हार। भेद भेदै सोइ जाने ॥
इन कष्ट ग्रन्थ पूरन करय। जन बभ्या दुष नां लहय ॥
पालियै जतन पुस्तक पवित्र। लिपि लेपक विनती करय ॥ १ ॥
गुन मनियन रस पोइ। चंद कविनय कर दिद्धिय ॥
छंद गुनीतें तुट्टि। मंद कवि भिन भिन किद्धिय ॥
देस देस विप्परिय। मेल गुन पार न पावय ॥
उद्दिम करि मेल वत्त। आस बिन अलस आवय ॥
चित्रकूट रान अमरेस नृप। श्रीमुष आयस दयौ ॥
गुन बीन बीन करुना उदधि। लषि रासो उद्दिम कियौ ॥ १ ॥

दोहा ॥ लघु दीरघ ओछा अधिक। जो कछु अंतर होई ॥
सो कवियन मुष सुद्धतें। कहो आप बुधि सोइ ॥ ३ ॥

इन छंदों से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि किसी **कक्का** नामक पुरुष ने मेवाड़राज्य के आधीश बड़े श्री अमरसिंहजी (चित्रकोट रान अमरेस नृप) के आज्ञानुसार राज के पुस्तकालय के लिये उक्त पुस्तक लिखी थी। इन महाराणाजी का राज्य समय कविराजजी के मानने के अनुसार सं० १६५३ से १६७६ तक का है। जब कि मेवाड़ राज की पुस्तक का उसकी अन्य प्रतियों से सं० १६५३ से १६७६ के बीच में लिखा जाना अनुमान होता है तो फिर इस समय में जाल बनना भला कोई कैसे मान सकता है। अब रहा संवत १६७७ की भविष्य वार्ता का विदित करने वाला दोहा उसके विषय में हमने अपनी संस्था के लेखखंड २७ पृष्ठ ३५ में सविस्तर कह दिया है अतएव यहां कुछ अधिक नहीं वर्णन करते ॥

४ यद्यपि इस महाकाव्य के जाली बनने के अनुमान का प्रश्न तो रीति से किया गया है कि इस ग्रन्थ में लिखे पृथ्वीराजजी के समय के मनुष्यों के नाम और वृत्त उस समय की मुसलमानी तवारीखों में लिखे हुओं से नहीं मिलते हैं परन्तु जिस प्रकार से उस प्रश्न का निर्णय किया

गया है उससे प्रश्नकर्त्ता की प्रतिज्ञाहानि और हेत्वाभास स्वयम् सिद्ध हैं । हमने इस विषय में अपनी लिखी पृथ्वीराज रासे की सच्चा की अंग्रेजी पुस्तक के पृष्ट १५ और ३७, लेखखंड ११ और २८ और हिन्दी की के पृष्ठ १८ और ३९ और लेखखंड ११ और २८ में बहुत कुछ लिख कर प्रकाश किया है । क्या जितना अंश इस महाकाव्य का मुसलमानी तवारीखे से मिलता हुआ है वह उसके बनानेवाले ने उन तवारीखे को सोलहवीं सदी में पढकर यह जाल निर्माण किया है? क्या उस समय की हसन निज़ामी की तवारीख़, तबक़ात नासरी, और अब्बुलफ़िदा, आदि नामक तवारीखें में परस्पर कोई ऐसे विरोध नहीं हैं और क्या वे एक दूसरे से सर्व प्रकार से परम सम्मत हैं? कविराजजी ने स्वयम् यह स्वीकार किया है कि तबक़ात नासरी ने मनुष्यों के अशुद्ध नाम लिखे हैं और अब्बुलफ़िदा ने संवत ही नहीं लिखे हैं फिर उनके दोषें से यह महाकाव्य क्योंकर दूषित हो सकता है? क्या उक्त मुसलमानी तवारीखें के कर्त्ताओ ने सब वृत्त यथातथ्य लिखकर केवल सत्य ही लिखने और मिथ्या कुछ भी न लिखने का एक झंडा हाथ में लिया है? देखो क्या यह शोक की बात नहीं है कि तबक़ात नासरी का ग्रंथकर्त्ता बिचारा स्वयम् कहता है कि जिस वर्ष में पृथ्वीराजजी की अंतिम लड़ाई हुई थी उसमें तो वह उत्पन्न हुआ था और उसके ३५ वर्ष पीछे वह पहिले ही पहिल हिन्द में आया था, उसने जो कुछ इस विषय में लिखा है वह उसने एक मनुष्य से सुनकर लिखा है, फिर हम नहीं जानते कि कविराजजी मिनहाज-इ-सिराज जैसे एक भले आदमी को क्यों प्रत्यक्ष प्रमाण की साक्षी में घेरते हैं । हम पृथ्वीराजरासे और उस समय की सब मुसलमानी तवारीखे को एक दृष्टि से देखकर यह कहते हैं कि जिस जिस ग्रन्थकर्त्ता ने जो, जितना, और जैसा, देखा और सुना, वह उसने अपनी इच्छा और शैली के अनुसार लिखा है; यदि उनमें से किसी की कोई बात हमको अयथार्थ प्रतीत और सिद्ध हो तो हम उसको अस्वीकार कर सकते हैं, किन्तु हम उनमें से किसी को भी लार्ड. हेस्टिङ्गस् के समय में जैसे नन्दकुमार को जाल के अपराध में फांसी की शिक्षा दी गई है वैसी शिक्षा विद्वानें के हाथ से कदापि नहीं दिलाना चाहते । निदान हम फिर भी प्रसन्नता और विचार पूर्व्वक कह सकते हैं कि प्रत्येक ग्रन्थकर्त्ता ने अपने अपने ज्ञान के अनुसार ऐतिहासिक वृत्त लिखे हैं चाहे उसमें कोई बात असत्य भी क्यों न हो परन्तु उस असत्य बात के कारण से आदि से अंत परियत कोई ग्रन्थ जाली नहीं हो सकता । इस बात के मान लेने में हमको कोई लज्जित होने की भी बात नहीं है कि यह पृथ्वीराज रासो चंद का लिखा हुआ सच्चा है, उसके दो एक समय उसके बड़े बेटे जल्ह के लिखे हुए हैं और उसमें जो कहीं कहीं कुछ क्षेपक अंश पीछे से किसी ने मिलाया होगा वह विद्वानो की परीक्षा करने से स्वयम् तरजावेगा । अब तो कोई बात अड़चल की रही ही न है क्योंकि यह आदि पर्व्व तो हमने यथाशक्ति संशोधित करके अपने पाठको की सेवा में अर्पण कर ही दिया है, कि उसीसे हम इस महाकाव्य की अकृत्रिमता की परीक्षा करना प्रारंभ कर सकते हैं और प्रति मास में हम यह भी सिद्धान्त कर सकते हैं कि यहां तक तो कुछ जाली अंश है अथवा नहीं ।

इस बात के जानने से हमारे पाठको को बहुत प्रसन्नता होगी कि हमको शोध करने से पृथ्वीराजजी और रावलजी श्रीसमरसीजी और महाराणी श्रीपृथाबाईजी के थोड़े से ग्राम रुक्के और पट्टे परवाने प्राप्त हुए हैं कि जिनमें वही अनन्द विक्रमी संवत् है कि जो पृथ्वी रासे में लिखा हुआ मिलता है । इन सब के फ़ोटोग्राफ़ हमने एशियाटिक सोसाईटी बंगाल को

पृथ्वीराजजी, समरसीजी और पृथाबाईजी के खास रुक्के पट्टे परवाने आदि

भेंट करने तथा उनकी सत्यता की परीक्षा करने के लिये अपने स्वदेशी परम प्रसिद्ध विद्वान राय बहादुर डाक्टर राजा श्रीराजेन्द्रलालजी मित्र एल० एल० डी०, सी० आई० ई० की सेवा में भेजे हैं । उक्त डाक्टर साहब अकस्मात् रोगग्रस्त हो गये कि जिससे यह हमारे बड़े परिश्रम से शोध किये हुए लेख उक्त विद्वत् मंडली में प्रवेश नहीं हो सके हैं किन्तु हम को आशा है कि राजा साहब के नैरोग्य होते ही उक्त लेख सोसाईटी में प्रवेश होकर यह विषय विद्वत् मंडली में छिड़ेगा । यह विषय अभी हमारा सौंपा हुआ एक महान पुरातत्ववेत्ता विद्वान के हाथ में है अतएव हम उन लेखों की प्रतियें तथा अपने निज विचारों को प्रकाश नहीं कर सकते परन्तु इतना तो निःसंदेह कह सकते हैं कि अभी तक हम उनको अकृत्रिम समझते हैं और ऐसा समझने को सतर्क सिद्ध भी कर सकते हैं । इसके साथ हमको इस कहने में कुछ भी लज्जा नहीं है कि यदि उक्त डाक्टर मित्र, हमारे विद्या-गुरु डाक्टर हार्नली साहब, मिस्टर ग्राउस साहब और मिस्टर ग्रियरसन साहब, जैसे पक्षपात रहित और सहसा सिद्धान्त न करने वाले पुरातत्ववेत्ता विद्वान उनको अप्रमाणिक सिद्धकर ग्रहण करेंगे तो हम भी उनही से सम्मत होंगे क्योंकि हमको किसी बात का वास्तव में दुराग्रह नहीं है वरन इसमें भी कुछ सदेह नहीं है कि जो कोई अन्य मनुष्य बिना किसी योग्य कारण के हमारे स्वदेश और उसकी विद्या पुस्तकों को दोष दे तो हम उस दशा में उनके एक बड़े कट्टर पक्षकार हैं ॥

अंत में हमारा सब विद्वानों से यही सविनय निवेदन है कि वे इस महाकाव्य को उसकी भले प्रकार परीक्षा कर के पढ़ें और पढ़ावें और जो कहीं उसमें कुछ हमारा कहना तथा कोई अनुमानादि का करना अयोग्य प्रतीत हो तो हम को क्षमा करें । यही प्रार्थना हम विशेष कर

समाप्ति

के अपने मित्र महामहोपाध्याय कविराज श्रीश्यामलदासजी की सेवा में भी करते हैं क्योंकि उनके विचारों और अनुमानों का हमने विशेष करके एक बलिष्ट भाषा में खंडन कर अपने स्वदेशाभिमान और उसकी हिन्दी विद्या की रक्षा की है । इसके साथ यह भी वक्तव्य है कि जैसे हमने इस उपसंहारिणी टिप्पण में इस महाकाव्य के पांच चार विषयों के विषय में अपने विचार प्रकाश किये हैं वैसेही चद के व्याकरणादि जैसे शेष विषयों के विषय में भी हम यथावकाश लिखेंगे । इत्यलम् ॥



अथ दसम* लिख्यते ।

[दूसरा समय ।]

हरि रूप का मंगलाचरण ।

साटक ॥ सो ब्रह्मा सो इन्द्र ईति भजनं, ईपाल ईयं हरं ॥
पिट्ठं निठ्ठ कमठ्ठ साइर उरं, जठराग्नि वारी वरं ॥
सो भानं विधि भान नेत्र कमलं, बाहौ गिरं अभ्भियं ॥
जंघा अष्ट कुला चलं न अभितं, जै जै हरी रूपयं॥ छं०॥१॥रू०॥१॥

दशावतार का नाम स्मरण ।

चौपाई ॥ मछ्छ कछ्छ वाराह प्रनम्मिय । नारसिंघ वामन फरसम्मिय ॥
सुत्र दसरथ्थ हलद्धर नम्मिय । बुद्ध कलंक नमो दह नम्मिय ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २॥

दशावतार की स्तुति ।

विराज ॥ करे मछ्छ रूपं। धरेना अनूपं ॥ बधे संष धूपं । बरे वेद भूपं ॥३॥
* * * * । * * * ॥ * * । नमो मछ्छ रूपं ॥४॥
धरा पिठ्ठ तिट्ठं । कनंगे गरिठ्ठं ॥ जले धार दिठ्ठं । नमो तो कमठ्ठं ॥५॥
स्वयं दे वराहं । हयग्रीव गाहं ॥ रदग्रे इलाहं । उपम्माति चाहं॥६॥

---

* इस समय में दशावतार की कथा होने के कारण चंद ने उस का नाम दशम रक्खा है ॥

१ पाठान्तरः-सौ । सो । ईंद्र । भजन । इयाल । ह्रार । हरिं । पिंठ । पिठं । निठ । निह । कामठ । कमह । साईर । जराग्नि । वर । सो । भान । नेत्र । कमल । बाहो । गरभितं । अन्भित । जघा । गभ्भितं । हरि ॥

२ पाठान्तर मछ । कछ । प्रनंम्मियं । नारसिंघ । फरम्सम्मिय । फ्रमंम्मियं । सुत । सुत्र । दसरध । हलधर । ननियः । रम्मीयं । बुद्ध । कमल । ननो । दद । नम्मीयं । रमिय ॥

३ पाठान्तरः-करे । मछ । सिरेनारनुपं । बंधे । धुप । धरे । वेद । भुपं । नमो । मछ ॥ ३-४ ॥ पिठ । तिठं । नइं । नठं । कांगजो । गरिठं । दिठं नमो नै । कमठं ॥ ५ ॥ स्वयं । दें । स्यं । ग्राहं । रदैग्र । इलादं । उपम्मानि । उपमाति । तेपगहं । ननो । नै । न ६-५ ॥ दरिंग्य ।

* * * । * * * ॥ ससी सेष राहं। नमो ते वराहं ॥७॥
हिरन्नष्य वीरं। प्रह्लाद पीरं॥ उठे थंभ चीरं। महा बीर बीरं॥८॥
* * * । * * * ॥ बढौ पंक नीरं। नमो ध्रम्म धीरं ॥९॥
मृगंकस्य जरं। नषं तोरि तूरं। बजी दठ्ठ पूरं। थपे जान जूरं॥ १०॥
दया सिंधु मूरं। कुकंपीस भूरं॥ नटी लछि नूरं। धवी अंषि धूरं॥ ११॥
भयं देव दूरं। नियं भत्ति भूरं॥ थुती पानि जूरं। नमो सिंघ सूरं॥ १२॥
बली राइ अग्गी। छली भूमि मग्गी॥ लुके बंभ तग्गी। मुष वेद जग्गी॥ १३॥
निषे गंग लग्गी। सुलोकी सुभग्गी॥ तिहूं लोक बानी। रिजे देव गानी॥ १४॥
प्रसन्नौ बलिज्जा। दईभोमि सज्जा॥ त्रिलोकी तिडग्गी। नमो वाम लग्गी॥ १५॥
पिता बाच मानं। हते भ्रम्म थानं॥ सहस्सं भुजानं। रुधिद्राधरानं॥ १६॥
नछची छितानं। दई विप्र दानं॥ सुरानं प्रमानं। नमो पर्स रामं॥ १७॥
हरे राम ग्यानं। सु रामं सुरानं॥ रघूवीर रायं। दया देह कायं॥ १८॥
सु वैदेहि दायं। सुमित्रं सषायं॥ विसामित्र सष्यं। घरं दूष नष्यं॥ १९॥
सुपनीं सहायं। तडिक्की निहायं॥ बटीपंच पत्ते। मृगं चाप हत्ते॥ २०॥
रजं वारि दंती। जमं जाममंती॥ मतं मेघ कंती। * * * ॥ २१॥
धनं धार भारी। मरीचं प्रहारी॥ सुभ्रं सुद्धकारी। हनुम्मान धारी॥ २२॥
गऊतम्म नारी। सिला तुंग तारी॥ जरी लंक चाही। पुरी हेम दाही॥ २३॥
रिछं बानरायं। भए सो सहायं॥ हनुम्मान तायं। दधी सीस आयं॥ २४॥
पषानं तिरायं। सुहिद्रा सहायं॥ हनूमान रही। समुद्दं स बही॥ २५॥

हिरनष। हरिणाष्यदाहं। प्रहलाद। पहल्लाद। उठै। मनौ। ध्रंम। उरं। नूर। जानि। दया। दधिपुरं। कुकंपिस मूरं। लछि। नुरं। धषी। अंष। धुरं। धुर। दैव। दुरं। भति। भति। भुरं। थूती। षानि। पानि। जुरं। नमौ। सि॥ ८-१२॥ राय। अगै। लछी। छलै। भुमि। मगै। मग्री। लुकै। तगै। तगी। मुप। मुषे। वैद। वेदं। जगै। जगी। नषै। नष। लगौ। लगी। लौकी। स। भगौ। भगी। तिहौं। लौक। बानी। रिझै रिझैं। दैव। ग्यांनी। गानी। प्रसन्नो। बलीजा। दइ। भुमि। भूमि। सजा। सिज्या। त्रिसौकेतडगो। ठगै रूठ ठगौ। तडकी। वाम-नग्रीं॥ १३-१५॥ ता वचमार। भ्रम। थांनं। सहश्रं। रुधिजा। रुधिजा। नाछित्री। दइ। प्रनामं। नमौ परसरामं। पर्शुरामं॥ १६-१७॥ हरे। रांम। राम। सुमित्रे। विश्वामित्र। मष्यं। मषं। हरैदुकरिष्यं। सपत्नी। सुपणी। सुर्पनी। ताडिका। बढी। वठी। पर्ती। मृगै। हतै। हते। रज। जंम जाम मतीः। मत। मैव। भारी। भरी। मरीचं। सय संभिकारी हनुमान। गउतम्। गउमंत। सिलाक त्रंग तारी। चाहा। हेन। हेम। रिवं। वांनरायं। वंनरायं। सौ हनुमांन। दरदी।

तजें बीर हथ्थं। संदेसं सु कथ्थं ॥ जहां लंक गढ्ढं। तहां बग्ग बढ्ढं ॥२६॥
उहां सीय दिष्षी। हुंती दुष्ष मुष्षीं ॥ दियं मुद्रितामं। सहिन्नान रामं ॥२७॥
दसानन्न आदं। गयं मेघनादं ॥ करे कुंभ चूरं। भरें बान भूरं ॥२८॥
सती सीय अंभी। कियं काज बंभीं ॥ चिकूटेस नाथं। बभीषन्न हाथं ॥२९॥
प्रसूनं बिमानं। चढे वेगियानं ॥ अयोध्या सपत्ते। नमो राम मत्ते ॥३०॥
बसुद्देव ऐनी। वरी कंस भैनी ॥ बियं पानि बद्धे। पुरानं प्रसिद्धे ॥३१॥
जयं जग्ग धारी। दियं दान भारी ॥ रथं आप रूढे। समं कंस सूढे ॥३२॥
अकासे सु बानी। श्रवन्ने गियानी ॥ उवं षग्ग झारे। अनुज्जां प्रहारे ॥३३॥
वरं पानि बद्धे। सुवाले अबद्धे ॥ इयं गम्भ पुत्तं। रुके तथ्थ दत्तं ॥३४॥
सतं किन्न दिन्नं। भये राम किन्नं ॥ प्रथमं सुभद्दं। तिथी पष्ष अद्दं ॥३५॥
नषत्रं सु रोही। भुजं जन्म सोही चतुर्बाहु चारं। किरीटं सुहारं ॥३६॥
सतं पत्र नेनं। क्रने कुंडलेनं ॥ नियं मुत्ति नासी। इयं अब्बिनासी ॥३७॥
सदा लच्छि दासी। चरन्नं निवासी ॥ मुखं मंद हासं। चतुर्वेद भासं ॥३८॥
भ्रगू लत्त गत्तं। प्रभासी प्रभुत्तं ॥ मनी नील सीतं। कटी पट्ट पीतं ॥३९॥
स्वयं ब्रह्म देही। नियं नंद गेही ॥ विषं पूतनायं। पियं दूध तायं ॥४०॥
सकट्टं प्रहारै। व्रजज्जा विहारै ॥ तिनं व्रत्त तानी। उवं आसमानी ॥४१॥
प्रभू ग्रीव लग्गे। तिनं ताम भग्गे ॥ रिषी श्राप आपं। नलं कूब तापं ॥४२॥
दहं देवदारं। व्रजंजा कुमारं ॥ नवं नीत चोरं। दही मट्ठ ढोरं ॥४३॥

रद्दी। समुदेस। वद्दी। तिनै। हाथ्थं। हथं। सैदेसं। संदेसं। कथ्य। कथं। तहा। गटं। तहा वग वद्द। उहा। दष्यी। दिपी। हुंती। दुप मुपी। दीयं। सहं। दानरामं। सहंनान। दसानन्न। आदी। मयं। नादी। करे। चुरं। भरै। वानं। भुरं। अभी। किय। वभी। कुटं। वभीपन। प्रसूत। विमानं। चडेवेगि। आनं। अज्योध्या संपत्ते। संपन्ते। नमो। राम। मंत ॥ १७-३० ॥ वसुदेव। अैनी। वसदेव। भेनी। वीयं। पानि। प्रासिद्धे। प्रसद्धे जांगधारी। सूटं। मुटे। अकासे। वानी। अवन्नी। गियानी। ऊवं पग। झारे। अनुज। प्रहारे। पानि। वव। वद्दै। वाले। अवद्दे। अवधे। गभ। पुतं। रुके। तथ। दंतं। दत्त। किमन दिमनं। किदमं। प्रथमं समदं। प्रथमं समदं। परक। पप। पष्य। निनित्री। निसित्र। गेहा। नोहा। चत्रुवहु चारू। किमटा मुं हारु। चनुवहि। किरीटी। नेनं। नेन। क्रनं। कुने। कुडेलन। कुंडलै मंनं। इयं अयं अविनासी। अयं। अविनासी। लछि। चरंने। चरने चतुर। वेद। भ्रुग। भ्रुगं। प्रभुतं। देही। भेही। पुतनायं। पीयं। धुत नाये। सकट्ट। सकट। व्रजजा। व्रज्जा। विहारं। तिनं। व्रत। प्रभु। ग्रीव लगे। तान। भगे। भगे। रिषि आप आपं। देव दारं। व्रजजा। कुमारं। चोरं। मट्टोरं।

कियं गोप सोरं। अनोषं किसोरं॥ ग्रही दान पानी। जसोदा रिसानी ॥४४॥
सिसू उघष सद्धे। किहों बंध बंधे॥ सुयं ब्रह्म लेष्यो। अचिज्जं सपेष्यो ॥४५॥
लघू दीर्घ इंदं। कला की गुविंदं॥ ररोषं सहासी। मुकत्ती निवासी ॥४६॥
सुतं जषष राज। कियं ऊर्द्ध काजं। द्रुमं गात बीची। परे ब्रष्ष सिंची ॥४७॥
युती बंध पानं। प्रसिद्धे पुरानं॥ वरून पिवासी। ग्रहे नंद ग्रासी ॥४८॥
जिते लोक पालं। व्रज जाल वालं॥ वधी धेन मारै। प्रलंबं प्रहारै ॥४९॥
मुषे काल व्यालं। सिसू वछ्छ पालं॥ कली उत्तमंगं। कियं न्रित्तरंगं॥५०॥
व्रजं वारि लोपं। मघू मेघ कोपं॥ परी व्रज्ज घारा। गिरं धारिधारा ॥५१॥
नषे सैल सारं। त्रिभंगी त्रिसारं॥ पुरंदं पुलानं। व्रजे वानि सानं ॥५२॥
निसा अंध घोरं। कियं गोप सोरं॥ धरा नील रैनं। तजयौ देव सैनं ॥५३॥
कचं वक्र वेनी। भ्रमी भूरि सैनी॥ स्रुती कुंडलीनं। दुती काम लीनं ॥५४॥
चषं पुंडरीकं। वपं मेघ लीकं॥ नसं मुत्ति सारै। निसा मेक तारै ॥५५॥
धरो सुद्ध हासं। करै देव वासं॥ रदं छद्द मुद्दं। नगं कोक नद्दं ॥५६॥
ग्रिवा कंबु रेषं। भुजा क्रित्त सेषं॥ बयज्जंत मालं। उरै सो विसालं ॥५७॥
लियं बेत सेली। बने जाम केली। जसोदा जगायं। म्रगे सिंग वायं ॥५८॥
जिते गोप सथ्थं। दही पत्त हथ्थं॥ बनेजा विहारी। गऊ वछ्छचारी ॥५९॥
अगं कांन मुद्दे। दिये हेरि सद्दे। नियं ग्रेह चारी। हसे गोपभारी ॥६०॥
सतं पच पुत्तं। अचिज्जं सुहित्तं॥ नियं तप्प लागं। हरे बछ्छ भागं ॥६१॥
स्वयं स्याम चित्तं। धरयो ध्यांन हित्तं॥ नियं नंद पुत्तं। मला नं सजुत्तं ॥६२॥

गौप। सौर। अनौप। किसोरं गहीदान पानी। जसौदा रिसानी। सिसुर्उष्य। सोयं। आचिज्जस। लघु द्दीघ। जष्य। उरद्ध उर्द्ध। उर्द्ध। द्रूम। परे वृष्य। सीवी। सांची। थुंती। प्रसिद्धे विपासी। ग्रीहे। गृहे। जितै लौक माल। वृज। बंधी वैन सारे। प्रलंबे प्रहारे। मुषे। वछ। उतमंग। कियनृत्यरंगं। नृत्यानृत्त। व्रिज। वृजं। लौपं। मधुमैव कौपं। वृज। धाए। गिर धारि वाए। नषे सौरसालं। शैल। त्रिभगी त्रिसालं। पुरदं। वृजेवा। वृजेवा निसानं। धौरं। कीयं वृजसौर। रने। कंचवक्र अैनी। ऐनी। भृमी। भमी। भुरि। सैंनी। स्लती कुंद्व लीनं। काम। पुंडरीकं। चपं मैघ लीकं। नासं मुतिसारे। निशा। मैक। तारे। सुद्धि। मुंधि। करें। रद छंद मुंद। रद सद मुदं। नागं कौक नदं। कवु। रैषं। सैपं। शेषं। वयजत। उरे। सौ। वैत। सेलीं। वनैं जाम कैली। जसौदा। मृगैसिगंवायं। जितै। गौप सथं। दहीपन हथं। वनैजा। गौचछ चारी। वछ। अग कांन मुदें। दिऐ। सदै। निय गहै चारी। गेह। हसे। हमै। गौप। पत्र पत्रं। अचिजं सुहितं। तप। हरे। वछ। स्याम। वित। ध्यान। हितं। निय। मिलानंस। कीयं। सोंक।

कियं सोक कोपं। कहां वच्छ गोपं॥ हरे ब्रह्म ग्यानं। पुरष्यं पुरानं॥६३॥
रचे किष्ण सोची। चियं अंब रोची॥ तिनें रंग नेहं। अपं अप्प गेहं॥६४॥
तनं संष चक्रं। चतुर्बाह वक्रं॥ पियं पट्ट बंधे। सहं ग्वाल नंधे॥६५॥
अचिज्जं बिहारी। नले ब्रह्मचारी॥ भ्रमे लोकपालं। बियामै सुकालं॥६६॥
* * * । * * *॥ युती सा मुरारी। सुब्रंह्मं विचारीं†॥
छं० ॥ ६७ ॥ रू० ॥ ३ ॥

भुजंगी ॥ न रूपं न रेषं न सेषं न साषा। न चंद्रं न तारा न भानं न भाषा॥
अविद्या न विद्या न सिद्धं न सादी।तुही ए तुही ए तुही एक आदी॥६८॥
न अंभं न रंभं न रुद्रा न पाया। न सेतं न नीलं न पीतं न गाया॥
न काया न मोया न षाया न छाया। तुही देव सद्देव सिद्धे न पाया॥६९॥
तुही सर्व माया दिषायान माया। तुही सर्व माया तुही घाम छाया*॥
न वंभा न रंभा न रुद्रे न देहं। न मंद्रे न माया न राया न गेहं॥७०॥
न सैलं न गैलं न तापं न छाया। न गाहा न गीतं न श्रोता न ताया॥
न प्रव्वी न पालं म्रजादं न मादं। न तारी न वारी न हारी न नादं॥७१
नवे मेष रेष न भूरी न भारी। नवे ध्यान मानं न लग्गे न तारी॥
न लोकं न सोकं न मोहं न मादं। तुही ए तुही ए तुही एक आदं॥७२॥
तहां पै न तारं न वारं न वीरं। नयं दट्ठ मठ्ठं न ध्यानं न धीरं॥
नहं जोति हस्तं न वस्तं सरूप्यं। तहां तू तहां तू तहां तू गुरुप्यं॥७३॥
प्रक्कत्तं प्रथमं चयं तत्त जोई। तहां नभ्भ तेता सरोजं न सोई॥
न माया न काया न हाया न होई। तुही देव सा देव साधा न सोई॥७४॥

कोपं। कहा। वछ। गोपं। हैरे। ग्यांनं। पुरुषं। रचकिष्य सोची। सोची। अयं त्रंच रोची। त्रय त्रंव रोची। तिनं रंग नेहं। अप अप्प गेहं। तन। चतुर। वंवे। नवं। अविज्जं। नलें। भ्रमे। लौक। सारारी व्रह्मं। * पाठ नहीं मिले॥ † सं० १८९९ में है अन्य में नहीं॥

४ पाठान्तरः—रूवं। रैपं। सैष। शेषं। शाषा। चन्द्र। नह्भान। भाषा। चद। नहभान। भाषा। त्रुहीं। अदी। अम्भ। अंभ। रभं। रुद्धा। मैनं। नील। नं। नकाया। वाया। तुहीं। दैव। सदेव। सिद्धे। पीया। † यह तुक सं० १८९९ की में नहीं है अन्य में है। सरव। दिषायान। सरव। तुंही। धाम। थंभा। संभा। वभा। रुद्रा। रुद्रा। मंदे। नया। गेह। ग्रेहं। [illegible]। मगाहा। श्रोत। न। प्रवीनं। नंपालं मृजांद। मृजादं। नवारी नवारी। हारी। नाद। नवे। नैप। रेपं। मुरी। नवे। ध्यान। मानं। लगे। लौके। सोक। शोक। मांदं। पं। नेप। दट। मठं। ध्यान। धारं। तहीं ज्योति। नहायोति। सरूप। तु। त। तो। मुरुपं। पुरुपं। प्रकृतं। प्रथन। त्रयं। तत। जोइ। तौहो। तहा। नभ। तैना। सरोजं। सोइ। † सं० [illegible] और [illegible]

तुही अंबुजा अंबुकामिनि कामं। तुही तत्त कै तत्त रामं न रामं ॥
तुही दीप सूरं सिरं नभ्भ तेरैं। भुजा इंद्र तूही नभं नाभ फेरैं॥७५॥
सुयं सायरं पेट सा मुष्य अग्गी। तुही तेज ब्रह्मंड सासीस लग्गी ॥
तुही बाल वृद्धं तुही एक आदी। तुही तंत्र मंत्रं कवी चंद वादी॥७६॥
तुही राग जंत्रं जगत्रं बजावै। तुही सार पंचै सु पंचै चलावै ॥
भगव्वांन जंची सु वज्जंति लोई। सुरं राग बंधै बंध्यौ आप सोई ॥७७॥
प्रलै अंभ अंबं तुही हन्य बोधै*। तहां मोहि अग्या सु सिष्टं समोधै॥
छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ४ ॥

साटक ॥ किं सन्मान ससेव देव रजयं, दुष्टान उस्सासयं ॥
किं सुष्यानि दुषानि सेवन फलं, आयास भूमी मयं ॥
किं ईसं न सुरेस सेस सनकं, ब्रह्मात ग्यानं लहं ॥
किं रंनं छितया छितं सु कमलं, वंदे सदा विप्पयं ॥छं०॥७९॥रू०॥५॥

दूहा ॥ नंदकिसोर किसोर मग। निसि पुन्निम ससि अच्छ ॥
ब्रह्म स्तुति ब्रह्मा करिय। गोन मिले गुन वच्छ ॥ छं ॥ ८० ॥ रू० ॥ ६॥

॥ ब्रह्मोक्ति ॥

दूहा ॥ ब्रह्म कहै सुर सकल सों। गोकल हरि अवतार ॥
नारद सुर पति स्तुति करन। अप आए तिन वार ॥छं॥८१॥रू०॥७॥
प्रथम किित्ति रवि ससि करी। अहो देव देवेस ॥
तुम गुन बरनत जनम लौं। पार न पायो सेस ॥छं०॥८२॥रू०॥८॥

की में नहीं है। तुहा। अवुजा। मनि। तत। तत। राम। सूर। नभ। तेरं। तेरे। तेरे। तुही। नभ। नाम। फेरे। सोसुष। सामुष। अंगी। अष। ब्रहमंड। सुसीस। लगी। वृद्ध। तत्र। मंत्र। वाही। रगयंत्रं। तुही सार पंचै चलावै। भगवान। सुवजेति। लौई। बंधे। बंध्या। सोहि।
* सं० १७७० की में नहीं है। प्रछै अभ अंब तुही। हन्यं। वाधे शिष्टं। समोधै। समोधे ॥
५ पाठान्तरः—इसकी पहिली तुक सं० १७७० की में "किं प्रलै अभ अबं नहा हन्य बोधै" है। सौन्मान। सैव। दैवं। दुष्टान। उछासयं। उसासय। सुंपानि। दुपानि। सेवनि। कि। इसं। सुरैस। सैस। शेस। ब्रह्मान। ब्रह्मयान। ग्यान। रन। दै सदा। विपय। विपयं ॥
६ पाठान्तरः—नदकिसौर। किसोर। मिशि। पुनिम। पूनिम। शशि। अछ। ब्रह्मस्तुति। ब्रह्मा। ब्रह्मा। गौन। गोन। मिलै। वछ। वछा ॥
७ पाठान्तरः—ब्रह्म। कहे। सौः। गौकल। किरन ॥
८ पाठान्तरः—कित्ती। करिय। अहो देव दैवेस। देवेश। तुमि। लों। पावै। पायो। शेश। सैस ॥

॥ मच्छावतार की कथा ॥

॥ छंद नाराच ॥

प्रथम्म मछ्छ रूपयं, सरूप अंग नूपयं।सु पव्वं रिष्पि तातयं, तमात मंत भूपयं।८३
ठठुक्कि एक घट्टवांन, ता निमान वज्जही। अनेक देव रंजए. सुरंभ ग्यान सज्जही।।८४॥
विवान छित्त रंग कित्त जित्त षंड षंडही। करन्न एक हेत से त ता समंद मंडही॥८५॥
सुरंभ हद्द तव्विकांन कित्त कथ्यि चंद्दयं। बरन्न वान संकरे, जमात मोद कद्दयं। ८६॥
सु चंद सूर नेक भंति किंत्ति जीह जंपही।कमल्ल केलि बंक मेलि बंधि सिंधु चंपही८७
सुदौरि दो दिसांन छोरि तोरि झोरि झंपही।सुरंज तंज जेज जेत तिष्प क्रिष्प रंजही॥
सुरंसु देह विद्दहार कित्त कथ्यि चंदयं।सु जोगथान जोगयं सपूरयं निकंदयं॥८८॥
सुमालयं न माल देव मालयं सुरज्जयं। दिसान दिस्स उच्चरं सरूप मछ्छयं जयं॥
अवंत लोक लोंक पाल फूल माल रंभयं। सुमंन्न देव सीस रज्जि बंचयं जयं जयं॥

छं० ॥ ९१ ॥ रू० ॥ ९ ॥

कवित्त ॥ सायर मद्धि सु ठाम। करन त्रिभुअन तन अंजुल॥
देव सिंगि रषि धरिनि। सिरन चक्री चष झंपल॥
गैन भुजा अज्ज त। रसन दसनं झुकि झांड्य॥
एक करन ओढंत। एक पहरंत सवांड्य॥

---

९ पाठान्तरः—मछ। सुरुपयं अनूपयं। सुपर्व। सुपरत्र। रिषि। भुपय। ठठुकि। घंटवान। घट्टवान। निसान। अनेक। दैव। सज। छिछीह। छित। रंकग। कित। जित। करन। सेन। हेन। सुरभ। हर। हद। नविकान। किति। कन। कथि। चंदयं। सु जोग थान। सकरेग। मोद। कंदयं। सुं चंव। सुर। नैंक। भति। लीह किति। जंपही। भंति जीह कित्ति जंपही। कमल। कौलि। मौलि। सांध। सुदौरि त्रोरि दो निसान दोरि छोरि झंपही। दिमाने। छोर। छोरि। सुरगजतजजनैज तिपकिप रंजही। सुरग जतं। जज। तेज। तिप। तिप्य। क्रिप। दैव। विद्द। किति। कथि। काथै। वंदय। सु। जोग। पांन। जोगयं। संपूरयं। नमालयं न। माल देव मालयं सुरजयं। दिशान। दिशि। दिमि। उचर। उचरं। सुरुप। मछयं। अवन। लोकं। पाल आय। रजयं। सुमान। दिव। जय जय॥

१० पाठान्तर—कवित्त। मद्धि सु मद्धि। मध्य। टाम। कोर। करै। अनुल। "देव सगि सटि हय। सिवनं चक्रीवप झंझल"॥ "देव संगि मटि हय सिर चक्री चप झंझल"॥ नेन। गेन। गुरजन। गर्जन। रसन रमन। झाइयं। झाईय। कंन। कन्न। उद्दपन। उदयं। न। पहरन। सवाईय। ¶ बूंदी वाली में नहीं है। चलं। सत। मायर। इद्र। चरन। पग नरन चहि। कन चहि॥

तुही अंबुजा अंबुकामिन्नि कामं। तुही तत्त कै तत्त रामं न रामं ॥
तुही दीप सूरं सिरं नभ्भ तेरैं। भुजा इंद्र तूही नभं नाभ फेरैं॥७५॥
सुयं सायरं पेट सा मुष्य अग्गी। तुही तेज ब्रह्मंड सासीस लग्गी ॥
तुही बाल वृद्धं तुही एक आदी। तुही तंत्र मंत्रं कवी चंद वादी॥७६॥
तुही राग जंत्रं जगत्रं बजावै। तुही सार पंचै सु पंचै चलावै ॥
भगव्वांन जंत्री सु वज्जंति लोई। सुरं राग बंधै बंध्यौ आप सोई ॥७७॥
प्रलै अंभ अंबं तुही हन्य बोधै*। तहां मोहि अग्या सु सिष्टं समोधै॥
छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ४ ॥

साटक ॥ किं सन्मान ससेव देव रजयं, दुष्टान उस्सासयं ॥
किं सुष्पानि दुषानि सेवन फलं, आयास भूमी मयं ॥
किं ईसं न सुरेस सेस सनकं, ब्रह्मात ग्यानं लहं ॥
किं रंनं छितया छितं सु कमलं, वंदे सदा विप्पयं ॥छं०॥७९॥रू०॥५॥

दूहा ॥ नंदकिसोर किसोर मग। निसि पुन्निम ससि अच्छ ॥
ब्रह्म स्तुति ब्रह्मा करिय। गोन मिले गुन वच्छ ॥ छं ॥ ८० ॥ रू० ॥ ६॥

॥ ब्रह्मोक्ति ॥

दूहा ॥ ब्रह्म कहै सुर सकल सों। गोकल हरि अवतार ॥
नारद सुर पति स्तुति करन। अप आए तिन वार ॥छं॥८१॥रू०॥७।
प्रथम किति रवि ससि करी। अहो देव देवेस ॥
तुम गुन बरनत जनम लौं। पार न पायो सेस ॥छं०॥८२॥रू०॥८॥

की में नहीं है। तुहा। अबुजा। मनि। तत। तत। राम। सूर। नभ। तेरं। तेरे। तेरै। तुही। नभ। नाम। फेरैं। सोसुप। सामुप। अंगी। श्रष। ब्रहमंड। सुसीस। लगी। वृद्ध। तत्र। मंत्र। वाही। रगयंत्रं। तुही सार पंचै चलावै। भगवान। सुवजेति। लौई। वंधे। वंध्या। सोहि।
* सं० १७७० की में नहीं है। प्रछै अभ अंब तुही। हन्यं। वाधै शिष्टं। समोधै। समोधे ॥

५ पाठान्तरः—इसकी पहिली तुक सं० १७७० की में "किं प्रलै अभ अवं नहा हन्य बोधै' है। सन्मान। सैव। दैवं। दुष्टान। उछासयं। उसासय। सुपानि। दुपानि। सेवनि। कि। इस। सुरैस। सैस। शेस। ब्रह्मान। ब्रह्मयान। ग्यान। रन। दै सदा विपय। विपर्यं ॥

६ पाठान्तरः—नदकिसौर। किसौर। मिशि। पुनिम। पूनिम। शशि। अछ। ब्रह्मस्तुति। ब्रह्मा। ब्रह्मा। गौन। गोन। मिलै। वछ। वछा ॥

७ पाठान्तरः—ब्रह्म। कहे। सौः। गौकल। किरन ॥

८ पाठान्तरः—कित्ती। करिय। अहो दैव दैवेस। देवेश। तुमि। लों। पावै। पायो। शेश। सैस ॥

॥ मच्छावतार की कथा ॥

॥ वृद्ध नाराच ॥

मछ्छ रूपयं, सरूप अंग नूपयं। सु पव्वे रिष्पि तातयं, तमात मंत भूपयं।८३
एक घट्टवांन, ता निमान वज्जही। अनेक देव रंजए. सुरंभ ग्यान सज्जही।।८४॥
न छित्त रंग कित्त जित्त षंड षंडही। करन्न एक हेत से त ता समंद मंडही॥८५॥
हद्द तव्बिकांन कित्त कथ्थिय चंदयं। बरन्न वान संकरे, जमात मोद कद्दयं। ८६॥
हूर नेक भंति कित्ति जीह जंपही।कमल केलि बंक मेलि बंधि सिंधु चंपही८७
दो दिसांन छोरि तोरि झोरि झंपही।सुरंज तंज जेज जेत तिष्प किष्प रंजही॥
देह विद्दहार कित्त कथ्थिय चंदयं।सु जोगथान जोगयं सपूरयं निकंदयं॥८९॥
नयं न माल देव मालयं सुरज्जयं। दिसान दिस्स उच्चरं सरूप मछ्छयं जयं॥
लोक लोंकपाल फूल माल रंभयं। सुमंन्न देव सीस रज्जि बंचयं जयं जयं॥

छं० ॥ ९१ ॥ रू० ॥ ९ ॥

त ॥ सायर मद्धि सु ठाम। करन त्रिभुअन तन अंजुल॥
देव सिंगि रषि धरिनि। सिरन चक्री चष झंपल॥
गैन भुजा ग्रज्ज त। रसन दसनं झुकि झांड्य॥
एक करन ओढंत। एक पहरंत सवांड्य॥

९ पाठान्तरः—मछ। सुरूपयं अनूपयं। सुपर्व। सुपरव। रिषि। भुपयं। ठठुकि। घंटवान। । निसान। अनैक। दैव। सज। छिछीह। छित। रंकग। कित। जित। करन। सेन। सुरभ। हर। हद। नविकान। किति। कत। कथि। चदयं। सु जौग थान। सकरेज। कंदयं। सु चेव। सुर। नैंक। भंति। लीह किति। जंपही। भंति जीह कित्ति जंपही। । कैलि। मैलि। सांध। सुदौरि त्रैरि दौ निसान दोरि छौरि झंपही। दिसाने। छोर। । सुरंगजतजजनैज तिपक्पि रंजहीं। सुरग जतं। जज। तेज। तिप। तिष्य। क्पि। विद्ध। किति। कथि। काथै। चंदयं। सुं। जौग। पांन। जौगयं। संपूरयं। नमाजयं न। दैव मालयं सुरजयं। दिशान। दिशि। दिसि। उचर। उचरं। सुरूप। मछयं। श्रवन। । पाल आय। रजयं। सुमान। द्वि। जय जयं॥

१० पाठान्तर—कवित्त। मद्धि सु मद्धि। मध्य। ठाम। करे। करै। अजुल। "देव सगि हय। सिरनं चक्रीवप झझल" ॥ "देव संगि सटि हय सिर चक्री चप झंझन्न" ॥ नैन। गैन। । गजेत। रसन रसन। झाइयं। झाईय। क्रंन। क्रन्न। उदयन। उदयं। त। पहरत। य। † बूंदी वाली में नहीं है। चलं। सत। सायर। इद्र। चल्त। पग नलन कहि। लैंन ग्रहि॥

चल चले सपत साइर अधर *। इंद्र नाग मन कवन कहि ॥
गिर धर चलंत पग मलनमल। लेन वेद अवतार गहि॥छं०॥९२॥रू०॥१०

भुजंगी ॥ धरें गेन सीसं चले वेद रीसं। गदा मुदगरं दंत पारंत चीसं॥
पगं पिठ्ठ नठ्ठं कमठ्ठं डरानं। थके वेद ब्रह्मा कमठ्ठं भजानं ॥९३॥
भगे जोग जोगं छुटे थांन थानं। छुटे विश्व लोकं महा लोक जानं॥
फटे कन्न रानं प्रथी लोक जानं। चितं रत्त लोकं भ्रमं लोक मानं॥९४॥
पुले पिच लोकं ब्रह्मं लोक देवं। * * * * ॥
सिवं कूट थानं हरं थान लोकं। जह्न रत्त लोकं परे सत्य सोकं ॥९५॥
परे दिव्य लोकं सुरंगं सु पालं। ब्रह्मं रायिसं लोक भग्गेस कालं॥
परे निठ्ठ तठ्ठं कमठ्ठं रहानं। चले दैत संषं जुटे वेद रानं॥ ९६ ॥
ब्रहम्मा भजानं न जानं कि जानं। धरंजा फटानं ग्रहं निठ्ठ भानं॥
परे लोक सोक करे देव कुक्कं। डकं डक्क वज्जी करै ईस डक्कं ॥९७॥
ग्रहे ब्रह्म लिङ्गं धरै वेद मुष्यं। गजे जोग सद्दी हुवं दैत दुष्य ॥
करे मच्छ रूपं धरै धार धूपं। छिले सत्तयं सायरं अंध कूपं॥९८॥
परे छोनि छक्कं विछक्कं बरानं। करे कुंभ नद्दं विहद्दं सुनानं ॥
तहां संषनं पानि संषा सुरानं। नहीं पाव संषं प्रलंवं बरानं ॥९९॥

११ पाठान्तरः—धेरे । गैंन । चलै। मुद्वर। मुद्गरं । पंग। पिठ । नठं। नंठं। कमठं। झरानं। थकै। ब्रह्मा। कमठं। भगै। जौग जौगं। छुदे। छुदे। विश्वलौक । महालौक। क्षानं। जांनं। फदे। कंन्न । प्रिथी। पृथी। जानै। चित। लौकं। भ्रमं। लौक। मानं। पुलै। लौक। ब्रह्मलोक। ब्रह्मंलोक। देवं। ✻ * यह तुक किसी पुस्तक में नहीं मिली। कूट। थान। लौकं। जन्हूरस्त। जहुरस्त। नौकं। परै। सत्यको। सौकं। सीकं। लोकं। सुरंग। ब्रह्म। ब्रह्मं। लौक। भगै। षरै। निठ। तठ। तठं। कमठ। कमठं। रहानं। राहानं। चलै। सषं। जुटे। वैद। ब्रहमा। बृहंमा। जांन। फटान। गृहं। निठ। निठं। ठ। जानं। शोकं। कौकं। कोकं। डक। वजी। इस। डक। ग्रहै। लिङ्ग। धेरे। वेद। मुषं। गजै। जौगि। सठी। हुअे। हुअं। दुषं। मछ। धेरे। रूपं। ध्रूप। छिलै। सतयं। अंध। परै। छौनि। थक। छकं। विछैकं। विछकं। कौरे। कुभ। नंद। विहदं। सुरानं। पानि। सुरांनं। नहीं। संष। शंषं। प्रलवं। प्रलंब। धुमर। धुमर। अंवर। अंव। दझी। मझ। पोडस। कला। सुझी। धेरे। गेंन। मैम। पांन। लरै। आउदानं। मनौ। मनैा। आसुर। वासुर। सत। सुत्त। करकंत। मछी। कटि। काटि। मछं। मनौ। मनौ। आउधं। वाजि। जनु वज्र वछं। वज्जि। वछं। धपै। पानि। फटे। छैदं। कदे। पैट। मझ। सुर वैद। वैदं। धैरे। चलै। व्रष्य। थानं। किए। बजं। बज्ज। पुरात। वृष्टि। वृष्ट। दैवं। सुरब्रह्म। सैवं। † बूंदीवाली में इस तुक के दोनों पाठ उलट पुलट हैं मुष। वैद। पानि।

धजा धूमरं अंमरं अंब दक्खी। तिनं मझ्झ षोडष्कला अप्प सुझ्झी॥१०० ॥
धरे गेन पानं लरे आवधानं । मनों आसुरं वासुरं सत्त पानं ॥
करक्कंत मच्छी कटिं कट्टि मच्छं । मनों आवधं बज्जि जौं वज्र वछ्छं ॥ १०१॥
धपे पानि लद्धं फटे पारि छेदं । कढे पेट मझ्झं सुरं वेद वेदं ॥
धरे अप्प पानं चले ब्रह्म थानं । किये जैत बज्जं पुरानं सुरानं ॥ १०२ ॥
करी विष्टि फूलं सुरंसिद्ध देवं । सुअं ब्रह्म जप्यं कियं अप्प सेवं ॥
मुषं वेद पिद्धं न लै पानि ब्रह्मं । जलै षोलि पान भजे भ्रंति भ्रंमं ॥१०३॥
* दियं चारनं भट्ट वेदं सु पानी । रहे ब्रह्म ग्यानं हरी सिद्धि रानी ॥
अपं इद्र आपं भगं कोरि कोरं । कियं मछ्छ रूपं छुटे वेद रोरं ॥
छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ११ ॥

॥ कच्छावतार की कथा ॥

दूहा ॥ मंडि गजिन बहु बल उअर । तल कल बल जल जाल ॥
मंदिराचल वल विपुल पुल । थल थरहर हल पाल ॥ छं० ॥१०५ ॥ रू० ॥ १२॥

दंडमाली ॥ धरि कच्छ रूप सरूपयं । कुस क्रूप मंडित भूपयं ॥
धरि मंद प्रव्वत पुट्ठयं । जल जात चाल गरिट्ठयं ॥ १०६ ॥

* हमारे पाठकों को यह स्मरण मे रखना योग्य है कि चंद के इस वाक्य "दियं चारनं भट्ट वेदं सु पानी" से वास्तव में चाहे यह ऐसा ही हुआ हो अथवा न हो किंतु ज्ञान होता है कि इन दोनों जाति के मनुष्यों में जो वर्तमान समय में अनबन दृष्टि आती है वह चंद के समय में विद्यमान न थी किन्तु कुछ थोड़े ही काल से उस का जन्म हुआ है। यदि हम यह भी मान लें कि चंद के समय मे इन दोनो जातियो में परस्पर विरोध था; तथापि चंद कवि प्रशंसा करने के योग्य है, क्योंकि उसने चारनों का नाम अपने इस ग्रंथ मे कहीं नहीं छिपाया है बरुक पहिले उनका नाम उसने प्रयोग करके फिर अपनी जाति का नाम प्रयोग किया है। तथा इन दोनों जाति के मनुष्यों की उत्पत्ति के शोधकों को यह वाक्य बारहवें शतक तक का प्रमाणरूप भी उपलब्ध समझना चाहिये। इस महाकाव्य मे आगे अनेक स्थानो में ऐसे प्रयोग आवेंगे। इन दोनो जातियो की उत्पत्ति के विषय में अनेक प्रकार के शंका समाधान है। परन्तु इन लोगों की उत्पत्ति का कुछ विषय हमारे पास एकत्र किया हुआ है वह अवकाश मिलने पर यदि कहीं आवश्यकता हुई तो हम किसी टिप्पणी मे लिख विदित करेंगे॥

ब्रह्म । जल । जलं । पौलि । पोलिं । पान । न्नाति । भ्रमं । वैदं । पानी । हरे ब्रह्म ग्यान हरि सिद्धि रानी । हरे । रानी । अपं । इद्र । भगों । भगे । कौर । सौर । कोर । कोडिर । किय मन रु छुटे वेद जोर । मछ । छेटे ॥

१२ पाठान्तरः—गजि गन । उर । मंदिरा । बव ॥

१३ पाठान्तरः—छंद दंडमाली । कछ । त्रुस । कुंप । जुयंप । जूपयं । प्रवत । पुठयं । गरिट्यं गरिठयं । गरिष्टयं । वाम । दिन । अदिन । बम । प्रचंडय । श्रुति । सुनि । अहिगुन । गुनागन

दिव वाम मान न छंडयं। दित अदित बंस प्रचंडयं ॥
स्तुति चवत सुर नर गुन गनं। * * * * ॥ १०७ ॥
लिय रतन चवदसु वीनीयं। बंटि बंटि निज कर दीनयं ॥
बर बिदरि बिद्दरि बोरयं। सुर असुर मिलि जलफोरयं ॥ १०८ ॥
जै चवत चंद कविंदयं। कलि कूरमं वर इंदयं ॥ छं० ॥१०९॥रू०॥१३॥

दूहा ॥ कहि सनकादिक इन्द्र सम। किम लिय पाथर तन्न ॥
कहै इन्द्र सनकादिक सौं। सुनौ कहौं करि भग्न ॥छं०११०॥रू०॥१४॥
दैत राज धर प्रबल हुअ। अमर परे सब मंद ॥
गए पुकारन सकल मिलि। जहां लछ्छि गोविंद ॥छं०॥१११॥रू०॥१५॥
कही ईस इन्द्रादि सौं। सजौ सेन चतुरंग ॥
तुम सहाय असहाय अरि। करौ दैत सब भंग ॥ छं०॥११२॥रू०॥१६॥

लघु नाराज ॥

कियंति नद्द भद्दयं। लियंति रथ्थ बद्दयं॥ चले सु देव इंदयं। करे सु सेन द्दंदयं॥
अनेक धानुषं धरं। अनेक चक्र संवरं॥ चले अवद्ध षेदयं। षरे भरेति वेदयं ॥
धजा पताष धूमली। समूह सेज*संमली॥ दईत दूत दौरयं। करे सनाह जोरयं॥
चले सु दैत चंचलं। मनों अषाढ धूमलं॥ मिले जु रिष्पिमानयं। जु देवता दधानय

* यह तुक घटती है। लीय। चउद। सु वीनयं। वंटि। बिदुर बिदुर। विदुर। चिहुरि वारय। असुर। सैामयं। ववत। कविदय। कवींदयं। श्ररमं। कुउम। चर ॥

१४–१६ पाठान्तर–पाथौ धिर। पार्वैधिर। सनकादि। सो। कहू। कहौ। भिन्न भिन्न ॥ १४ ॥ देतराज। हअ। परै। लछि। गोबिंद ॥ १५ ॥ ईश। ईद्रादि। सौ। सजो। सहाय। दैत्य ॥ १६ ॥

१७ पाठान्तरः–नद। भदयं। लियंरति। रथ। वदयं। चलै। इद्र। दैत्रयं। करै। सैन। एवयं। अनैक। संचरं ॥। चलै सु वंद्ध षैदयं। षरै भरैति वैधयं। वेधयं। पताक। धुमली। सत्रह फौज संभली। समूह फौज संमली। करै। जोरियं। चलै। चंवलं। मनैा। धुमलं। मिलै। सु रिषि। रिप। ज्यो। ज्यौ। दैवता। त्रिलैाक। नैवता। लछमी। लछिमि। + यह बूंदीवाली पुस्तक में नहीं है। कैसवं। केशवं। भालयं। यौ। यो। यो। दइत्त। यो। यैा। दैव। झुरयं। मिलै। कछाग्रनिर। क्रिद्दयं। लछंमि। लछमी। जित। गिरि। धरै। गिठ। नैत। मथयं। दइत। मुप। दपयं पुछ। दैव। रश्रयं। विरौलि। घुमही। घूंमही। प्रथम। लाछिमी। लछमी। लक्षमी। वच्यमी। लक्षमी। स्त्रपारिजात। सौमं। उगि। ऊगे। सु कला। सु वैन। गज। उजला। सु रग मौधनी परा। सु रंग मेघनी परी। अस्त्र। धनुष। समैन। पपयं। दस। दर। दैन। दझयं। फैन। मझयं कितैक सैन कुकही। मुए सु। मान। मुकही। लपंत रन ईदयं। लयं। अमृत। अप।

दियंसराप देवता।त्रिलोक मध्य तेवता॥ अवंत लछ्छिमी गई।नराधि देवन्दिम्मई[†]॥
न केसवं न दानवं।न नागयं न मानवं॥ यु देवता विचारयं।नही सनाह भारयं॥
दईत भग्गि दूरयं।यु देव दूत भूरयं॥मिले त्रिलोक संमिली।बिना पराग बिह्वली॥
कछावतार किद्वयं।लछ्छिम्मि जीत लिद्वयं॥मदाचलं महा गिरं।धरे सुपिट्ठ उप्परं॥
सु नाग नेत किद्वयं महा समंद मंथयं॥दईत मुष्प दष्पयं।सु पुच्छ देव रष्पयं॥
विरोलिदद्धिज्यों मही।घटातटाकघूंमही॥लियं प्रथंम लछ्छमी।सुकौस्तुभं चवछ्छमी॥
सु पारिजात पानयं।सु राधनंत मानयं॥जु सोम उग्गि सुक्कला।सु धेन गज्ज उज्जला॥
सुरंभ मोहिनी परी।सुसप्त अश्व सुद्वरी॥ धनुष्य ईस संषयं। विषं समेत पष्षयं॥
सुच्यारि दिस्स पंचही।दिए सुदेव संचही॥दईत बंस दभ्भयं।सुनाग फेन मभ्भयं
कितेक सेन कुक्कही।मुएति मान मुक्कही॥लियं सुरत्न इंदयं।दईत किद्ध दंदयं॥
अमृत्त अप्प अच्चरं।कियं सु देव कच्चरं॥अनाथ नाथ अप्पियं।दईत देव चंप्पियं॥
पवंत दीय पष्पिली।दईत देव रुप्पली॥अमृत्त देव पिद्वयं।सुरा सु दैत सिद्वयं॥
जु सोमनाथ सों कही।रवी सुरा सु दैत ही॥हरी सु चक्र सद्वयं।जु दैत बसबद्वयं॥
छं० ॥ ११३-१२९ ॥ रू० ॥ १७॥

कवित्त॥ दानव तव गय दौरि। करे इक बंध कटक्कं॥
हुअ देवासुर जुद्ध। चढे देवता चटक्कं॥
षरे रथ्थ पष्परे। आइ लग्गे सम धारं॥
रथ सौं रथ भंजियहि। कूक लग्गी पुकारं॥
जोगनी जोग माया जगी। नारद तुंवर निहस्सिया॥
दस एक रुद्र दारिद्र गत।दानव तामर हस्सिया॥छं०॥१३०॥रू०॥१८॥

अचरं। अचरं। कवरं। कचरं। आथ। आयं। दानव। दानव। चपय। चपयं। पावंत। पावंत दीय पपली। दानव। रुपली। अमृत। दैव। मुग ज। मुरा जु। ज्यु। सोरुनाथ। रवी मुरा स दौर ही। संधियं। मदय॥

[†] इस महाकाव्य में मुसलमानी भाषा के शब्द प्रयोग हुए देख कर शंका करनेवालों को जानना और विचारना चाहिये कि किसी पुस्तक में फौज और किसी में सेन पाठ मिलते हैं। क्या यह दोनों पाठ चंद ने प्रयोग किये हैं?॥

१८ पाठान्तर—गय तव। करैं। कटक। देवामर। चडै वता चटक। चडै। चटकं। षरे। रथ। पषरे। पपरे। लग्गे। सम वार। सु। सो। लगी। पुकार। पुकारं। जुगिनी। जोग। तुंवर। निहसिया। दरिद्र। तांमर। हसिया॥

भुजंगी ॥ इतें चक्रधारी कियो चक्ररूपं ।उतं कुंभनी कुंभ सा दैत्य भूपं॥
उतें दानवं बोलि बोले करारे ।इतें देवता गज्जयं सार झारे॥१३१॥
रिषं हथ्य सादिष्ट दीनी असीसं ।तिनं वज्रमै कोप दानव्व दीसं॥
कुकी जोगमाया बकी थान थानं।रटैं नारदं तुंवरं ब्रह्मगानं॥१३२॥
कियौ कुंभ कोपं चली संग माया।इतें इन्द्र ब्रह्मादि सव देव धाया॥
घरे देव देवाधि चारथ्य चूरे।धजा की पताघं लगी धूरि धूरे॥१३३॥
छुट्यौ पट्ट पीतंवरं कट्टि छुट्टी ।मनों स्यांम आकास तें बीज तुट्टी॥
हुए सिथ्थलं देव दानव्व धाए।करें रूप अन्नेक अन्नेक काए॥१३४॥
तवें भूत वेताल नच्चैति घाए। धरे पग्ग त्रीशूल अन्नेक धाए॥
ततथ्थे ततथ्थे नचे तार विद्धी।कतथ्थे कतथ्थे कहे देव किद्धी॥१३५॥
परथ्थे परथ्थे कियं आर पारं। मनथ्थे मनथ्थे कियं देव मारं॥
असित्ते असित्ते हुए एक सेनं । ग्रसत्ते ग्रसत्ते महादेवमेनं॥१३६॥
अलुझ्झे अलुझ्झे करी अंतझ्झुझ्झे।हुए देवता दानवं अंग दझ्झे॥
फिरे रथ्थ सा देव कीनं अनूपं।घरे रथ्थ अप्प करे कछ्छ रूपं॥१३७॥
न लग्गै न लोहं न संगी न सारं।न अस्चं न लेपं न छेपं न पारं॥
फिरे चक्रधारी सु राषीस वृंदं । किए एकठे एक एकं मुनिंदं॥१३८॥
हुए चक्र अन्नेक अन्नेक भारी । मरे राषिसं वृंद दैत्यान मारी॥
इसो एक अज्जेज जुद्धं अनूप। हुअं देव देवा सुरं क क रूपं॥१३९॥
इम कछ्छपं रूप ओप्यौ अपारं । धरा पिठ्ठ रष्षी सरापं सुधारं॥
जुगं अंत दानव्व भूमी उपारी । तबै कोल रूपं कियौ श्री मुरारी॥
छं०॥ १४० ॥ रू० ॥१९ ॥

१९ पाठान्तरः—इतै । कियौ । उतै । कुंभानि कुंभ । सा दैत । भुपं । उतै । बूंदीवाली पुस्तक में नहीं है । बौलै । वोलै । करारै । इतै । दैवता । सजिय । झारौ । रिष । हय । तिमं । मै । कौप । दानव । जौगमाया । थाभ । थानं । रटै । रहे नारनं । तुव्वर । ब्रह्मग्यानं । कीयौ । कौपं । इने । इद्र । सादेव । घरे । चारथ । घुरे । धुरि धुरै । छुत्यौ । यद्र । पीतंवर । कटि । छुटी । मनौ । श्यांम । तै । हुअै । सथलं । सतलं । दैव दानव । करै । अनेक । आये । काये । तबै । भुत । वेताल । नचैत्रि घाइ । नच्चैत्रि थाई । घरे । षग । त्रिसूल । अनैक । अंनेकं । अधाई। धाई । ततथै । ततथे । नचै । नर्नै । तारि । विद्धा । कतथै । कतथे । कहे । दैव । किवी । परथै । परथे । मनयै । मनथे । दैव । असिते असिते । हूए कैक सेनं । हुए केक सेन । यसिते । यसित । मन । अलुझे । अलुझे । झुझे । झुझे । हुअै । दैवता । दानवं । दझे । दझै । फिरै रथ । दैव ।

कवित्त ॥ धरि कछ्छप कौ रूप। भूप दानव संहारे ॥
लइ लछि सागर सुमथि। रिष्य आपान सुधारे ॥
राह सीस किय षंड। मंडि दानव सब भंजिय ॥
किय देवासुर जुद्ध। ईस वर करि अरि गंजिय ॥
धारी सु धरा हरि पिठ्ठ पर। दिए रत्न बंटिय सुरनि ॥
कवि चंद दंद मेटन दुनी।श्री कछ्छप तेरे सरनि॥ छं०॥१४१॥रू०॥२०॥

॥ वाराह अवतार की कथा ॥

दूहा ॥ हिरनाषह प्रिथवी हरी। धर दानव अवतार ॥
इन्द्रादिक नागन सजिय। प्रति अवतार पुकार ॥छं०॥१४२॥रू०॥२१॥

कवित्त ॥ प्रति अवतार पुकार। लीन प्रथवी सर पारिय ॥
जवन जिहां न सु ठाम। धरनि सत साइर गारिय ॥
किन्न रूप वाराह। जोति मन जोति सु कढ्ढिय ॥
वहुल रूप तन दुरद। रिसन वैश्वानर बढ्ढिय ॥
कवि चंद चवत दानव भिरन। धरन धरा रद अग्र बर ॥
सुर राज काज उप्पर करन। कोल रूप जगदीस धर ॥
छं० ॥ १४३ ॥ रू०॥ २२ ॥

कानं। अनुप। परे। रय अयं। आय। करै कछ। लगै। स लौह। सु लोहं। मंन सगी। कुसस्त्र। कुशस्त्रं। न लगे। न लग्गें। न छैव। न छेवं। कुशस्त्र न लगै न छेव न पार। फिरै। सु राषिन। वृदं। कीए। मुनींद। अनेकर। अंन्नेक। मुरे। मरै। मुरे। इसो। अजेज। अजेज अनुपं। हुअ। सुर। कछयं। औध्यौ। पिठ। रषी। जुग दान। भुमी उधारी। उवारी। तैवै कौल। कयौ ॥

१४० पाठान्तरः– कव्वय। को। भुप। दानव। संहरि। लई। लछ्छि। सुमरिषियी। सुमथ्यि। रिषि। स्वायन। सुधारि। शीश। काय। मीड। दांनव। भजिय। भंजीय। देवासुर। युद्ध। इससर वर करि मक्रिजिप। ईशवर। धारि। पिठ। परं। दए। वट्टिय। सुरन। दट। मेटन। कछप। तैरै। सरण। सरन ॥

१४१ पाठान्तरः–हयग्रीवहि प्रिथवी हरी। हयग्रविहि पृथिवी हरी। प्रथमी। धुर। दांनव। ब्रह्मचार। ब्रह्मच्चार। ब्रह्माचार सुर। इद्रादिक। सुर इन्द्रादि ॥

२२ पाठान्तरः–नील प्रथी सर पारीय। जव्वन। जिहांन। ठांम सायर। गारीय। कींन। किन्न। जौति। मनि। मोनो। जैति मनि प्रगटी। कट्टिय। कक्ट्टिय। कट्टिय। वढिय। ववत। वरनि। ऊपर। कौल ॥

कवित्त ॥ बल प्रचंड बल मंड । ज्वाल विकराल काल कल ॥
धर वितंड वाराह । बीर बीरन विदारि पल ॥
हरि हरनछ्छि सु अछ्छि । बछ्छि वर जछ्छि विभावस ॥
विधि विधार बीधार । विदर विकरार झार असि ॥
उद्धारि धरा रहि अग्र वर । सुर विकास किय चंद वर ॥
जै जया सबद धुनि सुर चवत । जोरि पानि वंदै सु चिर ॥
छं० ॥ १४४ ॥ रू० ॥ २३ ॥

वृद्धनाराच ॥

परठ्ठि प्रान मैसुरांनभांनिअप्पिभज्जयं।कला गुहीरनीर तीर आय दैत गज्जयं।१४५
पयंपताल सीस सग्ग अस्व मुण्ष दष्षयं।रटंत वेन भुज्ज गेंन रैंन नैंन रष्षयं॥१४६॥
भुजाग्र भाग मेर नाग इंद्र दाग दझ्झयं।बरन्न धुम्म, धुम्मरं सुरं पुरं सु धुज्जयं१४७
पया पुरं धरा धुरं,नरानर नरष्षयं।इसौ अवाह अस्व दाह एक राह दष्षयं॥१४८॥
जुटे जुरं भरे भरं, सुरे सुरं सु वाहयं।चटे चटं नटे नटं लटे लटं सु साहयं॥१४९॥
करंत कूक मान मूक दैत दुष्ष मानवं।पगांनि पानि साहि कांनि लैरु चीरि दानवं॥
॥ १५० ॥
करी सु कित्ति दैत देव नीति जीति रष्षयं।हयं सु ग्रीव किद्दरी बकट्टि जीव नष्षयं१५१
सुरा निसार लिद्ध भार दैत्य मारि धारनं। अये वराह अस्व दाह दैत्य दाह दारुनं॥
छं०॥ १५२ ॥रू०॥ २४॥

---

२३ पाठान्तरः—मंडि वितुंग । वितुंड । हरनाछि । अछि चाछि । वाछि । जछि । जग्गि । वह्नि विधार विद्वार । विधि विधार विद्वार । विकराल । उद्धरि । धःरा । रह । शवद । सुरि । जौरि । पांनि ॥

२४ पाठान्तरः—पराठि प्रंन मैथ रान । पराठि प्रांन मेथ रांन । भान । अपि । आंपि । भजयं । नार । आइ देत । गज्जय । गजयं । प्रिथी षताल । पृथी पताल । सूग । मुप । दषयं । रटंनैतवेनभुजनैः । वैन । भुजनेन । रेंन नेंन । नैन । रषय । मेर । इद्र । दागझ्झयं । दझयं । वरन्नं । वरन । धुंम । धुम । धुंम्म । धूमर । सुर । स । धुजयं । पयापुर । रषय । इसो । दषयं । जुटे । जुदे । सुरै सुर । सूरं । स । वाहयं । चटे चट । नटै नटं । लटै । अक । कुक्क । मान । मुक्क । मुक । दैत्य । दुप । साहिकांन । चीरे । वीरि । किति । दैव । नीति रषयं । केद्दरी बकट्टिट । नषयं । नंपयं । सुरान सार । सुरां नसार । धारिनं । अैराह । धाह दारुनं ॥

कवित्त ॥ करि विरूप वाराह। षरनि षुर अविगत षिल्लिय ॥
जनु कि मेघ उतकंठ। कला ससि षोडस झल्लिय।
असिय मुष्प दंतल्लिय। तरुन तिष्षिय आधारिय।
मेर चंद मनु बीज। चंद्र मनि परह सुधारिय॥
आरोपिप्रथ्थि अंबर पुरह। सत साइर संसै परिय॥
कहि चंद दंद करि दैत सों। धरनि धार अद्धर धरिय॥
छं० ॥ १५३ ॥ रू० २५ ॥

भुजंगी॥ वपू बीर बीरं ध्रुतं ध्रुत्त सारं। दिठं दुष्ट दाने कलं कोल कारं॥
वरं तुंड तुंगं विसालंत नेंनं। छिनं छीन लोकं जुरे दूत सेनं॥१५४॥
रुधिं फट्टि वज्जंग वज्जे वितूरं। गनं आन कंतं बजं पंच पूरं॥
अवं सोर भारं भिरे भूर भारी। तिनं मेक मानी अफाली असारी॥१५५॥
घटे घोष छोनी बलं छीन नूरं। धरे सुद्ध उद्धं दिवं संम जूरं॥
धरे दंत धारा वरं सेष ओपं। मयं कंक लंकं कियं कंठ लोपं॥१५६॥
जयं जोगधारी महापान पानं। हयग्रीव नषे तिनं तोरि तानं॥
करे तुंड तुंडं वितारंत तारं। तियं लोक सोकं विलोकन्न पारं॥१५७॥
सुरे सूर कंतं जयं जो करालं। समं गुछ्छ अछ्छं करं जूल जालं॥
चवै चंद चंडी नमो वेद चारं। नमो देव कोलं वरं रूप सारं॥
छं० ॥ १५८॥ रू० ॥ २६॥

२५ पाठान्तरः—कर। करी। अविगति। षलिय। षिलिय। जनु कि। जनु कें। षौडस। झलिय। ईसी। इसी। मुप। दनलीय। दिनलीय। तरुनि। तरून। तिपिय। तिपीय। आधारीय। मेर। मनौ। मनी। सुधारीय। आरोप। आरोप। पृथी। प्रिथी। सायर। कवि चद दंद करि दैत सौं। कवि चंद दंद करै दैत सो। कहि चंद दंद कहि दैत सौ। धरनि थार॥

२६ पाठान्तरः—वयं। वपं। धृत। धृत। दिवं। दानै। कौल। तुग तुडं। तुंगं तुंडं। नैंनं। छिन। लौकं। दूत। सैनं। दरुधि। रुद्धि। वज्ज। बजै। विनुर। आनं। पुरं। अवं। सोर। भिरैं। भुर। मैक। मानी। वटे। वौप। छौनी। छलं। ललं। वीत। नुरं। धरे। गुद्ध उद्धं। गुद्धं उद्धं। दिव। समजुरं। समजूरं। धरे। वर। सेप। ओपं। कीयं। लोपं। जोगधारी। पानं। पानं। हयग्रीव। नंपे। तौरि। करै। विलोकंत। सुरे। कैनि। जो। गुछ। अछं। जुल। निमों। देचार। देव चारं। नमों। कौल॥

कवित्त ॥ कोल रूप जगदीस। हत्यौ हयग्रीव सु दानव ॥
जय जय सबद चवंत। सुमन वरषिय सुर मानव ॥
पधारे हरि लोक। सोक मेट्यौ सब्बन सुर ॥
कोइक काल अंतर। हुओ हिरनंकस आसुर ॥
तप ईस उग्र परसन्न हुअ! ब्रह्म सिष्ट नह तौ मरन ॥
कवि चंद कष्ट मेटन कलू। कोल रूप तेरे सरन ॥छं०१५९॥रू०॥२७॥

॥ नृसिंह अवतार की कथा ॥

दूहा ॥ सुवर ईस बरदान दिय। किय सुरपति अनुकाज ॥
अवनि असुर अदभुत तप्यौ। चप्यौ तीनपुर राज॥छं० १६० रू०॥२८॥
जाइ पुकारे सब्ब सुर। जहाँ आप जगदीस ॥
दानव तप त्रैलोक लिय। वर अप्यौ तिन ईस ॥छं०॥१६१॥ रू०॥ २९॥
ब्रह्म सिष्ट सौं नां मरै। सस्त्र अस्त्र नहि जाम ॥
तब हरि नरहर रूप किय। असुर विदारन काम ॥छं०॥१६२॥रू०॥३०॥
षरक षंड षंडे अखिल। तिल तिल षल भै भीर ॥
बिद्दरि थंभ सुअंभ वर। उदर डारि डर झीर ॥ छं० ॥ १६३ ॥रू०॥३१॥
विराज ॥ जयं सिंघ रूपं।भयं भीत भूपं॥बजे षग्ग षंभं।स्वरूपं स्वयंभं ॥१६४॥
द्रिगं तेज तामं।हवी जान जामं॥मुछं सेत सारं। जयं देव धारं॥१६५॥
हयं रूप दानं। म्रगंकस्य भानं॥ रवरूप पूरं।लवी लोक स्रूरं॥ १६६॥
तिषी तष्षि चूरं। कनंकीक नूरं ॥ दिढं दिट्ठ मूरं। बजी तार तूरं ॥१६७॥

---

२७ पाठान्तरः—कौल। हन्यौ। जै जै संवद चवंत। बरषे। बरषें। पाधारे। पधारे। शेक। सौक। मैट्यौ। सबन कैाइक। केईक। कल। अंतरे। अंतरे। हूओ। भयौ। हिरनंकुस। इस। ईश। प्रसन। प्रसन्न। तह। तौ। मेट्टन। कलु। श्रीकौल रूप्प तैरै सरनं। शरन ॥

२८—३१ पाठान्तरः—सुवर। ईश। वरवान। बरदान। करि। सुर पलि। अदभत्त। चंप्यौ ॥ २८ ॥ जाय। पुकौर। सवनि। सा। निचर। जहा। रानव तप भै लौक लिय। दानव। अप्यौ। इस। ईश ॥ २९ ॥ व्रंह्म। शिष्टि। सों। सुं। षह जाम। शस्त्र। नह जाम। नहर। करि। मैछ विदारण काम। मोछि। कांम ॥ ३० ॥ षंडन। आषलं। बिदरं। बिरद। षंभ। अत्र। अंत्र। भर। वर। उदरि। झार झर झीर। उदर डारि डर डीर ॥ ३१ ॥

३२ पाठान्तरः—सिव। भुपं। वजे। षंभ। स्वरूप स्वयंसं। तैज। जानि। जांमं। सैत। चारं। दैव। मुगकस्य। पुरं। लौक। शूरं। सूरं। तिषी। तिष्य। चुरं। नुरं। दिठ दिठ नुरं। हिय

जयं देव दूरं। सिरं संम जूरं॥ दिषे व्रिष्पनन्दी। भयं भी अनंदी॥१६८॥
द्रिगं दिट्ठ चक्की। रही मोंन पक्की॥ मनं जोग जक्की। थलं थूर थक्की॥१६९॥
प्रहल्लाद तक्की। करं ह्वरि बंकी॥ दिवं काम अंकी। सुषं लोक जंकी॥१७०॥
बढी बेद बानी। कवित्ता वषानी॥ कथं गछ्छ कछ्छी। चवं लोक वछ्छी॥१७१॥
जयं देव रछ्छी। बटं बीर मछ्छी॥ उरं मझ्झ पछ्छी। तिनं तांम अछ्छी॥१७२॥
सुषं सुष्य सानी। हरी रूप रानी॥ बजी दिव्य भेरी। स्त्रियं सिंघ केरी॥१७३॥
कवी चंद चंदं। जयं जै अनंदं॥　*　*।　*　*
॥ छं०॥ १७४॥ रू०॥ ३२॥

कवित्त॥ बीर हक्क बर बज्जि। थंभ फट्यौ धर फट्टिय॥
निडर जोति निब्बरिय। लयौ मृगकास्य दबट्टिय॥
धरनि धूरि धुंधरिय। तीन भुवनं परि भग्गिय॥
भयौ सद्द हंकार। जोग माया ते जग्गिय॥
प्रहलाद थप्पि उथ्थपि अरिन। तीन लोक सुर असुर डरि।
षिल अषिल षेल षेलन षलन। कहर रूप नरसिंह धरि॥
छं०॥ १७५॥ रू०॥ ३३॥

लघुनाराच॥

लियंत रूप नारसं। बदंत बेद चारसं॥ अरुन्न तेज उग्गयं। भरक्कि देव भग्गयं॥१७६॥
उचाय धायउंडले हिरन्नकस्य षंडले॥ छुटंत कट्टि ठुंमरं। उठंत मुछ्छ धुंमरं॥१७७॥
ललंतलट्ट लै लटा। झटा पटाकछूछटा॥ षटाक षट्ट षल्लरी। कटाकबज्जिगल्हरी॥१७८॥

दिट्ठ मूरं। त्रुरं। दैव। सिर। सम। जूरा। दिषै। व्रिष। वृष्य। भयं भीय नदी। भयं अनंदी। दिवोह छवकी। रदी मौन यकी। दिव। दठ। चकी। मौन। पकी। मन। जौग। जाग। नकी। थुर। थुन। थकी। प्रहिलाद तकी। प्रहलाद तकी। कर। हूर। काम। लौक। वैद। वषाना। कैव गछ कछी। लैाक। चछी। जय देव रछी। खटं वीर मछी। मंझ। मझ। पछी। अछी। सुखी सुख सानी। रानी। भैरी। श्रीयं। सिंघ कैरी। कवि। अनदः॥

३३ पाठान्तरः—वीर। हक। वराज्जि। निझर ज्योति निधरयं। ज्योति। निवरी। लीयौ लीयौ। दवट्टिय। धुरि। भवनं। भगिय। सबद। हुकार। जौग। तैं। थपि। थापि। उथपि लौक। लिपि अपिळ पैल पैलन पुलन। पिल अषिल पेळ नपचन कहरु॥

३४ पाठान्तर.—लीयत। वदत। वैद। वारसं अरुनं। तैज। उगयं। भराकि। दैव। भगय। उडलै। हिरन्यकस्य। हिरन्नकस्य। पंडलै। वुटंत। कटि। कट्टि। त्रुम्मरं। टूमरं। उठंत। मुछ। धूमरं। धुमरं। धुमरं। ललितं। ललित। लट। लै। छु। पटाकि पट पिल्री। पटाकि। पट।

दटाकबज्जिदोटयं।कलाअनेककोटयं।नषं विदारिनष्ययं। भराकिभंजिभष्ययं १७९
उरत्त माल अंतयं।भगे भगत्त भ्रंतयं।नराधिपन्न देवता। न नागयं न सेवता
छं० ॥ १८० ॥रू० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ मुनिवर नरहर कथ्थ सुनि। भए सकल मन पंग ॥
कौंन समै नरहर असुर। जुटे जुद्ध जोधंग॥छं० ॥ १८१॥ रू०॥३५॥

वेली भुजंग* ॥

* * चरन्नं सरन्नं सु मित्तं। प्रभा स्हर सेवं सु पावं पवित्तं ॥
तिहूं लोक कौ सोक मेटन्न काजं।धरयौ रूप अत्युग्र अद्भुत्त राजं॥ १८२॥
तिनं तेज तं त्रास (अति)* आसूर जारे। सुतौ अर्भ मे गर्भ प्रद्दीय डारे॥
महा मुद्दितं(अति)* तेज तिं रत्त नैनं।प्रलै काल(रवि)*कोटी प्रगट्टंत गैनं॥१८३
करं कंपितं चंपितं सेस सीसं। गलं गज्जितं तज्जितं ब्रह्म ईसं ॥
डिगे षंभ ब्रह्मंड दिग्पाल हल्ली। धरा चन्न भारं तु लाजे मतुल्ली॥ १८४॥
इसौ देष रूपं असुरेस धायौ। ग्रहे षग्गता बीरसों षेत आयौ ॥
उग्यौ सज्जि आवद्ध सन्मुष्ष वत्तैं। मनों मत्त द्वै जुद्ध तथ्यैं निवत्ते ॥१८५॥
गह्यौ धाइ दानं भुजं बीच गाढौ। न जुट्यौ विछुट्यौ भयौ दूरि ठाढौ ॥
दिषै इंद ब्रह्मा भयौ त्रास हीयं। गयौ हाथ तैं तथ्थ आचिज्ज कीयं॥१८६॥

षटाकि। वाजि किलरी। कल्लरी। दडाक। दटाकि। वाजि। दौटयं। अनैक। कौटयं। नष। नष्ययं। भजि। भष्ययं। अंरक्त। आरक्त। आतयं। भयै। भगंत्त। भ्रूतयं। नराधिपंत। देवता। सेवता। मनागयं न सेवता ॥

३५ पाठान्तरः—सुनि। नरहर। कथन। भयं। मुंनि। कोंन। कौन। समे। जुदे। जोधयं॥

३६ पाठान्तरः—चरन। वरन। सरनं। सुमित्र। प्रना। सेव। पावन। लोक। सोक। शोकं। मेटंन। मेटन। प्रति उग्र। अदभुत। अदभुत्त। अद्भूत। राज। विराजं। तिन्। तैज। तन * अधिक पाठ है। असुर। असूर। जार। सुतो। अरभ। भय। भयं। गरभ। अति दीप झारे। अति दिए डार। मुदित। * अधिक पाठ है। तैज। तिन। नैनं। प्रले। * अधिक पाठ है। कोट। कोटि। कौट। प्रगटेत। प्रगटंत। प्रगटेत। गेगैन। कर। कपितं। कपित। चापित। सेस। सीस। गय। गय। गरजितं। तरजित। ब्रह्म। ईसं। डिगै। षंड। ब्रहमंड। बृहमंड। दिगपाल। हली। चरन। लाजै। मतुली। देषतें। देष सब रूप। रूप। असुरेस। असुरेस। गृहे। ग्रैहे। बीर। सौ। षेतं। सजि। आउद्ध। सनमुष। प्रवृत्ते। वरतं। मनो। मनौ। मत। द्वय। दुय। तयै। तयैं। तये। निवृते। गृहभो। ग्रहभो। धाय। दांनव। दानव। भुज। बीच। वाचि। न जुग्र। दूर। दिषे। ब्रह्मा। भयौ। त्रास। हथ। तै। तें। तथ। आचरिज। आचि-

भयौ जुद्ध तिं बेर तासों अपारं। कहा बर्नियै सेष पावै न पारं ॥
दबट्यौ झबट्यौ उछार्‍यौ पछार्‍यौ। हुतीयुद्ध की आस तातैं न मार्‍यौ॥१८७॥
तबै कोपिकै दुष्ट उछ्छंग लीनौ। हिदै फारि तत्काल सो डारि दीनौ॥
गरज्यौ गुंजार्‍यौ अरी चंपि ऐसैं। कहा ब्रन्नि कौं रूप तिं बेर तैसैं॥१८८॥
रही दंत विच्चंत सोहंत सारं। मनों मेरु गिरसृंग तैं गंग धारं॥
सुभै सीस पै मुछ्छ कौ झौंर ऐसैं। महाराज सीसं ढुरै चौंर जैसैं॥१८९॥
जुलित् पावकं तेज लोचंन भारी। सकैं दिष्ट को देव दानं सहारी॥
तप्यौ हेम ज्यौं देह की क्रांति सोहै। सुजोती रवी कोटि दिव्यंत मोहै॥१९०॥
तिनं तेज ज्वाला जरे दुष्ट तेतं। रहे संत सरनं लहै पुष्ट हेतं॥
हुतौ दुष्ट दानं अमानं सु हत्यौ। सुतौ मृत्यु तत्काल सुरपुर पहुत्यौ॥१९१॥
भई जैत जै सद्द सुर सर्व हर्षे। सिरं देव नर्सिंघ पै पुप्फु बर्षे॥
अये देव अस्तूति के काज सोई। महा रूप कौ भेद पावै न कोई॥१९२॥
सबै सोचि आलौ चिहारे निहारे। जिनं दिष्ट पल्लक कोई सहारे॥
फुरै वाच काहू न भै भीत सथ्यैं। कह्यौ जाइ कैं ओय देवं सुतथ्यैं॥१९३॥
तबै लच्छमी आप सोचे विचार्‍यौ। इसौ रूप गोविन्द कब्बहू न धार्‍यौ॥
इतो तेज जाजुल्य कब्बहू न देष्यौ। प्रलै पावकं जोति ताथें विसेष्यौ॥१९४॥
धरे रूप जेते तिते सर्व जानों। लगै वार कहते न ताथें वषांनों॥

रज। अचिरज्ज। युद्द। तन। तिन। वैर। तासो। कहां। बरणीयैं। वरनीये। वर्नियें। सेस। सेष। दपट्यौ। झपट्यौ। हुंतो। हती। युद्ध। ताथे। तातें। तब्बे। कोपिक। कोपिकें उछंग। रिदै। तत्तकाल। सौ। दीनौ। गरज्यौ। गरज्यौं। गुजारयौ। गुंजारयौ। चपि। ऐसैं। ऐसे। वरनि। वरंनि। कहुं। काहूं। तिन। वैरि। वेर। तैसे। तैसे। दंति। दत। चित्र। विवि। विचि। अंत। सोभंन। सोंहत। सोभंत मनौं। मैर। मेर। गिरि। गिर। श्रंग। ते। तें। तै। पर। पुछ। मुछ। को। डोंर। ऐसे। सीस। ढुरे। ढुरि। चौर। चौंर। जौसे। जैसे। जुलित। ज्वलित। पावक। तैज। लौचन। लोचन। सके। दिष्टि। कौं। दैव। दानव। संहारी। हेम। ज्यौं। देह। क्रांति। महा जोति रवि। जोति। कयोटि। मोहे। जो है। तेज। जरे। रहे। संत। सरन। लहे। हेतं। हुंतो। दानव। अमानं। हत्यौं। सुनो। मृत्य। तत्काल। तत्तकाल। सुर। पुर। पुहत्यै। पहुतौ। सद। सर्व्वे। सरन। हरपैः। सिर। देव। नरसिंघ। रनसिंह। पर। फल पुफ। पुप्प। वरपे। वरेष। अए। आय। आए। देव। अस्तुति। कै। सोई। को। भेद। पावे। कोई सवे। सोचि। आलो। विहारे। निहार। जिन। पल एक। कोइन। कोइ। संहारे। सहारे। काहू। भय। सथे। सथ्थैं। सथै। जाय कर। करि। देवे। देव। तथ्ये। तथै। लछिमी। सोचै ईसो। रूप। गोविंद। कबहून। कबहुन। ईसो। तेज। कबहून। देष्यो। दिष्यो। जोति।

अबै आइ प्रह्लाद जो होइ ठाढौ। जिनं हेत कीनौं इसौ रूप गाढौ॥१९५॥
इहै बत्त ब्रंह्मादि के चित्त आई। सुतौ जाइ प्रह्लाद कौं कै सुनाई॥

छं० ॥ १९६ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

दूहा ॥ सुनत वचन प्रहलाद गय। श्री नरसिंह के पास॥
स्तुति जुति सों ठाढौ रह्यौ। फुऱ्यौ नही कछु सास॥ छं०॥१९७॥ रू०॥३७॥
सीस नाइ कर जोरि तब। रह्यौ सनमुख चाहि॥
क्रिपा दृष्टि देख्यौ हरी। भगत वछल प्रभु आहि॥ छं०॥१९८॥ रू०॥३८॥

वेली भुजंग ॥

क्रिपा दिष्ठ दिष्यौ सु ठट्ठौ निनारौ। सु तौ प्रान कै प्रान तें अत्ति प्यारौ॥
लयौ लाइ छाती धऱ्यौ जंघ कोसं। दियौ हथ्थ मथ्थं कियौ दूरि दोसं॥१९९॥
चुम्यौ मुष्ष नैनं प्रहलाद केरौ। जरा म्रत्यु भै दूर दोसं न नेरौ॥
भई बुधि न्त्रिमल महा सुद्ध वानी। तबै अस्तुतं कन प्रल्हाद ठानी॥२००॥

ताथे। विशेष्यो। विसिष्यौ। धरे। जेते। तितै तेते। सरब। सर्व्व। जानौ। जानै। लगें। बार। कहते। कहतें। ताथै। वषानु। वषानो। अत्रे। आस। आई। आय। प्रहलाद। जौ। हेई। ठढौ। ठंढौ। तिन। हेन। कीनौ। गढौ। इहि। इहैं। बत। चित। कै। सुढौ। जाय। प्रहलाद। कौ। कुं। काहिं। ककाहि। कह॥ * ※ इस रूपक की पहिली पंक्ति के खाली स्थान में हमारे पास की सब पुस्तकों में—"वंदे वरुन हारे"—यह अशुद्ध पाठ है। इस को शोधने को कोई प्रामाणिक आधार हम को अभी नहीं मिला और यही दशा अंत की पंक्ति, की भी है अतएव वह खाली प्रकाश कर दियी गई हैं कि विद्वान लोग विचार कर पाठ को निश्चय करें। हमारी सम्मति मे तो इन का पाठ हमारे पास की पुस्तकों से भी पुरानी पुस्तकों के मिलने पर ठीक २ शुधना संभवित है। इस की अंत की तुक भर का पाठ बूंदीवाली पुस्तक में—" सुनत प्रहलाद इह बात चल्यौं। रहै पछ ब्रह्मादि निज गौ इकलै";—सं० १७७० वाली में—"सुनिन हत्ति प्रहलाद इह बात चल्यौ॥ दहे पछ ब्रह्मादि निज गौ इकलौ";—सं० १८९९ वाली में—"सुनत हेत प्रहल्हाद इहै बात चल्यौ॥ रहे पछ ब्रह्मादि निज गौ इकल्ल्यौ";—और सं० १६४९ वाली में इस का पाठ संवत १७७० के सदृश ही है॥

३७–३८ पाठान्तर:—दोहा। सुनत।। प्रदल्द गौ। श्रीन्नसिंघ। श्रीनृसिंह। कै। युत। सौ। ठढौ। ठाढा। फुरयौ कुरयौ॥ शीश। नाई जोरि। सनमुख। चाहिं। क्रियादृष्ट। क्रिपादृष्ट। कियाद्रिष्टि। दिप्यौ। सही॥

३९ पाठान्तर:—छंद भुजंगी प्रयात्। द्राष्टि। दृष्टि। ढढो। ठढौ। ठठ्ठो। प्रान। कै। प्रान तै आति। पियारो। लाय। कौसं। थमथं। सथं। मन्थ। कीयौ। दौसे। चुम्पा। चुम्पो। सुष। नैंनं। नैनं। प्रहलाद। कैरो। मृत्य। दूरि। दौस। हौस। नैरौ। बूंदीवाली। में—भय भइ बुधि। निमल उत्रु ही अ। आय बोल महा सुद्ध बानी—निर्मल। चानी। तर्बे। अस्तुंत। अस्तुति।

अहो देव देवेस देवाधि देवं । तुही अलष अप्पार पावै न भेवं ॥
अभेदं अछेवं तुही सर्व वेदं । तुही सर्व विद्या विनोदं सुभेदं ॥ २०१ ॥
तुही ग्यान विग्यान सोग्यान कर्त्ता । तुही बुद्धि कर्त्ता तुही बुद्धि हर्त्ता ॥
तुही धरनि आकास है पौन पानी । तुहीं सर्व में एक अन्नेक बानी॥२०२॥
तुही जोति संसार सारं सरूपं । तुही अघ्घकालं अकालं अरूपं ॥
तुही कोटि सूरज्ज में तेज साजै । तुही चंद्रमा कोटि सीतं विराजै ॥२०३॥
तुही कोटि ब्रह्मा महादेव जेते । तुही कोटि कंदर्प लावण्य तेते ॥
तुही हेत संतोष आनंद कारी । तुही सोक संताप सर्वं प्रहारी ॥ २०४ ॥
तुही जोग जोगेस जोगी सु भोगी । तुही भेद अभ्भेद संदेस सोगी ॥
तुही मानवं देव दानं सिधानं । तुही कोटि ब्रह्मादि अंतस्समानं ॥ २०५ ॥
जिती थावरं जंगमं षांन चार्‍यौ । तिनी आप ही आप तें भेद धार्‍यौ ॥
करे जे गुसांई अगें रूप तेते । कहै ब्रन्नि को देव रिष् नाग जेते ॥२०६॥
कियौ मच्छ औतार पैलै अनूपं । गयौ बेद लै दैत्य साग्र अलूपं ॥
हते स्वामि संषासुरं बेद लीने । सुतौ आनि तत्काल ब्रह्मादि दीने॥२०७॥
महापिष्ठ के धार धारी धरत्ती । करी न्नंमलं कस्यपं रूप कत्ती ॥
वलौ वामनं पावनं कित्ति राजै । पगं नष्य अग्रं सु गंगा विराजै ॥२०८॥
सबं षंडि षिची सुतौ विप्र तामं । महापुण्य सम्क्र सकै फर्सरामं ॥
श्रियं राम रघ्वीर लीनौ वतारं । कियौ रावनं कुंभ कर्न सहारं ॥ २०९ ॥

अस्तुतिं करन । प्रहलाद । ठांनी । अहौ । दैव । दैवस । दैवाधि दैवं । तुहीं । अलष । अपार । पावे । भेवं । अछेद । अभैदं । सरव । वेदं । तुहीं । सरव । वीद्या । विनोदं । सु भेदं । तुंहीं । ग्यान । विग्यान । सोग्यान । करता । तुहीं । करता । तुहीं । बुधि । हरता । तुंहीं । हें । पौन । पानी । तुहीं । सरव । मे । ए । अनेक । वानी । तुंही । जौति । ज्योति । तौही तुहीं । अव-कालं । तुहीं । तौही कौटि । सुरज । सूरज । मे तेज । तौही । तुंही । कौटि । सीतल । तुंही । तौही । कौटि । व्रह्मा । महादेव । जैते । तुहीं । तौही । कौटि । कंदरप । लावन्य । तैते । तौही । शंतोप । तौही । तुहीं । सौक । शोक । सरवे । तौ ही । जौग । जोगेसं । भोगीसं । जोगी । तुहीं । तौही । भैद । अभैद । संदैस । रोगी । तौही । तुंही । दैव । दानव । तौही । तुंही । कौट्टि । व्रह्मादी । अंतर । समान । जिजी । पानि । च्यारौ । च्यारौं । तिती । आपतै आप हों । भैद । धार्‍यौ । करै । जै । अंगै । तै तै । कहै । वराने । कौ । रिपि । रिपं । जै तै । कीयौ । मछ । अवतार । पहिलै । अनुंपं । जे । दैत्यं । सागर । अलुंप । हनै । स्वामि । शंपासुरं । वैद । लीनै । सुतै । सुता । ततकाल । दीनै । महापिष्ट । कै । भार । धरनी । धरंती । नृमली । रूपकंती । रूपकती । वल्यं । वलि । वामन । किति । नष । सुरंग । सुरंगं । सर्वे । षड । पिषी । महापुन्य । सम । करि । सकै । पर्शरामं । फरसरामं । श्रीय । श्रीयं राम रघुवीर । अवतारं । क्रियौ । कियौं ।

वसुद्देव ग्रेहं गह्यो कृष्ण वासं। हनेदुष्ट सर्वं कियौ कंस नासं॥
करे जग्य लीयं धरा ध्रंम सुद्धं। प्रगट्यौ कलौ काल अवतार बुद्धं॥२१०॥
जुगं अंत सो सत्ति ह्वै हैं कलंकी। इहै बात सांची सदा देव अंकी॥
जिते सैल सुर्हेति सुर्पत्ति कीने॥तिते सेस गन्नेस जाऐं न चीने॥२११॥
सबै दुष्ट भंजे सु सेवक् उगारे। करे काम निज धाम नरहर पधारैं॥
छं० ॥ २१२ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

कवित्त ॥ पधारे निज धाम। काम सुर सेव किए सब॥
जुग जुग सब जन हेत। लिए अवतार तवहि तव॥
निकसे षंभ विदारि। हने हिरनंकुस दानव॥
प्रहलाद उद्धार। कियौ पूरन पद जाह्नव॥
श्री न्रसिँघदेव समरंत जन। कलि कलंक दुष्यन हरन॥
बलिरूप सरूप अनूप किय। श्रीन्रसिंघ तेरे सरन॥छं०॥२१३॥रू०॥४०॥

वामनावतार की कथा॥

दूहा॥ बहुत काल हरि सुष कियौ। सब देवादिक रिष्य॥
पाछै बलि प्रगट्यौ बली। किये सत्त जिन मष्य॥छं०॥२१४॥रू०॥४१।
तब इंद्रासन डग मग्यौ। जेम तुलाकौ डंड॥
सुर सुरपति आकंपि भय। जांहि कहां हम छंड॥छं०॥२१५॥रू०॥४२॥
जाइ जगाए श्रीपती। बलि आसुर अनपार॥
तब सु पधारे नरहरी। धरि वामन अवतार॥छं०॥२१६॥रू०॥४३॥

गन्नन। कुंभकरण। सहार। संहारं। वसुदेव। वसुदेव। गेह। गेहं। गृह्यौ। ग्रह्यौ। कृष्णावार्स। हनै। सरव। कीयौ। कंश। करै। ध्रम। बुद्धि। बुधं। जुग। सौ। साति। वे हैं। व्है हे। यहै। यहे। साची। दैव। जितें। जिते। शैलसुर। सुलसुर। है त। हे त। सुरपति। कीनें। तिनें। सैसं। गंनेस। जाअे। चिन्हे। चीन्हे। दुष्टं। भंजै। सैवक। उधारै। करै काम। धाम। पधारै॥

४० पाठान्तरः—पधारे। पधारै। धांम काम। सैव। कीए। युग। युग। हैत। लीए। वाहि तव। निकसै। हनै। हिरणंकिस। प्रहलादे। प्रहलादें। उधारि। कीयौ। बूंदीवाली। में-नरहसूदेव —सं० १७७० में—नरहेसु देख—दुषन। रुप। सरू। अनुप। श्रीनृसिंघ। तेरे। शरन॥

४१—४३ पाठान्तरः—बहत। सुषि। कीयौ। सम। ऋषि। रिषि। पाछे। पाछै। बली। वल। बुंदीवाली में—वरि कीए सित जित जिमन मख—कीए। सित। मष॥ ४१॥ इद्रासन। जैन। आकंप। जाहि। छांडि॥ ४२॥ जाय। पधारे। नरहीरी॥ ४३॥

कवित्त ॥ सवा लाष वर विप्र। दियौ इक इक प्रति दानं ॥
दुरद अयुत रथ अयुत। एक हज्जार के कानं ॥
दासि दास दुय सहस। चरचि आभूषण अंबर ॥
साठि सहस मन कनक। अवर बहु भंति अडंबर ॥
ऐसै कि जग्य पूरन करि। निंनानू बलि राय जब ॥
वामन सरूप धरि चंद कहि। अप पधारि गोविंद तब॥ छं०॥२१७॥ रू०॥४४॥

दूहा ॥ वलि लग्गौ जुध इन्द्र सम। सुर आसुर मन षेध ॥
साहस संकर विष्णु बर। षेद समव्वर वेध ॥ छं० ॥ २१८ ॥ रू० ॥ ४५॥

गीता मालची * ॥

लग्गेति षेधं वा नवेधं, इंद्र वज्जं सज्जयं। छुट्टंत तारं नंषि भारं, काम कामं कज्जयं॥
धमकंत धारं वार पारं, मार मारं मुष्षए। संधेति बानं कर कमानं, फान तानं नष्षए
॥२१९॥
विकसंत व्योमं सट्ठि गोमं, भिरे भोमं धुज्जए। देवकीनंदं अरि निकंदं, चले गंजन रज्जए॥
वलिराइ वढ्ढिय देव दढ्ढिय, इद्र कढ्ढिय आसुरे। मिलि तथ्थ सथ्थं लथ्थ वथ्थं पारि रथ्थं पासुरे॥२२०॥
देवता मारे घन संघारे, हार भारे बलि जुरं। डक्कंत डक्कं पारिधक्कं, हारि थक्कं चं पुरं॥
छुट्टंत पट्टं वान छुट्टं, तौन षुट्टं चच्चलं, । बलिराय जग्गं मान भग्गं, भिरे भग्गं अचलं॥
॥२२१॥

४४ पाठान्तरः—दानं। दोय। वांमन। धारिं ॥

* यह रूपक हमारे पास की पुस्तकों में से सं० १६४७ और सं० १७७० और बूंदीवाली में नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी हुई में है ॥

४५ पाठान्तरः—लगौ। जुद्ध। ओसूर। मनि। पैध। विष्ण। षैध। समर। वैध। समवर ॥

* इस रूपक के छंद के निर्णय को सहज में यों समझ लैना चाहिये कि जिस को इन दिनों हरिगीत छंद कहते है, वह यह है। उसके नामान्तर इस महाकाव्य के पाठान्तरो से विदित ही हैं तथापि The Revd. Joseph Van. S. Taylor B.A. साहब ने इस को गीय नाम से लिखा है। इस के चार चरण होते हैं , उनमें से प्रत्येक चरण में दो यति १६ + १२ और २८ मात्रा होती है, जिन में९+७+१२ पर विश्राम और ८ ताल होते हैं ॥

४६ पाठान्तरः—गीता। मालती धुर्य्यः। छंद गीतामालती। छंद माधुर्य्यः। छंद गीत माल्ती। लग्गेत। लगैत्त। पेद। पेंध। वान। वान। वैधं। इद्रवज्ज। सज्ञयं। छुटंत। तार। भार। काम। काम। धार। वारं। पार। मुषए। सधे। वांनं। नषरा। विहसंत। व्योम। सठि। गोम। भिरे। भोमं। देवकीनंद। चलै। रजए। बलिराय। बढिय। काटिय। देव। दाढिय। आसुरे। मिल्तिथ सथं लथवथं पारि रथं पासुरै। देवता। मारे। सघारे। भारै। युरं। जुर। डकहकनडक पारि धकंहारि थक तेपरं। थ्थक्कं। छुटनै पट्टं तौनपुटं वान छुट्टं ववलं। छटत पट्टं तौन पुट्टं वान छुट्टं चलं। बलिराय जंग मान भंग भिरेमरा अचलं। बलिराय जग्ग भिरे मग्गं अचलं। चौसठि। जोग।

चौसट्ठि जोगं करे भोगं, देव सोगं दष्षए। रुड्डंत भुंडं मुंडि सुंडं हार रुंडं रष्षए ॥
लग्गंत वानं भानछानं, इंद्र ढानं वाहए। भूमी भजानं गरि गुमानं, राहभानं दाहए॥ ॥२२२॥
बलिराइ अग्गै भूमि मग्गै, भूमिषग्गै पारनं। वरदान रट्टे वेद पट्टे, कालकट्टे कारनं॥
वामनं रूपं धारि धूपं, अैस नूपं इलमझं। हुंकार सद्दं कियं नद्दं, वेद वद्दं संमझं॥ ॥२२३॥
धोमंतलग्गं त्रेवदग्गं कियंजग्गं कारनं। दिसिदिसिनदौरं कियं सोरं पौरिपौरं धारनं॥
नषसिष्षभोरं कथ्थियथोरं, कालकोरं कलकरी। आहुट्ठपेंडं भोमषंडं छोरिछंडं डरवरी॥ ॥ २२४ ॥
बलिदौरि आयो इंद्रभायौ, वेदगायो वच्छयं। मुहमंगिदानं तियपुरानं, मंडिभानं लच्छयं॥
बाजिचवायं देवगायं, बलिसुरायं दिद्धयं। आहुट्ठपग्गं दीनमग्गं, भीरभग्गं सिद्धयं॥ ॥२२५॥
नाषंत बानं गंग तानं, राह भानं रुक्कयं। चालंत धारं सुक्कसारं, रुक्कधारं सुक्कयं॥
ढेलंतझारी बारपारी, चष्षचारो मझ्झयं। बलिराइ अग्गं भूमिमग्गं, वलसुजग्गं भज्जयं ॥२२६॥
पातालपग्गं दानमग्गं, सीसस्वग्गं सज्जयं। भरिपाउभारं धरनधारं, पगउभारं मग्गयं॥
असुरानभज्जं बलियगज्जं, पीठसज्जं अग्गयं। चपंतपीठं दाढदीठं, दैतरूठ तापयं ॥२२७॥
* बंधंन बद्धं बरष अद्धं, देव किद्धं सारयं। धर पिट्ठनट्ठं मारि मुट्ठं स्वग्ग दिट्ठं पारयं॥
रहिअट्ठपष्षं साषिलष्षं, धाररष्षं धारयं। चप्पौपयानं नहींकालं, राजभालं भालयं॥२२८॥
तुट्ठं सुनाथं रष्षिनाथं, सब्बसाथंपालयं। असुरानभग्गं षेलषग्गं, इंद्र स्वग्गं वासयं॥
वामन्न रूपं कला अनुपं, बलिय कूपं चासयं ॥ छं० ॥ २२९ ॥ रू० ॥ ४६॥

कैर। भौग। दैव। सौंग। दषए। रुंडंत। भुंडं। मुडि। सुंडि। सुड। रूड। रषए। लगंन। वान। भान। छानं। द्रढानं। वाहए। गुमान। भान। दाह। दाहये। वालिराय। आगै। अंग्रे। भुमि। मृगें। मग्रें। मुमि। षगें। षग्गें। गारनं। दरवान। रटै। वैद। पढै। काल कटे। वामना। रूप। नुपं। इलमझं। हुंकारणदं। शद्दं। कीयं। कीय। सदं। नदं। वैद। वद। वदं। मसमझं। धोमंत। लगं। त्रैवदगं। त्रेवदग। कीय। जगं। षगं। कारणं। दौर। कीय। सौरं। सिष। भार। कथि। थैार। काल कौरं। आहुंठ। प्राहुठ। पिंड। भौम। षंड। छौरि। छंड। परवरी। वलिदौरि आयौ इद्र भयौ वछयं तिथ। पुरान। माझि। लछयं। वय। दिठयं। आहुंठ। आहुठ। पेंडं। मंग। भगं। सद्धयं। नाषंत तान। गंगबान। भानं। रुकयं। रूकयं। बलंत। सुकतारं। श्रुक्कसारं। रुक। मुकयं। ठेलंन। चष। मझयं। वलिराय। अंग। भुमि। मंग। मगं। वालि। जिंग। जगं। भजयं। पगं। दान। मगं। श्रग श्रृगं। सजयं। धरनं। मगयं। असुराण। भजं। वलीय। ंज्जं। गजं। पीर। सजं। श्रगयं। श्रृगयं। चपंत। दाव। दाड। रूपठं। रुठं। पारयं। *यह तुकसं० १८५९ की लिखी पुस्तक मे तो है अन्य किसी में नहीं है। आछे। पष। संषिन। सष्षं। रष। चप्पौ। पयालं। नही। नहींय। तुसं। सनायं। राषि। अव। भगं भग। पंग। षगं। अग श्रृगं। वामनं। रूप। नुपं। नूपं। अनूपं। वलीय॥

साटक ॥ नारद्दं कहि जाय विण्णु पुरयं, स्यामं छले वायकं ।
जग्यं फल उतपन्न दीन वर्यं, पाताल हरनं सदा ॥
वंभावलि बलि चीय पास लष्मी, पारष्पित्र्याने हरी ।
चौकी बंधि चौमास पास सरितं, पद्मारनं सत्तलं॥छं०॥२३०॥रू०॥४७॥*

परशुरामावतार की कथा ॥

दूहा ॥ षिति षित्री अति प्रबल हुअ । महामत्त असरार ॥
ताहि हतन षिति दुज दियन। परसराम अवतार ॥छं०॥२३१॥रू०॥४८॥
दुय पुचिय राजन सुपति । व्याही षिचो दान ॥
जमदग्निह रिषरेनिका परिनट्ठिय अरि पान ॥छं०॥२३२॥रू०॥४९॥

कवित्त ॥ अनुकंपा श्रुत सुबर । दिष्ठ षिचीय अरज्जन ॥
रेनुक रिष जमदग्न । षिचि सहसार्जुन षप्पन ॥
सहस भुजा सिर इक्क । सरित मन हथ्थ सुबाहै ॥
नव षंडन उग्रहै । लोग सहसं तन दाहै ॥
जमदगनि सुतन दुज धर दियन । फरसराम अवतार धर ॥
षिचियन मारि इंदह वरिय । करी टूक अज सहस कर ॥
छं० ॥ २३३ ॥ रू० ॥ ५० ॥

भुजंगी ॥ पुची दोइ राजं सुराजं विचारी। इकं रूप सारं बियं चचुनारी ॥
दई सैस भुज्जं अनुक्कंप ताहं। बियं जम्मदग्गं सुरेनक्क व्याहं॥ २३४ ॥

---

४७ पाठान्तरः—वरयं । लषिमी ॥

* यह रूप हमारे पास की सं० १८९९ की लिखी पुस्तक के सिवाय और किसी मे नहीं हैं ॥

४८—४९ पाठान्तरः—छिति । प्रबलं । हुअं । हुय । हुयं । महामत । हनन । छिति । परसरांम । परासिराम ॥ ४८ ॥ दोय पुत्रि । पुत्री । षत्री । दान । जमदग्नह । रेणका । परिनिहिय । परनठय । अरिपांन ॥

५० पाठान्तरः—अनुंकपा । सवर । षित्रि । षित्री । अरयुन । अरजुन । रैनक । रेणुक । यमदग्न । षित्री । सहस्रार्जुन । सहसारजुन । षपन । इक । हथ । सुवाहै । लोग । नन । यमदगनि । जिमदगनि । दीयन । फरसराम । अवतारि । धरि । करि । टुक । अजसकर ॥

५१ पाठान्तरः—दोइ । दौइ । राज । सु राज । इक । सरसं । बीयं । चत्रुनारि । चतुरनारि । दइ । सहस । भुजं । सु अनुकंप । सु अनंकंप । बीयं । जमदग्नं । सुरेनक । सुरेनक ।

ग्रहं बंधिरन् मभ्झ रेनक्क राषै । मनं मभ्झ बिम्रं मरिष्यं सु दाषै ॥
तनं जानि त्रै लोक आरुन्न बढ्ढी । भरे अंब वस्त्रं रिषं पास ठढ्ढी ॥२३५॥
ब्रषं अट्ठदस्सं बनव्वास रह्यं । करुन्ना मुषं मझ्झ षचीन कह्यं ॥
गई तट्ट सम्मुद्द सथ्थें सु भद्दं । मथं अंनु कंपं असूरान थद्दं ॥२३६॥
धरंनीं चकड्डोल असमान चल्ली । मिले सथ्थ सुर्यान धर्यान हल्ली ॥
गहंरं दुरंदान भद्रान मद्दी । भिली साइरं जानि निव्वान नद्दी॥२३७॥
पुरं तीन दर्दीन मग्गं अमग्गं । नहीनं चिह्नं लोग तिन् सम्म षग्गं॥
छं० ॥ २३८ ॥ रू० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ सत षोहनि पानन सहस । रत इथ्थी सत लष्य ॥
धवल दुरद सत लष्य भर । सत लष अस्सित पष्य ॥छं०॥२३९॥रू०॥५२॥
मनहु क्रूर षिची मरद । पन अप्पन प्रति पार ॥
मनहु सूर ससि डरन डर । भर षिची भर भार ॥छं०॥२४०॥रू०॥५३॥
पुज्जि आव षिचीन रन । उप्पन्नो रिषि राज ॥
फरसी दीनो विष्णु पुर । कलि ब्रह्म स्तुति काज ॥छं०॥२४१॥रू०॥५४॥

भुजंगी ॥ चली अंनुकंपं सथं सिषन सिष्यं । धरीयं मनं मभ्झ पत्नी सुरुष्यं॥
भरी नेह अंबं तिनं वस्त्र भारी । डरी मन्न मभ्झा ग्रहं इष्य नारी ॥
२४२ ॥

ग्रिहं । बधि । रिन । मझ । रेनक । रैनक । मझ । मरिषं । जांनि । त्रयलोक । अरुनक । अरुनंत । बढी । भरै । अंबं । ठठढी । वरष । बरष । वरषं । अठदस । वनवास । रहि । रहिय । करुनं । सुषं । मझ । षित्रीन । कहीयं । कहियं । जाई । जाइ । तट । समुद । समुद्द । सैथ । सथें । सथ्थै । सथ । अनुकंप । अनुकप । असुरान । असुरान । धरनि । धरनी । धरंनी । चकडोल । चक्रडोल । असमान । वली । मिलै । सथ । सुरथांन । धरथान । हली । गहर । गहंर । दुर दान । मदी । भिलै । सायरं । जांविनिनिवाननदी । जांनि । निवान । नदी । पुर । दरद्दीन । मग । मगं । अमगं । अमंग । नहिन । नहिन् । नहिनं । त्रहुं । लैग । तिन । समन । षंग । षगं ॥

९२—९४ पाठान्तरः—सत्त । पौहुनि । षोहनी । पानन । हथीं । सित । लष । सित । लष । मित । हसत । हसित । परव । परद । परष ॥ ९२ ॥ मनहुं । अपन । मनहुं । सुर । शशि । षित्री ॥ ९३ ॥ पुजि । पूजि । उपंनौ । ब्रह्मास्तुति ॥ ९४ ॥

९५ पाठान्तरः—भुजंगप्रयात । चलिय । अनुकंप । सथ सिषन । सिषं । धरीय । धरिय । मन । मझ । यत्री सरूपं । सरूपं । भरीय । नह । अंब । अब । तिन । डरपी । भरिय । डरिय । डरपि । मन । म्झ । मझझ । ग्रह । इषि । इष । आइ । हथ । कर । जैार । जोरि । मुह । मैारि । कहियं । कहीय । भरिय । भरीय । नह । नीर । मन । रहिय । रहियं । रहीय । रिषि । रिष्षि । मन ।

अई हथ्थ हथ्थ जोरी मुहं मोरि कव्यं । भरी नेह नीरं मनं पीर रव्यं ॥
रिषी मन्न मैहल्ल भोजन्न कज्जी । किधे दस्स ब्रष्षं सु आगंम सज्जी ॥२४३॥
अए रिष्षि थानं सु डेरा दिवानं । जनौं चंद्रि नभ्भं प्रगट्टीय थानं ॥
दुसंकन्न झुंडं किय झुंडझुंडं । जु सोभीय षंभं इभं इष्प सुंडं ॥ २४४ ॥
दई बंब नीसान बौ बज्जि भेरी । मनों इंद्र इंद्रासनं धुज्जि हेरी ॥
स्मरीयं रिषं धेन कैलास थानं । किधों बिट्टियं गज्ज गाहं सुनानं ॥ २४५ ॥
जु आतिथ्थ आकर्षनं धेन आई । सुरं आसुरं नाग मझ्झैं कि भाई ॥
तबै आनि तुट्टीं मझ्झै थान थायं । जिहंनं जु जो भाव भोइन्न भायं ॥
२४६ ॥

तबै षोहनी अठ्ठ भोयन्न भष्षी । कहां पाक सासंन आतंक दिष्षीं ॥
तुरत्तं भगंनीन चिंता चितानी । इतं पुज्जिबै कौंन अंनं रु पानी ॥२४७॥
दिषीयं अनूकंप धेनं सु दुझ्झी । कही राज अग्गै सु भोजंन गुझ्झी ॥
मुषं दैत बंकं सुरं संक साझ्झै । दिषं नैन लै चित्त गातन्न दाझ्झै ॥२४८॥
करौ कंक अन संक लै चल्ल बच्छी । किधों दौरि षिंची सुरं धेन गच्छी ॥
परे रुंड मुंडं सुरं सब्बमारे । जितैं लात मारे तितै सर्व तारे ॥२४९॥
तिनं लोम लोमं प्रगट्टी दहानं । मुषं मुग्गलं पुछ्छ पछ्छार भानं ॥
षुरं षुप्परं रासि भं सिंग सिद्धं । लगे लेष आए लिनं मुत्ति लिद्धं ॥२५०॥
कियं पुच्छ ता माय धेनं दहानं । सुनै बान षिंची धरे पिट्ट पानं ॥

महल । महल्ल । भोजन । भौजंन । कजी । किद्धि । किद्ध । किव । दस । बरष । आगम ।
आगंम । सजी । आई । आए । रिषि । रषि । थांनं । डैरा । जनूं । जनौं । चदरं । बद्दरं । नभ ।
नभ्भ । प्रगटीय । दुल्य कनक । दुसंकन । दुल्य कनक । झुंड । किता । जनु । सोभियं । सोभीयं ।
सोभिय । पंन । इम । इप । सुंड । दइ । तीसान । बहु । भेरी । मनौ । इन्द्रासणं । हैरी ।
समरीयं । समरियं । धैन । थानं । किधूं । किधु । किधुं । विटीयं । विटिय । गज । गाह । अतीत ।
अतिथ्थ । आकरषन । आकर्पन । धैनें । सुर । असुर । मझै । मझे । आनि । कुट्टी । त्रुट्टी । त्रुठी ।
मझे । ठायं । जौ जिहिन भाव भौइन भायं भोइन । जे । पैहनी । अठ । भौजंन । भषी ।
कहर । दिपी । त्रुरत । तुरत । ग्नीन । भग्नान । भग्नीन । विता । नितानी । ईत । पुज्जव । पुजवै ।
पुज्जिवै । कोंन । कौंन । अन । अनं । आन । चितानि । पानी । पानी । दिषि । दिपी । दिष्पि ।
दिप्पी । अनुकंप । वैन । सुदुझी । सुदझी । करी । अग्रे । भोजनं । गुझी । देत मुष । दिष नै
चित गातनं दाझै । दिष नें चित गानं न दाझै । दिप नैन चित्त गातं न दाझ । करों । करौ ।
अननंक । चलौं । वलो चलैं । वछी । बछी । किवौ । दारि । गछी । परैं । रुड । रुड । मुंड ।
मुड । सुर । सब । मोरे । जिनें । पान मारे । लौम । संगैम । प्रगटी । दहनं । दहानं । मुष ।
मुगलं । मुंगल्ल । पुछ । परछाय । परठाय । भान । पर । पुपरं । सींग सींग । सिंग । लगै लग ।
लप । आरा मुक्ति । लद्ध । कीयं । तौ । तो । ते । वेन । दमहनं । दमन । सुनें । बान । कान ।
कान । धरें । पिट । पानं । मनों । मनौ । मनो तें तै । किवो । किवो । चल्लियं । व बहु ।

मनौं भंजि कैलास ते आनि धेनं। किधौं चल्लियं राज वौ उड्डि रेनं ॥२५१॥
मनं रिष्य आपन्न तापन्न तापं। किधौं पुत्र पारथ्थ रेनंक कापं ॥
मनं पुत्तनं काज आसिष्य वष्षं। कियं पुत्र वृष्षं दियं आप रिष्षं॥२५२॥
तबै फर्सरामं फरस्सी उभारी। कियं रिष्य कामं सुमत्तं सुमारी ॥
भयौ पुत्र तंमंगि जौं दिड्ड मातं। किधां पावनं पाइ दोई सभ्रातं॥२५३॥
करी पैज सैसार्जुनं काम धेनं। चल्यौ रामफर्सौं धरै गज्जि गेनं* ॥
कहां जाइ सैसार्जुनं मुझ्झ अग्गं।*चव्यौ राम रिष्यं पयं लग्गि मग्गं॥२५४
दियौ रिष्य बरदान जा जुद्ध कज्जं। जवै दिप्पियं षित्रियं फर्स भज्जं॥
मनों अर्क वारं मधं अग्गि लग्गं। भयौ दिठ्ठ सैसार्जुनं भीर भग्गं॥
छं० ॥ २५५ ॥ रू० ॥ ५५ ॥

दूहा ॥ फरसराम फरसी ग्रही। लग्यौ षत्रियन काल ॥
हुकम रिष्य दाहन चल्यौ। जगि जोगिनि विकराल ॥
छं० ॥ २५६ ॥ रू० ॥ ५६ ॥

त्रिभंगी ॥ जगि जोगिनि कालं, ईस सभालं किन्नी चालं, रुंडालं।
मिलि भैरव भूतं, देविय दूतं, चष्ष सरूतं, अंतालं ॥
मिलि फरसं रामं, करुना कामं, भामनि भामं, सुर इंदं।
धर धुज्जै गैनं, उड्डिय रैनं, जग्गिय नैनं, जोगिंदं ॥ २५७ ॥

उाड। रैनं मर्नो। मनां। मन। रिषि। आंपं। न ताष। क्रिधों। पारथ। रैनक। कायं। मनो। मनौ। पुत्र नह। आसिप। आशिष। वाषं। विषं। वषं। कीयं। वृंष। वृषे। दीय। रिपं। रिषं। फरसरामं। फरसराम। फरसी। रिपि। सुमत। सुमातं। तमंगि। तंमागि। जत्र। किन्नो। क्रिधौं। पावन। दौइ। दोइ। सहस्रार्जुनं। सहसारजुन। कांमवेनं। राम। फरसी। धरे। गजि। गेन। गैन। गैनं। जाय। सहसार्जुनं। सहसार्ज्जुनं। सहस्रार्जुनं। मुष। अग्रं। * यह दोनों बूंदीवाली पुस्तक में नहीं है। रिषं। लगि। मग्र। सगं। रिषि। वरदान। काजं। जंत्रै। जत्रइ। दिपियं। षत्रियं। फरस। भज्ज। भजं। मनो। मनौ। अरक। अर्क्क। अगि। लग्रं। लग्यं। दिद। दिद्द। सहसारज्जुन। सहसाज्जुनं। भगं॥

५६ पाठान्तर—दोहा। फरसराम। गृही। पित्रियन। षित्रीयन। रिषि। जग। युगिनि जोगिन॥

५७ पाठान्तर :—छंदत्रिभंगी। जुगिन। काल ईश। संभालं। किन्ना। रुडालं। रुंडाली। भिल। भेख। भुतं। भुत। देवीय। द्दत। चंप। नरूतं। अंताल। फरसरामं। फरसराम। करुना। काम। भामिनि। इंद। धुजे गे। गैनं। उडीय। रेन। जगीय। नेंनं। जोगिदं। राम। लगिय।

परि आयौ रामं, लग्गिय आमं, षच्चिय ठामं, नह लङ्घं ।
परि मोटन छोटं, दानव दोटं, जुग्गनि जोटं, लगि जुद्धं ॥
थरथरि थिर थानं, रीठ सुवानं, छाड्य भानं, गैनानं ।
करि षित्री अंतं, मंडिय पंतं, पंगुर जंतं, हं हानं ॥ २५८ ॥
बरबान न लग्गै, भीर न भग्गै, फरसी बग्गै, कर भानं ।
अवतार अलष्यं, भामिन भष्यं, दैतन दष्यं, ब्रह्मानं ॥
करि रूप कुरूपं, जुद्ध मजूपं, पुत्र अनूपं, जमदग्नं । *
न्रत्तत अनलष्यै, आप अलष्यै, दानव दष्यै, जम मग्नं ॥ २५९ ॥
गहि ग्रिद्धन गाला, किद्धा चाला, रिषि रंढाला, रिन कालं ।
परि कूक सु कूकं, डक्किन ढूकं, गिद्ध गहूकं अंतालं ॥
सुर छाड्य भानं, अरजुन बानं, सहसभुजानं, गंजानं ।
मनु बद्दर चंदं, हथ्थ जुगिंदं, कीधा फंदं, दंतानं ॥ २६० ॥
परि लोय अलोयं, सथ्थन सथ्थं, भरि भरि बथ्थं, भंजानं ।
षिसि षोहनि अट्ठं, मारक नट्ठं, ता रस तट्ठं, धुकि धानं ॥
भिरि भुज भंजानं, दैतलजानं, फरसिय पानं, रन मानं ।
परि अर्जुन पानं, षिसीय षांनं, नारद ग्यानं, विजयानं ॥ २६१ ॥
अवतार सु दिट्ठं, षिच्चिय नट्ठं जोगिनि सट्ठं, नाषिचं ।
परि फूल सुरानं, मारि षिचानं' चंद बषानं, गाविचं ॥
॥ छं० † ॥ २६२ ॥ रू० ॥ ५७ ॥

जाम । पित्रिय । छौटं । दौटं । लंगि । थुद्धं । थर । थानं । सुनं । गैनागं । पित्रि पित्रयी दंदं । मंडीयं । जंत । बान । लगै । भगै । वगै। भान । अलषं । भषं दैत्यन । दषं । ब्रह्मांनं । करूपं ।
* बूंदीवाली में पाठ—करि रूप करूपं पुत्र अनुप आपस सरूप जमदग्नं—सं० १६४७ और १७७० में—करि रूप कुरूपं पुत्र अनूपं जमदग्नं । नूतत । नृतत । अनुलषै । अलषै । दषै । यमदग्नं । जमदग्नं । प्रह । गिद्धन । गिद्धनि । किवा । वाला । रिषं । रिष्प । रंढालं । रन कल । परिक्रम । कसकु । सक्कं । डकिन । ढुक । गहुक । भान । अरयुन । अर्ज्जुन । वान । भुजानं । मनौं मानां । वर । रव । हय । युगिंद । किंधा । फदं । लौयि । लोयि । अलौय । अलोय । सथन सथ । सथं । अलोथन सथ । पिजि । पौहनि । अठं । नारक । नठं । तामर तठं । धुकि । वारं । नंजान । जावं । फरसी । जान । जानं । मान । अरजुनं । अज्जुन । पिसिय । ग्यानं । दिट्ट । त्रीपनतं । पित्रीय । नठं । जग्गिन । सठं । पिनानं । वपान ॥

† इस छन्द की प्रत्येक तुक में ३२ मात्रा और यति १०+८+८+६=३२ और ताल ८ होते है ॥

कवित्त ॥ सहस भुजा सिर इक्क । नाम अर्जुन घन सज्जिय ॥
मुर अठ षोहनि मरदि । करे सुर अप्पन कज्जिय ॥
भरि रुद्धि षप्र जुगनीय । ईस मुंडन भर बथ्थिय ॥
पलचर रुधि चर पूरि । सक्क करि कारज सथ्थिय ॥
दिय दान पानि पृथिवी दुजन । करे रुधिर कुंडन त्रपन ॥
सुर नरन नाग कित्तिय उचरि । फरसराम पित्रिय षपन ॥
छं० ॥ २६३ ॥ रू० ॥ ५८ ॥

रामावतार की कथा ॥

दूहा ॥ फरसराम छिति पति हते । छिति अप्पी निज वंस ॥
रघुवंसी दसरथ्थ घर । श्रीरघुपति अवतंस ॥ छं० ॥ २६४ ॥ रू० ॥ ५९ ॥
रघुवंसन राषिस रमन । भयौराम अवतार ॥
वेद भ्रात दसरथ सुतन । नयर अजुध्यासार ॥ छं० ॥ २६५ ॥ रू० ॥ ६० ॥
भये राम लषिमन सुबर । भरथ सत्रु घनभ्रात ॥
अरि रावन रष्षस हरिय । तिन बन लिष्षिय तात ॥ छं० ॥ २६६ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

कवित्त ॥ तरुनि नाम तारिका । ग्यांन हरि परसीरामं ॥
वरि सत्ती धानुष्ष । किए सब सुभ्भह कामं ॥
केकइयै बर मंगि । राम बन भरत सुराजं ॥
तब दसरथ दुष कीन । भयौ धुर काज अकाजं ॥
दसरथ्थ पाइ परसे उभय । पंच बटी बंधी कुटिय ॥
कहि चंद छंद परबंध करि । लंक कंक जिहि बिधि जुटिय ॥
छं० ॥ २६७ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

५८ पाठान्तरः—इक । नाम । अरयुन । अर्ज्जुन । सजिय । षौहनि । मरद । करै । सुरै । वजिय । रुधिर । युगिनिय । जोगिनिय । इस मुंडम । बथिय । पलचर । रुधिवर । सक । कारिज । सथिय । दीय । दान । पानि । प्रिथवी । करि कुंडन रुधिर सु त्रपन । नग । कित्तीय । पित्रीय ॥

५९–६१ पाठान्तरः—फरसराम । हतै । अपी । भिज । दसरथ ॥ ५९ ॥ राषि । रवन । राम । श्रीराम । वैद । दसरथं । सुतंन । अयौध्या ॥ ६० ॥ भयै । भयौ । राम । लछिमन । लछमन । भरत । शत्रुघन । रषमहरिय । वन लषिय । लिषय ॥ ६१ ॥

६२–६४ पाठान्तरः—नाम । ग्यंनं । परसीराम । बरी सती । धानुष । कीए । सुभह । केकइय । कैकइयें । राम । भत । दुषि । किन दसरथ । पाय । व । बंटी पटबंध । जिहि ।

सूपनषा राषसी। रहै बन मक्कर ढाली॥
रूप नषष चष धुंम। रंग अवनं तन काली॥
नाक वक्र नष तिष्ष। जाइ षरदूषन दष्षिय॥
दौरि दौरि धरि ढौरि। राम सब राषिस भष्षिय॥
हरि सीत नीत रावन गयौ। भयौ चित्त राषिस हरन॥
कहि पवन पूत दूतह चल्लिय। सुर सुकाज साईं करन॥
छं०॥ २६८॥ रू०॥ ६३॥

गयौ लंक हनुएस। भ्रमत सुधि सीता पाइय॥
घन उपवन संघरिय। धरे मन राम दुहाइय॥
वाय चढ्यौ प्राकार। दसन जुद्दह दनु भष्षिय॥
अषै कुमारन हनिय। दौरि इंद्राजित दष्षिय॥
नषि पास रास द्रढ बंधयौ। कहि सुमरन अंबर धरौ॥
लग्गाय पुच्छ लंका जरिय। कनक पंक किन्नौ षरौ
छं०॥ २६९॥ रू०॥ ६४॥

दूहा॥ जल्लन जल्लिय रष्षस छरिय। धरिय बग्ग विपरीत॥
मनौं अर्क कमलनि दरस। सुनि रावन मन भीत॥
छं०॥ २७०॥ रू०॥ ६५॥

कवित्त॥ बंधि पाज सागरह। हनुअ अंगद सुग्रीवह॥
नील जंबु सु जटाल। बली राहुन अप जीवह॥
धाम धरनि वाराह। दाह धारन कटि मारन॥
स्वामि ध्रम्म धुर धवल। उड्डि असमान सुधारन॥

६२॥ सूर्यनषा। तुर्ध्यनषा। सूपनषा। राक्षसी। राषिसी। मध्य। रढाली सूपनपत्रपं धूम। सूप। नष। श्रवन। तिष। जाय। परदृषण। दखिय। घर। धर। राम। भषिय। हरि। त्रित पुत। सूतह। तद। चवलिय। सांई॥ ६३॥ गयौ हनू लंकेस। एसं। लंकेश। पाईय। संवरीय। सहरीय। वेर राम। दुहाइयं। दुहाईय। चाय वढीय प्रकार। दरसनयुहदनुभषिय॥ वाय चढीय प्रकार। जुदह। जुवह। भषिय। कुमारनि। हनिय। जिक्ष। जीत। सु। दषिय। नषि। दृढ। वधयौ। मरन। अवर। लगाय। पुछ। पूंछ। जारिय। किनौ। कीनो॥ ६४॥

६५ पाठान्तर :—जलनि। जरिय। रषिस। छरीय। धरीय। वग विपरीति। मनौं। अर्क। कमिलनि। दरासि। सुनी॥

६६—६९ पाठान्तर :—बंधि। सुज। बलि। रहुन। स्वामि। स्वामि। ध्रम। ध्रम। धुरग। धवलं। उडि। असमान। प्रकार। पुत। अवधुत। सर। धपन। वर॥ ६६॥ बंधि। चर वीर।

प्राकार धरनि दसकंध हरि। पवन पूत अधधूत भर ॥
सर * करन लंक स्थावन सती। यप्पन लंक बभीष बर ॥
छं० ॥ २७१ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

बंधि पाज बर बीर। नंषि साइर सु अष्ट कुल ॥
वय तरंग तपि तथ्य। भरे जनु अगस्ति (सु) † अंजुल।
सिर मच्छी ऊछरी। मनौं रचि मनि धर सेसं॥
पिट्ठ राम भर हनुअ। किन्न मन कारन भेसं॥
चक चकित नाथ दस बेद पुर। छोरि देव सेवन ग्रहय॥
घर लंक सदा यप्पन सुथिर। अगह गहन हनुमंत भय॥
छं० ॥ २७२ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

जब सु राम चढि लंक। तब सु मच्छी गिर तारिय॥
जब सु राम चढि लंक। तब सु पथ्थर जल धारिय॥
जब सु राम चढि लंक। तब सु चक चक्की चाहिय॥
जब सु राम चढि लंक। तब सु लंका पुर दाहिय॥
जब राम चढे दल बंनरन। भिरन राम रावन परिय॥
भिर कुंभ मेघ राषिस रसन। सीत काम कारन करिय॥
छं० ॥ २७३ ॥ रू० ॥ ६८ ॥ ॥

उतरि समुद्द अथाह। थाह लंका धुर धुज्जिय॥
चलिय सेन रघुवंस। जोर सामंत सु सज्जिय॥

सायर। कुल। कुलं। त्रिप तुरंत तिप तथ। भरे। अंजल। शिर। मच्छी। उवरी। मनों। मनौ। सैसं। शसं। पिठ। रांम। कीन। नैसं। चक्रित। वदनपुर। बदपुर। छौरि। देवन ग्रहय। गृहय। धर। थपन। अग्ग मग्ग। हूनमंत ॥ ६७ ॥ रामं। राम। मछी। गिरि। तारिय। तारीय। रांम। लिंक। पथर। धारीय। रांम। चकी। रांम। दाहीय। राम। चढे। वंदरन। रांम। परीय। सीन ॥ ६८ ॥ उत्तरि। समुद। धुज्जि। सैन। रघुवंस। जो। ससज्जिय। ससाजिय।

* इस शब्द का किसी पुस्तक मे सर और किमी में सरु पाठ है। मै इसका फारसी سر सब्द से हिन्दी का बनना नहीं समझता हूं किन्तु संस्कृत सरः = गतौ। गमने ॥ भेदके। भेदने ॥ अथवा Sk. सरु = Thin, Small, minute. Hence conquest, victory, triumph. के अर्थ में कवि का प्रयोग करना मानता हू। बहुत से संस्कृत और हिन्दी शब्द ऐसे २ हे कि जो उच्चारण और अर्थ में फारसी और अरवी भाषाओं के शब्दों से मिलते झुलते हुवे हे। क्या उनका अन्य देशीय भाषाओं से ही उत्पन्न होना स्वीकार करना परम प्रशंसनीय है ?। † अधिक पाठ ॥

लुट्टि लंक गढ घेरि । फेरि बभ्भीषन थप्पिय ॥
इंद्र जीत असि सज्जि । चढे रभ अप्पन जप्पिय ॥
परि सार धार परि बंनरन । मार मार उच्चरंत मुष ॥
चल चलिय सेन लषमन सधर । देव विभान सु मानि दुष ॥
छं० ॥ २७४ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ मेघ नाद नादन कर्यौ । धर्यौ लंक उर धाह ॥
छुट्टि लोग सब भोग तजि । जुट्ट जंग उछाह ॥ छं० ॥२७५॥ रू० ॥७०॥

विराज ॥ छुटे बान इंदं । घटा जादि भद्दं ॥ भिरे बान मानं । करंतं बषानं॥२७६॥
धरे ईस सीसं । किरे बानरीसं ॥ बकी थान थानं । जकी जोग मानं ॥ २७७ ॥
वहै रत्त धारा । छुटै भद्द भारा ॥ फिकारंत पक्कं । डकारंत डक्कं ॥ २७८ ॥
भये राम रीसं । मनौं काल दीसं ॥ धरा अंग बज्जै । परे रथ्थ भज्जै ॥२७९॥
भिरे भ्रात पारं । मनौं राम सारं ॥ हुई इंद्र जीतं । भए देव भीतं ॥२८०॥
करे रूप कोरं । सवैलोक सोरं ॥ * * । * * ॥ छं० ॥ २८१ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ धरनि धार धुक्कि धरनि । भिरन इंद्राजित सरभर ॥
मुक्कि बान रुक्कि भान । परिय सागरन पलच्चर ॥
जग्गि बान मोहनिय । परिय लषि मनं पथारिय ॥
परि षट दस सामंत । सार मोहनिय सुधारिय ॥
गजि इंद्र भद्द करि इंद्र रव । गयौ लंक गाढौ ग्रह्यौ ॥
रघुवंस सेन वानन पर्यौ । सार ब्रह्म मोहनि सह्यौ॥छं०॥२८२॥रू०॥७२॥

घेरि । बभीपन । वभीपन । थपिय । सजि । बंदरन । श्रुप । चालि सेन । लषिमन । पमन । देव । देवि । विमान । समान ॥ ६९ ॥

७० पाठान्तर —"धर्यौ लंक उर धाहु" के स्थान में सं० १७७० की पुस्तक में "लंक उरधाह" मात्र है । भोग । तिन । जुट्टे । उछह ॥

७१ पाठान्तर.—छंद विराज । छुट्टे । बान । जानि । भदं । भिरै । ब्रात । निग । इम । ईश । गेश । वकी । थांन । जोक । रत । छुट्टे । भद । फिकारंत । फकं । डकं । भय । राम । मनों । मनौ । बजे । परे । रथ । भजे । भिरे । भिरे । मनौ । मनों । राग । हुई । हुइ । इंद्र । देव । कोरं । सवे । सवे । लौक । सौर ॥

७२ पाठान्तर:—कवित । धरनिर । वरेन । धरन । इंद्रजीत । सरम्भर । मुक्कि । पान । भान । भानं । भानि । सागरह । पलचर । लगि । बान । मोहिनीय । लषिमनं । पथारीय । मोहनीय । सुधारीय । भद । वंश । सेन । वानन । मोहानि ॥

वपु नंषत षुप्परिय । किनन किन नाट कुरंगिय ॥
गनन गनन गय नंग । छलन छक्किय उच्छरंगिय ॥
सनन सोक भिल्लरिय । घनन धर धार पलक्किय ॥
गिलन डक्क डिल्लरिय । भनन भूभार भलक्किय ॥
धरनी धरीय वनरं रषिय । परिय पंति मोहन प्रवल्ल ॥
असुरान गंजि लंका नयह । इंद्रजीत जीतित अतुल्ल ॥
छं० ॥ २८३ ॥ रू० ॥ ७३ ॥

कवित्त ॥ फिरि सज्जिय रघुवंस । हनूगढ कोट उडायिय ॥
मरन छोरि मरजाद । इंद्र जीत म सुधि पाइय ॥
मंच होम रथ जग्य । सरन देवी सुध जापं ॥
लषिमन हनु सुग्रीव । लंकपति भीषन थापं ॥
आरूढि रथ्थ अप्पन अवर । धवर पत्ति द्वारह धरिय ॥
छर छरिय बान छकि छंछटिय । भरिय पच्च अभरन भरिय ॥
छं० ॥ २८४ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

धरनि तरनि आकास । वास रथ सासन रुक्किय ॥
दसन अंब लगि बान । धरनि वट साघन घुक्किय ।
कुकिय कंत बिन कोर । सोर जोरह चौसट्ठिय ॥
मंच जप्प सब भूल । करुन कारुन अन दिट्ठिय ॥
रथ च्यारि चक्क फिरि चक्क चव । बान छुट्टि लषमन वलिय ॥
करि कंक मंक आसुरनि डर । कहर बत्त ता दिन कलिय ॥
छं० ॥ २८५ ॥ रू० ॥ ७५ ॥

---

७३ पाठान्तरः—वत्रु । नंपन । कुरंगीय । छकिय । उछरगिय । सनत । सोक । भलरिय । भिलरिय । घलकिय । डक । डलरीय । डिलरिय । भलकिय । धरनि । धस्य । धरिय । वनरं । बनर । वनरापिय । परीय । मोहिन । असुरान । गाजि । इद्रजीति । जितयं । अतुलं ॥

७४ पाठान्तरः—सजीय । रघुवंस । हनु । कोट । उडाइय । मरण । मारन । छौरि । पाईय । होम । जांगी । देवी । लपमन । बभीषन । थांप । आरूढ । रथ । अधन । अपन । धवर । पति । धारइ । छरय । बान । भरय । अभर ॥

७५ पाठान्तर.—आकाश । रुकिय । दरसन । अव । बांन । घुकिय । बिन । कौरं । सौर । सौर । चौसटिय । जप । अव । भुलि । भूलि । करन । आनादीतेय । अनदिठिय । चक । वान । लषिमन । वत ॥

साइर सत सोषनह। बान दिनौ ता हथ्थं ॥
गुन औगुन संधियहि। कह्यौ तिन जीवन सथ्थं ॥
कुसुम दृष्टि सुर कीन। भयौ रावन तन भारी ॥
सकल सोक राषिसन। हनूं जब लंक प्रजारी ॥
जैजया सद्द जोगिन जपिय। मंदोदरि कीनौ रुदन ॥
लछिमन्न राम सीता सुग्रहि। तदिन लंक लग्गौ कुदिन ॥
छं० ॥ २८६ ॥ रू० ॥ ७६ ॥

बसि निद्रा अध बरष। धाम अंबर धर धुज्जिय ॥
गौंन गज्जि सुर सज्ज। षुधा बन चर बर पुज्जिय ॥
गौर मुष्य वपु स्याम। गिरन समनष्य अकारिय ॥
काल ग्राम नासाग्र। तार तारन तप धारिय ॥
मधि कुंड मुंड सर्गन बसै। सूर चंद संधन सषिय ॥
करि धूम नास नासत तपिय। अकल जोति कालन भषिय ॥
छं० ॥ २८७ ॥ रू० ॥ ७७ ॥

कवित्त ॥ भरत काल चलि सथ्थ। धाम धामंन अरु छद्दिय ॥
सहस जप्प भषनीय। मनह अचलं चल बद्दिय ॥
तिष्य नष्य अनुचार। झाल रसना झक झाइय ॥
करन काल बंदरन। धरे अग्या सिर नाइय ॥
उत्तरिय लंक असमान सिर। तरुन भार भारन तजिय ॥
करि कूह डक्क गिर बंदरन। भिरन राम लषमन भरिय ॥
छं० ॥ २८८ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

---

७६ पाठन्तरः—सायर। सौ। बान। दिनौ। दीनौ। हथं। अवगुन। तिन। सथं। कुशम। सौक। हनु। सवद। शवद। जुगिनी। योगिनि। मंदोवरि। किनौ। लषमन। सम। स्त्र। गृह। दित। लंगौ। लंक गौअं। दिन ॥

७७ पाठान्तरः—वाम। धुजिय। धुजिय। गैन। गैन। गौंन। गज। सज। नन। पुजिय। पुजय। मुष। स्याम। गिरण। समनृप। ज्ञाकारिय। अकारीय। ग्राम। तपि। धारीय। सग्गन। बनै। सधन। सषीय। धुम। धूंम। नास। तपिय। ज्योति। जौति। कल्न। भषीय ॥

७८ पाठान्तर.—सथ। धामन। छादिय। जप। अचल्लंचल। बादिय। तिष। नष। रसना। झाईय। झाईक। धरै। शिर। साईय। साइय। उतरीय। असमान। कुह। डक। गिरन्दर बरन। राम। लषमिन। भिरिय ॥

रिन रत्तौ कुम्भकन्न। पऱ्यौ भूषौ बैसन्नर ॥
धर बंदर धक धाह। दन्त कटि षड्ढे बन्नर ॥
पंप मध्य पलचरिय। नह्वौ लड्डे तिहि बारं ॥
सोपि सरित रत धार। पानि लै पिये अपारं * ॥
सा हंत सित्त बंदर सुघट *। गिरन धार उप्पर पऱ्यौ * ॥
रघुवंस नाम रावन कऱ्यौ *। करन फट्टि दाहन धऱ्यौ * ॥
छं० ॥ २८९ ॥ रू० ॥ ७९ ॥

परत भ्रात धर † धरनि पद्म अट्ठह दमि पालन ॥
जलु कि सद्द साइरन। आनि प्रथ्थी जर तारन ॥
परिभष्पन रष्पिसन। कुइक चीसन मुष सासन ॥
कर सुपिट्ठ (मस लिग्ग ❋) कमंध। भरत मुष इष्षिय भासन ॥
करि लंक कंक पंकन पलन। पलन राम हथ्थी दुतिय ॥
धर धरत नारि कंतन क्रसन। कूटि कूटि दारुन छतिय ॥
छं० ॥ २९० ॥ रू० ॥ ८० ॥

त्रिभंगी ॥ गढ लंककनन्दा, अग्गि जरंदा, धाह करंदा, भिलि जंदा ॥
कै जंघहिकंदा. सूपरकंदा, डेढकरंदा, मुष गंदा ॥
पल सव्वन षंदा, बघ्घ चवंदा, आप अनन्दा, +कुर जंदा+ ।
किलकी कूकंदा, माता मंदा. भारी भंदा, जारंदा ॥ २९१ ॥
परि कुंभ धरंदा, +बान चलंदा, राम कहंदा, मारंदा ।
घर रावन रुंदा, करै ति संदा. लष्षै जंदा, दीसंदा ॥

७९ पाठान्तरः—रतौ। कुंभक्रनः। भुषौ। वैसंनर। वंदर। षधे। पधे। भप। पलचरीय। नाहि। लवै। लघेति। सोषि। सरतर। पानि। ले पिए। पीथ। * ये तुकें सं० १७७० की पुस्तक में नहीं हैं। सित। उपर। करने ॥

८० पाठान्तरः—† धर शब्द सं० १७७० की पुस्तक में है ही नहीं। अठ। सह। सद। साईरनिः। आनि। प्रिथी। प्रथी। परिभषन। रषिसन। कौइक। कोइक। चीसनि। शासन। सुपिठ। ❋ "मसलिग" अथवा "मत्यलिग" अधिक पाठ मालूम होता है। कमध। भिरत। ईषिय। इषीय। लककं। कक। राम। हथीं। दुतीय। क्रमनं। कुटि। कुट्टि। छतीय ॥

८१ पाठान्तर.—छंद तिभंगी। अगि। के। जंवइकंदा। सुपरकं। सुपरकंदा। डेढकरंदा। सेव्रन। श्रवनं। वघ। +यह तुक तथा तुक के टुकड़े वूंदीवाली पुस्तक में नहीं है। आपनइदा। भद्दा। वान। वलंदा। राम। रुदा। रूंदा। करे। सद्दा। लषे। लष्षे। लषं। रावस। रूपं।

घन राषिस ह्ंदा, रूप अनन्दा, पिठ्ठ द्रगंदा, दाहंदा।
घन बान चलंदा, भान छदंदा, राम रवंदा, पारंदा ॥ २९२ ॥
भर रावन हंदा, रूप करंदा, तारन चंदा, जानंदा।
सुर वेद चवंदा, हूर फुलंदा, बाजत ह्ंदा, ईसंदा ॥
जनु कीर चलंदा, हाटे हंदा, तरबूजंदा, नाषंदा।
तट सागर हंदा, रावन ह्ंदा, रूप करंदा, रथ्थंदा ॥ २९३ ॥
तर कोर चवंदा, रावन हंदा, स्यार सुनंदा, उसरंदा।
कर लषिमन हंदा, बान चलंदा, रुंड परंदा, धारंदा ॥
परि पथ्थर ह्ंदा, बानर हंदा, द्रोन ग्रहंदा, नाषंदा।
पति लंक भगंदा, हनु आहंदा, नील निषंदा, फिरि जंदा ॥२९४॥
चक चूर करंदा, अश्व परंदा, राषिस मंदा, पाइंदा।
रथ इंद अनंदा, बान नषंदा, रथ्थ रहंदा, झारंदा ॥
नह ईस रहंदा, पूरा हंदा, विरदन बंदा, धायंदा।
रिपि देव हसंदा, राषिस रुंदा, बीस भुजंदा, ढाहंदा ॥ २९५ ॥
परि रावन मंदा, भीषन संदा, काज करंदा, रामंदा।
रचि कोट सुरंदा,* हाटक हंदा,† फूल अवंदा, माल्हंदा ॥
लै सीत चलंदा, लषिमन संदा, सागर वंदा, आनंदा ॥
छं० ॥ २९६ ॥ रू० ॥ ८१ ॥

भुजंगी ॥ किय षंड षंडं बली मुष्य चारं। महाबाहु बाहं बलं वेद धारं।
हनूमान हथ्थं संदेसं सुकथ्थं। धरै पिठ्ठ तोनं लछी वीर सथ्थं ॥
२९७ ॥

पिठ। दृगंधा। दृगदा। हदा। हाहंदा। वांन। छवंदा। अवंदा। नाम खंदा। तारन वंदा। वेद। हुर। बनजवृदा। इमदा। कीर वलदा। हाटै। तरवुजंदा। रावनं। रथंदा। कोर। दंदा। उमुंदा। कारि। लपमन। वान। रुड। पथर। वानग्हद। द्रोन। गृहंदा। चकचुर। पइंदा। वान नपंदा। रथ। झारंदा। इस। पुराहंदा। विरदन। रपि। देव। हमदा। रागिमं। वृदा। वीस भुजिदा। मदा। भीषन। सदा। रामंदा। रचि। रिचि। कोट्टि। मुरिंदा। हट्टक। फुलं। मालंदा। लै। चल्दा। सद्दा। सद्द † इन तुक के ये टुकड़े सं० १७७० वाली पुस्तक में नहीं हैं ॥

८२ पाठान्तरः—छद भुजंगी। कीय। पंड। मुप। वाहु। वेद। हनुमान। हथं। सदेसा। संन्दे। मुकथं। धरे। पिठ। तोनं। नयं। धनुखान। वृन। वरे। पानि। वर। चंमु। सो।

धनुर्बान सासं जरं त्त्न कारी। धरं पानि ग्रावं वरं पारि तारी।
चमू लंक सौ गड्ढ विंध्यौ बिहानं। धरं धार धुक्की करग्गे ग्रहानं॥२९८॥
कियं कोप कोपं धरं धार धोपं सिला बंधि सिंधं कुसं लूप लोपं।
रनं रावनं कज्ज आरज्ज काजं। बनी थप्पि थर थान दिन राज राजं॥ २९९॥
सुरं सूर मुष्पं वरं वाद वद्दं। महा मोह कोहं वरं जे अनन्दं॥
छं०॥ ३००॥ रू०॥ ८२॥

कवित्त॥ जनक सुता हरि दुष्ट। हरी लंका तन दावन॥
जीव जगत जगि छरन। हरन रिपु ग्रहन सु रावन॥
हरन रिद्ध नव निद्ध। सिद्धि हर सागर सिद्धिय॥
हरन पुच इंद्रजित। हरन भीषन ग्रह लिद्धिय॥
तिन हरिय सीत क्रत इह करिय। भरिय पच पलचर भषन॥
गढ जारि लंक दसकंध हनि। राम कित्ति चंदह चवन॥
छं०॥ ३०१॥ रू०॥ ८३॥

कृष्णावतार की कथा।

कवित्त॥ नमो देव देवाधि। नमो नाभाय कमल वर॥
नमो माल पंकज (प्रमां*) न। नमो वर कलल कमल कर॥
नमो नैंन वर कमल। नमो चित्तह अधिकारिय॥
नमो बिकट भंजनन (मितं†)। नमो संसार सुधारिय॥
नम नमो (स्तु‡) चंद नंदन नवल। नंद ग्रेह ब्रह्मंड गुर॥
दिष्यहि जु देव देवाधि तुहिँ। मुगति समप्पन तिनह उर॥
छं०॥ ३०२॥ रू०॥ ८४॥

गढ। विंध्यौ। विहाय। धुक्की। कर गे। करं गं ग्रैहानं। कीयं। कोप कोप। बंधि। सिंधं। कुशंलूप। लौपं। रणं। आरज। वनि। थपि। थान। सुर। मुपं। वंदं। कोह वर। जै। अनद॥

८३ पाठान्तरः—कवित। जीनन। छरन्। रिपुं। सू। हारिसा। ऋद्धि। रिद्धि। निद्धि। हरसागर। सिधियं। इद्रजित। इद्रजित। इंद्रजीति। हरछ। गृह। लद्धिय। हरीय। शीत। कृत। भरीय। पलचर। दसकंध। राम। चदह। तवन॥

८४ पाठान्तरः—नमौं। विर। नमौ। मल। पकज प्रमानं। * अधिक पाठ मालूम होता है। नमौ। नैन। नमौ। चित्तह। अधिकारीय। नमो। विकटि। भंजन निमित। † अधिक पाठ मालूम होता है। नमौ। सुधारीय। नमौ नमो चंद नंद नंदनाह। ‡ अधिक पाठ ज्ञात होता है। गेह। वृह मंड। ब्रह्मंड। दिपिहि। दिपहि। ज। गुरज। देव। त्रुहि। तुहि। मुग्गति। समपन॥

दूहा ॥ अति सुंदरि सुंदरतमह, सुंदरि सुभति सनेह ॥
सुंदरि त्रिभुवन पुरुष पहुँ, निज आवन तन ग्रेह ॥
छं० ॥ ३०३ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

पद्धरी ॥ जो कमलनाभि द्रिग कमल पानि। कोमल सु मधुर मधु मधुर बानि॥
दुति मेघ पीत अंमर सुनंद। धर धरनि धरत सिर मोर चंद ॥३०४॥
चौ वज्र पद्म धज अंकुसीय। गद संघ चक्र भ्रगु लत्त हीय ॥
सँग सरै दीह सिसु कर विवाल। आचिज्ज अछ्छ बियचरै बाल॥३०५॥
तुहि दिष्य ध्यान धरि बधु अकाम। व्रत करहि उमा पुज्जन सुभाम॥
छं० ॥ ३०६ ॥ रू० ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥ ससिर वाल तप करहि। कमल दझ्झय सु बदन अलि ॥
हेमवंत बन दहिग। दझ्झि जल्ल सुष सुष्य मिलि ॥
वर बसंत डुल्लि पत्र। चित्त डुल्लत अलि रप्पहि ॥
इक्क पाइ तप करहि। पवन चावद्दिसि भष्पहि ॥
वरषा रु सरद लग्गिय करद। मरद मैंन जग्गै सु तन ॥
सुग्गंधि दिव्य मिष्टह पवन । करहि सेव उमया सु मन ॥
छं० ॥ ३०७ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

सीत सु जल उष्णह सु (अग्ग*)। पवन दृप्पह घन झुल्लहि ॥
उमया उर उच्चार। सु डर गुर जन वर भुल्लहि ॥

---

८५ पाठान्तर.—दौहा । सुदर । सुंदर । सुभत । सनैह । सुदर । सुदर । त्रभुअन । पुरिप । पहु । पहुं । आवत । ग्रैह ॥

८६ पाठान्तर.—जौ । पानि । कौमॉल । मिष्ट वानि । दुती । मैव । अंवरसु । अंत्रिर । मौर-च्चंद । चौ वज्जयचदमधज अजसीय । नौ वर्ज । ध्वज । भृगु लत पीय । संग । संप । सिसि । करि विलाल । आविज्ज अर्वा बयचरै वाल । आचज । अत्र । त्रुहि । दिपि । ध्यान । तुर । अकाम । पुजन । सु भांन ॥

८७ पाठान्तरः—कवित्त । सिसिर । करहि । करहि । कमल । दझय । दझझइ । बदन । हेमवत । वन । दझि जल सुप मिलि । दझिझ । सुप सुप । वर । बसन । पत । चित । डुल्लत । रपहि । रपहि । इक । पाय । चावसि । भपहि । वरषा । लगिय । मयन । मैन । जंगे । सुगंधि । सुगंध । मिष्टान । पवन । मिष्टान पन । सैव ॥

८८ पाठान्तरः—सीतल । शीत । अगि । अग्नि । अग्ग । * अधिक पाठ है । द्रुपह । वन । झुल्लहि । हर । चार । रर । भुल्लहि । नंदुल । द्रुन । मिष्टान । पान । हर । मगे । मग्ने । हरनढ ।

दधि तंदुल घ्रत षीर। बहुत मिष्टान पान कर॥
हरि मग्गहि हर नछ्छ। करहि तलपत्त पत्त धर॥
स्नानं च जम्म भगिनी करहि। सुरति सेव कात्यायनिय॥
इह कहि रु क्रंन कुंडल करहि। गरथि माल पुहपै घनिय॥
छं० ॥ ३०८ ॥ रू० ॥ ८८ ॥

हनुफाल ॥ मुहि अप्पि भगवति कंन्ह। देवाधि देव सुनंन्ह।
अति सीय पुहप सुरंग। विनि पीन अंवर चंग॥ ३०९॥
घन मद्धि तडिता तेज। चमकंत दुति सम केज॥
बिय ब्रन्न उप्पम देषि। कंचन कसौटिय रेषि॥ ३१०॥
हरि धरन तुरसिय माल। घन पंति सुक्क विसाल॥
मंजरिय मुत्तिन माल। सुर चाप सोभ रसाल॥ ३११॥
मधु मधुर मिष्ट सुबानि। कल अम्रत सुम्रति जानि॥
ढिंग स्याम कमला लछ्छि। उप्पंम गुन कवि अछ्छि॥ ३१२॥
तरु स्याम तेज तमाल। चढि हेम वेलि विसाल॥
सिर मोर मुकुट जु स्याम। नचि मोर गिरवर ताम॥ ३१३॥
झलकंत कुंडल कान। कवि कहै उप्पम वान॥
बर अरक सोम प्रमान। सित पुर्निमा निस धान॥ ३१४॥
घन सघन सज्जल ताम। उठि इन्द्र चाप सु काम॥
बर बजति मुरलिय मुष्ष। संसार हरति सु दुष्ष॥ ३१५॥
इक पाइ तप कर न्याइ। हरि धरै अधर सु धाइ॥
हरि लियै अंकुस वज्ज। कविराज उप्पम सज्ज॥ ३१६॥

हरनछि। तलपत। पत। पन। त्रमु। जमु। सैव। कात्यायनीय। करहि। गरुय गरूअ। गरुय-पहुपें। धनीय॥

८९ पाठान्तरः—छंद हनूफाल। मुह। कहु। दैवाधिदैव। सुनन्ह। आति सीस। पहुंप। वनि। पीत। धन। माधि। तैज। कैज। उपम। दैपि कसौटीय। रैषि। त्रुरसी। तुरसी। घन पंत। सुक। सौच। बानि। अमृत। सुमृत। जानि। स्याम। लछि। उपंम। अछि। अछ। श्यांम। स्याम। तैज। माल।। हैम वैलि। मौर। मुकट। मुगट। यु। स्याम। सु स्यांम। नचि। तांन। कान। कहि कहै। वान। वान। सौम। प्रमांन। पुरानिमा। धाम। धांन। सजल। तांम। इद्र। काम। चर। वजति। मुरली। मुष। सु दुषु। स दुषु। पाय। करै। न्याय। लियैं। अंकुस। वज्ज। कविराय। ओपम। सज। वर। भुक्त। मत। करीय। हट्टक पाट।

बर भक्त मत्त करीव। तिन हटक पार नरीव॥
यौं पाइ धरि दृढ़ि भंति। ससि बीय बनि परि कंति॥ ३१७॥
हरि चरन कमल सु कोर। जनु मिलन कुमुदिन भोर॥
नष न्रमल कमल सु कंति। जनु उग्गि तार कपंति॥ ३१८॥
नटवत्त भेष त्रिभंग। दुति कोट करत अनंग॥
मुष कमल दधिकन स्याम। नम फुल्लि मालति काम॥ ३१९॥
सो इकंत अप्पहि मात। अधमान न्रिंमल्ल गात॥
छं० ॥ ३२० ॥ रू० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ च्यार घटी निसि सुन्दरी। प्रान पपत्ते थान॥
जल अंदोलित सो भई। उदै होन बर भान ॥छं०॥३२१॥रू०॥९०॥
कंस मेर चढि सोम बहु। सकल हरत रवि पुंब्ब॥
हंस माल भंजन सकल। सज्यौ चंद मनु सब्ब ॥छं०॥३२२॥रू०॥९१॥

चौपाई॥ गावति बिरति अचारे बालं। हेम मंत कंष्टं तन सालं॥
उरमा निसि रविनी रस जामं। हरि निरदोष निहारत कामं॥
छं० ॥ ३२३ ॥ रू० ॥ ९२ ॥

दूहा ॥ इंद उदंत सरद्द उद। मुद आनन्द अनंद॥
नंदन नंद सु वृंद ब्रज। विहसिय चंद सु चंद ॥छं०॥३२४॥रू०॥९३॥
नव रवनी सस्वर सु नित। स्तुति श्रुति रचि रुचि भेद॥
निरष निमेष विसेष विधि। असम सरन मन * षेद॥
छं० ॥ ३२५ ॥ रू० ॥ ९४ ॥

मरीय। हटक पाट। यों। पाय। ससी। कौर। जनु। मिलित। कुंमदत। मौर। गोर। नप। निमल। नूमल। उगि। कंपंति। नट्टवत। भैप। दुति। कौर। कटित अनंग। स्याम। फुलि। फूलि। मालनि। काम। सौ। अपहि। अवमान। न्रिमल॥

९० पाठान्तर.—दुहा। च्यारि। संदरी। प्रान। पयनै। पयते। थांन। अदोंल्ति। सौ। भइ। हौत। वर। भान॥

९१ पाठान्तर.—मैर। सौम। पुव। भजन। वंद। मनो। मनौं। सव। सवम॥

९२ पाठान्तर—छद अरिल। अरिल्ल। विरति। अवरि। वालं। हेमवन। हेमवन। उरमा। रिविनी। जाम। देषि। नहारति। निहारति। काम॥

९३ पाठान्तरः—ईंद। इदं। सरद। मुंद। अनद। वृंद। व्रजे। वृज। वंल्यि॥

९४ पाठान्तरः—स्तुति सुनि रुचि भेद। स्तुति स्तुति रचि रचि भेद। निरपि। निंमप। विसेप। विशेप। वुधि। * बूंदीवाली में मन शब्द नहीं है। पेद॥

वृद्द नाराच ॥

जिते जितेक धामधामकामनीमनं।तिते तितेसुरासुरेसस्त्रचभामिनिगनं॥३२६॥
रतें रते धने धने बने बने वनं चरं। त्रिभंग वंस ग्रव्वयं, अवन्न लग्गए हरं॥ ३२७॥
मुकट्टयंमयूर चंद्रसीसयं सु लष्ययं। सुगोपिका सु गोप बालतालयंसु सष्ययं॥३२८॥
पतीव्रतंसुध्रम्मधाम भामिनीसुभग्गयं।अपत्तिईसनी सयंसुपातकंसुलग्गयं॥३२९।
सुमोहम्रग्गकामम्रग्गकामिनीबुलत्तियं।अमोहमोंहमारगे अलोकतक्कजत्तियं३३०
अपत्तिसुत्तछंडि स्वामिवाम वाममारगे।कहंत चंदभेदयं अकज्जवप्पु सारगे॥३३१॥
तमेवध्रम्म धामयं सुध्रम्म धामयं सुनं।तमेवकाम कामयं सुकाम*कामनीगनं।३३२।
तमेव देव देह अंस देह हंस वेदनं। तमेव लब्ब स्वब्बयं सु सर्वदा सु भेदनं ॥ ३३३॥
तमेव लोक लोक लज्ज भज्जनं सदा हरी।तमेव सुष्प दुष्पयं सुसाधवंअहंकरी॥३३४॥
तमेव दिष्ट इष्ट पुष्ट दुष्टनं प्रतीयते । तमेव सत्ति सत्ति वाद गोपिका महं गते॥
छं० ॥ ३३५ ॥ रू० ॥ ९५ ॥

गाथा ॥ इथ्थ सु नाम ग्रहनं। नथ्थं यत्ते मि कहन कारन यं ॥
यत्ते पतंग दीवे। हं माधव माधवं देवं॥ छं० ॥ ३३६ ॥ रू० ॥ ९६ ॥

---

९५ पाठान्तरः—छंद वृद्धि नाराच। जित। जितेक। धाम धाम। काम। कामि। कामिनी। तितै तिते। सुरासुरैसु। सुत्र। रतै रतै। घनै घनै। वनै वनै। चरं। रते रत घने वने वनं चरं। ग्रवयं। अंवन्न। लगए। सुकट्टटयं। मुकट्टयं। मयुर। शीशयं। लपयं। गोपिका। गोपवाल। सुतपपयं। सुसरवयं। पतिव्रतं। धृत। धांम। भगयं। अपाति। इसनी। पातगं। लगयं। मोह। मृग। म्रिग। कांम मृग। कामृग। कामिनी। बुलंतियं। अमोह। मोह। मारगे। अलोका। तरक। जतियं। अपाति। सुत। स्वाम। स्वाम। वाम। वाम। मागरे। मागरे। भैदयं। अकज। वपु। सागरे। तमेव। तमेव। * बूंदीवाली में सुकाम शब्द नही है। तमेव। देव। अस। देह। वैदनं। तमेत्र। श्रव। सूव। अवयं। अवदा। सूनदा। भेदनं। तमेव। लोक। लोक। लज। भजनं। भंजनं। तमेव। सुप। दुषयं। तमेव। दुष्टयं। प्रतीपते। तमेव। स्पातिसानि। सति साति। गोपिका। गने॥

इस छंद का कहीं तो वृद्धि नाराच और कहीं लघुनाराज नाम लिखा मिलता है, जैसे कि इसी समय के रूपक ९ और १७ और २४ आदि मे है परंतु अभी तक कोई वृद्ध और लघु का भेद सूचक छंद नहीं आया है, जहा आवेगा वहा हम उसके विषय में कहेगे। अभी यह समझ लेना चाहिए कि यहा तक उनमें प्रमाणिका नामक छंद का लक्षण घटता है अर्थात् वह आठ अक्षर और बारह मात्रा = लगुलगुलगुलगु—का होता है कि जो परस्पर नामान्तर है॥

९६ पाठान्तरः—गाहा। इछ। इछं। नाम। गहनं। नथं। पतैवि। पते। पतै। पंतगा दीवं। प्रतंग दीव। देवं। वंदे॥

कवित्त ॥ मधु माधव वैसाष । रष्षि माधव माधव रित ॥
वन घन तन बनि रम्य । सोभि मारुत मारुत अति ॥
बंसी सुर संभर्‍यौ । हर्‍यौ गोपी सु चित्त सुर ॥
कछुव कर्‍यौ कछु कर्‍यौ । गये सातुक सुभाव गुर ॥
सु मुगति सोह एकंग ग्रहि । अध इषि चषि अंजत चली ॥
एक ही बार संभरि सु सुर । कंत चित्त चिंता षुली ।
छं० ॥ ३३७ ॥ रू० ॥ ९७ ॥

गाथा ॥ बाले विभ्रम चरितं । मुक्तं तथ्थ चिंतयं होई ॥
रति कन्हं सम रमनं । छित छित्तं सुक्ति सा बाले ॥
छं० ॥ ३३८ ॥ रू० ॥ ९८ ॥

दूहा ॥ देव देव वसुदेव सुत । नित नित गुन गन पूर ॥
छिन इक नाम लियंत वर । घन अघ उड्डि कपूर ॥
छं० ॥ ३३९ ॥ रू० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ ध्यान सु प्रति प्रति कन्ह । देव देवाधिदेव वर ॥
मधुर नरम अति वैन । मकर कुंडल चंचल गुर ॥
नाचत चित्त त्रिभंग । वंस बंसीधर राजै ॥
अति उतंग (माया *) बीभंग । नाम लेयंत सुराजै ॥
देवत्त देव देवाधि वर । नीत न मानत भजि सु वर ॥
कहियंत गोप गोपी सु वर । विधि विधान निरमाज नर ॥
छं० ॥ ३४० ॥ रू० ॥ १०० ॥

---

९७ पाठान्तरः—कवित । मधु माध वेशाप । मधु माधव वैसप । रिषि । रषि । रिति । तवनि । सौभ । गौपी । सु वित । स चित । कछु कह्यौ कछु कछु कस्यौ मातुक सुभाव गुरु । मौ । सौह । ग्रहि । इष्षि । चष्षि । अजत । धार । संभरी । चित । चित ॥

९८ पाठान्तर—गाहा । वालै । श्रुक्तं । तथ । चितय । चितयं । होइ । कन्ह । रमरमन । वालै ॥

९९ पाठान्तर.—दौहा । दैवदेव । वसुदेव । पूरि । छिनक । नाम । लीयंत । वर । अघान्हंटि । उड़ीय । कपुर ॥

१०० पाठान्तर—कविना । ध्यान । कन्ह । दैवदेवाधिदेव । वर । मरम । वै । । वैन । गुरु । वंसीधरा (माया *) अधिक पाठ । त्रिभंग । देवत । देव । दैवाधि । वर । मानत । भजि । वर । कहीयन । गोप । गौपी । विधान । निरमान ॥

दूहा ॥ अलक लोक बज्जत विषम । गन गंध्रव्व विमांन ॥
सुर पति मति भूल्यौ रहसि । रास रचित व्रज कांन ॥
छं० ॥ ३४१ ॥ रू० ॥ १०१ ॥

चौटक ॥ ततथे ततथे ततथे सुरयं । तत थुंग मृदंग धुनि द्धरयं ॥
उघटें त्रिघटी हरि विक्क्रमयं । भ्रमरी रस रीति अनुक्क्रमयं ॥३४२॥
व्रज बालिन आलिन आलिनयं । इक इक्कति कान्ह बिचं व्रजयं ॥
निञ नित्तंत वित्तंत किं नमनं । द्रिग पाल मिले कोतिगनं ॥३४३॥
पहु यंजलि अंजु सुरंग वनं । वर बज्जति छंद विनं धुनिनं ॥
जिसि निर्म्मल चंद मयूषनयं । घन घंटिक नूपुर झंभनयं ॥ ३४४ ॥
धरनीधर न्रित्यत दिद्धरयं । नव नाग कुली कुल सुम्मरियं ॥
षट मास निसानिसि न्रत्य कियं । तब गोविंद अंतर ध्यान हुयं ॥३४५॥
सब गोप वधू मिलि ढुंढतियं ॥ छं० ॥ ३४६ ॥ रू० ॥ १०२ ॥

कवित्त ॥ गोपति अंतर (सु *) ध्यान । भये भ्रम भ्रंम उपंनिय ॥
विरह बान भय दीन । प्रान छुट्टिय वरतंनिय ॥
ज्यौं तर वर बिन पत्त । आस तर वर बन करई ॥
ज्यौं सुद्धि भई मुष बाल । बहुरि चिंता मन धरई ॥
सांवरी स्याम मूरति सुवर । अतिस पहुप संमान वर ॥
सिर मोरपिच्छ सोभत वसन । तरुन बाल पुच्छै सुतर ॥
छं० ॥ ३४७ ॥ रू० ॥ १०३ ॥

---

१०१ पाठान्तरः—दोहा । लौक । बजत । वज्जत । विषम । गंध्रव । गंधर्व । विमान । सुररि । मत्ति । भुल्यो । भुल्यै । वृज ॥

१०२ पाठान्तर—तथनैनतथैनतथै सुरयं । ततथेंग । म्रदंग । धुन । धरयं । उघटे । उघटं । त्रिक्रमयं । भृमरी । अनुक्रमय । ब्रज । वालिन । इकति । विच । वृजयं । नरतति । नर्तित् । वरतिक । वर्तिक । कि । वंय । नमयं । दृगपाल । मिलै । मिल । मिलै । कोतिगयं । कौतिगयं । कौतिगने । पुह । पजुलि । पंजु । वयं । वर । बजत । वज्जत । विन । विनं । घुनयं । धुनयं । निशि । न्रिमलि । मयुषनय । नुपुर । नृताति । नृत्यत । निद्धरयं । कुंली । कुंल । सुभरियं । सुमरियं । निसानिस । निशानिश । कीयं । कायं । गौव्यंद । गोवींद । ध्यान । हुअं । गौप वधु । तयं । तीयं ॥

१०३ पाटान्तरः कवित ॥ गौपी । गोपी । अंतर ॥ सु * अधिक पाठ । ध्यान । भयों । भयै । भूंम भूम । भूम भूम । उपतिय वाम । भयं । दान । प्रांन । छुटीय । छुटिय । छुट्टीय । व्रतंनिय । जों । त्रिन । पत्र । विन । त्रिन । जों । सुधि । भइ । चिता । धरइ । स्यावरी । स्यांम । मराति । सुत्रर । पिछ । सोभन । तहन । पछै । पुछै । पुछे ॥

कवित्त ॥ किष्ण बिरह गोपिका। भई व्याकुल सु विकल मन ॥
बर गहबर बन भ्रमै। कै इक गट्ठी ग्रिथलं तन ॥
बिषम वाय जिम लता। मोरि मारुत झंझोरै ॥
कै चित्र लिषी पुत्तरी। जोरि जोरंत निहोरै ॥
कै पाषान गढि केक मग। भ्रमत माल पुछ्छत फिरिय ॥
कविचंद चवत हरि दरस बिन। दोय कपोतह विछ्छुरिय ॥
छं० ॥ ३४८ ॥ रू० ॥ १०४ ॥

स्याम रंग पिष्षहिन। घटा घनघोर गरज्जत ॥
कोइल मधुकर बयन। श्रवन संभरै बरज्जत ॥
कालिंदी न्हावहि न। नयन अंजै न म्रगंमद ॥
कुचा अग्र परसै न। नील दल कवल तोरि सद ॥
पर पीर अहीर न जानि मन। ब्रज बनिता मिलि कहत सब ॥
जिहि मग्ग कन्ह बन संचरिय। तिहि मग जल पीवहि न अब ॥
छं० ॥ ३४९ ॥ रू० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ सुतन दुष्य अति बाल ससि। भयौ पुरन त्रिन मंत ॥
तिम सुष घटि दुष्यह दरस। भोर भौंर उडि जंत ॥
छं० ॥ ३५० ॥ रू० ॥ १०६ ॥

भयौ सु उडगन गात बर। पूरन ससिय अकास ॥
सुवर बाल बढ्यौति दुष। सिंधु उलट्यो भास ॥
छं० ॥ ३५१ ॥ रू० ॥ १०७ ॥

---

१०४ पाठान्तरः-विरह। गोपिका। भई व्याकुलविकलं मन। बन गहब्बर बन भ्रंमे। के। गढिय। गट्ठी। म्रथलं। मौरि। झझैरै। झे। चित्र छिपी। फुतरी। जेरि। जेरितं। निहोरै। कें। के। पषांन। कैक। भ्रमत। बाल। पुछत। फिरीय। विनु। दौय। कपोतकि। विछुरिय। विछुरिय ॥

१०५ पाठान्तर-स्यांम। पिष्यहिमः। घौर। कौइलम। बरज्जत। काल्दी। पसे। नील। तौरि। जानि। बनिता। मग। कन्ह। वन। व्रल ॥

* यह रूपक स० १६४७ और १७७० की पुस्तकों में नहीं है ॥

१०६ पाठान्तरः-दौहा। सुनत। दुष। पूरन। तिम सुषट्टि दुषह दरस। सरस। ज्यौं भोर भौंर उडि जंत ॥

१०७ पाठान्तरः-भयो। वर। ससिय। शासिय। सुबर। वढयोति। उल्टयौ ॥

गाथा ॥ राधापतीतमारं । राधा भई भुजंगयं बैनं ॥
राधावल्लभ वंसी । बरनं षंत सु भोअनं जातं ॥छं०॥३५२॥रू०॥१०८॥

कवित्त ॥ रास बाल हरि बाल । बाल आई न बाल हरि ॥
सघन कुंज घन कुसुम । मज्जि सुष सैन चैन करि ॥
कंध चढत व्रषभान । धाय मुक्की तिन बेरह ॥
कोइ लभै नह सुद्धि । बिरह सभऱ्यौ घने रह ॥
पावै न बाल पुछ्छत सुव्रछ । दै देवाधि देवाधि कह ॥
आरति चरिच बहु कन्ह कौ । को जंपन जानन कलह ॥
छं० ॥ ३५३ ॥ रू० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ बग्ग मग्ग गोपिक गमन । कंध अरोहन मग्ग ॥
द्रुम द्रुम बल्लिन अलिन अलि । हरि पुछ्छन अछि लग्ग ॥
छं० ॥ ३५४ ॥ रू० ॥ ११० ॥

मोत्तीदाम ॥ सुन् कैरी कदंम कयथ्थ करील । कमोदनि कुंदह केतकि बील॥
कनैर कसोंदिय कैबर कोह । करों दिन कान्ह कहां कहु मोह॥३५५॥
सुनी सुनि सोक समीर सुगंध । सकुंजन कुंज निरष्पत रंध ॥
कहूं बल बंधि बिजोरनि जांनि । कहूं वट हंस दिषावत आनि॥३५६॥
सुनौ तुम चंप कदंम चकोर । कहौ कहुं स्याम सुने षग मोर ॥
लही ललिता बन लोचन चंग। कहौ कहु कान्ह जुहे तुम संग॥३५७

---

१०८ पाठान्तरः—राधापतित । राधापतित्त । राधामतीत । भार । बेंनी । वैनी । वैनं । राधावलभ । वसी । वरन । षंत । भोअन । जानं ॥

१०९ पाठान्तरः—कविता । आईय । आइय । मजि । सेन । वैन । वेंन । कं । वृषमान । धीय । मुकी । सुकी । वेरह । कोइ । लतै । सुधि । विरह । धनैरह । पावे । पुछत । पुछति । विछ । दइ । देवावि । आरत । कन्ह । कै । कौ ॥

११० पाठान्तर.—दोहा । वग्ग मग्गोपिय । मनह । अरोहन । मग । मगि । द्रु । चैलिन । बेलिन । मिलि । पुछन । पूछन । लग ॥

१११ पाठान्तर.—छंद मोतीदाम । सुनि । कोरि । कंदम । कयथ । कमोदनि । कैतकि । कसौदिय । कसौटीय । केंबर । कौह । कसौदिन । कान्ह । कदा । कहा । कहौ । मौह । मुनि सुनि । सुनि सुनि । सौक । नरपत । निरपन । कहुं । वध । बिजोरानि । जानि । कहु । दिपावहु । आनि । सुनो । कदम । चकोर । कहो । कहौ । स्याम । सने । मौर । वन । लोचन । कह । कहुं ।

हुँमान कियौ उन मानह भंग । सह्यौ नहि ग्रब्ब तज्यौ हम संग ॥
दुरे अब ही तजि कुंजनमांह । गए कर ही कर छांडहि बांह ॥ ३५८ ॥
चली मिल पंछिनि पुछ्छत भीर । कुरं कुर रंगिन कोकिल कीर ॥
परी धर मुछ्छि गहै कर एक । तिनं लगि सास उड्यौ उडि केक ॥३५९॥
चले असु धार तरंगिनि बाढि । गहे दह सासनि प्रानन काढि ॥
मगें डग चालि गिरै धर धाइ । गहै कर साहसि लेइ उठाइ ॥३६०॥
गई जमुना जमुजानिन तीर करै सब कामिन स्याम सरीर ॥
जु पूतनि रूप धरै तन आप । ग्रहै द्रह कन्हर कालिय साप ॥३६१॥
धरै कर पव्वय गोप सहाय । परै जल धार तडित्त निहाय ॥
धरै चिय ध्यान न लग्गइ नैन । परै पतिपत्त सुनै सुन बैन ॥ ३६२ ॥
कहंत क्रिपा निधि भक्त सहाय । भए तब आनि प्रगट्ट दिषाय ॥
कियौ फिरि रास जु सुंदर स्याम । बिचं बिच कंन्ह बिचं बिच बाम॥३६३॥
भए श्रम अंग कलिंद्रिय तीर । छिरक्कत स्याम गहै भुज भीर ॥
करी जल केलि चरित्त सुजानि । लियौ दधि दूध चियानि सु दान ॥३६४॥
युं रास विलास अकास प्रसून । अनंदिय अंमर अंबुज सून ॥
छं० ॥ ३६५ ॥ रू० ॥ १११ ॥

दूहा ॥ कहिरु बाल पत्तिय जमुन । रमन केलि जल बाल ॥
मानहु मदन महीप गुन । कढ्ढत फंदन काल ॥छं०॥३६६॥रू०॥११२॥

कान्ह । है । मै । मै । बान । कीयौ । अब । दुरे । तिजि । माहि । छडि । छांड । कें । कं । बाहि । वाह । चालि । मिलि । पुछत । कुरंग । कुरंनि । कौकिल । मुछि । गहे । गहै । केक । चलै । अंसुधार । चढ़ि । गहै । दहसाति । प्रानन । काटि । कढि । डगे डग । मगे मग । गिरें । गहें । गहे । साहस । लैइ । लेई । गइ । यमुना । यमुनान । यमुनानि । कै । के । करें । कामनि । स्याम । पूतना । जु पूतना । ग्रहें । धरें । पव्वय । गौप । तडित । वरें । अन । ध्यान । लगहि । लगेंइ । लागेइ । नेन । परें । पितपता । सुनें । सुन । बेंन । कृपानियी । भक्ति । दई । अंनि । प्रगट दिपाइ । स्यांम । त्रिचि । वाम । भई । कलद्रीय । छिरकत । स्याम । कैलि । चरित । जानि । लियों । पें । दूद । पै दांन । यो । यै । अनंदियं । अमर ॥

यह मोतीदाम नामक छंद चार लगुरु का होता है उसमें बारह वर्ण और सोलह मात्रा होती है ॥

११२ पाठान्तरः—दोहा । बालि चाल । पतिय । यमुन । कैल । मानहं । म्पनहु । दनन । कटत । कढ़ना ॥

पद्धरी ॥ क्रीडंत जमुन सुंदरि यिसाल । प्रापत्त षट्ट सत बरष बाल ॥
पौगंड छंडि किस्सोर पीय । जोति सु सिसर अति तोर जीय ॥३६७॥
अप्पौ सु अरघ रिन पानि जोरि । मनु प्रफुल्लि कुमुद ससि चित्त चोरि॥
तजि बाल वस्त्र क्रीडंत वारि । प्रति धरे अंबरह मिलन धारि ॥३६८॥
आधिक्क बचन व्रत रयन धाम । हरि बसन कदम चढि कोटि काम ॥
तजि बाल वस्त्र भावरि सु देस । निकरीय लपट वडवान लेस ॥३६९॥
नव किसल धलुक जनु कनक वल्लि । तिरि चलिय जमुन जनु कदम केलि ।
लटकै सु बाल वेंनिय सुरंग । सोभै सु दुत्ति विच जल तरंग ॥ ३७० ॥
जानैं कि सदन नृप रहसि जोर । जवनिका ओट नच्चै चकोर ॥
मानों कि दुत्ति द्रप्पनह व्योम । निच्चोल स्याम मधि हमिय सोम॥३७१॥
मुष केस पास विंटिय बिसाल । वंध्यौ कि सोम सोभा सिवाल ॥
गहि पानि वारि रवि अरघ देहि । उप्पमा चंद बरनैति नेहि ॥३७२॥
सैसवसु पानि जुब्बन सु अर्घ । मनु देहि मनंमथ मिलन स्वर्ग ॥
जल कनक बुंद मुष पर विसाल । पुज्यौ कि चंद मनों मुत्तिमाल॥३७३॥
कुंकुम सु नीर छुटि लग्यौ चारु । नग रतन धरे मनु हेम थारु ॥
उर बीच रोमराजीव रेष । गुरु राह मेर मधि चल्यौ भेष ॥
छं० ॥ ३७४ ॥ रू० ॥ ११३ ॥

११३ पाठान्तरः—छंद । पद्धरी । क्रीडंत यमुन । सुदरि । प्रापत । सत षठ । सत षट्ट । वरष । वाल । किसौर । किसोर । जौनी । जु । ससिर । तौरि । अरिन घरि । पानि । जोरि । मन । सिसि । चित । चौरि । धरें । धरे । अम्रर । मिलेत । मिलित । धार । अधिक । इति । वृति । वाम । बसन । चाहि । कौट्टि । काम । वाल । भावरि । दैस । निकरिय । पट्ट । लैस । कीमल । कनकं । वैलि । वलिय । कंदम । कैलि । लटंकै । लटके । वाल । वैनिय । सौहै । सोंचे दुति । विच । विचि । जानैं । रहस । जैार । जवनका । उठ । उद । नचै चकौर । मांनों । मानैा । दुति । द्रपनह । व्याम । निचौल । निचोल । स्याम । हलिय । सौम । कैस । विटीय । विसाल । विंध्यो। वंध्यौ । सौम । सौभा । विसाल । पानि । अरव । देंहि । दौहि । ओपमा । उपमा । बरनेंति । वरनैति । नैहि । नेह । सैसवसु । पानि । जुवन । अरव । मन्यें । मनैा । दैहि । मिलत । स्वरग । जग कनक । वुद । पुज्यौ । मनैा । मनौ । मुक्तिमल । कुंकम । कुकम । छुटयौ यु चारु । रत । धरे । मनों । हैम । उर वीच । उठीस । रौमराजीव । रैष । मैर । भैप ॥

दूहा ॥ जहां पत्तवर क्रष्ण गुरु। चढ़ि तमाल हरि वस्त्र ॥
मानहु सुंदरि अंग वर। करत सुमित्त पवित्र॥छं०॥३७५॥रू०॥११४॥

कवित्त ॥ पीत वस्त्र सु निकंत। जलालंबन तन दुति दुरि ॥
दीपक करि पुंडरिक। द्रिग्ग लगि गुंज सुत्ति हरि ॥
क्रिसन त्रिभंगी तन्न। धन्यौ किस्सोरति रूपं ॥
दिष्ट वाम भौ कोटि। मोह माया तन ओपं ॥
आनंद कंद जुग चंद वद। वृंदाबन वासी विहर ॥
दै वसन रसन तुट्टनन करि। देहि गारि तिय नंद पर ॥
छं० ॥ ३७६ ॥ रू० ॥ ११५ ॥

कुंडलिया ॥ धुनि वंसी सुनि सुनि श्रवन। चक चक्रित चित पाहि ॥
मन माया की पुत्तरी। रही स्वामि तन चाहि ॥
रही स्वामि तन चाहि। मदन दावानल बड्ढी ॥
मीन तनं तन फिरै। अबल व्याकुल भइ गड्ढी ॥
चित जल रजि पग परै। जलसायी सु सरूप सुनि ॥
निगम प्रमोद मृणाल (हरि*)। सो भइ वंसी बैन धुनि ॥
छं० ॥ ३७७ ॥ रू० ॥ ११६ ॥

दूहा ॥ बरषि कदम्म सु बन्न चढि। लज्जित बहु वर बाल ॥
हथ्थ जोरि सम सो भई। प्रभु बुल्ले बछपाल ॥
छं० ॥ ३७८ ॥ रू० ॥ ११७ ॥

---

११४ पाठान्तरः—दोहा। तहा। पतैवर। चाटि। मानहु। मानहुं। सुंदर। वरत। सुमित। पवित ॥

११५ पाठान्तरः—कवित। कवित्तः। जल्लालवन। करी। पुंडरीक। द्रिग। गुत्ति। हरि। मुत्ति हरि। क्रिसल। तनं। किसौकिरति। क्रमोगति। दिष्टि। वाम। कोटिचौ। सोह। ओपं उप। वद। विहर। तुट्टनिम। तुटानिम। देहि। दैहि ॥

११६ पाठान्तर—कुंडलिया। वंसी। चक। पाइ। पाय। मानि। फुतरी। फूतरी। स्वामि। दढी। तिनंतन। फिरे। अवल। भई। हुई। गढ। लत। लज्जति। परे। जल सु ईस लपद सुनि। प्रमोद निगम। मृनाल। * अधिक पाठ। सौ। वसी। वैनि। वैन ॥

११७ पाठान्तर—दोहा। वरषि। कमोद। श्रवंन। लज्जित। वर। हथ। जोरि। सो। भइ। बुल्ल्यो। भुले। भूले। छपाल। वछपाल ॥

दूहा ॥ चढि कदम्म बुल्ले सु प्रभु। मधु रित मिष्टत वानि ॥
बंधि बसन कर कंन्ह बर। लेहु न सुंदरि आनि ॥
छं० ॥ ३७९ ॥ रू० ॥ ११८ ॥

ब्रजपति ब्रजलालनि कही। रमे रमन इक काल ॥
काम अरथ करि सुंदरी। धेनन मुक्कै बाल ॥छं०॥३८०॥रू०११९॥

दूहा ॥ युति पानी जुग जोरि करि। फिर लग्गी चिहुँ पंति ॥
मानों राहें वंधनह। सोमहि पारस कंति ॥
छं० ॥ ३८१ ॥ रू० ॥ १२० ॥

दूहा ॥ इह कालिंदी कदम चढि। लैंन चीर सब नारि ॥
प्रभु बैठे पातन पतन। मानहु ग्रह पति मारि ॥
छं० ॥ ३८२ ॥ रू० ॥ १२१ ॥

दूहा ॥ तट कीले पीले वसन। रतन छतन छॅटि छित्त ॥
इल अपच्छर सरवर रवन। भई भ्रम्म मन मित्त ॥
छं० ॥ ३८३ ॥ रू० ॥ १२२ ॥

कवित्त ॥ अरध बिंब जल अरध। नहिन वस्त्रं छिति कारिय ॥
मनौ षंभ अहि क्रील। किद्ध छित्तन व्रत धारिय ॥
कितक जोरि कर जुग्ग। कितक नग्गी तन तारुन ॥
कितक कूह मुहु कीन। कितक लन मध्य सु वारुन ॥
तरु पत्त गत्त निय वसन करि। सुनि ब्रह्मा संकर हस्यौ ॥
तिन टेर वेर बंसी बजिय। रास क्रील माधव रस्यौ ॥
छं० ॥ ३८४ ॥ रू० ॥ १२३ ॥

---

११८ पाठान्तरः—बुले। स। मध। वानि। बानि। वसन। कन्ह। चर। लैहु। आनि॥

११९ पाठान्तरः—ब्रूजलालाति। रमै। काम। करी। मुक्कै। मुकै। वाल॥

१२० पाठान्तरः—पुति। पानि। युग। जौरि। कर। फिरि। लगी। विहुं। मनौं। मांनों। राहु। जु। सौम कि। सोम कि। पारस पंति॥

१२१ पाठान्तरः—कालिंदि। कालिंद्री। कदंम। लेंन। बैठो। पातन। पवन। मानहु॥

१२२ पाठान्तरः—क्रीलै। पीलै। छंटि। छाटि। छित। सुमन। भईय। भ्रूम। मित॥

१२३ पाठान्तरः—कवित। छित। कारीय। मनौ। मनों। छितन। वृत। धारीय। जौरि। युग। जुग। तारन। मनमथ। यत। गत। शंकरि। तिन बेर टेर। बसि। बजिय। भाव॥

कवित्त ॥ तरु उप्पर हरि चढ्यौ । सबै सषियन मन संध्यौ ॥
कंस त्रास तप पन्यौ । इन्द्र आसन मन बंध्यौ ॥
ब्रह्मा मन उल्हस्यौ । रुद्र रुद्रासन रष्यौ ॥
ससि कालह षल भष्यौ । दैत दारुन बल दिष्यौ ॥
सुर सज्जि बज्जि गोपह सरस । अति आकर्ष नवेस सुर ॥
रचि रूप भइ तरु अद अली । मनि दामिनि गोपिय सु हर ॥
छं० ॥ ३८५ ॥ रू० ॥ १२४ ॥

दूहा ॥ चढ्यौ राह कैलास पर । फिरि राका चिहु चक्क ॥
मुरत सध्य अहि परत तव । चढि कर्दम रस रक्क ॥
छं० ॥ ३८६ ॥ रू० ॥ १२५ ॥

दूहा ॥ फिरि गोपी चिहु मग्ग हरि । करन रास रस रंग ॥
इक इक कन्ह अनंग दल । बिच बिच सुंदरि अंग ॥
छं० ॥ ३८७ ॥ रू० ॥ १२६ ॥

कवित्त ॥ अप्पि वस्त्र कहि रमन । रास मंडल अधिकारिय ॥
एक एक बिच गोप । क्रष्ण एकह विचारिय ॥
युत्ति पत्ति वर बंध । मंच चावद्दिसि जोरहि ॥
मनौ इक्क घन मद्ध । विज्ज कुंडलि संकोरहि ॥
वर फिरति सुबर दंपति दिपति । दंपति कुंडलि मंडि करि ॥
सुभ्भै न अंग बिय अंपि कैं । ठौर नहीं इक अंपि भरि ॥
छं० ॥ ३८८ ॥ रू० ॥ ॥ १२७ ॥

१२४ पाठान्तर—तर । ऊपर । हर । सर्वे । सर्षायन । इद्र । इल्हसौ । उल्स्यौ । शशि । स्मर्यौ । देत । सजि । बजि । आकरपनवैम । भद । आलि । मन । दामिन । सु । हरि ॥

१२५ पाठान्तर—दोहा । गिहु । विहुं । चहु । चक । मथ । परन । नव । गकि । रक्कि । रक ।

१२६ पाठान्तर—गोपी । चिहु । मग । हरी । करन । विचि । विचि । सुदरि ॥

१२७ पाठान्तर—कवित्त । अधिकारीय । विचि । गोप । विचारीय । युति पति । चावदिसि । जोराहि । मनौं । इक । धन । मधि । वि । विजहि । कुंडल । सकोरहि । वर । फिरत । सुझे । कै । ठोर । वौरि । नहीं । अप । करि ॥

दूहा ॥ पावस रितु वित्तीत हुअ। सरद संपती आइ ॥
दिन आयौ सुंदरि रमन। सुवच सुवंसी गाइ ॥
छं० ॥ ३८९ ॥ रू० ॥ १२८ ॥

दूहा ॥ सरद राति मालति सघन। फूलि रही वन वास ॥
दीपक माला काम की। हरि भय मुक्किय त्रास ॥
छं० ॥ ३९० ॥ रू०॥१२९ ॥

पद्धरी ॥ उग्गिय मयंक कंदर्प रूप। दुरि गयौ तंम विन कित्ति भूप ॥
द्रुम द्रुमति भार फुलि लता माज। जनु भार नंमि गुरु राज लाज॥३९१
उज्जास बध्यौ धवलंत छेह। सुझ्झै न हंम हंसनिय देह ॥
कुरलंत सुनत धावै न पाइ। अप अप्प तेज सहजै समाइ ॥३९२॥
पावै न पुप्फ अलि इहै वास। ज्यौं अंधचीय चाहंत भास ॥
अप धरिय वस्त्र पाईन जाइ। ढूंढत्त इला पावै सु पाइ ॥ ३९३ ॥
नव बधू सजत भूषन सँवारि। ससि बढी किरन अति तेज तारि ॥
म्रगतिह्न भई उर मुत्ति माल। भुल्लै चकोर ससि नैन चाल॥३९४॥
कुरलंत हंस चुन लहिन सार। सुझ्झै न नैंन गहरत्त माल* ॥
नाछिच छिपिग ससि क्रन प्रताप। उज्जास आप घन सार चाप॥३९५॥
सुझ्झै न दंत गज इन्द्र धार। कामिन कटाछ वल वुद्धि चार ॥
नागिनी भद्र गुन गरुअ अंग। दिष्षै न पत्ति मन भइय पंग॥३९६॥
गजराज इंद्र दिष्षै न तथ्य। मीडंत मष्षिका जेम हथ्थ ॥
भए गुनित गाव अति सेत चार। नव वधू मुष्ष इष्षै कुमार ॥३९७॥

१२८ पाठान्तर—दोहा। ऋतु। रित। वितीत। भय। आय। आप्पौ। सुवचं। गाय ॥

१२९ पाठान्तरः—फुलि। फुल्लि। वन वाम। हर। मुक्किय ॥

१३० पाठान्तर.—इंद्रय। गयौं। तम। भूप। गुर। उजास। वंध्यौ। वन्यौ। छेह। सुझै। हंमह। हंसिनीय। हंमनी। कुरल्लंत। धावै। पाय। अप्प अप्प। अप अप। तेज। समाय। पुफ। लहै। ज्यौ। ज्यो। अन्धत्रीय। धरीय। वस्तु। जाय। ढुंढत। पाय। वंधु। वधू। भषन। संवार। संवारि। वाढि। किराने। तैज। मृगात्रिण। मृगतृष्ण। भइ। मुक्ति। मुनि। भंजे। मुजै। चकोर। नेंन। कुरलत। क्ररल्लंत। लहित। सुझै। नैंन। गहरत। * सं० १७७० में "सुझै न दंत गहरत माल" पाठ है। नागिन। क्रंन। उजाम। आपि। चाप। मुझै। सुझै। कामिनि। कांमिन। कटाछि। बुधि। विचार। नागिनीय। गुरुअ। दिषै। पाति। भईय। इंद। दिषै। तथ। मषिका।

बाला प्रताप मुष सुभत बार । सो भई गंग धागान धार ॥
हारीति रास करि आस पूर । मन वंछि चियन दीनो हजूर * ॥
छं० ॥ ३९८ ॥ रू० ॥ १३० ॥

दूहा ॥ सो बंसी बज्जी बिषम । सौरस बंसी पाय ॥
ब्रह्मादिक सनकादि सिव । रस तन बज्जै गाय ॥
छं० ॥ ३९९ ॥ रू० ॥ १३१ ॥

मोतीदाम ॥ सुने सुर बाल विलासत सद्द । तजे ग्रिह काम पियार समद्द ॥
परे घन भेद सु वच्च प्रमान । चितै कुइ आन कहै कुइ आन ॥४००॥
चले मनु ते चिय भुल्लिय देह । सती सत जानि चले तव नेह ॥
छिनं छिन अंगन तापन जाय । मनो सब की तडिता चमकाय ॥४०१॥
भयो तन स्वेद प्रकंपि जंभाति । ठगी मनु मूरि ठगोरि सिषाति ॥
तजे ग्रह काम मनौ ग्रसि काल । रही बिरहानल के बसि बाल ॥
छं० ॥ ४०२ ॥ रू० ॥ १३२ ॥

दूहा ॥ कै स्यामा किस्सोर कै । कै पौगंड प्रमान ॥
रसै रसिक रस रमन कों । चलि बंसी धुनि कान ॥
छं० ॥ ४०३ ॥ रू० ॥ १३३ ॥

जैम । हथ । भइ । गुनीत । स्याह । मैत । वधु । इप्प । इप्पे । मुप । ईपे । प्रताम । वार । मो । भइ । राम । पुर । पूर । वंछिय । हजुर ॥

* इस "हजर" शब्द को यहा कवि ने गोपियो के परम प्राण वल्लभ प्रेयम् श्रीकृष्ण के लिये प्रयोग किया है । उस को मुसल्मानी भाषा के पक्षपाती लोग अरबी "हजूर" शब्द का अपभ्रंश होना अनुमान करेंगे किन्तु मै उसको संस्कृत "सजुष्" से बना हुआ हिन्दी भाषा का शब्द मानता हूं । इस के संस्कृत--यान--वाला होने के विषय में मै इस दसम समय की उपसंहारिणी टिप्पण में अपनी सविस्तर और सतर्क सम्मति प्रकाश करूंगा अतएव पाठक इस के विषय में अधिक वहा अवलोकन करें ॥

१३१ पाठान्तर.—दोहा । सौ । वंसी । वजी । सोरम । पाई । सिवं । रमनन । वजे । गाई ॥

१३२ पाठान्तर —मोतीदाम । सुनै । विसालत । तजै । गृह । काम समद परे । भेद । सवचन । प्रमान । चिते । कोई । कौई । कोई आन । कोइ । काइ । आन । चले । मनों । अंगन । भूलीय । भूल्लीय । देह । जानि । चैल । नैह । छिन । छिन । अगन अंगन । जाइ । चमकाई । स्वेद । जंभाति ठगी । मनो । मनौ । मूर । मुर । ठगोरि । सियाति । गृह । काम । मनो । मनो । तौ । के । वसि । ॥

१३३ पाठान्तर --दोहा । के । स्याम । किसोर । किसोर । के । के । पगंड । पेगंड । प्रनाम । कौ । कौ । वंसी । कान ॥

दूहा ॥ सुत पति गुरजन बंचि वर। तजि ग्रिह काम प्रमान ॥
धुनि बंसी संभरि श्रवन। चलि सुंदरि तजि प्रान ॥
छं० ॥ ४०४ ॥ रू० ॥ १३४ ॥

दूहा ॥ सजि सिंगार नग नग उदित। मुदि मऊष ससि हीन ॥
मुदित दीप राका दिवस। काम कामना कीन ॥
छं० ॥ ४०५ ॥ रू० ॥ १३५ ॥

दूहा ॥ चंद दरस गोपी बदन। गयौ समीप सु सज्ज ॥
धरक हीन तन छीन भौ। कला षोडसी भज्ज * ॥
छं० ॥ ४०६ ॥ रू० ॥ १३६ ॥

चौपाई ॥ फिरि फिरि चंद चंद विचारै। अैन गैन उप्पम बल हारै ॥
घटि बढि पंच दिसा फिरि आयौ। कवि मुष तौ सामित्त करायौ ॥
छं० ॥ ४०७ ॥ रू० ॥ १३७ ॥

कवित्त ॥ नगनि जोत उद्योत। बहुत सोहै बालं तन ॥
बिंद म्रगंमद रज्जि। तिलक चिलकै भालं घन ॥
अंग अंग की क्रांति। बाल ससि जोति प्रगासी ॥
कामी म्रग मारनैं। तिलक कैसार हगासी ॥
जग जोति जुवति जौवन बनिय। कनिय और कामिनि कहिय ॥
व्रजनाथ साथ गोपी मिलिय। राग रंग बंसी लहिय ॥
छं० ॥ ४०८ ॥ रू० ॥ १३८ ॥

---

१३४ पाठान्तरः—वंचि। वर। गृह। प्रमांन। वंसी। श्रवनं। सुंदर। पान ॥

१३५ पाठान्तरः—तजि। सिगार। मयूप। शशि। सुदित। कांम ॥

१३६ पाठान्तरः—दरासि। साज्जि। भाज्जि। साजि भजि ॥

* यह रूपक बूंदावाली पुस्तक में नहीं है।

१३७ पाठान्तरः—अरिल। अरिल्लः। चंद वंद। विचारै। अैन। गैन। अेन। गेन। उपम। हारे वाढि। सामित। कहायौ ॥

१३८ पाठान्तरः—कवतः। कवितः। यौति। जोति। उद्यौत। सोंहै। बालपन। बिन। विन। मृग। मृगद। राजि। तलक। त लंक। वाल। सजि। जोंति। प्रकासी। प्रगासी। कामि। मारनें। हगांसा। जोति। युवति। जोवन। बनिक। ओंर। व्रजनाथ। गोपी। राम। वंसी। वंसीय ॥

चन्द्रायना ॥

कमलति चंपक चारु, फूल मव बिद्धि फल। मरद गित्त समि सीस, मरुत्तच्छिवङ्गचल॥
भमर टोल झंकार, उडग्गन छिप्प छिप। ललित चौभंगी मद्धि, सबै लहि दीपअप॥

छं० ॥ ४०९ ॥ रू० ॥ १३९ ॥

जगतपत्ति रतिपत्ति प्रगट्टय मध्य मन। गोंपि असोकति कंगुर कचन पंति जन॥
बाल मुष्य कविचंद कि कंगुर चंद बनि। कंन्ह बिराजत बीच, सुमेर सुचंद तन॥

छं० ॥ ४१० ॥ रू० ॥ १४० ॥

दूहा ॥ दै कपाट रुक्की अवल। भइ बिहबल उडि हंस ॥
सहिय गोपि सुंदरि सकल। रस लुट्टैं वर बंस ॥

छं० ॥ ४११ ॥ रू० ॥ १४१ ॥

कवित्त ॥ जदपि सु पति धन हीन। दीन जौतेरु रोग वसि ॥
व्रिद्ध कुष्ट बिन रूप। हीन गुन्नेरु काम नसि ॥
गुंगा उध सुर अवन। बिकल मति तामस धारी ॥
ब्रह्म हत्यानि समूह। पुरुष गुन तदपि बिचारी ॥
उडगन समूह तप्पत जदपि। तदपि मुक्ति नन पत्ति रहि ॥
जं जोग भोग पति संग बर। त्रियन प्रंम उर गाह रहि ॥

छं० ॥ ४१२ ॥ रू० ॥ १४२ ॥

कवित्त ॥ पति मुक्कै सुनि पत्ति। बाल मुक्कै लच्छिय बर ॥
पति हित जो त्रिय क्रित्त। मान मुक्कै सु मोह धर ॥

---

१३९ पाठान्तरः—चद्रायना। चंद्रायणाः। चारु। फुल। मंत्र। त्रिधि। रित रिनि। मरूत। विनि। चलि। भवर। टौल। उडगन। छिप। त्रिभूंगी। मानि। सवै मवै। अपा॥ जो आज कल पवंगम नाम से प्रसिद्ध है वह यह चंद्रायना २१ मात्र ९ ताल और ११+१० पति का छंद है॥

१४० पाठान्तर—जगतपति। रतिपति। प्रगटय। गोंपी। गोपी। यमोकाति। वाल। वनि। कन्ह। विराजित। वीच। मेरु। मेरु। तनि॥

१४१ पाठान्तर—दोहा। दैवपाट। दै किपाट। रुकिय। अवल। भई। विहवल। गोपि। गोप। लुंट्टे। लुट्टे। वर। वंस॥

१४२ पाठान्तरः—कवित। कविताः। यद्यपि सुत पति धन हीन। जनेरु। गुनेरु। गंग। वंसि। वसि। वृद्ध। वृध। कंष्ठ। विन। गुण सठि। गुन मठ। काम। चिकल। समुह। गुण। विचारी। समुह। तदपि। मुकि। पति भोग। भाग। वर। प्रेम। प्रेम॥

१४३ पाठान्तर—मुके। पति। मुके। लछिय। जो। त्रीय। क्रित्र। मान। मुके। स।

जीव हित्त सुष हित्त। देषि जौति धर मुक्कै ॥
लाज जौति गुरजन (समू*) ह। मोह माया चित रुक्कै ॥
सा अद्ध काम कह कह करै। ध्रंम अध्रंमन दिष्षई ॥
चाहंत सब्ब वंसीय सुर। अंध काम नन विष्षई ॥
छं० ॥ ॥ ४१३ ॥ रू० ॥ १४३ ॥

चौपाई ॥ जिन आराध्यौ काम विनासं। गली गली वामा सुध नासं ॥
वनी रमंत रूप रस रंगं। अंकुरि वर केली मद नंगं ॥
छं० ॥ ४१४ ॥ रू० ॥ १४४ ॥

वृद्ध नाराज ॥

रमंत केलि कंन्हवाम चंपियं छतीमयं। विरीज कंन्ह हथ्थवाम लिज्जियं दुतीजयं॥
चमंकिता तडित्त मेषमद्धि जोति ठाहरी। दुति उप्पम चंद की कलं†कलंकताहरी॥
विराज प्रीत पीत वस्त्र दंपती सु नैन यौं। तडित्त मेघमध्य मौज इंद्रकौ धनुन्नयौं॥
छं० ॥ ४१५ ॥ रू० ॥ १४५ ॥

गाथा ॥ ग्रब्ब आदि लघु प्रेम। जं जं चित्तम्मि प्रेम अनुसरियं ॥
अप्पानं ऊ सहितं। मानं कीअ हित्त ऊ पुरुषं ॥
छं० ॥ ४१६ ॥ रू० ॥ १४६ ॥

मोह। हित। सुष। हित। जिती। मुकै। अधिक पाठ। मुह। मोंह। रुकै। ध्रम। अध्रम। दिषइ। दिषई। सब। वंसीय। काम। विषई। विषइ ॥

१४४ पाठान्तरः-अरिल। छंद। कांम। विनास। विणासं। गलिय। वासं। वनि। वानि। रमंत। रंगै। रंगे। अंकुर। वर। कोलि। मदमंगे। मंगे ॥

१४५ पाठान्तरः-छंद वृद्धनाराचः। कौलि। कन्ह। वाम। चंपीय। चंपीयं। वी। वि। रीयु। कुन्ह। हथ। वाम। लिजयं। लीज्जिय। हुती। चमकिता। तडित। तढित। मैघ। माधि। जौति। विराजि प्रीति। त्रीत। प्रीत। दंपाति। नेंन। यौं। यो। तडित। मेघ। माधि। कौं। धनु। नयौ। नयो।

† इस शब्द का प्रयोग विदित करता है कि कवि संस्कृत पढ़ा था और भागवत के "जगौ कलं वाम दृशा मनोहरम्" स्कं० १० । २९ । ३ के अर्थ और भाव मे उसने उसे यहा प्रयोग किया है।

१४६ पाठान्तरः-गाह। ग्रब। ग्रव। लहु। चित्तमि। प्रेम। अनुसरीयं। अप्पान। अप्पानं। उं। उ। मानं। हित। उ। उं।

दूहा ॥ रही रही हौं कंन्ह ढिग। चल्यौ चलन नह जाइ ॥
मो इच्छो प्रिय प्रेम बर। लै चलि कंध चढ़ाइ ॥
छं० ॥ ४१७ ॥ रू० ॥ १४७ ॥

गाथा ॥ बाला रत्त सुजानं। ता चित्तं करन लोपनं नथ्यी ॥
रत्तं बाल सुजानं। अप्पानं दाहए अग्गी ॥ छं० ॥४१८॥रू०॥१४८॥
बप्पे गुन गाहान। जं गुनप्पि माइं बंधए चित्तं ॥
हीनं सूर कमोदं। औगुनं जुता इकं ताई ॥छं०॥ ४१९ ॥ रू०॥१४९॥

गाथा ॥ दुद्धं सक्कर जुत्तं। विनै सहितं तूरूव साधिक्कं ॥
पंथं निगम सु ध्रंमं। ते बाला देव मुकंदं ॥छं०॥ ४२० ॥ रू० ॥१५०॥

दूहा ॥ चित्त स्वामि तन वाम तन। जड़ भौ मन गुन जड्ड ॥
गोवरधनधारी सुमन। अरु गोवरधन चड्ड ॥
छं० ॥ ४२१ ॥ रू० ॥ १५१ ॥

संषेपक जंपी सु कथ। माधव माननि मझ्झ ॥
जो चित हित्त विलवियौ। (सो *) हरि हर विद्धन सुभझ ॥
छं० ॥ ४२२ ॥ रू० ॥ १५२ ॥

इस रूपक के छंद के विषय में सर्वत्र यह ध्यान में रखना चाहिए कि कहीं तो इस को गाथा और कहीं गाहा नाम से वर्णन किया है। वास्तव में यह छंद वह कहाता है कि जिस को संस्कृत में आर्य्या कहते हैं। इस के अनेक भेद हैं किन्तु विशेष करके मात्रिक छंद आठ ताल और १२+१७ =२९ मात्रा अथवा १२+१५=२७ मात्रा का होता है। चंद कवि के इस महाकाव्य में इस छंद मे विषमता के भेद भी दृष्टि पड़ते हैं अर्थात् कहीं कहीं उन के दूसरे और चौथे चरण १९ वा १८ वा १६। १७ आदि मात्रा के विषम भी होते हैं ॥

१४७ पाठान्तर.—दोहा। दूहा। हो। हों। जाय। मों। इछो। इछों। प्रेय। पेम। "तो बूंदीवाली में अधिक पाठ है। लें। चढाय ॥

१४८ पाठान्तरः—गाहा। रत्न। रत। चिंत। करं। न। लोपन। नथि। नं। सु जान अपान। दाहये। अग्नि ॥

१४९, पाठान्तरः—चंपे। चपे। गुण। गुणपि। गुनपि। माइं। माडं। माड। बंधए। औगुण। ओगुन। जुत्ता। जिता। ताइ ॥

१५० पाठान्तर दुद्ध। दुरद्ध। सकर। युत। विनय। चहव। साधिक। पथ। ध्रम। वाला। मुकंद ॥

१५१ पाठान्तर—दोहा। चित। स्वामि। तवाम। भो। जड। जड:। गोवरधनधारी। गोवरद्धन। चड ॥

१५२ पाठान्तरः—संषेपक। जंपि। जंपीय। माननि। मझ। जों। चित्त। हित। विलवियो। (सो *) बूंदीवाली और ना० १७०० की पुस्तकों में अधिक पाठ है अन्य में नहीं। विधिन। सुझ ॥

त्रोटक* ॥ तन मीथल त्रंमन पंग बलं। जमभाति प्रस्वेद प्रकंप ढलं ॥
फिरि बैठि वधूवर रंग मिलं। जंपयौ सु कह्यौ व अनंग बलं ॥
छं० ॥ ४२३ ॥ रू० ॥ १५३ ॥

कवित्त ॥ मांग मुत्ति गंग तिलक। त्रय सु नेत्रह जट्टालट ॥
सित दुकूल बिभ्भूत। नीलकंठी नष तारट ॥
मुष भुवि चंद्र लिलाट। अमित वर माल माल मुति ॥
सेत सिषर आभ्रन्न। सब्ब सम दिष्षि सम्म दुति ॥
तह ईस हरिय हरनछ्छि अछि। आवद्ध जानि अड्डीक रिपु ॥
इहि विधि अबल्ल वर मुकति वर। पुरुष अवल मोरन्न अपु ॥
छं० ॥ ४२४ ॥ रू० ॥ १५४ ॥

दूहा ॥ अंतर दुष अंतर सुपन। जिय मन मजि गोपीय ॥
दरस देवि व्रजपति सु वर। दिषि आनन प्रिय कीय ॥
छं० ॥ ४२५ ॥ रू० ॥ १५५ ॥

कवित्त ॥ मोरपंष तन जलद। प्रीति कौ सेव देव उर ॥
गुंजहार तुलसी सु मार। उभयै सोभित चंद कर ॥
जलद बीच सुक पंति। भ्रंग रस दंडति लंबी ॥
मुरली सुर नट बाद। त्रिभग उर आयत कंबी ॥
नैव्रत आय गोपी हरी। नैन मुदित चामोद चर ॥
चर चारु चारु चर बर चक्रित। सो आपम्म उचार कर ॥
छं० ॥ ४२६ ॥ रू० ॥ १५६ ॥

१५३ पाठान्तरः—*चौपाई। त्रोट्टक। मिथल। चरन। चरण। मण। जंभाति। सुस्वेद। प्रस्वेद। टलं। वधुवर। व्रधूवर। जप्यौ। चरणंग। वरनग ॥

१५४ पाठान्तरः--कवित। मुत्ती। गंग। मैत्रह। जटा। मुत। दकूल। दृकूल। विभूत। विभुत। नष्ये। तरट। भुलि। माल। मुत्ति। सैत। आभून। सब। दिषि। मंम। सम। नह। इस। नछि। अलि। आवध। जानि। जा। अभ्रिक। आद्बिक। रिष। विवि। अंबल। अबल। वर। मुकति। बल। मोरंन्न। मौरन। अप। अष ॥

१५५ पाठान्तरः- दोहा। सुयत। सुयति। गौपीय। दरसन। दैव। ब्रजपति। सु बर। आनन प्रीय ॥

१५६ पाठान्तरः--कवित। कवित्तः। मौरपंष। पीत। को। जुगहार। तुरसी। उभै सुभित। सौभित। जलदं। वीच। बीचि। भृंग। भृग। रसं। मंडति। डंडति। मुरली। सुश्वर। त्रिभंग। आयौ। नैवृत। गौपी। नैंन। चारु। वर। सौ। औपम। उंपम ॥

दूहा ॥ वंसीबट विश्राम किय। सुरभी गोप सहाइ ॥
मन वंछित दीनौ चियन। सुर सुंदरि सच पाइ ॥
छं० ॥ ४२७ ॥ रू० ॥ १५७ ॥

दूहा ॥ मुक्कि रास मंडल सुचिर। बर अक्रूर सुजान ॥
मानहु मदन बसंत रितु। करि उछ्छव सुस्थान ॥
छं० ॥ ४२८ ॥ रू० ॥ १५८ ॥

विराज ॥

मषं विप्प भत्तं। सुयं स्याम पत्तं ॥ लियं ग्वाल सथ्थं। मधुन्नीर रथ्थं ॥४२९॥
सुनी जोषि कथ्थं। गही नथ्थ बथ्थं ॥ परो भूमि तथ्थं। मिलो कृष्ण सथ्थं ॥४३०॥
अचिज्जं सुकथ्थं। * * * * ॥ व्रजं ध्रंम धारी। सपत्त विहारी ॥ ४३१ ॥
मुषे संझ ओपं। व्रषं भेस रूपं ॥ कियं केस मद्दं। सुनी कंस नद्दं ॥ ४३२ ॥
मतं मत्त साधौ। सुषं चाप आधौ ॥ सुत्रं माल मंडी। प्रजापाल दंडौ ॥४३३॥
गयं दीस पुत्तं। अक्रूरं पवित्तं ॥ कथं कन्ह लग्गं। अहो मात भग्गं ॥४३४॥
रथं हेम सज्जं। चयं चक्र गज्जं ॥ सिरं कीट मंड्यौ। उरं माल पंड्यौ ॥४३५॥
न्रपं वाच मानं। इहं जीव ठानं ॥ व्रजे नंद रानं *। तहा जाइ आनं ॥४३६॥
बियं पुत्त चैनं। वासुद्देव ऐनं। सिता स्याम गत्तं। तहां देव पत्तं ॥४३७॥
व्रजं ग्राम तातं। अजं देव आतं ॥ हृदै जग्य सद्दं। लियं उच्च बुद्दं ॥४३८॥
तुमं रूप चायं। करौ अज्ज भायं ॥ रयं जाति जायं। चितं चित्त तायं ॥४३९॥
भले भाग मातं। हृदै चित्त रातं ॥ व्रजे व्रज्ज मग्गं। अयं क्रूर लग्गं ॥४४०॥

---

१५७ पाठान्तर –दौहा। वंसीवट। विश्राम। गोप। सहाय। नृपन। सुंदर। सचि। पाय ॥

१५८ पाठान्तर –मुक्ति। अंक्रुर। सुजानि। मानहु। मानु। मानो। [illegible]। उछ्छव। सुस्थान ॥

१५९ पाठान्तरः–मष। प्प। भतं। स्याम। स्याम। यत्तं। सथं। मधु। मन्। नीर। रथं। सुणी। जौषि। कथ। नथ। बथं। भुमि। तथं। क्रिष्ण। मथं। अनिज्जं। अमिजं। कथं। व्रजं। [illegible]। सपंत। सपते। संपत्ते। मुषे। औपं। उपं। [illegible]। व्रष। वृषोनम। भेस। कीयं। केस। मदं। नदं। मत। [illegible]। सुषं। [illegible]। डंडौ। गय। पुत्तं। अंक्रुर। अंकुरं। पवित्तं। कथ। कन्ह। लग। [illegible]। अहौ। [illegible]। [illegible]। सजं। चक्रं। [illegible]। कीट। नृप। वाच। [illegible]। *यह [illegible] [illegible] नहीं है। [illegible]। पुत। चैनौ। वसुदेव। [illegible]। स्यान। स्यान। [illegible]। पतं। आज। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। व्रजे। व्रजे। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]।

बने ब्रंद पथ्यं। पथे पथ्य हथ्यं।। चितं किन्न क्रिष्णं। म्रगे तिष्ण दिष्णं॥४४१॥
तज्यौ रथ्य भूमी। सिरं रेन झूमि *॥ बने बल्लि बल्ली। विचित्रं सुरल्ली॥४४२॥
धने दीह अज्जं। धने ब्रज्ज मज्जं॥ धने ब्रज्ज धारी। धने एक सारी॥४४३॥
धने गोप लच्छी। मुरारी सुरच्छी॥ उडी रेन संझं। दुजं देव मंझं॥४४४॥
व्रषभ्भान पुत्ती। गवं दोदुहत्ती॥ कुमं मीय चीरं। तनं हेम भीरं॥ ४४५॥
करं हेम दोही। निकट्टं ससोही॥ सिरं स्याम सेली। गवं दोह मेली॥४४६॥
दिठी दिठ्ठ लग्गी। उतक्कंठ भग्गी॥ निधं रंक रामी। लही ब्रज्ज भामी॥४४७॥
चरं नस्य मंडं। मनौ हेम डंडं॥ उठे कंठ लाई। मधू माध पाई॥४५८॥
चले नंद गेहं। जसोमत्त जेहं॥ कहे दुष्प सुष्पं। जदूनंद रुप्पं॥ ४४९॥
असूधार नंदं। चरंनस्य वंदं॥ जहे कंस गेहं। सहंभ्रंम छेहं॥ ४५०॥
उतप्पात पत्तं। ब्रजं लोक जत्तं॥ मई कंस मुज्जं। करे भोग भुज्जं॥४५१॥
रथं चार दष्यौ। गनै गोप सष्यौ॥ विलष्यौ सुमुष्यं। दम्यौ देह दुष्यं॥४५२॥
निसा जग्ग छंडी। उठं चंड चंडी॥ रथं जोति जंतं। वियं बंध मंतं॥४५३॥
दधी ग्वालगल्ली। समं नंद कल्ली॥ कियौ ग्रीव लत्ती। मनौ चंद पत्ती॥४५४॥
करेवा विचारं। निरत्ती निहारं † निहारं॥ * *। * *॥छं०॥४५५॥रू०॥४५५॥

दूहा॥ अभिनव विरह विलाप चिय। दिष्यन नंद कुमार॥
निरगुन गुन बंध्यौ सकल। मनु पंछिय परिहार॥
छं०॥ ४५६॥ रू०॥ १६०॥

लगं। विनं। वनं। वृंदं। पथं। पथै। पथ। हथं चिन। कान। क्रिन्न। कृष्णं। त्रिष्णं। मृगै। दिष्णा दिष्णं। रथ। भूमि। रेंन। झामि। * बूंदीवाली में नहीं है। वंने। वालि। वली। वचित्र। मुरली। धंने। अजं। धंनै। वृज। मंडं। धनै। वृज्ज। धनै एक्क। वनै। गोप। लछी। सुरछी। नै। सझं। देव। वृषे। वृप। भान। दोदुहनी। वीर। तनम। भीर। दोहा। निकटं। ससौही। कर। श्याम। सेंली। गर्व। मैली। दिठि। दिठ। उतकंठ। भगी। निध। वृज। वृज। चर। निरष। मड। मनों। हैम। लाइ। मधु। मधु। पाइ। चलें। ग्रेहं। ग्रेहं। जसोमाति। जसोमाति॥ जेहं। कहे। सुप दुष। यदूनन्द। रूपं। असुधार। नंद। चरनस्य। वंदं, कहे। ग्रेहं। ग्रेहं। सहभ्रंम। छेहं। उतपात। पतें। वृज। वृजं। लोक। जतें। भइ। संक। मुजं। करें। भोजभुंज दिष्यौ। दष्षे। गने। सष्यै। सष्यौ। मुष्यौ। मर्ग। दस्यो। देह। सप्पौ। दुप। जग्ग। उठ। जोति। विय। मत। गली। सम। कली। कीयौ। लती। छती। मनों। पुती। करेव। निरती॥ † किसी में भी पाठ नहीं है॥

१६० पाठान्तरः—दोहा। अभिनित्र। विरह। विलाप। दिपन। नद। निरगुण। गुण। सनु। मनं॥

दूहा ॥ टगमग नयन सु मग्ग मग। विमग सु भुल्लिय भंग ॥
रथ हित सु हित सु स्याम हित। चित्त लिए मनु संग ॥
छं० ॥ ४५७ ॥ रू० ॥ १६१ ॥

दूहा ॥ व्रज हिम कुसलनि कुसल हुअ। जसु तन कुसलिन काम ॥
बिछुरन नंद कुमार चिर। सब भये धामनि धाम ॥ छं० ॥ ४५८ ॥ रू० ॥ १६२ ॥

विराज ॥ व्रजन्नाभि नैंनी। चितं चाप चैंनी ॥ जमुन्नेस कूले। ग्रहं बास भूले ॥ ४५९ ॥
अयं क्रूर ध्यानं। रथंगं बिहानं ॥ चितं चित्त बट्टी। इयं बाल पट्टी ॥ ४६० ॥
बधे रान कंसं। लगे दोष बंसं ॥ रहे जोति साई। सु लछ्छी सुहाई ॥ ४६१ ॥
हसे द्दिष्पि मुष्पं। हुआे हीय सुष्पं ॥ भए भेषथाई। सिरं सेष साई * ॥ ४६२ ॥
जलं केलि न्यानं। दिठे क्रिष्ण ध्यानं ॥ चतुर्बाह चारं। किरीटी सुहारं ॥ ४६३ ॥
पियं पट्ट कट्टी। गदा चक्र तुट्टी ॥ नियं पानि कंवं। सयं सेन अंबं ॥ ४६४ ॥
अहो धीर जट्टौं। धरं क्रूर सट्टौं ॥ कला कंस केही। नियं ब्रह्म देही ॥ ४६५ ॥
गई चित्त बीरं। रथं पानि तीरं ॥ चले क्रूर संगं। हरेराम रंगं ॥ ४६६ ॥
मधूरी सु दिट्ठी। सुपं स्याम इट्ठी ॥ * * । * * ॥ छं० ॥ ४६७ ॥ रू० ॥ १६३ ॥

दूहा ॥ वारौ विद्रुम सद्रुम द्रिग। लगि जगि नंद कुमार ॥
मनु विगास फुल्लिय कुसुम। इय कवि चंद उचार ॥
छं० ॥ ४६८ ॥ रू० ॥ १६४ ॥

---

१६१ पाठान्तरः—टग टग। सु। गम मग। मग टग। भुलिय स्याम। चित। लये मनों। मनौं ॥

१६२ पाठान्तरः—बृज। हीय। कुशलन। कुशल। कमल। हुय। कुशलन। काम। धामन। धाम ॥

१६३ पाठान्तर—बृज। नेनी। चौनी। चैन। जमुनैम। जमुनेम। गृह। भूले। अयक्रूर। ध्यानं। रथग। बिहानं। चित। बटी। इय। बाल। पटी। बंधे। कर्मा। लंगे। लगी। दोष बंसी। रहै। जौतिसाई। जोतिसाइ। लछी। सुहाइ। हसे। दिपि। मुषं। हुओ। मुषं। भेष-थाइ। सिरसैषसाई। जल। केलि। न्यानं। कृष्ण। किष्ण। ध्यान। चतु। बाह। कीरीटी। सुहार। पिय। पट। कटी। गहा। तुटी। पान। पानी। सेन। अहो जटी। धरे। सं। सट्टो। केही। नियं। देही। गए। चित। बीरं। पान। चले। क्रूर। संग। रंग। मधूर। मधुर। दिष्ट। इष्टं ॥

* [illegible] पुस्तक में यह छंद ४६६ के आगे है ॥

१६४ पाठान्तर—[illegible]। [illegible]। विद्रुम। [illegible]। [illegible]। विगास। फुल्लिय। फुल्लिय। [illegible]। कुसुम ॥

बने ब्रंद पथ्थं। पथे पथ्थ हथ्थं।। चितं किन्न क्रिष्णं। मृगे तिष्ण दिष्णं॥४४१॥
तज्यौ रथ्थ भूमी। सिरं रेन झूमि *॥ बने बल्लि बल्ली। विचित्तं सुरल्ली॥४४२॥
धने दीह अज्जं। धने ब्रज्ज मज्जं॥ धने ब्रज्ज धारी। धने एक सारी॥४४३॥
धने गोप लछ्छी। मुरारी सुरछ्छी॥ उडी रेन संझं। दुजं देव मंझं॥४४४॥
व्रषभ्भान पुत्ती। गवं दोदुहत्ती॥ कुसं मीय चीरं। तनं हेम भीरं॥ ४४५॥
करं हेम दोही। निकट्टं ससोही॥ सिरं स्याम सेली। गवं दोह मेल्ली॥४४६॥
दिठी दिठ्ठ लग्गी। उतक्कंठ भग्गी॥ निधं रंक रासी। लही ब्रज्ज भामी॥४४७॥
चरं नस्य मंडं। मनौ हेम डंडं॥ उठे कंठ लाई। मधू माध पाई॥४५८॥
चले नंद गेहं। जसोमत्त जेहं॥ कहे दुष्प सुष्पं। जदूनंद रुष्पं॥ ४४९॥
असूधार नंदं। चरंनस्य बंदं॥ जहे कंस गेहं। सहं ध्रंम छेहं॥ ४५०॥
उतप्पात पत्तं। ब्रजं लोक जत्तं॥ भई कंस मुज्जं। करे भोग भुज्जं॥४५१॥
रथं चार दष्यौ। गनै गोप सष्यौ॥ विलष्यौ सुमुष्यं। दस्यौ देह दुष्यं॥४५२॥
निसा जग्ग छंडी। उठं चंड चंडी॥ रथं जोति जंतं। बियं बंध मंतं॥४५३॥
दधी ग्वालगल्ली। समं नंद कल्ली॥ कियौ ग्रीव लत्ती। मनौ चंद पत्ती॥४५४॥
करेवा विचारं। लिरत्ती निहारं ✝ निहारं॥ * *। * *॥छं०॥४५५॥रू०॥४५५॥

दूहा॥ अभिनव विरह विलाप चिय। दिष्यन नंद कुमार॥
निरगुन गुन बंध्यो सकल। मनु पंछिय परिहार॥
छं०॥ ४५६॥ रू०॥ १६०॥

लसं। विंनं। वनं। वृंदं। पथं। पथै। पथ। हयं चिन। कांन। किन्न। कृष्णं। त्रिष्ण। मृगै। दिष्णा दिष्णं। रथ। भूमि। रेंन। झामि। * बूंदीवाली में नहीं है। वैन। वालि। वली। वचित्र। मुरलीं। धनै। अजं। धनै। वृज। मंडं। धनै। वज्ज। धनै एक्क। धनै। गोप। लछी। सुरछी। नै। सझं। देव। वृषे। वृष। भान। दोदुहनी। चार। तनम। भीर। दोहा। निकटं। ससोही। कर। श्याम। सेलीं। गवं। मेली। दिठि। दिठ। उतकंठ। भगी। निध। वृज। वृज। चर। निस्य। मड। मनों। हेंम। लाइ। मधु। मधु। पाइ। चलें। ग्रेहं। ग्रेहं। जसोमाति। जसोमाति॥ जेहं। कहें। सुप दुष। यदूनंद। रूपं। असुधार। नंद। चरनस्य। बंदें। कहें। ग्रेहं। ग्रेहं। सहधंम। छेहं। उतपात। पतं। वृज। वृजं। लोक। जतै। भइ। संक। मुजं। करे। भोजभुंज दिष्यौ। दषे। गने। सष्यै। सष्यौ। मुष्यो। मपं। दस्यौ। देह। सष्यौ। दुष। जग। उव। जोति। त्रिय। मत। गली। सम। कली। कीयौ। लती। छती। मनों। पुती। करेव। निरती॥
✝ किसी में भी पाठ नहीं है॥

१६० पाठान्तरः—दोहा। अभिनित्र। विरह। विलाप। दिपन। नद। निरगुण। गुण। सनु। मनं॥

दूहा ॥ टगमग नयन सु मग्ग मग । विमग सु भुल्लिय भंग ॥
रथ हित सु हित सु स्याम हित । चित्त लिए मनु संग ॥
छं० ॥ ४५७ ॥ रू० ॥ १६१ ॥

दूहा ॥ व्रज हिम कुसलनि कुसल हुअ । जसु तन कुसलिन काम ॥
बिछुरन नंद कुमार चिर । सब भये धामनि धाम ॥ छं० ॥ ४५८ ॥ रू० ॥ १६२ ॥

विराज ॥ व्रजन्नाभि नैंनी । चितं चाप चैंनी ॥ जमुन्ने स कूले । ग्रहं वास भूले ॥ ४५९ ॥
अयं क्रूर ध्यानं । रथंगं विहानं ॥ चितं चित्त बट्टी । इयं बाल पट्टी ॥ ४६० ॥
वधेरान कंसं । लगे दोष वंसं ॥ रहे जोति साई । सु लच्छी सुहाई ॥ ४६१ ॥
हसे दिप्पि मुष्षं । हुओ हीय सुष्षं ॥ भए भेषथाई । मिरं सेष साई * ॥ ४६२ ॥
जलं केलि न्यानं । दिठे क्रिष्ण ध्यानं ॥ चतुर्बाह चारं । किरीटी सुहारं ॥ ४६३ ॥
पियं पट्ट कट्टी । गदा चक्र तुट्टी ॥ नियं पानि कंबं । सयं सेन अंबं ॥ ४६४ ॥
अहौ धीर जद्दौं । धरं क्रूर सद्दौं ॥ कला कंस केही । नियं ब्रह्म देही ॥ ४६५ ॥
गई चित्त वीरं । रथं पानि तीरं ॥ चले क्रूर संगं । हरे राम रंगं ॥ ४६६ ॥
मधूरी सु दिट्ठी । सुपं स्याम इट्ठी ॥ * * । * * ॥ छं० ॥ ४६७ ॥ रू० ॥ १६३ ॥

दूहा ॥ वारी विद्रुम सद्रुम द्रिग । लगि जगि नंद कुमार ॥
मनु विगास फुल्लिय कुसुम । इय कवि चंद उचार ॥
छं० ॥ ४६८ ॥ रू० ॥ १६४ ॥

१६१ पाठान्तरः—टग टग । सु । गम मग । मग टग । भुलिय स्याम । चित । लेंप मनों । मनों ॥

१६२ पाठान्तरः—बृज । हीय । कुशलन । कुशल । कमल । हुय । कुशलन । काम । धामन । धाम ॥

१६३ पाठान्तर—बृज । नेनी । चौनी । चैन । जमुनैम । जमुनेम । गृह । भूले । अयक्रूर । ध्यान । रथग । विहानं । चित । बटी । इय । बाल । पटी । बंधे । कर्मा । लंग । लगी । [illegible] बेनी । रहै । जौतिमाई । जोतिमाइ । लछी । सुहाइ । हसे । दिपि । मुषं । हंओ । सुषं । [illegible] थाइ । [illegible]नाई । जल । कलि । न्यानं । कृष्ण । [illegible] । ध्यान । चतु । बाहु । कीरीटी । सुहार । पिय । पट । कटी । [illegible] । तुटी । [illegible] । पानि । सेन । अहो जदो । धरो । [illegible] । सदो । केही । नियं । देही । [illegible] । चित । वीरं । [illegible] । चले । क्रूर । संग । [illegible] । [illegible] । [illegible] । दिष्टि । [illegible] ॥

* [illegible] पुस्तक में यह छंद ४६३ के आगे है ॥

१६४ पाठान्तर—[illegible] । [illegible] । विद्रुम । [illegible] । मनो । विगास । फुल्लिय । फुल्लिय । [illegible] । [illegible] ॥

सुजंगी ॥ कहूं अंब विद्रुम्म सीतल्ल छाया। कहूं वृष्य वट्टं निहट्टं सिलाया ॥
कहूं कीर कोकिल्ल नादं सुलीनं। कहूं केलि कप्पोत से बोल झीनं ॥४६९॥
कहूं बीय बिज्जौर पीयूष भारं। जुटी भूमि लुट्टी मनों हेम तारं ॥
कहूं दाडिमी चूव चिंचन्न चंपी। मनों लाल*मानिक्क पीरोज†थप्पी ॥४७०॥
कहूं सेव देवं करनं कलापं। कहूं पंष पारेव सारो अलापं ॥
कहूं नीवनाली अकेली षजूरी। पुलं काम झंडे मुहल्लै हजुरी‡ ॥४७१॥
कहूं ताल तुंगे सुचंगे सुचारं। कहूं काम लष्ये सुदष्ये विहारं ॥
कहूं चंप चंपी सु कंपीय वातं। कहूं जंबु जंभीर गंभीर गातं ॥४७२॥
कहूं नागवेली निवेली निवेसं। कहूं मालची घेरि भौंरं सुवेसं ॥
कहूं पांडरी डार पाछै विहारं। कहूं सेव तीसेव झेंनी मुझारं ॥४७३॥
कहूं अष्परोटे निहट्टे तिवेली। कहूं बील विद्दाम कादंम केली§॥
कहूं केतकी फूल दल्ली विगस्से। कहूं वंस विश्राम गंठी निकस्से ॥४७४॥

---

१६९ पाठान्तरः—कहुं। अंब। विद्रुम। सीतल। कहों। व्रिष। वटांन। हटं। हट्टं। कहों। कहुं। स. १७७० की में कहूं केलि कोकिल सोहिल हीनं। कहू कोइल बोल सोहलं झीनं ॥ स. १८९९ की में—कहों केलि कोथल्ल सो जल्ल भीन। कहूं काइल बोलि सोहिल्ल झीनं ॥ कहौ विजौर। व्रिजौर। पीयुष। जुटी। भुम्मि। लुटी। मनों। कहौ। चुअ। चूअ। चिञ्चिण। मनौ। मान्निक। मानिक। पीरोज। थपी। कहौ। सेव। देवं। करणं। कहौ। पारे। वमारौ। अलापं। कहौ। नीव अकली। पजुरी पुले। झंडे। मुहले हजुरी। कहौ। त्रुंगे। कहौ। कौमि। कांम। लषे। दपे। दपे। कहौ। वातं। कहौ। जंवु। जंभीरं। कहौ। नागवेली। निवली। निवेसं। कहो। कहौ। घैर। वेर। भौरं। भोरं। सुदेसं। कहौ। पड्डरी। पंडरी। पडरी। पडुरी। छप्पै। पछै। विहारं।

* हिं० लाल (सं० लल् वा लड्) लालरंग का वाचक राधालालजी ने अपने हिन्दी शब्द कोष में माना है अत एव लालरंगवाले रत्न का वाचक भी अनेक प्राचीन कवियों ने प्रयोग किया है ॥

† हिं० पीरोज (सं० पिरोज तथा पेरजं तथा। पेरोजं=उपरत्न विशेष) उपरत्न पिरोजा ॥

‡ हिं० हजुरी (सं० सजुः वा सजुस् = स with जुष to please) Associated, an associate or companion with, together with

§ ये तीन पाद बूंदीवाली पुस्तक में नहीं है। अषरोटे। निहटेन। विद्याम। कहौ। केतकी। केलि। केली। दली। विगसै। विगस। विमसे। कहौ। वंस। विश्राम। निकसै। निकसे। वर। वरि। वेर वंद्रीव। पुकारे। कहौं। मौर। टैर। सुहैरं। विहारे। कहौं।

कहूं बेर बद्दीव पंषी पुकारं । कहूं मोर टेरी सुझेगी विहारं ॥
कहूं मार संसारि सारन्न सोरं * । मनों पावसी बुट्टि दादुल्ल रोरं॥४७५॥
कहूं सेंसिषंडी सुषंडान फुल्ली । कहूं लुंभि लोंगी रही बेलि फुल्ली ॥
कहूं अप्प आसोक तें सोक हीनं । दिषे आसिषं रूप तामं प्रवीनं॥४७६॥
कहूं दाडिमी पिंड पज्जूर झुल्ली । कहूं मालची मल्ल भर भार भल्ली ॥
हसे स्याम वलभद्द अक्रूर कुब्बी । जहां कूबरी रूप पेषंत भुब्बी॥४७७॥
दई मालिया आनि सौदाम दानं । भयं रंजकं सब्ब सुं हाल कानं॥
रची मंडली गोप व्रजलोक वासी । गए जग्गसाला तहां धनुष चासी ॥
छं० ॥ ४७८ ॥ रू० ॥ १६५ ॥

दूहा ॥ धनुष भंग कीनौ सु प्रभु । वर बजि गब्ब हतीस ॥
विमल लोक मधु पुरि परिय । विहसत स्वामि सदीस ॥
छं० ॥ ४७९ ॥ रू० ॥ १६६ ॥

रंग भंग मंडप उथपि । अरु धनुक्क तिन थान ॥
मानों थान कपाव की । लीला ही हति आन ॥
छं० ॥ ४८० ॥ रू० ॥ १६७ ॥

मधुरिपु मधुरित मधुर सुप । मधु संमत मधु गोप ॥
मधुरित मधुपुर महिल सुष । मधुरित नयन स ओप ॥
छं० ॥ ४८१ ॥ रू० ॥ १६८ ॥

गोप निरष्पत सुभ चिय । रूप सरूप रसाल ॥
भगति भाव हित चित्त धरि । हिये हरष्पहि बाल ॥
छं० ॥ ४८२ ॥ रू० ॥ १६९ ॥

सोर । मारान । सारोन । सोरं । मनो । पावसी । बुठ । वुट्टि । दादुल्ल । रोर । कहौ । मे । सुषान । सुषानं । [illegible] । लवुली । कहौ । लुभि । लागी । वेलि । झुल्ली । कहौ । अप । आसोक । ते । ते । सोक । दिषे । [illegible] । कहौ । पिंड पजर पज्जुर । पजुर । झुल्ली । कहौ । मल्ल । मल्ल । भार । मेर । भेलि । झुल्ली । हसै । स्यान । वलिभद्र । वलभद्र । अक्रर । कुब्बी । कबरी । पेषत । भुब्बी । दउ । मालिया । आनि । सोदाम । रजक । सुहाल । नेहाल । सव । सुनी । सुनिय । गोपी । [illegible] । जिग । जग । जग्य ।

* [illegible]

१६६ [illegible] दोहा । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । पुर । [illegible] । स्वामि ।
१६६ । अरु । [illegible] । धनुक । थान । मानी । [illegible] । आनि । [illegible] । [illegible] । मंत ।
[illegible] । मधुपुर । नैन । [illegible] । [illegible] । १६९ [illegible] । सुभि । हितु । चित । हिये हरष्पहि । [illegible] ।

दूहा ॥ गौषनि गौष गवष्प गुरु । गोधन गो विस्तार ॥
गोरुचि गोपति गुपति मन । रुचि रोचन भरि थार ॥
छं० ॥ ४८३ ॥ रू० ॥ १७० ॥

त्रोटक ॥ ततथाल तिथाल तियाप तियं । पहु पंजुलि अंजुलि लै मुतियं ॥
निज नेह सुनेह जनेह लियं । अरि अभ्रति सुभ्रति संजतियं ॥ ४८४ ॥
परक्रत्ति पराक्रम पंथ नियं । निज नथ्थन मेषनि कुंज नियं ॥
व्रिदवड्ड सुवड्ड सु पुब्ब जियं । गुरु मात पिता भय नां लजियं ॥ ४८५ ॥
नृप चंदन बंदन बंद तियं । असु नंदन नंद सुनंद तियं ॥
किल किंचित कंज मनोहरियं । मथुरं मनि माथुर सौ हरियं ॥ ४८६ ॥
द्रिग दासिय कंसति श्री षंडयं । रथ अप्पति श्री लषि मंडनयं ॥
ग्रह ग्रेह निग्रेह सु बद्दियं । बसुदेव सुतेव सुकुंज तियं ॥
छं० ॥ ४८७ ॥ रू० ॥ १७१ ॥

दूह ॥ प्रति सुंदरि सुन्दर तनह । सुंदर सुभति सनेह ॥
सुंदर त्रिभुवन पुरष पहुँ । निज आवन तुअ ग्रेह ॥
छं० ॥ ४८८ ॥ रू० ॥ १७२ ॥

सकल लोक व्रजवासि जहँ । तहँ मिलि नंद कुमार ॥
दधि तंदुल मंजुल मुषह । किय विय बंध अहार ॥
छं० ॥ ४८९ ॥ रू० ॥ १७३ ॥

प्राची रवि रत्तल दिसह । बजि दुंदुभि तिय नंच ॥
अषिल अपार अषंड लिय । रुचि सुभ मंजुल मंच ॥
छं० ॥ ४९० ॥ रू० । १७४ ॥

गौपन । गौप । निर । गवप । गुरू । गौ । धनु । गौ । गौरचि । गौपति । रौचन । थाल । १७० ॥

१७१ पाठान्तरः- त्रौटिका । त्रोटक । तिथाल । नियं । पहुं । पंयुलि । मंजुलि । निजु । नैह । सुनैह । जुनेह । अभित । सुभ्रित । परक्राति । निजु । निथिन । नथ । निमेषन । क्रुज । सपुत्र । पिता । जलियं । त्रपि । नृपि । चद । अशु । त्रियं । कलकिंचति । किलकिंचत । मनोहरयं । कंस । मन । सौ । दृग । दासीय । कंपति । पॅडय । मंडतयं । ग्रैह । न ग्रह सवद । वसुदेव । सुतैव । सकुंज ।

१७२–१७९ पाठान्तरः—दौहा । सुन्दर । सुन्दरः । सुदरि । सुभंति । सनैह । पुरिष । पहु । आवतनउ । त्रुहि । गौह । १७२ । लौक । जिहा । जहा । तहा । तहा । विय । वंध । १७३ । प्रावी । रतल । दुदुंभि । असार । अपंड । रवि । १७४

प्रजा पसंसत भेट दधि । अरु सिर परसत पग्ग ॥
घट गुन प्रभु बलिभद्र सम । हरि मिलि गोचर लग्ग ॥
छं० ॥ ४९१ ॥ रू० ॥ १७५ ॥

राज सुराजत मातुलह । मत लहि अतुल प्रहार ॥
कुवलय गज मुह लय मुदित । विदित बली दरबार * ॥
छं० ॥ ४९२ ॥ रू० ॥ १७६ ॥

दिठि बल दिन बालक बिहसि । कुसलिय कुसदिव गब्भ ॥
सुत रोहिन रोहित रिसह । दिठ दिग लग्यौ अब्भ ॥
छं० ॥ ४९३ ॥ रू० ॥ १७७ ॥

व्रज सरनागत बसत व्रज । व्रज कहि संगै मग्ग ॥
हम गज दिट्ठ निरप्पयो । निमष उसारहु पग्ग ॥
छं० ॥ ४९४ ॥ रू० ॥ १७८ ॥

रिस लोचन रन रत्त किय । रत्तंमर व्रजपाल ॥
रति रत कंस उदंसि सिष । क्रिस पंचित निय काल ॥
छं० ॥ ४९५ ॥ रू० ॥ १७९ ॥

भुजंगी ॥ मदं भारि भूरंग रूरं गरज्जं । अहो बाल बालं तिवारं बरज्जं ॥
अथं बाद वद्दं पथं पीलुवानं । ठिलैं ठद्द नट्टें जुधं जूं जुं थानं ॥४९६॥
कटिं पट्ट पीतं सिरं स्याम सेली । मिता नील्न बमनाय दमनाय केली॥
धरै मोरछत्तं सुवज्जंत फूलं । हसै विक्कसे मुप्प गेनं गहल्लं ॥ ४९७ ॥
गली गंड संडील पंडी अपारं । नटी जानि बंसी सुत्तुक्की विहारं ॥
पथं पात भूमि सुभूमी जु थानं । दिठी कंस लग्गी सुवज्जं निसानं॥४९८॥

हतं हंत हंतं हहत्तं सुरष्पं । प्रसिद्धे पुरानं प्रसादं पुरुष्पं ॥
दुवं वैर पुब्बं दनं देव पछ्छी । मदं जे छिदं ते छिदै जानि लछ्छी॥४९९॥
हरन्नछिछ्छहारी विहारी सुगोपं । विरंनष्पि वैरी जदों जावि कोपं ॥
रमे रास किष्णं गजं केलि मंडी । तमं तेज तेजं तपैता चिषंडी ॥५००॥
हुअं हूअ हक्कं सुभाषं सुचारी । अहो माधुमाधं अजुत्तं निहारी ॥
किसोरं किमावर्त गातं सुक्रीसं । वपं एस वल्लं मदोमत्त दीसं ॥ ५०१ ॥
छुटे पट्ट पीतं कियं किष्ण रोसं । वलीभद्र भद्रं अनूंजा नितोसं ॥
तुअं बालवुद्धं न सुद्धं सु देहं । गही पट्ट षंचै सु अछ्छै सनेहं ॥५०२॥
मनों संकला हेम तें सिंधु छुट्टं । गही सिंधु बल्ली [भद्र] धपी धाम पुट्ठं
गही पुंछ फेरे सिरं तीन वारं । उड्यौ हंस हंसीन भूमी प्रहारं ॥५०३॥
दुवं बंध दंतं धरे कढ्ढि कंधं । लगी श्रोनि छिंछं मनों गुंज बंधं ॥
हतें गज्ज गज्जै दुवं मल्ल मल्लं । परी रौरि पौरं प्रसारं बिहल्लं ।५०४॥
मिले रंग भूमी बलंराम किस्नं । नवं रंग दिष्षी तनं तेज तिस्नं ॥
बदी बाय चानूर मामल्ल जुद्धं । रनं राज अग्या सु मेटौ विरुद्धं ॥५०५॥
समं डोरि बंध्यौ निबंध्यो निबंध्यो । हमं जोति तेजं मिलं मुत्ति संध्यो॥
छं० ॥ ५०६ ॥ रू० ॥ १८० ॥

१७८—पाठान्तर—भुरग । रजं । अहौ । वलं । वरजं । अय । बदं । पय पीलवांनं । ठिलै । टिलै । ठट । वट्ट । नदै । नटें । ज्वद्धं । जूज । जुजु । जूजु । कट । कटि । पट । सरं । स्याम । सैली । वमनाय । कैली । धरा । मैारमलंत । वाजत क्रूरं । हसे । विकसै । विकसे । मुष । गेंनं । गहूरं । गफूलं । अपार । जानि वंसी । सुचुकी । पय । भुमी । सुझुंमी । लगी । सुवज्जे । निसांनं । हत । हहूतं । सुरपं । प्रामिद्धे । पुरुष । बेर । पुवं । पुंव । दनु । दनुं । पछी । जै । हृदतै । ह्रदे । जांनि । लछी । हरनांछि । मगोपं । विरंनापि । वैरीं । जदो । कौपं । रमै । तैजनैजंतपैता विषंडी । तपेता । हुंअ । हुह । हकं । सुंभापं । सुचारी । अहौ । मानं । अयुतं । किसोरं । कूसावरत । बलं । मदौमत । छुटे । पट । क्रिष्ण । कृष्ण । रोंस । अनुजा । नितोंसं । तूअं । षट । षंचे । अछे । सनेहं । मनौ । मनौं । हेमते । सिध । सिव । छुटं । सिंध । बली । * अधिक पाठ है ॥ धापि । धम । पुट्ट । पुठं । पुछ । फैरे । दुयं । बंध । कढि । काढ्ढि । काटि ओन । छछं । मनौ । गुज । हतै । हतें । गज राजे । गजगज्जै । दुअ । दुअं । मल । मल । प्रसाद । विहलं । मिलै । भुमी । वल्यं । बल किष्णं । तिनं । तैज । तिष्णं । चाप । पाय । चानुर । मामल । युद्धं । रण । मैटौ । मेटो । विरुद्धं । डोरि । निवंध्या निवंध्या । जौति । तैज । मुति ॥

* हिं० पीलुवानं (सं० पीलु, An elephant and, वान, going, moving or driving) Hence an elephant driver

दोहा ॥ हम बनचर बालक सुव्रज । तुम जुध मल्लनि मल्ल ॥
अपति जुद्ध तुम प्रति करहि । बिहतन होइ न बल्ल ॥छं०॥५०७॥रू०॥१८१॥
प्रथम मत्त गजराज दर । दस सहस्स बल ताहि ॥
सो अग्या बल छीन भौ । लीला ही हति ताहि ॥छं०॥५०८॥रू०॥१८२॥
हति रूपति गजराज भौ । मंच सुमंडिय कंस ॥
चानूरह मुष्टिक बलिय । सुकति समप्पन अंस ॥छं०॥५०९॥रू०॥१८३॥

कवित्त ॥ स्त्री निकेत तन स्याम । पीत कौ सेव देय दुति ॥
धूंमकेत बर जलद । काम उदित सु कोट रति ॥
नयन उदय पुंडरिक । प्रसन अमरीय सुराजै ॥
गुंजहार जंजरित । तडित बहरि सु बिराजै ॥
नहिं बाल वृद्ध किस्सोर तुअ । धुअ समान पै डिडपरौ ॥
पावै न जोग जोगी जुगति । किन गुन तुम गुन बिस्तरौ ॥
छं० ॥ ५१० ॥ रू० ॥ १८४ ॥

साटक ॥ किंवा जोग सहस्स कोटित गुना, आवै न ध्यानं उरं ।
नैवानं सनकादि रिष्य बहुलं, ना ब्रह्म कर्म्मं गुरं ॥
किं किं जै बर गोकलेस हरि सो, कष्टं घनं अद्भुतं ॥
किं निर्मीय सु बालयं अभिनवं, नी तोय बानी बदं ॥छं०॥५११॥रू०॥१८५॥

दूहा ॥ पुब्ब स्राप सम दिट्ठ करि । वचन ति लच्छिय काज ॥
दर दर बानी देव गुरु । रोकि देव सिर ताज ॥छं०॥५१२॥रू०॥१८६॥

१८१–१८३ पाठान्तरः—दोहा । बनवर । बचनचर । बालिक । वृज । वृज । पुव । मल्लन । मल । अपात्ति । युद्ध । युध । होइ । नबल ॥ १८१ ॥ मत । महश्र । मे । छान ताही ॥ १८२ ॥ रूपति । फिर । जहा । मच । क्रम । चानुरह । मुष्टक । बल्यिं ॥ १८३ ॥

१८४ पाठान्तरः—निकेत । नकेत । स्रेन । स्याम । को । सेव । गति । धुमकेत । काम । उदित । कोट । अमरीत । बहरि । नहे । किस्सोर । तुव । धुअं । समान । पे । दिट । उट । जोग । जोगी । जुगति । गुण ॥

कवित्त ॥ एक समै रुकि लछि्छ । रोहितह ब्रह्म ब्रह्म सिसु ।
सनक सनंद रु सनत । सकल रुक्के सु पवरि उसि ॥
तिन सराप भयो पतन । वैर भावह हरि किन्नौ ॥
हरनकस्स हरनछि्छ । इक्क अवतारह लिन्नौ ॥
अवतार एक सिसुपाल भय । दंतवक्र रुकमनिवयर ॥
रावन्न कुंभकरनह बलिय।चित अवतार सुमंत भर॥छं०॥५१३॥रू०॥१८७

स्लोक ॥ पूर्वशापं समंदृष्ट्वा स्वामिवचन प्रीतये ।
क्रोधमुक्तश्चाविनाशी पीडितो गजराडयम् ॥ ५१४ ॥ रू० ॥ १८८॥

गीतामालची ॥ गजराज दंतिय अमति कंतिय मद्द मंतिय कीजयं।
बल कन्ह अग्गै करिन भग्गै रोस रंगै नीलयं ॥
फहरंत पीतं बल अभीतं भीम भीतं संजुरे ।
गहि दंत पंतिय कंध कंतिय रोस मंतिय उब्भरे ॥
त्रियषट प्रमानं बल बलानं सेन मानं दुत्तरे ।
दिषि कंस सैनं काल ऐनं हथ्थ गैनं भब्भरे ॥छं०॥५१७॥रू०॥१८९॥

भुजंगी ॥ न बालं न बालं किसोरं न तोही । न वृद्धं जुवानं न ब्रन्नं न जोही ॥
हतं दंत दंतं विषं बीर बुल्ली । धरे कंध दंतं रनै नेच षुल्ली ॥ ५१८॥
वलंतो बलिंद्री वजानं न देवं । न ब्रन्नं न देहं न सैसं न सेवं ॥
महा भाग भागं जुरं जष्पवेवं । दियं दिष्ट मल्लं सुमुष्टीक एवं ॥
छं० ॥ ५१९ ॥ रू० ॥ १९० ॥

त्रिभंगी ॥ रन रंगे थालं, जेहा कालं, लेहा मालं, चानूरं ।
तोसल त्रिसूलं, मुष्टिक थूलं, हस्त बिह्वलं, धूसल्लं ॥

---

१८७ पाठान्तरः—कवित । इक । रोहितह । व्रह्म व्रह्म । रु । रुकैसु । तन । भये । कीनौ । हरणकसप । हरणकस्य । हरनछि । ईक । लीनौ । इक । भयं दतवत । रूकमनि । वयर । रावन । कुंभकरमह । त्रिना । त्रितय ॥

१८८ पाठान्तर.—पुर्व । पुव्व । श्रापं । दिष्टा । स्वामी । सु । प्रीतयं । मुक्तं । अविनासी । गजराज ।

१८९ पाठान्तरः—दंतीय । भूमत । मद । मंतीय । उभरे । नैनं । ऐनं । हत । गैंने । उभरे ॥
१९०पाठान्तर.—वालं । वजानं । वूनं । सूली । देहं । वर्ण । शस । जरका । स ॥

रन रंग गतानं, मेलि मिलानं, अंग समानं, झमकंते।
धव धूसर दंते, मन हर धंते, रज विलसंते, बलवंते॥
चव गज्ज सतानं, जम सम पानं, बलि बलवानं, बोलंते।
रन रत बैनं, वहु बल मैनं, कन्ह समैनं उचरंते॥
आवत्तंति हल्लं, मं पप गल्लं, बज्जन मल्लं, झ झल्लं।
धर धर थर हल्लं, पीपर पल्लं अंमर हल्लं, भू भल्लं॥
बज्जियते भूलं, हस्त विकूलं, गेंने हूलं, गैतूलं।
गैगर गत्तानं, घन वत्तानं, परि वथ्थानं, मल्लानं।
धम धम लत्तानं, वह गत्तानं बजिबिन्नानं, उभ्भानं॥
सक्के घन वल्ले, छुति धूसल्ले, कीन विहल्ले, झ झल्ले।
अन रोम रिसल्ले, रंग रिझल्ले, जिन बल झल्ले, धरहल्ले॥
कसि डोरिय भेवं, हल धर छेवं, हवि बत भेवं, द्वै वीरं।
चानूरं सक्कं, धरि मुष्टिकं, तत गुर वक्कं, बल नीरं॥
कटि थान परंसं, पापित कंसं, जीनि जुगंसं, गिरदंते।
अन पग्ग पुलंते, सास उलंते, मन दम धंते अनधंते॥
तरवर संतज्जे, आयत वज्जे, घाये गज्जे, भैभानं।
दोऊ तन वीरं, जम्म सरीरं, वधि गुनितीरं, विधि भानं॥
गुरु जन विरझानं, वह असमानं, धर धर थानं, बजिपानं॥
उप्पारे पग्गं, ब्रह्मांड लग्गं, फिरि फिरि जग्गं, सिर भग्गं॥
फिरि कंसं दिप्पिय, आचिज लष्षिय, जग सह भष्षिय, तपितानं।
आतम गुरु पानं, तजि उभ्भानं, चंपिय कानं, सिर भानं॥
उच्चारहि वीरं, वह व्रत नीरं, जम्म सरीरं, जुग भीरं।
कसि कसि उत्तंसं, डोरिय दंसं, करि रिपुनंसं, त्रिनुहीरं॥
छं०। ५३३॥ १८१॥

दूहा ॥ हहकारत मनलल सुभर। अति बल दिन बल बीर ॥
सुर नर नाग निबद्ध नर। भई कुलाहल भीर ॥
छं० ॥ ५३४ ॥ रू० ॥ १९२ ॥

रसावला॥ उत्तमल्लंभरी। अत्ति धारं धरी॥जांनि मत्तं करी।होइ हायं परी॥५३५॥
घाय बज्जे घरी। गज्जि भद्दों भरी॥ मच्छ फलं टरी। भ्रम्म भ्रम्मं घरी ॥५३६॥
मल्ल भ्रुझ्झैं हरी। वारि स्वेदं झरी॥ मेघ लग्गं गिरी। हेम कंपं टरी ॥५३॥
हीय ता कित्तरी। प्रान पछ्छै लरी॥ जानि धक्कै धरी। उन्न उन्नं हरी॥४३८
धूरि भूमी भरी। डोर लग्गी ढरी ॥ श्रोन मुष्पं झरी। द्रोन द्रुग्गं परी॥५३९॥
मुट्ठ चुक्कं परी। राम कामं रुरी ॥ मल्ल भूम परी। कंस त्रासं डरी ॥५४०॥
मंच मुक्की मुरी। धाय जद्दों धरी ॥ केस षंचै करी। * * ॥
छं० ॥ ५४१ ॥ रू० ॥ १९३ ॥

दूहा ॥ सत्तपुत्त बंधव सपत। लष्य असी गनि भृत्त ॥
काम आय बलिभद्र कर। कन्ह कंस नव हत्त * ॥छं०॥५४२॥रू०॥१९४॥

कवित्त ॥ राति कंस सुपनंत। कंध दिष्यौ न कंध पर ॥
बर ग्रिद्धव उच्चार। षोज लभ्भै न अंग उर ॥
चिन्ह हीन तन चित्त। बीर जग्यौ भ्रम षंडे ॥
मुकति बंस मति हीन। रंग मंडप फिरि मंडे ॥
चानूर बीर मुष्टक बलिय। तोसल्लह रन रंग सजि ॥
कलि काल म कलि काल गति। कलिय काल भंजन सुरजि ॥
छं० ॥ ५४३ ॥ रू० ॥ १९५ ॥

गजे। जंम्म। बंधि। विधि। छिरु। छह। उपारे। पगं। ब्रह्मअ। जगं। दिपिय। लषिय। भषिय। उभानं। चंपय। उछूछारहि। डोरिय। विन हंसं।

१९२ पाठान्तरः—हहकाराति। मलनि।

१९३ पाठान्तरः—मलं। अति। आधि। दुगि। करी। धुरी। मछ। मल।। झुझैं। कितरी। प्रान। पंछि। जानि धकैं। ऊन। उनं। द्रुग। मुठ। चुकं। झरी। मरी। मुकी। यद्दो। * * मेरे पास की किसी पुस्तक में पाठ नहीं है ॥

१९४ पाठान्तरः—सत। पुत। भृत। काम हत।

* यह रूपक सं० १६४७ की लिखित पुस्तक में नहीं है और उसके पीछे की सं० १८९८ वाली में है।

१९५ पाठान्तरः ग्रधव। उचार। मुगति। चाणूर। मुष्टिक। तोसल्ह ॥

दूहा ॥ जमुन सपत्ती कंस हति । विस्व विराजत साथ ॥
बर विश्राम विश्राम घट। धनि जदुनाथ सुहाथ॥छं०॥५४४॥रू०॥१९६

अरिल्ल ॥ मलन मारि पछारति कंसह । बंधव के रिपु केरि पुनंसह ॥
सूरसेन पुत्तिय सुत छंडिय । उग्रसेन सिर छत्रह मंडिय ॥ ५४५ ॥
जनम धाम वसुदेव देवकिय । किय बरपान प्रसन्न अंसु किय ॥
विप्रदान ग्रहगान सुमंडिय । कवि कविचंद इंद मुष वंदिय ॥
छं० ॥ ५४६ ॥ रू० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ हत्यो कंस केसी हत्यौ । काल ग्रहति जिन मात ॥
नंद कह्यौ नन्दादि सौं । जाहु ग्रेह अब तात ॥ छं० ॥ ५४७ ॥
जननि जसोदा सौं कह्यौ । राम किस्न संदेस ॥
ह्यां दधि मांषन चोरते । ह्यां हत कंस नरेस ॥ छं० ॥ ५४८ ॥
गोधन गोपी ग्वाल सब । सुष रहियो ब्रजबास ॥
दिन दस पाछें आय हौं । मात जसोदा पास ॥ छं० ॥ ५४९ ॥
बंसी बेत बपान बन । गेंद हौंगुरी जोरि ॥
धरियो सबै दुराय कै । लेइ न राधा चोरि ॥ छं० ॥ ५५० ॥
अंसुधार अंसुरार मुष । परत नंद सब गोप ॥
जो छांडि अब दीन करि । कत राषे जल कोप ॥ छं० ॥ ५५१ ॥
अघ बक धेनक चास तें । अरु दावानल पान ॥
कत राषे इन विघन तें । जमला अरजुन ठान ॥ छं० ॥ ५५२ ॥
इह कहि सब अंकन मिले । नंद गोप सब साथ ॥
पगन परत ब्रज जात मग । कहत सुनाथ अनाथ ॥ छं० ॥ ५५३ ॥
डग मगि पग पेडन चले । फिरि चितवै गोपाल ॥
का जाइ जसोदा कहैं । विना नंग ब्रजलाल ॥ छं० ॥ ५५४ ॥
जाइ जसोदा सों कह्यौ । रहे राम बलबीर ॥
सुनत जसोदा यों टरी । ज्यों तरु काटे नीर ॥ छं० ॥ ५५५ ॥
गोपी गोप गोपाल बिन । यों दीपत दीनंग ॥

१९६ [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

१९७ [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । छंद गाथ ॥

कहुं न मन माने निमष । ज्यों मनि बिना भुयंग ॥ छं० ॥ ५५६ ॥
सद माषन साटौ दही । धऱ्यौ रहै मनमंद ॥
षाइन बिन गोपाल को । दुषित जसोदा नंद ॥ छं० ॥ ५५७ ॥
प्रभुमाया फेरी प्रबल । सब लागे ग्रिह दंद ॥
पलन सुहाई राधिका । बिन ब्रंदाबन चंद ॥ छं० ॥ ५५८ ॥
घर अंगन गायन थिरकि । जमुना जल बन कुंज ॥
फिरत उचाटी सी भई । बिन बृंदाबन चंद ॥ छं० ॥ ५५९ ॥
वंसीबट बन बीथिकनि । दधि रोकन की ठौर ॥
नैकु न मानैं कहुं न मन । कहों कहां लौं और ॥ छं० ॥ ५६० ॥
लीला ललित मुरार की । सुक मुनि कही अपार ॥
ते बड भागी देव नर । जपत रहत नित्यार ॥ छं० ॥ ५६१ ॥
नंद तात पत्तौ सु ग्रह । सिसु बसुदेब प्रमान ॥
कोइ कला मथुरा सु बसि । चलि द्वारिका निधान ॥छं०॥५६२॥
मधु मंडित मधु पुरित मधु । मधु माधुर सु अजोग ॥
कवि बरनिय सुर स्वामि को । कहत दसम संभोग ॥
छं० ॥ ५६३ ॥ रू० ॥ १९८ ॥

भुतिचाल ॥ बाले जसोदा मतिलीले । कंस काले सुकाले ॥
जसोमति नंदा गोप बंदौ । कंदा गुठ्ठिगो बाल चंदौ ॥
दीन बंदौ न बंदौ । जयौ बासुदेव नन्दा ॥छं०॥५६४॥रू०॥१९९॥

बौद्धावतार की कथा ॥

दूहा ॥ उतपन कीकट * देस कलि । असुर जग्य जय हारि ॥
जय जय बुद्ध सरूप सजि । है सुर सिद्धि सुधार ॥छं०॥५६५॥रू०॥२००

१९८ पाठान्तरः—सौं ॥ ५४७ ॥ सुं । मान्यो ॥ ५४८ ॥ रहीयो । पाछे । आइहो ॥ ५४९ ॥ वठ । गिद । हिंगुरी । हिगूरी ॥ ५५० ॥ असुरार । असरार । छाडें ॥ ५५१ ॥ पांन । ढान ॥ ५५२ ॥ कहा । कहें । विना ॥ ५५३ ॥ सौं । यो ॥ ५५५ ॥ विन । दिपत । हीनंग । निपम । विना ॥ ५५६ ॥ मापन । विन ॥ ५५७ ॥ फिर । बृंदावन ॥ ५५८ ॥ थराकि । वन ॥ ५५९ ॥ नेकुं । लों ॥ ५६० ॥ नित्यार ॥ ५६१ ॥ पत्तौ । प्रमाण । निवांन ॥ ५६२ ॥ स्वामि । कों ॥ ५६३ ॥

२०० पाठान्तर· ककट । किकट ॥

* श्रीमद्भागवत पुराण में बुद्ध की उत्पत्ति " कीकट " में होनी लिखी है—

विराज ॥ जयो बुद्ध रूपं । धरंतं अनूपं ॥ हरी वेद नंदे । दया देह बंदे ॥
परूहंत रष्पे । कियं भष्पभष्पे ॥ जयं जग्य जोपं । कियं दक्ष भोपं ॥
छिगंया विहारं । सुरष्पे दायरं । असूरं सुगत्ती । पहं रष्पिपत्ती ॥
कला भंजि कालं । दया ध्रंम पालं ॥ सुरं ग्यान मत्तं । प्रवत्ते सुजत्त
धरे ध्यान नूपं । नमो बुद्ध रूपं ॥ छं० ॥ ५७० ॥ रू० ॥ २०१

कल्कि अवतार की कथा ॥

दूहा ॥ कलि कलिंग उतपन असुर । हती ध्रंम धर भूप ॥
कलि कलिमल सों हरन हरि । कियौ कलंक सरूप ॥
छं० ॥ ५७१ ॥ रू० ॥ २०२ ॥

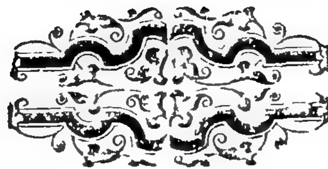
विराज ॥ भयं भूप लिंगं । अनीतं उतंगं ॥ बिपंनी दयारं । अधर्मं विच
कलंकं सुकालं । बिया पुच्छ आलं ॥ धरा ध्रम्म लोपे । चवं एक रोपै
वधि मेच्छ मत्तं । चितं काल रत्तं ॥ जगं वेद हारी । न ग्यानं बिचारी
नयं दान ध्यानं । मुपं जानि मानं ॥ नहो मन्न पूजा । न सोचं अनू
न जग्यं न जापं । सवै आप आपं ॥ न देवं न सेवं । अहं मेव मेवं
न गाहा न गीयं । न पत्थं सुचीयं ॥ न ग्रंथं न पुरातं । धरायन्न जा
धरे ध्यान सामं । कियं ग्यान तामं ॥ कलंकी सरूपं । धरंतं अनूपं ।
हयं स्याम रोहं । किरीटी ससोहं । जुगं बाहु चारं । मनीजोति ता
कटी पीत पट्टं । महा विष्प भट्टं । करे षग्ग धारं । विकट्टं करारं ॥
मुठी हेम सेतं । मनों धूमकेतं ॥ करे खग्ग धारं । असूरं प्रहारं ॥
कियं षंड षंडं । धरा पूर रुंडं ॥ धरं ध्रम्म चारं । पविचं विथारं ॥
कियं अग्र मत्तं । सुपोनी पविचं ॥ सुरं पुष्फ विष्टं । सुचारं सुतिष्टं
रचे मत्त जुग्गं । कलीकाल भग्गं ॥ कृतं सत्य नृपं । जया ता सरूप
छं० । ५८४ ॥ रू० ॥ २०३ ॥

उपसंहार का कथन ॥

दूहा ॥ राम किसन कित्तौ सरस । कहत लगै बहु बार ॥
छुच्छ आव कविचंद की । सिर चहुआना भार ॥
छं० ॥ ५८५ ॥ रू० ॥ २०४ ॥

कवित्त ॥ सिर चहुआना भार । राम लीला छिग गाइय ॥
सनक सनंद सनत्त । कही सुकदेव न जाइय ॥
बालमीक रिषराज । किसन दीपायन धारिय ॥
कोटि जनम संभवै । तोय हरि नाम अपारिय ॥
मानुच्छ मंद मति मंद तन । पुव्वभार चहुआन सिर ॥
जं कह्यौ सलप मति सुलप करि । सुहरि चित्त चित्यौ सुथिर ॥
छं० ॥ ५८६ ॥ रू० ॥ २०५ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथीराजरासके दसावतार वर्णनं नाम द्वितीय प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २ ॥



२०४ पाठान्तरः—राम । छुछ । चहुवाना ॥
२०५ पाठान्तर —चहुवांना । राम । सुनद । नांम । मांनुछ । चहुआंने ॥

अथ दिल्ली किल्ली कथा लिख्यते ।

(तृतीय समय)

मंगलाचरण ।

चंद की अपनी स्त्री के प्रति उक्ति कि विधना ने दिल्ली सोमेसरनन्द के बसने को निर्म्माण को दै ॥

[श]ाटक ॥ राजं जा अजमेर केलि कलयं, बंढं व्रतं संभरी ।
जुद्धारा भर भोर मीर वहनौ, दहनौ दुरंगो अरी ॥
सो सोमेसरनंद दंद गहिला, वहिला वनं * वासनं ।
निम्मानं विधना सुजान कविना, दिल्लीपुरं वासनं ॥ छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

चंद का अपनी स्त्री को कहना कि अनंगपाल की पुत्री को पुत्र उत्पन्न होने से दिल्ली की पूर्व्व कथा का प्रसंग प्राप्त हुआ है ।

[क]वित्त ॥ अनंगपाल पुत्तीय सुरँग †, पुत्त इच्छा फल दिन्नौ ।
नालिकेर फल सुफल, मंत आरंभन किन्नौ ॥
तव प्रसाद उप्पनौ, पुव्व मंडी कथ भारिय ।
वर बीसल वै वंस, कह्यौ वर द्रुग विचारिय ॥
प्रथिराज जोति बरनोद कवि, अन्तिमंत सामंत भर ।
चंदानि बदनि सुनि चंदमनि, भयौ दानवी वंसवर ॥ छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

---

१ पाठान्तर—वहिला । वासन । सुजान । वासन ।
* विदित रहे कि यहां कवि ने किसी देवता का मङ्गलाचरण न कर के वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण किया है । † यहां दिल्ली बसी है उस वन का पुराना नाम है ।
२ पाठान्तर—[illegible] । पुत्र । इच्छा । दीनौ । कीनौ । प्रसाद । कहनौ । नारिय । [illegible] । विचारिय । [illegible] । [illegible] । दानव ।

बालकपन में पृथ्वीराज का दिल्ली प्राप्त करने का स्वप्न देखना ॥

दूहा ॥ बालप्पन प्रथिराज ने, इक्क सुपनन्तर चिन्ह ।
लै जुग्गिनि जुग्गिनिपुरह *, तिलक हथ्थ करि दिन्ह ॥ छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥
कछु सोवत कछु जागते, निसि सुपनन्तर पाय ।
अद्ध रयन के अंतरै, सुष सुत्तह सुभदाय ॥ छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥
अभयदायिनी नाम तिहिं, जुग्गिनि जग आधार ।
सुपनंतर सुभदायिनी, आये आप पधार ॥ छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥
कनक कंत्ति दुति अंग की, निरषि सु पातग जात ।
परमानन्दप्रदायिनी, पार करन जग मात ॥ छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥
नष सिष प्रभा प्रकास दुति, चष मुष कमल सुफूल ।
व्रन ब्रन्न नग जोति जग, जरकस कंत्ति दुकूल ॥ छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज की माता का उससे स्वप्न का वृत्तान्त पूछना ॥

दूहा ॥ सुपन पुच्छि माता तबै, कहौ पुच सब भाव ।
जो दिष्षिय तुम अर्द्ध निसि, सो कारन समझाय ॥ छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥

पृथ्वीराज का माता को उत्तर दे स्वप्न का वृत्तान्त कहना ॥

कवित्त ॥ करि जुग्गिनी रत भेस, सुरँग सिंगार अभासिय ।
चंद पंति तारक्क, चरन परि बिंटि प्रकासिय ॥
अंबर दिय उद्धार, दिव्य बानी धुनि मंडिय ।

ध्यान मे रहे कि यहा से सब कथा चंद और उसकी स्त्री के संवाद में है और उस संवाद के अतर्गत अन्य सब सवाद वर्णन किए गए हैं, अतएव छंदों का लगाना कुछ गूढ सा हो गया है। निदान हमारे दिए शीर्षकों के बल से अर्थ सुगमता से लग सकता है ॥

३–७ पाठान्तर–बालापन। पृथ्वीराज। निसि। जुगिनि। जुगिनिपुरह। हथ ॥ ३ ॥ निशि। पाइ। अध। रयनिक्के। सुभ सुत्तें सुपदाइ ॥ ४ ॥ अभैदायिनी। तिहि। जुगिन,। सुभ दायिनी। आपै ॥ ५ ॥ अगमह। पातक ॥ ६ ॥ सफूल। सुफूलि। वरन बरन नग। जर्कस ॥ ७ ॥

इनमें स० १६४७ की लिखित पुस्तक के अनुसार दोहा ६ और ७ का पाठ है, परन्तु, उसके इधर की लिखी नवीन पुस्तकों में उनके पहिले पाद तो ऐसे ही हैं, किन्तु शेष तीन पाद ६ के ७ में और ७ के ६ में लिखे मिलते हैं ॥ * जुग्गिनिपुरह-दिल्ली का एक पुराना नाम है ॥

८ पाठान्तर–सुपिन। पुछि। कहौ। कहह्यो। समभाय। सवभाइ। दिषिय। दिष्यवि। समुझाइ ॥

सुपनंतर चहुवान, जाय जुग्गिनिपुर मंडिय ॥
जाग्रंत मात दिष्षो सुपन, प्रकृति न कोय तिन थान रहि।
भय प्राय मात पुच्छिय प्रगट, सो सुपनंतर अरथ कहि ॥

छं० ॥ ९ ॥ रू० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज की माता का स्वप्न का वृत्तान्त सुन अद्भुत रस में रंजित होना ॥

अरिल्ल ॥ सुनि सुनि वचन मात तब बुल्लिय, सुभ अद्भुत चित्तरस झुल्लिय।
सुष दुष द्रिग भरी जल झांइय, मन भी हास करुन फुनि आइय ॥

छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ १० ॥

उसका ज्योतिषियों को बुला स्वप्न का सत्यफल पूछना ॥

दूहा ॥ तब बुलाय सब जोनगी, कही सुपनफल सत्य।
दिवस पंच के अंतरे, होय सु दिल्लीपत्ति ॥ छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ११ ॥

गाथा ॥ ढिल्ली वै स्वपनं तं, प्रातं कहियं प्रगट विष्पायं।
जोतिग गनिक गुनीसं, सुनियं सो सत्ति मत्तायं ॥ छं० ॥१२॥ रू० ॥ १

ज्योतिषियों का उत्तर दे कहना कि पृथ्वीराज दिल्ली का राजा होगा ॥

दूहा ॥ न इह बात जोतिग चटै, ससन प्रश्न थिरताय।
जोग नैरा जोतिग कहै, प्रभु सु होय प्रथुराय ॥ छं० ॥ १३ ॥ रू० । १३

ज्योतिषियों को बिदा कर माता और पुत्र का एक गृह में जा बैठना ॥

दूहा ॥ न दूह कथ्थ दुजराज कथि, प्रनमि करी सु विदाय।
मात पुत्त दो इक्क गृह, बरअति बैठे आय ॥ छं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ १४ ॥

अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र के आगे दिल्ली की पहिली किल्ली की पूर्व्वकथा का कहना और राजा कल्हन का वनक्रीडा करते सुसा और स्वान के चरित्र से भूमि का वीरत्व देखना ॥

कवित्त ॥ तब अनगानी पुत्ति, कहै सुनि पुत्त सु बत्तह।
पुब्ब कथा ज्यौं भई, सुनौ त्यौं कहूं अपुब्बह ॥
हम पितु पुरिषा पुब्ब, न्टपति कल्हन*वन क्रीलत।
सुसा छंडि ता पुट्ठ, स्वान संचरिय सचीलत ॥
सिसु संमुष हुइ बैठी सु तहां, भगिग स्वान भैभीत हुअ।
सब सथ्थ तथ्थ आचिज्ज भय, करि पारस ठट्ठे सुभय ॥छं०॥१५॥रू०॥१५॥

उस वीरभूमि में व्यास का कीली गाड़ना ॥

दूहा ॥ व्यास† जोति जगजोति तहँ, सिद्ध महूरत ताव।
दैव जोग सेसह सिरह, किल किल्लित सु आव ॥ छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ १६ ॥

---

१४ पाठान्तर–नह। कथ। विदाँय। पुत। दोइ। इक। ग्रह। वैठ। आइ ॥

१५ पाठान्तर–पुत्रि। कैह। पुत्रि। पुत्र। वतह। ज्यो। सुनौ। त्यूं। कहौ। पित्त। पुवि क्रिल्हन। स्वान। सचीलति। सव्वीलत। समुष। होय। होइ। बैठौज। स्वान। श्वान। भय। होइ। सथ। तथ। आजिज। टट्टे ॥ * कल्हन चन्द्र का वाचक होने से राजा चन्द्र। उपस हरणी टिप्पण देखो ॥

१६ पाठान्तर–द्वैयोग। सिरनि। कील। कलित ॥

† व्यास राजगुरु का वाचक है। तँवर राजपूतों के पांडववंशीय गिने जाने से उनके राजगुरु व्यास कहाते थे। यह वह व्यास था जो कल्हन राजा के समय में राजगुरु था

वहां कल्हन का कल्हनपुर बसा कर राज करना और फिर उसके कितनीक पीढ़ी पीछे अनंगपाल का होना ॥

दूहा ॥ कल्हनपुर * कल्हन नृपति, बासी नृप निज साज।
कितक पाट अंतर नृपति, अनगपाल भय राज ॥ छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ १७ ॥

इतनी कथा सुनकर राव (पृथ्वीराज) के मन में अचरज हुआ ॥

दूहा ॥ सुनत राव इह कथ्थ फुनि, उपजिय अचरज अंग।
सिथल अंग धीरज रहित, भयो दुमति मति पंग ॥ छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ १८ ॥

विपरीत समय का आना देखकर सकल सभा का शंकित होना ॥

दूहा ॥ सकल सभा संकित भई, व्यास वयन वर वेद।
कमय समय विपरीत भय, उपज्यो अंतर षेद ॥ छं० ॥ १९ ॥ रू० ॥ १९ ॥

† दूसरी किल्ली की कथा ॥

अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र (पृथ्वीराज) के आगे अपने पिता के फिर से दिल्ली बसाने के लिये पाषाण और किल्ली गाड़ने की कथा का कहना ॥

कवित्त ॥ अनगपाल पुत्तीय, फेरि धुल्ली सुत सम्मद।
एह वत्त आच्चिज, उपजि मो चित्त तु तब्बह ॥
पुच्छि व्यास ‡ जग जोति राज मंड्यौ उच्छव घन (।

---

१७ पाठान्तर—किल्हनपर । किल्हन । अनगपाल । भयो ॥

* कल्हन राजा के दिल्ली बसाने के समय का दिल्ली का पुराना नाम कल्हनपुर है ॥

१८ पाठान्तर—कथ । धवरज ॥

१९ पाठान्तर—वयन । विपरति ॥

† ध्यान में रहे कि कल्हन के पीछे कई पीढ़ी तक [illegible] कल्हनपुर में [illegible] राज करते रहे और रूपक १८ और १९ कवि ने दूसरी किल्ली की कथा [illegible] ॥ [illegible] है क्योंकि जो कुछ विपरीत हुआ है वह दूसरी किल्ली के पीछे हुआ है।

२० पाठान्तर—अनगपाल । पुत्री । [illegible] । [illegible] । [illegible] । अच्छिज । पित । तब्बह । पुच्छि । व्यास । उच्छव । राम । [illegible] । [illegible] [illegible] ॥ ‡ अनंगपाल के समय का राजगुरु ॥

॥ इससे स्पष्ट है कि अनंगपाल ने दूसरी बेर दिल्ली बसाने का प्रबन्ध मकान की स्थापना से किया था। इसी लिये कवि ने—[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] पद घर—कहा है और 'घर' शब्द यहां [illegible] है।

ग्राम नाम अप्पियै, कुसल जिन होय ग्रेह धन ॥
चिंतयौ चित्त दुजराज तब, अगम निगम करि कढ्यौ।
सुभ घरी महरत संधि कै, फिरि पाषान सु गढ्यौ* छं० ॥ २० ॥ रू० ॥ २०॥

व्यास का कहना कि पांच घड़ी तक पाषाण को हाथ न लगाने से वह शेष के सिर पर दृढ़ हो जायगा परन्तु राजा का इसे अनर्थ कर मानना ॥

कवित्त ॥ कहै व्यास जग जोति, सुनहि तूंवर नरिंद तुअ।
एह सेस सिर आव, अचल निहचल सुरंग धुअ ॥
मोहि अरथ पल एह, छेह अप्प नह राजन।
पंच घरी इह मुक्कि, राज रहियो इन काजन ॥
इननौ जु कह्यौ वर व्यास तहँ, इन अनथ्य का मानयौ।
भवक्कित्त बत्त मिटै न को, कत्त क्रम्म नह जानयो ॥ छं० ॥ २१ ॥ रू० ॥ २१

साठ अंगुल की कीली गाड़ना अर्थात् शंकुपात कर्म्म करना ॥

अरिल्ल ॥ सुनी बत्त इह तत्त प्रमानं, व्यास करी किल्ली पुरथानं।
साठि सु अंगुल लोहय किल्लिय, सुकर सेस नागन सिर मिल्लिय ॥
छं० ॥ २२ ॥ रू० ॥ २२ ॥

सब के बरजने पर भी उस कीली को उखाड़ डालना ॥

अरिल्ल ॥ मुंध लोइ आचिज्ज सु मान्यौ, भावी गति सो व्यास न जान्यौ।
बरजे सह परिगह परिमानं, उप्पारी किल्ली भू थानं ॥ छं० ॥ २३ ॥ रू० २३॥

पाषाण के उखाड़ते ही रुधिर की धार चलना और आश्चर्य होना॥

कवित्त ॥ अनंगपाल पृथ्वी, नरेस आचिज्ज सु मान्यौ।
भवहि बत्त जो होय, सोन ब्रह्मान न जान्यौ ॥

---

* "फिर पाषान सुगढ्यौ" अर्थात् वास्तुशास्त्रानुसार शिलान्यास कर्म्म किया ॥

२१ पाठान्तर-तूंअर। शेश। फिर। निश्चल। धुय। इक। मुक्कि। सु। तहा। अनय। मानयौ। कौ। मिट्टै। क्रत। क्रम। जानयौ ॥

२२ पाठान्तर-बत्त। प्रमान। किलीपुर। किल्लीय। मिलिय ॥

† अनगपाल के समय का दिल्ली का नाम "किल्लीपुर" ॥

२३ पाठान्तर-लोय। अचरिज। मान्यौ। जान्यौ। वरजै। सव। उपारिय। किल्लीय

आराधत वर ग्यान, सोइ संसार मुषाल्यौ।
दैवक्रम्म करि जोग, सोइ पाषान उपास्यौ ॥
संध छंक कुहि समुद चलिय, अति अद्भुत्त सु दिष्पियौ॥
परिगह पवास मंची न्टपति, इन आचिज्ज सु लष्पियौ छं०॥ २४ रू०॥२४॥

पाषाण का उखाड लेना सुन व्यास का दुखित हो राजा के पास आना ॥

दूहा ॥ सुनि आयौ वर व्यास तह, दुष पायौ मन मझ्झ।
का जंप्यौ मुष न्टपति सौं, इह मति मूढ अबुझ्झ॥ छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ २५॥

अनंगपाल का पश्चाताप करना और व्यास का आगम कहना ॥

कवित्त ॥ अनंगपाल छक्कवै, बुद्धि जो इसी उकिल्लिय।
भयौ तुअर मति हीन, करी किल्लीय तैं ढिल्लिय ॥
कहै व्यास जग जोति, अगम आगम हौं जानों।
तूंअर तैं चहुआन, अंत ह्वैहै तुरकानों ॥
तूंअर सु अवहि मंडय घरह, इक्क राय बनि विक्कवै।
नव सत्त अंत सेवात पति, इक्क छत्त मधि चक्कवै ॥ छं० ॥ २६ ॥ रू०॥ २६॥

व्यास का अनंगपाल को खेद न करने का उपदेश करना ॥

पद्धरी ॥ उच्चस्यौ व्यास जग जोति वीर। मृत सुग्ग लोक पाताल नीर।
चयकाल दरस दरसिय सु देव। व्यासह समान जोतिगिय भेव॥ छं० ॥ २७ ॥
संसार सार असार कीन। वर व्यास बुद्धि कोविद प्रवीन ॥
मंडयौ सु राज सौं क्रोध रूप। बरज्यौ सुकिष्ण व्यासह सरूप ॥ छं० ॥ २८ ॥

जनमैज राज तस मत्त मान। आनी न चित्त तिन निमष ग्यान ॥
षिति राज सरिस रिष राइ बोलि। कीनीय बत्त तुम गत्त षोलि*॥छं०॥२९॥
हूं गड्डि गयौ किल्ली सजीव। हल्लाय करी ढिल्ली सदैव ॥
तूंअर अवद्दि मंडव सुथान। भोगवै भूमि सुरतान पान॥ छं० ॥ ३० ॥
मो मत्ति जाति तूंअर चिनेत। मति करै रोस राजन सुहेत ॥
जान्यौ सु कह्यौ बर व्यास रूप। झूंटी सु बत्त बरजित्त भूप॥ छं० ॥ ३१ ॥
हिन्दून † जानि पंडव सु वंस। तिन भयौ अंस पारथ्थ नंस ॥
तिहि वंस भीम अरु ध्रम्म सुत्त। तिहि वंस वल्ली अनगेस तुत्त॥ छं० ॥ ३२ ॥
मति करहु सोच मम मंच मानि। हुअ राज काज वर चाहुवान ॥
बर वंस सुमति अति मति प्रताप। दिन कितक तपै चहुवान आप॥ छं० ॥ ३३ ॥
फिरि व्यास कहै सुनि अनग राइ। भवतव्य बात मेटी न जाय ॥
रघुनाथ हाथ त्रैलोक देव। ते कनक म्रग्ग लागे पछेव॥ छं० ॥ ३४ ॥

---

* ये दोनो पाद सं० १६४७ की लिखित पुस्तक में नहीं हैं और उसके इधर की सवत् १८५९ की में हैं ॥ २९ ॥ हुं। किलि। किली। गडि। हलाप। ढिलो। द्रव। तुंअर। अवटि। सुयान। सुरतानं। पांन ॥ ३० ॥ मति। जानि। तोंअर। जांन्यौं। झूठी। स। वरदत्ति ॥ ३१ ॥ जानि। पारथ। ध्रम्म सुत। वसं। वली। तुत ॥

३२ पाठान्तर—मांनि। हुय। चाहुआंन। चाहुवांन ॥ ३३ ॥ राय। म्रग। लगे ॥ ३४ ॥

† इस महाकाव्य में "हिन्दू" शब्द यहा पर आया है। उसकी व्युत्पत्ति वाचस्पत्य बृहत्सस्कृताभिधानकर्त्ता और शब्दकल्पद्रुमवाले ने पुल्लिंग में यह की है—

"हीनं दूषयतीति। दुष+डुः पृषोदरादित्वात् साधुः। जातिभेदे। जातिविशेषः ॥
और उसका प्रयोग मेरुतंत्र में यह दिखाया है—

पश्चिमाम्नायमंत्रास्तु प्रोक्ताःपारस्य भाषया। अष्टोत्तरशताशीतिर्येषां संसाधनात् कलौ ॥
पंच खानाः सप्तमीरा नव शाहा महाबलाः। हिन्दुधर्म्मप्रलोप्तारो जायन्ते चक्रवर्त्तिनः॥
हीनं च दूषयत्येव हिन्दुरित्युच्यते प्रिये। मेरुतन्त्रे २३ प्र० ॥

और भविष्यपुराण के प्रतिसर्गपर्व्व के तृतीय खंड के दूसरे अध्याय मे लिखा है कि विक्रमादित्य के पौत्र शालिवाहन ने पितृराज्य पाने पर शकादि को जीत कर आर्य्यदेश और म्लेछ देश को सीमा इस प्रकार से स्थापित की—

एतस्मिन्नन्तरे तत्र शालिवाहन भूपतिः ॥ १७ ॥
विक्रमादित्यपौत्रश्च पिताराज्य गृहीतवान् ॥
जित्वा शकान्दुराधर्षांश्चीनतैत्तिरिदेशजान् ॥ १८ ॥
बाल्हीकान्कामरूपाश्च रोमजान्खुरजाञ्छठान् ॥
तेषां कोषां गृहीत्वा च दण्डयोग्यानकारयत् ॥ १९ ॥
स्थापिता तेन मर्य्यादा म्लेच्छार्याणां पृथक् पृथक् ॥

मारीच अप्प आयौ छरन्न। हुइ होनहार सीता हरन्न॥
पंडवन जाग आरंभ कीन। वरज्यो सु व्यास पंडित प्रवीन॥ छं० ॥ ३५ ॥
दुरवास द्वारिका दिषन आइ। जदवन बाल मंड्यौ उपाइ॥
करि पुरुष नारि रचि गर्भ हास। कहु देव याहि उपजै सु आस॥ छं० ॥ ३६ ॥
पिज्जो कही विप्र तस उदर जोइ। जदवन बंस नष्पै सु षोइ॥
वरजे सुधम्म सुत रमन जूप। देषंत अंध ते परे कूप॥ छं० ॥ ३७ ॥
केतेक कहौं सुनि अनंग राइ। जानति जान कीनौ उपाय॥
भवतव्य वात उतपात मेटि। मिट्टै न बुद्धि कोइ करौ कोटि॥ छं० ॥ ३८ ॥
जिन करौ षेद उपदेस मोहि। हौं जानि ग्यान इह कहौं तोहि॥
करि धरा ध्रम्म उद्धारि देह। संसार अनित छंडौ सनेह॥ छं० ॥ ३९ ॥
त्रैलोक जीत्ति जिन जेर कीन। ते गये अंत हुइ आपु हीन॥
इक गल्ह अमर संसार सार। रष्षै न पछुमि ते बड़ गमार॥
छं० ॥ ४० ॥ रू० ॥ २७ ॥

सिंधुस्थानमिति ज्ञेय राष्ट्रमार्यस्य चोत्तमम् ॥ २० ॥
म्लेच्छस्थानं परंसिंधोः कृतं तेन महात्मना ॥ २१ ॥

यदि यह माननीय है तो स्पष्ट है कि "हिंदु" शब्द तो "सिंधु" का और "हिन्दुस्थान" शब्द "सिंधुस्थान" का अपभ्रष्ट है अर्थात् वह यावनी नहीं है। यदि उनको यावनी भी मानें तो भी तो आजकल हमारे देश में बड़ी ही प्रबलता से यह माना जाता है कि संसार भर की सब भाषा हमारी संस्कृत से ही निकली है। अत एव फिर हमको बतलाना पड़ेगा कि यावनी "हिंदु" शब्द किस संस्कृत शब्द का अपभ्रष्ट है? और जब वह संस्कृत का अपभ्रष्ट है तो फिर उससे घृणा क्यों करनी चाहिये?

तथा हमारे दिये इस प्रमाण से पुरातत्ववेत्ता विद्वानों के विचारार्थ एक यह प्रश्न भी उपस्थित होता रहे कि इससे तो शालिवाहन का विक्रम का पोता होना विदित होता है और अन्य शोधों के अनुसार प्रचलित शालिवाहन शककर्ता कनिष्क नामक सिदियन राजा माना जाता है। हमारी देशी साखी से विक्रम और उनके पोते शालिवाहन का १३५ वर्ष का अंतर असंभव होना प्रतीत नहीं होता है। इस के अतिरिक्त शालिवाहन का बौद्ध हो जाना भी कहा जाता है और शक भी बौद्ध धर्मावलम्बी माने जाते हैं। क्या आश्चर्य है कि यह शालिवाहन ही शक धर्मावलम्बी हो कर कनिष्क नामक राजा हो गया हो और हमारे यहां उसके पहले नाम से ही शक प्रख्यात चला आता है।

अनंगपाल के पीछे जो जो राजा दिल्ली में होंगे उनके विषय में व्यास का भविष्य कथन करना ॥ तुँअरों का नाश और चौहानों का राज्य होना ॥

कवित्त ॥ सुनि अनगेस नरेस, मोहि इह आगम बुझै ।
अंत राज चहुआन, मोहि इह बेगो सुझै ॥
सब तूंअर षग मग्ग, भिरिग मंडव आहुट्टै ।
सार धार घर धूमि, मुगति पै बंधन छुट्टै ॥
इह दोष राज ढिज्जै नहीं, मैं बहु बार बरज्जयौ ।
भवतव्य बात मिट्टै न को, होइ सु ब्रह्म सिरज्जयौ ॥ छं० ॥ ४१ ॥ रू० ॥२८॥

चौहानों के पीछे मुसल्मान और उनके पीछे फिर हिन्दुओं का राज्य होगा ॥

कवित्त ॥ ता पच्छै सुनि राज, राज भज्जै चहुआनिय ।
बहुत काल अन्तरै, तपै पुहमी तुरकानिय ॥
मेच्छ अवनि तप अहुटि, प्रलै हुइ है तिन बंसह ।
बहुरि जोर हिन्दून, राह हुइहै इक अंसह ॥
संघारि सकल दानव कुलह, धर्म्म राह सह विस्तरै ॥
जितै जगत तप प्रबल करि, आनि दिसा विदिसा फिरै ॥
छं० ॥ ४२ ॥ रू० ॥ २९ ॥

फिर मेवातपति सं० १६७७ में दिल्ली जीत लेंगे* ॥

कवित्त ॥ नव सत्तें वर अंत, बहुरि ढिल्ली पति होई ।
षग्ग षोद षुरसान, पहुमि चक्कवै सु जोई ॥

२८ पाठान्तर—वहुआन । वेघो । सूझै । तोंअर मग । में । वरजयो । मेटै । होय । सिरजया ॥

२९ पाठान्तर—पछै । चहुआनिय । चहुआनीय । तुरकानीय । मेछ । मेछि । हुवै हैं । हिदूदून । हूँ । दानव । आन । दिशा । फिर ॥

* यह ३० और ३१ दोनों रूपक पुरानी पुस्तक सं० १६४७ की लिखी में वास्तव में तो नहीं हैं । परंतु उसके पत्रे के किनारे पर किसी अन्य ने पीछे से इन दोनो को लिख दिया है । और उसके पीछे की नवीन पुस्तकों में इन दोनो के पाठ हैं । संवत् १८३८ की में तो "मेवातपति"

मह्वि मेवात महीप, दीप दीपांन दल मंडे।
क्लिक्क रहें पय आप, इक्क षल षंड निषंडे॥
अंडे सु पहुमि प्रथिराज जिम, सत्त वान जोतिक जपिय।
साजी सु सत्ति करि सवनि हुह, व्यास वचन व्यासह थपिय॥
छं० ॥ ४३ ॥ रू० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ सोरै सै सत्योतरै, विक्रम साक वदीत।
ढिल्ली धर मेवातपति, लैंहि षग्ग बल जीत ॥ छं० ॥ ४४ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

व्यास का कहा हुआ भविष्य नहीं टरेगा ॥

कवित्त ॥ निहि जथ वत्त प्रमान, सुनहि दिठ तुच्छ सुअंतं।
वर म्लेच्छनि सत घटइ, अम्म पारस रस रंतं॥
हुइ नव सत्त प्रमान, धूअ टरइ रवि टरइ।
टरै न व्यास वचन्न, मान जस तें अजु टरई॥
ए सब अजान सता जु ही, परी इक्क मक्की मुही।
परि पै प्रसन्न परतीत करि, नव काढत आवह जुही ॥ छं० ॥ ४५ ॥ रू० ॥३२॥

माता का दान और होम करना ॥

मुरिल्ल ॥ सनि आतान अप चहुआनं, कही मात मति तत्त सुजानं।
वहुरि पुच्छि दुजराजन आनं,कियौ होमदै दान प्रमानं ॥छं०॥४६॥रू०॥३३॥

पाठ है और स० १६४७ की प्रति मे "मेवारपति" पाठ है। वैसे ही पहिली में १५७७ और दूसरी के में १७७७ पाठ हैं। निदान ये दोनो तो स्पष्ट रूप से क्षेपक हैं। तथा हमारे पाठको के ध्यान में रहे कि उदयपुर वाले स्वर्गवासी कविराज श्यामलदासजी ने जो इस महाकाव्य का आद्योपान्त जाली बनना संवत् १६४० से लेकर १६७० तक के भीतर माना है उसका आधार इन क्षेपक रूपकों मे से रूपक ३१ पर रक्खा है। उसके जाली बनने के समय के विषय में हमने आदि पर्व्व की "उपसंहारिणी टिप्पणी" पृ० १७५—१९८ तक वाक्य ३ और "पृथ्वीराजरासे की प्रथम संरक्षा" के पृष्ठ ३४ से ३७ तक वाक्य १७ में सविस्तर कथन किया है अतएव यहां अधिक नहीं कहते है॥

३० पाठान्तर—सतैं। डिली। पग। पोहि। चक्कवि। मेवाद। क्रिक आइ रहि पाइ। सति। जपिव। थपीय॥

३१ पाठान्तर—सौरैं। सतरिसे। सित्योतरि। विक्रम। शाक। ढिल्ली। मेवारपति। लइ। पग॥

३२ पाठान्तर—जथ। घत। प्रमान। तुछ। म्लेछनि। होय। सत। प्रमान। मान अजान रस। मही। परी इक्क मही मही। परिपैं। प्रसन॥

३३ पाठान्तर—छंद गाथा। चहुआनं। सुजांनं। पुछि। दुजराजनि॥

मातुल का अपने मन में मोह करना ॥

दूहा ॥ सुनत सुपन सोमेस सुअ, बज्जाए बर बाज ।
गिन्यौ सु मातुल मोह मन, और अवन्निय काज ॥ छं० ॥ ४७ ॥ रू० ॥ ३४ ॥

पृथ्वीराज का स्वप्नफल सुन आनन्द में फूला न समाना ॥

पद्धरी ॥ सुनि सुपन मात फल कहै राइ । दरिया तरंग मन मोज पाइ ॥
ज्यों मोर मेह आगम अनंद । राका चकोर ज्यों मुष्य चंद ॥ ४८ ॥
चंदनह बन्न ज्यौं पाय चिन्न । तिह नाह पिष्य ज्यौं सुभग सिन्न ॥
संग्राम भूमि ज्यों सुभट पिष्य । गुरु विद्यवंत ज्यों पाय सिष्य ॥ ४९ ॥
घत्तार घत्त ज्यौं इष्य चोट । दातार पाइ जाचिक्क टोट ।
पंडित पाइ ज्यों गुनियग्राह । व्यापार पाइ ज्यों साह लाह ॥ ५० ॥
परि वित्त पेषि ज्यों षेल ज्वारि । छल छैल पाइ लंपट्ट नारि ॥
आनंद सु यों प्रथिराज पाइ । फुल्ल्यौ सु अंग अंगह न माइ ॥ ५१ ॥
बज्जे अनंत बज्जहि अनंद । दिय दान विदुष दुज भट्ट छंद ॥
दिन दिन नरिंद तन दसा बढ्ढि । चढढंत दीह जो दसा चढ्ढि ॥५२॥रू०॥३५॥

स्वप्नफल सुन कर पृथ्वीराज की सर्वस्व वृद्धि कैसे होने लगी ॥

कवित्त ॥ चढत नदी जिम मेह, नेह नवला जुवनागम ।
सिद्धदाह दिन चढत, सु गुरु सिष्यक विद्या क्रम ॥
सस्त्र ओप ज्यौं भरनि, लच्छि व्यापारह बढ्ढत ।
वढत भट्ट गज वंस, बेलि द्रुम सीसह चढ्ढत ॥
जिस सरद रयनि सुद पष्य तिथि, वढत कला ससि तस गमत ।
चहुआन सूर सोमेस सुअ, इम सुदसा दिन दिन जमत ॥छं०॥५३॥रू०॥३६॥

कवित्त ॥ वढत पटन उमराव, वढत साहन तुरियन दल ।
वढत भँडारन दाम, वढत कोठार अन्नवल ॥

---

३४ पाठान्तर—अवनिय ॥

३५ पाठान्तर—राय । दरीयाव । पाय । मुप । पाइ । चिन्ह । पपि । सील । पिपि । विद्या-वंत । सिपि । इपि । जाचिग । पंडित । गुनयग्राह । लंपट । पाय । माय । दांन । चढंत । दशा । वढि ॥

३६ पाठान्तर—लछ । वढत । चहुयान ॥

जमद्दर षानान वस्त्र, बढत दानन दिन हो दिन।
हड्ड मंस तरवारि, बढत सस्त्रन्न षिन छि षिन॥
वढ्ढंत कित्ति दिन दिन अमल, प्रथीराज सोमेस सुअ।
दस दिसा जोति दिन दिन बढत, महा निसा षह जानि धुअ॥
छं० ॥ ५४ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

पृथ्वीराज का अजित अवतार होना॥

कवित्त ॥ सहरि गहंमह सूर, नूर नवलन नवला मुष।
चार बरन चिर आव, गेह बिलसंत महा सुष॥
पदत मैवासन धाह, दाह दिज्जन दुज्जन घर।
अडटनि उटत सुदंड, थप्पि थिर करत अप्प वर॥
चिंहु चक्क हक्क धर थर हरत, पिसुन पिंजि किज्जय नरम।
अवतार अजित दानव मनुष, उपजि सूर सोमह करम॥
छं० ॥ ५५ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

लोहाना का गोख में से कूदना और अजानबाहु नाम और जागीर पाना॥

कवित्त ॥ षोडस गज उरड्ड, राज ऊभो गवष्य तस।
संभ्फ समय चीतार, पच कीनो पेसकस॥
देषत संभरीनाथ, हथ्थ छूटन हय सारक॥
तीर कि गोरि बिकुट्टि, तुट्टि असमान की तारक॥
अधबीच नीच परते पहिल, लोहाने लीनो झरपि।
नट कला षेलि जनु फेरि उठि, आनि हथ्थ दिय्यह अरपि॥
छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ ३९ ॥*

---

३७ पाठान्तर-भंडारन। दाम। तरवार। वढंत॥

३८ पाठान्तर-सहरि। च्यारि। दुजन। अदटन। दटत। थपि। अप। चिंहु। चक्र। हक्क। किजय॥

३९ पाठान्तर-गवष। चित्रकार। हय। असमांन। आनि॥

* ये ३९। ४० दो छपक सं० १६४७ की पुरानी पुस्तक में नहीं हैं और इधर की सं० १८५९ में हैं॥

गाथा ॥ हरषि राज प्रथिराजं, कीन सूर सामंतं।
बगसि ग्राम गजराजं, अजानबाहु दीनयं नामं ॥ छं० ॥ ५७ ॥ रू० ॥ ४० ॥*

दिल्ली किल्ली कथा का उपसंहार ॥

दूहा ॥ सुपन सुफल दिल्ली कथा, कही चंदबरदाय।
अब अग्गे करि उच्चरौं, पिथ्य अकुँर गुन चाय ॥ छं० ॥ ५८ ॥ रू० ॥ ४१ ॥

इति श्रीकविचंदविरचिते पृथ्वीराजरासके दिल्ली किल्ली कथा वर्णन नाम तृतीय प्रस्ताव संपूर्णम् ॥



४० पाठान्तर-ग्रांम। बाज। अजानं ॥

४१ पाठान्तर-दिल्लीय। वरदाय। अगें। उचरौ। पिय। कूँअर। गुनचार ॥

उपसंहारणी टिप्पण।

जो कुछ हमने प्रथम और द्वितीय समय की टिप्पणी और उपसंहारणी टिप्पण में कहा है वह हमारे पाठकों के ध्यान में होगा औ जो अब निवेदन किया जाता है वह भी उसी के साथ सदैव स्मरण मे रहेगा। क्योंकि वह सब इस महाकाव्य के विषयक अनेक वाद विवादों के विचार और निर्णय करने के समय बहुत ही उपयोगी होगा॥

अब इस तीसरे समय—दिल्ली किल्ली कथा—का मूल लेख हमारे पाठकों की सेवा में उपस्थित है। और जो कुछ उन्होंने अब तक इस महाकाव्य के नाम से अनेक दंत कथा और वृत्तान्त पुस्तकादि में पढ़े और सुने हैं वे भी उन्हें ज्ञात हैं। अत एव अब यह एक बहुतही अच्छा अवसर है कि हम उन दोनों का मिलान कर के देखें कि क्या आज कल के ग्रन्थकर्त्ताओ ने भी अपने लिखे वृत्तान्त ठीक ठीक इस महाकाव्य के वृत्तान्त के अनुकूल ही लिखे हैं, अथवा उनको बदल कर उनमें कुछ और अपनी मनमानी गठन्त भी करी है? यदि उनमें परिवर्त्तन किया गया है तो क्या उनका ऐसा करना ठीक है? मूल में मिला हुआ अगला क्षेपकांश तो अब निश्चित होना कैसा कठिन हो रहा है, तिस पर भी क्या आधुनिक ग्रन्थकर्त्ताओं का मूल से विरुद्ध कथन करना मानो नवीन क्षेपक मिलाना नहीं हो सकता है? आश्चर्य्य यह है कि आज कल के ग्रन्थकर्त्ता प्रतिज्ञा तो पृथ्वीराजरासो वा कवि चंद के कथनानुसार अपने कथन करने की करते हैं और जब उनकी ऐसे मूल से मिलान कर के परीक्षा की जाती है तब उनके वृत्तों में रात्रि दिन का सा अन्तर दीख पड़ता है! इसके केवल दो तीन ही उदाहरण हम यहां पर दिखाते हैं, अन्यों का विचार हमारे पाठक स्वय कर लेंगे—

(क) हिन्दी रीडर नंबर ५ अर्थात् हिन्दी शिक्षावली भाग पंचम नामक पुस्तक जो पाठशालाओं में पढाई जाती है और जिससे बालकपन से ही हमारे बालकों के हृदय पर संस्कार होता है उसमें कवि चंद के नाम से यह कहा हुआ है—

"चंद कवि लिखता है कि तोमर वंश के १६ वे राजा अनंगपाल ने पृथिवीराज के जन्म के उत्सव के लिये व्यास नामक एक ब्राह्मण से मुहूर्त्त पूछा। ब्राह्मण ने कुछ सोच कर उत्तर दिया कि यही शुभ समय है, इस कीली को गाडिये और यह शेषनाग के सिर में जा लगेगी और फिर तुम्हारा राज्य अचल हो जायगा। यह कह कीली को धरती में गाड़दी। परंतु राजा को विश्वास न हुआ। निदान उसने उस कीली को निकलवा डाला जो निकालने पर लोहू से भरी मिली। तब ब्राह्मण ने राजा से कहा कि तुम्हारा राज्य कीली के समान अस्थिर हो जायगा और तोमर वंश के बाद चौहान वंश के राजा राज्य करेंगे और उनके बाद मुसलमानो का राज्य होगा। राजा ने क्रुद्ध होकर उस ब्राह्मण को देश से निकाल दिया परंतु वह अजमेर में चला गया जहां कि उसका मान अधिक हुआ॥"

(देखो हिन्दी शिक्षावली पंचम भाग पृष्ठ ४१)॥

(ख) तथा उसी पुस्तक में शाहजहां के समय में हुए खड्गराव कवि के लिखे इस वृत्तान्त को भी पढ़िये—

"व्यास ब्राह्मण ने तोमर वंश के प्रमर राजा अनंगपाल को एक पच्चीस अंगुल लंबी कीली दी और उसने कहा कि इसको धरती में गाड़िये। शुभ संवत् ७९२ अथवा इसवी सन् ७३५ में बैशाख बदी त्रयोदशी को राजा ने इस कीली को पृथिवी में गाड दिया। तब व्यास ने राजा से कहा कि अब तुम्हारा राज्य अचल हो गया क्योंकि यह कीली शेषनाग के माथे में गडी है। जब ब्राह्मण चला गया तब राजा ने उस की बात का बिश्वास न कर कीली को उखाड़ देखा तो उस को लोहू से भरी पाया। राजा ने भयभीत हो उस ब्राह्मण को फिर बुलवाया और कीली को फिर गाडने की आज्ञा दी। परंतु कीली उन्नीस ही अंगुल पृथिवी में धसी और ढीली रही। तब ब्राह्मण ने कहा कि तुम्हारा राज्य इस कीली के सदृश अस्थिर रहेगा। और उन्नीसवीं पीढ़ी के बाद चौहानों के हाथ जायगा। और उनके बाद मुसलमान राज्य करेंगे"॥

(देखो हिन्दी शिक्षावली पंचम भाग पृष्ठ ४१) ॥

तदनन्तर "पृथीराज चरित्र" नामक पुस्तक को पढ़िये। उस के कर्त्ता ने भूमिका में हम को यह कह कर उसके लेख की परम प्रामाणिकता का विश्वास कराया है–

"प्रगट है कि पृथ्वीराज रासा नाम का पुस्तक भारतवर्ष के इस प्रान्त (राजपूताना) में अति ही प्रसिद्ध है और प्रत्येक क्षत्री व चारण भाट इस के लिये निर्विवाद ऐसा मानते चले आये हैं कि दिल्ली के अंतिम महाराजाधिराज पृथ्वीराज चौहान के प्रधान कवि व मित्र चन्द वरदाई ने इस पुस्तक को बनाया है।"

"मैंने चाहा कि इस प्रसिद्ध पुस्तक का, जो छन्दबद्ध है, सरल साधुभाषा में कथारूप से सारांश लिख कर इसके सत्यासत्य विषय में जो कुछ प्रमाण मिल सकें वे भूमिका में लिख दूं"॥

"तथापि ऐतिहासिक विषय में मूल पुस्तक के विरुद्ध कुछ भी नहीं लिखा गया है।"

मैंने जो यह आशय गद्य में किया वह उदयपुर राज्य के विकटोरिया हाल के पुस्तकालय में रासे की एक लिखित पुस्तक से लिया है।'

और अपनी इस प्रतिज्ञा के अनुसार उसने इस महाकाव्य के मूल पद्य का यह गद्य किया है-

"यमुना तट पर हस्तिनापुर नामी नगर प्राचीन काल से विख्यात है जहां पांडववंशी राजा अनंगपाल तंवर राज्य करता था। राजा की सुनीति और धर्माचरण से सर्व प्रजा सुखी और राज्यकार्य्य आनन्द पूर्व्वक चलता था। इस राजा ने अपने भुज बल से कई भूपालों का गर्व गंजन कर अपनी प्रभुता के सूर्य्य का प्रकाश दूर दूर तक फैला दिया था सहस्रों सामन्त देश देशान्तर से आकर इस की सेवा करते थे। राजा के दो कन्या थीं बड़ी का नाम सुरसुन्दरी और छोटी का नाम कमला। सुरसुन्दरी का बिवाह कन्नौज के राठोड़ राजा बिजयपाल से हुआ था और कमला जो रूप में रति को भी लज्जित करती थी अपनी बालक्रीडा से माता पिता के हृदय को हुलसाती हुई शुक्लपक्ष की चन्द्रकला के तुल्य सुन्दरता सुघड़ाई और यौवन में वृद्धि को प्राप्त होती थी॥

एक दिन राजा अनंगपाल अपने सुभट सामन्तों सहित हस्तिनापुर से कुछ दूर आखेट के वास्ते वन में गया। अपनी हिनहिनाहट से वज्र के तुल्य हृदय को भी कंपाने और टापों के प्रताप से शेष के सीस तक धरा को धुजाने का अभिमान रखने वाले चंचल तुरंगों पर कई बांके क्षत्री शिकारी पोशाक पहने नेजे हाथ में लिये चलते थे, काली रात्रि के तुल्य कई मदोन्मत्त हस्तियों के झुंड साथ थे जिन के गंडस्थल में से झरनेवाले सुगन्धित मद के पान करने

को आये हुए भ्रमरों का गुंजार शब्द ऐसा प्रतीत होता था कि मानो कई बन्दीजन मधुर वाणी में महाराज का यश गाते हों। रेशमी डोरियों से बन्धे हुए कई कुत्ते अपने रक्षकों को ताने लिये जाते थे मानो सूअर सामर कुरंग आदि पशुओं का गंध पाकर उनके रुधिर से अपनी पिपासा बुझाने को आतुर हो रहे हों। पायदलों के ठट्ट ने चारों ओर बिखर कर बन को घेर लिया और भेरी नफीरी आदि कई वादित्र बजा कर पशुओं को डराने और उनका स्थान छुड़ाने लगे। राजा और उसके साथी सामन्तों ने सेल सम्भाले सूअरों के पीछे घोड़े छोड़े और बात की बात में कई बड़े बड़े वराहों को भूमि पर गिरा दिया। बन में चारों ओर धूम मच रही थी बिचारे पशु प्राण भय से इधर उधर भागते फिरते थे कि कंज कली को प्रफुल्लित करने वाले सूर्य्यदेव ने सिर पर आकर मानो इस हिंसा से शिकारियों को निवारण करने के लिये क्रोध दृष्टि धारण की हो, प्रचंड ताप से पृथ्वी को तपा दिया सूर सामन्त व सिपाहियों ने जहां तहां वृक्षों की साया देख कमर खोली और जलपानादि करके श्रम दूर करने को लेटे, राजा भी एक बट वृक्ष की सघन साया में बैठा हुआ था कि अचानक उसकी दृष्टि बन में एक स्थान पर पड़ी तो क्या देखता है कि झाड़ी की ओट में एक अजा अपने दो बच्चों को लिये बैठी है उधर से एक भेड़िया आकर बच्चों पर लपका चाहता था कि दोनों को उठा कर ले जावे इतने में माता ने सचेत हो भेड़िये से युद्ध करना आरंभ किया और भेड़िये को भगा कर बच्चों को बचा लिया। यह कौतुक देख राजा को बड़ा आश्चर्य्य हुआ। उस स्थान पर कुछ चिन्ह कर दिया कि भूल न जावे। जब अपनी राजधानी को लौटा तो दिन भर के परिश्रम से थका हुआ भोजनोत्तर वह शयन गृह में आकर निद्रा निमग्न हुआ। प्रभात होते ही गुरु व्यास देव के आश्रम पर जा हाथ जोड़ कर स्विाप से वह बन का चरित्र वर्णन किया। व्यास देव कुछ काल तक समाधिस्थ हो बोले कि राजन्! वह भूमि महा पवित्र और वीर है यदि वहां गढ़ बनाया जावे तो उस गढ़ का स्वामी सर्व भूमंडल के अधिपतियों का सर्दार होवे। राजा ने निवेदन किया कि महाराज मैं वहां एक नगर बसा कर गढ़ बनाऊंगा व्यास देव बोले कि आज तिथि, नक्षत्र वार योगादि सर्व शुभ हैं अत एव एक लोहे की कीली मंगवाओ कि वहां गाड़ दी जावे। आज्ञानुसार कीली मंगवाई गई व्यास राजा सहित उसी स्थान पर गये और मंत्र पढ़ कर कीली वहां गाड़ दी जहां बकरी ने वृक को भगाया था। फिर राजा से कहा कि यहीं गढ़ की नीव दिलवाना। इस कीली को निकालने का साहस मत करना यह कीली शेषनाग के सिर में जाकर बैठ गई है सो जब तक यह अचल है तुम्हारा राज्य भी अचल रहेगा। व्यास के मुख से यह सुन कर कि "यह किल्ली शेष के सिर में जा बैठी है" राजा को बड़ा आश्चर्य्य हुआ और कहने लगा कि महाराज! इतनी सी किल्ली शेष के सिर तक कैसे पहुंच सकी है? एक दिन कुतूहल वश राजा ने अपनी शङ्का निवारण करने को बिना विचारे उस कीली को निकलवा लिया। कील के निकलते ही भीतर से रुधिर की धारा छूटी और कील का मुख भी रुधिर से भरा हुआ देखा। राजा को बड़ा पश्चाताप हुआ कि मैंने केवल अपने संशययुक्त चित्त का सन्तोष करने के निमित्त उस महर्षि की आज्ञा उल्लंघन की और अपने को महा हानि पहुंचाई। फिर इस स्थान पर एक नगर बनाया क्योंकि उस किल्ली को राजा ने ढीली कर दी थी अत एव उस नगर का नाम भी ढिल्ली ही रहा जो वर्तमान काल में दिल्ली करके प्रसिद्ध है। राजा की आज्ञा से वहां बड़े २ महल मोहल्ले और बाजार

(पृथीराज चरित्र पृष्ठ ३२—३५)

निदान इन तीनों वृत्तान्तों को जिस चंद कवि के नाम के ओट से ग्रन्थकर्त्ताओं ने लिखा है उनको उसी कवि के मूल पद्य से मिलाने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि उन्हों ने (ग्रन्थकर्त्ता) इस दिल्ली किल्ली कथा के मूल पद्य को भले प्रकार पढ़े और समझे विना जैसा जिसके ध्यान में केवल इन कथाओं पर से आशय आया वह अपने अपने ग्रन्थों में लिख लिया है। इनको मूल पद्य से मिलाने पर वृत्तों में यह बड़े बड़े अंतर स्पष्ट देख पड़ते हैं—

हिन्दो शिक्षावली के कथन में॥

१ चंद का मूल पद्य चाहे शुद्ध वा अशुद्ध वा जाली कैसा ही क्यों न हो परन्तु उस के अनुसार वृत्तान्त लिखने की प्रतिज्ञा करने वाले को उसके विरुद्ध कुछ भी नहीं लिखना चाहिये उपन्यास और नाटकादि लिखने के भी नियम हैं। ऐसा कदापि नहीं होसकता कि जहा से मूल कथा ग्रहण करी हो उस लेख के वृत्त को ऐसे बदल देना कि उनमें रात्रि दिन का सा अंतर पड़जाय। देखो चंद ने अपने मूल पद्य में दो दिल्ली किल्ली कथा वर्णन करी है। एक तो कलहन वा कल्हन वा किल्हन राजा के समय की और दूसरी राजा अनंगपाल के समय की। परंतु इन ग्रंथकर्त्ताओं ने दोनो के वृत्तों को घेल मेल करके एक ही कथा कर दी है। क्या मूल पद्य को पढ़ और समझ कर लिखने वाला ऐसी भूल कर सकता है?

२ चंद ने मूल पद्य में कहीं नहीं कहा है कि राजा अनंगपाल तोमर वंश में सोलहवा राजा हुआ था॥

३ और उसने यह भी नहीं कहा है कि अनंगपाल ने पृथ्वीराज के जन्म उत्सव के लिये व्यास नामक ब्राह्मण से किल्ली गाड़ने का मुहूर्त्त पूछा था॥

४ और न यह कहीं मूल में कहा है कि भविष्य कहने पर राजा ने अप्रसन्न होकर व्यास को निकाल दिया और वह अजमेर चला गया जहा कि उसका अधिक मान हुआ॥

खड्गराय के कथन में॥

५ व्यास का राजा को पच्चीस अंगुल कीली देना मूल पद्य में वर्णन नहीं किया हुआ है। किन्तु जो किल्ली कलहन के समय में गड़ी उसका कुछ परिमाण नहीं लिखा है और जो अनंगपाल के समय में गड़ी थी उसका रूपक १२ में साठि सु अंगुर लोहय किल्लिय साठ ६० अंगुल का परिमाण लिखा है॥

६ कीली गाड़ने का संवत् ७९२ वैशाख बदी १३ मूल पद्य में कहीं नहीं कहा है॥

७ कीली को उखाड़ने पीछे फिर उसका गाड़ना और केवल उन्नीस ही अंगुल पृथ्वी में धसना कहीं भी मूल पद्य में नहीं कहा हुआ है॥

८ व्यास का अनंगपाल को कहना कि तुमारी उन्नीस पीढ़ी पीछे राज्य चौहानो के हाथ में जायगा मूल पद्य में कहीं नहीं वर्णन किया हुआ है॥

पृथ्वीराज चरित्र के कथन में॥

९ हस्तिनापुर का नाम तक मूल पद्य में नहीं है और न उसका और अनंगपाल के राज्यशासन की अत्यन्त प्रशंसा उस में चंद ने कथन की है॥

१० एक दिन राजा अनगपाल का हस्तिनापुर से आखेट के लिये बन में जाना मूल पद्य में बिल्कुल नहीं है । किन्तु रूपक १७ में कलहन राजा का बन क्रीडा करना कहा हुआ है ॥

११ आखेट का सविस्तर वृत्तान्त, जैसा कि वर्णन किया गया है, मूल में नहीं है ॥

१२ राजा अनगपाल का एक बट वृक्ष की सघन छाया में बैठना भी मूल में नहीं है ॥

१३ राजा अनगपाल का एक अजा का एक भेडिये के साथ युद्ध करना देखना लिखा है उसके स्थान में मूल पद्य के रूपक १७ में कलहन राजा के प्रसंग मे "सुसा और स्वान" शब्दो का प्रयोग हुआ है ॥

१४ इस कौतुक की भूमि पर राजा अनंगपाल का चिन्ह कर देना कि भूल न जावे मूल मे नहीं है ॥

१५ दूसरे दिन राजा अनगपाल का गुरु व्यासदेव के आश्रम पर जाना आदि भी मूल में नहीं कहा है ॥

दिल्ली में कुतुबमीनार के पास जो एक लोहे की बडी कीली अब तक विद्यमान है उसके विषय मे पुरातत्ववेत्ता विद्वानों में मत भेद है । तवरो की ख्यातिओं में कलहन, कलिहन, कल्हन और किल्हन का चंद्र भी नामान्तर मिलता है । तथा कलहनादि नामान्तरो की चंद्रवाचक व्युत्पत्ति हो सकती है । अत एव अनुमान होता है कि कीली पर जो नीचे लिखे श्लोक खुदे हुए हैं और उनमे जिस राजा चंद्र का नाम है वह यही राजा कलहन उपनाम चंद होगा—

यस्योद्वर्त्तयतः प्रतीपमुरसा शत्रून् समेत्यागतान् ।
वङ्गेष्वाहववर्त्तिनोऽभिलिखिता खड्गेन कीर्तिर्भुजे ॥
तीर्त्वा सप्तमुखानि येन समरे सिन्धोर्ज्जिता वाल्हिका ।
यस्याद्याप्यधिवास्यते जलनिधि र्वीर्यानिलैर्द्दक्षिणः ॥ १ ॥

खिन्नस्येव विसृज्य गां नरपतेर्गामाश्रितस्येतराम् ।
मूर्त्या कर्म्मजितावनिं गतवतः कीर्त्या स्थितस्य क्षितौ ॥
शान्तस्येव महावने हुतभुजो यस्य प्रतापो महान् ।
नाद्याप्युत्सृजति प्रणाशितरिपोर्यत्नस्य लेशः क्षितौ ॥ २ ॥

प्राप्तेन स्वभुजार्जितञ्च सुचिरं चैकाधिराज्यं क्षितौ ।
चन्द्राह्वेन समग्रचन्द्रसदृशीं वक्त्रश्रियं बिभ्रता ।
तेनायं प्रणिधाय भूमिपतिना भावेन विष्णौ मतिम् ।
प्रांशुर्विष्णुपदे गिरौ भगवतो विष्णोर्ध्वजस्स्थापितः ॥

इस कीली के परिमाण के विषय मे इलाहाबाद लिटरेरी इन्स्टीट्यूट की बनाई हुई हिन्दी रीडर नम्बर ५ अर्थात् हिन्दी शिक्षावली भाग पंचम मे जो सन् १८८० ई० मे पांचवीं बार छपी है, यह लिखा है:—

'इसी लाट के पास एक बडी लोहे की कीली लग भग ५६ इञ्च मोटी धरती में गडी हुई है । धरती से ऊपर इस कीली की ऊंचाई २२ फुट है और कनिंगहम साहब लिखते हैं कि यह निश्चय नहीं हुआ कि यह कीली पृथिवी के नीचे कितनी दूर तक गई है । एक बार २६ फुट तक धरती खोदी गई थी परन्तु कीली की जड का पता न लगा' ।

सो अशुद्ध है। मालूम होता है कि ग्रन्थकर्त्ता ने जनरैल कनिंघाम साहब की सन् १८७१ की रिपोर्ट पुस्तक १ पृष्ठ १६९ हो पढ़ कर यह वृत्तान्त लिख दिया कि जिस को अब तक अनेक बालक पढ़ कर मिथ्याज्ञान उपार्जन करते चले आते हैं। यह तहक़ीक़ात पीछे के अन्वेषण से रद्द हो गई है कि जिसका वृत्तान्त उक्त जनरैल साहब की रिपोर्ट पुस्तक ४ पृष्ठ २८ में लिखा है पिछली तहक़ीक़ात के अनुसार इस कीली की ऊंचाई धरती से ऊपर २२ फुट और धरती के नीचे केवल बीस इंच और कुल लंबाई २३ फुट ८ इंच निश्चित हुई है। उक्त सभा जो अपनी पुस्तक में इस भूल का सुधार दे तो अत्युत्तम है॥

इति।



अथ लोहानो आजान बाहु समय लिख्यते।

(चौथा समय)

पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को बत्तीस हाथ ऊंची गोष से कूदने को उत्तेजना देना॥

कवित्त॥ इक्क समय प्रिथिराज। राज ठढ्ढा सामंतह।
हथ बत्तीस इक गौष। चित्रसारी कहवत्तह॥
घटिय सेष दिन रह्यौ। सबै भर भीर गहस्मह।
नग्रनाथ नागौर। पहराजंत इन्द्र पह॥
उच्चारय बत्त इमि मत्ति करि। सोइ जोधा पब्बह जिसौ।
मै भित्त चित्त मैं भित भिरै। इह सुथान कुद्दै इसौ॥ छं०॥ १॥ रू०॥ १॥

लोहाना का कूदना॥

कवित्त॥ दुचित चित्त सामंत। चाहि लग्गिय टगटग्गिय।
चित्र जानि पुत्तरिय। नयन जुव्वैं पग मग्गिय॥
रज्जि मत्ति नादान। कन्ह उच्चरिय बत्त इह।
चामुंडा जैतंसि। रोस आक्रस्स कियौ वह॥
ठढ्ढौ सु इक्क लोहान भर। कहर कवुत्तर कुद्दयौ।
जो नेक चूकि ऐंढा गियौ। साष अंब हू छद्दयौ॥ छं०॥ २॥ रू०॥ २॥

यह समय हमारे पास की संवत १६४७ की लिखित पुस्तक में नहीं है किन्तु उसके इधर की लिखी सब पुस्तकों में मिलता है। तथा इस कथा का सदर्भ तीसरे समय के रूपक २९ "षोडस गज ऊद्दु"- से लगाकर अभिप्राय समझने से ध्यान में आवेगा कि एक दिन राजा पृथ्वीराज सायकाल के समय सोलह गज वा बत्तीस हाथ ऊंची चित्रसारी की गोख में सामन्तों सहित खड़े थे और एक चित्रकार ने एक पत्र अर्थात् चित्र पेश किया उसको संभरी नाथ देख रहे थे कि देखते देखते वह हाथ में से छुट पड़ा। उसको लोहानो अजान बाहु ने कूद कर अधबीच में ही झड़प लिया इत्यादि।

१ पाठान्तर—अजान बाहु। पृथीराज। उड्ढा। ठड्ढा। बट्टा। सामतह। बत्तीस। कहैं। बर गहस्सह। वत। मति। ज्जोधा। ज्जिसो। भित। चित। कुद्दै॥

२ पाठान्तर-मति। वत। वामहां। जैतसी। आक्रस। चट्टो। नेकि। वेक। अबो॥

लोहाने के कूदने की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ इक्क कहै धर जीव । काज पंषिनी भरप्पिय ॥
इक्क कहै सो वन्न । इन्द्र को पुरपेव नंप्रिय ॥
इक्क कहै आकास । तास चौ उडियन तुट्टौ ।
इक्क कहै सुरलोक । तास कोई नर लुट्टौ ॥
कविचंद किति उप्पम कहै । लोहाना तोंवर सुभर ।
जाजुल्लि राइ सुत किद्द चित । नाध्य हुवै दुज्जै सुभर ॥
॥ छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का दौड कर लोहाना के पास आना और उसे हिये लगाना ॥

अरिल्ल ॥ दौरि राज पृथ्वीराज सु आयो । षमाषमा अप्प उचायो ।
और सूर सामंतह अग्गी । हियरा मझिझ्झए परि लग्गी ॥
॥ छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

उसे आप उठाकर अपने घर ले जाना और इलाज करना ॥

अरिल्ल ॥ अप्प उचाइ अप्प ग्रह आने । सब तबीब बहुत सनमाने ।
मौज मना मझि होइ सुमंगौ । च्यारि पहर दिवसह मझि चंगौ ॥
॥ छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

हकीमों का लोहाना को दवा के लिये ले जाना और नवें दिन उसका अच्छा हो कर पृथ्वीराज के पास आना ॥

दूहा ॥ तब तबीब तसलीम करि, लै घरि आइ लुहान ।
नव दीहे सिर भल्लयो, ढंढोलन गय ठान ॥ छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥

---

३ पाठान्तर—कहैं । को । कहै । उडियन । कोइ । कहै । तोवर । किद्दु । दुज्जे ॥

४ पाठान्तर—राजा । प्रथीराज । उचायौ । मझिए ॥

५ पाठान्तर—आनै । बहुमत । सनै मानै । सुमग्गा ॥

६ पाठान्तर—भलयो ॥

चंद पंचमो अति सुअक्ख, दिए विप्र बहु दान।
तिथि तेरस रविवार दिन, पय लग्गौ चौहान ॥ छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज का प्रसन्न हो कर लोहाना को ग्वालियर, रणथम्भौर, उड़छा आदि पांच हज़ार गांव देना ॥

कवित्त ॥ पय लग्गत चहुवान। मौज ग्वालेर सुदिन्नौ।
रिनथभह ऊड़छो। कहर सूरब्बर किन्नौ ॥
लोहाना आजान (बाहु) * नाम थप्पै बहु अप्पै।
सहस पंच दिय ग्राम। जैत कविचंद सुजप्पै ॥
तिहि घरिय मझ्झि यह अप्पियै ॥ लै पट्टा सीसह धरिय।
रक्खी सुवत्त दिन तीन मंह। षग्ग मग्ग ऋप्पी षरिय ॥
॥ छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥

आजानुबाहु का आना और पृथ्वीराज का हाथी घोड़े आदि देना ॥

दूहा ॥ पूनम तिथि मंगल्ल दिनह, गृह तेरिय आजान।
आसन छंडि तु अप्प दिय, बहु आदर सनमान ॥
॥ छं० ॥ ९ ॥ रू० ॥ ९ ॥

छंद पद्धरी ॥ नव दून अप्पि मदझार गयंद। कज्जल सकोट उज्जल अनंद ॥
से पंच दिन्न बाजी पवंग। गो अप्प सैक (वान) * अच्छता कुरंग ॥
॥ छं० ॥ १० ॥

से पंच दिन्न अति उंट अच्छ। कत्तार भार पक्कार कच्छ ॥
दोइ से दिन्न दासी सुचंग। झलकंत तास द्रप्पन सुअंग ॥ छं० ॥ ११ ॥

७ पाठान्तर–पनमौ। दिये। तेरसि। लग्गौ। चहुवान ॥

८ पाठान्तर–लगात। चहुवान। दिनौ। रिनथिंमह। उडछा। सूरवर। किनो। * अधिक पाठ है। थप्पे। अप्प। जप्पे। लै। रषी मरवत दिन तीन पर ॥

९ पाठान्तर-पुनिम ॥

१० पाठान्तर–अनदु। सैं। * अधिक पाठ है। द्विन। अछ। कछ। से नपे। मरस। गनै। षस। मुषि। वाम्हराय। सुम्मिक। मच्छ। सुनार। जोहर। मुरत। पृद्धि। ढोरे ॥
* पाठ उपस्थित पुस्तकों में नहीं है ॥

सिरपाउ भाउ नष्षे सरस्स। को गनै द्रव्य भंडार अस्स॥
सामंत सूर मुख नूर नष्य। * * * ॥ छं० ॥ १२ ॥
अब्बूसराइ जामानि जद्द। चामंडराइ मन मुक्कि मद्द॥
गोयंद राइ षीची प्रसंग। उर लग्गि अग्गि नद्द मुष्प अंग॥ छं०॥ १३॥
नष्षंत सूर सामंत और। खरगोस लहै पै कोस दौर॥
ऐ सरस सब्ब सामंत सूर। तिन चवै नाम आजान नूर॥ छं० ॥ १४ ॥
जुग्गिन पुरेस काजि अप्पि जीव। रती सबत्त चष्यें सुदीव॥
सिर पटा काप लोहान होइ। लग्गे मुसरह सब पाइ लोइ॥ छं०॥ १५ ॥
कपूर चीर सागर सुनीर। सह धन्न धान जोवर सुचीर॥
फुल्लेल अरगजा बहु सुगंध। कोठार भार उग्गाह सुबंध॥ छं० ॥ १६ ॥
कामंतु अप्पि ऐसे सुक्रित्त। परधान मान करि मानमत्त॥
रत्तौ सुस्वामि ध्रम्मह सुसब्ब। अद्दि चलैं स्वामि डारैं सुनव्व॥
छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ १० ॥

लोहाना के बीरत्व का वर्णन॥

गाथा॥ लोहाना आजानं। नानं पथ भीम जुद्धानं॥
आ आरूप सरूपं। बंकं भरं पद्धरं करनं॥ छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ ११ ॥

दूहा॥ लोहाना तोंवर अभंग, सुघर सब्ब सामंत।
सांई काज सुधारना, ढंढोलन गय दंत॥ छं० ॥ १९ ॥ रू० ॥ १२ ॥

लोहाना का पांच हज़ार सेना लेकर ओड़छा के राजा जसवन्त पर चढ़ाई करना॥

कवित्त॥ उंडच्छा अरि थान, कच्छ ईदां धर रत्तौ।
नाम तास जसवंत, पग्ग राजन धर रत्तौ॥
लोहाना अनबीह, लीय आरत्त समथ्थै।
साज्ज सेन सामंत, कलह रष्पन जस कथ्थै॥

---

११ पाठान्तर–पथु। बकं।

१२ पाठान्तर–सब। ढंढोल गनय दंत।

हज्जार पंच सेना समथ, करि जुहार भर चल्लयो।
झलहलि गसत सायरत दिन, हाक मेर गिर हल्लयो॥

छं० ॥ २० ॥ रू० ॥ १३ ॥

ओड़छा पर चढ़ाई की शोभा का वर्णन ॥

गीता मालती ॥ सजि चल्यो तामं युद्ध धामं केन कामं पूरयं।
घन घोर घट्टा समुद फट्टा द्रुम उलट्टा सूरयं॥ २१ ॥
धुंधरिग भानं षुरेसानं हेम जानं चल्लयं।
कनवज्ज थानं परि भगानं सूरतानं सल्लय॥ २२ ॥
आजानुबाहं परे थाहं गज्ज गाहं घुम्मरे।
चढ चढे मद्दं गज्ज सद्दं घटा भद्दं उप्परे॥ २३ ॥
नारद्द वक्कं सूर हक्कं लेयन्न लंकं जुट्टरे।
ऊड़छा उप्परि कंठला करि षराभष्षुरि अष्षुरे॥

छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥ १४ ॥

ओड़छा के राजा जसवन्त का सामना करने के लिये प्रस्तुत होना ॥

दूहा ॥ सुनी धाह जसवंत नृप, आयो सेन सुसज्जि।
ढलकि ढाल वद्दल मिलिय, पुव्व झड़ाउ अवज्जि॥

छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ १५ ॥

लड़ाई होना और लोहाना का जीतना ॥

छंद विराज ॥ बजे सिंधु नद्दं। करी सुक्कि मद्दं॥
हकं सूर बज्जे। मनों मेघ गज्जे॥ २६ ॥
छुटे अग्ग वाजी। भ्रमे सार भाजी॥
मचे गोम घोमं। मनों राह होमं॥ २७ ॥
लिये हथ्थ वथ्थं। मनों जुद्ध पथ्थं॥
धरे धीर धारी। वकें मार मारी॥ २८ ॥

---

१३ पाठान्तर—उडछा। धान। कट्ठ। दहा पगा। सजि गमत॥
१४ पाठान्तर—षुरेसान। सलयं घुम्मरे। क्र। लेयन। उडछा। कठला॥
१५ पाठान्तर—वद। पुत्र। झकाइ॥

ग्रहे सीस ईसं। करा रंत दीसं॥
जुटंतं मरदं। मचे एम कदं॥ २९॥
लरै यों लुहानं। अभंगं जुवानं॥
जसव्वंत जोरं। चहुआनि धोरं॥ ३०॥
गमेते गमानं। गए अग्ग थानं॥ छं०॥ ३१॥ रू०॥ १६॥

दूहा॥ षेचर भूचर जलचरह, सूर गए सुर थान।
जुद्ध जुरे जसवंतसी, रन जित्यौ लोहान॥ छं०॥ ३२॥ रू०॥ १७॥

लोहाना का गढ़ पर अधिकार कर लेना॥

कवित्त॥ सहस उभय लोहान, सुभट परि षेतह मज्जे।
सार धार परचार, उभय गजराज़ विभज्जे॥*
सय सत्तह हय षेत, नेत बहु रिन जित्यौ।
बह सहस (अरि)† पतंग, कवी चंदह कहि कित्यौ॥
परि लुथ्थ कोस मुर दून प्रति, धर लिन्नी गढ़ भंजियै।
करि जेव बयट्ठो गढ्ढ परि, दुक्क थानि मन रंजियै॥
छं०॥ ३३॥ रू०॥ १८॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके लोहाना आजा-नवाहु समय नाम चतुर्थ प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ४॥



१६ पाठान्तर—मनै। अगि। मनै। हय। मनै। राम। मचै। लरै। यौ।
१७ पाठान्तर—थलचरह। सुर। जसवंतसी॥
१८ पाठान्तर—लुहान मजे। * यह पाद संवत १९५९ की लिखित पुस्तक मे नहीं है॥
† यह अधिक पाठ है। कित्तौ। लिनी। भंज्जियै। बयठौ। रंज्जियै। लेहान॥

अथ कन्हपट्टी* समय लिख्यते ॥

(पांचवां समय)

पृथ्वराज के भोरा भींमंग से वैर होने का कारण ॥

दूहा † ॥ सुकी कहै सुक संभरौ, कहौ कथा प्रति प्रान । ‡
पृथु भोरा भीमंग पहु, किम हुअ वैर विनान ॥ छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

---

१ पाठान्तर–शुक । कहैं । सम्भरौ । कहो । पांन । पान । प्रथु प्रिथु । वीर ॥

* कन्ह पृथ्वीराजजी का चाचा अर्थात् काका था । वह सदा आंखो के पट्टी क्यों बांधे रहता था इसका वर्णन इसमें होने से इसका "कन्हपट्टी समय" नाम हुआ है ।

इस समय में गुजरात के दूसरे चालुक्य राजा भोला भीम का नाम और उससे पृथ्वीराज के बैर होने की कथा प्रथम ही आई है । और इसमें कहीं भी यह नहीं कहा हुआ है कि सोमेश्वरजी को भीम ने मार डाला था और उसका वैर लेने को पृथ्वीराजजी ने उस पर चढाई करके उसे मार डाला था । जिन लोगो के हृदय में यह रासो कांटा सा सलता है उनके ही मानने के अनुसार भीम देव दूसरा सं· १२३५, ई० ११७८ मे गद्दी पर बैठा था और ६३ वर्ष राज्य करके सं· १२९८, ई० १२४१ मे परलोक को सिधारा । और पृथ्वीराजजी का जन्म सं· १२०६ मे होकर वे ४३ वर्ष की वय मे सं· १२४९ मे मरे । इस से सिद्ध है सं· १२४९ तक तो दोनो राजा निर्विवाद सम-कालीन रहे । अब रहा उनके मारे जाने का हाल सो यहा है नहीं । जहा वह आवेगा वहा हम उसके विषय मे भी ऐसी ही सत्यविवेचना करेंगे । अतएव यह समय तो अपक्क सिद्ध नहीं होता ॥

† एक पाठक की शंका है 'क्या दूहा और दोहा की मात्रा में कुछ भेद है"? उत्तर–कुछ भेद नहीं है । दूहा पुराना और दोहा नया प्रयोग है । इनमें से दूहा "दु+ऊह" से बना है अर्थात् जिसमें दो ऊह हो उसे दूहा कहते है । और हिन्दी दोहा शब्द संस्कृत द्विपदा से इस प्रकार बना हुआ जान लेना चाहिए–द् + अ + उ = द् + य + व् = द्व । द्व + ऊहा = द्व + अ + ऊहा = द्व + ओ + हा = द्वोहा = हिंदी दोहा । षट्भाषा के प्रचार के समय मे इसको दुवहिआ वा दोधडिका भी कहते थे । इसका संस्कृत मे लक्षण और उदाहरण यह है–

मात्रा त्रयोदशक यदि पूर्व्वं लघुक विराम । पश्चादेकादशकन्तु दोधडिका त्रिगुणेन ॥

तथा इसका प्राकृत उदाहरण यह है :–

माऐ [illegible] पुज्ज हांसिओ [illegible] गोपाल । वृन्दावणवणकुंज हरिओ [illegible] ॥

अस्यार्थः –

हे मातः ! [illegible] श्रुत्वा कृष्ण गोपाल हसित्वा [illegible] रसानं [illegible] पुन वृन्दावन-वने कुंजे [illegible] निविडनिकुंजे । राई इति क्वचित् पाठः [illegible] दोधडिका [illegible] । [illegible] बहुधा [illegible] ॥

यह २४ मात्रा का छंद है । इसमें यति १३ । ११, १३ । ११ पर है । और इसमें ६ ताल हैं वे ये–[illegible] ऐसा दोहा गाने में ठीक रहता है ॥

पृथ्वीराज के कुंअरपन का तपतेज वर्णन ॥

कवित्त ॥ कुँअरप्पन प्रथिराज। तपै तेजह सु महावर ॥
सुकल बीजु दिन हुतें। कला दिन चढत कलाकर ॥
मकर आदि संक्रमन। किरन बाढैं किरनाकर ॥
यौं सोमेस कुँआर। जोति छिन छिन अति आगर ॥
हय हथ्थि हेत संकै न मन। षल षंडन गढ गिरन वर ॥
चिंहु ओर जोर दसहूं दिसा। कीरति विस्तरि महिय पर ॥ छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

गुजराज के राजा भोरा भीम का तपतेज वर्णन ॥

कवित्त ॥ भोरा भीम भुआंग। तपै गुज्जर धर आगर ॥
है गै दल पायक्क*। षग्गबल तेजह सागर ॥
काका सारँगदेव। देव जिम तासु बड़ाइय।
तासु पुत्र परताप। सिंघ सम सत्त सु भाइय ॥
परतापसीह अरसीह बर। गोकुलदास गोविंद रज।
हरसिंह स्याम भगवान भर। कुल अरेह सुष नीर सज ॥ छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

उसके काका और चचेरे भाइयों की वीरता का वर्णन ॥

दूहा ॥ जोरावर जुरि जंगमति, भरे बथ्थ नम गाज।
हुकम सामि छुट्टत सु इत, मनों तितर पर बाज ॥ छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥
तिन पर तुट्ट बीज जौं, जिन पर राज असट्ठ।
राजकाज संमुह भिरन, दई न कबहू पुट्ठ ॥ छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

---

† यहां शुक और शुकी से कविका अभिप्राय चंद और उसकी स्त्री से है। क्योंकि यह सब महाकाव्य उनके ही सवाद में रचा गया है और आगे भी कई एक समयो में यही प्रयोग आवेगा। चद प्रायः कवि को कीर की उपमा देता है—"ग्रास असन कवि कीर" ॥

२ पाठान्तर–कुआरपन। कुंअरप्पन। पृथीराज। * ज्यों ज्यों अधिक पाठ है। जिम। बढै। कुवार। कुंआर। छिन ही छिन। हथि। गिनर। चिंहु। विहु। दिशा विसतरि ॥

३ पाठान्तर–गुजर। हय। गय। पाइक। * प्रचंड अधिक पाठ। पायक। सु। सारंगदेव। बड़ाई। तास। भाई। सिंह। सिंघ। श्याम। भगवान। सजि ॥

४ पाठान्तर–जग। बथ। गाजि। स्वांमि। छुटत। मनों। तीतर ॥

५ पाठान्तर–ज्यों। असटुं। पिट्ठ ॥

गाथा ॥ मारे रान सुरानं। झालासबलं अंगं झालालं ॥

जिन भंजे जैसालं। कह्यौ भ्रातराजसि पंचं ॥ छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥

पाट बैठने पर प्रतापसी का गर्व होना ॥

दूहा ॥ सारँग दे सुरलोक गत, भो प्रतापसी पाट।

सात भ्रात सेवा करैं, तपै तेज थिर थाट ॥ छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

अट्ठसहस दलबल अनँत, बहुत ग्रब्ब वर अप्प।

सतरि सहस धर गुज्जरनि, मधि ओपत जिमकप्प ॥ छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥

स्वामि ध्रम्म रत्ते सुमन, जे ठेलैं गजठट्ट।

ढरै परव्वत षिषर डर, करैं सत्रु दहवट्ट ॥ छं० ॥ ९ ॥ रू० ॥ ९ ॥

प्रतापसी के देश उजाड़ने की पुकार भीमंग के पास होना ॥

दूहा ॥ भोरा भीम भुआल के, कोइ एक मैवास।

तिन उज्जारत देस कौं, परि पुकार न्रप पास ॥ छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ १० ॥

गाथा ॥ प्रात समय पूकारं, आई नरिंदं भीम दरबारं।

करि नीसान सुधावं, चढि राजं साजि आतुरयं ॥ छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ११ ॥

दूहा ॥ चालुक्कह गुज्जर धरा, ईस नेति किय भीम।

सो डभ्भौं तिहु पूर सुबर, को चंपै अरि सीम ॥ छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १२ ॥

भोरा भीम की लड़ाई ॥

छं० पद्ध० ॥ चढि चल्लन राज आवाज कीन। नीसान नद्द वज्जे वजीन ॥

चिहु ओर भरनि कुद्दे तुरंग। सजि सिल्लह भांनि नाना अभंग ॥ छं० ॥ १३ ॥

---

६ पाठान्तर—रान। भजे ॥

७ पाठान्तर—सारंगदे। भय। करै ॥

८ पाठान्तर—सव। अप। सत्तरि। गुज्जरति। उपति ॥

९ पाठान्तर—स्वामि। रते। ध्रंम्म। ठट। ठरत। परवत। शिषर। करता। शत्रु। वट ॥

१० पाठान्तर—भुवाल। स १६४० की में "कोई एक" के स्थान में "धर जादव" पाठ है। उज्जारत। देशको ॥

११ पाठान्तर—पुकार। धाई। निसान। निसान। धाय। साजि ॥

१२ पाठान्तर—किये ॥ यह रूपक सं० १६४० की पुस्तक नहीं है किन्तु उसके पीछे की लिखित पुस्तको मे है ॥

१३ पाठान्तर—नीसान। बजे। चिहु। चिहु। दर। कुट्टंति तुंग। सितुग। भांति ॥ १३ ॥

घम घमकि धरनि थाने सुभंग। गज्जिय अकास कै गव्हर गंग॥
भय हूह हाक आतंक जोर। सद सुरन फेरि भेरीन घोर॥ छं०॥ १४॥
उडि रेन सेन मुंदिग अकास। परि रोर सोर जहां तहां मेवास॥
धरि रोस मुच्छ मुररंत भीम। रस वीर बक्र संक्रोध ष्हीम॥ छं०॥ १५॥
चंपी सु सीम अरियन सुजाम। डेरा सुदीन न्रप सरित नाम॥
जुररा सिकार तीतर बटेर। षेलंत सरित तट अद्द अवेर॥ छं॥ १६॥
इहि समय ताम परतापसीह। लहु बंधु साथ अरसी अबीह॥
ए हुते सकल बाहुर ते बेर। नय मज्झ आइ षेलत अवेर॥ छं०॥ १७॥
गजराज नाम साहन सिंगार। सरितान मज्झ वह पियै वार॥
सुनि सोर दान कुट्टे कंक्कार। जनु भूत भांति भय भीत भार॥ छं०॥ १८॥
जमुना कि जग्गि काली करार। शिर धूनि महावत दियौ डार॥
गज एक वारि पीवंत दूरि। तिन पर सु तुट्टि जनुं सिंघ चूरि॥ छं०॥ १९॥
धरि पंष पष्प जनु धप्पि धाय। भुज पस्यौ नभ्भ बद्दर सुभाय॥
दिषि दुग्द उनहि आवंत आन। धुजि करि सु डारि उन पीलवान॥ छं०॥ २०॥
धायौ ति समुह साहन सिंगार। जनु बंध जंम उप्पर अपार॥
कलपंत पाइ जनु पवन आइ। हल हलो पब्ब जित मित बिठाइ॥ छं०॥ २१॥
जम रूप हूअ जनु जंम द्वार। हय थान बीच घेरे असार॥
इक ओर वारि द्रह गहर गूल। इक ओर ओर बर उंच कूल॥ छं०॥ २२॥
परताप सनंमुष पस्यौ जाइ। डारंन अश्व असि कियौ घाइ॥
बहि सीस परन दो हय करार। परबूज जानि विफस्यौ विफार॥ छं०॥ २३॥
जगनाथ छंडि जनु बंटि दोइ। इह भंति कुंभ कुंभो न होइ॥
गज पस्यौ धरनि साहन सिंगार। किन्नो अकाम परताप पार॥ छं०॥ २४॥

थाने। गज्जिय। गग॥ १४॥ रेन। सेन। मिवास। मुंछ। कर्क॥ १५॥ सुजाम। ताम॥ १६॥ * इस छंद की चारों तुकें सं० १६४० की पुस्तक में नहीं हैं। ताम। परतापसिंह। बाहुरत। मझ। अवेरि॥ १७॥ नाम। सिरतान। द्विं। पीवंत। वारि। दान। कुटे। छंकार। भै॥ १८॥ जगि। डारि। चूर॥ १९॥ पव्वय। जनुं। धपि। नभ। वदर। क्षिमाय। आनि। पीलवांन॥ २०॥ साहंन। संगार। पाय। पब्बय। बठाइ॥ २१॥ जंमरूप। जंम्म। ओर। लोर॥ २२॥ जाय। घाय। बिफस्यौ॥ २३॥ बंटिय कि दोय। कुंभिय। होय। शृगार। सिंगार। कीनौ॥ २४॥ अरसिंह। पुठि। देषि। सनमुष। एही। शिर। पय। चीरि। हय।

अरसीह पुठु जग घल्यौ देष । सनमुष्य क्रम्यौ सम सीह भेष ॥
गज गही दौरि सिर पग्ग सुंड । दिय गुरज चीर दय हथ्थि मुंड ॥ छं० ॥ २५ ॥
फव्यौति सीस भइ पंच फारि । गज ढ्यौ जानि गिरवर विसार ॥
सुनि बत्त राज भोरा सु भीम । पायो अनंत दुष आप चीम ॥ छं० ॥ २६ ॥
कह वाव किथो नृप अप्प साम । तुम सो न हमहि चाकरह काम ॥ छं० ॥ २७ ॥ रू० ॥ १३ ॥

उन सातों भाइयों का चलचित्त होना ॥

दूहा ॥ भा उभुय अहंकार करि, हन्यो सुबर गजराज ।
दोष हमहि लग्यौ नहीं, आप हि कीन अकाज ॥ छं० ॥ २८ ॥ रू० ॥ १४ ॥

पृथ्वीराज का उन चलचित्त सातों भाइयों को जागीर और सिरोपाव देना ॥

दूहा ॥ सात भ्रात निज बात सुनि, जए अप्प चलचित्त ।
प्रथीराज सुनि कुँवर नें, आप बुलाये हित्त ॥ छं० ॥ २९ ॥
दिये हथ्थ लिषि गाम पट, रहे वास थिर आनि ।
चालुक चातुर वीर वर, जिन उंपत सुप पानि ॥ छं० ॥ ३० ॥
वाजी सत दीने बगसि, संबोधे सत भ्रात ।
एक एक सिर पाव दिय, बहु आदर किय बात ॥ छं० ॥ ३१ ॥
गुरु लज्जा गुरु भत्ति गुरु, पन गुरु साष नरेस ।
गुरु उर सत गुरु सूरतन, गुरु गति मति गुरु भेस ॥ छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज का दर्बार करके बैठना--उसमें प्रतापसी का आना और उसे मूछ मरोड़ने पर कन्ह का मारना ॥

सोरठी दूहा ॥ सक दूक सोम कुमार, सम सामंतन सूर सम ।
सोम सीस भूअ भार, सो दिठे सुभ सभा रचि ॥ छं० ॥ ३३ ॥ रू० ॥ १६ ॥

२५ ॥ सुनंत । भय । फार । गे । जानि । बिसाल । बत । हीम ॥ २६ ॥ कहवाय । कीयो । नृप । श्राम । साम । सो । सो । न काम ॥ २८ ॥

१४ पाठान्तर-भाव । अहंकार । यह सं० १६०८ की पुस्तक में नहीं है । और भा शब्द [illegible] का [illegible] है ॥

१५ पाठान्तर—निजि । मधि । उप । [illegible] । हित्त । कुंअर । बुलाय । हित ॥ २९ ॥ हय । नाम । [illegible] ॥ ३० ॥ [illegible] । सपत्त । दिने । सिरपाव ॥ ३१ ॥ गुर । नरे । । गुर ॥ ३२ ॥

१६ पाठान्तर—सोरठा । सकै । सकै । रक । कुमार । सामंतन । भार । भू । दिठे ॥

छंद मोतीदाम॥ रची सुभ सोम सभा प्रथिराज। विराजित मेरु जिमे भर साज॥
भुजा सम कन्ह रजे चहुवान। तिनैं मुक्क राजत है मुह पान॥छं०॥ ३४॥
जिनैं चष चाहि कँपै भर मांन। कँपै जनु मोरन अप्प षिवांम॥
रहै चष वारि सुरातन एम। जवा यन प्रात कियो सक जेम॥ छं०॥ ३५॥
तहां वर चावँड राइ रजंत। जुधं मधि चावँड रूप सजंत॥
नरसिंघ विराजत सिंघ जिसौह। विभीषन भा कयमास जिसौह॥छं०॥३६॥
सबैं भर ओर उनथ्थ सुभंत। तिनं मधि पीथ कुँआर रजंत॥
मनों सुकलं पष बीज कौ चंद। तिया रस राजत तारग छंद॥ छं०॥ ३७॥
प्रतापसि सातउ भ्रात सरीस। प्रथी पति आइ नमाइय सीस॥
ति सोहन मानुस नं सत मेर। किधौं सत सिंधु सुहंत उजेर॥छं०॥३८॥
सनंमुष कन्ह प्रतापसि आइ। ठई तिन बैठक सात सुभाई॥
कहै भर भारथ बत्त स बांन। धर्यौ परताप्सि मुच्छन पांन॥छं०॥३९॥
लषी चहुआन सु कन्ह अपंन। कढी असि नच्च असंष भषंन॥
दई चसि दौरि जनेउ उतारि। इहो धर अध उपंम बिचारि॥छं०॥४०॥
मनों सब नागर साबु कटंत। इही जनु गंठि बिचें बिच तत॥
पर्यौ परताप प्रथी पर आप। भई भर मध्य सुजोर अमाप॥
॥ छं०॥ ४१॥ रू०॥ १७॥

भाई के मारे जाने पर अरिसिंह का क्रोध करना और कन्ह चौहान पर घार करना॥

दूहा॥ भई हूह मस्सक्कह मच्चल, पर्यौ भुंमि परताप।
हाक बीर वज्जे विषम, अरसी कुप्पौ आप॥ छं०॥ ४२॥ रू०॥ १८॥

---

१७ पाठान्तर-प्रथीराज। मेर। कन्ह। रवे। चहुवान। तिन। मुक्क पान॥ ३४॥ जिन। कंपै। चंपै। अप्पन मोर। रहे। कि उसकजेम॥ ३५॥ चांउड। चावंड। राय। चामुंड। नरसिंघ। विराजित। जिसौ। मिसु। भीषन। जिसौ॥ ३६॥ सबें। ग्रौर। उनथ। पिय। कुमार। कुआर। मनों॥ ३७॥ पृथीपति।
नमाईव। शीका। सोहति। मानौं। मांनुस। किधों॥ ३८॥ प्रतापसी। आय। कहै॥ बत। मुक्कन। मुंछन॥ ३९॥ चहुवांन। अपान। तारि। वही॥४०॥ मनौ। नीगर। बिचे। पृथी॥४१॥
१८ पाठान्तर-दोहा। भर। भुमि। यह रूपक सं. १६४५ की पुस्तक मे नहीं है॥

कवित्त ॥ भई हूह परताप। पर्यौ दिष्यौ अरसी वर।
उठ्यौ कड्ढि तरवारि। दई भुज कन्ह वाम कर॥
कुक्क सोह वर ओर। गरै पष्षर गह्वि डारी।
एक अगनिता मद्धि। आनि कूंपी घृत धारी॥
चहुआन कन्ह आगै सुबर। ता पच्छै लोहन दग्यौ।
डाजुल्लित सत्त बर बीर मनि। बीर वीर रस सौं कग्यौ॥
कं० ॥ ४३ ॥ छं० ॥ १९ ॥

पृथ्वीराज का महल में जाना और अरिसिंहादि की लड़ाई का होना॥

दूहा ॥ उट्ठि कुंवर प्रथिराज लषि, गयौ महल निज मद्धि।
दै किवार मिलि थाट जुध, मच्यौ कलह सम मद्धि॥ कं० ॥ ४४ ॥ छं० ॥ २० ॥

गाथा ॥ कड्ढी असि अरसिंघं। नरसंघस्य झारयं सीसं।
दई गुरज गुर अड्डुं। वड गुज्जरं रंम कंदाइं॥ कं० ॥ ४५ ॥ छं० ॥ २१ ॥

चालि ॥ दिषि चावंड ॥ विजि चावंड ॥ लोह चावंड ॥ मन चावंड ॥ चावंड ॥
कं० ॥ ४६ ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ बढिय जंग उत्तंग। दंग जनु दाह जुलग्गिय॥
परिय रौर राव रन। जुरिय जुध कन्ह अभिग्गिय॥
मारि ढारि अरिसीह। हक्यौ गोयंद मेह गनि॥
कड्ढि हथ्थ जम दड्ढ। दई चहुआंन कूष घन॥
करि रोस कन्ह कर चंपि सिर। दो हथ्थन भेजी उड्डिय॥
निकसीय प्रान गोविंद उर। जोति भेदि जोतिह मिल्लिय॥
कं० ॥ ४७ ॥ छं० ॥ २३ ॥

---

१९ पाठान्तर-वाम। एक। योर। डारीय। आनि। चहुयान। अगे। पछे। मत्त। सो॥
२० पाठान्तर-उठि। लिषि। मधि। सम। मधि॥
२१ पाठान्तर-गाथा। अरसिंघ। शीस। वडगुज्जर। करार्इं॥
२२ पाठान्तर-अवलोका। छंद। चामुड। दिजि चामुड। चामुंड।
२३ पाठान्तर-उत्तंग। तु। लगिय। परीय। रौरि। अभिगिय। अवागीय। हथ। ४८। कुषि। घनि। हठाय। निरम्मि॥

हरसिंह का युद्ध ॥

कवित्त ॥ हक्कि कहर हरसिंघ। बथ्य नरसिंघ निलग्गिय ॥
हथ्थ बथ्थ लोहान। उपर तर तर परि दग्गिय ॥
नंषि छुड नरसिंघ। भयौ हरसिंघ उड्ड बर ॥
हौरि राव चामंड। दई तरवारि पिट्ठ पर ॥
कर फौरि मुक्कि उर छुद्धर। भयौ विदंधव कटि घर ॥
हरिसिंह बस्यौ हरिसिंघ पुर। रवि मंडल बल भेदि करि ॥
छं० ॥ ४८ ॥ रू० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ भेद्यौ रवि मंडल सु पहु। करि प्राक्रम्म प्रमान ॥
धनि चालुक पित मात धनि। निकसि न षोयौ मान ॥
छं० ॥ ४९ ॥ रू० ॥ २५ ॥

नरसिंह का युद्ध।

कवित्त ॥ करि उप्परि तें दूरि। तरह नरसिंघ सु उठ्ठिय ॥
तवै भर्रकि भगवान। आइ सिर सार सु वुट्ठिय ॥
जव नरसिंघ नरंन। करन कट्ठी कट्टारिय ॥
घल्लि हथ्थ गल बथ्थ। तेन उदरं विच फारिय ॥
पर भूमि सूर भगवान भिरि। चल्यौ मांन जरड्ड अय ॥
है है सु सबद् ह्लन लोक भय। जै जै सुर सुर लोकजय ॥
छं० ॥ ५० ॥ रू० ॥ २६ ॥

कैमास का युद्ध ॥

मोकल गंढि गोकल्ल सुजान। मद मोकल्ल कुट्टिय ॥
तुट्टिय वीज अकास। सीस कैमास अहुट्टिय ॥

२४ पाठान्तर-बय। लय। वय। लोहान। उप्पर। घर लग्गिय। चामुंड। फोरि। मुक्कि। उध। विदंधव ॥

२५ पाठान्तर-प्रमांन। मान ॥

२६ पाठान्तर-उठिय। तव। भगवांन। कटारिय। हय। बय। विचि। फारी। भगवांन। सुमद। मृत ॥

तुरत फट्टि कटि गुरुज । मकुट करि देष रिषेस्वर ॥
असि कढ्ढत बर रोस । उद्दर बर बद्धिय सु ओंकर ॥
त्रिन पत्त मत्त जनु डंड डक । रंभ षंभ कर कटीयस्वज ॥
तिहि काज साज साकल सुरर । सु गुरुर पटाइय गुरुरध्वज ॥
छं० ॥ ५१ ॥ रू० ॥ २७ ॥

माधव खवास का युद्ध ॥

कवित्त ॥ काम धाम रिम राव । स्याम जिम धाम जिथ्थपति ॥
पत्त लत्त दिय रोस । फहि क्रिप्पाट थाट मजि ॥
षरिय मध्य माधव षवास । आय पत्तौं तहां आरौं ॥
लगि बथ्थ बिन नथ्थ । संड मन मंचि ऋषारौं ॥
जम दढ्ढ कढ्ढि चालुक्क चँपि । दिढ्ढ पँनि पाखार उर ॥
मंडल दिनेस सें भेद करि । सुपाट परट्टिय ब्रह्म पुर ॥
छं० ॥ ५२ ॥ रू० ॥ २८ ॥

कन्ह का युद्ध ॥

कवित्त ॥ परि भूमि पावार । उररि भंजन बिवार हुअ ॥
तब लगि कन्ह नरेंकि । आइ पहुच्यौ अंतकलुअ ॥
मुक्कि रोस अनि तमकि । घाइ दिर जाइ रह्यौ उत ॥
मनहुं सक्ति बल दैन । अंग जनु बन्ध्या अजा सुत ॥
तिन हनत सिंभु धुन हनिय सिर । राज भेद मधि समर हुअ ॥
हल हलकि मचि कोलाहलह । हाय हाय दरबार हुअ ॥
छं० ॥ ५३ ॥ रू० ॥ २९ ॥

---

२७ पाठान्तर—सुजानि । बीज । वाकास । थीव । रिषोसर । ओंकर । उकर । कटोय । ध्वज । तहि । तक्के सुरर ॥

२८ पाठान्तर—काम । धाम । स्याम । धांम । पिथ्थपति । पत । लत । पटि । क्रिपाट । मधि । लगि । बथ । नथ । मंचि । जमदड । चालुक । चंपि । दिढ । में । परटिय ॥

२९ पाठान्तर—तरकि । हुव । मुकि । दिर । मनहुं । सक्ति । दैन । हलहलिकि । मचि । हाहकार ॥

चालुकों के मारे जाने से दरवार में कोलाहल होना ॥

दूहा ॥ कोलाहल दरबार भा। सुनि चालुक म्रत सथ्थ ॥
खसिय पैरि गज मत्त सम। पुच्छत पुच्छत नथ्थ ॥ छं० ॥ ५४ ॥ रू० ॥ ३० ॥
किंछ रुधिर डठ्ठत गिरिय। परिय सच परिधारि ॥
दिषि चालुक म्रत तेह टग। कुलह बाजि जनु डारि ॥ छं० ॥ ५५ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥ संकर सिंघ कि कुहि। कुहि दुन्द्र कि गहग्र गज ॥
कि महिप कुहि मय मत्त। भरिय दीयौ कि दुष्ट कजि ॥
भौ कि हास रस रोस। मद्धि रावत्त विरचिय ॥
कोलाहल बल कूक। मवभ्भ रावर हल मचिय ॥
चालुक्क षवास ताकथ्थ कथि। कोलाहल दुन जानि घर ॥
छंडिय सयल बोचिथ न्रपति। हनिग कन्ह सारंगधर ॥
छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

दूहा ॥ भर प्रताप दरबार के। द्वार षरे मय मत्त ॥
सुनत बत्त दूह कढ़ि परे। मनु जिस तुहि नक्षत्त ॥ छं० ॥ ५७ ॥ रू० ३३ ॥

कवित्त ॥ निसि षह तुहि नक्षिच। रोष महिषा कुटि वातन ॥
परि कि दंप पातंग। सिंघ जनु कुहि कुधा तन ॥
यों तुहें भर भरन। भगरि भैभीर सुभग्गिय ॥
मनहुं परा पति चुगत। परिय सिंचान अचिंतिय ॥
परि रौर पौरि दीनो दरकि। धरकि कूह कल पौरि विचि ॥
षेलत सब संत कलहंत जनु। पारथ सम भारथ्थ मचि ॥
छं० ॥ ५८ ॥ रू० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ माया मोह विरत्त मन। तन तिनुका सम डारि ॥

३० पाठान्तर-सय। मत। पुक्षत। कथ ॥

३१ पाठान्तर-वाज। यह रूपक सं. १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥

३२ पाठान्तर-भरीय। दीपि। मधि। रावत। विराचिय। मभ्भ। मचिय। कथ। जांन ॥

३३ पाठान्तर-मत। वत। मनौ। नछित्र ॥

३४ पाठान्तर-नछित्र। परिय। संघ। मनौं। तनहुं। अचिंतीय। दीनीय। बच। षेलंत। स। भारथ ॥

३५ पाठान्तर-विरत। पिय ॥ यह रूपक सं. १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥

जुटे पिथ्य द्वार मचि। करि तरवार दुधार ॥ छं० ॥ ५९ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

चोटक ॥ तरवार जुधार दुधार धरैं। सिर मार अपार विचार परैं ॥
निरवार किवार दुकार दिए। घर द्वार उघारि सुसार किए ॥ ६० ॥
सर मार डरार सिरार सरैं। धर वारि मझार सुवारि परैं ॥
तरवारि करार अँगार झरैं। परिमार अपार सुमार डरैं ॥ ६१ ॥
हडवारि कचार किचार करैं। नर सारक वारि कन्हार करैं ॥
कर तारि दै नारद न्रत्य करैं। विकरारनि चौसठि पत्र भरैं ॥ ६२ ॥
किलकारनि भैरव भूत करैं। हलकारत षेतरपाल घरैं ॥
॥ छं० ॥ ६३ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

दूहा ॥ अंत कलप जनु मचि कलह। भिरे मह्विष मय रुद्द ॥
चालुक अरि चहुआंन सुत। काल कलह किन युद्ध ॥ छं० ॥ ६४ ॥ रू० ॥ ३७

छंद विराज ॥ जुगजुद्ध जुरैं। मन को न मुरैं ॥
धक धींग धकैं। वक वैन वकैं ॥
घट घाव घने। वज्जि जोग वने ॥
तरवारि कसी। घन विज्ज लसी ॥
नर मुंड नचैं। सिव माल सचैं ॥
रिन रेन रच्यौ। रँग रत्त मच्यौ ॥
धरती धरकैं। घन घाव रकैं ॥
पग हथ्थ परैं। कवि ओप करैं ॥
मधु माध समैं। मधु जानि भ्रमैं ॥
सव देव अगैं। पलकैं न लगैं ॥
किलकार करैं। षिलवार परैं ॥
डुगिनी हुलरैं। रुधि पत्र भरैं ॥ छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

३६ पाठान्तर—तरवारि। धरे। दये। किये। झरार। परे। झरे। कवारि। झंन्हार। भरे। विकरालनि। करे। धरे॥

३७ पाठान्तर—महिष। करी॥

३८ पाठान्तर जुरे। कोन। वेन। घनें। वज्जि। बने। नचें। सचें। रंग। धारकें धारके हथ। परें। डर। करे। जानि॥

दूहा ॥ पच भरें जुगिगनि रुधिर । भिष्षिय मंस डकारि ॥
नच्यौ ईस उमया सहित । रुंड माल गल धारि ॥ छं० ॥ ६६ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

छंद पद्धरी ॥ दरवार ताल रुधि भरित वारि । इक हथ्थ रत्त चढ्ढी किनारि ॥
तिन मध्धि मगन तह जिम मजंन । धर धारि मारि जे धुकत अंत ॥
॥ छं० ॥ ६७ ॥ रू० ॥ ४० ॥

दूहा ॥ * षेल मच्यौ दरबार मभि । मत्त गवार बसंत ॥
सिर श्रुक बिनु घावह करै । सुभट सुअंगध कंत ॥
॥ छं० ॥ ६८ ॥ रू० ॥ ४१ ॥

छंद लघुनाराच ॥ धुकंत धार धार सौं । बकंत मार मार सौं ॥
भुकंत झार झार सौं । तकंत सार तार सौं ॥ ६९ ॥
डकंत भून डाक सौं । कसंत बीर बाक सौं ॥
परंत षीन पाःहै । झरंत हथ्थ घाःहै ॥ ७० ॥
लरंत मंन मंत सें । घुरंत घाइ घंत सें ॥
सुषग्ग अंगुली घिरैं । फलो सुकैर बिथ्थुरैं ॥ ७१ ॥
नचंत घाइ नारदं । ठटे सुघाइ ठारदं ॥
भभक्कि कढि भभ्भसे । बबक्कि रह बइ से ॥ ७२ ॥
हबक्कि हाक हक्कए । चवक्कि कुंभ चक्कए ॥
सोरित मुच्छ मुच्छए । चढ़ी सु आनि चच्छए ॥ ७३ ॥
चलंत हाय चंचलं । परंत बांन पंचलं ॥
भिदंत भांन मंडलं । भयौ सु नह कुंडलं ॥ ७४ ॥
वहंत सोष बट्टए । हराक्कि लग्गि हट्टए ॥
कटंत सीस कट्टए । रिनंक पत्त-फट्टए ॥ ७५ ॥
फटंत फंफ फेफरं । गटंत देषि केफरं ॥
बजंत घाव घुंमरे । मनौं परेव घुंमरे ॥ ७६ ॥

३९ पाठान्तर–षिषय । षिषिय ॥
४० पाठान्तर–हथ । रत । चढ़ी । मधि । ते ॥
४१ पाठान्तर–मत । गवार । बनु । घावहं ॥
* यह रूपक सं- १६४० की पुस्तक में नहीं है ॥

कुटैं सिरं करायं । कपास ज्यों पिंजारयं ॥
फुटंत यों सुषेपरी । कि जोग पत्त टोपरी ॥ ७७ ॥
करंत जंघ कुंभण । मनों सुरंभ गिंभए ॥
* परीय संझ सामयं । चलुक्क रष्षि नामयं ॥ छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

सांझ हो गई परन्तु लड़ाई न रुकी ।

कवित्त ॥ परिय संझ जग मंझ । टरिय कंकन रंकन धन ॥
भरिय पत्त जुगिनीय । करिय सिव माल सीस घन ॥
रुरिय न भ्रित चालुक्क । धरिय रसगेस कन्ह हिय ॥
फेरि चलिय दरबार । सीह गज घट्टि उ ट्टिय ॥
मय मत्त मार मत्तौ उररि । भररि भररि भग्गिय अनिय ॥
है घरिय लोह बुझौ उछरि । षेल कस्यौ किगवारनिय ॥
॥ छं० ॥ ७९ ॥ रू० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ कन्ह जाइ संमुह परत । कला एक मचि रारि ॥
सत सारध दूनौ कटै । भजै अवर तजि ढार ॥ छं० ॥ ८० ॥ रू० ॥ ४४ ॥

कान्ह चौहान का युद्ध जीतना ।

बरषा ॥ झरै (* सार) सिर मार विकरार रत्तन भारत ॥
परत धरनीय ढरैं जरकि जूपी ॥
चपक चहुवांन चालुक्क भ्रत उप्पर चर ।
कोपियं कन्ह मनों काल रूपी ॥ छं० ॥ ८१ ॥
रुंड भररुंड किय तुंड मुंडन हरत ।
बाहि सिर सार मनों मेह वट्ठे ॥

४२ पाटान्तर धकन । सी । इकत । हू । हय । घाय । पिरे । परें । विस्तरे । धाय । भरकि । रुध । भट्ठ । भट्ठ । ववकि । रट । वट । हवकि । हकह । नयकि । वकट । मेरित्त । गिर । गुद । मुक्त । मुत्तव । धनि । वह्नार । नट । विर्नेकि । पत । मनो । कुटें । शिर । ज्यों । रा । मनो । * यह पाठ ह० १६६९ की पुस्तक में नहीं है ॥

४३ पाटान्तर—शिव । चालुक । पैट । चलीय । घट । उपटिय । भाटीय ॥

४४ पाटान्तर—जाय । समुह । दूनो । कटे । भजि ॥

४५ पाटान्तर—* अधिक पाठ है । धरनि । मनो । जब । ढारि । नृपत । † यह रूपक ... १६६९ की पुस्तक में नही है ॥

कूह करि जूह संमूह को कोक हर।
रोस रिम राह जेम जीव कुट्टैं ॥ छं० ॥ ८२ ॥
पांनि करि पांनि करि पांनि करनीय हक।
सीस अरी पारि सब षेत सीच्यौ ॥
भ्रात सोमेस न्रप घत संजन भरत।
षेत षयकार षय काल षीच्यौ ॥ छं० ॥ ८३ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

स्लोक ॥ हनिनं िनायकं सेना, कथितं न च पूर्वयम्।
अयुद्धं चक्रतं एषां, विना स्वामि रणे युधम् ॥ छं० ॥ ८४ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

प्रतापसिंह आदि के मारे जाने का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का अप्रसन्न होना ॥

दूहा ॥ नीठ बिसासन अप्प भर, गह्यौ कन्ह चहुआंन।
गए ग्रेह लै सकल मिलि, प्रथीराज अकुलान ॥ छं० ॥ ८५ ॥ रू० ॥ ४७ ॥
पारि भित्त चालुक्क भर, मध अजमेर प्रमान।
सात भ्रात भीमह हते, रन जीत्यौ भर कांन ॥ छं० ॥ ८६ ॥ *रू० ॥ ४८ ॥

पृथ्वीराज की अप्रसन्नता सुनकर कन्ह चौहान का घर बैठ रहना, तीन दिन तक अजमेर में हरताल पड़ना ॥

बत्त सुनी तब कान्ह नें, पिज्यौ कुंअर प्रथिराज।
बैठि रहे तब निज सुघर, अदरबार समाज ॥ छं० ॥ ८७ ॥ † रू० ॥ ४९ ॥
तीन दिवस अजमेर में। परी हट्ट हटनार ॥
हूह कोह बज्यौ विषम। लग्यौ सु भूत भूत भुआर ॥ छं० ॥ ८८ ॥ रू० ॥ ५० ॥
मधि वजार चलि रुधिर नदि। रुरत तुंड घन मुंड ॥
बरकि कन्ह चहुआंन करि। तिल तिल सम तन तुंड ॥
॥ छं० ॥ ८९ ॥ रू० ॥ ५१ ॥

---

४६ पाठान्तर–हननं। यं। अयुद्ध। स्वामी। रिने। जुधं ॥
४७ पाठान्तर–अप। चहुआंन। अकुलांन ॥
४८ पाठान्तर–मध्य। प्रमान। * यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥
४९ पाठान्तर–बत। पिज्जय। कुंअर। प्रथीराज। रहे। † यह रूपक कोलफील्ड वाली पुस्तक में नहीं है ॥
५० पाठान्तर–हट। हटनार। भुआर ॥ ५१ पाठान्तर–चहुआन। तिन ॥

[स]ात दिन तक कन्ह के न आने पर पृथ्वीराज का उनके घर मनाने को जाना और कहना कि संसार में यह बुराई हुई कि घर बुलाकर चालुक्यों को मार डाला ॥

कवित्त ॥ सात दिवस जब गए । कन्ह दरबार न आए ॥
तब प्रथिराज कुँआर । अप्प मनए ग्रह जाए ॥
तुम ऐसी क्यों करौ । अप्प सिर चढिय सुकाई ॥
कहिहैं सब चहुआन । हने चालुक्क सुराई ॥
आणनि किये अप्पन सुघर । सो रावर ऐसी करिय ॥
इह दोस अप्प लग्यौ खरौ । वत्त वित्तरिय जग बुरिय ॥
॥ छं० ॥ ९० ॥ रू० ॥ ५२ ॥

कन्ह का कहना कि मेरे सामने दूसरा कौन सभा में बैठकर मोछ पर ताव रख सकता है ॥

दूहा ॥ कही कन्ह चहुआन तब । को बैठें कोइ आनि ॥
सभा मझि संभरि अवर । मुच्छ धरै क्यों पानि ॥ छं० ॥ ९१ ॥ रू० ॥ ५३ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि तो आप आंख में पट्टी बांधे रहा कीजिए ॥

करी अरज प्रथिराज वर । जो मानौ इक कन्ह ॥
सभा बुराई जौ मिटै । चष बँध पट्ट रतंन ॥ छं० ॥ ९२ ॥ रू० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज का जडाऊ पट्टी बनवाकर अपने हाथ से कन्ह के आंख में बांध देना ।

तब प्रथिराज विचार करि । चष बान्धौ हो पट्ट ॥
[illegible] दोइ सर सोरखी । धरत परै इह वट्ट ॥ छं० ॥ ९३ ॥ रू० ॥ ५५ ॥

---

५२ पाठान्तर [illegible] । [illegible] । सिर । [illegible] । कहिहे । चालुक । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । वित्तरिय ॥

५३ पाठान्तर—[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । मुच्छ । पानि

५४ पाठान्तर [illegible] । जो । मानो । जो । [illegible] । [illegible] यह नहीं है ।

५५ पाठान्तर—[illegible] । [illegible] । [illegible] ॥

कन्ह चौहान की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ दूसौ कन्ह चहुआन । जिसौ भारथ्थ भीम वर ॥
दूसौ कन्ह चहुआन । जिसौ द्रोनाचारज वर ॥
दूसौ कन्ह चहुआन । जिसौ दससीस बीसभुज ॥
दूसौ कन्ह चहुआन । जिसौ अवतार वारि सुज ॥
जुध वेर दूस तुहै जुरिन । सिंघ तुट्टि लषि सिंघनिय ॥
प्रथिराज कुँअर साहाय कज । दुरजोधन अवतार लिय ॥
छं० ॥ १०१ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

दूहा ॥ जहँ जहँ राजन काज हुअ । तहँ तहँ होइ समथ्थ ॥
मेर दब्ब बथ्थह भरै । नर नाचां नर नथ्थ ॥ छं० ॥ १०२ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

चालुक्य राजा भीम का अपने भाइयों के मारे जाने का समाचार सुन कर बहुत दुखी होना ॥

गाथा ॥ फुल्लिय वस्स प्रहासं । अनिलं वसिजेम परिमलयं ॥
सुनियं चालुक भीमं । सारँग सुत हंति चहुआनं ॥
छं० ॥ १०३ ॥ रू० ॥ ६५ ॥

जल्लियं चालुक नाथं । अग्गि विलग्गिय उअर मज्झायं ॥
मुक्किय न्रप नीसासं । मंजिय दुप भ्रात भ्रप्पायं ॥
छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

भीम का पृथ्वीराज से भाइयों के पलटे में लड़ाई मांगना ॥

दूहा ॥ अति दुख भयौ भीम हिय । लिखि कागद चहुआन ॥
सत्त भ्रात मेरे हने । रहै वैर अप्पान ॥ छं० ॥ १०५ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

---

६३ पाठान्तर–दूसो । चहुआन । जिसो । भारथ । द्रोणाचारिज । भ्रम । हन । सिंघनीय । प्रथीराज । दुर्जोधन ॥

६४ पाठान्तर–जहां २ । तहां २ । होय । समथ । ६५ । बथ्थ । भरै नृप ।

६५ पाठान्तर–वस । सुनीय । सारंग । चहुआन

६६ पाठान्तर–लग्गि । मनाय ॥

६७ पाठान्तर–कागर । चहुआन । हन । अप्पान ॥

मनी नत्त सुसत्य मन। लै जराव को पट्ट ॥
राजन कन्ह चष बंधी। मनों गिरी जग घट्ट॥ छं० ॥ ९४ ॥ रू० ॥ ५६ ॥

कवित्त ॥ पाव लष्प परिमान। मोल किंमति ठहराइय ॥
तोल टंक इकईस। नयन आकार सवारिय ॥
जरिय जवाहर मड्डि। अरक उद्योत प्रकासिय ॥
दिष्टि मंडि देषंत। दुअन उर अंदर चासिय ॥
कंचन किलाव लगाय कल। पट्टी बंधिय चंद भट ॥
तिहि बेर कन्ह चहुआन चष। रूप प्रगटि अति पिधि वट ॥
छं० ॥ ९५ ॥ रू० ॥ ५७ ॥ †

दूहा ॥ पाटी बंधिय कन्ह चष। इह ओपम कवि अष्षि ॥
तन सरवर जल बीर रस। ओटा बंधि सुरष्षि ॥ छं० ॥ ९६ ॥ रू० ॥ ५८ ॥ †

पट्टी रात दिन बंधी रहती थी ॥

दूहा ॥ सो पट्टी निस दिन रहै। छोरि देइ है टाम ॥
कै सिज्या वामा रमन। कै जुट्टत संग्राम ॥ छं० ॥ ९७ ॥ रू० ॥ ५९ ॥
करि सुचित्त चित कन्ह को। प्रथीराज रस माइ ॥
अवर सूर सामंत सब। रहै षीय सुख पाइ ॥ छं० ॥ ९८ ॥ रू० ॥ ६० ॥
एक बाज ऐराक बर। हंस नाम अवनीस ॥
साजि साजि राजन रजक। कन्ह कीन बगसीस ॥ छं० ॥ ९९ ॥ रू० ॥ ६१ ॥
जम दढ इक्क जराव जरि। एक उंच सिर पाव ॥
नर (सु*) नाहर वर कन्ह कों। कीनौं कुँअर पसाव ॥
छं० ॥ १०० ॥ रू० ॥ ६२ ॥

५६ पाठान्तर-मानी। सति। पट। राज हय चप कन्ह वंधि। मनुं। सरी। घट ॥
५७ पाठान्तर-परिमान। ठहराईय। तोल। मधि।
५८ पाठान्तर-गवि। रषि ॥ |ये दोनो रूपक संवत १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं ॥
५९ पाठान्तर-निशि। सेज्या। संयांम ॥
६० पाठान्तर-चित्त। भाय। चाय। पाय ॥
६१ पाठान्तर-ए। नाम ॥
६२ पाठान्तर-शिरपाव। * अधिक पाठ है॥ कौं। कीनी। कुंअर।

कन्ह चौहान की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ दूसौ कन्ह चहुआन। जिसौ मारथ्थ भीम वर ॥
दूसौ कन्ह चहुआन। जिसौ द्रोनाचारज वर ॥
दूसौ कन्ह चहुआन। जिसौ दससीस वीसभुज ॥
दूसौ कन्ह चहुआन। जिसौ अवतार वारि सुज ॥
जुध वेर इक्क तुहे जुरिन। सिंघ तुट्टि लषि सिंघनिय ॥
प्रथिराज कुँअर साहाय कज। दुरजोधन अवतार लिय ॥
छं० ॥ १०१ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

दूहा ॥ जहँ जहँ राजन काज हुअ। तहँ तहँ होइ समथ्थ ॥
मेर हथ्थ बध्धह भरै। नर नारां नर नथ्थ ॥ छं० ॥ १०२ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

चालुक्य राजा भीम का अपने भाइयों के मारे जाने का समाचार सुन कर बहुत दुखी होना ॥

गाथा ॥ फुट्टिय वत्त प्रवासं। अनिलं वसिजेम परिमलयं ॥
सुनियं चालुक्क भीमं। सारँग सुत हंति चहुआनं ॥
छं० ॥ १०३ ॥ रू० ॥ ६५ ॥

भनियं चालुक्क नाथं। अग्नि विलग्गिय उअर अस्मायं ॥
मुक्किय न्रप मीसासं। मंजिय दुप भ्रात भप्पायं ॥
छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

भीम का पृथ्वीराज से भाइयों के पलटे में लड़ाई मांगना ॥

दूहा ॥ अति दुख भयौ भीम हिय। लिखि कागद चहुआन ॥
सत्त भ्रात मेरे हने। इहै वैर अप्रान ॥ छं० ॥ १०५ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

पृथ्वीराज का उत्तर देना कि हम तयार हैं जब चाहे आओ ॥

सुनिय राज चहुआन वर। दिय कग्गद फिरि तेह ॥
जब तुम मंगौ बैर वर। तब हम बैर सुदेह ॥ छं० ॥ १०६ ॥ रू० ॥ ६८ ॥

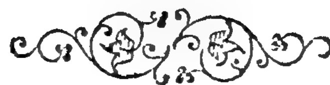
भीम का चढ़ाई के लिये तय्यार होना पर सरदारों के कहने से वर्षा ऋतु भर ठहर जाना ॥

कवित्त ॥ बँचि कग्गद चालुक्क। रोस लग्यौ अयान कह ॥
करो सेन सब एक। चलो अजमेर देस रह ॥
तब कह्यौ बीर परधान। मास पावस्स रहैं घर ॥
करि कातिक घन कटक। हनै चहुआन सोम वर ॥
सुनि राज अप्प मन्यौं सुहिय। अत्तरु सब जन अवर नर ॥
उपसम्म रोस चालुक्क न्टप। षिन षिन विक्तिय जेम थिर ॥
छं० ॥ १०७ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

उपसंहार का कथन ॥

दूहा ॥ रहै राज अजमेर मधि। संभरेस चहुआन ॥
निसि दिन यौं क्रीडा करै। ज्यौं अवतार सुकान्ह ॥
छं० ॥ १०८ ॥ रू० ॥ ७० ॥

इति श्री कवि चन्द विरचिते प्रथिराजरासके कन्हाअपट्ट बन्धनं नाम पञ्चम प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५ ॥



६८ पाठान्तर—कागर। मगौ ॥

६९ पाठान्तर—बंचि। कागर। लगौ। अयासकह। अयासक्कहि। रहि। प्रधान। मांस। पावस। कातिग। मन्यौ। उपसमि। खितीय ॥

७० पाठान्तर—चहुयांन। यों। ज्यों ॥

अथ आषेटक वीर बरदान वर्णन समय लिख्यते ॥



(छठा समय)

पृथ्वीराज के कुँअरपने के तपतेज का वर्णन ।

कवित्त ॥ कुंअरप्पन प्रथिराज । वर्ष विय सपत समर तन ॥
समुह तेज असहेज । हरन तम गेर समर गन ॥
उर किवार भुज वज्र । अंग वज्रंग षलन लुअ ॥
भुज भुजंग वर जोर । जोर ब्रंनह सचुन भुअ ॥
घनभंग अंग जनु अंगदह । पवन पाइ आषेट महि ॥
सँग डेरि स्वान जीवन छपै । सबन अग्ग अपजह तिवहि ॥
छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ वर्षन सोभा नैन । मैन जनु मुदित सरित सर ॥
हरष हास मुष कंति । विकसि जनु कमल सूर वर ॥
मधुर सबद गुंजार । जानि गंभीर हरिय सद ॥
गयन गरुअ गज भंति । चलत कुल चालि वेद वद ॥
षटुध्यान सूर सोमेस सुअ । धुअ जनु भुअ अवतार लिय ॥
मन हरनि हरत मन पिष्पि कै । जनु विधिना अप हथ्थ किय ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

छंद पद्धरी ॥ रचै सुभट थट प्रथिराज संग । जै पैज गंग सुअ कंध्धि पंग ॥
पट रस विलास [illegible] अपार । मुत्तंत भोग भट सुभट सार ॥ छं० ॥ ३ ॥

---

१ पाठान्तर—सं० १६६३ की पुस्तक मे इस का ऐसा पाठ है —" कुअरपन पृथीराज । वर्ष विय [illegible] समर [illegible] । समुह तेज [illegible] । [illegible] सचुन भय । भुज भुजन वर [illegible] । [illegible] [illegible] । उर [illegible] भुज [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] बाकी दोनों तुक वैसे के वैसे है ॥

२ पाठान्तर—[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । हरनि [illegible] । विकसित । जानि । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

सुरनाथ संग सुर सकल सोभ। बंसह छतीस चहुआन ओप॥
नव कुलन मध्य नव नाग जानि। तिम जूथ मद्धि गज राज वानि॥ छं०॥ ४॥
उडगनन मद्धि गुरदेव कंति। बरनी न जाइ सुत सोम भंति॥
छह पंच मद्धि ज्यौं ह्नुअ बंक। तिम पिष्य कथ्य पल परत बंक॥ छं०॥ ५॥
नव ग्रहन मद्धि जनु सूर तोष। षग भ्रंम क्रंम संमर अदोष॥
क्रीडंत अंग रंगह हुलास। विभ्रमा पुच जनुँ अलक वास॥ छं०॥ ६॥
कर तानि बान कंमानि धारि। अनभूल घात नंषै उतारि॥
अद्भूत बान विद्या अभंग। रच्चै दाव भाव दज्जंग अंग॥ छं०॥ ७॥
पाइक्क अंक षेलत कितेक। गहि चिन सुद्दंत लुद्दंत एक॥
आषेटनि पुन लषि जीव घात। गज सिंघ रिंछ कुपि कोल पात॥ छं०॥ ८॥
हे लषै सक्क करि भेद छेद। दिष्पंत नयन सालोप वेद॥
गज चिगछ इच्छ जानंत सब्ब। नाटिक निवास सम सेस कव्व॥ छं०॥ ९॥
सम सिल्प सास्त्र वसु क्रंम क्रंम। सब वेद रीत रोपंत भ्रंम॥
यौं तपै पिथ्य अजमेर मांहि। सोमेस सूर चहुआन छांहि॥
छं०॥ १०॥ रू०॥ ३॥

पृथ्वीराज की दिनचर्या का वर्णन।

कवित्त॥ प्रथम जामि निसि रज्ज। कज्ज हैगै दिष्पत लगि॥
दुतिय जाम संगीत। उक्त रस कित्ति काय जगि॥
त्रितिय जाम भोजन्न। समय चव जाम विलंसिय॥
सुष्ष सुलष उर अप्प। वारि अप्पी उर नंसिय॥
घरियार रढिय बंदीं पढ़िय। आनि सूर सोमेस जस॥
उठि ब्रह्म मुहूरत राज वर। हय पष्परिय सिकार रस॥
छं०॥ ११॥ रू०॥ ४॥

३ पाठान्तर-प्रथीराज। कपि। अनन। ज्यो वंश। छतीश। चहुआन। उप। मधि। जानि। मधि। प्रथीराज। वानि। मधि। गुरदेव। जाय। मधि। ज्यो। पिथ। कथ। मधि। समेर। षिलास। बान। अनभूल। बान। पायक। आग। जन। सिह। रींछ। यह। हय। सक्र। दिपंत। चिगिछ। इछ। षिल्प। शासन। यो। पिथ। छाह॥

४ पाठान्तर-जांमि। निसरज। कान। दिषत। जाम। त्रतीय। जांनि। भोजन। समप। जांम। बिलसीय। अप। अप्पिय। वंसीय। वंदिन। ब्रहम। महूरत। पषरीय॥

पृथ्वीराज का आखेट के लिये निकलना ।

कवित्त ॥ कर पद मत्त धनुष्य । ढाल आनन सुचक्क रथ ॥
पटह हींस घन स । विपुल बढ्ढीय समग पथ ॥
इक बंधिय इक बधिय । एक भंमिय भ्रम भोर ॥
इक्क सु मृग विफुरीय । इक्क चिकरीय दीन सुर ॥
कवि चंद सोर चिहुँ ओर घन । दिग्घ सद्द दिग अंत भो ॥
संकिय सयल जिम रंक । इम अरन्य आतंक भो ॥

छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ ५ ॥

अकेले कवि चंद का बन में भूल जाना ।

कवित्त ॥ जंगल धर सुकुमार । करत आषेट सपत्तौ ॥
संग सूर सामंत । गहन गिरि षोह सुरत्तौ ॥
एक सहस सँग स्वान । एक सत चीते संगह ॥
उभै सत्त सँग हिरन । करत मन पवन सुभंगह ॥
सम विषम विहर वन सघन घन । तहां रुघ्य जित तित्त हुअ ॥
भूल्लौ सुसंग कविचन्द वनह । और नहीं जन संग दुअ ॥

छं० ॥ १३ ॥ रू० ६ ॥

एक आम के पेड़ के नीचे एक ऋषि से उसकी भेंट होना ।

दूहा ॥ विपन विहर अपल अकल । सकल जीव जड जाल ॥
परसंपर वेली बिटप । अवलंबि तरल तमाल ॥ छं० ॥ १४ ॥
सघन छांह रवि करन चप । पग तर पनु भजि जान ॥
हरित सोह सम पवन धुनि । सुनत श्रवन झहरान ॥ छं० ॥ १५ ॥
गिरि तट इक सरिता सजल । झिरत झिरन चिहुँ पास ॥
सुगह छांह फल अनिय सम । बैठ्यो बिन्द दिवान ॥ छं० ॥ १६ ॥

तहां सु अँवतर रिष्य इक । जस तन अंग सरंग ।
दव दह्यौ जनु द्रुम्म कोइ । कै कोइ भूत भुअंग ॥ छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

गाहा ॥ जप माला मृग छाला । गोटा विभूतं जोग पट्टायं ॥
कुव्जा खप्पर हथ्थं । रिद्धं सिद्धाय वचनयं मझ्झं ॥
छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ ८ ॥ *

कविचन्द का ऋषि के पास जाकर पूछना कि आप कौन हैं ?

दूहा ॥ चंद पिष्षि चरच्यौ सुमन । इह कोइ रूप अलेष ।
पग परसौं दरसौं दरस । उत्तिम भूत अरेष ॥ छं० ॥ १९ ॥
करि बंदन कविचंद कहि । को तुम आदि अनादि ।
तुम दरसन बिन दिज गण । ते सब बीते वादि ॥ छं० ॥ २० ॥
तुं † धाता करतार तुं । भरता हरता देव ।
तुं दत्ता गोरस तुही । प्रसन होउ प्रभु देव ॥ छं० ॥ २१ ॥ रू० ॥ ९ ॥

ऋषि का पूछना कि तुम कौन हो इस बीहड़ बन में कैसे आए ।

दूहा ॥ कहै जंगम तुं कौन नर । कों आगम ह्यां कीन ।
जीव जंत घन विघन बन । जीव जीव बल छीन ॥
छं० ॥ २२ ॥ रू० ॥ १० ॥

चन्द का अपना परिचय देना ।

गाहा ॥ दरसन देव मुनिंदं । चंदं बिरहं च दुष्पदं दायं ॥
अब मुझ्झ काम्य सुफलियं । दिष्षे सुफल्ल रूप तपसीयं ॥ छं० ॥ २३ ॥
देवान वरं सिद्धाण दरणं । गुर नरिंद सनमानं ॥
मग भुम्मि दब्ब लद्धा । पा मिज्जे पुण्य रेहायं ॥ छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥ ११ ॥

---

७ पाठान्तर–ऊपरल । परसपर । तवनाते ॥ १४ ॥ झहनात । झहनाट ॥ १५ ॥ गिर । झरत । झरन ॥ १६ ॥ गंतर । तरु । जती । नाग न रंग । द्रुम ॥ १७ ॥

८ पाठान्तर–विभूत । पटाय । मर्झं । मझ ॥

* यह श्लोक सं० १६४० वाली पुस्तक में नहीं है ।

९ पाठान्तर–पिपि । को । परसो । दरसो ॥ १९ ॥ तू । भर्ता । तू । हर्ता । तुहीं । होहि ॥ २१ ॥ † यह संस्कृत त्वम् का पहिला हिन्दी रूप है ।

१० पाठान्तर–जती । तू । कौन ॥

११ पाठान्तर–गाथा । दसन । चंद न बिरह इदेह दंदायं । चंदन । दंदाई । कामं । दिषे । सफल ॥ २३ ॥ सिद्धान । दसन । भूम्मि । भूमि । पा । मिज्जै । पुन्य । रेहा यं ॥ २४ ॥

दूहा ॥ भट्ट जाति कवियन न्टपति, नाथ नाम मो चंद।
आलस में गंगा बही, अब्ब गए सब दंद ॥ छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ १२ ॥

जती का प्रसन्न होकर एक मंत्र बतलाना जिसके वश में बावन बीर हैं।

कवित्त ॥ प्रसन चंद सम जतिय। दिन्न इक मंच इष्ट जिय ॥
इह आराधत भट्ट। प्रगट पंचास बीर बिय ॥
करि साधन इह साध। व्याधि नासत फल धारिय ॥
गुरू उपदेसह पाइ। सकल आधीन अकारिय ॥
धरि कान मंच लीनौ कविय। परसि पाइ अग्गैं चलिय ॥
करवे सुपरिष्या मंच की। रचि आसन अग्गैं बलिय ॥
छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ १३ ॥

चन्द का मंत्र की परीक्षा करना और बीरों का प्रगट होना।

दूहा ॥ भली बुरी न्निमित कछू, मेटि न सक्कै कोइ।
याही सों भवतव्यता, कहत सयाने लोइ ॥ छं० ॥ २७ ॥
पसु आषेटक करन कौं, संग न्टपति वरदाइ।
ऐसे में इह भावई, असमात हुअ आइ ॥ छं० ॥ २८ ॥
मंच परिष्या करन कौं, वन मझ्झ बैठौ चंद।
रचि रचना सुचि स्नान करि, धूप दीप पढ़ि छंद ॥ छं० ॥ २९ ॥
रचि आसन्न गनेस तँह, सिद्धि बुद्धि लच्छि लाभ।
फुनि मंचह भैरव जपत, डक्कु गरज्जिय आभ ॥ छं० ॥ ३० ॥
गैंन गहर गंभीर धुनि, सुनि ससंक भय गात।
आनन अग गय गंज हुअ, जानि उलक्का पात ॥ छं० ॥ ३१ ॥
सुप दाता माता पिता, सेवक सरन सधार।
उपवन बैठे चंद जहँ, है पंचास पधार ॥ छं० ॥ ३२ ॥
मंच जंच धारंत मन, आकरषे जब चंद।
प्रगट दरस दीने सबन, कवि उर बढ्यौ अनंद ॥ छं० ॥ ३३ ॥

---

१२ पाठान्तर—कवि। नाम। चाल छंदै। चाल समय। दंद।
१३ पाठान्तर—दान। नट। प्रकाश। इ। नासन। धारिय। अकारिय। पाय। चली। चलै। अगै। बलै। परख्या। चलै।

महा पुरिष पिष्षै जवै, तव हुअ हरष सरीर।
दंडवत अंजुलि करिय, मन आनंद सुधीर ॥ छं० ॥ ३४ ॥ रू० ॥ १४ ॥

बीरों के रूप आदि का वर्णन ॥

छंद पद्धरी ॥ आनंद चंद दरसंत इंद। सोभा सुभंत बज्रंग दंद ॥
तन तेज तरनि ज्यौं घनह ओप। प्रगटी कि किरनि धरि अगिन कोप ॥३५॥
चंदन सुलेप कसतूर चित्र। नभ कमल प्रगटि जनु किरन मित्र ॥
जनु अगनित नग छवि तन विसाल। रसना कि वैठि जनु भमर व्याल ॥३६॥
मृग मद मयूष जनु पिउष पान॥ प्रभु मुदित मगन नासा रसान ॥
मर्दन कपूर छवि अंग हंति। सिर रची जानि विभूत पंति ॥ ३७ ॥
कज्जल सुरेष रचि नेन शंति। सुत उरग कमल जनु कीर पंति ॥
चंदन सुचित्र रुचि भाल रेष। रजगुन प्रकासतें अरुन भेष ॥ ३८ ॥
रोचन लिलाट सुभ मुदित मोद। रवि वैठि अरुन जनु आनि गोद ॥
घूंघर घमंकि पाइन विसाल। नृत्तंत जननि जनु अग्ग बाल ॥ ३९ ॥
धूसरस भूर बनि बार सीस। छवि बनी मुकट जनु जटा ईस ॥
वनि विसदकंठ इक बेलि माल। आभाति उडग्गन निसापाल ॥ ४० ॥
चंपकनि पुहप बनि कंठ कंति। रस रमत भ्रमर जनु पीत पंति ॥
नृत्तंत एक संगीत भंति। नारद रिझ्झ कर धरत तंति ॥ ४१ ॥
इक परत बथ्थ इक लरत हथ्थ। गज तरुनि कोलि जनु सरित सथ्थ ॥
इक प्रगट होत इक दुरै जात। परसंन परस्पर सुमन दात ॥ ४२ ॥
छिन एक होत गिर गरुअ देह। गरजंत एक जनु घटा मेह ॥
इक उघटि सब्द संगीत ताल। इक पठत भाष नागह विसाल ॥ ४३ ॥
इक ब्रह्म पोष सम करत घोष। पौराज प्रगट इक वचन मोष ॥
दाढाग्र इक्क चर्वत फुनिंद। इक धरत ध्यान जानिक मुनिंद ॥ ४४ ॥
इक गरनि मुंड मुष रुंड एक। कुंजर सहार गिर गरज तेक ॥
इक मुष्प अग्गि ज्वाला उठंत। इक परह देह वरिषा उठंत ॥ ४५ ॥

१४ पाठान्तर–निमित। भवितव्यता। सयाने ॥ २७ ॥ कों। नृपति। ऐसें। आय ॥ २८ ॥ परिष्या। कों। वैठे। स्थान। परि। चंद ॥ २९ ॥ गनईस। तहां। वुधि। उक। गरजिय ॥ ३० ॥ गगन। आनन। आगे। गत्र गंज। भे। जानिक। उलका ॥ ३१ ॥ जहां। तहा हुं ॥ ३२ ॥ धारता। आकर्षे। वढये ॥ ३३ ॥ पुरुष। पिषे। जवें। हर्ष। शरीर ॥ ३४ ॥

इक करत गाज चिक्कार एक। इक रुदत मुदत गिरि उठत केक ॥
इक करत रूप गिरि सिषर कोइ। इक रूप बहुत इक एक होइ ॥ ४६ ॥
धमकंत धरनि इक लात घात। इक स्वास उडत उपवनह पात ॥
पिथ्थीय चरित ए चंद भट्ट। हर्षित हुलास मन सें अघट्ट ॥ ४७ ॥
रोमंच अंग उम्भार देह। भैभीति भंति तहाँ दिथ्थि एह ॥ छं० ॥ ४८ ॥ रू० ॥ १५ ॥

कवित्त ॥ जिन देवन दरसंत। देव दानव हिय संकहि ॥
किंनर जष गंध्रब्ब। सर्व सनमुष जिन कंपहि ॥
सिध साधक जिन दरसि। तरसि संकत हिय विभ्रम ॥
महावीर बलवंत। कवन सहि सकै तिनं क्रम ॥
अद्भुत चरित चंदह चरचि। सुर विचित्त हिय हथ्थ किय ॥
आराधि मंच मन ताप सह। साव धान सम्भारि जिय ॥ छं० ॥ ४९ ॥ रू० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ फुनि सुदिष्ट दूरी करन, अकल भयानक भीर।
विना मंच को वसि करै, महाकाय वे वीर ॥ छं० ॥ ५० ॥
अनरिति फल काहू करन, किहिकर अगरित फूल।
दिव्य वस्त्र काहू करन, नाना वरन अमूल ॥ छं० ॥ ५१ ॥
सत्त संत को दिष्यियत, रज मय के दीसंत।
तामस के पिष्पे प्रबल, क्रोध कलह किरतंत ॥ छं० ॥ ५२ ॥
को इक कुंमर मद वहत, कोइक सिघ सरूप।
को इक पन्नग विष गरल, को इक दिष्यित भूप ॥ छं० ॥ ५३ ॥
ब्रह्मरूप को इक रदत, को इक तापस भेष।
जप तप तसकार सुके, सिव में भेष अलेष ॥ छं० ॥ ५४ ॥
अग्निज्वाल किन तन उठत, किन तन बरसै मेह।
[illegible] पवन डंडुर के, केतन कंदर पेह। छं० ॥ ५५ ॥

१५ पाठान्तर—[illegible] । २४ । [illegible] ॥ ३५ ॥ [illegible] । [illegible] ॥ ३६ । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ ३८ ॥ नैन । प्रकाश ॥ ३८ ॥ [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ ३९ ॥ [illegible] । [illegible] । [illegible] । निरा[illegible] ॥ ४० ॥ नृत्यत । नारद । [illegible] ॥ ४१ ॥ [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ ४२ । [illegible] । ४३ । [illegible] । [illegible] । [illegible] । ध्यान [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ ४६ । धमकन्ति । स्वांस । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ ४७ । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ ४८ ।

१६ पाठान्तर—[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । साबधान ।

सुमन वृष्टि केइक करत, के फल अन्न रसंस ।
रुधिर मंस तन चमकते, आप परस्पर संस ॥ छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ १७ ॥

चन्द का बीरों को देख कर प्रसन्न होना ॥

दूहा ॥ दिष्षि चंद आनंद मन, धनि मझ्झ गुर उपदेस ।
महा पुरुष पिष्षे प्रसन, सो मन मिटि अंदेस ॥ छं० ॥ ५७ ॥ रू० ॥ १८ ॥

चन्द का बीरों की पूजा करना ॥

कवित्त ॥ सनमुष अंजुलि जाइ, करी दंडौत सबन कहुँ ॥
कुसुमंजलि सिर मंडि । धूप नैंवेद समुह सहुं ॥
आरति सबनि उतारि । नयन नैनह सब मिल्लिय ॥
रहे पिष्षि सब बीर । जांनि पंनग वच षिल्लिय ॥
किंनी सुभ गति भव भावना । चित चंचल सुथ्यिर करिय ॥
भय चंद चंद तन मन प्रसन । अस अभूत पुज्जिय रज्जिय ॥ छं० ॥ ५८ ॥ रू० ॥ १९ ॥

चन्द का पृथ्वीराज के लिये शत्रुशमन मंत्र ग्रहन करना ॥

कवित्त ॥ जिन बीरन बसि करन । जोग जोगी षठ मंडहि ॥
जिन बीरन बसि करन । दुंद आराधत तंडहि ॥
जिन बीरन बसि करन । चरन सत गुर अभ्यासहि ॥
जिन बीरन बसि करन । प्रेत भूतन बिसबासहि ॥
सो बीर पंच हुअ सहज में । जती एक परसाद किय ॥
प्रथिराज भाग बरदाइ बर । सत्रु समन दुह मंच दिय ॥
छं० ॥ ५९ ॥ रू० ॥ २० ॥

क्षेत्रपालों (बीरों) का पूछना कि हम लोगों को क्यों बुलाया है ॥

---

१७ पाठान्तर—करण । भयानक । बे ॥ ५० ॥ काहूं कहण । बर्ण ॥ ५१ ॥ सत । मत । दिषियत । में । पिषे । क्रत्यंत ॥ ५२ ॥ पवग । दिषित ॥ ५३ ॥ कोई । भेस । अभेस ॥ ५४ ॥ बरसं । मंडूर ॥ ५५ ॥ केइ । करतह । रसस । मंसं । आपस पद परसस ॥ ५६ ॥

१८ पाठान्तर—दिषि । पिषे । प्रसन । अंदेश ॥

१९ पाठान्तर—जाई । दंडोत । कहौं । कहुं । नैवद । सहौं । सहुं । सबन । नैंन । नैंनन । मिलिय । पिषि । जानि । पिलिय । किनी । भवना । सुथिर । प्रसंन । पूजित ॥

२० पाठान्तर—षधंम आतम भ्रम मंडहि । वशिकरन । बिसवासहि । सोइ । पृथ्वीराज । शत्रु ॥

दूहा ॥ षेत्रपाल तब चंद सौं । किन्न हुकम सुदेव ॥
जंच मंच आराध हुत । क्यौं आकर्षे मेव ॥ छं० ॥ ६० ॥ रू० ॥ २१ ॥

चन्द का यह उत्तर देना कि हमने पृथ्वीराज की सहायता के लिये आप लोगों को बुलाया है ॥

साटक ॥ आकर्षे च देव मेव सवयं, पिथ्थं हितं कारनं ।
विषमं बंक सहाय आय भट्ट, भट्टं भया भैकरं ॥
इच्छेयं मन पेमयं च वरयं, दंदं दलं दारुनं ।
श्रीवीराधि सुरिंद चंद नमयं, चर्नस्य सर्नागतं ॥ छं० ॥ ६१ ॥ रू० ॥ २२ ॥

चन्द का प्रार्थना करना कि जैसे आप राम रावण आदि की लड़ाई में रक्षा करते आए ऐसे ही पृथ्वीराज को भी करना ॥

कवित्त ॥ महनि मथ्थि जब सुरनि । जुद्ध असुरां सुर जब्बह ॥
अमरन अमिय अमीय । मोहि असुरन तब तब्बह ॥
काली सुर महिषास । तिपुर जित्तिय महिषासुर ॥
जालंधर भसमास । राम दहकंध अभंगुर ॥
जहँ जहँ सुदेव बंकम परिय । करिय अभय तुम देव तव ।
देवाधि देव दानव दहन । चरन सरन हम रष्षि अब ॥
छं० ॥ ६२ ॥ रू० ॥ २३ ॥

बीरों का प्रसन्न होकर कहना कि जब गाढ़ पड़े तब स्मरण करना ॥

कवित्त ॥ जिनक मौन रहि देव । बचन चंदह उच्चारिय ॥
हम प्रसंन तुम्ह सेव, सुनहु भट्टं सुभ कारिय ॥
समर संग तुम राज, जब सु संकट पल जानिय ।
तबैं सुमरंत सु चंद, दंद हनिहैं सुन मानिय ॥

२१ पाठान्तर–सो । हुकम । सु ॥

२२ पाठान्तर–सिय । बक । सुभटं । घट । इछेयं । सुरेंद्र । चरनस्य । सरनागतं ।

२३ पाठान्तर–महन । मथि । असुरन । जबह । अमिय । अमीय । मोह । तबह । थांम । दुरकंध । जहा २ । संकट । रखि ॥

सिर धारि चंद वाचा हृदय, सदा प्रसन सेवक रहौ ।
करि क्रिपा नाथ भट्ट सरिस, विवरि नाम वीरन कहौ ॥
छं० ॥ ६३ ॥ रू० ॥ २४ ॥

भैरव का एक बीर को आज्ञा देना कि सब बीरों का नाम बतला कर चन्द को पहिचनवा दो ॥

दूहा ॥ तब भैरव इक गन सरिस, किंन हुकम्म हर नंद ।
विवरि नाम वीरन सवन, कहि दिक्खावहु चंद ॥
छं० ॥ ६४ ॥ रू० ॥ २५ ॥

सब बीरों का नाम गुण कथन ॥

दूहा ॥ वज्रपाट ता नाम गन । घन तन घोर भयंक ॥
प्रथुक नाम बरनत सवन । सुनत मिटै तन संक ॥
छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ २६ ॥

छंद पद्धरी ॥ गुन ईस चरन गुन गहर गाइ । फल सिद्धि बुद्धि जा नाम पाइ ॥
बानिय प्रसंन जो प्रथम होइ । करौं प्रसन बीर पंचास दोइ ॥ ६६ ॥
आइक्क बीर यह प्रथम सेव ॥ तिहि प्रसन प्रसन सब जानि देव ॥
वपुलाइ बीर अनंत विनोद ॥ जिहि प्रसन सदा आनंद मोद ॥ ६७ ॥
बुंढिआइ वीर बन्दौ सनेह ॥ जल मय सुथलनि करि बरसि मेह ॥
आनलप्रहारिय प्रबल वीर ॥ जिहि जुरत दनुज भरहरैं भीर ॥ ६८ ॥
नारीय क्रीडनह होड कोइ ॥ ब्रह्मा उदास करै टूक दोइ ॥
सूलीय भंज अनगंज बीर ॥ वज्जह सुभंजि दोइ करै चीर ॥ ६९ ॥
समसान लोटना बीर बंक तिहि पीर भीत अन संक भंक ॥
गढ उपडनाइ तो बीर नाम ॥ क्रोधंत कूट नह लहै ठाम ॥ ७० ॥
सामुद्र तिरन इह बीर चाव ॥ सप्तम समुद्र मनु बहत वाव ॥
सामुद्र सोष अनभंग बीर ॥ दनु देव समुद्रन हरत नीर ॥ ७१ ॥

२४ पाठान्तर—मोन । वचन । उचारिय । उचारीय । प्रसन । हुव । हुप्र । भटं । कारीय । जानीय । तहा । दंद हमें स नमानीय । सनमांनिय । सदा । प्रसन । करिं । भट्टह । बिचारि । नांम । कहो ॥

२५ पाठान्तर—दोहरा । नांम ॥

२६ पाठान्तर—नांम । पृथक । प्रथुक । बरनन । मिटे ॥

इह लोह भंजनिय वीर दीस ॥ सारन पहार भंजै सरीस ॥
संकना चोट इह नाम धारि ॥ भंजै जँजीर जनु सूत नार ॥ ७२ ॥
विस षाय राय सो वीर जाँनि । पचवंत जहर जनु दूध पानि ॥
हूँडमाल नाम लोइ है देष । पिष्षिय भयंक इक कालभेष ॥ ७३ ॥
अग्गिय वीर कुप्पंत वार । प्रब्बतप्रजारि सो करत छार ॥
बिषषिया बीर बीराधि बीर । तिहि क्रोध दनुज संहरै भीर ॥ ७४ ॥
जमघंट नाम औघट्ट जोर । जिन सहज गाज घन घोर सोर ॥
कालाइ नाम इह बीर लेषि । सब तजै भीर भै भीत देषि ॥ ७५ ॥
कुरलाइ नाम इह कलन जाइ । सुर असुर नाग तातके पाइ ॥
अगिक्रान्त वीर जब होत कोह । तब जरत तेज गिरसिषर षोह ॥७६॥
विषकंत वीर अत्यंत वंक । जिन पिष्षि कंक अन संक संक ॥
रगतिया बीर पग रत्त रंग । अरि रक्त बाह सो करत भंग ॥ ७७ ॥
कोइलाइ नाम जो सेव पाइ । तिन कष्ट होत भग्गै सदाइ ॥
कालक नाम करौ वीर सेव । तिहि प्रसन काम दुग्धं कि देव ॥ ७८ ॥
कालवे लाइ नाम विन वीर कौन । गम अगम थान जनु वहत पौन ॥
काल घटाइ वज्रंग वान । कोपंत दनुज दल हरन पान ॥ ७९ ॥
इंद्र बीराइ बल इंद्र जोर । चौगुन विज्ञान तन हरत रोर ॥
जम बीराइ बीर अत्यन्त कोह । सत्तउ समुद्र जल करत गेह ॥ ८० ॥
देवग्गि नाम करौं सेव पाइ । सुभ धर्म कर्म दाता सदाइ ॥
ऊँकार बीर नमि करौं ध्यान । जिहि प्रसन सदा आनन्द ग्यान ॥ ८१ ॥

झापटा बीर जब जुरत जुद्ध। नहिं सहत जोर दनुदेव सुद्ध॥
मांनिक्क भद्र है मेर मान। ठेलन अठिल्ल गढ द्रुग्ग पान॥ ८२॥
कपडिया बीर कहा करैं किति। मन वित्त राग लै मुक्ति जित्ति॥
केदाइ राइ नव जुद्ध आप। दिष्पन्त नैन जिन जात पाप॥ ८३॥
नरसिंघ बीर नरसिंघ रूप। चौगुन विलास आतम अनूप॥
गोरिया बीर गुन सकल जानि। नव रसन रास नाना विनान॥ ८४॥
घट घंट बीर जनमे सुजान। सोषत समुद्द अरि समुद पानि॥
कंटेभ्य बीर सुनि समर बाज दनु दलन कटक में परै गाज॥ ८५॥
बग नाम बीर जब समर कच्छ। बग लेत ढुंढ जनु नीर मच्छ॥
माहव्वगाव ब्रजंग अंग। अद्भूत अंग रूपह सुरङ्ग॥ ८६॥
संतो साइ सत मतह सुधीर। पर मध्य अध्य भव नाव कीर॥
महा संतोष सत संग धार। सेवक समुद्र भव नाव पार॥ ८७॥
भ्रमराइकाइ बल बाय बेय। भ्रम परे समर षल परैं लेय॥
महाभ्रमराइ काइक अजीत। भ्रम होइ ताहि जाकूर चीत॥ ८८॥
सहसाष अष्षि कर सहस जान। जानु द्रुपद मध्य रहै गच्छ दान॥
सह स्वांग अंग नित रूप चित्र। भय भीत अभय भै करन मित्र॥८९॥
षेत्र पाल षिति षल करै ष्याल। नाना चरित्र गे पाल बाल॥
भूतषनइ बीर बलवन्त कूर। तटकन्त पिष्षिक्क तन करत चूर॥ ९०॥
साकिनीमार अद्भूत जोर। समरन्त भक्त तन हरत गोर॥
बेदरी रीति भञ्जन बलाइ। कलपंत करन जे तक तपाइ॥ ९१॥
सालि बाहनह ससि सूर रूप। सेवक निवाजि बर करत भूप॥
ए नाम बीर सुनि चंद लेइ। पहिचांनि प्रसन करि विदा देइ॥
छं० ॥ ९२ ॥ रू० ॥ २७ ॥

समीर। वांन। दनुनि। पानि। पान॥ ७९॥ बीर। त्रिगुन। कभंत। जल हरन॥ ८०॥ नाम। कह। करो। पाय। सहाय। करौ। ध्यान। जिहिं। ग्यांन। ग्यान॥ ८१॥ झापरा। युद्ध। नह। माणिक्क भद्र। मांन। पानि॥ ८२॥ कापडिया। कहा। करो। वीत। जिति। केदाइराय। दिपंत। नेंन॥ ८३॥ त्रिगुन। गोहिला। जांन। जानि। विनांन॥ ८४॥ घटाघटे। दुजान। मे। सु जांन। समुद। यानि। कुनटेभ्य। सनि। मैं। परं॥ ८५॥ वग। नाम कच्छि। कछ। लैत। ढुंढि। मछ। माहवगाउ॥ ८६॥ सत्त। मत्तह। परमय। अय। नामकीर। बीर सत्यग॥ ८७॥ भ्रमराय काय। परें। परै। महाभ्रमराय। कायक। होत्त॥ ८८॥ सहसाष्य अषि। जानि दुपद। रच्छि। दांन। सहश्राग॥ ८९॥ चित्रपाल। ष्याल। पाल। भूतषानाय। भूतषनाइ। पिष्फि॥ ९०॥ साकिमीमार। बलाय। पाय॥ ९१॥ सालिवाहन। नांम। लेई पहिचान॥ ९२॥

चंद का बावनो वीर को पहिचान कर प्रणाम करके विदा करना और आप पृथ्वीराज से मिलने के लिये आगे बढ़ना।

कवित्त ॥ पहिचानिय कविचंद। वीर बावंन सूर दर ॥
महाकाय मदमत्त। अंत जनु अदित दनुज कर ॥
तेज साजि चष आजि। तास धीरज्ज धीर धर ॥
भीत भयंक भयांन। जानि ग्रीषंम अगनि झर ॥
करि नवनि चंद पहिचान सब। वज्रपात अग्या कलिय ॥
बहुराइ देव कहियन प्रवन्न। मिलन पिथ्थ आगैं चलिय ॥ छं० ॥ ९३ ॥ रू० ॥ २८ ॥

चन्द का उस जङ्गल का वर्णन करना जहां पृथ्वीराज आखेट खेलता है ॥

कवित्त ॥ अग्ग गयौ गिरि निकट। विकट उद्यान भयंकर ॥
जँह न षबरि दिसि विदिसि। बहुत जँह जीव षयंकर
सिंह कोल गज रीछ। बहुत सामर बनवंते ॥
चीतल चीत हिरंन। पाइ परकैं भजि जन्ते ॥
देषी सियाल ऊंदर बहु। कुड कदंम भरि तर रहिय ॥
पिष्षे सु जीव कवि चंद नें। तुच्छ नाम चौपद कहिय ॥
छं० ॥ ९४ ॥ रू० ॥ २९ ॥

कवित्त ॥ ठाम ठाम जल थान। जहि जल जीव निवासिय ॥
ठेंक कुरंस कुरंच। हंस सारस सुभ भासिय ॥
बगले बतक विहंग। मगर मछ कछ ग्रह परिय ॥
देषि मनुज पंनग निवास। सिद्ध साधक रुचि करिय ॥
पर घरहि दरन पन पिष्षियै। रोम हर्ष देषत नरन ॥
तुछ बुद्धि मइ देषत भुल्लौ। कवि सुभन्नि कहै का वरन।
छं० ॥ ९५ ॥ रू० ॥ ३० ॥

कवित्त ॥ सघन वृष्य घन छांह। जानि बद्दल नभ वासिय ॥
देषत पथ्य गिरंत। वेलि अवलम्बि विलासिय ॥
मोर सोर कोकिलन। (गेर)* चीह पप्पीह पुकारत ॥
सुमन सुगन्ध सम्बंह। अंध मधुकर मधु आरत ॥
बहु कुही बाज सिंचान बच। लंगूर लाग लेयन फिरैं ॥
देषन्त जनावर भष्य ही। जनु अकास तारा गिरै ॥
छं० ॥ ९६ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥ तहँ षेलत पृथिराज। संग सामंत जङ्ग जुरि ॥
षट सुडोरि सँग स्वान। लेत ते जीव सवन जुरि ॥
बगुर घेरि विप्पंन। अप्प म्हलन में मंडिय ॥
तक्क तके इक रहिय। हक्कि षेदा षिष्क छंडिय ॥
भहराइ भग्गि पसु उठि चले। आवै आवै होइ रहि ॥
परस्पर सोर वे करत सुनि। यों सिकार चन्दह सुलहि ॥
छं० ॥ ९७ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

पृथ्वीराज के शिकार की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ तिलक भाल ससि षण्ड। गण्ड मद भमर विलुद्धिय ॥
सुरभि तेल सिंदूर। सुमन संपति मन सुद्धिय ॥
सुद्ध दुद्ध जिम दसन। विसद बानी जिस न्त्रिमल ॥
फरस मुसल असि चर्म। हथ्य पंचम मोदक कल ॥
पुज्जिय सुचंद सुरइंदजग। गवरिनंद दूषन दुरय ॥
कंपहि सिकार गज तुंड डर। सव विघंन गनपति हरय ॥
छं० ॥ ९८ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

---

३१ पाठान्तर-वृष्य। जानि। बदल पथ्य। पय। * अधिक पाठ है। पपीह। सीचान। लंगुरु। फिरें। देषत। जिनावर। भषक ही भष्यक हैं। जनुं। आकास गिरें ॥

३२ पाठान्तर-तहां। सुं डोरि। संग। स्वांन। बंगुर। घेरीय। वियन। पडिय। हक्कि। भयराय। भगि। हुइ। रहिय। लहिय ॥

३३ पाठान्तर-गंड बम्मर मदलुद्दिय। सुभ्भि। संपति। दुद्ध। दुध सुद्ध। वांनी। न्त्रिमल। चर्म्म। हय। पुजिय ॥

वित्त ॥ दुजपति अंकह हिरन । इक्कनिमय सुभाय अति ।
गजनंनह टारन्न । विघन विय दिठ्ठ गनप्पति ॥
षट आनन वर मोर । चतिय उप्पोय निसंक उर ॥
भगवति वाहन सिंघ । बेदुग जीय सुमेर थरि ॥
बरदाइ चंद मुषच्चारि षग । पंचम वह सुषह रवहि ॥
आतंक अवर आरन्य पसु । डर थरहरि कंपत रषहि ॥
छं० ॥ ९९ ॥ रू० ॥ ३४ ॥

वित्त ॥ हहरि हिरन हारियव । हेरि कातर रव रहिय ॥
अप्प चास भय मोह । विरह लग्गी चटपहिय ॥
हिय धरक्क धुधरह । वदन लोइन जल निम्झर ॥
तक्कित चकित संक्रीत । समग संकरिय दुप्पभर ॥
भैरत्त चमक्कत पत्त रव । पिनक चित्त जिम उप्परै ॥
पिल्लत सिकार पिथ कुँअर डर । पसु पींपर दुन थरहरै ॥
छं० ॥ १०० ॥ रू० ॥ ३५ ॥

वित्त ॥ पोमिन वन नहिं चरहि । नहिन संचरिहि कुमुद वन ॥
दीप षेत परहरहि । जीर परहु अविरत्त मन ॥
मंथर गति लखि मुथ । कास कानन नह चप्पार ॥
नव पिप्पै नियनारि । नहिन चष कंदनि रप्पहि ॥
गिरि मद्धि गहिर गुम्भह वसहि । नीर सर्न न संचरहि ॥
सोमेस सुनन आषेट उर । दमड टाज उस सह चनहि ॥
छं० ॥ १०१ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ गिर कंदर सर दरह । सरित कच्छह घन गुच्छह ॥
निम्भर कूल न द्रहन । वेतनल तिन सर पुंजह ॥

९४ पाठान्तर-इक सुभिय निसक ग्रांत । गजवदन तह । गजनतह । दिठिय । गनपति । उतोय । उपोय । निसक । गज्जीय । गहिय । थिर । रहिय । आतंक । आरंन्य । रहिय ॥

९५ पाठान्तर-हहकि । हीरन । हारीयव । रव । अप । लगिय । धरक । धुधर । निझर । सकित । समग । संक्रीय । दुप । भयरत्त । चमक्कत । पत्त । उपरै । पिलत । कुअर । [illegible] ॥

९६ पाठान्तर-नहि । चरहि । दुप । परहरन । परनय । मथर । मुथ । चषहि । पिषै नहि । रपहि । मधि । गुम्भह । दमड । सहि ॥

कवित्त ॥ सघन वृष्य घन छांह । जानि बद्दल नभ वासिय ॥
देषत पष्प गिरंत । वेलि अवलम्बि विलासिय ॥
मोर सोर कोकिलन । (गोर)* चीह पप्पीह पुकारत ॥
सुमन सुगन्ध सम्बंह । अंध मधुकर मधु आरत ॥
बहु कुही बाज सिंचान बच । लंगूर लाग लेयन फिरैं ॥
देषन्त जनावर मष्प ही । जनु अकास तारा गिरै ॥
छं० ॥ ९६ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥ तहँ षेलत पृथिराज । संग सामंत जङ्ग जुरि ॥
षट सुडोरि सँग स्वान । लेत ते जीव सबन जुरि ॥
बगुर घेरि विप्पंन । अप्प मूलन में मंडिय ॥
तक्क तके इक रहिय । हक्कि षेदा षिम्भ छंडिय ॥
भहराइ भग्गि पसु उठि चले । आवै आवै होइ रहि ॥
परस्पर सोर वे करत सुनि । यों सिकार चन्दह सुलहि ॥
छं० ॥ ९७ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

पृथ्वीराज के शिकार की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ तिलक भाल ससि षण्ड । गण्ड मद भमर विलुद्धिय ॥
सुरभि तेल सिंदूर । सुमन संपति मन सुद्धिय ॥
सुद्ध दुद्ध जिम दसन । विसद बानी जिस न्त्रिमल ॥
फरस मुसल जसि चर्म । हथ्थ पंचम मोदक कल ॥
पुज्जिय सुचंद सुरइंदजग । गवरिनंद दूषन दुरय ॥
कंपहि सिकार गज तुंड डर । सब विघंन गनपति हरय ॥
छं० ॥ ९८ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

३१ पाठान्तर-वृष्य । जांनि । बदज पद्म । पय । * अधिक पाठ है । पपीह । सीचान । लंगुरु । फिरें । देषत । जिनावर । भषक ही भष्पक हीं । जनुं । आकास गिरें ॥

३२ पाठान्तर-तहा । सुं डोरि । संग । स्वांन । वंगुर । घेरीय । वियन । पडिय । हकि । भयराय । भगि । हुइ । रहिय । लहिय ॥

३३ पाठान्तर-गंड वम्मर मदलुद्दिय । सुम्भि । संपंति । दुद्द । दूध सुद्द । वांनी । न्त्रिमल । चर्म्म । हय । पुजिय ॥

कवित्त ॥ दुजपति अंकह हिरन। दुक्कनिमय सुभाय अति ॥
गजनंनह टारन्न। विघन विय दिठ्ठ गनप्पति ॥
षट आनन वर मोर। चतिय उप्पोय निसंक उर ॥
भगवति वाहन सिंघ। बेद्ग जीय सुमेर थरि ॥
बरदाइ चंद मुषच्चारि षग। पंचम वह सुषह रहहि ॥
आतंक अवर आरन्य पसु। डर थरहरि कंपत रहहि ॥
छं० ॥ ९९ ॥ रू० ॥ ३४ ॥

कवित्त ॥ हहरि हिरन हारियव। हेरि कातर रव रहिय ॥
अप्प चास भय मोह। विरह लग्गी चटपहिय ॥
हिय धरक्क धुधरह। वदन लोइन जल निझ्झर ॥
तकित चकित संकीन। समग संकरिय दुष्पभर ॥
भैरत्त चमक्कत पत्त रव। षिनक चित्त जिम उप्परै ॥
षिल्लत सिकार पिथ कुँअर डर। पसु पीपर दल थरहरै ॥
छं० ॥ १०० ॥ रू० ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥ पोमिन बन नहिं चरहि। नहिन संचरिहि कुमुद बन ॥
हूष षेत परहरहि। जीर परहु अविरत्त मन ॥
मंथर गति लखि मुंथ। कास कानन नह चप्पाह ॥
नह पिष्षै नियनारि। नहिन चष कंदनि रष्षहि ॥
गिरि मझ्झि गहिर गुझ्झह बसहि। नीर समीप न संचरहि ॥
सोमेस सुनन आषेट डर। दमड ढाल उस सह चसहि ॥
छं० ॥ १०१ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ गिर कंदर सर वरह। सरित कच्छह घन गुच्छह ॥
निझ्झर कूल न द्रहन। वेतनल तिन सर पुंजह ॥

---

३४ पाठान्तर—इक सुभिय निसक अति। गजवदन तह। गलनंतह। दिठिय। गनपति। ततीय। उपीय। निसक। गज्जीय। गलिय। थिर। रहिय। आतंक। आरंन्य। रहिय ॥

३५ पाठान्तर-हहकि। हीरन। हारीयव। रच। अय। लगिय। धरक। धुंधर। निझर। सकित। समग। संकरीय। दुष। भयपत्र। चमकत। पत्र। उपरं। पिलत। कुंअर। पियद ॥

३६ पाठान्तर—नहि। चरहिं। हूष। परहरत। परभय। मथर। मुथ। चषहि। पिषै नाहि। रषहि। मधि। गुजह। दमद। सहि ॥

ऊजर अरि पुर घरह। सैल मट उड्डन अह्नह ॥
हथ्थ जोरि सब सुभ्मि। उभ्भ दिष्षहि कित नहह ॥
फल फूल दुष्प भु अकास थल। घन उपवन घन सचरहि ॥
ढुंढत ढढाल ढढाल चिय भुक्कारन बहु भुक्करहि ॥
छं० ॥ १०२ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

कवित्त ॥ नहिं गब्बत करि गब्ब। नहिन गज्जत घन गज्जत ॥
बोलत नहिय नयंन। सिंघ कहि बोलत लज्जत ॥
भुअन मद्धि संचरत। नहिन कुंचरत दुग्द वन ॥
चरन लेष लुप्पनसु। पुंछ गज मुत्तिय मग गन ॥
धक धकहि धुकहि तकहि चकहि। दिद्घ उसासन उल्हसहि ॥
प्रथिराज कुंवर कोबंड डर। गिर कंदर केसर बसहि ॥
छं० ॥ १०३ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

कवित्त ॥ बग्गुर अगिनत परत। कितिक फंदन पगविद्धत ॥
कितेक झूलन मरत। कितिक स्वानन मह सिद्धत ॥
घंटजरागन कितक। कितक चीते तकि द्व्वत ॥
बाज सिंचान कुहीज। झपटि चंचनु फल चब्बत ॥
घन कूह सिकारन ह्वै रही। भजि न जीव कहुं जै सकै ॥
बलवतं बाघ हथ्थिय ऊजर। पकरि हंकि लीजै धकै ॥
छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

कवित्त ॥ गाडी लिए कितेक। कितक उंटन पर डारे।
पत राषे धर किनक। कितक हथ्थी पर धारे ॥
कावर कंधन कितक। कितक स्वानन मुष टुट्टत ॥
बिंछी सर्प विषंग। मंच वादी मिल लुट्टत ॥

३७ पाठान्तर-गिरि। कछह। गुछह। निझर। कुलन। कूलह। सेल। अधह। हय। सुभि। उभ। दिपहि। दुप। भू। भुपुकारनिबहुभुकरहि ॥
३८ पाठान्तर-नहिं। गवनु गव। गजत। नैंन। लाजत। भुयअन। रेप। लुंपतसु। पुछ। मग्ग मुति। हिवकहि। दिघ। उल्हसै। पृथीराज। कुंअर। कोहार। वसै ॥
३९ पाठान्तर-बगुरि। किनेक। स्वानन। दवत। चंचनु। पल। चूब्बत। चूवत। कहु। कहुं। अथिय। हथीय। हथिय। हक्कि ॥

वज्जत निसान सहनाइ सुर । नबल डक्क वज्जत बलिय ॥
सिक्कार खेलि घन रस रह्यौ । सब पहार पग बलदलिय ॥
छं० ॥ १०५ ॥ रू० ॥ ४० ॥

कन्ह चौहान आदि सब सरदारों का आकर पृथ्वीराज से मिलना और कहना कि आज यहीं शिकार हो ॥

कवित्त ॥ आइ कन्ह चहुआन । नवनि प्रथिराजसु किन्निय ॥
आइ राइ गोयंद । प्रथुक आदर आदन्निय ॥
आइ चंद पुंडीर । धीर सघ्यह हँसि मिल्लिय ॥
बलिभद्रह कूरंभ । कहर किन्ने रस षिल्लिय ॥
अतुआ राइ पावार मिलि । बरुन बंध सिर कर धरिय ॥
मिली कही सिंह पाहार इह । आज केलि अदभुत करिय ॥
छं० ॥ १०६ ॥ रू० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ मिलिय सकल सामंत तहँ, गनि न कहै प्रथु नाम ॥
हयन हीस परवत गजिय, सघन सुविद्रुम भाम ॥ छं० ॥ १०७ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

पृथ्वीराज का शिकार से घर की ओर लौटना ॥

छंद पद्धरी ॥ फिर चले कुंअर प्रथिराज गेह । मिलि सकल सूर सामंत नेह ॥
परहास परसपर करत केलि । तारीन तक्कि न्टप लेत झेलि ॥ १०८ ॥
संगाइ नीर कर मुष पषारि । सब करन मंडि कपूर धारि ॥

गोठ (भोजन) के स्थान पर ठहरना ॥

जहां हुई गोठि भोजन नरिंद । तहां हुते सकल सामंत वृंद ॥ १०९ ॥

चन्द बरदाई का आकर पृथ्वीराज से मिलना और पिछला सब वृत्तान्त एकान्त में ले जाकर कहना ॥

फुनि मिले चंद बरदाइ आइ । कछु कही वात पिछली सुनाइ ॥
न्टप भट्ट जाइ बैठे इकंत । फिरि कही वत्त जो आदि अंत ॥ ११० ॥

---

४० पाठान्तर-लोह । कितक । कितेक । पति । हयौ । स्वानन । सर्प्प । यजत । निसान । सहनाय । इक । बजत । सिक्कार ॥

४१ पाठान्तर-श्राय । चहुआन । पृथ्वीराज । किनियः । श्राय । राय । गोइद । पृथुक । श्राय । सघह । हसि । मिलिय । पिलिय । कहिय ॥

४२ पाठान्तर-तहा । नाम ॥

पृथ्वीराज का भोजन करना और फिर आगे बढ़ना ॥

सुष मद्धि सुष्ष प्रथिराज पाइ । भोजन करंन न्टप बैठे आइ ॥
छह रस निवास आहारि अंन । करि कुरल पांन करपूर लिंन ॥१११॥
म्टगमद जवाद सब चरचि अंग । कसमीर अगर सुर रहिय अंग ॥
सुभ कुसुमहार सब कंठ मेलि । इम चलिय बलिय चहुआन षेलि ॥११२॥
छच आगा इक्क सै तुरिय तेज । उड्डंत पंषि बिन पंषिरेज ॥
बगसीस सकल सामंत जोग । दिषि वाह वाह सब कहत लोग ॥११३॥
सुष चाल फाल जे हिरन लेत । उत्तंग गात पष्षर समेत ॥
गज घालि बांह घूघर सलोल । लष्षें न राह करते कलोल ॥११४॥
हा कहत उडत हां कहत ठट्ठ । गिर परत धक्क जिन कोट गट्ठ ॥
पित मात असलि औराक देस ।

सब सरदारों को एक एक घोड़ा बांट दिया उसी पर सब चढ़ कर चले ।

सोभंत बानि रवि रथ्थ भेस ॥ ११५ ॥
है एक एक सब बंटि दीन ।
चढ़ि सूर सकल सामंत लीन* ॥

कविचन्द को एक हाथी देना जो महा बलवान था ।

दिय हस्ति एक कबि चंद बोलि ।
अंदून ताहि को सकै षोलि ॥ ११६ ॥
तल बहत पाट सुभभ्भै न अंषि ।
अति पाइ काइ गहि लेइ पंषि ॥
अनि गज्ज मुष्ष को सकै झेलि ।
खल दलन मभभ्भ पारत्त मेलि ॥ ११७ ॥
सुर नाथ वाह सम अंग ओप ।
दिष्षियै खिज्यौ जनु काल कोप ॥
विन रोस सहज में अजा जांनि ।
हर कोइ बंचिलै चल्यौ कानि ॥ ११८ ॥

*यह तुक एसियाटिक सोसाइटी की पुस्तक में नहीं है ॥

सक्कै न बोलि को हय अरूढ। करहरौ पग्ग बलि कवन मूढ॥
अगि जल्ल मभ्भ मानै न संक। होइ रहै भूत सुनि बज्जि डंक॥११९॥
सुनि विरद कांन चल्लंत मग्ग। तिहि चंद हथ्थ दिय कनक बग्ग॥

छं०॥१२०॥ रू०॥४३॥

दूहा॥ बाग धरी कवि चंद सिर, हरष भयौ बहु अंग।
तूं विक्रम अक्रम हरन, करन दरिद्रह भंग॥

छं०॥१२१॥ रू०॥४४॥

एक एक सामंत हय, कीनिय चंद हजूर।
चढि चल्लिय हल्लिय अगैं, सरित तुरंगन पूर॥

छं०॥१२२॥ रू०॥४५॥

कवि चन्द का पृथ्वीराज की स्तुति करना॥

कवित्त॥ करिय नवनि कविचंद। छंद अनेक पढ्ढि कर॥
तूं सुरपति सम कुंअर। देव सामंत समो वर॥
अगिन कन्ह जल्ल चंद। पवन गोइंद प्रबल बल॥
धरा चंद बल धीर। तेज चामंड जलन षल॥
रवि तेज कहर कूरंभ सव। चंद अमृत आबू धनी॥
द्रुगपाल सबल सामंत सब। रहै दब्बि धरती धनी॥

छं०॥१२३॥ रू०॥४६॥

---

४३ पाठान्तर–फिरि। पृथीराज। येह॥ १०८॥ मगाय। मंगि। होइ॥ १०९॥ मिलें। बरदाय। आय। कहिय। बत्त। पच्छलि सुनाय। लाय। एकत॥ ११०॥ मध्य। सुप। पृथीराज। पाय। भोजन। करन फुनि। बैठि। आय। लीन॥ १११॥ जवादि। सुभ कंठहार। मेल्हि। चहुवान॥ ११२॥ इक। एक सो। उडुत पंपि॥ ११३॥ उतंग। पषर। लपे॥ ११४॥ पक। जिहि। गढ। रथ॥ ११५॥ हय। लिन। आंटून॥ ११६॥

तब लहत। सुभै। काय। पाय। लेय। गज्ज। मुहप। मभ्भ। पारंत॥ ११७॥ उंप। दिपियै। मैं। चलो। कान॥ ११८॥ सक्कै। कोइ। पग। जल। मभ्भ। मानै। होय। बज्जि॥ ११९॥ चालंत। सथ।

४४ पाठान्तर तु। तू॥

४५ पाठान्तर–कीनोय। चलिय। हलिय। अगै। तुंगन॥

४६ पाठान्तर–पढि। कुमर। कुंमर। समवर। अगांन। चावंड। अबू। सकल। रहे। दबि॥

दूहा ॥ जीभ एक कविचंद कै, किंत्ति कही क्यौं जाइ।
जीव बुद्धि पिथ्थह निमित, रच्च मो मत्ति सुभाइ ॥
छं० ॥ १२४ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

सब लोगों का अपने अपने घर विदा करना ॥

रह्यौ रंग बहुरे ग्रहन, करिय विदा सनमान।
निसा सुष्य मंडै सुषन, जागे ऊगत भान ॥
छं० ॥ १२५ ॥ रू० ॥ ४८ ॥

वीरों के मिलने के समाचार से पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ॥

प्रथीराज आनंद मन, सुनि बीरन बर वत्त।
फूलत तन तरु नीर लभि, इम आतम उलसत्त ॥
छं० ॥ १२६ ॥ रू० ॥ ४९ ॥

स्लोक ॥ शुभं दिवसे शुभं वार्त्ता। अशुभेच्च अशुभानि च ॥
शुभाशुभं यथायुक्तं। भवंति दिवसानि च ॥
छं० ॥ १२७ ॥ रू० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ॥

कवित्त। प्रथीराज चहुआन। बान पारथ बलिबंडह ॥
प्रथीराज चहुआन। दंढ दंडैति अदंडह ॥
प्रथीराज चहुआन। सरिस जुध कोउ न मंडै ॥
प्रथीराज चहुआन। सचु चिनु रद गहि छंडै ॥
प्रथीराज चहुआन पहु। कली काज अवतार कहि ॥
सोमेस सूर पूरई सुभग। उदर पिथ्थ अवतार लहि ॥
छं० ॥ १२८ ॥ रू० ॥ ५१ ॥

४७ पाठान्तर–जाय। बुधि। पिथह। मति ॥

४८ पाठान्तर–सनमान। सुप। मंडे। उगत। भान ॥

४९ पाठान्तर–वत। लहि। इम नृप आतम उलसत ॥

५० पाठान्तर–सुभं। सुभ। वार्त्ता। असुभे। असुभानि। सुभासुभं। यथायुक्तं ॥

५१ पाठान्तर–पृथीराज। चहुआंन। चहुवान। बांन। चंडह। पृथियराज। अडंडह। जुद्ध। त्रिनु। कलि। पिथ ॥

दूसरे दिन सबेरे पृथ्वीराज का उठना और नित्य कृत्य करना॥

दूहा॥ प्रात राज जग्गे प्रथम, गो दुज दरसन कीन।
देहकत्ति पुनि होइ सुचि, पावन पानि सुलीन॥
छं०॥ १२९॥ रू०॥ ५२॥

करि पावंन पवित्र बर, मोदन सुरभि सुतेल।
मर्द्दनीक मर्दन करै, बढै धात तन बेल॥
छं०॥ १३०॥ रू०॥ ५३॥

नहाकर दस गोदान, दस तोला सोना और बहुत सा अन्न दान देना॥

करि सनान गंगोदकह, दिय सुगाइ दस दान।
दस तोला तुलि हेम दिय, अंनदान अमान॥
छं०॥ १३१॥ रू०॥ ५४॥

महल में पृथ्वीराज का विराजना और सरदारों का आना॥

छन्द पद्धरी॥ करि स्नान दान सुचि रुचि कुंआर। होइ देवरूप साष्यात चार॥
कीनौ सु महल वज्जे निसान। आनन्द सकल सामन्त मान॥ १३२॥
आये सुमहल सामंत सूर। पूरंन तेज वीरत्त पूर॥
अनभङ्ग अङ्ग अनभूल वान। जिन दिट्ठ अरिय पावै न जान॥ १३३॥
कैमास आइ कीनौ जुहार। विद्या सु चतुर्दस मत्ति सार॥
गोयन्दराज गहिलौत आइ। वैठो सुकुंअर कमलं नवाइ॥ १३४॥
चहुवान कन्ह आयौ अभङ्ग। भारथ्य कथ्य भीषम प्रसङ्ग॥
अनि अनी सुभर वैठे सुआइ। अज गित मत्ति बल अप्रमाइ॥ १३५॥

---

५२ पाठान्तर–गो। देह कति। पुनः। शुचि। पान। पानि॥
५३ पाठान्तर–पावन। सुरभ। सुभम। मर्द्दनीक। मर्द्दन॥
५४ पाठान्तर–सुधान। गंगोदकहि। दांन। धन। दांन। अप्रमांन।

राजन कुँअार मधि सूर साज। देवतन मद्धि जनु देवराज ॥
गिरिराज मद्धि सब गिरन रज्ज। देखन्त सभा सुभ इन्द्र लज्ज ॥
छं० ॥ १३६ ॥ रू० ॥ ५५ ॥

बीरों के बश होने की बात से पृथ्वीराज का पेट फूलता है पर किसी से कह नहीं सकता ॥

दूहा ॥ बैठि सभा प्रथिराज रचि, आय सुरति निज चित्त ॥
वत्त बीर बरदान की, अति उमंग उल्लसित्त ॥
छं० ॥ १३७ ॥ रू० ॥ ५६ ॥

रहै न आनँद कुँअर हिय, उगमत कण्ठ प्रमान।
कहै न कासों बत्त बर, मानों दुद्ध उफान ॥ छं० ॥ १३८ ॥ रू० ॥ ५७ ॥

कैमास का हाथ जोड़कर पूछना कि आपके मुख पर कुछ उत्साह दिखाई देता है पर आप खुलकर कहते क्यों नहीं?

अरिल्ल ॥ पानि जोरि कयमास। बदै तब राज प्रति ॥
उर अवलोकित उल्लसत। सामन्त राज अति ॥
को कारन मुष चारु। न कथ्थियहि बत्त सति ॥
सुभर सूर सामन्त जु। विनवत्त राज प्रति ॥ छं० ॥ १४० ॥ रू० ॥ ५८ ॥

पृथ्वीराज का चन्द के वीरों को वश करने का समाचार कहना ॥

---

५५ पाठान्तर—थ्थांन। दान। कुअांर। कुआर। होय। वजे। निसांन। मान ॥ १३२ ॥ पूरन। तैज। वीरत। अभूल। बांन। दिठ्ठि। जांन ॥ १३३ ॥ आयं। चतुर्द्दस। मंति। गोद्दद। आय। आई। कुमर। कमल। नवाय ॥ १३४ ॥ चहुआंन। भारथ। कथ। अनि अनी। आय। आई। मित। अप्रमाय ॥ १३५ ॥ कुंआर। कुआर। देवतनु। मधि। मधि। रज। शुभ। लज ॥ १३६ ॥

५६ पाठान्तर—पृथीराज। वरद्दांन। अल्हसित्त ॥

५७ पाठान्तर—आनंदद। कुअर। कुमर। प्रमांन। मनों। दूध। उफांन ॥

५८ पाठान्तर—चन्द्रायना। पांनि। उल्हस्सत। सांमंत ॥ १३९ ॥ चारु। कथि। वत। विनवत ॥ १४० ॥

दूहा ॥ मन्न कहै कुँअर सामन्त सम, कन्हि आषेटक रंग।
भयौ सुर समैं एक मय, आलस ही में गंग ॥
छं० ॥ १४१ ॥ रू० ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥ अपरंजे आषेट। चन्द भुल्यौ सुबद्द वन ॥
जंगम इक तापस्स। मिल्यौ बरदाइ सुद्ध मन ॥
प्रसन भयौ कविचन्द। बीर मन्तह दीनौ बर ॥
अजमायौ कविचन्द। बीर बावन ढरस चिर ॥
तिन देखि अमित चरितह सुनत। बरनै कवि बरदाइ अति ॥
अनेक रूप अनेक गुन। अनँत गति अनतह सुमति ॥
छं० ॥ १४२ ॥ रू० ॥ ६० ॥

सरदारों का उपहास करके कहना कि भाट, नट, चारन, ये सब आरत हैं इन की बात सत्य नहीं माननी चाहिए ॥

अरिल्ल ॥ प्रसन सूर सामन्त सकल बर। हासे अप्प परसपर सुभ्भर ॥
भट नट चारन जू आरत्तह। इनकी गति न मन्नियै सत्तह ॥
छं० ॥ १४३ ॥ रू० ॥ ६० ॥

कैमास ने कहा कि चन्द को देवी ने बरदान दिया है वह सचमुच कोई अवतार है ॥

गाथा ॥ कथ्थिय वर कैमासं। देवी वरदाय चन्द भट्टायं ॥
अस तिन चवै असेसं। सत्यं रूप सत्य अवतारं ॥
छं० ॥ १४४ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

कन्ह ने कहा कि चन्द छूट गया था यह बात सच है, इसी पर उसने यह बात प्रसन्न करने के लिये गढ़ी है।

---

५९ पाठान्तर—कुमर। कुंअर। कान्हि।

६० पाठान्तर—अपरजेन भयौ। कविचंद। भुल्यौ। बट। तापस। मिल्यौ। चंद। बरनै। बरदाय। अनेक। अनत ॥

६० पाठान्तर—प्रसंन। सुभर। भट्ट। नट्ट। चारंन। जु। आरतह। मनियै ॥

६१ पाठान्तर—कथिय। भटायं ॥

अरिल्ल ॥ कहै कन्ह हम मानी सब्बह । भुल्ल्यौ भट्ट मग्गा बन तब्बह ॥
हसन केलि उर जोरिय बत्तं । दूह अचिज्ज मन्नै न विसत्तं ॥
छं० ॥ १४५ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

पृथ्वीराज के मन में सन्देह हो जाना ॥

दूहा ॥ किहि मंनी अमनी सुकिहि, त्रिविधि जानि संसार ॥
सुनत राज विभ्रम भयौ, पर्यौ सुचित्त बिचार ॥
छं० ॥ १४६ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

इतने में चन्द का आकर आसीस देना ॥

इहि विचार करवह मनह, आयौ चंद सुनव्व ।
दिय असीस कर उंच करि, बेद नीत वर कव्व ॥
छं० ॥ १४६ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

पृथ्वीराज का चन्द को पास बुलाकर वीरों की बात छेड़ना ।

राजह सूर हकार लिय, दिय सादर सनमान ।
वीर बिरद बरदाय प्रति, लग्गे बत्त पुछान ॥
छं० ॥ १४७ ॥ रू० ॥ ६५ ॥

पृथ्वीराज का चन्द की बड़ाई करके कहना कि हम लोगों की बड़ी अभिलाषा है सो आज वीरों का दर्शन करवाओ ॥

कवित्त ॥ कहै चंद कविराज । बत्त पूरब जो वित्तिय ॥
कहिय कुंअर प्रथिराज । चंद चरची सो सत्तिय ॥
हमहि बहुत अभिलाष । देव वीरानि दरस काज ॥
पावहिं तो परसाद । सूर सामंत मंत अज्ज ॥

---

६२ पाठान्तर–कहैं । मांनो । भुल्यौ । मग । तवह । जोरीय । शुभ हित इवर गाम सपत्तं । अचिर्ज ॥

६३ पाठान्तर–किहिं । स । किहिं । त्रिधा । जांनि । चित ॥

६४ पाठान्तर–इह । विचारि । तव । दीय ।

६५ पाठान्तर–राज । हक्कार ।सनमांन । वरद । वरदार । लगे । पूछांन ॥

तो सम न और तिहु लोक में। नट्ट भट्ट नाटिक्क नर॥
संसार पार बोहिथ समह। तोहि मात देवी सुबर॥
छं०॥ १४८॥ रू०॥ ६६॥

कवि चन्द का मंत्र जपना और होम करना॥

दूहा॥ सुनि आनंद्यौ चंद चित। कीन मंत आरंभ॥
जप्प जाप हवि होम सब। लग्गयौ कज्ज असंभ॥
छं०॥ १४९॥ रू०॥ ६७॥

वीरों का प्रगट होना॥

गाथा॥ किय जप जाप सुहोमं। आए बीर धीर आतुरयं॥
गज्जै गयन गहीरं। भय भै भीत सोर आघातं॥
छं०॥ १५०॥ रू०॥ ६८॥

छंद भुजंगी॥ धलंकी धरा धंम धंमै धरक्की। कठं पिठ्ठ कंमठ्ठ कठ्ठै करक्की॥
डिग्गै अडिग्गं सो दिग्गपाल दस्सं। तरक्कै चकै मुंनि जंनं तपस्सं॥१५१॥
भरक्कै सुबाजं सु बाजं बिछुट्टै। तरक्कैक एक्कं उलट्टै सुलट्टै॥
दसो आगमं भौ सुबावन्न वीरं। कपे काइरं धीर रघ्घौ सुधीरं॥
छं०॥ १५२॥ रू०॥ ६९॥

वीरों के शब्द से सामंतों का डरकर सोचना कि बिना काम इन को बुलाना ठीक नहीं हुआ।

दूहा॥ सुनिअ घात बर वीर को, चमकै चित सामन्त॥
इन आकप कज्ज विन, किनौं अप्प अमन्त॥ छं०॥ १५३॥ रू०॥ ७०॥

६६ पाठान्तर-कहै। कुंअर। प्रथीराज। चाचा। चुरचि। सतिय। हमहि। वीरनि। वीरांन। कजि। पावहि। सामंत। तिहु। मै। नट। भठ। नाटिक।

६७ पाठान्तर-आनंदो। मंत्र। जप। सम। लगो। कज्ज॥

६८ पाठान्तर-गाहा। स। गजे॥

६९ पाठान्तर-धम्मकी। धम। धमै। धम्मे। धम्मै। धरकी। कमठ। कढ़े। करकी। डिगौ। डिगे। अडिगं। द्रिगंपाल। दस। तरके। कारकै। चके। मुनि। मुनि। जन। तपस॥ १५१॥ भरके। बिछुटे। तरकेक। उलटे। सुलटे। दसो। धीरं। कपे। कपे कायरं स॥ १५२॥

७० पाठान्तर-सु आघात। चमके। कज। किनो॥

दो मत्त हाथी दर्बार के बाहर बांधे थे वह बीरों का भयानक शब्द सुनकर चौंके ॥

दूहा ॥ गज घुमन्त गजराज बर, दो हथ्थी दरबार ॥
दूरि दूरि बन्धे रहैं । काल समान करार ॥ छं० ॥ १५४ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ अति बलवन्त अनन्त । गरुअ मानहु गिरवर से ॥
गगन जेम गाजन्त । बंध बंधन ते सरसे ॥
च्यार पटे कुट्टे * कंकालं । मद नद्दह सुअहो निसि ॥
पवन पाइ पुरवाइ । काल रूपी कँकाल रिस ॥
सिर दिघ्घ दिघ्घ दन्तह सुभग । जरजराइ बंगरि जरिय ॥
लष लष्ष दाम पावहि पटै । कनक साजसाज सु करिय ॥
छं० ॥ १५५ ॥ रू० ॥ ७२ ॥

दोनो हाथियों का तुड़ाकर लड़जाना और दर्बार में खलभली मचना ॥

दूहा ॥ बीर सोर आघात सुनि, गज कुटि बन्धन तोरि ॥
भिरे उभय भय भीत होइ, परि दरबारह रोरि ॥
छं० ॥ १५६ ॥ रू० ॥ ७३ ॥

छं० मोतीदाम ॥ भिरे गजराज भयानक रूप । उभै मदमत्त महा जम जूप ॥
भए कइकाल कराल अरूट । लगै जनु क्रोध सु कज्जल कूट ॥ १५७ ॥
जुरे जुग जानि गुरू गजराज । किधौं कउ दानव रूप दुराज ॥
जगे प्रलकाल भयानक भूत । इसे दुइ दन्ति भिरे अदभूत ॥
छं० ॥ १५८ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

---

७१ पाठान्तर–गुमांन । हाथी । रहे । समांन ॥

७२ पाठान्तर–गरुय । मांनहु । तें । च्यारि । पठ । * अधिक पाठ । मद । हद हहु । अहर्निसि । पाय । पुरवाय । कंकाल । दिघ दिघ । गरजराइ । बंगरी । लष २ । दांम । पावहिं पटे । साजसु ॥

७३ पाठान्तर–छुट्टि । भिरै । भै । दरबारहिं । रोरि ॥

७४ पाठान्तर–भिरैं । भयांनक । मदमत । कोइ । अरुठ । लगै । कजल । कूठ ॥१५७॥ जांनि । गिरराज । कोऊ । दांनव । लगै । जगैं । प्रलै । भिरैं ॥ १५८ ॥

सरदारों का बहुत उपाय करना पर हाथियों का बश में न आना ॥

दूहा ॥ दौरि सकल सामन्त मिलि, करे अनन्त उपाइ ॥
रोस लगे कुट्टै नहीं, भई सुहायो दाइ ॥
छं० ॥ १५९ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

चिहूं ओर दरषी कुटै, परै अगड सुमार ॥
गोला लगै गिलोल गुरु, कुटै न तौ दुसरार ॥
छं० ॥ १६० ॥ रू० ॥ ७६ ॥

गाथा ॥ वर बावंन सु वीरं। कीनिग लषन्त सूर सामन्तं ॥
करे अनन्त कलापं। नह कुट्टन्त गज गरु आइ ॥
छं० ॥ १६१ ॥ रू० ॥ ७७ ॥

चन्द का बावन बीरों से प्रर्थना करना कि आप लोग इन हाथियों को छुड़ाकर बांध दीजिए ॥

दूहा ॥ तब कर जोरिय चन्द कवि, अग्गै बांवन बीर ॥
तुम सु छुडावहु मन्त कहु, बहुरि जरहु जञ्जीर ॥
छं० ॥ १६२ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

भैरव की आज्ञा से बीरों का हाथियों को जंजीर में बांध देना ॥

अरिल्ल ॥ तब भैरव भूवाल वीर वर। कीन हुकम कालीय ऊंच कर ॥
छोरावहु गजराज पांनि गहि। बहुरि जरौ जञ्जीर थान कहि ॥
छं० ॥ १६३ ॥ रू० ॥ ७९ ॥

दूहा ॥ तब काली दीन्यौ तलपि। गज्ज छुराइ समथ्थ ॥
उभै पांनि सौं रद उभै। गहे उभै वरहथ्थ ॥
छं० ॥ १६४ ॥ रू० ॥ ८० ॥

---

७५ पाठान्तर–दोरि सांमत। करै। उपाय। लगें। कुटै। नही। स ॥
७६ पाठान्तर–चिहु। उर। परे सुगड पर मार। लगें। गुरु। छुट्टै। तो। षस ॥
७७ पाठान्तर–बावन। सामंतं। करै। गुरुपाइं। गुरुयाइं ॥
७८ पाठान्तर–बावन। बांवन। स ॥
७९ पाठान्तर–भुवाल। किन। रव। छोरावो। पांनि। जरो। पांनि। कहिं।
८० पाठान्तर–गज। छोराय। समथ। पांनि। सों। सं। हथ ॥

यह कौतुक देखकर सरदारों का आश्चर्य में होना और सब का दर्बार में आकर बैठना ॥

गाथा ॥ बंधन दीन सु पाइं। कौतिगं दिष्षयं सब्ब सूरं ॥
मंनिय मन आचिज्जं। बैठे फेरि आइ दिवानं ॥
छं० ॥ १६५ ॥ रू० ॥ ८१ ॥

पृथ्वीराज का सब वीरों को प्रणाम करना, चन्द का नाम ले लेकर सब बीरों को पहिचनवाना ॥

परसे बीर सु सब्बं। करी प्रथिराज पाइं परिनामं ॥
प्रथक चन्द कथि नामं। पहिचाने बीर वीरायं ॥
छं० ॥ १६६ ॥ रू० ॥ ८२ ॥

चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि बिना कारण इन को बुलाया है इस से इन की बलि दो पृथ्वीराज का बावन घड़ा मदिरा बावन बकरे मंगाकर बलि देना और भैरव आदि की पूजा करना।

छंद पद्धरी ॥ पहिचांनि राज प्रथिराज बीर। भयो उदित मन आनंद धीर ॥
कविचंद कहिय प्रथिराज राज। इन देहु सुबल व्याकुल समाज ॥ १६७॥
बिन कज्ज अप्प आराध कीन। नवि विहित कुसल लभ्भो सुदीन ॥
बावन घट्ट वारुनि मँगाइ। बावन बीर प्रति घट्ट पाइ ॥ १६८ ॥
बावन अजासुत भष्य आंनि। दीने सु आदि भैरव निदांन ॥
सिंदूर तेल पुहपनि अरच्चि। सन्तोषि पोषि सब तन चरच्चि ॥
छं० ॥ १६९ ॥ रू० ॥ ८३ ॥

---

८१ पाठान्तर–दीय। सु पाय। पाईं। सब्ब देषोय। दिषय सब। मनिय। आचिजं। फिरि। आय। दीवांन ४ ॥

८२ पाठान्तर–कर। करि। पाय। प्रयुक। करि ॥

८३ पाठान्तर–पहिचानि। प्रथीराज। भयो। ध्रीर। कहीय। प्रथीराज। स। बाकुल ॥ १६७ ॥ कज। कुशल। नभों। बावन। घट। मंगाई। घट। पान ॥ १६८ ॥ भष आंनि। निदांन। आरचि। चरचि ॥ १६९ ॥

वीरों का प्रसन्न होकर पृथ्वीराज से कहना कि बर माँगो सो हम दें और अब हमको बिदा करो ॥

दूहा ॥ भये त्रिपत बीराधिबर, पूरन डक्क डकार ॥
अति आनन्दत उल्हसन, बोले बयन वकार ॥
छं० ॥ १७० ॥ रू० ॥ ८४ ॥

मङ्गि मङ्गि महिपत्ति तुश्र । सोइ समप्पैं आज ॥
दै सुबिदा न बिलम्ब करि । जु कछु चित्त तुश्र काज ॥
छं० ॥ १७१ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

पृथ्वीराज की ओर से चन्द का कहना कि लड़ाई के समय हमारी सहायता कीजिएगा ॥

गाथा ॥ जंपे वर वरदाई । तुम वरं बीरं देव देवाधिं ॥
भौ प्रथिराज सहाई । जुद्धं जथ राज जुद्दाइं ॥
छं० ॥ १७२ ॥ रू० ॥ ८६ ॥

भैरव का चन्द को बुलाकर कहना कि जब तुम्हें टेढ़ा समय आवे तब हम को याद करना ॥

गाथा ॥ तव वर भैरव बीरं । उच्चारीगं संमुष्षं चन्दं ॥
जं तुम बंकट ठौरं । तं सँभारं विचित अम्हाइं ॥
छं० ॥ १७३ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

गाथा ॥ परतिषि अम्ह सुहुव्वं । करयं जुद्धं तव्व साहस्सं ॥
जथ्थं चण्डिन चन्दं । तथ्थं करै न हम आगसं ॥
छं० ॥ १७४ ॥ रू० ॥ ८८ ॥

---

८४ पाठान्तर-नृपति । डंक । हक । आनंद तन । वैन ॥

८५ पाठान्तर-महिपति । समर्पं । दैह । तू कछु चितत काज ॥

८६ पाठान्तर-जपै । पर । बीर । देवधि । वीर देवाधि । जुटाई ॥

८७ पाठान्तर-उचारि॰ वद संमुषं । तुम । बकट । टौरे । समारे । संभारे । विचित । अम्हाई ॥

८८ पाठान्तर-अन्ह । जुद्ध । तव । साहसं । जथं । तथं । हम्म । आगमं ॥

बचन देकर बीरों का बिदा होना, सरदारों का चन्द की बात पर प्रतीत करना और पृथ्वीराज का चन्द पर अधिक प्रेम बढ़ना ॥

दूहा ॥ दइय वाच सब बीर नैं। बहुराए कवि चन्द ॥
सब सामँत अनन्द भौ। दरसत नठ्ठे दन्द ॥
छं० ॥ १७५ ॥ रू० ॥ ८९ ॥

सत्य करै मान्यौ सकल। हरषित भय प्रथिराज ॥
प्रेम बढ्यौ अति चन्द सौं। साहस रीत समाज ॥
छं० ॥ १७६ ॥ रू० ॥ ९० ॥

पृथ्वीराज का चन्द से कहना कि सब सरदारों को मन्त्र बतला दो, चन्द का सब को मन्त्र बतलाना ॥

गाथा ॥ तब कूंअर कहि चन्दं। देहु मन्त्रं सव्वं सामन्तं ॥
तब कहि मन्त्रं चन्दं। कीन अप्प अप्पं सहायं ॥
छं० ॥ १७७ ॥ रू० ॥ ९१ ॥

चन्द को बीस गाँव और एक घोड़ा पृथ्वीराज ने दिया ॥

दूहा ॥ बीस गांमं कविचन्द प्रति, करी कुँअर बगसीस ॥
एक बाजि साजति सजहि। दियौ सु सम्भरि ईस ॥
छं० ॥ १७८ ॥ रू० ॥ ९२ ॥

इति श्रीकविचन्द विरचिते प्रथिराजरासके आषेटक बीरबरदान बर्णनं नाम षष्ठ प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ६ ॥

---

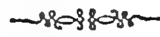
८९ पाठान्तर-वीरनें। सामंत। नठै ॥

९० पाठान्तर-सति। करे। मंन्यौ। हरषत। प्रथीराजं। समाजं ॥

९१ पाठान्तर-देहु। मंत्र। सव। अप्प। अप ॥ * यह रूपक सं० १६४० की पुस्तक में नहीं है ॥

९२ पाठान्तर-ग्रांम। कुअइ। कुंअर। सजि। दीयौ ॥

अथ नाहर राय कथा वर्णनं लिख्यते ॥



(सातवां समय)

सोमेश्वर देव का शिवरात्रि का व्रत जागरण करके सोने की तुला दान करना और उसे बांट देना ॥

दूहा ॥ ग्यारह सै। गुन तीस बदि, फागुन चवदसि सोम ॥
सिवरत्तो सोमेस न्टप, निसा मण्डि जप होम ॥
छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

पञ्च गव्व अस्नान करि, सीस सहस घट मण्डि ॥
दीपदान घ्टत सहस शिव, कुसुमंजलि सिर छण्डि ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

शिव उपास सोमेस वर, पञ्च उपासि सुराज ॥
महा मोह भत्ती सुगुर, करिय किन्ति कविराज ॥
छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

श्लोक ॥ शिवशिवा उपास्य राजन् वीर्यं देवन कामयम् ॥
कविचन्द महावाणी, प्रगट रूपेण विस्मितम् ॥
छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ चतुर जाम जग्गिय न्टपति, कनक तुला तहँ कीन ॥
प्रात तमे वर दुजन कहुँ, वंटि अप्प कर दीन ॥
छं० ॥ ५ ॥ रू० ५ ॥

---

१ पाठान्तर–दोहा। सं। सैं। सुनि। चवदिसि। सिवरती। चप॥ इस रूपक में संवत् ११२९ अनन्द साक वा पृथ्वीराज का तृतीय साका है। इस का वर्णन कवि ने आदि पर्व्व के रूपक ३५५। ३५६, पृष्ठ १३८ में किया है। तदनुसार इस में अन्तर के ९०। ९१ वर्ष जोड़ने से ११२९ + ९०। ९१=१२१९। १२२०। वर्त्तमान विक्रमी होगा॥

२ पाठान्तर–पचगव्य। अस्नान। सहस। दान। सहास। कुसुमांजलि। सिर॥

३ पाठान्तर–शिव। स राज। स गुर॥

४ पाठान्तर–सिवसिवा। राज। राज्य। वीर्यं। कामयं। वार्ना। रूपेन। विस्मितं॥

५ पाठान्तर–जाम। तहा। समे। कहे।

अन्न अमार अपार उठि, जिहि लीनी दिय ताहि ॥
छरस भोग भोजन भले, रही न मनसा काहि ॥
छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥

उमय ईस अग सोम पुनि, अस्तुति मण्डि समुप्प ॥
तब चिनेत तन ताप हर, संचन सेवक सुप्प ॥
छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

शिव जी की स्तुति करना ॥

कवित्त ॥ विदित सरल अति चपल। विमल मति कज्ज निअच्छिनि ॥
गीत राग रस रटित। सती लंपट विस भच्छिन ॥
भुगति दैन जन विभव। भूर भूक्ति तन सोभित ॥
चिपुर दहन कबिचन्द। केन कारन क्रन लोकित ॥
श्रीविश्वनाथ संमित गवन। गरल चिलोचन रस कुसल ॥
मुष अमल कमल परिमल बहुल। भुगति चारु चर्म्मन भसल ॥
छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥

छन्द पद्धरी ॥ जत गरल कंठ दीसहति बीय। जिम चित प्रगट संसार नैय ॥
सारङ्ग उछह तिन पान पानि। ढिव तुङ्ग जाल जव जवनि भानि ॥ ९ ॥*
जट मुकुट गंग दीसहि उतङ्ग। शोभन्त चन्द लिल्लाट रङ्ग ॥
सारङ्ग सूल सादूल चर्म्म। सेवक सहाय अघ हरन कर्म्म ॥ १० ॥
कटि विकट निकट नटवत चिभङ्ग। यनभूत लेय विभ्भूत अङ्ग ॥
बुन्द जा काम जा आप कूल। जैजै सुईस माया अमूल ॥
छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ९ ॥

साटक ॥ कप्याली कपआल बाहु अहयौ, गिरज्जाइ सारङ्गनौ ॥
बीभच्छौ रस तथ्य न्नित्य रतयौ, मुर्व्वौ सदा तुङ्गयौ ॥

६ पाठान्तर—अमरअन्न। उट्ठि। जिहिं। नहीं ॥
७ पाठान्तर—मंडिय मुष। मडीय समुप ॥
८ पाठान्तर—विअच्छन। विअच्छिनि। विषभषिन। विभै। क्रत। गवन। कुशल। चारु। घर्म्मन। भसल ॥
९ पाठान्तर—जुत। दीसहिति। जम। पांनि पांनि। * "दिव तुङ्ग आल दिव दिव न मांन" संवत १६४० की पुस्तक में पाठ है ॥ ९ ॥ लिलाट। सादूल। चर्म। कर्म्म। विभूत। अमूल ॥

रुद्रो रुद्रि पाय नग्नि उरयौ, हास्यं रसं शृङ्गरं ॥
जामन्तं गिरिजानिनं विरचयौ, कर्नाथ कामं चयं ॥
छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १० ॥

साटक ॥ वामं गौरि स्रृंगार हास्य नगनं, कर्नाय कामं चयं ॥
रौद्रं रौद्ररि पाय भार दमनं, वीरं त्रिनेत्रं ज्वलं ॥
भै भीतं दिषि अङ्ग भङ्ग अहितं, वीभच्छ नटव्वतं ॥
सान्तं संमित जोग दीन अदभू, तौ रस्स रत्तं शिवं ॥
छं० ॥ १३ ॥ रू० ॥ ११ ॥

शिवजी की स्तुति करके सोमेश्वर देव का अपने कुमार के विवाह कि लिये नाहर राय के पास दूत भेजना ॥

दूहा ॥ सा देवह करि अस्तुती, बर सोमेस कुमार ॥
नाहरराइ नरिंद कौं, दूत संपते वार ॥
छं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ १२ ॥

शामदामादि में निपुण दूत का पत्र दरसाना ॥

गाथा ॥ सामं दामं भेवं। वेदं गुनं विग्रयं षंगाई ॥
जानं पनं सलीहं। ते पत्तं दूत दरसायं ॥
छं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ १३ ॥*

कवि का सनीचरी दृष्टि के योग पर से भविष्य में वैर दोष होने का कथन करना ॥

साटक ॥ दिष्टी दिष्ट सनीचरी बसहिनो, हंनोपि दुज्जं घरं।
पावारं परिहार वैर गुरय, जहांरु चैाहानयं ॥

१० पाठान्तर–कप्पाल। वहयो। गिरिजाई। गिरलाई। नो। वीभछो। तप। रतये मुर्वो। तुंगयो। उरयो। गिरिजां। करुनाय। काम ॥

११ पाठान्तर–संगार। करुनाय। काम। त्रिय। त्रिनेत्र। भय। बीभछ। नटवर्त्तन नटवतन। रदभुत। श्रदभुत। नौ रस। नौ रस्स। रसित ॥

१२ पाठान्तर–अस्तुति। नाहरराय। के। के। सपत्ते ॥

१३ पाठान्तर–दानय। गुन। त्रिय ॥ * यह छन्द सं० १६४० और १८५९ की लि[खी] पुस्तकों में नहीं है ॥

सोगिनीरि समस्त संयुत कला, भारथ्यनो द्रिष्टयं ।
साबाला बर बैर ग्रेह्व तिगुना, के के नगे राजयं ॥

छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ १४ ॥

कवि का कहना कि स्त्री के कारण से बैर दोष आगे रामादि बड़े बड़ों के हो चुका है ॥

कवित्त ॥ गयो चन्द तारिका । पुच लज्जा विन आन्यौ ॥
षेच वीर्य सम्भवै । वीर्य लभ्भवै न पान्यो ॥
वैर दोष श्रीराम । बैर दोषह दुर्योधं ॥
वैर दोष नघुराई । बैर दोषह मुचकन्धं ॥
सा बैर दोष पण्डव बलिय । मात बचन अह दोष सहि ॥
इक दिनह समय सुन्दरि सचिय । सभ्भ समय इह चरित लहि ॥

छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ १५ ॥

कामधेनु का चरित्र ॥

कबित्त ॥ कामधेन पच्छै प्रचण्ड । त्रिषभयं चह अधिकारिय ॥
एक एक उत्तरै । एक चढ्ढै रस भारिय ॥
हसी सची दिषि निजर । दीन सराप सुधेनह ॥
हों पसु तुअ सुमनुच्छ । होइ पच्चाल ग्रेह मह ॥
लम्भी सुपच्छ जननी बचन । यंटि लई क्रम क्रम सुसर ॥
तिह ग्रेह श्रोर जो सम्भवै । तो वनहिं डैवर सबर ॥

छं० ॥ १८ ॥ रू० १६ ॥

प्रात समय जगते ही दूत का पत्र पढना ॥

१४ पाठान्तर–हननोपि । दुजन । दुज्ज़न । घनं । परिहारं । पावार । वेर । जदोरु । घहुवांन । गिरिनारि । भारथ ॥

१५ पाठान्तर–श्रीरज । लभवै । श्रीरांम । दुर्जोधं । नघुराय । मचकन्धं । दिन । सुन्दर । इक ॥

१६ पाठान्तर–कांमधेनु । पछै । प्रछैं । प्रछण्ड । वृषभ । अधिकारीय । उतरै । चढै । भारीय । साराय । हो । तूं । मनुष । मनुछ । लभी । सुपछ । बटि जोर । हीण्डे ॥

दूहा ॥ भयौ प्रात जगात दुतिय, बंचि सुकग्गद पानि।
आबू रा सलषान लिषि, बर गिर नारी बानि ॥
छं० ॥ १९ ॥ रू० ॥ १७ ॥

उस पत्र में बीर रूप देवस्थान हिँगुलाज के प्रभाव से पृथ्वीराज के बलवान होने और नाहरराय के बल प्रताप का वर्णन था॥

कवित्त पूना कर पर बत्तह। कोरि दह नील सवायौ॥
बीर रूप इक रुद्र। थांन हिंगुलाज बनायौ॥
देवल एक अचम्भ। हेम पुत्तलि इक मंडी॥
धूप दीप साषा* सूरङ्ग। धजा पत्ताकह ठण्डी॥
दिष्षन सुथांन आचम्भ बर। ज्यौं कवि मंची होइ कल॥
कवि कहै चन्द वरदाइ बर। जौ चहुआन सुहोइ वल॥
छं० ॥ २० ॥ रू० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ वर गिरनारि नरेस। सिंधु वट्टी सुरतानं॥
तेज तुङ्ग तप तेज। वैर भंजै अरि पानं॥
वर गुज्जर वैसाहि। जमत अड्डौ सुस्त्र वल॥
तिन मुक्कलि दिय दून। राज सम्भरिय पिष्षि षल॥
परिहार नाथ नाहर न्टपति। दुह वढ्यौ इक इक्क अग॥
जानें कि जरा जुब्बन दुवन। सामन्तां संतोष भग॥
छं० ॥ २१ ॥ रू० ॥ १९ ॥

कवित्त ॥ इत सामन्तन नाथ। वाय वडवानल घल्लन॥
सण्डल घल्लन नाथ। सार अग्गी पल जल्लन॥
अकह कहानी करन। सरन रष्षन असरन बल॥
सुथिर अथिर करि थपन। अंग जग जन दाहन दल॥

१७ पाठान्तर—शनि। षान। बानि॥
१८ पाठान्तर—रवत्तह। ब्रतह। घान। थानि। हिंगुलाज्ज। फूतरि। पुतलि।* अधिक पाठ है। सुरङ्ग। पताकह। दिषिन। सु थान। ज्यो। कहैं। जो। चहुंवांन। चहुयांन॥
१९ पाठान्तर—अट्टौ। षान। गुजर। बड्डा। मुक्कलि। पिष। षल। जाने। जुबन। सांमन्तां।

भुत्र लोक सोक हर सुद्दिन तन। पन अप्पन सोमेस सुत्र ॥
छत्र धर्म कलिमल मलन। तिद्दिन छोर पिष्पिय सुदुत्र ॥
छं० ॥ २२ ॥ रू० ॥ २० ॥

कवित्त ॥ चलत पंथि पिषि बाज। पिष्पि मृगराज मृगनि गन ॥
गोधन धरत गुवाल। हंकि लै चलत वननि बन ॥
महु तजि चलत मुचाल। अन्य तरु साष लगन कहुँ ॥
बद्दल विसद विसाल। चलत वसि पवन गगन महुँ ॥
तिम नाहर राइ नरिन्द पिषि। समर सद्दिन सक्कहि सकज ॥
गिरि लङ्क सङ्क सम बढ़ गरुत्र। गिरद पारि किज्जै अजक ॥
छं० ॥ २३ ॥ रू० ॥ २१ ॥

पट्टन में चौलुक्य भीमदेव, आबू पर जैत (सलख?) पंवार, मेवाड में समरसिंह, दिल्ली में अनङ्गपाल जैसे बलवानों में मण्डोवर में नाहरराय के राज्य करने का वर्णन।

कवित्त ॥ उत पट्टन भीमंग। ब्रह्म चालुक्क लोह लुत्र ॥
अब्बू जैत पवार। लोह लरि जांनि अचल ध्रुत्र ॥
समर सिंघ मेवार। दण्ड देवार अजर जर ॥
दीली पत्ति अनंग। लरन अड्डौ सुलोह लरि ॥
परिहार नाह नाहर न्टपति। इनन बीच अप बल रहै ॥
मण्डोवराइ मारू मरद। बर विरद बंके बहै ॥
छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का आठ वर्ष की अवस्थाः में दिल्ली ननिहाल में आना, दिल्लीश अनंगपाल के अधीन राजाओं का वर्णन ॥

२० पाठान्तर—घलन। जलन। कहांनी। रयन। अगं। जगन। जग। कलिमल कलि मलन। पिपिय। सुत्रय।

२१ पाठान्तर—पंथ। वाज। पिपि। मृगनी। वनन वन। महुवाल। शाष। कहीं। कहु। महु। नाहरराय। सकहि ॥

२२ पाठान्तर—चालुक। अबू। जांनि। दिल्लीपति। अडो। बीचि। बिरद। बहैं ॥

कवित्त ॥ बरष अठ्ठ प्रथिराज। गयौ मुसाल ढिल्ली थप्प ॥
राज करे अनँगेस। सेव मरुधरा करै सप्प ॥
मंडोवर नागौर। सिंधि जलवट्ट सुपट्टै ॥
पेसौरां लाहौर। धरा कंगुर लगि कंठ्ठै ॥
कासी प्रयाग गढ देवगिर। इते सेव अग्या धरै ॥
सीमाडवियां संकै सुपसु। भित अनंग सेवा करै ॥

कं० ॥ २५ ॥ छं० ॥ २३ ॥

मंडोवर के नाहर राय का दिल्लीश्वर की भेट को दिल्ली आना, पृथ्वीराज का रूप देखकर प्रसन्न होना और माला पहिरा कर कहना कि जब पृथ्वीराज सोलह वर्ष का होगा तब मैं अपनी कन्या इसको विवाह दूंगा ॥

कवित्त ॥ आयौ नाहर राइ। सेव आद रय दिलेसर ॥
दिष्षि कुँवर प्रथिराज। नूर अदभून नरेसर ॥
अंबर माला दक्क। अंक पहिराइ कह्यौ इह ॥
मैं दिन्नी रूपमंगि। सवैं उच्छाह कियौ यह ॥
आनंद तेज राजा अनँग। प्रथीराज आयौ घर ॥
दुइ अठ्ठ बरस जब बीति गय। व्याहुँ कन्या देव गिरह ॥

कं० ॥ २६ ॥ छं० ॥ २४ ॥

नाहर राय का मत पलट जाना अर्थात् कन्या देना अस्वीकार करना ॥

---

२३ पाठान्तर–प्रथीराज। मुर। छप। वट। पुट्टे। पैसोरा। कटै। रते। पह। भत ॥

२४ पाठान्तर–नाहरराय। आदरी। दिल्लेसर। देषि। कुवर। प्रथीराज। अदभुत्त। दक। पहिराय। दीधी। सवे। उछाह। कीयो। यह। आनद। अनग। प्रथिराज। आयो। अठ। बीतिगा। व्याहुं। व्याहु। देवगिर ॥

दूहा ॥ लालपनै प्रथिराज नें, दिय कंचन वैमाल ॥
मतो फिरि किन्नौ अक्रम, नाहर राइ विसाल ॥
छं० ॥ २७ ॥ रू० ॥ २५ ॥

नाहर राय का उत्तर लिखना कि तुम्हारा कुल आदि हमारे योग्य नहीं है ॥

कवित्त ॥ लिषि कग्गद परिमांन । थांन अजमेर पठाइय ॥
दूत पंथ अबिलंब । पास संभरि वै आइय ॥
चिंति मत्त आरंभ । सेन पारंभ विचारिय ॥
बाल बीर प्रथिराज । देइ नांही परिहारिय ॥
सग पज सुआदि सम वर न्टपति । समर जुद्ध साधै समर ॥
कुल ढुंढ नाम दिज्जै नहीं । इह कलंक लग्गै सुघर ॥
छं० ॥ २८ ॥ रू० ॥ २६ ॥

अरिल्ल ॥ षेतरपाल कैां पूजैं कैान्नं । जो परहरि गो विंदह मैानं ।
परहरि सिव उमया गुन तत्तं । को मंडै चंडाली मंत्तं ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ २७ ॥

दूत का यह पत्र लाकर पृथ्वीराज के हाथ में देना ॥

दूहा ॥ लिषि कग्गद परिहार पर, विवरि विवर करि दूत ॥
लै दीनो प्रथिराज कर, समी संभ्भ सपहूंत ॥
छं० ॥ ३० ॥ रू० ॥ २८ ॥

पृथ्वीराज का क्रोध करना, सोमेश्वरदेव का समझाना ॥

कवित्त ॥ बढि अवाज* अजमेर । बंचि कग्गद चैारासिम ॥
परिहारह सब सेन । धर्म परिहरि बढ्यौ भ्रम ॥

२५ पाठान्तर-बालपनैं । पृथीराजनैं । फिर । कीनो । नाहर राय ॥

२६ पाठान्तर-परिमांन । थान । चित्ति । मत । विचारीय । पृथीराज । देत । नाहीं । परिहारीय । न्रपति । जुध । साधें । नाम । दिजे । नाहो । लगें ॥

२७ पाठान्तर-षेत्रपालकूं । पूजे । गो । मांन ॥

२८ पाठान्तर-पृथीराज । पहूंत ॥

सूर नूर तिन तेज। मध्य अँषियन यों राजै ॥
प्रात ओस जिम बूंद। जवच्च अग्रच अनु साजै ॥
मंगल अनेक जंपत करत। तात वरज्यौ पुत्त फिरि ॥
मेजाह्व साच सिसु बत्त सुनि। करहि जुद्ध भुम्मिय सु जुरि ॥
छं० ॥ ३१ ॥ रू० ॥ २९ ॥

सरदारों का पत्र सुनकर क्रोध करना ॥

कवित्त ॥ सुनिय बत्त सामंत। बँचे कग्गद परिहारे ॥
सीस लग्गि असमान। षिज्यौ लंगा वंगारौ ॥
सिंघाने करि हन्यौ। केन जबूं कवर षड्डौ ॥
केन छीन सनि राह। जुद्ध तारा ससि बध्यौ ॥
वर कन्ह वीर सोमेस पहु। चाहुवान बक्करियै ॥
बाहंत वीर अरि नीर विच। दल चौहाना तारियै ॥
छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ ३० ॥

कवित्त ॥ मुक्के दूत सुदूत। रत्त गुन अरिन विरत्ता ॥
चिंत तनौ सिर भार। सार कारज सो रत्ता ॥
वर अप्पन जानही। प्रमान न्टमान सुरष्षै ॥
द्रिग राजान प्रमान। देस विदेस परष्षै ॥
ते दूत सपत मंडौवरह। चर चरित्त अनुसरि परे ॥
भय प्रात राज दरबार गय। दिष्षि धार धर धर डरे ॥
छं ॥ ३३ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिये सेना सजना ॥

---

२९ पाठान्तर–आवाज। धूम। मधि। अषिन। राजै। उस। बुंद। अयन। मज्जाह माह। भूमीय ॥ * यह शब्द अर्थात् "आवाजि और आवाज" आदिपर्व्व के रूपक १८१ तथा १८२ पृष्ठ ८६ में भी आया है। उस पर की टिप्पण देखो। संस्कृत 'वाज" और "वाद" शब्द Sound, sounding, discourse, speech and prayer आदि के अर्थों में प्रयोग होते हैं उन से यह हिन्दी अपभ्रंश शब्द बने दीखते हैं ॥

३० पाठान्तर–सुनीय। सामंत। बंचे। बचे। कग्गद। असमांन। लागा। कर। वधो। छीनं। बधो। कन्ह। चाहुवान। चहुवान। बक्कारीये। बाहट। बिचि। चौहानां। तारीये ॥

३१–पाठान्तर–मुक्के। कारिज। जांन हि। प्रमान। त्रिम्मान। प्रमान। राजन। विदेष परषे। दंपत। चर चरित्त। दिषि ॥

दूहा ॥ तार बरज्यौ बत्त बहु, एक न आवै दाइ ॥
उत प्रथिराज नरिंद ने, सज्ज्यौ सेन सुभाइ ॥
छं० ॥ ३४ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

सेना का वर्णन ॥

लघुनाराच ॥ हय गयं सजे भरं। निसांन बज्जि दूभरं ॥
नफेरि बीर बज्जई। मृदंग झल्लरी गई ॥ छं० ॥ ३५ ॥
सुनंत ईस रज्जई। तनीस राग सज्जई ॥
सुभेरि भुंकयं घनं। श्रवन्न फुट्टि झंझनं ॥ छं० ॥ ३६ ॥
नरद्द नाद रिझ्झयं। चुसट्ठ ताल दिज्जयं* ॥
तुरंग पंति चल्लयं। मनौं जलद्द चल्लयं ॥ छं० ॥ ३७ ॥
तरप्पि तेज तामसी। मनों कि नद्द वामसी ॥
झलक्कि मंत दंतयं। मनौं कि बीज पंतयं ॥ छं० ॥ ३८ ॥
जेर जराय बंगरी। मनौं चमक्क विज्जुरी * ॥
सिरीसु सोभ जग्गयं। कि भान मेघ उग्गयं ॥ छं० ॥ ३९ ॥
श्रवंत सोभ दानयं। झरंत मेघ जानयं ॥
उपंम और दुत्तियं। षिलाब राव पुत्तयं ॥ छं० ॥ ४० ॥
उपंम तीय उद्दरं। कि मिच कज्जलं गिरं ॥
जु वैरषं विराजही। वसंत पुष्प लाजही ॥ छं० ॥ ४१ ॥
ढुरंत चैार सीसयं। गिरं कि गंग दीसयं ॥
दुती उपंम लग्गयं। कि बद्दलं कि बग्गयं ॥ छं० ॥ ४२ ॥
जु घूघरं घमक्कयं। कि दादुर सु भद्दयं ॥
दुती उपंम मेलयं। सुहाग वाम केलयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥

३२ पाठान्तर—दाय। पृथीराजनें। सुभाय ॥

३३ पाठान्तर—छंद लघुनाराज़ वा नराजा। हयगयं। निसांन। दुभरं। बजई ॥ ३५ ॥ रचई। सजई। बजई। नफेरि। श्रवन ॥ ३६ ॥ नारद नरद रिझयं। चोसट्ठ। * यह दूसरा पाद सं १६४७ की पुस्तक में नहीं है। चलयं। मनों। जलद। हलयं ॥ ३७ ॥ तरपि। तांमसी। मनों। वांमसी। झलकि। मनों। बगयंतयं ॥ ३८ ॥ * ये दोनों पाद सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं। ससोभ। जगयं। भांन। उगियं ॥ ३९ ॥ दानयं। जानयं। दुतीयं बिलावे। पुत्तियं ॥ ४० ॥ उपंम। कजलं। ह ॥ ४१ ॥ चोर ॥ ४२ ॥ घुघरं। घमघमं। ददुरं। भदयं। उपम ॥ ४३ ॥

सुघंट घोर सोरयं। सुनंत श्रोन फोरयं॥
तिलक्कं चंद साजही। मनौं गनेस राजही॥ * छं० ॥ ४४ ॥
दुती उपंम जग्गयं। दवंकि लग्गि पब्बयं॥
गरुव गर्ज सद्दयं। मनौं कि मास भद्दयं॥ छं० ॥ ४५ ॥
सु पीलवांन चंदयं। अरापती कि इंदयं॥
सुअस्सवार राजही। कि जंम जोर साजही॥ छं० ॥ ४६ ॥
मिलंत मुंछ नैनयं। तिलग्गि सीस गैनयं॥
ते रूप भूप मारसे। कि अस्वनी कुमार से॥ छं० ॥ ४७ ॥
चिगुंन तेज तंतनं। तिनंक कंक मंमनं॥
सनाह रूप अंगमं। मनौं कि जोग जंगमं॥ छं० ॥ ४८ ॥
सनाह जोति दिष्षयं। मरीच भान भिष्षयं॥
सुभद्द छंद बद्दयं। कि बीर वान सद्दयं॥ छं० ॥ ४९ ॥
आगंम विप्र बोलयं। हुलास रुचि चोलयं॥
सु पाइ कंषनं घनं। वुलंत ते झनं झनं॥ छं० ॥ ५० ॥
जुरंत जाम मझयं। प्रभा प्रसाद वुझयं॥
तिमध्य राज दिष्षयं। सु अंग गंग तिष्षयं॥ छं० ॥ ५१ ॥
सामंत मध्य सोभयं। कि इंद्र देव लोभयं॥
कि पथ्थ पंडवं दलं। धनुक्क वान सब्बलं॥ छं० ॥ ५२ ॥
चढंत राज प्रातयं। ते दूत देषि जातयं॥
कहंत अब्ब घटायं। भई समुद्र पाटयं॥ छं० ॥ ५३ ॥
उषाह मध्य ते चलं। सगुन्न बंदि जे भलं॥
*ससूर सूरयं कलं। दिनं सु अष्टमी चलं॥ छं० ॥ ५४ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

सुघट। सिलक। मनों। गनेस। * यह चौथा पाद सं० १६४० की पुस्तक में नहीं है॥ ४४॥ गरुव। मनों॥ ४५॥ पीलवांन। येरावती। जु दासवार॥ ४६॥ मुछ। नेंनयं। गेंनयं॥ ४७॥ त्रिगुन। तिनंन। मनो॥ ४८॥ दिषयं। मरीचि। भांन। भिषयं। बद्दयं। बांन॥ ४९॥ पाय। झननं झनं॥ ५०॥ दिषयं। तिषयं॥ ५१॥ पथ बांन संबलं॥ ५२॥ अब। भयो॥ ५३॥ उपाह। मधि। सगुन। जे। * अंत के ये दोनों पाद सं० १६४० की पुस्तक में नहीं हैं॥ ५४॥

पिता की आज्ञा लेकर अष्टमी को पृथ्वीराज का लड़ाई के लिये यात्रा करना ॥

कवित्त ॥ दिन अष्टमि रवि वार । राज सुभ मँडि प्रस्थानं ॥
अष्ट दिसा जोगनी । भई साहाय सुध्यानं ॥
अष्ट च्यारि भय भान । राजदै अर्घ वधाइय ॥
इन में भौम अनिष्ट । चंद चौथे ग्रह आइय ॥
चले नरिंद धायि दूत तब । मन आनंद सु चंद हुअ ॥
प्रथिराज तात आग्या सगुन । चरन बंदि चलि बज्र भुअ ॥
छं० ॥ ५५ ॥ रू० ॥ ३४ ॥

चौपाई ॥ *तात मात आग्या प्रमानहि । ता समान नह धंम प्रमानहि ॥
गुरु द्रोही पति द्रोही जानं । सो निहचै नर नरकहि थानं ॥
छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

नाहर राय के दूतों का पृथ्वीराज की चढ़ाई और सेना बल का समाचार नाहर राय को देना ॥

छंद पद्धरी ॥ नाहर नरिंदं जे दूत आइ । सभाचार सबै कहि ते सुनाइ ॥
दिषि जीत सत्त चहुवान सूर । लषियै चरित्र मन मझ्झ कहूर ॥ छं० ॥ ५५ ॥
इक सहस स्वान सँग नाम धार । देसान देस बल पग अपार ॥
तिन मझ्झ पंच सै पवन पात । पित मात असल लाहौर जात ॥ छं० ॥ ५६ ॥
पांभरी अंग जिन पसम होत । दिषि दीप जोति तिन नैंन होत ॥
रातब्ब मंस घृत दुग्ध पान । आजानबाह दिषियै बखान ॥ छं० ॥ ५७ ॥
रेसमी डोरि पट्टी नरंम । रहै सीत कांह दुष्षित गरंम ॥
तिन सथ्य पंच सै और डोरि । ते रष्षिक विन को सकै छोरि ॥ छं० ॥ ५८ ॥

---

३४ पाठान्तर—शुभ । मंडि । भान । मै । भोम । अरिष्ट । चैाथैं । ग्रह । नरिंद । धसि । प्रथीराज । आग्या ॥

३५ पाठान्तर—आग्या । परमानीय । परमांनहि । समांन । ध्रम्म । प्रमानाय । जानं । निश्चै । नरकन । थानं ॥ * सं० १६४७ की पुस्तक में इसे अरिल्ल करके लिखा है ॥

३६ पाठान्तर—समाचार । सब । जित्त । सत । चहुआंन । मनमैं । स्वान ॥ ५५ ॥ संग । नांमधार । देसान । मझ्झ । से । असिल ॥ ५६ ॥ नयन । रातब । पांन । आजानबाह । बखान ॥ ५७ ॥ नरंमं । शीत । दुषित । सथ । डोर । सि । रषिक । बिना ॥ ५८ ॥

दूक आइ पेस दूक अस्व मोल । बलवांन अंग चष रत्त षोल ॥
सिक्कार नाम जह्तह तिकान । आरंभ जुद्ध सब लषि विनान ॥ छं० ॥ ५९
दूक सत्त ऊंट भरी जीन साल । तिन धरै अंग छिप्पै न काल ॥
भेदैन वज्र वर नीर धार । तिन धरैं अंग जे दल पगार ॥ छं० ॥ ६०
सन्नाह महिम वरनी न जाइ । जिप्पनि कि देव दनुजनि उपाइ ।
जनु ब्रह्म होम कढि मंच जोर । कै इंद्र अग्गि अप्पे अकोर ॥ छं० ॥ ६१
कै बरुन अप्पि पाताल ईस । कै पवन प्रसन परसाद दीस ॥
वाचिष्ट कढ्ढि कै कुंड होम । दीनी कि प्रसन ह्वै मात भैाम ॥ छं० ॥ ६२
असि सिलह सथ्थ लीनी नरेस । जितनह समर सज सत्रुदेस ॥
छं० ॥ ६३ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

पृथ्वीराज का प्रताप सुनकार नाहरराय का चैाकन्ना होना ।

दूहा ॥ सुनी षवर जव दूत मुष । चमक्यौ नाहरराव ॥
ए अप्पन गनियै नहीं । वैरी विस हर घाव ॥
छं० ॥ ६४ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

अपने सरदारों से नाहर राय का कहना कि अब क्या करना चाहिए पहिले चैाहानों से हम से और बात थी पर अब तो विगड़ गई ॥

कवित्त ॥ सुभ्भित सकल लिय बोलि । पुच्छि परिहार निनहि मत ॥
चाहुआन पायान । कहत आषेट जुद्ध वत ॥
ननक भनक सी कान । दूत इत्तह सुनि आए ॥
अप्प अचेतन रहैा । धरौ धर भूमि सदाए ॥

पाठान्तर—पेषि । बलवान । सिक्कार । नाम । जहां । कान । बिनांन ॥ ५९ ॥ सत ऊंट । धरैं । छिपै । भैदैन । धरे ॥ ६० ॥ सनाह । महम । जिपन । उपाय । ब्रह्म । इन्द्र । अपे ६१ ॥ कैं । पाताल । कढि । प्रसंन । भैाम । भोंम ॥ ६२ ॥ सथ । जितनह । सत्रु ॥ ६३ ॥

६० पाठान्तर—षबरि । चमक्यो । अप्पने । गिनियै । नही ॥

सोमेस हमह कछु है नहीं। तिन सुहित्त माला लई ॥
तब तौ सनेह कछु और हौ। अब तौ कछु औरै भई ॥
छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

सरदारों का कहना कि लड़ना चाहिए ॥

दूहा ॥ कहत सुभट परिहार के हथ्थ चढी क्यों देहु ॥
सस्त्र मारि दल भंजि कैं। षग्ग धार धर लेहु ॥
छं० ॥ ६६ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

नाहर राय का कहना कि आगे से बढ़कर एक बारगी उन पर चढ़ाई करना चाहिए नहीं तो जीत न होगी ॥

कवित्त ॥ सुनि मंडोवर राइ। कहन बलवंत सुभट सह ॥
द्रव्य उनह कर चढ्यौ। कहहि सुतौ * सति वत यह ॥
जाइ अचानक परौ। बहुरि क्षेह्यौ नहिं जैहै।
प्रथीराज उस सबल। मारि धरती सब लैहै ॥
इक सुनत सबन बैठी सुमन। सजन सेन बेगो कह्यौ ॥
पर चरन चरचि कैं बत्त इह। सो झत्ती मारग गह्यौ ॥
छं० ॥ ६७ ॥ रू० ॥ ४० ॥

नाहर राय का सेना सजना ॥

दूहा ॥ सजी सेन मंडोवरह। नाहरराइ नरिंद ॥
संभरि संभरि राव न्टप। उर उदोत आनंद ॥
छं० ॥ ६८ ॥ रू० ॥ ४१ ॥

---

३८ पाठान्तर-पुछि। चाहुआंन। पायांन। क्षांन। रतह। अचेतनह। सुदाए। हमह कम। नही। सुहित ॥

३९ पाठान्तर-हथ। के ॥

४० पाठान्तर-मंडोवरराई। मडोवरराय। सुनह। कह हि सुतो सति वत्त इह। * अधिक पाठ है। परों। नहिं। जैहैं। इंस। धरत्ती लेहैं। सबल। बेगो। वत। झतो ॥

४१ पाठान्तर-नाहरराय। संभरि वार। उद्योत। अनंद ॥

पृथ्वीराज की सेना की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ सहस सेन संभारी । नरेस* मध्य मन टारि पंच भ्रम ॥
बीर सिँगार सुभंत । कंत जनु रत्त बाम सम ॥
सत्तउभय नंचास । सिलह सज्जो चहुआनं ॥
चंद देषि मन मगन । कविन तिन करै बषानं ॥
पंचमी सोम रितु राज गत । सूर तेज जाजुलित हुअ ॥
करतार हथ्थ कित्ती कही । बजि निसान चहुआन धुअ ॥
छं० ॥ ६९ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

पृथ्वीराज का आगे से बढ़कर लड़ने के लिये जोबनराय को आज्ञा देना ॥

तवैं सुजोवन राइ । सूर साह्यौ चहुवानं ॥
तुम गुज्जर वैषंड । गाम मुरधर अगिवानं ॥
पंथ पंथ परवान । धाइ अगिवानी किज्जै ॥
सगा सपन जंपियै । हमनि आगेहि सुनिज्जै ॥
वामान पंथ अंधी प्रकृति । विन दिट्ठैं दिट्ठैं न कछु ॥
बन पंन अडु परव्रत रहै । भेद विना जानहि न कछु ॥
छं० ॥ ७० ॥ रू० ॥ ४३ ॥

जोबनराय का उत्तर दे कहना कि नाहरराय का पथ बांधा सो वह रणभूमि को तिरछी छोड़ कहीं चला गया ॥

तव्व सुजोवन राइ । वत्त जंपै चहुवानं ॥
अड्डु पंन परवत्त । मत्त गुज्जर घर मानं ॥
तोषानो आजान । पंथ रुध्यौ पानुक्की ॥
नाहर राइ नरिंद । गयो तिरछी भुम्म मुक्की ॥

---

४२ पाठान्तर-समारि । * अधिक पाठ है । मधि । सिगार । सत्तो । चहुआन । पेषि । बषान । रिति । हुअ । किती । निसान । वहुवान ॥

४३ पाठान्तर-तवै । राय राव । चहुवान । चहुआनं । गुजर । गांम । मुरधुर । अगिवान । पर वान । अगिवानी । जंपे । लिजे । वामान । दिट्टे । दिट्टे । कछु । कट्ठु । परवत । जानै ।

करिवर अनेक केंवर ग्रहिय। ए अग्गैं कौ धाइया ॥
तिह ठाम चुक चिंत्यौ हुतौ। पैं नाहर राइ न पाइया ॥
छं० ॥ ७१ ॥ रू० ॥ ४४ ॥

सबेरे नाहरराय के भग जाने पर सांझ को पृथ्वीराज का पहुँचाना और उसकी खोज करना ॥

गयौ प्रात परिहार। संझ चहुआन सपन्नौ ॥
बरज्यौ जीवन राइ। षोज क्रम क्रम करिलिन्नौ ॥
पंथवान पुच्छयौ। नदी उत्तरि तिन अप्पिय ॥
तातें पूर नरिंद। बाज तत्तौ करि नष्षिय ॥
आनंद सिलह सज्जिय न्रपति। पंषी पारिव मोह जिम ॥
ज्यौं गिद्द मंस पच्छौ करै। चित्त दिगंबर कियौ तिम ॥
छं० ॥ ७२ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

चालुक के प्रधान (दीवान) के घर नाहरराय का पता मिलना और सामन्त सहित पृथ्वीराज का नदी उतरना ॥

कुंडलिया ॥ नदी उतरि सामंत सह। डीस संपते जाई ॥
चालुक्कां परधान ग्रह। पट्टन नाहर राई ॥
पट्टन नाहर राइ। सेन सज्जे सथ पंच्यौ ॥
चय हजार असवार। वीर संधान जुसंच्यौ ॥
प्रात कूच उप्परै। आज मुकांम जुदुस्तर ॥
झुकि प्रथिराज नरिंद। सिलह सज्जी नदि उत्तरि ॥
छं० ॥ ७३ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

---

४४ पाठान्तर-तवैं। तवें। यौवनराय। चहुआन। चहुवान। अट्ठ। अड्डु। परवत। गुजर। मांनं। लोहानौ। अजांन। पालुकी। नाहरराय। भुइ। ग्रहिय। के अग्गें उधाइया। तिहि। ठांम। यें। नाहरराव ॥

४५ पाठान्तर-चहुआंन। संपनौ। यौवनराव। लीनौ। पंथवांल। पुछयौ। नदि। उतरि। अपीय। अप्पीय। नषिय। सजिय। पारेव। परेव। ज्यो। गट्ठ। गंद। पछौ। चित। डिगंबर। कीयौ ॥

४६ पाठान्तर-नदि। उतरी। उत्तरि। साम्रंत सव। संपत्ते। जाय। चालुकां। परधांन। राय। सेन जेन। सजे ऊपरें। मुकांम। सुदुस्तर। प्रथीराज। सजी। उतरि ॥

सुभट सहित सेना में पृथ्वीराज कैसा शोभता है ॥

कवित्त ॥ सुभट सिलह घट जोति । भयौ घट सिलह सुभट्टन ॥
के * दीप मध्य भूडोल । कै * भान बद्दलो सुभट्टन ॥
कै * मुकुर मध्य प्रतिबिंब । कै * संभु बिभ्भूत अधारै ॥
कै आरसि में सार । हथ्थ करतार सुधारै ॥
पाहार भार ठिल्ले क्रमनि । कै * उदधि मद्धि लंका दहै ॥
चिय बसिन द्रव्य अरु मोह बसि । तजि जुगिंद बाने यहै ॥
छं० ॥ ७४ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज के ग्राम पहुंचने का समाचार नाहरराय का सुनना और सेना इकट्ठी करना ॥

दूहा ॥ भई षबरि परिहार कौं, चढि आयौ प्रथिराज ॥
लग्यौ सेन एकत करन, दंद बजाने बाज ॥ छं० ॥ ७५ ॥ रू० ॥ ४८ ॥

घाटी पर पर्वतराय को रास्ता रोकने के लिये भेजना ॥

दूहा ॥ जहँ पब्बय घाटी हुतौ, मीना मेर मवास ।
प्रब्बत सौं प्रब्बत मँड्यौ, अनमीजौ धन चास ॥ छं० ॥ ७६ ॥ रू० ॥ ४९ ॥

दूहा ॥ हुकुम कीन परिहार तिन, प्रब्बत मीना मेर ।
दूतनें तू हकि एक टक, जितनें आवत बेर ॥ छं० ॥ ७७ ॥ रू० ॥ ५० ॥

पर्वतराय का घाटी रोकना ॥

दूहा ॥ सुनि प्रब्बत धायौ तुरत, घाटौ रोक्यौ जाइ ।
च्यारि सहस मीना प्रबल, बैठे आइ बनाइ ॥ छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ५१ ॥

---

४७ पाठान्तर–ज्योति । * अधिक पाठ है । मधि । भान । बदली । सुभटन । मुकर । बिभु । बिभूत । आरसि सार में । हथ । सुधारि । मधि । दहे । बसि । बाने ॥

४८ पाठान्तर–भई । कौ । प्रथीराज ॥

४९ पाठान्तर–जहा । जह । घांटी । हुतो । तहा मीनां । मीनां । परबत । सों परबत । मड्यो । अडे । प्रबत । मड्यौ । सो ॥

५० पाठान्तर–परबत । दतने । दतनें । तु । जितने ॥

५१ पाठान्तर–पर्बत । घाटो । रोक्यि । बैठे । बांनि ॥

दूहा ॥ तीन पनच धुनहीं करन, वडे कटन तंडीर ॥
सगुन बिना पग ना धरै, बिकट वंन हंडीर ॥ छं० ॥ ७९ ॥ रू० ॥ ५२ ॥

पर्वतराय कैसे घाटी रोक कर बैठा है ॥

कवित्त ॥ मंडोवर धर लाज। राज रष्षन परिहारन ॥
स्वामित सक बज्जंग। जंग जिन अंग न हारन ॥
देत मेवासनि भेलि। मारि धर पर पसु लावै ॥
देषत कै राजान। बिरद्वा नैन चलावै ॥
बैठे सु ओट रूंषन उपल। करि तरकस डंधे धरनि ॥
देषंत वद्द चहुवान की। भरै जानि विसहर वरनि ॥
छं० ॥ ८० ॥ रू० ॥ ५३ ॥

घाटी रुकने का समाचार पृथ्वीराज को मिलना ॥

दूहा ॥ लही षबर प्रथिराज तिन। मीनां मरद अमान ॥
पकरि लोह पब्बय गह्यौ। लहै को अग्गौ जान ॥
छं० ॥ ८१ ॥ रू० ॥ ५४ ॥

क्रोध करके पृथ्वीराज का पर्वतराय से लड़ने को कन्ह चौहान को भेजना ॥

कवित्त ॥ सुनि कुप्पिय प्रथिराज। जानि पुच्छिय सुअप्प मलि ॥
मनु मृगराज मृगीन। जोर क्रुद्धिय दिष्षिय बलि ॥
ग्राह ग्रहन जनु जीव। देषि तुट्टिय सुमीन कह ॥
समर समुद जल पियन। जांनि घट जन्म क्रोध मह ॥
षिजि कही कन्ह चहुआंन सुं। रंक आइ अड्डे फिरे ॥
सिर नाइ धाइ नरनाह तब। प्रब्बत सम प्रब्बत भिरे ॥
छं० ॥ ८२ ॥ रू० ॥ ५५ ॥

---

५२ पाठान्तर-धुनहीं। वड्ढु। कढन ॥

५३ पाठान्तर-वजरंग। जंग किन अगन हारन। दैत। मैवासन। मेवासन। के। राजांन। विरदवां नेन। रूंष ऊटन। औधे। चहुवांन। भरे। जांनि ॥

५४ पाठान्तर-पवरि। प्रथीराज। मोनां। अमान। गृह्यौ। आगैं। आगै। जांन ॥

५५ पाठान्तर-प्रथीराज। जानि। पुंछिय। मनो। क्रुधिय कि दिपि बल। जांनि। चहुआंन। आनि। परबत। भिरै ॥

कन्ह का पर्वत से युद्ध और उसमें पर्वतराय का मारा जाना॥

छंद भुजंगी॥ मँडे मेर मीना ग्रह्यौ घेरि घाटौ। मिले आइ कन्हं मनौं लौन आटौ॥
मँडे मूल रुष्पं कहूं दंत ओटं। ठिले ना सुमेरं मँडे जानि कोटं॥
छं०॥ ८३॥

भई तीर मारं सरोसं सवेगं। तकै ताहि पारै सविद्धं अछेगं॥
महावज्रघातं उतप्पात मंड्यौ। करे हूल हाकं बरं वेग हंड्यौ॥ छं०॥ ८४॥
जुटे जुद्ध अनवद्ध करिक्रुद्ध ठाढे। करैं हथ्थ वाहं पयं मंडि गाढे॥
गिरै वान लग्गै बियं इत्त उत्तं। महाजंच विद्या गुरु द्रोन चित्तं॥ छं०॥ ८५॥
भई वान छाया न सूझै मरीचं। मिले लोह लक्काह तत्ते नरीचं॥
गिरै अश्व असवार लोहं जहीरं। परै जानि डंडूर रुष्पं गहीरं॥छं०॥८६॥
हयं छंडि नर्नाह हूए उतारै। हहंकार वज्जै सहोमं पुतारै॥
परै अश्व घातं सरोसं सरीरं। वकैं केय वक्कं करैं के अरीरं॥छं०॥८७॥
सरं जाल भालं उडे लोह अग्गी। जरैं पंप पंषी गिरैं स्वर्ग मग्गी॥
भरैं मुट्ठि कन्हं सरं मार वग्गं। निकस्सैं सुविद्धे हुऐं पग्ग उग्गं॥छं०॥८८॥
लगैं गुज्ज सीसं कहैं उक्ति कोगी। पहारंत तूंवा मनौं पीजि जोगी॥
वहैं असि व्रिध्घात रोसं प्रहारं। मनौं निक्कसै सव्वनं तंततारं॥छं०॥८९॥
लगैं संग छत्ती फुटैं पुट्ठि पच्छी। किकंधं कहारं कटैं जार मच्छी॥
जितं तित्त जटंत छिंछै रकत्तं। फिरैं भट्ट भीते भयानं वकत्तं॥छं०॥९०॥
नचैं भूत वेताल षेतं भयानं। रसं वीर रस्से हसे निर्दयानं॥
भिल्यौ भुप्प कन्हं परब्बत वीरं। हन्यौ असि घातं धुक्यौ ता सरीरं॥९१॥
जग्यौ बंध कन्हं असीघात धीरं। करी कट्टि सेना परी चग्ग हीरं॥
पर्यौ भुम्मि मब्बत्त रावत्त मेरं। गज्यौ नाहरं गाज नाहर्लेरं॥
छं०॥ ९२॥ रू०॥ ५६॥

५६ पाठान्तर–मडे। मीना। घाटो। मिलें। कन्ह। मनों। लोन। नोन। मड्डे। वर्ष्यं। दंटे। ठिले। ना। मड्डे॥ ८३॥ सवेगं। हूक हाक॥ ८४॥ करे। हय। गिरे। वान। लगे। बीयं। इत। उत। चित्त॥ ८५॥ वान। लक्काह। गिरे। परे। जानि। रुष॥ ८६॥ नरनाह। हहकार। मडे। मद मे। परे। सरोस। वके। केके। वक। करे॥ ८७॥ जरे। गिरे। भरे।

पर्वत के मारे जाने पर नाहरराय का स्वयं टूट पड़ना ॥

कवित्त ॥ परत धरनि परवत्त। आइ हुक्किय नाहर रन ॥
बलबद्धे सह मेर। जानि हनुमान लंक बन ॥
इक्क गिरत घन थाप। इक्क बथ्थनि पक्कारिय ॥
बहर रूप सम भूप। रूप अनभूत सँचारिय ॥
मानिक्क बंस आयौ उतह। इत नाहर गल गज्जयौ ॥
परबत्त पर्यौ पहु पिष्षिकैं। सिंधू वज्जनं वज्जयौ ॥
छं० ॥ ९३ ॥ रू० ॥ ५७ ॥

पृथ्वीराज का भी चढ़ चलना ॥

छंद पद्धरी ॥ चढ चल्यौ राज प्रथिराज ताम। साधन सुसेन वर वरन वाम ॥
दुसहै भयो सोमेस पुत्त। वनिता विवाह मन कंक कुत्त ॥ ९४ ॥
बज्जहि निसान दस दिस गुरान। आषाढ अग्ग ज्यों मेघ थान ॥
रथ वाजि करी पयदल पुलेन। सज्यौ नरिंद चतुरंग सेन ॥ ९५ ॥
मुक्की सुभुम्मि अजमेर राज। यंत्तौ सुजाइ पट्टन समाज ॥
बज्जी सुलागि सिंधू निसान। भयभीत भेष भय दस दिसान ॥ ९६ ॥
बज्जिय सुभेरि भय भंकरीस। गज गजे गाह हय हठ्ठ हींस ॥
गिरनार देस अरु सिंधु वट्ट। गज्जे सुगाज सजि थट्ट थट्ट ॥ ९७ ॥
ढलकंत ढाल वैरष्ष रंग। सोभंत विपन रिति राज संग ॥
मिलि आय पंथ नाहर नरिंद। वीराधि वीर बद्धे सुदंद ॥ ९८ ॥
हक्कारि भट्ट सेना सवान। सासंत सूर करि लोह पांन ॥
कन्हा नरिंद आजांन बाह। लंगरी राव स्वामित्त राह ॥ छं० ॥ ९९ ॥

भूठि। निकसैं। वुट्टी। हुअै। उगं। डंग ॥ ८८ ॥ लगें। गुर्ज। गुरज। शीस। कहे। पक्कारत। तुंबां। मनों। वहैं अश्व निर्घात। वहे। विघात। मनों। निकसें। निकसै। सर्वेन ॥ ८९ ॥ लगें। संगि। छती। फुट्टें। पुठि। मछो। कहारं। कठैं। मृछो। तित। उठंत। छिछं। रकत। फिरें। फिरै। भट। वकतं ॥ ९० ॥ नचै। रसें। मुष। सुपरवत। असि ॥ ९१ ॥ कन्ह। असि। कटि। संनाह। परि। चप। झुक्ति। परवत्त। रावत्त। नाहर। सवेरं ॥ ९२ ॥

५७ पाठान्तर—परबत। आय। हक्किय। वट्टे। बढे। जानि। हनुमांन। रक। घन घाय। रक। बथन। पक्कारीय। पक्कारिय। सम रूप। संचारिय। संचारीय। मानिकं। मानिक्क। गजयौ। परबत्त। पिपि। कै। सिधू। बजन। बजयो ॥

संभारि वीर चालुक्क भूप । उपज्यौ ब्रह्म कुंडह अनूप ॥
अततार तुरग तेरह सुषंड । षिजि रह्यौ रोपि रन रोहि झुंड ॥
॥ छं० ॥ १०० ॥

तिन ठाम आइ नाहर सुघेरि । वाहंत हथ्थ जनु करिय केरि ॥
॥ छं० ॥ १०१ ॥ रू० ॥ ५८ ॥

इधर पृथ्वीराज इधर नाहरराय का सन्मुख युद्ध ॥

कवित्त ॥ उत प्रथिराज नरिंद । इत सुपरिहार प्रबल रन ॥
दुअन सेन असि कढ्ढि । करन कलपंत समय जनु ॥
दुअन अङ्ग संनाह । दुअन नष चष्ष उघारें ॥
दुअन दुष्ट आरंभ । दुअनि दुअ हथ्थ दुधारें ॥
दुअ सुम्भि अङ्ग दुअ देव जनु* । दुअन धार दुअ तुक्क वहिय ॥
संनाह कढ्ढि कढ्ढी सुतुक्क । नस उप्पम चन्दह कहिय ॥
छं० ॥ १०२ ॥ रू० ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥ दुअन हथ्थ दुअ भूप । रूप अदभूत रेष वहि ॥
इन्द्र सिलह प्रथिराज । चंद्र परिहार तेज गहि ॥
दुअ अभंग संनाह । दुअन देवन आधारन ॥
दुअन तेज तन अंस । हंस दुअ हंस समाधन ॥
अवतार भूत दुष्ष देव सम । दुअन चिन्ह उत्तम करिय ॥
परभास षेत परब्रह्म दुति† । भ्रगु लंछन जनु धरि हरिय ॥
छं० ॥ १०३ ॥ रू० ॥ ६० ॥

---

५८ पाठान्तर—* ये ९४ । ९५ और आधा ९६ छन्द सं० १६४० की पुस्तक में नहीं हैं ॥ प्रथीराज । ताम । ठांम । दुल्लह । पुत ॥ ९४ ॥ ज्यों । थान । पुजेन । मज्यों ॥ ९५ ॥ मतो । वंशो । लाग । निसान । दिमान ॥ ९६ ॥ वजिग । गजै सुराज हय हट्ट हीन । गिरनारि । वट । गजे । घट घट ॥ ९७ ॥ वेरष । ढके ॥ ९८ ॥ हहकार । भट । सवान । आजानवाहु । स्वामित ॥ ९९ ॥ चालुक । ऊपज्यौ । तुरग । रोहि ॥ रिन रोपि ॥ १०० ॥ ठाम । हथ्य ॥ १०१ ॥

५९ पाठान्तर—प्रथीराज । कढ़ी । सनाह । चष । हथ । दुधार । सुनि । काढि । कढ़ी । "उपम ॥

६० पाठान्तर—हथ । प्रथीराज । रहि । उत्तिम । द्युति । भृगु । लछिन ।

* रायल एशियाटिक सोसाइटी की पुस्तक में 'दुअन दुष्ट आरंभ' से 'दुअ देव जनु' तक नहीं है । परन्तु सं० १६४० की में है ॥

† रायल एशियाटिक सोसाइटी की पुस्तक में 'दुअ देव सम' से 'ब्रह्म दुति' तक नहीं है । परन्तु सं० १६४० की में है ।

उसमें पृथ्वीराज का नाहरराय के घोड़े को मार डालना॥

दूहा॥ फुनि प्रथिराज कुमार नें, हय हन्यौ परिहार॥
कंध दुअं कटि वग सहित, धुक्यौ धरनि असिधार॥
॥ छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

दूहा॥ धुकत धरनि नाहर तुरिय, झपट्यौ बंध कनंक॥
तेक तोकि तक्यौ तुरी, बहि असि कंध कनंक॥
छं० ॥ १०५ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

दूहा॥ दुअ कोटन दुअ न्रपति के, किन्नें हाजुर आनि॥
दुअन वीच दुअ सुभट थट, अठ्ठ भऐ चहुआनि॥
छं ॥ १०६ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

रनबीर का सन्मुख हो पृथ्वीराज से जुद्ध करना॥

कवित्त॥ बर पावस रनबीर। दुतिय पावस सम सज्यौ॥
धूम जोति अरु सलिलं। मरुत प्राकारन वज्यौ॥
सज्जि सेन अतुरंग। बरन बद्दल रंग धारिय॥
स्याम सेत अरु पीत। रत्त धज मत्त बिचारिय॥
उन्नयै धार धारहधनी। लरन तिरच्छौ बुठ्ठिबर॥
विज्जुलि झमंकि षग पंतिकर। षिवी सेन अरिजुथ्य पर॥
छं० ॥ १०७ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

मोहन परिहार और पवार का सन्मुख हो लड़ना॥

दूहा॥ उत मोहन परिहार रन। मेर समान अमान॥
द्वै द्वै असि कटि विकट बनि। द्वै धनु द्वै द्वै बान॥
छं० ॥ १०८ ॥ रू० ॥ ६५ ॥

---

६१ पाठान्तर-प्रथीराज। कुआरनैं। है। हन्यो। कन्ह कट्टि हुअ॥

६२ पाठान्तर-तुरी। तोकि॥

६३ पाठान्तर-दुतीय। सज्यौ। मुरत। प्रक्कारन। सजि। बद्दर। धारीय। स्याम। रत विचारीय। उनयै। तिरछौ। छुटि पर। बुट्ठि। विजुलि। झमंक जुथ॥

६५ पाठान्तर-दोहरा। समांन अमांन। द्वै द्वै धनु द्वैवांन॥

कवित्त ॥ उत मोहन परिहार । इत सुपावस पंवार बर ॥
दिष्ट दिष्ट अंकुरिय । संक्र जुग सौत दिष्ट धर ॥
मोहन कोपि करार । सीस पांवार सुझारिय ॥
टोप कढ्ढि फटि मुंड । झपटि पांवार निझारिय ॥
फटि मुंड तुंड धर कढ्ढि झटि । लह विफार अफार झट ॥ *
कर वत्त तत्त विहार कि तुरत । जनुकि कवारिय पटुपट ॥
छं० ॥ १०९ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

चामंड का युद्ध ।

कवित्त ॥ चंड रूप चामंड । बलत बलवन्त प्रतापन ॥
हन्यौ संग दुअ अंग । निकसि दुअ अंगुल सापन ॥
उभै संग चलि आइ । मध्य गहि हथ्थ दु हथ्थन ॥
उडि भेजी सुअकास । कुहि पिचकार दद्धिकन ॥
परताप भगि परि प्रथ्थि पर । लोक तीन कीरति कहिय ॥
द्रव्यान पान निकसी सुरवि । जोति जाइ जोतिन मिलिय ॥
छं० ॥ ११० ॥ रू० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ मिले पौंन सौं पौंन । मिले पानी सौं पानी ॥
मिले तेज सौं तेज । मिले सूने सूंनानी ॥
मिलै प्रथी सौं प्रथी । मिले हरि सौं हरि ब्रेता ॥
मिले हुतासन होत । होम होमै जो होता ॥
जल होत जोत जल मिरन हरि । पय सैं जिम पय मिल्लि सुपय ॥
तिमि भरत दुरत जेहू भरत रनि । सुमिल्लिय प्रताप सु आप स्वय ॥
छं० ॥ १११ ॥ रू० ॥ ६८ ॥

---

६६ पाठान्तर—पावार । झारोय । फटि । निझारोय । "* फटि मुंड तुंड हुय धड हुय । अपार फ हुय अर फग झट।" सं० १६४० की में यह पाठ है। वत्त । तत्त । विहार कि । कवा-रोय । पटु ॥

६७ पाठान्तर—चाव । मथ । हथ । दुहथन । दधि । प्रताप । पर । कीर्ता । लोक तन । द्रुम्यान । पान । जाय ॥

६८ पाठान्तर—पौन । सों । पौन । पानौं । सों । पानी । सुने । सुनानी । प्रथी । सो । प्रथी । ब्रता । हाते । मिलत हर । दुरत । जेहि । रति ॥

कवित्त ॥ मंस चक्षु रद गूद । अंत वर बाज गज्ज नर ॥
अंय भूषत्त असत्त । चढिय जुग्गिन तिन उप्पर ॥
दुक्क दंत गज गिद्धि । उतरि लै अंत अलुभ्भिझय ॥
दुक्क कोद जुगिनीय । करन ऐंचत सैां झुक्किय ॥
तिहि दिष्य चंद कविराज तत । अति उल्हास ओपंम वढि ॥
उडवत्त चंग सुचंग अंग । राज कुमारि अट्टानि चढि ॥

छं० ॥ ११२ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ धवलंगो धवली दिसा । धवल त्तन चहुवान ॥
धवल दीह संमुह लस्यौ । जस धवलौ तन आनि ॥

छं० ॥ ११३ ॥ रू० ॥ ७० ॥

स्वामि रत्त रत्ते समुह । रत्ते नैंन करूर ॥
रन रत्ते दव दाह सम । गुंजत गल्ह गरूर ॥

छं० ॥ ११४ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

नाहर ? से नाहरराय का लड़ना ॥

कुंडलिया ॥ नाहर सैां संमुह लस्यौ । नाहर राइ नरिंद ॥
मंडोवर मारू बली । धनुवर भूपति दंद ॥
धनुवर भूपति दंद । सेन चहुआन ढँढोरी ॥
सुर असुरन करि मेर । मथत दरिया छिल्लोरी ॥
हय हथ्थिन घन हंकि । वीर कुथ्यौ कंकि छाहर ॥
मरदन सैां मिलि मरद । मरद बुल्यौ मुष नाहर ॥

छं० ॥ ११५ ॥ रू० ॥ ७२ ॥

६९ पाठान्तर—बाजि । गज । भूत । असत । जुगिना । उपर । दुक । उतर । अलुझिय । दुक । जोगिनीय । ऐंचत । सो । झुकिय । तिहिं । दिषि । तित । उपंम । उडवत । अग । कुंमारि । अट्टानि ॥

७० पाठान्तर—तन । तंन । चहुवान । आनि ॥

७१ पाठान्तर—स्वामिरत । रते । रत्ते । नेंन । दते ॥

७२ पाठान्तर—सो । नाहरराय । धनिवर । चहुआंन । ढंढोरी । ढठोरी । टंटोरी । असुरनु । दरीया । छिलोरी । हथिन । सों ॥

बलराय का खेत में मँडना ॥

कवित्त ॥ हथ रष्यौ थिर सुथिर । षेत मंड्यौ बलरायं ॥
सार झार अप्पार । धार लग्गा धर चायं ॥
उडिय अग्ग षगधार । धपी द्रुगा धर लोइय ॥
धक्क हक्क उच्चार । सार अप्पं दल मोइय ॥
त्रिघघात घात झरक्कर करचि । नभ निसान तिन सद्द भरि ॥
सब सूर सुरंगीय कंक बल । सुभर कढ्ढि असि वर पसरि ॥
छं० ॥ ११६ ॥ रू० ॥ ७२ ॥

घोर युद्ध वर्णन ॥

छंद विराज ॥ कढी * तेग तत्तं । मनों मच्छ घत्तं ॥
लगे लोह लग्गं । षगं षग्ग वग्गं ॥ छं० ॥ ११७ ॥
दुअं वाह बाहं । गजैं गज्ज ढाहं ॥
जुटे दूत उत्तें । मनों मंत चित्तें ॥ छं० ॥ ११८ ॥
धुकैं धींग धक्कैं । उकैं सार झक्कैं ॥
गिरैं भूमि रुंडं । वकैं वैन मुंडं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
तुटैं तूट वाहैं । दलैं दंत साहैं ॥
इकं पाइ कूदैं । टिकैं तेक रुदैं ॥ छं० ॥ १२० ॥
चहै चाहुआनं । तडित्तं कमानं ॥
रस वीर रस्से । वहै लोह हस्से ॥ छं० ॥ १२१ ॥
गजैं गैन देवी । अभूतं सुएवी ॥
नचैं भूति भूमी । जगैं दैप झूमी ॥ छं० ॥ १२२ ॥
षिलै पेत पाल । विहंडं कपालं ॥
रचै रुंड मालं । स्रवै स्रोन लालं ॥ छं० ॥ १२३ ॥
सकूं रिझारै । किनीयं पिजारै ॥

८३ पाठान्तर–घट । कसार । लगा । दुगा । धक हक । उचार । अर्प । त्रिघात भट । निसान । शब्द । सुरंगिय । कढि ॥

गसं गिड्ड गट्ठें। पलं चूचि चट्ठें ॥ छं० ॥ १२४ ॥
भिरै भंति भारी। अभूतं सुरारी ॥ छं० ॥ १२५ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ परत खिरत तुट्टत सुकर। करत निवर्त्त सुहथ्थ।
अप्पानौ बल हथ्थनह। का मंगै बल तथ्थ ॥

छं० ॥ १२६ ॥ रू० ॥ ७५ ॥

नाहर कर नंन्हा सुपय। भय भारथ्थ उपाउ।
जासु जहां जो ऊबरै। तिहि बल रोह सदाउ ॥

छं० ॥ १२७ ॥ रू० ॥ ७६ ॥

गाथा ॥ कायर मुष्ष प्रमानं। बर कंमोदयं मोदयं मुष्षं।
स्रत सिल पच प्रमानं। उघारियं बीर हंदायं ॥

छं० ॥ १२८ ॥ रू० ॥ ७७ ॥

छंद त्रिभंगी॥ हंकारे सूरं, बज्जत तूरं, नच्चत हूरं, सुर सुरयं।
हय छंडिय राजं, तेजय पाजं, लरे सुसाजं, स्फुर स्फुरयं ॥
चलि चाल बंधी, तारा संधी, हँसै सुनंदी, दै तारी।
तुरसी रस मंजरि, नव नव पंजरि, तज घन पंजरि, बैमालं ॥१२९॥
घन केसर रंगं, अंबनि अंगं, नच्चत जंगं, अहि कालं।
जंपे हरि गंगं, गुन अनभंगं, चरमज अंगं, असि झारे ॥
दूनौ बबकारैं, दुज्जो न हारैं, छोह करारे, गुन भारे।
केसरि रँग रोरं, असिवर झोरं, भौ तन कोरं, घटि कालं ॥१३०॥
सिर तुट्टि प्रमानं उमया जानं, भूञ्ञ सजानं, मुर हालं ॥

७४ पाठान्तर– नेग। तत्ते। मनों। दुहं। गजे। गन। दुत उत्ते। मनों। चित्ते। धुकें। धगि। हकें। छके। वेंन। तुटें। लुटें। चूटि बाहें। दंतें। साहैं। पाय। रुद्वैं। चाहुवानं। रसे। डहैं। हसे। गेंन। भूमि भूंमी। नकें। रचें। रुड। श्रवें। घवटी। ववट्टी। फकारी। फिकियं। फिफारें। गोमं। गिद्ध। गट्टें। चुट्टे। चिर्दे। सारी। अभूंतं ॥ * स० १६४० की लिखी पुस्तक में इस छंद का शुद्ध नाम विराज है और इतर में रसावला है। यह दो लगुरु और रसावला दो गुलगु का होता है।
७५ पाठान्तर–त्रुटत। हथ। अप्पनौ हथ। मगौ। मगै। तथ ॥
७६ पाठान्तर–भारथ। तिहिं ॥
७७ पाठान्तर–मुष। प्रमान। कमोद। कमोद। हर्ष। प्रमांनं। उधारियं।। वृंदाइं ॥

छिल्लोरे षग्गं, अरि घट जग्गं, करिन अभग्गं, जुधमोरं ।
परिहार सु आपं, अरि उर दापं, रुपि रन थापं, षग झोरं ॥
चालुक्क सुमानं, जुद्ध समानं, अरि हरि मानं, गुम्मानं ॥ छं० ॥ १३१ ॥
पर मध्य पवारं, असि बहु झारं, अच्छरि तारं, सो रानं ॥
कूरभ षग जग्गी, दस क्रम भग्गी, फिर रन लग्गी, परिहारं ॥
दाहिम षग षुल्लं, वीर सु वुल्लं, नह मन डुल्लं, भर सारं ॥
कन्ह कुमारं, रन परि मारं, सार सुमारं, नह हल्लं ॥ छं० ॥ १३२ ॥
आवध नह फुट्टे, गुरजनि कुट्टे, सीसय फुट्टे, कर चल्लं ॥
रन जैत सरीसं, तुट्टिय सीसं, लगि घन रीसं, परि वथ्थं ॥
रन लुथ्थि अलुथ्थं, गुन कवि कथ्थं, अचरिज सथ्थं, रवि रथ्थं ॥
छं० ॥ १३३ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

छंद भुजंगी ॥ हकार्यौ जुसूरं विराजंत वीरं । स्वयं कंठ आभूषनं छंद नीरं ॥
पया सेस मत्ता चवं पंच अच्छी। कितौ छंद नामं विराजै सु लच्छी॥छं॥१३४॥
नवं नेह नारी लक्की देह दूनौ । करी सूर नांची विराजंत सूनौ ॥
हयं छंडि राजं लरे सूर तेजं। मनों जुद्ध आकूत भारथ्थ एजं ॥ छं० ॥१३५॥
षज्जै चाल वंधे तनं मंड आसं । कहै चंद कव्वी तिनं जुद्ध भासं ॥
छं० ॥ १३६ ॥ रू० ॥ ७९ ॥

गाथा ॥ हंकारे विप सेनं । वजे वज्जाइं पंच सद्दायं ॥
रुड्डे नव रंडा रंगं । भगं कन्ह चितयं पलयं ॥ छं ॥ १३७ ॥ रू० ॥ ८० ॥

---

७८ पाठान्तर– हकारे । घलत्त । नंदत ॥ १२९ ॥ केसरि । नवत । गग । सिरमन । बदवारि ॥ १३० ॥ लुटि । प्रमानं । हिलोरे । षगं । जगं । करि दननग । वालुक । गुमान । गुमांन ॥ १३१ ॥ पहरि । सोनान । कूरंभ । कूरम्भं । क्रूरं । भगी । फिरि । लगी । षुल । घुन । डुल । भाल भार लिर । कुमारं । हल ॥ १३२ ॥ फुट्टै । विछुट्टै । फुट्टै । दन । धीम । बथ । लुथ उ लुथ । कथ । सथ । रथ ॥ १३३ ॥

७९ पाठान्तर–सो सु । पट । लछी । किनो । नामं । लछी ॥ १३४ ॥ लरे । मनों । भारथ । १३५ ॥ षजे । कवी ॥ १३६ ॥

८० पाठान्तर–हकारे । बीय वजाइ । रुड्डे । रुडे । रं रंग । रंग रग । भग ।

दूहा ॥ उत मंडोवर वीर कैं, इत संभरि वै राव ॥
दुश्र लग्गा अस रार जुध, सुकवि चंद्द करि काव ॥
छं० ॥ १३८ ॥ रू० ॥ ८१ ॥

छंद भुजंगी ॥ सलुथ्थं सलुथ्थं अलुथ्थं निलुथ्थं । दृयानं उवानं समानं पलथ्थं ॥
हयगं रथंगं धरं धार तुट्टे । धरं धार धीरं महा वीर लुट्टे ॥
छं० ॥ १३९ ॥

पलक्कै रुधिंजा प्रवाहं सिरज्जं । धरं धाम चाहं रनं केन रज्जं ।
भनक्कंत भेरी चिकारैं सुहथ्थी । नचैं रंग भैरुं ततथ्थे ततथ्थी ॥
छं० ॥ १४० ॥

प्रहारं सुदंती सुअंती अलुझ्झं । अलुझ्झैं सुदंती उडैं छिक्क झुझ्झं ।
मनं झारते जान हेमं हयन्नं । परज्जाल तुट्टे ननंजा विनंनं ॥
छं० ॥ १४१ ॥ रू० ॥ ८२ ॥

लोहाना आजानु बाहु के युद्ध का वर्णन ॥

कवित्त ॥ लोहानौ आजांन । बांह लंबी पस्सारै ॥
लंबी बांह पसारि । तेग लंबी उभ्भारै ।
उभ्भारै विभ्भार । बीर बाहै वट्ठाली ॥
अट्ठाली अर बट्ठि । कंध सोहैं सुट्ठाली ॥
सुट्ठाल कंध विव षंड हुअ । विधि ओपम्म कवि चंद कहि ॥
आहत्त घत्त आजान भुअ । मनु कजल कोटकि विज लहि ॥
छं० ॥ १४२ ॥ रू० ॥ ८३ ॥

---

८१ पाठान्तर—कैं । दोउन के असराल युद्ध । सो चंद करीय सु काव ॥

८२ पाठान्तर—सलुथं सलुथं । सलुथं सलोथं । अलुथ निलुथं । उयानं । प्रलथं । हयं गंगरथं । तुट्टैं । लुट्टैं ॥ १३६ ॥ पलकैं । रुधिजा । प्रबाहं । कन । भनकंत । चिकारे । सुहथी । नचै । भैंरा । ततथे । ततथी ॥ १४० ॥ अलुझं । अरुझैं सुदंती । अलुझंत । उडे । झुझं । हयनं । गयनं । परं । तुटं ॥ १४ ॥

८३ पाठान्तर—आजान । वाह । पसारे । उभारै । उभारै । विभार । बठाली । वठाली । अरिकट्टि । सोहैट्टै । सुठाली । सुठालि । पंध छिछि पंड हुय । उपम । आव्रत । घत आजानु । मनों ॥ मनौ ॥

कवित्त ॥ लोहांनै अरि फौज । चक्क चिहुंकोद फिराइय ॥
ज्यौं तूल मध्य बातूल । पवन जिम पत्त भ्रमाइय ॥
मारुत वजि आरिष्ट । वाइ चिहुंकोद झुलावय ॥
कै वाय पुरातन धज्ज । चिविधि विध तुंग चलावय ॥
कै कुलाल चित चकित भौ । चक्र चिहूं दिसि फेरइय ॥
मृगराज मृगनि ज्यौं क्रोध बल । बल सम्रूह अरि घेरइय ॥
छं० ॥ १४३ ॥ रू० ॥ ८४ ॥

कवित्त ॥ तहां विभिक्ष पिथ कुंअर । लोह झारै गज मध्यं ॥
भइय भसुंड विषंड । अंग सोभंत सुतथ्यं ॥
कै * जलधि तट छवि छोम । धोम धारा घृत सिंचिय ॥
कै * तडित तेज नव घंन प्रमान * । भान चलि वद्दल षंचिय ॥
कज्जल प्रमान प्रव्वत ढ्यौ । रत्त धार वुट्ठंत जलु ॥
कंचन प्रनार द्वै सुर अवकि । इच ओपम दीसंत पलु ॥
छं० ॥ १४४ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

दूहा ॥ जावक स्रोन प्रनार जल । डूंगुर फटिक वषान ॥
जीवत रद काढि रुहिर तिन । दंतू सर दरान ॥
छं० ॥ १४५ ॥ रु० ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥ लोहांनौ आजांन बाहु * । जित्त आरनि जस लिन्नौ ॥
ज्यौं इक लेई कन्ह । दंग दावा नल पिन्नौ ॥
ज्यौं इकले हनुवंत । लंक लक्का गढ ढाह्यौ ॥
ज्यौं इकलेई भीम । खित्त कौरव तन गाह्यौ ॥

---

८४ पाठान्तर—लोहानै । चिहु । कोद । ज्यो । तुल । मधि । भ्रमाइय । वजि । चिहु । धज । चिविधुम । भयो । चिहु । फेरईय । ज्यो । घेरईय ।

८५ पाठान्तर—विभिक । कुंवर । मध । भईय । तथ । कै । तरह । सिंचिय । खिंचीय । * * यह अधिक पाठ है । भान वद्दलह । कज्जल । प्रमान । प्रबत ।

८६ पाठान्तर—प्रनाल ॥

ज्यों पुनि अगस्ति अप इक्कलै। सोषि सब्ब सायर लयौ ॥
दांनव कि चंपि अंगद बलिय। नंघि उदधि परसौं गयौ ॥
छं० ॥ १४६ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥ बल बंध्यौ नाहर नारिंद *। इंद्र जनु वज्र हथ्थ झलि ॥
मुकति सुफल लद्धीय। बीर ब्रह्मांड तार पुलि ॥
नर नाहर ज्यौं लस्यौ। लज्ज पंकह आलुझ्यौ ॥
सार धार निझ्झार। पार मुक्किग जग सुझ्यौ ॥
कलहंत केलि परिहार रिन। चिसल तेज लग्गिय चिभुअ ॥
भग्गौ न भूमि रजपूत हौं। करौं नाम जिम अटल धुअ ॥
छं० ॥ १४७ ॥ रू० ॥ ८८ ॥

कवित्त ॥ सुनिय मंच सेवक्क प्रमांन *। रंहट घट्टी फेरहि हम ॥
पेट भरन * चक्षंन। पुट्ठि दै भार चलहि क्रम।
ते नह गनियै सूर। ध्रंम छिचिन कौ नांही ॥
स्वांमि संकरै छंडि। लोभ अप्पन घर जांही ॥
गनियै न सूर अरि जुह बल। अप्प सेन दृषि घट्टियै ॥
जै अजै भाग भूपति क्रमह। अप्पु दोस अष मिट्टियै ॥
छं० ॥ १४८ ॥ रू० ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ वाय रूप प्रथिराज। गज्जि गयो असि रुक्कं ॥
सार धार उभ्भार। गुरज भंज्यौ सिरभुक्कं ॥
रह्यौ भान रथ षंचि। पवन रह्यौ गति छंडि थिर ॥
रहे देव टग चाहि। नचै वैताल बीर भर ॥

८७ पाठान्तर-* अधिक पाठ है। जिति। लीनौ। ज्यो। इकलेइ। इक्लेइ। ज्यो। इकलेइ। हनवंत। हनुमंत। ज्यों। इकलै। सत्त इकलै। सब। दांनव। परसों ॥

८८ पाठान्तर-नाहर। * अधिक पाठ है। हथि। हथ। मुगति। ब्रहमंड। ज्यों। जल पंकह। निझार। मुक्किग हो। करौ। नांम ॥

८९ पाठान्तर-सेवक। * अधिक पाठ हैं। घठी। घटिका पुठि। चलि। को। स्वांमी। जांहीं। रवि। भुम्राति ॥

मंडे जु रास कित्ती प्रबल । सोइ मरन कुहैत दिन ॥
पल पंच रास पच्छै चढो । नाहरराइ नरिंद रन ॥
छं० ॥ १४९ ॥ रू० ॥ ९० ॥

कवित्त ॥ नाहर राइ नरिंद । चित्त चिंता उत्तारिय ॥ १ ॥
मन बध्यौ बल घध्यौ । मरम केवल विचारिय ॥
सुनहूँ तौ * कहूं कवित्त । सुथिर जीवन जग नांही ॥
इह संसार असार । सार कित्ती कलु मांही ॥
ज्यौं उरगह मुष उंदर परै । यौं सुदेह नाहर कहै ॥
अवतव्य बात मिटै नहीं । नाम एक जुग जुग रहै ॥
छं० ॥ १५० ॥ रू० ॥ ९१ ॥

दूहा ॥ इह कहि रचि रन मंड छपि । ज्यौं कपि रष्यस सेंन ॥
कोपि कन्ह धायौ बली । ज्यौं अगि विकुटिय गेंन ॥
छं० ॥ १५१ ॥ रू० ॥ ९२ ॥

कन्ह चौहान के युद्ध का वर्णन ॥

विराज ॥ धप्यौ कन्ह थट्टी। कुटी झंपि पट्टी ॥ अरी सेन फट्टी। मनौं दूध पट्टी॥ छं०॥ १५२॥
षगंगे उछट्टी। मनौं कठ्ठ कट्टी। परे भूमि लट्टी। मनौं मद्द जट्टी ॥ छं० ॥ १५३ ॥
बहै षग्ग घट्टी। मनौं चक्क मट्टी ॥ नरक्कैं कि तट्टी। मनौं लागि नट्टी॥ छं०॥ १५४॥
लरैं यौं सुभट्टी। मनौं लौंन अट्टी। सुरं मारि झट्टी। मनौं लत्त तट्टी ॥ छं०॥ १५५॥
पसू पंच टट्टी। पलं श्रोन चट्टी। कवीचंद भट्टी। मुषं कित्ति रट्टी ॥
छं० ॥ १५६ ॥ रू० ॥ ९३ ॥

---

९० पाठान्तर—प्रथीराज । वजि । उभार । भान । गवन । मडै । यु । रासि । कित्त । सोई । पछ् । [illegible] ॥

९१ पाठान्तर—नाहरराय । चित । चिंता । उत्तारिय । [illegible] । विचारिय । सुनहु । मुन हू । * यह पाठ है । नाही । ज्यौ । उरगह मुनुष । यो । मुमिटै ।

९२ पाठान्तर—छल । ज्यौं । रषस । कन्ह । [illegible] । विकुट्टिय ।

९३ पाठान्तर—* सं० १६४० की प्रति में [illegible] है और इसमें यह छंद पांचवां है ॥ १५२ ॥ मनो । [illegible] । परे । मनो । मनौ । मद ॥ १५३ । बहै । मनौं । नरके । लाग । ॥ १५४ । [illegible]

ज्यौं पुनि अगस्ति अप दुक्कलै। सोषि सब्ब सायर लयौ ॥
दांनव कि चंपि अंगद बलिय। नंषि उदधि परसैां गयौ ॥
छं० ॥ १४६ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥ बल बंध्यौ नाहर नारिंद *। इंद्र जनु वज्र हथ्थ भाहि ॥
मुकति सुफल लद्धीय। बीर ब्रह्मांड तार पुलि ॥
नर नाहर ज्यौं लस्यौ। लज्ज पंकह आलुझ्यौ ॥
सार धार निझ्झार। पार मुक्किग जग सुझ्यौ ॥
कलहंत केलि परिहार रिन। चिसत्त तेज लग्गिय चिभुअ ॥
भग्गौ न भूमि रजपूत हैां। करौं नाम जिस अटल भुअ ॥
छं० ॥ १४७ ॥ रू० ॥ ८८ ॥

कवित्त ॥ सुनिय मंच सेवक्क प्रमांन *। रंहट घट्टी फेरहि स्रम ॥
पेट भरन * चल्लंन। पुट्ठि दै भार चलहि क्रम।
ते नह गनियै सूर। ध्रंम छिंचिन कौ नांही ॥
स्वांमि संकरै छंडि। लोभ अप्पन घर जांही ॥
गनियै न सूर अरि जूह बल। अप्प सेन दूषि घट्टियै ॥
जै अजै भाग भूपति क्रमह। अप्पु दोस अष सिट्टियै ॥
छं० ॥ १४८ ॥ रू० ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ वाय रूप प्रथिराज। गज्जि गयो असि रुक्कं ॥
सार धार उझ्झार। गुरज भंज्यौ सिरभुक्कं ॥
रह्यौ भान रथ षंचि। पवन रह्यौ गति छंडि थिर ॥
रहे देव टग चाहि। नचै बैताल बीर भर ॥

---

८७ पाठान्तर-* अधिक पाठ है। जिति। लीनो। ज्यों। दुकलेह। दुक्कलैंह। ज्यो। दुकलैंह। हनवंत। हनुमंत। ज्यों। दुकलै। सत्त दुकलै। सब। दांनव। परसों॥

८८ पाठान्तर-नाहर। * अधिक पाठ है। हथि। हथ। मुगति। ब्रहमंड। ज्यों। जल पंकह। निझ्झार। मुक्किग हो। करों। नांम॥

८९ पाठान्तर-सेवक। * अधिक पाठ है। घटी। घटिका पुठि। चलि। को। स्वांमी। जांहीं। रथि। भुआति॥

मंडे जु रास कित्ती प्रबल। सोइ मरन कुहैत दिन ॥
पल्ल पंच रास पच्छै चढो। नाहरराइ नरिंद रन ॥
छं० ॥ १४९ ॥ रू० ॥ ९० ॥

कवित्त ॥ नाहर राइ नरिंद। चित्त चिंता उत्तारिय ॥ १ ॥
मन बध्यौ बल घध्यौ। मरम केवल विचारिय ॥
सुनहूँ तौ * कहूं कवित्त। सुथिर जीवन जग नांही ॥
इह संसार असार। सार कित्ती कलु मांही ॥
ज्यौं उरगह मुष उंदर परै। यौं सुदेह नाहर कहै ॥
भवतव्य बात मिट्टै नहीं। नाम एक जुग जुग रहै ॥
छं० ॥ १५० ॥ रू० ॥ ९१ ॥

दूहा ॥ इह कहि रहि रन मंड रुपि। ज्यौं कपि रष्षस सैन ॥
कोपि कन्ह धायौ बली। ज्यौं अगि विकुठिय गैन ॥
छं० ॥ १५१ ॥ रू० ॥ ९२ ॥

कन्ह चौहान के युद्ध का वर्णन ॥

विराज ॥ धप्यौ कन्ह थट्टी। कुटी अंषि पट्टी ॥ अरी सेन फट्टी। मनौं दूध षट्टी॥ छं०॥१५२॥
षगंगे उछट्टी। मनौं काठु कट्टी। परे भूमि लट्टी। मनौं मद जट्टी॥ छं०॥ १५३ ॥
वहैं षग्ग घट्टी। मनौं चक्क मट्टी॥ तरफ्फै कितट्टी। मनौं लागि नट्टी॥ छं०॥१५४॥
लरैं यौं सुभट्टी। मनौं लौंन अट्टी। सुरें मारि भट्टी। मनौं लत्त तट्टी॥ छं०॥१५५॥
पसू पंष ठट्टी। पलं श्रोन चट्टी। कवीचंद भट्टी। मुषं कित्ति रट्टी ॥
छं० ॥ १५६ ॥ रू० ॥ ९३ ॥

---

९० पाठान्तर—प्रथीराज। गज्जि। उभार। भान। गवन। मंडे। यु। रासि। किर्त्ति। सोई। पछैं। नाहरराव ॥

९१ पाठान्तर—नाहरराय। चिंत। चिंता। उतारीय। केवलह। विचारीय। सुनहु। सुनहूं। * अधिक पाठ है। नाहीं। ज्यों। उरगह सुमुष। यो। सुमिटै।

९२ पाठान्तर—हन। ज्यों। रषस। कन्ह। ज्यों। विकुट्टिय ॥

९३ पाठान्तर—* स० १६४० की प्रति में शुद्ध नाम विराज है और इतर में छंद रसावला है ॥ १५२ ॥ मनों। कठ। परें। मनों। मनो। मद ॥ १५३ ॥ वहै। मनों। तरफै। लाग ॥ १५४ ॥ लरें। यों। मनों। लोंन। मनों। सत ॥ १५५ ॥ पसूं। थट्टी। कवि ॥ १५६ ॥

कवित्त ॥ नाहर नाहर राव। कहर नाहर सुकन्ह कर ॥
दिठ्ठ दिठ्ठ अंकुरिय। भरिय विस जांनु विषहर ॥
हमसि कन्ह असिरीस। सीस चुकि परिय बांम भुज ॥
पुनि उक्कुटि परिहार। सार सिर कन्ह टोप धुज ॥
लग्गे सुटोप उड्डिय किरच। बहत धार उत मंग बचि ॥
जैजया सद्द जुग्गिन करहि। दुअन जुद्ध अदभूत मचि ॥
छं० ॥ १५७ ॥ रू० ॥ ९४ ॥

डारि कंन्ह तरवारि। कढ्ढि जम दढ्ढ मिल्यौ हिय ॥
मच्चि जुद्ध दूत बीच। धप्प भत्तीज दिष्षि भनिय ॥
गहि सुसिष्ष पुठि आइ। घाइ जम दढ्ढ कियौ तिय ॥
छंडि प्रान परिहार। परे पाल्हन ऊपर जिय ॥
गहि रोस नंषि नर भूमि पर। हनि अनियारिय उभय कसि ॥
तिन हनत घाय घुंमत झुमत। गयौ निठ्ठि नाहर निकसि ॥
छं० ॥ १५८ ॥ रू० ॥ ९५ ॥

नर नाहर जिम लर्यौ। गयौ नाहर जिम नाहर ॥
घाव घट्ट घन घुंमि। झुंमि निकसिय मल नाहर ॥
कन्ह कंक किय नन्ह। बंक भर भूमि पछारिय ॥
जनु कि लँगूरह लंक। तोरि बारा धर डारिय ॥
सादान बज्जि रन रज्जि सह। तह सु सथ्थरकत करिय ॥
सोमेस सूर चहुआंन सुअ। कित्ति चंद छंदह धरिय ॥
छं० ॥ १५९ ॥ रू० ॥ ९६ ॥

९४ पाठान्तर–कन्ह। दिठ दिठ। जांनि। परीय। वांम। फुनि। उक्कटि। उकुटि। कन्ह। उड्डिय। सबद। जुगिन ॥

९५ पाठान्तर–कन्ह। जमदढ। मचि। जुध। बीचि। धपि। भतीज। दिषिनीय। सिषि। पुठ्ठि। जमदढ। प्रांन। पल्हन। उपर। अनियारीय। निठि।

९६ पाठान्तर–घट। घूमि। झूमि। नन्ह। भूंमि। लंगूरह। डारीय। सदांन। बजि। रजि। सथ। करीय। चहुयान। चहुवांन। सुय। छंदहि ॥

बल घट्ट्यौ सब सथ्थ । जुद्ध धायौ तत्तारिय ॥
चाहुआंन कौ साथ । तेग तुंगह विड्डारिय ॥
उंच गात अरु हथ्थ । वीर कढ्ढी पट भारिय ॥
इह ओपम कविचंद । चिंति मन मझ्झ विचारिय ॥
पल्लव सुवीर केतुकि नवल । वरवसंत वायह हलै ॥
तम तेज रुधिर भींज्यौ बहुल । कलह कित्ति जावक घुलै ॥
छं० ॥ १६० ॥ रू० ॥ ९७ ॥

दूहा ॥ नाहर नाहर जिम निकसि । भिरि नाहर के भेष ॥
कहर कन्ह धपि कुप्पि पुठि । बली मीर चष लेष ॥
छं० ॥ १६१ ॥ रू० ॥ ९८ ॥

कुंडलिया ॥ फिरि जुहार किय स्वामि कौं । मुक्किय काम समारि ॥
बली मीर गठ्ठौ लस्यौ । मरन सरन विचारि ॥
मरन सरन विचारि । मिलन अंतहपुर किन्नौ ॥
बँधि चिय सांइ सुभित्त । करि सांई सौं दिन्नौ ॥
सार धार तन षंड । षंडि मार्यौ रिपु जुर जुरि ॥
तिल तिल तन तुट्टयौ । रंभ ढुंढ्यौ चिन फिरि फिरि ॥
छं० ॥ १६२ ॥ रू० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ सिर तुट्टि परि भूमि पर । यौं राजै कविचंद ॥
कमल जानि नचंत सर । सरद चंद पर कंध ॥
छं० ॥ १६३ ॥ रू० ॥ १०० ॥

कुंडलिया ॥ कमल जानि नंच्यौ जु सर । दिसि सोभै संग्राम ॥
मानहु जलद कमोद तजि । थल जुए ए ताम ॥

---

९७ पाठान्तर–सथ । तत्तारीय । चाहुवान । विढारीय । हाथ । कढ्ढी । भारीय । उपम । मन सों । विचारीय । विच्चारिय । वायह । भज्यौ ॥

९८ पाठान्तर–नाहर के । लेषि ॥

९९ पाठान्तर–स्वामि कों । मुकिय । कांम । गठो । सरन । विचारि । अन्तरपुर । बंधि । चीय । सांई । सुधित । सुभृत । तिल तिल्ल । ढंढ्यो ॥

१०० पाठान्तर–तुट्टे । यों । राजि । राजे । जांनि । नाचंत । सारद कंध ॥

थल जए ए ताम। चंद ओपम तहां पाई ॥
मांनहु वीर समुद्र। दयौ फल हथ्थ बधाई ॥
धार धार चढि सूर। सूर कीरति विमलं ॥
धन्नि धन्नि उच्चार। सीस नच्चौ सुकमलं ॥

छं० ॥ १६४ ॥ रू० ॥ १०१ ॥

नाहरराय का भागना और पृथ्वीराज का पीछा करना ॥

कवित्त ॥ भग्गा नाहर राई। पाई मुक्कै नाहर जिम ॥
जिम जिम भर कट्टई। रोस लग्गा वर तिम तिम ॥
षेत सोधि चहुआनं। पर्यौ तूंवर पाहारी ॥
बर* पर्यौ तहां गोइंद। पर्यौ भट्टी अधिकारी ॥
षीची प्रसंग बंधव उभै। सोह सुबंधा बंध वर ॥
तिम तिम सु तेग ताहन लसै। तिम तिम वुट्ठे सार नर ॥

छं० ॥ १६५ ॥ रू० ॥ १०२ ॥

त्रिविध सहस्त्र नाहर * बसंत। पच कायर तन झारिय ॥
वीर रूप तप भान। नीर सूकै षल भारिय ॥
तत्तारि तुंअर नरिंद। भयौ तरु गहर पत्त छंद ॥
क्रांह स्वांमि संम्रह। जूह टारिय सुअंग तहँ ॥
फल फूल कित्ति पंषी वरन। विमुष न भौ संमुह लर्यौ ॥
गंधर्ब वीर चालुक वरन। मरन वीर अच्छरि वर्यौ ॥

छं० ॥ १६६ ॥ रू० ॥ १०३ ॥

---

१०१ पाठान्तर—जानि। जानैं। नच्चौ। सुर। मानहु। थल ए उए ताम। ऊपम। पाइय। मानहु। हथ। बधाइय। किए ति। किए सु। धनि २। उचार। नंच्यौ ॥

१०२ पाठान्तर—नाहरराय। पाय। मुक्या। कठई। रोस। चहुवान। चाहुआंन। तूवर। तूअर। पहारी। परहारी। * अधिक पाठ है। तथा उलट पुलट पाठ ऐसा है—अर गोइंद तहा पर्यौ। बध्या बंधवर। तेज ॥

१०३ पाठान्तर—सस्त्र। * अधिक पाठ है। झारीय। भांन। सुक्कैं। झारीय। तत्तार। तूअर। तोंअर। पत्त सह। पत्त छंह। क्राह। स्वांमि। टारीय। तहां। भैं। गंधर्व्व वीर चारन वरन। अछरि ॥

गुज्जर वै परधान। जैन ध्रम्मी मत लद्धौ ॥
एकादस चहुआन। घर धारह आलुद्धौ ॥
सहस एक असवार। धार द्वै गै घट संद्धौ ॥
नाहर राइ नरिंद। कोट पट्टन वै चढ्ढौ ॥
ढुंढयौ षेत चहुआन बर। अरु भारथ आहुट्टयौ ॥
चामर सु छत्र धरि षेत में। सुधा विविध विधि लुट्टयौ ॥
छं० ॥ १९७ ॥ रू० ॥ १०४ ॥

डोला पंच पचीस। स्वामी संजुत्त चढाइय ॥
घाइ कन्ह घट घुम्मि। घाइ एकादस राइय ॥
चंपि वीर चालुक्क। राज मेलान तुच्छ करि ॥
गल गज्जै सामंत। बरैं बरनी नाहर बरि ॥
रविवार बीर पंचमि दिवस। एकादस रविभुअन ग्रहं ॥
अष्टम सु चक्र जोगिनि ग्रहन। बर बज्जेति नरिंद तह ॥
छं० ॥ १९८ ॥ रू० ॥ १०५ ॥

पट्टन में पृथ्वीराज का राज्याभिषेक होना ॥

देव दसमि कै दीह। नयर पट्टन चहुआनं ॥
गुरं पंचम रवि नवम। सुबर ग्यारह ससि थानं ॥
तीय थान बर भौम। सुक्र सत्तम बल किन्नौ ॥
केद्रंद्री बर बुद्ध। राह सब कौंद अछिन्नौ ॥
आनंद चढं बरदाइ घन। राजभिषेकन पट्टि करि ॥
साजंत भूमि जीते सुपति। तेज तुंग दुज्जन सुहरि ॥
छं० ॥ १९९ ॥ रू० ॥ १०६ ॥

१०४ पाठान्तर-गुजर। परधांन। धृंम्मी। धृमी। चहुआंन। अलुद्धौ। नाहरराय। चढ्यौ। चहुआंन। आहुटयौ। लुटयौ ॥

१०५ पाठान्तर-डोला। स्वांमी। स्वांमि। धाय। घूंमि। घुंम्मि। धांय। ऍकादस। मेलांन। तुछ। बरं। बरै। बजेति ॥

१०६ पाठान्तर-चहुआंनं। चहुआंनं। थांन। कीनौ। केंद्रंद्री। सबकोद अछिनौ। बरदय धनं। पट। दुजन ॥

दूहा ॥ तिरिय वक्र अधचक्र नन। ऊरध वक्र प्रमान ॥
इन नक्खिच चहुआंन कौ। पट अभिषेक समान ॥
छं० ॥ १७० ॥ रू० ॥ १०७ ॥

कवित्त ॥ इन नक्खिच कविचंद। कौंन कारन ऊपावै ॥
पटमिषेक राजान। बहुत आराम प्रभावै ॥
ग्रह प्रसाद * तोरन ऊतंग। छच जंचह सक टावै ॥
धजा बंधि पत्ताक। संष चामर मंडावै ॥
उदयत्त परब पानिं अचन। बहु विवेक ध्रंमह सुधरि ॥
नन कूप तडागन वापियन। धन सुकियन सुकियन्न बरि ॥
छं० ॥ १७१ ॥ रू० ॥ १०८ ॥

नाहरराय का हारकर अपनी कन्या के विवाह का लग्न लिखवाकर भेजना ॥

छंद पद्धरि ॥ सब सथ्थ तथ्थ हुअ एक ठांम। मुक्कांम कीन गिरिनार गांम ॥
सब लोक महाजन मिले आइ। चिंत्यौ सुचित्त नाहर सुभाइ॥ छं०॥ १७२॥
जिहि मेल होइ सो करि उपाइ। दिष्षियै दीप सो नहीं जाइ ॥
पहुमी सुकाज भर तजत प्रान। पहुमीस काज धन देत दान ॥ छं० ॥ १७३॥
पहुमीय काज जग बाजि देत। उपाइ नेक पहुमी सुलेत ॥
पुची सुएक तिन तन कुआरि। दीसंत देह जनु मदनधारि ॥ छं० ॥ १७४ ॥
बुल्लाइ विप्र लिषि लगन तथ्थ। पठ्ठाइ दीन न्टप पिथ्थ जथ्थ ॥
आनंद राज सब सेन अंग। फुल्ले कि कमल जनु दिषि पतंग ॥
छं० ॥ १७५ ॥ रू० ॥ १०९ ॥

१०७ पाठान्तर—तिरीय। प्रमांन। चहुआंन कों। पटभिषेक। समांन ॥

१०८ पाठान्तर—कोन। उपावे। पाट विभेक रजांन। पाटभिषेक राजांन। आरांम। * अधिक पाठ है ॥ उतंग। पताक। उदय। उदयत। पांनि। पांनि। ध्रंम्मह। तटाकन। धन मुकियन सुकियन वरि। मुकियन चुकियन वर ॥

१०९ पाठान्तर—सब्ब। सथ। तथ। हूव। ठांम। गिरनारि। गांम। सब्ब। मिलिव। आय। चिंत्यों। सुभाय ॥ १७२ ॥ जिहिं। होय। उपाय। दिषिये। नही। जाय। पुहमी। प्रांन। दांन ॥ १७३ ॥ उपाय। कुवार। धार ॥ १७४ ॥ बुलाय। सच्छ। पठाइ। पिथ। जथ। फूले ॥ १७५ ॥

पृथ्वीराज का ब्याहने को जाना ॥

कवित्त ॥ नठ्ठा नाहरराइ। षेत ढुंढ्यौ चहुआनं ॥
राज जीति गज लभ्भि। सीस लग्गा असमानं ॥
तुम मल्लह परिहार। मत्त कीनौ अमित्त जुध ॥
बरन बीर संमुद्दो। राज लग्गे सुमंत सुध ॥
पंचमी वार रवि रात दिन। गंज नाम बर जोग गुर ॥
गिरि ग्राम करन राजन्न बर। चढ्यौ बीर बीरंस उर ॥
छं० ॥ १७६ ॥ रू० ॥ ११० ॥

पृथ्वीराज का तोरन की बंदना करना ॥

कवित्त ॥ वंदि राज तोरन्न सुचंग *। मुत्ति नष्षें अच्छित अलि ॥
मनों * चंद किरनि छूटंत। भान नष्षे मयूष छलि ॥
ठाम ठाम चिय गान। जानि अच्छरि कैलासह ॥
सुभ सिंगार सोभंत। झूमि रहि अलि रस बासह ॥
तोरन सुचारु आचार करि। कै जनवासत मंडपहि ॥
दिष्षंत नयन भुल्लहि चषित। का कवि व्रन्नहि भाव कहि ॥
छं० ॥ १७७ ॥ रू० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का नाहरराय की कन्या से विवाह होना ॥

दूहा ॥ करि [illegible] सब पंडित। पानि ग्रहन फुनि व्याह ॥
सोम बास बसुनाइकै। धनि नाहर कन्याह ॥
छं० ॥ १७८ ॥ रू० ॥ ११२ ॥

---

११० पाठान्तर–नठा। नाहरराय। ढूंढ्यौ। चहुआंनं। लभि। मलह। मत्तह। मत। अमित। जुद्ध। लगा। राति। नाम। गिर। नांम। बरन। चढो। बीरंसु ॥

१११ पाठान्तर–तोरन। * अधिक पाठ है। मुति। नषें। छुटंत। नंषे। ठांम ठांम। चीय। गांन। गांम ॥

११२ पाठान्तर–पंडितन। पांनि। फुनि। सोमामब सुनायकें। सोबास बसुनाइके। धंनि। कन्याह ॥

नाहरराय का कहना कि आपके काम में सीस देने के सिवाय और कुछ देने के योग्य हम नहीं हैं॥

दूहा॥ नाहर राइ नरिंद कहि। का तुम जोग जगीस।
और देन हम हैं कहा। काम सीस हम ईस॥
छं०॥ १७९॥ रू०॥ ११३॥

नाहरराय की कन्या का गुण और रूप वर्णन।

साटक॥ तन्मै स्याम सुरंग वाम तनयं, मन्मथ्य वल्लो कला।
सुप्पं धामय तेज दीपक कना, तारुन्य लच्छी ग्रहा॥
रूपं रंजित मंजु माल कलया, वासंत पत्रावली।
अव्वं लक्छन काम धीरज गुणै, धन्यौ दुती दंपती॥
छं०॥ १८०॥ रू०॥ ११४॥

पृथ्वीराज का जीत कर स्त्री के साथ लौटना॥

कवित्त॥ संभरि वैरन जीत। बीर चालुक्क काम वल॥
उभै जोध सो जितै। लेइ कर वत्त कासि कल॥
बीर निसानति भग्ग। बग्गि आनन्द निसानं॥
प्रात होत बर बीर। चल्यौ संभरि दिसि थानं॥
भर विभ्भर स्वग मग हय गइय। रहिय तिम्मगत जुद्ध दुक्क॥
कालंक कोटि भंजै विषल। सुबर बीर बीरह जु पुक्क॥
छं०॥ १८१॥ रू०॥ ११५॥

अरिल्ल॥ लै तरुनी डोला चढि राजं। डोला लंगरिराइ बिराजं॥
धन रंगा तोर त्तिय धन्यं। जिन रष्यौ जीवत न्टप मन्यं॥
छं०॥ १८२॥ रू०॥ ११६॥

---

११३ पाठान्तर–नाहरराव। नाहरराय। कहा। देन। और। देंन। है। काम॥

११४ पाठान्तर–तन्मे। स्यांम। वांम। मनमथ। वाली। सुपं। लछो। ग्रहा। पत्रावली। अबं। लछन। कांम। गुनै॥

११५ पाठान्तर–रिन। जोत। करवत। कालिकल। निसांन। पगि। निसानं। थानं। विभर। अगमगह। गइय। तिम। भंजे। पुक्क॥

११६ पाठान्तर–लंगरीराव। धनि लंगा तोर तीय धंन्यं। जोवित। मंन्यं॥

संग वरनि डोला चढ़ि राजं। मनौं रत्ति दुति काम समाजं॥
के अलि डोलनि रुष्य सुसाजं। चढ़ि सब रुष्य बजावत बाजं॥
छं०॥ १८३॥ रू०॥ ११७॥

पृथ्वीराज का ग्यारह डोलों सहित होना॥

गाहा॥ करी जर्जत सरीरं। भीरं भंजि स्वामि का मेवं॥
ग्यारह डोल सुरुष्यं। कथं पत्तेव संभरि ग्रेहं॥
छं०॥ १८४॥ रू०॥ ११८॥

पृथ्वीराज का विवाह कर घर पहुँचना॥

दूहा। ग्रह पत्तौ जित्तौ सयन। परनि सुचंगी बाल॥
जंभा वीतं न्रिस्सयौ। कुँअरप्पन सुहि लाल॥
छं०॥ १८५॥ रू०॥ ११९॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा॥

कवित्त॥ बंस अनल चहुआंन। भयौ न पिय सम कोई॥
जिग षंडे षल षग्ग। दीन बंदै सब लोई॥
जिन नाहर राइ नरिंद। पंडव सह पज्जारिय॥
जिन वंभनवा सौ सिंघ। बान ढढ्यौ गंजाइय॥
अरि घरन घरनि घर चैनं नहि। सयन निसंकन संचरहि॥
वन गहन वहन विह्वल फिरहि। अंदर ज्यौं कंदर बसहि॥
छं०॥ १८६॥ रू०॥ १२०॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके नाहरराइ
कथा वर्णनं नाम सप्तमो प्रस्तावः॥ ७॥

॥ इति॥

---

११७ पाठान्तर-वरनि। मनो। रति। डोलन। सथ॥

११८ पाठान्तर-करि। भजि। सुवय। सभरी॥

११९ पाठान्तर-ग्रह। त्रिमयो॥

१२० पाठान्तर-चहुवांन। भय। पियह। नाहरराय। नाहरराव। पंजारीय। सों। वांन। ठट्टो। ठठो। चेंन नह। ज्यो॥



अथ मेवाती मुगल कथा लिख्यते ॥



(आठवां समय ।)

सोमेश्वर के मंडोवर जीतने और लूट को सरदारों में बांट कर प्रबल प्रातप के साथ राज्य करने का वर्णन ॥

कवित्त ॥ सुवसि देस सोमेस । पेस मेवास मचीपन ॥
सुभट थट्ट संघट्ट । दिट्ठि कुँवरं किय जीपन ॥
मंडोवर परिहार । मारि उज्जारि जेर किय ॥
सामतंन सम रंग । लच्छि लच्छी सुबंटि दिय ॥
दिन दसा देस दरबार दुति । दान षग्ग रत्तौ रचै ॥
पष्षु प्रबल पारि पच्छारि करि । अदट्ट दट्ट अगचनि गचै ॥
छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

सोमेश्वर के गुणों और उसकी गुणग्राहकता का वर्णन ॥

कवित्त ॥ भरिड दंड बल संड । गर्भ गर्भन उर कंडहि ॥
सगपन एक षग वास । षवक सेवा सिर मंडहि ॥
दुजनि देव गुर गाइ । पाइ पुज्जियहि निरंतर ॥
पंडित गुनी गुनग्य । द्रव्य लै चलहि दिसंतर ॥
दरबार भीर सुभटन थटन । कला कलित नाटिक नटहि ॥
छत्तीस राग रागनि रसनि । तंत ताल कंठन ठटहि ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

---

१ पाठान्तर-सुभट्ट । दिट्ठ । कुअर । कुवर । जिप्पन । उजारि । लछि । लभि । लभी । लीय । दांन । पछारी । हन ॥

२ पाठान्तर-छडह । दुज्जन । गाई । गाय । पाय । पुजहि । पुजियहि । रागन । रसन । संत ताठ ॥

सोमेश्वर का मेवात के राजा मुगल (मुद्गलराय) के पास कर लेने के लिये दूत भेजना॥

कवित्त ॥ एक सुदिन सोमेस। दूत हज्जूर बुलाइय॥
मेवाति मुगल नरिंद। पत्त पठाइ लिष्यिदिय॥
भूमि ग्रास जौ करहि। भरहि तौ डंड सेव करि॥
नतर समर डर डरपि। समुद उत्तरहि पार तरि॥
सिर धारि हुकुम घर चल्लिय तहँ। जहां मुगल मंडल महीं॥
सोमेस सूर प्रथिराज कल। तिम संमुह घर जर कही॥
छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

राजा मुद्गल का यह पत्र पाकर क्रोध प्रगट करके दूत को लौटा देना और सोमेश्वर का पत्रोत्तर पाकर क्रोध करना और उस पर चढ़ाई करने की आज्ञा देना ॥

छंद पद्धरी ॥ पढ़ि पत्त पिष्ष्यि मुग्गल नरिंद। प्रज्जरिग रोस मेवात ग्रंद॥
बहु दिवस सोमंन्रप हुअ सुपंग। किम उक्कवत्त कही भुवंग॥ छं० ॥ ४ ॥
किम सलिल उंट मुष चढै नीर। किम पवन गवन गति धरै धीर॥
किम सूर सीत गुन गहै अंग। किम धर्मराज धरै दया अंग॥ छं० ॥ ५ ॥
किम तजै व्याल बल विषम मुष्य। किम तजै जटी मल गरल दुष्य॥
किम तजै उदधि उर अगनि दाह। किम तजै चंद रवि राह ग्राह॥ छं० ॥ ६ ॥
धरि नाम छचि क्यौं दंड देइ। भुअ बल मुष्य क्यौं राज लेइ॥
आरू करन सेव कहि चाहुआन। मन मझ्झ रोस मति राज म्यान॥ छं० ॥
सेवासु मोहि श्रीनाथ पाइ। तिहि चरन चित्त लग्गयौ सदाइ॥
भंडार दंड मो सस्त्र पान। जब तब सुलेहु चाहुर निदान॥ छं० ॥ ८ ॥
सिर पाव मंगि बुद्धिक प्रवीन। पथिराइ चरन बर विदा दीन॥
फिरि दूत पच्छ अजमेर आइ। दिय पत्त लग्गि सोमेस पाइ॥ छं० ॥ ९ ॥
बंचिय सुलेष कारथ प्रमान *। सुनि सोम राज चहुआन भान॥

३ पाठान्तर-हजूर। मेवाती। नरिंद। पठाय। लिपि। भूमियास। उतरहि। हुकम। तहां। तह॥

* प्रमान=प्रमानराय नामक कायथ सोमेसराज की पेशी का मुंशी था॥

करतार हथ्थ षग दान दोइ । षन मद्द गर्व जिन करौ कोइ ॥ छं ॥ १० ॥
अनसंक बंक चम बंक धीर । तिहि दान दंड सो जुद्ध भीर ॥
प्रज्जरिग छोम सुनि श्रवन हूत । जिहि ग्रेह पिथ्थ अवतार भूत ॥ छं ॥ ११ ॥
बुल्लाइ सूर सामंत राज । दुय घटी मुहूरत सधौ आज ॥
मेवात मच्ची ऊजारि जारि । पुर ग्राम नैर दीजै प्रजारि ॥ छं ॥ १२ ॥
षन बोहि बंक गढ ढाहि देहिं । इम करिय भूमि मेवात लेहिं ॥
कित्तीक मह्हिप मुंगल नरेस । बल बंधि संधि विन करि असेस ॥ छं ॥ १३ ॥
पज्जून बोलि कूरंभ राव । पुंडीर चंद जनु अग्गि बाव ॥
दाहिम नरिंद कैमास संग । चामंड राव अरि दल अभंग ॥ छं० ॥ १४ ॥
गुज्जर कनंक बड़ राम देव । गहिलौत राव गोइंद खेव ॥
इतने सुभट्ट सजि जुद्ध धार । बजि पंच सबद बाजे करार ॥ छं । १५ ॥ रू ॥ ४ ॥

ज्योतिषियों से मुहूर्त दिखाकर पुष्य नक्षत्र में चढ़ाई के लिये निकलना ॥

दूहा ॥ बोलिय जोतिग गनिक दुज । घरी मुहूरत सद्ध ॥
तेरसि पुष्य ह भ्रगु दसा । चढि चल्ले निसि अद्ध ॥ छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ ५ ॥

घर की रक्षा के लिये पृथ्वीराज का घर पर छोड़ा ॥

दूहा ॥ रत्तजु दूह विधि ग्रेह भय । सुनि सोमेस भुआल ॥
सिसु रष्षि ह संग्हो चल्यौ । मुंगल दिसा विसाल ॥ छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ ६ ॥

---

४ पाठान्तर-पिथ । मुंगल । नरिंद । प्रजरिग । प्रज्जरिग । रोम । मेवात । सुपग । उछ्छत्त । काढौ ॥ ४ ॥ ललित उलटी । पीत ॥ ५ ॥ व्याल । मुःप । मुंप । दुःप । दुप ॥ ६ ॥ नांम । छिन्नी । मुःप । चाहुआन । चाहुवान । मल्ल । होस । होस । आन ॥ ७ ॥ पाय । तिहिं । दंड सो भडार पर सस्त्र पानि । निदान ॥ ८ ॥ कुलिक्क परवीन । पाहिराय । पछ्छ । आय । दीय । लगि । पाय ॥ ९ ॥ कायथ प्रमान । चहुवान । भान । हय । दान । दीय । मदहि । कोय ॥ १० ॥ तिहिं दान । प्रजरिग । जिहि । गेह । पिथ ॥ ११ ॥ बोलाय । दुअ । महूरत । उजारि । गांम । नयर १२ ॥ पनि । करिअ । करिसु । मेवात । कितक । सुभूमि ॥ १३ ॥ पजूंर । ननुं । चावडराव । गुजर । रामदेव । गोयद । भट ॥ १५ ॥

५ पाठान्तर-बोलिय । घरी । पुरक्कर । भृगु दशा । चले । निशि ॥

६ पाठान्तर-रति यु विधि दुह येह भय । रषे समुह । दिशा विशाल ॥

यात्रा के समय अच्छे शगुन मिलने ॥

दूहा ॥ प्रथम प्रयानह सुंदरी। मिली अंक लिय बाल ॥
पीतांमर अंबर धरै। दीप जोति रचि थाल ॥
छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ कलस कामीनी इक्क सिर। प्रात होत न्टप पिष्य ॥
मच्छ कंध काहार करि। सुर धुनि बाहस दूष्य ॥
छं० ॥ १९ ॥ रू० ॥ ८ ॥

दूहा ॥ अन्य सगुन सुभ पिष्षि सब। गुंज गहर नीसान ॥
नमहर कर उज्जल अवनि। प्रगटे पुव्व दिसान ॥
छं० ॥ २० ॥ रू० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज को राज्य में छोड़कर सोमेश्वर का मेवात पर चढ़ाई करना और उसकी सूचना पत्र द्वारा मुग्गलराय को दे कहना कि लड़ो वा दंड दे आधीन हो ॥

छंद भुजंगी ॥ चल्यौ चंपि सोमेस मेवात थानं। रष्यौ राज प्रिथराज ग्रेहं निधानं ॥
फटी फौज बैरीन की काल दिष्षी। तबै कग्गदं ग्रेहराजं बिसष्षी ॥ छं॥ २१॥
बरं बीर धीरं महा बैर पुब्बं। मगै राज सोमेस सों जुद्ध अब्बं ॥
महा तेज जाजुल्य भारी सुषग्गं। करै बैर सारथ्य पारथ्य जग्गं ॥ छं० ॥ २२॥
इसौ सूर सोमेस दीपौ मिलानं। दियं कग्गदं मुंगलं राजथानं ॥
करो सेव मेवं किमो अप्पि दंडं। तजौ आज पच्छै पगं षंडि छंडं ॥
छं० ॥ २३ ॥ रू० ॥ १० ॥

---

७ पाठान्तर–पयानह। प्रयांनह। लियें। पीतंमर ॥

८ पाठान्तर–एक शिर। पिपि। मछ। वामस ॥

९ पाठान्तर–सुमुन सव। निसांन। उजल। प्रगटी। दिसांन ॥

१० पाठान्तर–मेवात। प्रिथिराज। प्रिथिराज। गेहं। निधानं। दीपी। तवें। विसपी ॥ २१ ॥ मगें। युद्ध। अव्व। भारी सुजाजुल्य पगं। सारथ पारथ ॥ २२ ॥ इसो। मेलांन। दीयो। पछे। छंडि ॥ २३ ॥

सुद्गलराय का पत्रोत्तर देकर सोमेश्वर और पृथ्वीराज दोनो से लड़ाई मांगना॥

साटक॥ स्वस्ति श्री सुउमेस राजन वरं। प्रिथ्राज राजं वरं॥
तौ पत्तं सुनि अव्र कग्गद नरं। षल्यंज आकूलयं॥
जाजा भंजन सेन साषस रजे। प्रातं प्रतं जुद्धयं॥
नां किज्जै तिन ठाम षचिय परं। छिम्या किमा कामनं॥
छं०॥ २४॥ रू०॥ ११॥

सोमेश्वर का अपने लड़के के बध के विषय में संशय करना॥

दूहा॥ सिसु संसी सन्हौ फिर्‌यौ। उभय काम बध बीर॥
जौ मुक्कौ षिय अघम क्रत। तौ दल सज्जि सरीर॥
॥छं० २५॥ रू०॥ १२॥

और पृथिराज के पास मुद्गलराय के पत्र का संदेसा भेजना और उसका रोस में आकर पिता के पास रण में आ मिलना॥

कवित्त॥ छल भग्गा तिय पुच्छ। तात मुक्यौ संदेसं॥
अरिन सयन संमुहौ। जुद्ध मंगन अंदेसं॥
बाल कठिन कर ग्रह्यौ। भंम रष्षन पित कागर॥
जु कछु अग्ग संभवै। सोइ किज्जै सुमंत नर॥
चढि बाल वियोगन कंत आप। सो निस रष्षै राज सिसु॥
सामंत दोव भय प्रात वर। चढि चल्ल्यौ संग्राम किसु॥
छं०॥ २६॥ रू०॥ १३॥

कवित्त॥ सुन्यौ राज प्रथिराज। तात मुक्यौ संदेसं॥
भयौ रोस जाजुल्य। तुल्य पावक्क सुभेसं॥

११ पाठान्तर-स्वस्तश्री। सोमेस। प्रथीराज। प्रथिराज। तो। अवन। पलयंच। पलयंज। प्रात। प्रातं। नां। किजै। टांम। पिचिय। छिमया॥

१२ पाठान्तर-दोहरा। ससो। फर्यौ। उभै। मुकै॥

१३ पाठान्तर-भगा। पुछ। पुछि। मुक्यो। सदेस। अरिय। सैनं। अदेस। रषन। यु। आप। निशि। रष्यौ। राजै। सामत। राज वर। चढे। चल्यौ। संग्राम॥

कवन वत्त कुछ तत्त। मत्त मंड्यौ अरि ग्रेहं
मच्छिम जुद्ध बिन मुद्ध। करे नद्द सेव सनेहं ॥
बुलाइ अप्प भर अप्प सँग। चढि चल्यौ निसि अध्य मद्द ॥
पत्तौ सुजाइ तिन ठाम तब। सुष्प सयन सोमेस सद्द ॥
छं० ॥ २७ ॥ रू० ॥ १४ ॥

पृथ्वीराज का पिता के पास पहुंच कर सब सेना को सोते हुए पाना और सोमेस का उससे न बोलना ॥

गाथा ॥ पत्तौ पहु ढिग तातं। दिष्यौ सोतथ्य सव्व सेनायं ॥
न बुल्यौ सोमेसं। प्रथिराजं मिष्टयं बैनं॥ छं० ॥ २८ ॥ रू० ॥ १५ ॥

उसका पिता को निद्रा में और शत्रु की सेना को देख भाल कर उत्तापित होना ॥

अरिल्ल ॥ महा तेज तन जग्गिय बीरं। तात दिष्षि निद्रा घन बीरं ॥
पछिलोइ अरि सेन सँपत्तिय। ज्यों अरियं घन बीज पिवत्तिय ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ १६ ॥

और उस का शत्रु की सेना पर झपटना ॥

दूहा ॥ सयन छंडि पनि सयन सों। झपट्यौ इन उन मान ॥
तीनर तीतर देषि कै। झपट्यौ जानि सिचांन॥ छं० ॥ ३० ॥ रू०॥ १७ ॥

पृथ्वीराज और मुद्गलराय का युद्ध ॥

कवित्त ॥ जनु कि सिंघ बन गज्जि। झपटि करि कराजि जुथ्थ पर ॥
जनु कि अंजनिय जात। पात बनु दिष्षि अथ्थवर ॥
जनु कि भीम भीमंडा। दंत दंतीय उड्डारज ॥

---

१४ पाठान्तर–सुन्या। पावका। करे। बुलाय। नप। आप सग। चल्यो। निशि। अधमड। पत्तो। ठांम सुप। सैन। सोमेस जहां ॥

१५ पाठान्तर–सो सव्व सच्छ सेनायं। तथ। सब। नद्द। बुल्यो। पृथीराजं ॥

१६ पाठान्तर–बीर। दिपि। निद्रा घठ बीर। पछिलो। अरि। संवत्तिय सपंत्तिय। पिवंत्तिय ॥

१७ पाठान्तर–सैन छंडि पति सैन सो। उनमांन। तीनर। जानि।

जनु कि गरुड़ गल गज्जि। बज्जि पंनग बहु पारन ॥
तिम सूर झपटि सोमेस सुअ। जनु अकास तारक तुटिय ॥
जम जोर रोर अरि उड्डुवन। सार मार सत्तुन जुटिय ॥
छं० ॥ ३१ ॥ रू० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ उन मुंगल मद्दि दूंद। दूंद देवन जनु पारस ॥
हर बल कार बल कोर। गोल मंडिय भर भारस ॥
गहिर गुंग नीसांन। जांनु बद्दल गुर गज्जिय ॥
बरन बरन बैरष्य। इंद्र धनुषह सम रज्जिय ॥
हथ नारि धारि आतस अनंत। सोर रोर अंमर उडिय ॥
जानै कि बिरचि बारधि लहरि। मद्धि म्रजाद बूडन छुटिय ॥
छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ १९ ॥

ऐसे पृथ्वीराज के अन्य सूर मुग़ल के योद्धाओं से लड़े ॥

गाहा ॥ दून रंजे रन रंगं ॥ सूरं नूरं अंगं अमितायं ॥
जनु * बिरच्चे मद्धिय अहिंद्रं ॥ बज्जं पात घाव अंगायं ॥
छं० ॥ ३३ ॥ रू० ॥ २० ॥

कन्ह का मेवात्तियों से युद्ध ॥

कवित्त ॥ उत्तमंग दर थौर। ठौर रष्षन मेवातिय ॥
सीस नाद्द मुंगल्ल नरिंद *। कच्छर कुप्यौ घन घातिय ॥
दूत सु कन्ह नरनाह। दाह दावालन जल्लिय ॥
चक्क बक्क धरि धक्क। जानि मद्दना रंभ झल्लिय ॥
षग दंत संत उरझे जनुकि। मेघ बुंद सर कर छुटिय ॥
सरजाल हाल अनहद ध्वनि। तिमिर पसर रविकर मिटिय ॥
छं० ॥ ३४ ॥ रू० ॥ २१ ॥

---

१८ पाठान्तर-कर। कानि। जुय। अजनी। दिपि। हय धर। गनि। बजि। तिम सु सूर सोमेस सुत्र। जुटिय। उडघन ॥

१९ पाठान्तर-मद्दी। गहर। नीसान। जांनु। रजिय। जानै। म्रयाद ॥

२० पाठान्तर-दूर। नूर। अग। * अधिक पाठ है। अहिद्र ॥

२१ पाठान्तर-ठौर। ठौर। मेवातीय। नाद। मुंगल। * अधिक पाठ है। घातीय। जलिय। जानि। रंभ। झलिय ॥

कैमास का पठान बाजीदखां से युद्ध ॥

कवित्त ॥ वाम अंग पठान। विरंचि बाजीद † सुपंनिय ॥
उन उप्पर कैमास। हुकम प्रथीराज सुदिंनिय ॥
सीस नांइ बल बाइ। लाइ लग्गिय घन रोसन ॥
तीर तुबक्क तरवारि। तच्छि निक्कै उर ओरन ॥
अनहद्द नद्द नीसान धुनि। लगी लाग मारू बजन ॥
रन तूर तूर तबलन चवक। गहक चक्क रज्जे रजन ॥
छं० ॥ ३५ ॥ रू० ॥ २२ ॥

कूरंभ से राम गूजर का युद्ध ॥

कवित्त ॥ दष्षिन दिसि कूरंभ। नांम नरेन निवद्दिय ॥
तिन पर गुज्जर राम। करन दस दूवस वद्दिय ॥
समर अमर परैं सूर। चंपि जन्न जांनि उच्चारिय ॥
लोह लहरि बुड़ि जाँचि। मुररि मरदांन मुच्छारिय ॥
अन भंग अंग तन तन तकहिं। पकहिं वकहिं बज्जहिं बलिय ॥
अनभून भूत भिरैं भून भुव। समर ओन सलिता चलिय ॥
छं० ॥ ३६ ॥ रू० ॥ २३ ॥

इतने में पृथ्वीराज का रण के बीच अचानक जा पहुँचना और घोर युद्ध का होना ॥

छंद भुजंगी ॥ जयं जाय पत्तौ प्रथीराज जुद्धं। करी सव्व सेना विरुद्धं विरुद्धं ॥

---

२२ पाठान्तर-वांम। पठांन। सुयं। नीय। प्रथीराज दनिय। नांइ। वाइं। लाइं। तवक। तरवार। निकसैं। उंरन। नीसान। हक्क। रजे ॥

† वाजीदखां नामक पठान मुहम्मदगोरी का एक बड़ा लड़ाका सेनापति अर्थात् जनरल था और परदेशी सिपाही उसके विभाग में थे। यह वृत्त इस महाकाव्य में जो मुसलमानी भाषा के शब्द आते हैं उनके विषय की शंका मिटाने के लिये बड़ा उपयोगी है ॥

२३ पाठान्तर-दषिन। दिशि। नाम। नारि ननिवट्टिय। गुजर। रांम। दूजल। वटिय। परैं। परे। जांनि। लोहरि। जांहि। मरदान। मुछारीय। तकहिं। वकहिं। हकहिं। भिरें। भुय। झलिय ॥

बजे ताल कालं मद्दा मल्ल बीरं । दुहुं बांह सेना बिरुडं सुधीरं ॥ छं० ॥३७॥
गद्दी बाग गठ्ठी कढे लोह तत्ते । मनौं कारनं काम दुग्गा विरत्ते ॥
स्वयं सूर सूरं मद्दी में पचारैं । लगैं लोह अंगं वकैं मार मारैं ॥ छं० ॥ ३८॥
उडै छिंछ स्रगं मनौं अग्गि ज्वाला । हलैं जानि पत्तं बसंतं तमाला ॥
झिनं केति षग्गं हिनंक्केति ताजी । *भिलैं भूप भूपं मद्दा बीर गाजी ॥छं० ३९॥
छिनक्कैति षग्गं तुटैं सीस लल्लै । उठैं छिंछ हृच्छं मनो दाव पल्लै ॥
लगैं गुर्ज सीसं हृसे टोप टुट्टैं । मनो दंग दाहं लगैं वंस फुट्टैं ॥ छं० ॥४०॥
हृसे मंच छ्ची लगे लाग षग्गे । प्रलै काल ष्यालं मनौं बीर जग्गे ॥
छं० ॥ ४१ ॥ रू० ॥ २४ ॥

मुद्गलराय की फौज का तितर बितर होना और उसका पकड़ा जाना ॥

कवित्त ॥ कहुं तिमत्त धर धुकत । लुकत कहुं सुभट घात छल ॥
टुकत काल कहुं पच । कुकन कहुं सेन पाइ जल ॥
रुकत समर भट भीर । धुकत धर मद्द छक्क जनु ॥
सुकत कंठ श्रम समर । ढुकत कातर फौजन तनु ॥
हूम* सोमेस राइ चहुंवान सुत्र । अरि समुंद जल बढ्ढयौ ॥
चढ्ढिय जिहाज जस जढ्ढि षल । मुंगल मद्दि गद्दि कढ्ढयौ ॥
छं० ॥ ४२ ॥ रू० ॥ २५ ॥

कवि का सोमेश्वर की सेना और घोड़े हाथी आदि की यज्ञादि अनेक उपमाओं के साथ प्रशंसा करना ॥

दूहा ॥ चमकत सार सनाह पर, हय गय नरभर लग्गि ॥
मनौं हृच्छ परि झिंगिनिय, करत केलि निसि जग्गि छं० ॥४३॥ रू०॥२६॥

२४ पाठान्तर-दुहू । बाह ॥ ३७ ॥ गठी । मनों । काम । दुगा । महोमे । महोमै । पचारै । लगै । वकै । मारै ॥ ३८ ॥ छिंछि । अगं । स्रगं । मनों । ज्वाल माला । सवंतंत माला । झनकैति । हिनकेति । भिले । * सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं ॥ ३९ ॥ झिनकैति । तुटै । शीश । लल्ले । उठै । दछं । मनों । फल्लै । लगै । लगं । शीशं । टुटै । मनो । लगे । फुट्टै ॥ ४० ॥ मत । पित्री । मानों । वीर ॥
२५ पाठान्तर-कहु । तमंत । तमत्त । कहु । कहु । यात्त । टुकत । कहुं । कहु । सेंन । मद । हुकत । तन । * अधिक पाठ है । राय । चहुवान । चठिय । मूंगल्ल ॥
२६ पाठान्तर-निर । झिंगनां । निशि ॥

कवित्त ॥ जग्गि सूर सोमेस। सेन सज्यौ हयगय नर ॥
राका निसि जनु उदधि। चढैं चक्कोर चंद पर ॥
सुन्यौ श्रवन दूह बैन। लरहि प्रथिराज पलनदल ॥
पुच्छ चांपि जनु सिंह। दिष्षि प्रजल्यौ नयन झल ॥
दइ बंब दुतिय जनु गगन रव। कुटि अंदुन गज गुरि चल्लिय ॥
दीसंत मत्त छक्कें नयन। मनों प्रबत पंषह हल्लिय ॥ छं० ॥ ४४ रू०॥२७॥

दूहा ॥ ठनक घंट घुघ्घर धमक, धमक धरनि बर पाइ ॥
झमकत सुंड लपेट भट, भरत देत गिर राइ ॥ छं० ॥ ४५ ॥ रू० ॥ २८ ॥

दूहा ॥ पग संगर जंजीर जरि, कज्जल गिरवर अंग ॥
दिग्घदंत बग घन बरन। झरत मदंग छदंग ॥
छं० ॥ ४६ ॥ रू० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ पब्बय कै पावस जलद, दल दारुन उठि कोर।
दिष्षावत दल बद्दलन, भर हर परत अमोर ॥
छं० ॥ ४७ ॥ रू० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ दंति पंति कज्जल बरन, दिष्षि ढलंमल ढाल ॥
करहरंत वैरष लषी, दल सोमेस भुआल ॥
छं० ॥ ४८ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ उठी कोर हय गय प्रबल, दिठ्ठ दुअन कुटि धीर ॥
दिषि धनु धर हयनारि धरि, भरकि भरहरी भीर ॥
छं० ॥ ४९ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

छंद विराज* ॥ कियं चित्त पंगे। घटं घट्ट भंगे ॥
उनंगे सुषग्गे। मनों बीर जग्गे ॥ छं० ॥ ५० ॥

---

२७ पाठान्तरा-रन। चढै। सून्यो। बैनं। पृथीराज। पुछ। दिपि। प्रज्जरै। वई। दइय। अद्दुन। छक्कि। छकैं। मनों। पंपक्कि ॥

२८ पाठान्तर-ठनक। घुघर। धमक्कि। पाय। राय ॥

२९ पाठान्तर-कजल। दिग्ध। दिघ। सदंग ॥

३० पाठान्तर-दिषावत। दिषावै। दल बल दलन ॥

३१ पाठान्तर-दंत पंत। दिषि। ढल मल। वैरषलकी ॥

३२ पाठान्तर-हय दल। देषि धनुष हय नारि धरि। फरक्कि ॥

* इसी समय के रूपक २२ की टिप्पणी के साथ इस रूपक को भी ध्यान में लेना चाहिए ॥

रसं वीर लग्गे । बढैं अग्ग अग्गे ॥
डिगैं नाहि डिग्गे । महा सोर भग्गे ॥ छं० ॥ ५१ ॥
परैंके अक्कग्गे । न वैरीन सग्गे ॥
तजै नाम षग्गे । ... ... छं० ॥ ५२ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

गाथा ॥ जग्गेयं जुध वानं । कुंभे यंनं कंकलं कायं ॥
दंतं मुष्ष करेयं । वाछंतं वीर सुभटायं ॥ छं० ॥ ५३ रू० ॥ ३४ ॥

रण में मरे और घायल कैसे पड़े दीखते थे और कौन कौन योद्धा किस किस से घायल हुए और मारे गए ॥

कवित्त ॥ हय हिंसहिँ गज चिकरि । भगर सम दिषि कुलाहल ॥
वलि पंषिनि बेताल । नंदि नंदिय भोलाहल ॥
गिद्धि सिद्धि किलकंत । ईस मुंडावलि संधय ॥
हकि कँमंध पर टुट्टि । चढी देवी दल मंधय ॥
उपमान तास कवि चंद कहि । सुभन सनाह सुकालनिय ॥
जाने कि कृष्ण वृंदावनह । रास रमै निसि ग्वालिनिय ॥
छं० ॥ ५४ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥ *जहँ वाजीद पठान । सघन षुरसान षान तहँ ।
हय कटि दुव तंडीर । उभय कम्मान तानि सह ॥
उंच कद्दर कंधान । कोट गिरि दांन लंब भुअ ॥
रकत कांन मुष चष्षु । कंक अनसंक अवनि धुअ ॥

---

३३ पाठान्तर-इतर पुस्तकों में इस छंद का नाम रसावल या रसावला लिखा है परन्तु हमारी सं० १६४० की पुस्तक में शुद्ध नाम विराज है वह हमने प्रयोग में लिया है क्योंकि यहां पर उसका ही लक्षण मिलता है अर्थात् वह दो लगुगु का होता है और रसावल दो गुलगु का होता है ॥ घट । मनों । वढ़े । अगें । अगे । अग हिगें । नाहि । सोर वगे । फरेके अक्कगे । सगे । तजै । नांम ॥

३४ पाठान्तर-कुंभेयन कंकलं कादं । दंदं मुष । सुभटाइं ॥

३५ पाठान्तर-हिंसहिं । हिंसहि । दिषि । पंषिन । गिद्ध । सिद्ध । संधिय । कमंध । परि । तिहि उपमान । उपमांन । निकि ग्वालिनीय ॥

भरि बांह कांन निलि लोह मुठि। दिष्षि षवासति ओट करि ॥
ओडन समेत संनाह सम। सर सुविधि फुट्टिग निकरि ॥
छं० ॥ ५५ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ धुकत धरनि षावास। कोपि कयमास क्रात कर ॥
वज्र घात बलिबंड। हनिग तरवारि टोप पर ॥
टोप टुट्टि सिर फुट्टि। सम सुसंनाह चीर हुअ ॥
बष्षर पष्षर तुट्टि। तुट्टि हय षंड परिय जुअ ॥
जय जया सद्द आयास हुअ। सुमन सघन उप्पर झरिग ॥
देष्षंत कद्दर करिबार वर। सेन सघन त्रिडुरि डरिग ॥
छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

जहँत रेन धर धरन। तहँत बड गुज्जर रामह ॥
तहँ मुगल रषन समर। संग घल्लिय सिर सामह ॥
तुरसबींध सिर टोप। फुट्टि षुप्परि रत वुठ्ठिय ॥
तहां उठिग इक बीर। जानि जमरांन सुरुठ्ठिय ॥
तरबारि तेज नारेन हनि। धर असंध तुट्टिग धरह ॥
अनभूत इष्ट अवसान बढि। करहि देव वंदनु वरह ॥
छं० ॥ ५७ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

कवित्त ॥ जहां मंगद मरदांन। कन्ह तहां जांनि नाग भुअ ॥
मिले तक्कि तरवार। झारि उभ्भारि सीस दुअ ॥
मेल्लिय मांगद सीस। टोप कट्टिय सिर धारिय ॥
नर नांचै कटि कट्टि। अद्ध अद्धं करि डारिय ॥

३६ पाठान्तर–जहा। बाजीद पठान। तहं। तहां। दुअ। चगु। भिरि। मिलि छोह। दिषि।

३७ पाठान्तर–केमास। बलिचंड। त्रुट्टि। बषर। पषर। त्रुट्टि। त्रुट्टि कें षंड परिय जुअ। जे जया। हुय। दिष्यंत। बिंडुरि डरिग।

३८ पाठान्तर–जहान। जहन। धरत। तहात। तहत। गुजर। रांम। तहां। मुंगल। रष्यन। घत्तिय। सामह। विधि। सेर। वुट्टिय। उठग। ईक। जानि। यमरान। जमरान। त्रुट्टिग। अवसांन ॥

धर गिरत मंत माह्न मरद । हय षंधा अस्विवर जरिय ।
जै जया सद्द सुरपुर भयौ । द्रुम सुक्रन्द ह्वै धर परिय ॥
छं० ॥ ५८ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

कवित्त ॥ कन्ह कटत ह्वै धरनि । करनि जिन जिन मारं मचि
वह्वै दुहथ तरवारि । कंक छवि लप्पटाइ तचि ॥
उडनहि हथ पग न्यार । सीस हक्कारि धर धावहिँ ॥
हंस हंस कौ मिलहि । माल अच्छरि कै नावहिँ ॥
अदभूत भयानक भगर सम । लगर लाग लग्गिय रनह ॥
हंकार हक्क कल कूह मचि । जयं सबद मच्चिय घनह ॥
छं० ॥ ५९ ॥ रू० ॥ ४० ॥

जयजयकार का उपमाओं के सहित वर्णन ॥

कवित्त ॥ मुषनि बहि हंकारि ।नलब टंकार लाग षगि ॥
बजि भेरी भंकार । धार झंकार षाग षगि ॥
कुहि सीर संकार । लुहि भंडार धीर मुनि ॥
धुकहि धज्ज झंडार । झुकहि संडार मार धुनि ॥
अचरिज्ज अवनि अंमर चरनि । बरनि कवि कहा सब सकय ॥
समरंग दुदल पिष्षिय सुभट । जकय केय कुक्कुय हकय ॥
छं० ॥ ६० ॥ रू० ॥ ४१ ॥

छंद तोटक* ॥ भमरावलि छंदय चंद कलं । पढि पिंगल अच्छिर जे त्रिमलं ॥
वजई झनकार सुअस्सि घनं । षह तुंमर रिझ्झिय नाद धुनं ॥
छं० ॥ ६१ ॥

३९ पठान्तर-जहां । मरदांन । तहां नर नाह कंन्हक । कमकि वाहि पग झट्ट । झारि उभारि सीस दुअ । मोल्हिय । मंगद । शीश । धारीय । नर नांहै असि कट्टि । यट्टु अट्टु करि डारीय । जरिय ॥

४० पाठान्तर-मार मचि । उडहि । हक्कहि । अछरि । भयांनक । लगिय । जय ॥

४१ पाठान्तर-वहि । धंज ॥

झननं कढि षग्ग कला दुसरी। प्रगटे जनु विज्ज षहं पसरी॥
उपमा तिसरी असि वैठि चयं। फिर नागनि नाग मनौं षचयं॥
छं० ॥ ६२ ॥

जु करै दल दोइय तीर मरं। वच्चै जनु टिड्डिय सेन परं॥
दुतिई उपमा कवि यौं मनयी। किय अंगन चंद निसा जगयी॥
छं० ॥ ६३ ॥

जु चहं चह चंचक वज्जि घनं। कि नचै उपमा अग ढूंस जनं॥
जु फिरै गज गुंजत रोस चढं। षच वद्दल जानि किवाड़ वढं॥
छं० ॥ ६४ ॥

किसु रोपिय झुंडय सूर रनं। कि सुभै सुवसंत षजूरि जनं॥
जुषरै बरनो घन अच्छ वरं। झुलरै च्चिय चांपि विपिठ्ठ करं॥
छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

जु वहै सिर उप्पर राम सरं। सु मनौं अरिविंदन भौंर भरं॥
गज सीस सिरीन जु छिंक परी। कच अंगन इंद वधू बिथुरी॥
छं० ६६ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

कुटि चक्र लगे गज कुंभ जिसे। मनु वद्दल पै सत चंद जिसे॥
दुअ हथ्थ गुरुजन सीस जरो। दधि भाजन ग्वालिन कोरि धरी॥
छं० ॥ ६७ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

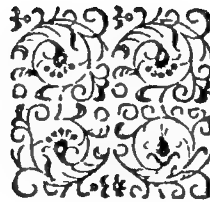
जु कियौ दल दोउन दुंद जुधं। मिलअंत सुदूंषिन दिष्षि उधं॥
षिसयौ दल मुंगल मार मरं। बढिई प्रथिराज नरिंद कुरं॥
छं० ॥ ६८ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

४२ पाठान्तर—* इस छंद का नाम इतर पुस्तकों में भमरावली लिखा है सो अशुद्ध है किन्तु वह तोटक वा त्रोटक नामक है—इनमें इतना ही अतर है कि तोटक चार ललगु का होता है और भमरावली पांच का॥ अछिर। बजी। रिझिय॥ ६१॥ फिरै। नागसि। मनो॥ ६२॥ तीरन मार। षहे। अपार॥ दुती उपमा कवि यों मन लगि। कि भगन चंद निसा महि जगि॥ ६३॥ त्रहं त्रहं। चढंत। जांनि। बढंत॥ ६४॥ कि रोपिय। अछ॥ ६५॥ उपर। मनो॥ ६६॥ मनो। हय। गुरजन॥ ६७॥ सुजुद्ध। मिलंत। रंपिनि। दिष्षिय। उद्ध। षिस्यौ। मरोर। बढी। नरिंदह। कोर॥ ६८॥

पृथ्वीराज की विजय ॥

दूहा ॥ भई जीत सोमेस सुअ, लियै मुगल गज मेलि।
सोधि षेत सब दिघ्घ लहु, बीर बरंनिय केलि ॥ छं० ॥ ६९ ॥ रू० ॥ ४३ ॥
रन सुद्धिय क्रुद्धिय तजिय, घाइल लीन उठाइ ॥
भये सूभट जे अंत तन, दाघ दिघ्घ तन ताई ॥ छं० ॥ ७० ॥ रू० ४४ ॥
हुअ डेरा नौवति बिहसि, पंच सबद दरबार ॥
जिन भट लग्गे सस्त्र तन, तिन तन कीनिय सार ॥ छं० ॥ ७१ ॥ रू० ४५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके मेवाती मुगल कथा नाम अष्टम प्रस्तावः ॥ ८ ॥



४३ पाठान्तर-जीति। दिघ ॥
४४ पाठान्तर-दाघ दिघ ॥
४५ पाठान्तर-निहसि। कीनीय ॥

अथ हुसेन कथा लिख्यते ॥



(नवां समय)



संभरिनरेश (पृथ्वीराज) और ग़ज़नी के शाह (शाहबुद्दीन) से कैसे बैर हुआ इसका वर्णन ॥

दूहा ॥ संभरि वै चहुआंन वै, अरु गज्जन वै साह ॥

कहौं आदि किम बैर हुअ, अति उतकंठ कथाह ॥

छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥*

शहाबुद्दीन के भाई मीर हुसेन के गुणों और उसकी वीरता की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ बंधव साहि सहाव । मीर हुस्सेन षान धर ॥

निज्ज वान सु प्रमान । वान नीसान बधै सुर ॥

गान तान सुज्जान । बाहु अज्जान वान वर ॥

भेव राज परवान । उच्च जस थान जुझ्झ भर ॥

उद्दार चित्त दातार अति । तेग एक वंदै विसव ॥

संक्रंत साहि साहाव तिन । तेज अजै जयमंत अव ॥

छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

---

१ पाठान्तर—चहुआंन । गजन । साहि ॥

* हमारे पास की सं० १६४७ वाली पुस्तक में इस प्रथम रूपक के नीचे तो इसमें लिखा दूसरा रूपक ही लिखा हुआ है परंतु उसके किनारे पर यह दोहा और लिखा हुआ है सो हम को क्षेपक दीखता है—दूहा ॥ आनंदिय गंधर्व तव, अहो सुनहि द्रिग जेन । अति विचार कथन कथा, विवर कहौ वर वेन ॥

२ पाठान्तर—साहाव । हुसेन । वान । निज । वांन । प्रमांन । षांन नीसांन बंधे । गांन । तांन । तान । सुज्जान । सुज्जान । आज्जान । वान । परमांन । परवांन । उंच । थांन । जुझ । उदार । संकंतं । अजै ॥

शहाबुद्दीन की पातुर चित्ररेषा की प्रशंसा, शहाबुद्दीन का उस पर प्रेम, मीर हुसैन का भी उस पर आसक्त होना और चित्ररेषा का भी मीर को चाहना॥

कवित्त॥ दृष्षि बधु आचार। मीर उमराव जपि जस॥
एक पाच साहाब। चिचरेषा सु नाम तस॥
रूप रंग रति अंग। गान परमान विचष्यन॥
बीन जान बाजान। आनि वत्तीसह लच्छन॥
दस पंच बरष वाचा सुबच। सुप्रसाद साहाब अति॥
आसिक्क तास हुस्सेन हुअ। प्रीति परसपर प्रान गति॥
छं०॥ ३॥ रू०॥ ३॥

शाह का यह समाचार सुनकर क्रोध करना॥

कवित्त॥ एक सुद्दिन सुविहांन। साह हुस्सेन सुबुल्लिग॥
वे काफ़र आतस्स उतँग। दह दिसि नह डुल्लिग॥
पैसंगी पासंग। लष्ष लष्षां नववाही॥
सांईं सैां संग्राम। हक्कि हैवर गुरदाही॥
गर्द्दन गुराव मच्चि मच्चि मषां। षांबवास अप्पिय घरह॥
अन चहु नाल लभ्भय रवग। करौं तुच्छ तुज्झी वरह॥
छं० ४॥ रू०॥ ४॥

हुसैन का शाह की बात न मानना और शाह का आज्ञा देना कि या तो मेरा राज्य छोड़ दो नहीं मारे जाओगे॥

दूहा॥ सुनिश्र वैन साहाब तब। प्रीत न छंडी बाम॥
कोपि कह्यौ सुरतान तब। हनौ कि छंडौ ग्रांम॥ छं०॥ ५॥ रू०॥ ५॥

३ पाठान्तर-द्रषि। बंध। स नांम। अति अंग। गांन। परमान। विचक्षन। जांन। वाजांन। आनि। लछ्छन। लक्षन। आसिक्क। हुसेन। प्रान॥

४ पाठान्तर-सदिन। हुसेन। आतस। उतंग। पासंग। लष। लषां। सांईं। सो। गद्द। अनहल। लभ्भेय। लभय। तुभ्भीय॥

५ पाठान्तर-सुनिग। छंड़िय। वांम। सुरतान। क। यांम॥

मीर हुसैन का देश छोड़ कर परिवार आदि के साथ नागौर की ओर आना ॥

कवित्त ॥ सुनिय बत्त हुस्सेन । सेन अप्पन साधारिय ॥
छंडि नयर निस्संक । संक मन साह नधारिय ॥
निसा जाम इक आदि । लई सो पाच परम गुन ॥
तरुनि पुच परिवार । सज्जि सब साज सु अप्पन ॥
परिगह सुअप्प अग्गैं करिय । षांन षांन बंधी सिलह ॥
संचह्यौ नैर नागौर इह । तजिय देस निज गंठ ग्रह ॥

छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥

मीर हुसेन का पृथ्वीराज के यहाँ आना ॥

दूहा ॥ लै परिगह हुस्सेन गय । दिसि प्रथिराज नरिंद ॥
संभरि वै संभारि कैं । मनु आयौ ग्रहदंद ॥

छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

मीर हुसैन को आदर के साथ पृथ्वीराज का बुलाना और मीर का आकर सलाम करना ॥

कवित्त ॥ पातिसाहि तदिन * नरिंद । साहि पीरोज प्रसन्नौ ॥
घर घर साहि घरंन । छिल्लि नीसान दिवन्नौ ॥
पर पठान उंचीगु । मान अगिवान अगन्नौ ॥
तिन सें रष्यौ साहि । आन गज्जन धर यन्नौ ॥
लब्भै सुमीर जंमी जहर । दुनियां दिख लगि दुष्मन थां ॥
हुस्सेन मीर सल्लाम करि । गौ चहुआनह पास थां ॥

छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥

---

६ पाठान्तर—हुसेन । छंडिय । निसक । सारीय । जांम । सादिल्लीय पात्र परम गुन । सधि । परगह । बंधिय ॥

७ पाठान्तर—हुसेन । प्रथीराज । मनो ॥

८ पाठान्तर—पातसाहि । * अधिक पाठ है । नीसांन । पठांन । गुर्मान । मांन । अंगानौ । अगानौ । मैं । रष्ये । थानौ । लभै । जु । दुनी । हुसेन सलाम ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलना और मीर हुसैन का सुन्दर दास को पृथ्वीराज के पास भेजना॥

कवित्त॥ पारधि पंथु प्रथिराज। रमै षट्टू पुर पासह ॥
षचिल चीस चिचक्क। सखिष रेसम धर रासह।
सो कुरंग फंदेत। डोरि बहु वंधि विनानिय॥
जाम एक दिन आदि। मध्य षेलै मृगयानिय॥
आयौ बसाचि हुस्सेन तहँ। सुन्यौ राज मृगया समय।
बुल्लाय दास सुंदर षिचिय। पठ्यौ प्रत्ति चहुआन नय॥
छं० ॥ ९ ॥ रू० ॥ ९ ॥

सुन्दर छाया का स्थान देख कर मीर का डेरा डालना॥

दूहा॥ उत्तम ठाम सु छांह जल, करि मुकाम बलवीर॥
षुल्लि डेरा बिधि बिधि बरन, तहां बयट्ठौ मीर॥
छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ १० ॥

हरम (स्त्रियों) का डेरा पीछे की ओर डाला।

दूहा॥ डेरा हरम सुपिट्ठ रषि, चिहु पष्षां बर मीर॥
पासबांन कुल सील सम, पास रष्षि बर नीर॥
छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ११ ॥

सुन्दर दास का पृथ्वीराज के पास जाना, पृथ्वीराज का मीर का कुशल समाचार पूछना और उसका सब हाल कहना॥

दूहा॥ सुंदर दास सुपास गय, जहां राज प्रथिराज॥
मिलिय बिबिधि पुच्छै कुसल, कहै मीर सब साज॥
छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १२ ॥

९ पाठान्तर–पारिधिरा। पृथीराज। षटूपुर। तीस। फंद्रैत। विनानीय। जाम मधि हुसैन। तहा। बुलाय। सुंदरि। षिचीय। चहुआन। रय॥
१० पाठान्तर–उतिम। ठाम। मुकाम। बर बीर। बयठौ॥
११ पाठान्तर–पिठि। चिहुं। पषा। पासवांन। शील। रषि॥
१२ पाठान्तर–यु पास। राजन। पूछै। पुछी॥

मंत्री, कैमास, चन्द, पुंडीर आदि को बुलाकर पृथ्वीराज का पूछना कि क्या करें क्योंकि दोनों तरह विपत्ति है एक शाह का कोप दूसरे शरण आए को न रखना धर्म विरुद्ध है ॥

दूहा ॥ बोलि मंत्रि कैमास बर, बोलि चंद पुंडीर ॥
राव पजून प्रसंग नर, गोयंद रा गुन धीर ॥
छं० ॥ १३ ॥ रू० ॥ १३ ॥

दूहा ॥ मेछ मुष देषे न उतपति, विपति परी दुहु क्रंम ॥
इक सरना इक रप्पइन, इक घर रष्पन भ्रंम ॥
छं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ १४ ॥

चन्द का सलाह देना कि जैसे शरणागत होने पर विष्णु भगवान ने मत्स्य रूप धर कर पृथ्वी को अपनी सींग पर रक्खा था वैसे ही आप भी कीजिए ॥

गाथा ॥ मनसा धारि विरंचं । दछिन पग अंगुरी नषयं ॥
संभू मंन नरिंदं । सत जुगं आदि कीन पैद्दासं ॥
छं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ १५ ॥ *

कवित्त ॥ संभू मन बरदान । लियौ तप जोर ब्रह्म पषि ॥
सरन रष्षि वसुमती । होत कलपंत काल मषि ॥
नारद धरत बताइ । मच्छ रूपं जगदीसं ॥
दस हजार जोजनं । श्रृंग रचि ऊरध सीसं ॥

---

१३ पाठान्तर-मंत्र । पुंरीर । रा पजूंन । गोइंद ॥
१४ पाठान्तर-यक । रपन ॥
१५ पाठान्तर-* यह रूपक और इसके आगे वाले १६ और १७ रूपक संवत १६४० की प्राचीन पुस्तक में नहीं है किन्तु इतर आधुनिक पुस्तकों में हैं ॥
१६ पाठान्तर—रषि । मछ । स्रग ॥

करि रस्त नाव तिहि पर धरे । अनर्कपित जिम गैन धुञ्म ॥
ऐसेक चंद कहि पीथ सम । गरुत्र्य तंन न्टप अरग ध्रुत्र्य ॥
छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ १६ ॥ *

जैसे शिवजी गले में विष धारण किए हैं वैसे ही मीर को आप भी रखिए यह चन्द ने कहा ॥

दूहा ॥ संकर गर विष कंद जिम । वडवा अगनि समंद ॥
तै रष्खहु चहुआंन तिम । षां हुस्सेन कहि चंद ॥ छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ १७ ॥*

सुन्दरदास से पूछना कि सब स्त्रियां तो सुख से हैं और शाह से झगड़ा होने की बात क्या सच है ?

दूहा ॥ मिलिय सु सुंदर दास तहँ । पुच्छिय विधि विधिवत्त ॥
कहौ सुषी त्रिय सब विवर । विरस साहि सैां सत्त ॥ छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ १८ ॥

सुन्दरदास का कहना कि हूर की ऐसी एक पातुर शहाबुद्दीन के पास थी उसको लेकर हुसेन यहां चौहान की शरण में आया है ॥

दूहा ॥ पात्र एक साहाब संग । हूर नूर गुन गान ।
लै आयौ हुस्सेन दूत । सरन तक्कि चहुआंन ॥
छं० ॥ १९ ॥ रू० ॥ १९ ॥

चन्द का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना कि जैसे मोरध्वज के यहां अर्जुन ब्राह्मण बन कर शरण गया, भगवान ने सिंह बन कर मांस मांगा, शरणागता द्रौपदी का चीर बढ़ाया, वैसे ही तुमने शरणागत को रखकर क्षत्रिय धर्म की रक्षा की तुम्हारे माता पिता धन्य हैं ॥

---

१७ पाठान्तर-तै । रष्यौ । चहुआंन ॥
१८ पाठान्तर-तहां । पुछिय । सुषि । त्रीय । विसर । सों ॥
१९ पाठान्तर-संग । गान । हुसेन तब । तकि । चहुआंन ॥

कवित्त ॥ मोरद्धज के सरन। गयौ दुज होइ सु अर्जुन ॥
सिंह रूप धरि कन्ह। मंस मंग्यौ करि गर्जन ॥
दैन चीर अरधंग। न्रपति सिर कर वत धास्यौ ॥
देषि महा सतवंत। प्रगट गोविंद उचास्यौ ॥
धनि धंनि मात पित धंनि तुअ। सरनागत ध्रंम तैं रषिय ॥
पिथ्वी कहंत कविचंद सौं। संभरि बै तिहि सम लषिय ॥ छं० ॥२०॥ रू० ॥२०॥

शाहहुसैन का पृथ्वीराज से मिलना, पृथ्वीराज का आदर देना ॥

दूहा ॥ गयो राज सामंत सम। मिलिग साह हूसैन ॥
आदर न्रप किन्नौ अदब। विवह प्रसंनिय बैनं ॥
छं० ॥ २१ ॥ रू० ॥ २१ ॥

हुसैन को दक्खिन की ओर नागौर की जागीर देना।

दूहा ॥ लिये सथ्य प्रथिराज पहुं। गयौ सुपुर नागौर ॥
धरमायन कारथ†थत्रत्त। दिसि दच्छिन दिय ठौर ॥
छं० ॥ २२ ॥ रू० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का हुसैन को घोड़े हाथी आदि देना और दोनों का परस्पर प्रेम बढ़ना ॥

दूहा ॥ भोजन भष्षे विविध वर, बहु आदर विधि कीन।
मान महानम रष्षि रज, राज उभय हय दीन ॥ छं० ॥ २३ ॥ रू० ॥ २३ ॥
दूहा ॥ धरिय डोरि हुस्सेन सिर, है बंधिय हैसाल।

---

२० पाठान्तर-देन। धंनि धनि। ध्रंम। सों ॥
* यह रूपक हमारी सं· १६४७ वाली प्राचीन पुस्तक में नहीं है पर आधुनिक पुस्तकों में है ॥
२१ पाठान्तर-नृप। प्रसनीय ॥
२२ पाठान्तर-सथ। प्रथीराज। पहुं। ध्रंमादन कायथ। दछिन। दपन। दै ॥
† धर्मायन कायथ=पृथ्वीराज का दरबार मुंशी था। उसका काम है कि जो जो दरबार में आवें उनको उनकी नियत की हुई ठौर पर बैठावे। ऐसा बरताव अभी तक राजपुताने में प्रचलित है ॥
२३ पाठान्तर-भष। मांन। रषि ॥ उभै ॥

[illegible] दिन, [illegible] ॥ छं० ॥ २४ ॥ रू० ।

कवित्त ॥ [illegible] । तोन प्रति पगत तीन सत ॥
षुरासान कमांन । पंच परमान मान जार ॥
गज सु एक सिंघलीय । सेत तन मद्द रति जस ॥
गुंजत मधुर कपोल । गज्ज भज्जौ प्रेमल सच ॥
हय पंच साजि माकति सुनग । ऐराकी कुल उच्च जिहि ॥
अंदोल वज्ज इक लाल दोय । रिंझ समिप्पिय राज सचि ॥ छं० ॥२५॥

दूहा ॥ राजन रप्पिय सब्ब दूत, प्रनमेज प्रति मंत ।
उभै परसपर गंठि परि, संचिय पेम सुमंत ॥ छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ २६ ॥

शहाबुद्दीन का चार दूत अजमेर भेजना ॥

दूहा ॥ च्यारि दूत अजमेर पुर, थिर मुक्केसु विहान ।
आषेटक बन देषि कै, तक्कि गए चहुआन ॥

पृथ्वीराज का हुसैन को कैंथल, हासी, हिसार का पर्गना देना और शिकार में साथ रखना, यह सब समाचार दूतों का शहाबुद्दीन से कहना ॥

कवित्त ॥ आषेटक चहुआंन । पास हुस्सेन संपत्तौ ॥
बार आइ चहुआंन । भाइ घन ताहि दिपत्तौ ॥
नीति राव कुटवाल । तास ग्रह राज सु अप्पिय ॥
*वर कैथल हांसि हिंसार । राजपट्टो दै थप्पिय ॥
इह चरित देषि सब दूत तब । जाइ संपते साहि दर ॥
चरबर चरित जुग्गिनी पुरह । कहिय बत्त सें मुष्षं धर ॥ छं० ॥२८॥ रू०॥२८

---

२४ पाठान्तर–धरी । हुसेन । चीन्हे । पठवै ॥

२५ पाठान्तर–तीन । पतंग । षुरासांन । कंमान । पच परमांन मांन जिहि । सिंघलीय । मद रति । गज । भजै । परिमल । है । उंच जिहि । दुइ । रीज ॥

२६ पाठान्तर–रषिय । घन ।

२७ परठान्तर–थिह । मुके । मुक्कै । विहान । चहुआंन ॥

२८ पाठान्तर–चहुआंन । हुसेन । संपत्तो । आय । भाइ । दिपंतौ । नीतिराज । कुटवार । * अधिक पाठ है ॥ कंथल । हांसी । हिसार । पटो । थपीय । जाय । साहिवर । चवर चरित । जुगिनी । मुष ॥

अथ चित्ररेषा समयौ लिष्यते ।



(ग्यारहवां समय ।)

चित्ररेखा की उत्पत्ति पूछना ॥

१ पुच्छि चंद वरदाइ नें । चित्तरेष उतपत्ति ।
षां हुसेन पावास कहि । जिम लीनी असपत्ति ॥ छं० ॥ १ ॥ रू० । १ ।

शहाबुद्दीन के विक्रम का वर्णन ॥

त ॥ गज्जनेस अवदेस । साहि पलांन कुमचं ॥
वदक खामि भेद्दरा । छंडि गप्पर छिनि आच ॥
जल जोवन साहाव । दीन दुरँगे करि गिन्निय ॥
हिंदवान मेछान । थान थानह करि गिन्निय
बजि विषम वाद सुरतान प्पन । साहि बदीं सब दीन पति ॥
धनसंक [illegible]क मनु लंकपति । जनु जोवन तन रवि पति ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

शहाबुद्दीन का अरब ख़ां पर चढ़ाई करने की इच्छा कर सरदारों से पूछना ॥

कवित्त ॥ दिषि आरब सुरतांन । दिष्टि आलोकि बंक सुअ ॥
आकंपै दिसि उद्धि । अचल चालंत चित्त दुअ ॥
सज्जि सेन चतुरंग । जंग अनभंग विचारिय ॥
वोलि दान षुरसान । पान जित्ते अधिकारिय ॥

---

१ पाठान्तर-पुछि । वरदाईनें । उतपति । लीनिय । असपति ॥ * इस समय में [illegible] हुसेन षां के कहे अनुसार जैसे शहाबुद्दीन ने चित्ररेषा को प्राप्त किया था सो वर्णन [illegible] है ।
२ पाठान्तर-पलाणि । पलांन । कसंबि । बदकर । सांमि । दुरंगे । [illegible] हिंदवांन । मेछान । थान । लिनीय । सुरतांन । सहावदी । मनौ । जन

मारूफ षान तत्तार षां । षान षान सेरिन सुनर ॥
काली बलाइ कलहंत रिन । बोलि बीर पच्छे सुनर ॥
छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

अरब ख़ां नवता नहीं है इसलिये उस पर चढ़ाई होनी चाहिए यह आज्ञा दी ॥

दूहा ॥ * आरव पति अर सिंध तट । बिन सलाम सुरतान ॥
तिन उप्पर सज्जिय सयन । कहर छंडि फुरमांन । छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

चढ़ाई की सेना की संख्या ॥

कवित्त ॥ सत्त पंच वाहन्न बिसाल * । लष्प दुइ तुरी लपिन्ना ॥
आरब्बी सैं पंच । लष्प इक सोधि सुलिन्ना ॥
काबिल्ली उर तेज । रोम रोमी पंजाबी ॥
लोहानी जल वान । सेष गोरी आरब्बी ॥
लष एक लष्प लष्षां मुहा । पारेवह जिन पंष लिय ॥
चालंत कटक गोरी प्रबल । भूमी चाली पंचनिय ॥ छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

सेना की धूम का वर्णन ॥

छंद भुजंगी ॥ चली पंषिनी सथ्थ चौसट्ठ थानं । चली आगळी सुदंती प्रमानं ॥
तिनं दंत कंती तडित्ता समानं । .... छं० ॥ ६ ॥
धजा पंति फैरंत भादव्व भारं । झबक्कै मनों सूर संगो कि सारं ।
बजै चंग चंबान गज्जै कहूरं । बज्जैं नद्द सद्दं पपीहं ददूरं ॥ छं० ॥ ७
धरं बंक य..र उद्धौर घंटं । बरं बैर भंजै धरै चिच वट्टं ॥
अगें चल्लियं अग्गिवानं समीरं । तिनं पुठ्ठ पुरसान षां बंधि भीरं ॥ छं० ॥ ८

---

३ पाठान्तर-दिसि वर आरव साह । दिष्ट । सुप । डुलि । सजि । विचारिय । षांन पुरसांन । षांन । जिते । अधिकारीय । मारुफ । षांन । ततार । षान षान । रन । बलाय । पछैं

४ पाठान्तर-सिद्ध । नट । सलांम । सुरतांन । उपर । सजिय । फुरमांन ॥ * आरब नामक कोई छोटा राजा वा सरदार उस समय सिंधु तट पर के देश का पति था कि जिस पास चित्ररेखा थी ॥

५ पाठान्तर-सत । वाहन । * अधिक पाठ है ॥ लषु । दोइ । लषीजा । आरवी । षां सें । लष जुगिनी । कबिली । वान । शेष । गोरी । आरवी । लष । लषां । मुहां । पारेवाह पंलिय ॥

धरे छत्र सीसं विराजंत गोरी । किधौं पंति हेवं विचें विज्जु डोरी ॥
वकीथान थानं छुटं मानु पट्टं । जगी जोग जालं उलट्टे सुथट्टं ॥ छं० ॥ ९ ॥
चलै आरवं उप्परं साजि सज्जी । कमट्टं विठं उथ्थलं सेस दज्जी ॥
विंटे गट्ठ गोव्वार केथान थानं । मनौं सागरं वीच वड्डानलानं ॥ छं० ॥ १० ॥
वजे थान थानं सु चंवाल दूरं । गहे पग्ग मीरं वदै मुष्प कूरं ॥

शाह का निसुरति ख़ां को अरब ख़ां के पास भेजना कि चित्ररेषा को देकर पैर पर गिरे तो हम क्षमा करदें ॥ ॥

वरं मोकले सेलनि सुत्ति षांनं । कहौ आरवं लग्गि पायं विहानं ॥ छं० ॥ ११ ॥
दियौ चित्तरेषा लियौ दंड दोनं । भिरै षेत मोसौं कहूं अज्ज कोनं ॥
षस्यौ तापना आरवं निठ्ठ निठ्ठं । गयौ कादरं धीरजं दिठ्ठ दिठ्ठं ॥ छं० ॥ १२ ॥

अरब ख़ां का सादर आज्ञा मानना और चित्ररेषा को देना स्वीकार करना ॥

दियौ जाइ फुर्मान निस्सत्त ईसं । लियौ आरवं आदरं नाइ सीसं ॥
दई चित्तरेषा सितावी सुडोरं । तिनं उप्परं गुंज भौंरान वोरं ॥ छं० ॥ १३ ॥
इकं सेत हथ्थी दु ताजं इराकी । पलंगी रजक्की धरें अंत पाकी ॥
सतं एक सष्षी दई चित्तरेषा । बनी सुद्ध बानै हरं मद्धि नेषा ॥
छं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ ६ ॥

---

६ पाठान्तर-सय । चौसठि । थान । अंग । सदंती । प्रमानं । तडिता ॥ ६ ॥ पत्ति । फहरत । ...वा । झवक्के । मनो । गजै । बजै ॥ ७ ॥ पट्टोर उधोर । घट । वर । वटं । अगे । चलियं । ...नं । पुठि । पुरसांन ॥ ८ ॥ धरं । गौरी । थानं २ । छुटे । पट्ट । मानो । न उट्टै सुरानं ॥ ९ ॥ ... । सजी । कमठ । उथल । दभी । विटे । गढ । कै । थान थानं । वडवानलान ॥ १० ॥ थान... । गहे । मुष । निसुरति । पानं । कहौं ॥ ११ ॥ भिरे । मोसूं । कहो । कौनं । तापनं । ... निठं । दिठि दिठं ॥ १२ ॥ फुरमान । निसुरत्त । नाय । शीशं । सडोरं । उपर । भवरांन । ... ॥ १३ ॥ हथी । आरव । अराकी । रजकी । सष्षे । वाने ॥ १४ ॥

निसुरति षां का अरब खाँ को शाबसी दे कहना कि तुमने शाह के बचन माने और हिन्दु धर्म्म को न मान कर म्लेच्छ कुल कर्म को धारण किया सो ठीक किया ॥

कवित्त ॥ कह्यौ साहि जो बचन । सोइ तुम काज सुधारयौ ॥
तेइ बचन सति होइ । हिंदु ध्रम्मं न बिचारयौ ॥
मेछ धर्यौ कुल क्रंम । जोगि ग्यानह जिम धारहि ॥
सेवक मत्त सुभाइ । देन आलम नाकारहि ॥
षुरसान षान सुरतान पति । दल बद्दल पावस मिलिग ॥
चतुरंग सज्जि चौरंग मिलि । सिद्ध चरित सिद्धन चलिग
छं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ ७ ॥

शहाबुद्दीन का सेना समेत सजकर चलना ॥

कवित्त ॥ गज्जनेस आएस । सूर चतुरंगन सज्जिय ॥
बीर बाल ससि वड्डि । मोह पूरन जिम भज्जिय ॥
करक निसा दिन मकर । सेन बढ्ढी तिम चंगिय ॥
मिलि अनंग आनंद । रंज आनंद सुजंगिय ॥
द्वादस सहस्स बाहन समह । दोइ लष्य सज्जे सुभर ॥
पारन सुअम्य आरंभ दल । चल्यौ साह मधि दुप्पहर ॥
छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ ८ ॥

चलते समय शाह का चित्त चित्ररेखा में मत्त गयंद की भांति लगा हुआ था ॥

गाथा ॥ चित्तं मत्त गयंदं । पुंतारं नथ्थि उत्तरयं ॥
त्यों चित्ररेषय चितं । सुविहानं मंडियं नेहं ॥ छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ ९

७ पाठान्तर-सोय । साज सुधारौ । होई । ध्रंम । बिचारौ । धरौ । कर्म्म । ग्रं ग्यांनह । सुभाय । सुभाई । पुरसांन पांन । सजि ॥

८ पाठान्तर-आएक्ष । चतुरंगति । सजिय । भजिय । निशा । बढी । चंगीय । जंगं समुंद । समद । दोय । लषु । सजे । दुपहर ॥

९ पाठान्तर-चितं । मत । पुतारं । नथि । उत्तरयं । चित्तं ॥

सेना की शोभा का वर्णन ॥

छंद पद्धरी ॥ चढि चल्यौ साहि साहाब क्रूर । चल चले समुद सरिता सुपूर ॥
सुरतान छच अप अप समांन । सुर पंच बीर बर पत्ति षांन ॥ छं० ॥ १८ ॥
काली बलाइ षेरन वितंड । षो अरिन फौज पारंत दंद
तत्तार षान पुरसान षांन । षो सामि ध्रंम रापन गुमांन ॥ छं० ॥ १९ ॥
मारूफ षांन मारु मरद्द । दल मंझि जानि नरसिंघ सद्द ॥
तत्तार षांन निसुरत्ति बीर । आरब्ब मरद मझ्झैं गभीर ॥ छं० ॥ २० ३० ॥
महबूब षांन महबूब साह । दल मंझ अर्क उग्यौ उगाह ॥
वर बीर महन मझ्झी मरद्द । लज्जा कि अंग चंद सु सरद्द ॥ छं० ॥ २१ ॥
कंकर कराव मैदान भान । जादेत षेष सा ध्रंम षान ॥
पानी प्रवाह ढिग साह थूर । झिलि मिलिग सिद्ध अंगा कहूर ॥ छं० ॥ २२
नीसान जोर वज्जे सु नद्द । भद्दव कि मास घन गरज सद्द ॥
हल्ल विरद्द वाने विवेक । जाने कि बन्न रति राज नेक ॥ छं० ॥ २३ ॥
गज सीस चौंर सेतह सुवाह । हरद्वार गंग कुट्टं प्रवाह ॥
चमकंत नाल उप्पम सु जोह । ससि बाल जानि घन घटा सोह ॥ छं० ॥ २४ ॥
सिप्पार तीस ते पठत मुष्य । साध्रंम हथ्थ तसबी सुरष्य ॥
है परष परष साईं सुकीय । कुट्टंत अरम जनु किरन कीय ॥
छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ १० ॥

शाह की सेना की प्रबलता देख कर अरब का अपना बल भंग होना कहना ॥

दूहा ॥ सुनि अवाज आरब मुषसु । बर उत्तर तिय मुंद ॥
बल भग्गौ इन भंति बर । ज्यौं तत्त तवे पर बंद ॥ छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ ११ ॥

---

१० पाठान्तर-साह । सपूर । सुरतांन । समान । समानं । पति । षांन ॥ १८ ॥ बलाय
पुछा- पान पुरसांन षांन । सांमि । ध्रम्म । गुमांन ॥ १९ ॥ मारूप षान । मरद । मझि । जांनि
आदव- । ततार षांन निसुरति । आरब । मझैं ॥ २० ॥ षांन । मझ्झ । अगाह । मझी । मरद
मुक्यो ।रद्द । सरद ॥ २१ ॥ मैदांन । मैदांन । भांन । ध्रंम । षांन । षांनी ॥ २२ ॥ नीसान
लिये । रू० । भदव । गहर सद । हले विरद वांनें । जाने । वन । ऋतुराज ॥ २३ ॥ शीश । कुट्टं ।
॥ ३६ ॥ उ न ॥ २४ ॥ सिपार । मुप । हय । रप । सांईं । अरस ॥ २५ ॥
असहनन । ठान्तर-आवाज । समुप । उतरिय । भगो । तये ॥

अरब ख़ां का आज्ञा मानकर चित्ररेषा को भेंट में देना ॥

अरिल्ल ॥ आरब षान तत छन मानिय। ज्यौं सुकिया पिय आग्या जानिय ॥
लै फुरमान बंदि सिर धारिय। चित्ररेष दीनी सो नारिय ॥
छं० ॥ २८ ॥ रू० ॥ १२ ॥

चित्ररेषा वेश्या के रूप का वर्णन ॥

श्लोक ॥ वेस्या वंछित भूप रूप मनसं, शृंगार हारावली ॥
सोयं सूरति लच्छि अच्छित गुनं, वेली सु कामावली ॥
का वर्नैं कवि उक्ति जुक्ति मनयं, त्रैलोक्य मं साधनं ॥
सोयं बाल तिरत्त उष्ट विद्रुमं, का मोद जोगेश्वरं ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ १३ ॥

श्लोक ॥ रूपं नहि कटाच्छ कूल तटयो, भायं तरंगं वरं ॥
हावं भावति मीन हासित गुनं, सिद्धं मनं भंजनी ॥
सोयं जोग तरंग स्रवति वरं, त्रीलोक्य ना ता समा।
सोयं साहि सहाव दीन ग्रहियं, आनंग क्रीड़ा रसं ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ १४ ॥

विना युद्ध चित्ररेषा को लेकर गोरी का लौट आना ॥

॥ अंग सुलच्छिन हेम तन। नगधरि सुंदरि सीस ॥
गोरी ग्रहि गोरी गयो। विना जुद्ध बुझि रीस ॥
छं० ॥ ३० ॥ रू० ॥ १५ ॥

चित्ररेषा के साथ शाह के आदर और प्रेम का वर्णन ॥

दूहा ॥ जिम जिम साह सु आदरिय। तिम तिम बढ्ढिय पेम ॥
क्रम क्रम फल गुन वद्ध हुय। वेली नमैं सु तेम ॥ छं० ३१ ॥ रू० १६

१२ पाठान्तर-पांन। छन। मांनिय। सुकीया। जांनिय। फुरमांन। धारीय॥
१३ पाठान्तर-सोयं। लछि। अछित। वेली। वरनै। युक्ति। मन। तिरत। जोगे
१४ पाठान्तर-नत। कटाक्ष। तटयो। मान। यसित। भजनी। स्रवति। त्री। जंग
मनयं। त्रिलोक्य। नह। समां। साहाव। ग्रहीयं॥
१५ पाठान्तर-लछिन। शीश। ग्रहि। युद्ध॥
१६ पाठान्तर-आदरीय। बढिय। जिम २ फलगुन बाधहुय॥

शहाबुद्दीन का क्रोध करना और अरब खां को पृथ्वीराज के पास भेजना कि भला चाहो तो हुसैन को निकाल दो ॥

छंद पद्धरी ॥ संभरिय बत्त साहाब दीन । उच्चरिय बैन अति कोप कीन ॥
मुक्कलौं दूत चहुआंन पास । कढौ हुसैन जो जीव आस ॥ छं० २९ ॥
बोलयौ षांन तातार तब्ब ॥ संजाव षांन उमराव सब्ब ॥
पुच्छी सु बत्त किय दूत सार । थप्पी सु बत्त षुरसान बार ॥ छं० ॥ ३० ॥
आरब्ब सेष लीनौ बुलाइ । वैवड्ड बड्ड बुद्धी सुताइ ॥
बंछै सुपेम सक लेहिं साहि । लज्जी अनंत आदब्ब थाहि ॥ छं० ॥ ३१ ॥
उच्चस्यौ बैन साहाब भास । आरब्ब जाहु चहुआंन पास ॥

अरबखाँ से कहना कि पहिले हुसैन के पास जाना जो वह पातुर को दे दे तो हम क्षमा कर देंगे, जो वह गर्व करके न माने तो पृथ्वीराज के पास जाकर हमारा पत्र देकर समझाना ॥

अप्पै जु पाच हुस्सेन जाम । लैआउ सस्स हुसेन ताम ॥ छं० ॥ ३२ ॥
मुक्कों सुगुनह कीनौ पसाव । मैं दीन पच्छ करि षिमा दाव ॥
छंडे न पाच हुस्सेन गब्ब । चहुआंन मिलै सामंत सब्ब ॥ ३३ ॥
जंपियौ बयन चहुआंन साइ । कढौ हुसेन नागौर थाइ ॥
अजीज षांव तुम सच्च उच्च । लिष्यौ सु पच हम परम रुच्च ॥ ३४ ॥
कढौ हुसेन तुम देस अंत । बंछौ जो पेम मानौं सुमंत ॥
रष्यो हुसेन जो असु परेस । चतुरंग सेन सज्जौं बिसेस ॥ छं० ॥ ३५ ॥

---

२९ पाठान्तर–उच्चरीय । मुक्कलों । कढौ । हुसेन । जों ॥ २९ ॥ ततार । तब । सब । पुछी । कीय । षुरसांन ॥ ३० ॥ आरब शेष । वृद्ध वृद्ध । बुद्धीय । वछै । पिम्म । लेहिं । वज्जी । आदब । थाह ॥ ३१ ॥ उच्चरयौ । वैंन । आरब । हुसेन । जाम । संस्स । हुसेन । ताम ॥ ३२ ॥ मुक्यौ । मैं । पछ । हुसेन । यब । सब । अब ॥ ३३ ॥ बेन । साइ । थाइ । अजीजषांन । सच उच । लिषे । रुच ॥ ३४ ॥ वछौ । तौ । यु । मानो । रषौ । जौ । तौ चतुरंग । सजौ ॥ ३५ ॥ करौ । ॥ ३६ ॥ उचरि । गुंमान । कहै । मांनों । जाहु । शीघ्र । वांम । करौ । निग्राम ॥ ३७ ॥ सय । असहनन । नरयान । रय । आरब । दोय । पप ॥ ३८ ॥

भजौं सुनैर नागौर देस । जीवंत बंदि बंधौं नरेस ॥
सामंत सूर सब करौं अंत । बंधौ सुबंध सा नहनि कंत ॥ छं० ॥ ३६ ॥
उच्चरि गुमान तन वत्त थूल । सपेप कहैं मानौं स भूल ॥
तुम जाउ सिघ्र नागौर वास । मति करौ एक पिन घर विश्राम ॥ ३७ ॥

तीन सौ सवार और रथ देकर अरब ख़ां को रवाना करना ॥

से तीन दीन असवार सथ्थ । आरुहन दीन नरयान रथ्थ ॥

एक महिने में अरब ख़ां का नागौर पहुंचना ॥

संचस्यो षेष आरब्ब राह । दो पष्प पत्त नागौर थाह ॥
छं० ॥ ३८ ॥ रू० ॥ २९ ॥

अरब ख़ां का हुसैन से मिलकर समझाना, हुसैन का न मानना ॥

दूहा ॥ गय आरब नागौर धर । मिल्यौ साह हूसेन ॥
भोजन भष्प सुभाव किय । विवध प्रसन्निय वैन ॥
छं० ॥ ३९ ॥ रू० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ कही वत्त हूसेन सम । जो कहि साह सहाब ॥
नह मंनिय सामंत छिय । दिय आरब्ब जबाब ॥
छं० ॥ ४० ॥ रू० ॥ ३१ ॥

अरब ख़ां का पृथ्वीराज के पास जाना ॥

दूहा ॥ गये षेष आरब्ब दर । लही षबर प्रथिराज ॥
बोलि मझ्झ मंडिय महल । सामंतन सब साज ॥
छं० ॥ ४१ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

पृथ्वीराज का सुलतान की कुशल पूछना ॥

दूहा ॥ मंझ महल आरब्ब गय । मिलि मंनिय सनमान ॥
दै आसन पुच्छिय कुसल । चाहुआंन सुलतान ॥ छं० ॥ ४२ ॥ रू० ॥३३॥

---

३० पाठान्तर-हुसेन । भष । विवह । प्रसंने । वेन ॥
३१ पाठान्तर-हुसेन । साहाव । नंह । आरब ॥
३२ पाठान्तर-आरब । षबरि । पृथीराज । मझ्झ । सामंतां । सम राज ॥
३३ पाठान्तर-आरब । सनमान । पुछिय । कुशल । चाहुवान । सुरतान ॥

अरब ख़ां का कहना कि हुसैन ख़ां को निकाल देने के लिये सुलतान ने कहा है ॥

छंद पद्धरी ॥ उच्चर्यौ वैन आरब्ब सेष । सल्लाम बहुत पति एक एष ॥
कढ्ढौ हुसेन तुम देस अंत । साहाब साहि बंछौ सुमंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
जुगमीत अच्छि उबरै न आदि । इस नाउ भाउ बहु वैन सादि ॥
जंपे सु वैन जे कहे साहि । कढ्ढी न बत्त गंभीर भाहि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शहाबुद्दीन का संदेसा सुनकर पृथ्वीराज का मुख लाल हो गया, भौंहैं चढ़ गईं ॥

संभलिय बत्त प्रथिराज मंत । त्रिकुटी कहर द्रिग रत्त जंत ॥
आरत्त मुष्प स्त्रुन स्रोन बुंद । कलमलिय कोप रोमंच जिंद ॥ छं० ॥ ४५ ॥

कैमास ने डपट कर कहा कि आर्य लोगों का धर्म सुलतान नहीं जानता इससे ऐसा कहता है, हुसैन पृथ्वीराज के शरणागत है, क्षत्री का धर्म उसे छोड़ने का नहीं है ॥

उच्चर्यौ कोपि कैमास वानि । अनासनि आर्य सिंच्यौ सुजानि ॥
आरब्ब बोल बोल्यौ विहर । सुरतान जानि जंप्यौ गहर ॥ छं० ॥ ४६ ॥
प्रति वुद्व लद्धौ प्रथिराज सूर । अतुलित्त जुद्व सामंत सूर ॥
हुस्सेन आइ प्रथिराज थान । जोधांन भ्रंम षचीय आन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

कन्ह चौहान, सूरसिंह, गोयंदराज, चन्द, पुंडीर आदि का भी यही कहना और सुलतान से लड़ने को हम प्रस्तुत हैं यह कहना ॥

जंपै सुवैन चहुआंन कन्ह । द्रिग पानि रत्त रोमंच तंन ॥
रज भ्रंम विषम सुझ्झै न साह । अनि राह जेम जंपै विराउ ॥ छं० ॥४८॥
गज्जैं न लज्ज कोपैं म्रगिंद्र । उर्गाइ्ट सूर सिर सहि न निंद्र ॥
गुरु तज्जि जंप्पि गोइंद राज । जग वैन गीर गरु बत्त साज ॥ छं० ॥४९॥
संज्वाल तेज सम तेज वान । निरभै सुनासु चंपै पयान ॥
उच्चर्यौ चंद पुंडीर कोप । आदीत भान रस दून ओप ॥ छं० ॥ ५० ॥

गज्जनौ कौन कैतुक्क सहाव। गह अत्त वत्त जंपै कहाव ॥
हुस्सैन आइ प्रथिराज थान। सरनै सुकौन कहै नियान ॥ छं० ॥ ५१ ॥
दल सज्जि सीस चंपै सुसाहि। दल भंजि ग्रहै प्रथिराज ताहि ॥

अरब ख़ां का अपना निरादर होता देख उठ आना और ग़ज़नी को कूच करना तथा शहाबुद्दीन से सब समाचार कहना ॥

मानी न षेष आरब्ब बत्त। सामंत सूर देषे विरत्त ॥ छं० ॥ ५२ ॥
आदरह मंद तजि उछौ सेष। अंगौर बदन द्रिग बहि तेष ॥
पुच्छीय जुगति नृप मह्ल जानि। उठि गर्व दुप्प मन हीन मानि ॥ छं० ॥ ५३ ॥
चढि चल्यौ सेष रह साह देस। गज्जनैं गयै मन मानि देस ॥
गय मह्ल साहि मिलि कहिय वत्त। सिर धूनि रोस करि नैन रत्त ॥ छं० ॥ ५४ ॥
उठि गयौ साह बहल मह्ल। आसंन साजि बैठो सथह्ल ॥

छं० ॥ ५५ ॥ रू० ॥ ३४ ।

दर्बार करके शहाबुद्दिन का तातार ख़ां, अरब ख़ां, मीर अस्लाम, कस्लाम, खुरासा ख़ां, रहन महन ख़ां, रुस्तम ख़ां, हाजी ख़ां, ग़ाज़ी ख़ां, जम्मन ख़ां, ग़ज़नी ख़ां, मुहब्बत ख़ां, मीर ख़ां, आदि सरदारों को बुला कर सलाह करना ॥

कवित्त ॥ सजि आसन साहाब। साह काजी मन बैठौ ॥
बोलि मक्क तत्तार। बोलि आरब दिन जैठौ ॥

३४ पाठान्तर—उचस्यौ। वेन। आरव। शेप। सलाम ॥ ४३ ॥ युगमीत। अथि। उवरें। वेंन। जंपै। कहै। भाह। नाह। ॥ ४४ ॥ तथ्य। तथ। प्रथीराज। भृकटी। आरक्त। मुप्प। श्रुत्ति। कलि ॥ ४५ ॥ उचस्यौ। वांनि। आरज्य। संच्यौ। जांन। आरव। सुरतान। जानि ॥ ४६ ॥ प्रथीराज। अतुलित। युद्ध। हुसेन। थांन। जोधांन। पित्रीय। आन ॥ ४७ ॥ जंपै। चहुआन। बुभै ॥ ४८ ॥ गजें। कोपि। मृंगेंद्र। मृगेंद्र। उतकृष्ट। नरिंद्र। तजि। जपि। गोयंद। वेंन ॥ ४९ ॥ तेजवांन। निरभैं। सतास। पयांन। उचस्यौ। ऊप ॥ ५० ॥ गजनै। केतक। जंपे। हुसेन। प्रथीराज। थांन। कोन। नियांन ॥ ५१ ॥ सजि। सीस। प्रथीराज। मानी। आरव। शेप। विरत्त। शेप। पुछ्छिय। नृप। जानि। दुप। मानि ॥ ५३ ॥ गजनैं। मांनि। धुनि। नैंन ॥ ५४ ॥ महल। सुथल ॥ ५५ ॥

मीर जमांम कमांम। षांन षुरसांन न्यान बर ॥
षांन रहंन महंनं। षांन रुस्तंम मद्दा भर ॥
हाजीय षांन गाजीय षां। षांन जमन बंधव सुचिय ॥
गजनीय षांन महुबत्ति षां। मीर षांन सब बोलि लिय ॥ छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

तातार ख़ां का कहना कि तुरन्त पृथ्वीराज पर चढ़ाई करनी चाहिए ॥

कवित्त ॥ कहै साहि साहाब। अहो तत्तार षांन सुनि ॥
जिन जुमत्ति उपज्जै। कहौ सब षांन जानि मन ॥
गौ आरब चहुआंन। फेरि आयौ सु सुनिय सब ॥
सरन रष्षि हुस्सेन। बोलि सामंत राज अब ॥
जंपिय ततार संजो सयन। हनौं राज प्रथिराज रन ॥
है गै सुबंध बंधौ रिनह। मेरे कि गहि छुट्टै सुतन ॥ छं० ॥ ५७ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

खुरासान ख़ां का तातार ख़ां से कहना कि उसके बल को भी विचार लो जल्दी न करो ॥

दूहा ॥ कहै षांन षुरसांन तब। अहो षांन तत्तार ॥
चाहुआंन सामंत बल। चिंति सुबिविधि विचार ॥ छं० ॥ ५८ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

अरब ख़ां का कहना कि उसका बल अतुल है तुम लोगों ने देखा नहीं है इससे ऐसा कहते हो ॥

दूहा ॥ कहै सेष आरब अतुल। बल सामंत नरिंद ॥
अबे न तुम दिष्षिय नयन। सजो सैन बिन बंध ॥ छं० ॥ ५९ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

शाह का बल पराक्रम का हाल पूछना ॥

दूहा ॥ कहै साहि आरब्ब तुम। कहौ सूर सामंत ॥
कहा क्रांति प्राक्रम कहा। सत्ति पयं पहु तंत ॥ छं० ॥ ६० ॥ रू० ॥ ३९ ॥

---

३५ पाठान्तर-बोल। मझ। जिठौ। जमाम। कमांम। पुरसान। न्यांन। महंनं ॥
३६ पाठान्तर-मति। ऊपज्जै। जांनि। चहुआन। स सुनिय। हुसेन। सज्जौ। हनौ। मरैं ॥
३७ पाठान्तर-कहैं। चित्त सुबुद्धि विचार ॥
३८ पाठान्तर-जे। शेष। दिषिय ॥
३९ पाठान्तर-आरब्ब। तुव। क्रांति। सत्य ॥

गज्जनै कौंन कैतुक्क सचाब। गह अत्त वत्त जंपै कचाब॥
हुस्सैन आइ प्रथिराज थान। सरनै सुकौन कह्है नियान॥ छं०॥ ५१॥
दल सज्जि सीस चंपै सुसाहि। दल भंजि ग्रहै प्रथिराज नाहि॥

आरब खां का अपना निरादर होता देख उठ आना और ग़ज़नी को कूच करना तथा शहाबुद्दीन से सब समाचार कहना॥

मानी न सेष आरब्ब वत्त। सामंत सूर देषे विरत्त॥ छं०॥ ५२॥
आदरह मंद तजि उठ्यौ सेष। भ्रंभीर बदन द्रिग वढ्ढि तेष॥
पुच्छीय जुगति नृप महल जानि। उठि गर्व दुष्य मन चीन मानि॥ छं०॥ ५३॥
चढि चल्यौ सेष रह साह देस। गज्जनैं गयौ मन मानि देस॥
गय महल साहि मिलि कहिय वत्त। सिर धूनि रीस करि नैन रत्त॥ छं०॥ ५४॥
उठि गयौ साह बद्दल महल्ल। आसंन साजि बैठौ सथल्ल॥

छं०॥ ५५॥ रू०॥ ३४।

दर्बार करके शहाबुद्दिन का तातार ख़ां, आरब ख़ां, मीर जमाम, कमाम, खुरासा ख़ां, रहन महन ख़ां, रुस्तम ख़ां, हाजी ख़ां, ग़ाज़ी ख़ां, जस्मन ख़ां, ग़ज़नी ख़ां, मुहब्बत ख़ां, मीर ख़ां, आदि सरदारों को बुला कर सलाह करना॥

कवित्त॥ सजि आसन साहाब। साह काजी मन बैठौ॥
बोलि मल्लू ततार। बोलि आरप दिन जेठौ॥

३४ पाठान्तर–उचस्यौ। वेन। आरव। शेष। सलाम॥ ४३॥ युगमीत। ग्रथि। उवरें। वैंन। जंपे। कहै। भाह। नाह।॥ ४४॥ तथ्य। तथ। प्रथीराज। भृकटी। आरत्त। मुष्य। श्रुत्ति। कलि॥ ४५॥ उचस्यौ। बांनि। आरज्य। संच्यै। जांन। आरव। सुरतांन। जांनि॥ ४६॥ प्रथीराज। अतुलित। युद्ध। हुसेन। थांन। जोधान। पित्रीय। आन॥ ४७॥ जंपे। चहुआन। बुझै॥ ४८॥ गजें। कोपे। मृंगेंद्र। मृगेंद्र। उतकृष्ट। नरिंद्र। तजि। जपि। गोयंद। वेंन॥ ४९॥ तेजआंन। निरभैं। सतास। पयान। उचस्यौ। रूप॥ ५०॥ गजनैा। केतक। जंपे। हुसेन। प्रथीराज। थांन। कोन। नियांन॥ ५१॥ सजि। सीस। प्रथीराज। मानी। आरव। शेष। विरत्त। शेष। पुछिय। न्रप। जांनि। दुष। मानि॥ ५३॥ गजनैं। मांनि। धुनि। नैंन॥ ५४॥ महल। सुथल॥ ५५॥

मीर जमांम कमांम । षांन षुरसांन न्यान बर ॥
षांन रहंन महंनं । षांन रुस्तंम मद्य भर ॥
हाजीय षांन गाजीय षां । षांन जमन बंधव सुचिय ॥
गजनीय षांन महुबत्ति षां । मीर षांन सब बोलि लिय ॥ छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

तातार ख़ां का कहना कि तुरन्त पृथ्वीराज पर चढ़ाई करनी चाहिए ॥

कवित्त ॥ कहै साहि साहाब । अहो तत्तार षांन सुनि ॥
जिन जुमत्ति उपज्जै । कहौ सब षांन जानि मन ॥
गै आरब चहुआंन । फेरि आयौ सु सुनिय सब ॥
रुरन रष्पि हुस्सेन । बोलि सामंत राज अब ॥
जंपिय ततार संजो सयन । हनौं राज प्रथिराज रन ॥
है गै सुबंध बंधौ रिनह । मेरे कि गहि कुहै सुतन ॥ छं० ॥ ५७ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

खुरासान ख़ां का तातार ख़ां से कहना कि उसके बल को भी विचार लो जल्दी न करो ॥

दूहा ॥ कहै षांन षुरसांन तब । अहो षांन तत्तार ॥
चाहुआंन सामंत बल । चिंति सुबिबिधि विचार ॥ छं० ॥ ५८ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

अरब ख़ां का कहना कि उसका बल अतुल है तुम लोगों ने देखा नहीं है इससे ऐसा कहते हो ॥

दूहा ॥ कहै सेष आरब अतुल । बल सामंत नरिंद ॥
अबे न तुम दिष्षिय नयन । सजो सैन विन बंध ॥ छं० ॥ ५९ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

शाह का बल पराक्रम का हाल पूछना ॥

दूहा ॥ कहै साहि आरब्ब तुम । कहौ सूर सामंत ॥
कहा क्रंति प्राक्रम कहा । सत्ति पयं पहु तंत ॥ छं० ॥ ६० ॥ रू० ॥ ३९ ॥

---

३५ पाठान्तर-बोल । मभ्भ । जिठौ । जमांम । कमांम । पुरसान । न्यांन । महंनं ॥
३६ पाठान्तर-मति । ऊपजै । जांनि । चहुआन । स सुनिय । हुसेन । सजो । हनो । मरैं ॥
३७ पाठान्तर-कहैं । चित्त सुबुद्धि विचार ॥
३८ पाठान्तर-जे । शेष । दिषिय ॥
३९ पाठान्तर-आरब्ब । तुत्र । क्रांति । सत्य ॥

अरब खां का पृथीराज के बल की प्रशंसा करना ॥

कवित्त ॥ इष्ट मंच उच्चार । दिष्ट उट्ठ छित इक्क थर ॥
कमन पेषि पच्चीस । भिजन सत एक इष्षि पर ॥
सहस सुभर बाढ़ंत । एक सामंत पराक्रम ॥
जासह दुष्पल करै । ताम बाधंत वीर क्रम ॥
सिर परैं सुहक्कै धर भिरै । परैं आन उट्ठैं सधर ॥
असिधार सूर उट्ठैं किलक्कि । एह पराक्रम सूर नर ॥ छं० ॥६१॥ रू० ॥४०॥

तातार खां का अरब खां की बात को हँसी में उड़ा देना, अरब खां का कहना कि अपनी आंख से न देखने से ऐसा कहते हो ॥

कवित्त ॥ हस्यौ षान तातार । एम हाजी सम वद्दिय ॥
जय छनही बिन बषत । मरन भै डरै न कढ़िय ॥
कहि आरब तत्तार । अहो सामंत न दिष्षिय ॥
अतुल तेज बल अतुल । अतुल बल देव सुरष्षिय ॥
वे साम अंस रत्ते अतुल । अतुल मत्त कैमास भर ॥
उमरा अनंत देषे अनत । अतुल बत्त पहुचै न नर॥ छं० ॥६२॥ रू० ॥४१॥

शाह का क्रोध करके तातार खां को चढ़ाई के लिये प्रस्तुत होने की आज्ञा देना ॥

दूहा ॥ कहै साहि गोरी गहअ । अहो षांन ततार ॥
काल्हि तरीक सुउंच दिन। चढि अरि सद्दौ सार ॥ छं० ॥६३॥ रू० ॥४२॥

दूहा ॥ उठि गोरी दिन्नें बहुरि । गयौ सु अंदर साह ॥
बहुरि षांन मीरं बरा । अति चंचल तुर ताह ॥ छं० ॥ ६४ ॥ रू० ॥ ४३ ॥

४० पाठान्तर-उचार। उठ। इक। पच्चीस। इषि। दुपल। तांम। परे। सुहके। उठैं। ऊठें।

४१ पाठान्तर-तत्तार। वदिय। भय। कट्टिय। काहि। दिषिय। रषिय। सांम। उंमरा। अनंत ॥

४२ पाठान्तर-काल्हि। तेरीक सुं। सधौ ॥

४३ पाठान्तर-दिनं ॥

शाह के जी में रात दिन चौहान की चिंता लगी रहना ॥

दूहा ॥ तपै साहि गोरी सबर । चित सल्लै चहुआंन ॥
　　वैरोचन की साष ज्यौं । कीटी अंग प्रमान ॥ छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ ४४ ॥

अरिल्ल ॥ जग्गत निसि झंषत सुरतानह । घरी सत्त रहि सेष प्रमानह ॥
　　जगि आयस दिय दीन निसानह । चिंता साहि चढी चहुआनह ॥
　　छं० ॥ ६६ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

सेना के साथ चढ़ाई के लिये शाह का तयार होना ॥

छंदमोतीदांम ॥ भए सुर तीन धुनक्क निसान । चढ्यौ अश्व सज्जि सिल्है सुरतान ॥
　　चढे सब षांन सु उम्मर मीर । सजे सहनाइ बजे रस बीर ॥ छं० ॥ ६७ ॥
　　बजे सब बाज भयानक भाइ । चितै हिय बुद्धि जिनें जन नाइ ॥
　　चढ्यौ सब सज्जिय सेन गरिष्ट । परी दस दिग्ग सुधूधरि दिष्ट ॥
　　छं० ॥ ६८ ॥

अशकुन होना

　　सबद सियाँन सुसेन कपोत । सनंमुष साहि दिष्यौ दल दोत ॥
　　भयौ दिसि वामिय कग्ग करार । हक्यौ दिवि धोमय धूम गभार ॥
　　छं० ॥ ६९ ॥
　　सनंमुष देषिय जंबुक सेन । विरो मिलि चंपहि भग्गहि तेन ॥
　　करें नभ उप्पर गिद्ध असंष । चवै सुर दद्द पसारिय पंष ॥ छं० ॥ ७० ॥

---

४४ पाठान्तर-चहुआंन । भृग । प्रमांन ॥

४५ पाठान्तर-जगत । जंपत । सुरतानह । सत्त । रही । प्रमांनह । निसांनह । निसानह । चहुआनह ॥

४६ पाठान्तर-मोतीदांम । निसांन । साजि । सिल्हे । सुरतांन ॥ ६७ ॥ सजे । चितें । जिनें । सजिय । गरिट्ठ । दिघ्घ । धुंधरी । दिट्ठ ॥ ६८ ॥ सिचान । वांमीय ॥ ६९ ॥ ऊपर । पसारीय ॥ ७० ॥ सुरतांन । रहो । कहु । कहो । आज । गही चल मनहु चढि सगुन ॥ ७१ ॥ भयें भयै । प्रथीराज । वलु । सामत ॥ ७२ ॥ हनो । चहुआन । गहो । मुझ । जुझ ॥ ७३ ॥ चल्यो । सुरतान । गजिय । निसान । जलं थल हूअ थरा जल चार । ७४ ॥ लप । समुझिन । सुरतान । मिलान २ । चहुवान ॥ ७५ ॥

अरब खां का कहना कि आज ठहर जाइए शकुन अच्छा नहीं है ॥

गही सुरतान सु आरब बग्ग । रहौ दिन आज सगुंन न जग्ग ॥
रहै कुछु अज्ज ननार सुदिन्न । गही चढि चल्लहु मन्नि सगुन्न ॥ छं० ॥७१॥

सुलतान का कहना कि काफ़िर चौहान को जीतना कौन बड़ी बात है जो इतना बिचार करते हो ॥

कहै सुरतान अहो तुम कूर । भयें भय म्रित्यु सु झंपहु नूर ॥
कहा बल जुद्ध करै प्रथिराज । किते बल सामत जुद्दिह साज ॥ छं० ॥७२॥
हनौं रन सूर जिके चहुआंन । गहौं जुध राज सु पंडिय प्रान ॥
कहा डर काफर दाषहु मुझ्झ । कहा भर आवध आगरि जुझ्झ ॥
छं० ॥ ७३ ॥ *
नमंनि चमंकि चल्यौ सुरतान । टमंक्किय गज्जिय नद्द निसान ॥
जल थ्थल होय थर्थ जल भार । अमग्गह मग्ग चलै गहि नार ॥ छं० ॥७४॥
मिल्यौ दूक साहन लष्ष समुंद । समुझ्झिन कंन भयो सुर मुंद ॥
चल्यौ सुरतान मिलान मिलान । बढी अति चिंत दुनी चहुआंन ॥
छं० ॥ ७५ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

शाह का चौहान की ओर जाना और दूतों का यह समाचार नागौर में हुसैन को देना ॥

दूहा ॥ गयौ साहि चहुआंन घर । दिए मिलान मिलाज ॥
गए सुचर नागौर पुर । कही षबरि सुरतान ॥ छं० ॥ ७६ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई का समाचार सुनकर सरदारों को बुलाकर सिंध तक शाह के पहुंचने का हाल कहना ॥

कवित्त ॥ सुनिय षबरि प्रथिराज । कहिय जे चरन चरित सह ॥
बोलि मंत्रि कयमास । बोलि चांमड गुझ्झ गह ॥

---

* यह ७२ और ७३ दो छंद सं० १६४७ वाली पुरानी पुस्तक में नहीं किन्तु इतर मे है ॥
४७ पाठान्तर–चहुवांन । धर । दीए । मिलान २ । सुंचर । सुरतान ॥

बोलि चंद पुंडीर। बोलि षीची प्रसंग बर॥
बोलि गज्जि गहिलौत। बोलि का कन्ह नाह नर॥
बोलेति सब्ब सामंत भर। कही बत्त सो कहिय घर॥
सामंत अंत भर सब्ब मिलि। सिंधु सुचंपिय साह घर॥
छं०॥ ७७॥ रू०॥ ४८॥

लड़ने के लिये प्रस्तुत होने का सब का मत होना॥

दूहा॥ कहत सब्ब सामंत मति। चढि दल सजो समंकि॥
सुनिव संचि कयमास कहि। करहु निसान टमंकि॥
छं०॥ ७८॥ रू०॥ ४९॥

युद्ध की तयारी होना॥

गाथा॥ भय टामंक निसानं। पत्तं निज ग्रेह सूर सामंतं॥
बाजे बज्जि अनेकं। हय मंगे राज चहुआनं॥ छं०॥ ७९॥ रू०॥ ५०॥

गुरुराम ब्राह्मण का आकर आशिर्वाद देना, बहुत कुछ दान कराना और वेद मंत्र से तिलक करना॥

छंद पद्धरी॥ आये सुनाम गुर राम राज। पढि पच मंच दुज बोलि साज॥
ग्रह नव सुदान विधि विद्व दीन। बेदंत विप्र अभिषेक कीन॥
छं०॥ ८०॥
चव सहस हेम दिय विप्र दान। असेष वेद चय साम गान॥
दिय दान भूरि पंषो सु चंड। दीनो सु अघ्य जिन हथ्य मंडि॥
छं०॥ ८१॥
जै जया जोह जंपी सु आन। मंगल सुचार चव पढ्ढि गान॥
आसिष्य वयन चहुआंन रान। गुरु राम जज्जि आहुत्त प्रान॥
छं०॥ ८२॥

४८ पाठान्तर-प्रथीराज। चरनि। कैमास। भुझ्झ। ग्रह। षीचि। गजि। सब। मिल्लि॥
४९ पाठान्तर-सुनै। मंत्र। कैमास। करहु। निसांन॥
५० पाठान्तर-पतं। गेह। सामंता। चहुआनं॥

अनेक सुवान अनेकह रंग। चढे सब मीरह सेन अभंग ॥
अनेक सुवान अनेकय वंन। समुझ्झिन बीय समुझ्झिन क्रांन ॥ छं० ॥१००॥
पयं भर अग्ग अनेक सुभार। अनेक सुजाति अनेक सुतार ॥
सिरं किय मुंडिय मुंड सुअड्ड। जुवट्टिय उट्टिय जानि अनड्ड ॥ छं० ॥१०१॥
करं तिय झंझिय रंग अनेक। फुरक्कहि झंपहि झंपह तेग ॥
चलै धर बान सुसड्डिय दिठ्ठ। अगें हय नारि अभूल गरिठ्ठ ॥ छं० ॥ १०२ ॥
अगें किय मद्द सरक्क सुभार। मनों पय चल्लत पब्बत ज्वार ॥
ढलें सिर ढाल अनेक सुरंग। फरें फरहारि उभारिय अंग ॥ छं० ॥ १०३ ॥
बरंनह झंडय मंडय जूव। मनों पट रित्ति अनंगह रूव ॥
भई पुर डंबर अंबर रैंन। जलं थल पूरि संक्रमि सेन ॥
छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ५४ ॥

सारुंड अचलपुर में सुलतान का डेरा डालना ॥

दूहा ॥ जथ्थ तथ्थ संक्रमि सयन। उंच थांन जल थांन ॥
दिय सारुंडप अचल पुर। किय मुकाम सुरतान ॥ छं० ॥ १०५ ॥ रू० ॥५५॥

कैमास का यह समाचार घड़ी रात रहे पृथ्वीराज को देना ॥

दूहा ॥ घरी सुनव निसि सेष चर। आय पास चहुआंन ॥
गये पास कैमास जपि। चरित सब्ब सुरतान ॥ छं० ॥१०६॥ रू० ॥५६॥

---

५४ पाठान्तर–मीत दांम। सुरतान। जुसजिध। बजन। घंटन। कंच ॥ ९३ ॥ गजें। मनो। भद। रद्दू। रुद्द। सकह कल। परकिय। पपर। सतांम ॥ ९४ ॥*यह तुक ए० सो० की प्रति में नहीं है ॥ करें। झलक्कत। मनो। रजिं ॥ ९५ ॥ कमांन २। मान ॥ लपें। जतिन। गति ॥ ९६ ॥ बबत। पठै। रत। नमै। जिन। कुरांन। तरुनीय। रतें। सवद्दय। करं। तांह। धमंतिय। धरें। सवांन। झलक्कत। तबलह। मांन। धरें हक। धरनाहीय। शीस। कहि। घुंघर ॥ ९९ ॥ बांन। अनेक सु। सेनय मीर। बांन। बृच। समुझि ॥ १०० ॥ हतार। जानि ॥ १०१ ॥ हट्ठिय। फरकहि। झंपय। बांन। सधिय ॥ १०२ ॥ मद। सरक। मनों। पग। चलत। पबत। ढलै ॥ १०३ ॥ मनो। रित। अनंगय। डबरे। रेणु। सेनु। ॥ १०४ ॥

५५ पाठान्तर–जथ। थांन। जलथांन। सारुंडे। मुकाम। सुरतांन।

५६ पाठान्तर–निशि। सेवचर। आइ। चहुआंन। सब। सुरतांन ॥

अरिल्ल ॥ जगि मंची कैमास महा भर। गंठिय चित्त चरित्त कढ्ढिय बर ॥
जग्गिय सथ्थ सज्ज निस सेनं। गयो राज यह सज्जि द्रुगेनं ॥
छं० ॥ १०७ ॥ रू० ॥ ५७ ॥

पृथ्वीराज का उसी समय चढ़ाई करने को तयार होना ॥

गाथा ॥ जग्गिय न्रप चहुवानं। कढ्ढियं कैमास सज्जि सुरतानं ॥
बज्जि निहाय निसानं। सजि बाधं सेन सुरतानं ॥
छं० ॥ १०८ ॥ रू० ॥ ५८ ॥

चढ़ाई की तयारी, भगवत् स्मरण तथा दान देना ॥

छंद त्रिभंगी ॥ सयनं सब्बानं, किय सज्जानं, बज्जि निहानं, नीसानं।
बंधे सिलहानं, निज निज थानं, पष्षरि पानं, असगानं ॥
निज किय तं न्हानं, दीन सुदानं, सेव समानं, हंसानं।
मंने विप्पानं, चंडी सानं, आसिष्षानं, जंपानं ॥ छं० १०९ ॥
तुलसी तिन मंजरि, चक्र तनं धरि हरिचरनां चरि, जल सारं।
गिलकी सत कंतरि, कृष्ण उरं धरि, साज सबं करि जूझारं ॥
मौजह हलहं धरि, राग तबं परि, सज्जि बगं तरि, करि ढारं।
मंगै हय राजं, साकति साजं, पष्षरि भ्राजं सुष राजं ॥ छं० ॥११०॥
हिंदू अंदाजं, तेज महाजं, कीरति काजं, कुल राजं ॥
नामं जा हंसं, उत्तिम बंसं, षुर गिरि जंसं, रजिमंसं ॥
पडु दिय आएसं, सेव नरेसं, कस्सेतं सं, उत्तंसं।
चढ्ढयौ चहुवानं, मंगे जानं, पै वामानं चंपानं ॥ छं० ॥ १११ ॥
चिंते चिंतानं, चित्त सुभानं, जग्ग ईसानं ईसानं ॥
छं० ॥ ११२ ॥ रू० ॥ ५९ ॥

---

५७ पाठान्तर—गढीय। गंठीय। कहीय। नेनं। सजि ॥

५८ पाठान्तर—चहुवानं। सुरतांनं। सज्जी कै बोध सेन सुरतांनं। सज्जि कै बांध सेन सुरतांनं। सजि कै बोध।

५९ पाठान्तर—सवानं। कीय। सजानं। वजि। थांनं। पषरि। अस पांनं। तंन्हानं। ईसानं। इसानं। विपानं। निजपानं ॥ १०९ ॥ तुरसी सिर मंजरि चक्र तनं जरि कर जुग्र अंजुरि हरि चरनं। सल। सिवं। जुझारं। मौज। हलं। वगत्तरि। कसि ढारं। है। पषर। मुषरालं ॥ ११० ॥ सदाजं। उतिम। कसेतंमं। उतसं। चढ्यौ। चढियौ। पैवामनं ॥ १११ ॥ जग। सानं। इसान ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज का सवार होना ॥

कवित्त ॥ चितं ईस चहुआंन। चढ्यौ हय सज्जि सुआवध ॥
बोलि सूर सामंत। बान सज्जे सुबान जुध ॥
जय हर ! जंपे राज। चल्यौ थप्परि है कंधं ॥
जै मन्निय है राव। करी कसि मुष ऊरद्धं ॥
घुंःत धरा पुर पुर विहर। करिय लोह दंतै क्सक ॥
नाचंत सेन पैरव सुथल। धरनि ध्ंम धुज्जिय धसकि ॥
छं० ॥ ११३ ॥ रू० ॥ ६० ॥

पृथ्वीराज का मीरहुसैन के डेरे में आना, मीरहुसैन का अपने साथियों के साथ तयार होकर पृथ्वीराज को सलाम करना ॥

कवित्त ॥ गयौ राज चहुआंन। साह डेरा हुस्सेनह ॥
सुनी षबरि बर बीर। सज्जि आयौ सथ्थैं सह ॥
करि गोसल्ल पवित्त। होइ चिंत्ते रहमानं ॥
बंधि सिलह है संगि। बीर बज्जे नीसानं ॥
चढि साह सज्जि सथ्थिय सयन। सीस नम्मि सलांम किय ॥
देषे सुबीर विकसे सुमन। बर सनमान अतिंत किय ॥
छं० ॥ ११४ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

पृथ्वीराज और मीरहुसैन के मिलकर चलने का वर्णन ॥

छंद गीता मालची ॥ चढि चल्यौ राजं सेन साजं, बीर बाजं बज्जए ॥
नद्दं निसानं सजे बानं, गोम गाजं गज्जए ॥
फौजें हलक्की बीर बक्की, सूर जक्की जंभरं ॥
बिरदैत बीरं जुद्ध धीरं, आय भीरं धर धरं ॥ छं० ॥ ११५ ॥

६० पाठान्तर-हे। सजि। सूद सब्बान। बांन। सबांन। जुद्ध। जै। हय। मंत्री। उरधं। करिय। दंत लोहं। पयरव। धरनि ताम। धुजिय ॥

६१ पाठान्तर-चहुवांन। हुसेनह। सजि। सथं। चिंत्यो। बजे। निसांनं। सज। सथी। नांमि। सलांम। सनमांन। अतित ॥

असमंस हासं साइ आसं, उच्च भासं अज्जरं ॥
लीके सुबच्छं सुद्ध कच्छं, छूअ गच्छं धीढरं ॥
सजि वान पथ्थं दंत अथ्थं, राज सथ्थं संमिलं ॥
चढ़ै सबल्लं ढाल ढल्लं, गज्ज मल्लं झुझ्झयं ॥ छं० ॥ ११६ ॥
घंटा सुघोरं भेरि भेरं, तयं तोरं सद्दयं ॥
संषं सबद्दं नीर नद्दं, सूर बद्दं बद्दयं ॥
धर पाइ धक्की हे पुरक्की, गैग हक्की पष्परं ॥
उड्डी सुरेनं मुंदि गेनं, आइ सेनं सद्धरं ॥ छं० ॥ ११७ ॥
गिड्डी सुतथ्थं चली सथ्थं, स स रथ्थं अच्छरं ।
निरषैं सुवीरं निज्ज नीरं, अस्स हीरं मच्छरं ॥
पुट्टैं सभीरं बंधि सभीरं, साइ भीरं संभरं ।
सेनं सहस्सं तेय दस्सं, झुभ्भ जस्सं धिद्दरं ॥ छं० ॥ ११८ ॥
नारद्द नद्दं बीर बद्दं, गोम सद्दं तद्दयं ।
सामंत सूरं चढे कूरं, जुद्ध भूरं जद्दयं ॥
सथ्थं सँगारं मंस हारं, ना उचारं जैकरं ।
ओनं सभष्षी भू चरष्षी, षेचरष्षी षेच्चरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

सुलतान के चरों का सुलतान को जाकर समाचार देना कि शत्रु की सेना एक योजन पर आगई ॥

दूहा ॥ चरित लष्ष साहाब चर। गए पास सुरतान ॥
सजी सेन सामंत पति। आयो जोजन थान॥ छं० ॥ १२० ॥ रू० ॥ ६३ ॥

---

६२ पाठान्तर-बजए। नर्द। निसांनं। गजए। हलकी। बकी। जकी। विरट्टैत। युद्ध। सांइ। धंधरं॥ ११५॥ साइं। उच। अजरं। सुवछं। कछं। गछं। धिठरं। वांना। पथं। अथं। सथ। चढे। सवलं। ढलं। गज। मलं। झुझयं॥ ११६॥ सदयं। बदयं। धकी। पुरकी। गहकी। पष्पर। उडी। सदेने। आय। सधरं।॥ ११७॥ सतयं। सथं। रथं। अछरं। निरष्पै। निरषं। निज। अस। मछरं। पट्टैं। साय। सहसं। दसं। झुझ। जसं। ढ्रिदुरं॥ ११८॥ नारद। तदयं। तद्दुयं। युध। जदयं। सथं। शांगारं। संगारं। जैकरं। सभषी। चरषी। षेचरषी॥ ११९॥

६३ पाठान्तर-* सं० १६४७ की में इसका यह पाठ है-मिलि भूचर षेचर सकति। लष। सुरतांन। थांन॥

सुलतान की सेना की तयारी का वर्णन ॥

छंद विअष्परी ॥ सुनि चरित्त स हाम तासचर। बोलि मीर उमराव सहा अर ॥
दिय निरघात घाव नीसानं। चल्यौ सेन सज्जै सव्वानं॥ छं०॥१२०॥
बाजिच वीर अनेक सुवज्जे। धर पडिहाय सुगोमह गज्जे ॥
उग्यौ सूर चल्यौ सुरतानं। बज्जि निहाव नाल गिरि वानं ॥
छं० ॥ १२१ ॥
फौज सुपंच सजी साहावं। उलल्यौ सेन समुद्दह आवं ॥
दच्छिन दिसा सज्जि तत्तारं। दिसि वांई षुरसान सुधारं ॥
छं० ॥ १२२ ॥
हाजिय राजिय गाजिय षानं। सनमुष सेन सजी सुरतानं ॥
मीर जमांम षांन कंमानं। महवति मीर पुट्ठि सजि तामं ॥
छं० ॥ १२३ ॥
षान महस्सम रुस्तम षानं। मद्धि फौज रज्जे सुरतानं ॥
सहते वीस वीस सजि फौजं। तुंबा पंच रचे अहवौजं ॥
छं० ॥ १२४ ॥
चिहुपष्षां गज घूमहि डंमर। हथ्थ नारि गिर बांन असंबर ॥
रिन रन तूर घोर नीसानं। भेरी स्रृंग गरुड थन थानं ॥
छं० ॥ १२५ ॥
नफ्फेरी चिय बिध सुर डंडं। जोमष पट्ट वजे घन ढंडं ॥
झावत झुझ्झ डहक्क डहक्किय। दैबर हींस दरक्क गहक्किय ॥
छं० ॥ १२६ ॥
गज चिक्कार फिक्कार सबद्दं। तंदुल तबल म्रदंग रबद्दं ॥
जंगी वीर गुंडीर अनेकं। बाजिच अनेक गने को वेगं ॥
छं० ॥ १२७ ॥
फौज पंच साजी साहावं। मीर अनेक गने को नावं ॥
देस देस मिलि भाष अनंतं। तवीयन नाम अनेक गनंतं ॥
छं० ॥ १२८ ॥

फौज पंच सजि चल्यौ जु साहं । गज्जैं धरनि गैंन पुर गाहं ॥
सारुंडै सज्ज्यो दिसि वामं । पद्धर सद्धर उत्तिम ठामं ॥
छं० ॥ १२९ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

सारुँडे के बाईं ओर सजकर सुलतान का खड़ा होना ॥

। ॥ उत्तिम पंथरु पुट्ठि जन । लष्षी जीय सुथान ॥
सारुंडौ दिसि वांम दै । सजि ठ.ढौ सुरतान ॥ छं० ॥ १३० ॥ रू० ॥ ६५ ॥
उड्डि रेन डंवर अमर । दिष्यौ सेन चहुआन ॥
सुनिगज्जांन वाजिच वज्जि । सजे सीस असमान ॥ छं० ॥ १३१ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

सुलतान की सेना देखकर पृथ्वीराज का मीर हुसैन की ओर देखना, हुसैन का अपने सरदारों के साथ तयार होकर पृथ्वीराज को सलाम करना ॥

वित्त ॥ देषि सेन सुरतांन । नैंन चहुआंन मद्याभर ॥
सज्जि फौज हुस्सेन । सेन सब मीर बीर बर ॥
रूमी षां कंमांम । वेग हुस्सेन समथ्थं ॥
षां दलेल दिषिनीय । जुद्ध करि करै अकथ्थं ॥
कासिम्म षांन करीम षां । षोजा कासिम काज सुध ॥
सिल है सुसब्ब लिय समय सजि । करि सलांम किय सीसउध ॥
छं० ॥ १३२ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

---

६४ पाठान्तर-उमदा । निघात । चढ्यौ । सज्जे ॥ १२० ॥ वज्जे । गज्जे । आयैा । वजित्र १२१ ॥ समुद्र कि । दपिन । सजि । पुरसांन । सधारं ॥ १२२ ॥ हाजीय । राजीय । गाजीय । रतानं । जमाम । पान । कमानं । पुठि ॥ १२३ ॥ मधि । रज्जे । तेईस । ठुंवा ॥ १२४ ॥ चिहुं । पां । मर । हय । वान । असंवर । रिनतूर । नीसान । नफेरी । त्रिविधि । पट । आवध । भुम्फ । हक । डहक्किय । हय । गहक्किय ॥ १२६ ॥ चिक्कार । फिकार । सवदं । रवदं । गुंडीर । अनत ॥ २७ ॥ सज्जी । मीर अनेक अनेक सनावं । चाप अनेकं । नाम करे सुविवेकं ॥ १२८ ॥ सु । यु । ज्जे । सज्यौ । पधर । सधर । ठामं ॥ १२९ ॥

६५ पाठान्तर-उत्तम थलन्नरु । लषी । थांन । वांम । सुरतान ॥

६६ पाठान्तर-उडि । मवर अवर । दिषी । सुने । असमान ॥

६७ पाठान्तर-सुरतान नेन । चहुवांन । सज्जि । हुसेन । कमाम । हुसेन । समथं । दषनी । करीय । अकाय । कासम्म पांन । पोजा काश्यप । सव । सय सज्जि । किय सलांम । करि सीस ॥

मीर हुसैन का कहना कि आपने हमारे लिये कष्ट उठाया है तो हमारा सिर भी आपके लिये तयार है देखिए कैसी लड़ाई लड़ता हूं, पृथ्वीराज का कहना कि इसमें आश्चर्य क्या है मैं भी आज तुम्हें ग़ज़नी का सुलतान बनाता हूं॥

कवित्त॥ कहै साह हुस्सेन। सु ि चहुआंन जुझ्झ वत॥
आज सीस तुम कज्ज। सेन साहाब पँडों पत॥
सो कज्जै साहस्स। करिग प्रथिराज सरन भ्रम॥
हौं उज उंसू अज्ज। करौं राजन अकथ क्रम॥
जंपै सु राज प्रथीराज तब। कहा अचिज्ज जंपौ तुमह॥
अप्पौं सु कह गज्जन पुरह। सद्दि सेन साहाब गह॥
छं०॥ १३३॥ रू०॥ ६८॥

मीर हुसैन का सलाम करके बाईं ओर खेला सजना, पृथ्वीराज का अपने सरदारों को आज्ञा देना कि तुम लोग मीरहुसैन की सहायता करो और सामंतों का आज्ञा पालन करना॥

कवित्त॥ करि सलाम हुस्सेन। अनी बंधी दिसि बाईं॥
सजरा बंधे कंठ। सहं सज्जे थन थाईं॥
बोलि राज प्रथिराज। बीर जद्दव जामामी॥
मद्दन सीह परिहार। सूर गुज्जर रामानी॥
तीकंम बोलि तारंन भर। बगारीय देवह सुअन॥
मँडलीक बोलि परसंग सुअ। जीहराज जंपै सुगुन॥
छं०॥ १३४॥ रू०॥ ६९॥

---

६८ पाठान्तर–हुसेन। झुझ। कज। पंडो। कजे। साहस। प्रथीराज। ध्रमं। हौं उज जसुं ग्रज। करो। राजंन। अकथ्थं। अकथ्थ। क्रंम। अप्पों॥

६९ पाठान्तर–किय। सलांम हुसेन। सजे। प्रथीराज। जांमांनी। गूजर। रामांनी। तिकंम। सगुन॥

कवित्त ॥ चवै राज चहुआन । तुम सामंत सूर बर ॥
　　बर कुलीन कुल लज्ज । जुद्ध अन भंग अंग भर ॥
　　तुम सहाइ हुस्सेन । सेन सज्जौ दिषि बाईं ॥
　　तुम अनंत बल तेज । देव बर कंठ सुहाई ॥
　　साहाव दीन सुरतांन सौं । भिरौं चालु बंधव बिंहसि ॥
　　मनैं सुवज्जे निज सेन सजि । नाइ सीस रजि वीर रस ॥
　　　　　　　　　　छं० ॥ १२५ ॥ रू० ॥ ७० ॥

कैमास आदि सामंतो का चार सहस्र सेना के साथ पृथ्वीराज के दक्षिण ओर सेना सजना ॥

कवित्त ॥ दिसि दच्छिन कैमास । राइ चामंड महाभर ॥
　　चंद्रसेन पुंडीर । सिंघ पम्मार झुझ्झ सर ॥
　　गहअधाव गहिलोत । निभै पत्ति धार भार घन ॥
　　तुँवर राइ परिहार । चित्त अनमंग मोट मन ॥
　　साहस्र चार सज्जे सयन । अनी बँधि दच्छिन न्टपति ॥
　　रत्तामि वस्त्र रत्ते सुभर । जै मंनी चहुआंन चित ॥
　　　　　　　　　　छं० ॥ १२६ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज के आगे की ओर गोइंदराय आदि सरदारों का पांच सहस्र सेना के साथ खड़े होना ॥

कवित्त ॥ मद्धि अनी प्रथिराज । अग्ग सज्जे भर सामत ॥
　　गहअ राइ गोइंद । राज मंने साहस सत ॥
　　देवराइ बग्गारि । कन्ह चहुआन नाह नर ॥
　　षीची राइ प्रसंग । वीर कन कूवड गूजर ॥

---

७० पाठान्तर-चहुआंन । तुम । लज । सहाय । हुसेन । सजें । वाईं । सुरतांन । भिरों । वंधवि । विंहसि । नाईं सास ॥

७१ पाठान्तर-दछिन । दषिन । राय । पामार । झुझ । गहिलोत । तोंअर । राय । पड़ार ।

सामं। सूर बिकसे सुमज। रू॰ दुग तिल मत्तह गनिय॥
छं॰ ॥ १३७ ॥ रू॰ ॥ ७२ ॥

दोनो सेनाओं का सामना होना और निशान बज उठना ॥

दूहा ॥ अनी बंधे प्रथिराज न्टप। अनी पंच सुरतान॥
मिली सेन दूनों निज.रे। गज्जे गोम निसान॥
छं॰ ॥ १३८ ॥ रू॰ ॥ ७३ ॥

हुसेन और तातार षां की सेनाओं की लड़ाई होना अंत को तातारषां की फौज का भागना ॥

छंद भुजंगी ॥ जगे गोम नीसानं दुवान सेन। धमंकै धरा गान गज्जे सुगेनं॥
भरं पष्परं धार ढालैं ढलक्की। घनं सेन संनाह दूनों चमक्की ॥ छं॰॥१३९॥
मिले मीर धीरं सुदिट्ठं दुआनं। पलं एक जीवं उभै सिंघ जानं॥
दिसा बाइयं साह हुस्सेन अंनी। तिनं सभ्भ सामंत सामंत मंनी॥ छं॰ ॥ १४० ॥
भरं जाम जद्दों सुमाह्र मद्दंनं। पलं गुज्जरं राम मंनै न मंनं॥
सजे सेन अंनी सहस्सं चियारं। गुरं जुझ्झ भारी सुधारी करारं॥ छं॰ ॥ १४१ ॥
सनंमुष्ष तत्तार बीसं सहस्सं। घटा बंधि भद्दों वकैं वीर रस्सं॥
उडी सेन रेनं रुक्यौ रथ्थ सूरं। वकैं दीन दीनं भरं अप्प दूरं॥ छं॰ ॥ १४२ ॥
घनं बांन कंमान उड्डै कि जंगं। मनौं जोति षद्योत प्रस्तु निहंगं॥
ढलक्की मिली ढाल ढालं दुसूरं। महानद्द सद्दं मनौं सिंघ पूरं॥ छं॰ ॥ १४३ ॥
बजै धार धारं सुझ्झारं करारं। परैं गज्ज सुंडं ढरैं सूर भारं॥
हकैं हक्क बज्जी सजग्गी सकत्ती। परैं रुंड मुंडं परं श्रोन रत्ती॥ छं॰ ॥ १४४ ॥
मिलैं षांन तत्तार हुस्सेन सेनं। वकैं उंच वाचं सिरं सज्जि गेनं॥
हयं छंडि कंधं पयं मंडि कन्ने। समं संमुषं दूव सूरं समन्ने॥ छं॰ ॥ १४५ ॥
सहस्सं हयं छंडि हूसेन सथ्थं। सयं तीन ताईं वियं हिंदु तथ्थं॥

पिति। साहज्ज। सजे। दपिन। रतामि। रते। चहुवांन॥

७२ पाठान्तर-मध। प्रथिराज। अग। सजे। सामंत। राव। चंद चहुआंन। कनक। मघह। अनीय। समन। मत्तहि॥

७३ पाठान्तर-वधी। प्रथीराज। सुरतांन। दोनु। गजे। निसांन॥

सथं षांन तत्तार सत्तं सहस्सं । हयं छंडि कामं अनं मन्नि गस्सं ॥ छं० ॥ १४६ ॥
भई फौज तीरं दुअं जुद्ध धीरं । दिषै ब्रम्मलं जिज्ज साभित्त बीरं ॥
उभै डारि ओडं न गज्जै गुमानं । जपैं दीन मीरं सुनषी कमानं ॥ छं० ॥ १४७ ॥
बजैं नद्द नीसान भेरी भयंदं । गजैं श्रृंग रीसं मनों मेघ नद्दं ॥
उभै हथ्थ षेले सुषग्गं करारं । परैं सुभ्भरं सुभ्भरं फूल धारं ॥ छं० ॥ १४८ ॥
उभै आस जीतं नना सूर छुट्टी । भरी काल संग्रान आगं सुघट्टी ॥
करी अप्प ईसं दुईसं दुषाई । मनों बन्न झुझ्झै गजं मद्दराई ॥ छं० ॥ १४९ ॥
ढरै उत्तमंगं उडै श्रोन पूरं । मनों काल पावक्क झालं कहूरं ॥
मिलै घाइ हुस्सेन तत्तार षानं । जुटे डड्ड हथ्थं उभै काल जानं ॥ छं० ॥ १५० ॥
तुटैं आवधं सावधं लग्गि वथ्थं । सुनी कन्न कथ्थन्न दिट्ठी अकथ्थं ॥
जमं दट्ठ प्राहार छेदं कुलिक्का । उरा पार फुट्टै हवक्कें कसक्का ॥ छं० ॥ १५१ ॥
कलेवार षेतं ढरं दूअचेतं । उभै सूर झुझ्झै उभै साहि हेतं ॥
भिरैं वान हम्मीय षानं दलेलं । परै पाइ साँई हकै सेन पेलं ॥ छं० ॥ १५२ ॥
परे षंड षंडं निजं साम्नि अग्गै । न को हारि मंनै न को झूझ्झ भग्गै ॥
हकैं जांम जद्दों सुतं सिंघ बीरं । ढरैं आवधं आवधं ढारि धीरं ॥ छं० १५३ ॥
भगी षांन तत्तार अंनी विहालं । भिरी साहि फौजं टरी गज्जढालं ॥
छं० ॥ १५४ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

---

७४ पाठान्तर-नीसांन । दूवांन । धमक्के । गजे । पपरं । ढाले । ढलक्की । चमंक्की ॥ १३९ ॥ स । दिठ । हुसेन । अमी । मझ ॥ १४० ॥ जांम । गुज्जरं । रांम । मंने । सहस । जुझ ॥ १४१ ॥ मनंमुप । सहस । वकै । रसं । रथ । वक्कें ॥ १४२ ॥ वान । कमान । उड्डै । मनों । ज्योति । ढलक्की । मना । परे । गज्ज । ढरे । हक्कें । हक्क । वज्जी । सज्जगी । सक्कती । परें । आनं रती ॥ १४४ ॥ मिले । पान । ततार । हुसेन । वक्कें । सजि । दूअ । सूर । मनं ॥ १४५ ॥ सहस । हुसेन । सथं । तथ । पान । सहस । गसं ॥ १४६ ॥ दुय । युद्ध । द्रिषे । निर्म्मलं । सामित । उंडं । गज्जे । जपै । कंमानं । ॥ १४७ ॥ नद्द । नीसान । गज्जे । मना । नद्द । हय । परें । झरं । सुभरं ॥ १४८ ॥ सवान । मना । वंत्र । झूझें । १४९ ॥ ढरे । मनों । पावक्क । हुसेन । पानं । जुटै । डट । हयं ॥ १५० ॥ तुटै । लगि । वयं । सुनी कथ्य कंनेन दिट्ठी अकथ्य । प्राहारं । उरापार । फुटै । हवक्कें । कसका ॥ १५१ ॥ कलेवार । ढरं । झूझें । भिरे । पांन । हमीय । पांनं । परे । पाय । हक्के ॥ १५२ ॥ साद । अगं । भगं । जाम । जद्दौ । टरे ॥ १५३ ॥ पिहालं । भिली । गज्ज ॥ १५४ ॥

दूहा ॥ सहस पंच रन मीर परि। साथ सुषांन ततार ॥
परे हुसेंन सुतीन सै। सै दो हिंदू सार ॥ छं० ॥ १५५ ॥ रू० ॥ ७५ ॥
गाथा ॥ नंचिय नीस कमंधं। करि झोरी षांन तत्तारं ॥
दिष्षिय रनसुर बद्दं। भय रसं अद्भुत्त भयानं ॥ छं० ॥ १५६ ॥ रू० ॥ ७६ ॥
भग्गिय अनी षांन *ततारं। चंपियं जद्दव मद्दा असवारं ॥
बज्जिय वर नीसानं। सज्जिय जुद्ध हिंदू सवानं ॥
छं० ॥ १५७ ॥ रू० ॥ ७७ ॥

खुरासान खां का आगे बढ़कर लड़ना ॥

छंद चोटक ॥ सजि संमुष षां षुरसान दलं। जग डंवर वंवर ढाल ढलं ॥
बजि भेरि नफेरि भयान सुरं। घननं किय घुग्घर घंट घुरं ॥ छं० ॥ १५८ ॥
गजघोर निसानन घुंमरयं। दिग अट्ठ धरा धर धुंमरयं ॥
मिलिवीय अनी दुअ आवधयं। भरवंकि उभै षल सावधायं ॥ छं० ॥ १५९ ॥
झर आवध आवध झाक झरं। कटि मंडल षंडल ढारि ढरं ॥
धरि पेलहिं सेलहिं केस कसं। रस रोद्र भयानक रुद्र रसं ॥ छं० ॥ १६० ॥
असि षंड विहंडति चैवरयं। गज सुंडह मुंड ढरैं धरयं ॥
धर लुट्टहि जुट्टहि रंधरयं। मिलिवीय अनी दुअ आवधयं ॥ छं० ॥ १६१ ॥
झरयं फिर गिद्धय रोर हलं। धर स्रोन प्रवाहनि पूर जलं ॥
करि डक्कह डक्कनि बीर नचैं। सिर माल सु ईसर आनि सचैं ॥
छं० ॥ १६२ ॥
वर बीर भरैं भर अच्छरियं। सुर रोर सकत्तिय मच्छरियं ॥
हनि हक्कहि षां षुरसान रिनं। द्रिग दिष्षिय चावँड राय तिनं ॥ छं० ॥ १६३ ॥
मिलि आवध सावध दुभ्भरयं। हय घाय गुरज्जत सुझ्झरयं ॥
झमि चामँड संगिय झारि झरं। जुग फुट्टिय जानु हयं समरं ॥ छं० ॥ १६४ ॥

---

७५ पाठान्तर—हुसेन। सैं। दों। दोइ। हिंदू ॥
७६ पाठान्तर—नचीय। कमधं। दिषिय।। वदं। रस अदभूत। भायानं ॥
७७ पाठान्तर—भगीय। *अधिक पाठ इतर पुस्तकों में है और प्राचीन में वह है ही नहीं ॥ तत्तारं। चंपिय। वजीय। सजि। युद्ध। हिंदुसबानं ॥

सम षां षुरसान सचाव परं । वचि शृंगय शृंग समूर ढरं ॥
दस षान चयं तन उप्परयं । बदि जोध दुरी घनि दुप्परयं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
पग छंडिय चामड राइ रिनं । दिषि राज पुंडीर तज्यौ चयनं ॥
मिलि चंपिय ढारत षान घरं । तब भग्गिय फौज असुभ्भझ परं ॥
छं० ॥ १६६ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

षुरासान ख़ां की फ़ौज का भागकर सुलतान की फ़ौज के साथ मिलना और कैमास का चढ़ाई करना ॥

॥ भगी अनी षुरसान षां । मिलिय जाइ सुरतान ॥
चढिय फौज कैमास तब । सज्जे सिर असमान ॥ छं० ॥ १६७ ॥ रू० ॥७९॥

बाईं ओर से जमान, दाहिनी ओर से कैमास और सामने से पृथ्वीराज का चढ़ना ॥

था ॥ झोरी षां षुरसानं । परिय मीर रंन सहसेयं ॥
बढ्ढिय जैतसु राजं । भग्गिय सेन देषि सुरतानं ॥ छं० ॥ १६८ ॥ रू० ॥ ८० ॥
दिसि बाईं जामानं । दिसि दाहिनी चंपियं कैमासं ॥
सनमुष चंपिय साजं । जै जै जंपि राइ चहुआनं ॥
छं० ॥ १६९ ॥ रू० ॥ ८१ ॥

युद्ध का वर्णन ॥

नाराच ॥ जयं जयंति जंपियं । चढे सुराज चंपियं ॥
वहंत बांन बानयं । ग्रहंत गोम छानयं ॥ छं० ॥ १७० ॥

---

७८ पाठान्तरः-ग्रमरावली । पुरसांन । भयान । घननक्रय । घुघर ॥ १५८ ॥ घुमरयं । अठ । ॥ १५९ ॥ पेलहि सेलहि । पेलहिं सेलहिं ॥ १६० ॥ गजन । सुडंह ॥ १६१ ॥ फर । डक्र । ति । आनि ॥ १६२ ॥ वीरवरं । अक्षरियं । सक्तिय । मछरियं । हन । पुरसांन । दिपिय । ंड ॥ १६३ ॥ आउध । साउध । दुभरयं । गुरजत । सुभ्करयं । चामड । जानु ॥ १६४ ॥ पुरसांन । ाव । सुमूर । उपरयं । तुरी । उपरयं ॥ १६५ ॥ चांवंड । चामड । पुंडीर । पांन । भगिम । भ्क ॥ १६६ ॥

७९ पाठान्तर-पुरसांन । जाय । सुरतान । सजे । असमांन ॥

८० पाठान्तर-गादां । पुरसांनं । रन । सहसयं । बढिय । जै तस । भगी । गोनी । सेन । तान ॥

पाठान्तर-बाईं । चंपिय । राय ॥

करी सुफौज एक्कयं। बहंत ताम तेक्कयं
बहंत बीर आवधं। करंत बीर सावधं ॥ छं० ॥ १७१ ॥
हनक्कि संग संगयं। बहंत अंग अंगयं ॥
झटा पटा झमक्कयं। करीअ रीत टक्कयं ॥ छं० ॥ १७२ ॥
समं भरं बगत्तरं। हुवंत षंड पंडरं ॥
ढरंत रुंड मुंडयं। कमंत जंत तुंडयं ॥ छं० ॥ १७३ ॥
फरं फरंत फेफरं। बुलंत ते डरं डरं ॥
कटें सुपाइ रिषंयौ। करंत घात घिंचयौ ॥ छं० ॥ १७४ ॥
करंत चक्क चक्कयं। कमंत धक्क धक्कयं ॥
चढंत दंत दंतरं। अरु अझंत अंतरं ॥ छं० ॥ १७५ ॥
भभक्कयंत श्रोनयं। बहंत वेग कोनयं ॥
झरप्फरंत गिद्धयौ। किलक्किलंत सिद्धयौ ॥ छं० ॥ १७६ ॥
नचंत सट्ठि सारियं। करंत बोर तारियं ॥
डहक्कि डक्क ईसुरं। धमं धमंत भीसुरं ॥ छं० ॥ १७७ ॥
फिकारियंत फेरियं। पलं चरंत रेकियं ॥
सपूर श्रोन सक्कती। गुरं सुरंग चक्कती ॥ छं० ॥ १७८ ॥
किलं सुकंठ षामयं। मनंत मंनि तामयं ॥
कटे सुगज्ज कंधरं। विहंड षंड पंडरं ॥ छं० ॥ १७९ ॥
करंत गज्ज चिक्करं। फिरंत सूर फिक्करं ॥
किनक्किनंत बाजयं। जमं ग्रहंत साजयं ॥ छं० ॥ १८० ॥
बहंत श्रोन नद्दियं। चलंत सूर सद्दियं ॥
धरं गजं विकं ठयं। हयं अनेक संठयं ॥ छं० ॥ १८१ ॥
नरं सझंड झालयं। रजंत संगि लालयं ॥
धरं परंत मच्छयौ। गजं सु सीस कच्छयौ ॥ छं० ॥ १८२ ॥
गजं सुसुंड ग्राहयौ। सुरंजि अप्प चाहयौ ॥
रजंत बीर नम्मयं। भयं दपंति जम्मयं ॥ छं० ॥ १८३ ॥
पलं अनंत पंकयं। कुकातरं भयंकयं ॥
सुहंत सीस अंबुजं। षटं पदं द्रिगंबुजं ॥ छं० ॥ १८४ ॥

कचं सिवार बिथ्थुरं । सुगंधि पंषि कंदुरं ॥
वहंत पूर जोरयं । कहूर सद्द रोरयं ॥ छं० ॥ १८५ ॥
सुतान पंति गोमयं । उचंत वीर खेनयं ॥
अनेक रंग चंमरी । वहंत जीग षंमरी ॥ छं० ॥ १८६ ॥
वही अनेक साकते । कहंत चंद बाकते ॥
अनेक रथ्य अच्छरं । बरंत सूर सच्छरं ॥ छं० ॥ १८७ ॥
रजोद कंठ सक्कती । रजंत स्रोन रक्कती ॥
चचक्क रंत साजयं । झरंत जेम बाजयं * ॥ छं० ॥ १८८ ॥ रू० ॥ ८२ ॥

पृथ्वीराज की सेना की बढ़ना, और मंडलीक का मारा जाना ॥

कवित्त ॥ बाज जेम चहुआनं । झारि सेना झर सुझ्झर ॥
कोउ लत्त केलत्त । गज्ज ढाहे धर सुब्बर ॥
ढेलि अनी दस पेंड । झंझ बाजंती झारी ॥
मारि मीर अनभंग । विधर जु खेभर मारी ॥
मँडलीक सूर पिझ्झिय सुभर । जुटे षांन सु गज्जनिय ॥
मंडलीक सीस तुट्टें विलगि । चज्यौ षांब विन चंचनिय ॥ छं० ॥ १८९ ॥ रू० ॥ ८३ ॥

कवित्त ॥ विना सीस मँडलीक । चयौ गज्जनीय षांन गुर ॥
अवर मीर च्यालीस । जुझ्झ ढाच भर सुझ्झर ॥
परत सुअन पर संग । वुद रुधिरं नर वुठ्ठिय ॥
सुहथ पग्ग सव एक । वीर करि किलकि सुउठ्ठिय ॥

---

८२ पाठान्तर-छंद लघुनाराच । नराज छंद । घांन । बानयं ॥ १७० ॥ आउध ॥ १७१ ॥ हवकि । भटकयं । टकयं ॥ १७२ ॥ नरं । वगतरं । हुअत ॥ १७३ ॥ फर । पाय । सिंघयो ॥ १७४ ॥ धकधकयं । दंतदंतरं । अच्छभरंत । १७५ ॥ भभकयंत । भरफरंत । झिलकि ॥ १७६ ॥ सठि चरियं । ट्रियंत । धीर । इहकि । धम ॥ १७७ ॥ फेकियं । संपूर । सकती । हकती ॥ १७८ ॥ छामयं । गज ॥ १७९ ॥ गज । चिग्ररं । फिकरं । झिनझिनंत ॥ १८० ॥ नदीयं । सदीयं । धरं गढं । ग्रिकठयं । सठय ॥ १८१ ॥ मछयो । ससीस । कछयो ॥ १८२ ॥ झिगजंतु । याहयो । किरंनि । श्रय । चाहयो । रजंत मीर निम्मय ॥ १८३ ॥ हुभंत शीश । दिगं ॥ १८४ ॥ बिथुरं । कंठरं । कसूर ॥ १८५ ॥ गोगयं । वीर रोमयं । जाल संमदी ॥ १८६ ॥ रथ । अछर । सछरं ॥ १८७ ॥ सकतीं । रकती । हहक । रंज १ १८८ ॥ * यह तुक ए० सो० की प्रति में नहीं है ।

८३ पाठान्तर-चहुवांन । सुभर । केडलत कोलत । गज । वाजंती ढारी । मारि मार । मंडलीक । पिभिय । पींजिय । गजनीय । मंडलीक । शीश तुट्टे । विन सीस नीय ॥

रत्तरे गात उत्तंग तन । उद्ध रोम भ्मारंत असि ॥
गहि दंत दंति धरि पुंछ हय । उड्डि सुनंचिय बीर हँसि ॥
छं० ॥ १९० ॥ रू० ॥ ८४ ॥

शहाबुद्दीन की सेना का भड़कना और पृथ्वीराज की सेना का पीछा करना ॥

कवित्त ॥ भरकि सेन साहाब । डरिर भगो हय गय नर ॥
घरिय एक विन्नी । विहर अड्डे अघास हर ॥
दिष्षि दिष्ट साहाब । राइ चामंड बीर वर ॥
चंद्रसेन पुंडीर । जाम जद्दों भर सुब्भर ॥
कैमास दिष्टि दिष्यौ समर । क्रमे च्यारि गहनं सुवचि ॥
आए सुबीर अड्डे अकसि । रन रस आवध रीठ मचि ॥
छं० ॥ १९१ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

घोर युद्ध का वर्णन ॥

छंद विज्जुमाला ॥ मचिय मत्त आवद्ध रीठ । भर हरि दैंन सुब्भर पीठ ॥
हक्कैं सूर अग्गर सार । धर धर परैं तुट्टिय धार ॥ छं० ॥ १९२ ॥
जंपैं उभै दीन जु आंन । जुम्भिभय मत्त मत्तिय पांन ॥
बह बहरु कह कै हाक । बज्जै विषम आवध भ्माक ॥ छं० ॥ १९३ ॥
परि लर थरैं उट्ठैं एक । तम्मी उकसि भ्मारैं नेक ॥
षट्ट षट्टी आवध सार । बाहै बीर बारं बार ॥ छं० ॥ १९४ ॥
अंन्यो अन्य सहैं नाम । आवध अहै अप्पन ताम ॥
हंहं करैं दूष्ट सँभारि । उट्ठैं विरद धारो भ्मारि ॥ छं० ॥ १९५ ॥
अद्भुत बीर भैयान । मंचिय कंक विषम छपान ॥
नर बर बरय हंस रँभान । उट्ठिय नेह ग्रेहनि जानि ॥ छं० ॥ १९६ ॥

---

८४ पाठान्तर-मंडलीक । भुम्म ठाढे भर सुभर । बुड्ढिय । उठिय । रतरे । उतंग । उध उडि । हंसि ॥

८५ पाठान्तर-घरीय । बिहर । अडे । आय सुहर भर । अयासु । दिषि । राय चामुंड । जांम । जद्दो । सुभर । गहन । सुमीर । अडे । दिन ॥

तुट्टिय सेन पल तिष तीर । इन परि जुद्ध जुट्टिय धीर ॥
तरैं सांईं उप्पर भत्य । सेवक उद्ध सांईं कित्ति ॥ छं० ॥ १९७ ॥
चौसठि क्रम लोथि पथार । भर परि धरह लुभ्भिय हार ॥
उप्पर भिरैं सामंत सूर । मत्तौ जुद्ध दून करूर ॥ छं० ॥ १९८ ॥
ठेलैं एक एकैं वीर । गज्जै दीन जंपै मीर ॥
चावंड राव जहां जामि । मारू मथन गूजर राम ॥ छं० ॥ १९९ ॥
गोविंद राव विकस्सिय आल । मानौ कोपियंते काल ॥
आवरि वीर च्यारौं वीर । धारैं षग्ग ढोकर धीर ॥ छं० ॥ २०० ॥
हक्कैं वीर जंपै वानि । जुट्टे इसं केहरि जानि ॥
चंपै मीर तुट्टैं भार । नंचैं कमध अट्ठ उभ्भार ॥ छं० ॥ २०१ ॥
भग्गैं परैं के अगिवान । वढी जैत राव चहुआंन ॥
सतै सहस लुथ्थिय भार । परि रन मीर धीर पथार ॥ छं० ॥ २०२ ॥ रू० ॥ ८६ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों का शहाबुद्दीन का पीछा करना ॥

कवित्त ॥ परे भरि पथ्थार । साह हंक्यौ रा * चावंड ॥
संमुह गोरी चंपि । मनौं गज सौं गज आमंड ॥
चंद्र सेन पुंडीर । आइ सज्यौ दिसि वामं ॥
क्रमि सनमुष कैमास । हक्कि जद्दव राजामं ॥
पुडीर राइ चामंड भर । गहे दून दूनों सुभर ॥
है हन्यौ जाम जद्दव उभ्भार । भिलि चिहु चंपिय षंड भर ॥
छं० ॥ २०३ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

---

८६ पाठान्तर-छंद उधार । मंत । मट्ठु । दैन । सुभर । हक्कैं । अगर । परें ॥ १९२ ॥ जुवांन । वह वह रूक हक्कैं हाक ॥ १९३ ॥ परें । उठि । तमि । भारें । पट पट्टि । वहि ॥ १९४ ॥ सदैं । नाम । यहै । अप्पनै । तांम । हहं । द्रुष्ट । संभारि । उठें ॥ १९५ ॥ अदभुत्त । वदभूत्त । भैयान । मचि । कंकम । क्रमांन । रंभान । उठिय । जांनि ॥ १९६ ॥ तुटिय । तरें ॥ सांइ । उप्प । ऊपर । भृत्त । सांइ । क्रत्त ॥ १९७ ॥ लुथि । लुभिय । भिरें । सामंत । दुनों ॥ १९८ ॥ एकें । गजै । चावंड । जांम । गुजरा । राम ॥ १९९ ॥ गोइंद राय । गोविंदराव । गोइंदराइ । विकसि । मानों । कोपीयते । आंवरि । धारे । धारे । पग ॥ २०० ॥ हक्कें । वानि । इम । जानि । चंपे । तुट्टें । कमंध ॥ २०१ ॥ भगे । परे । अगिवांन । जैतरा । वहुवांन ॥ सतै । लोथीय । लुथिय ॥ २०२ ॥

८७ पाठान्तर:-पथार । हम्यौ । * अधिक पाठ है ॥ गोरी । मनों । क्रमि सनमुप पुंडीर । मत्रि जदुव राजामं ॥ राय । राव । गहै । जाम । चंपियं ॥

अमीरों का सुलतान के जीते जगते लौटने पर बधाई देना और कुशल पूछना ॥

दूहा ॥ और बधाई ऊंमरा। करी आइ सुरतांन ॥
अंन्य सबन कीनी षयर। पुजिय पीर ठटांन ॥ छं० ॥ २१० ॥ रू० ॥ ९४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हुसेन षां चित्ररेखा पात्र अधिकारे पातिसाह ग्रहन नाम नवम प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ९ ॥



सुषासनन्हि। लीय। मथ। जाय। गजनपुरह ॥
९४ पाठान्तर-उमरांनि। उमरनि। आय। सुरतांन। अंन्य। पुजीय ॥

उपसंहारणी टिप्पण।

यह पर्व्व वा समय हिन्दुस्थान के इतिहास में हिन्दुओं की बादशाहत के तो नाश होने और मुसलमानी के स्थापित होने के सत्य मूल कारण को ज्ञात करानेवाला है तथा यह वह कारण है कि जिसको सब मुसलमानी तारीखो ने जान बूझकर छिपाया है। इस ही से इस में लिखे वृत्तादि का मुसलमानी तारीखो में मिलना कठिन हो रहा है। चंद कवि यह न लिख गया होता तो हमको इस समय वह ही ज्ञात होता कि जो मुसलमानी तारीखों में लिखा मिलता है। यद्यपि चंद पृथ्वीराज और हिन्दुओ का पक्षपाती कहा जा सकता है तथापि उसने मुसलमानो की भांति विपक्ष के वृत्तों को बिल्कुल छिपाया नहीं है किन्तु उनकी अपेक्षा उसने कुछ सविस्तर लिखा है कि जिनमें से अन्य बातो को छोड़कर ऐतिहासिक अंश हम पृथक् कर सकते हैं। जिस हुसैन की कथा का यह समय है वह कौन था? इस का स्पष्ट पता मुसलमानी तारीखवाले नहीं देते हैं, किन्तु यूरोपियन विद्वानों ने उसका पता लगाने में बडा परिश्रम किया है। जब कि मुख्य पुरुष का पता लगाने मे इतनी कठिनता है तब अन्य योद्धादि के जो नामादि इसमें आये हैं उनका पता लगना कितना कठिन है। इस विषय में बहुत कुछ लिखने की अपेक्षा हम डाक्टर होर्नली साहब का एक ऐसा नोट नीचे प्रकाशित करते हैं कि जिस से इस हुसैन का पता और चंद का उसको शाहाबुद्दीन का बांधव बताना सत्य ज्ञात हो जाय। उक्त डाक्टर साहब का लिखना यह है

195 Hussena Khána (Husain Khán) appears to have been a son of the Mir Husain, who as related in Canto 8, was the primary cause of the invasions of India by Shahab-ud-din Mir Husain or, as he is variously called Sháh Hussain or Husain Khán is there said to have been a cousin (bandhava) of Shahab-ud-din, a distinguished warrior, living at the Sháh's Court at Ghazni The Sháh had a beautiful mistress, named Chitrarekhá, to the story of whom the 10th Canto is devoted She was fifteen years old and very skilful in music, and was greatly beloved by the Sháh Husain fell in love with her and she with him One morning the Sháh sent for him and upbraided him on his conduct But Husain continued to intrigue with Chitrarekhá, and was forced to leave the city He carried off his family and property and Chitrarekhá, and fled to Prithiraj to Nagor Prithiráj, after some hesitation, welcomed him and gave him asylum Hearing of this, Shahab-ud-din was furious and sent messengers to demand Chitrarekhá from Husain, failing in which, they were to demand the expulsion of Husain from Prithiraj Husain refused to send the woman back, and Prithiraj replied, he could not give up the man who came to him for refuge Shahab-ud-din receiving this answer, at once prepared to invade India, Prithiraj, on his part also prepared for war In the battle that ensued, Husain distinguished himself greatly, but lost his life Chamand Rae succeeded in capturing the Sháh, and thus the battle was decided in favor of Prithiraj After five days the Sháh was released and allowed to return to Ghazni taking Ghazi, Husain's son, with him, and pledging himself no more to make war upon the Hindús The pledge, it need hardly be said, was not kept by the Sháh, and the implacable hatred, which these events had created in his mind was never appeased till it was slacked in the blood of Prithiraj and the destruction of his Empire The capture of the Sháh, here related, is the first of the seven times, he is said to have become the captive of Prithiraj The next occasion of his capture is referred to in note 187, once more he is made captive as related in the present Canto Chitrarekhá is said to have buried herself with the corpse of Husain If the Husain Khan mentioned here, is the son of the elder Husain, who was taken to Ghazni by

Shahab-ud-din, he must have made his escape afterwards and returned to Prithiraj. The elder Husain is undoubtedly the same as Nasir-ud-din Husain, who is repeatedly mentioned in the Tabaqat-i-Nasiri (Major Raverty's translation, pp 344, 361, 364, 365). He was the older of the two sons of Malik Shihab-ud-din, Muhammad, a younger brother of Sultán Bahú-ud-din Sām, the father of Sultán Shahab-ud din The elder Husain, therefore, was as Chand correctly states, a cousin (bandhava) of the latter. In the Tabaqat, it is true, it is said that Nasir-ud-din Husain usurped the throne of his uncle Ala-ud-din during the latter's temporary captivity at the Court of Sultán Sinjar of Khorasan, and that he was murdered by his uncle's partisans on the latter's return from captivity (p 364). But firstly, this story is contradicted by all other Muhammadan historians, who pass at once from Ala-ud-din to his son (see Major Raverty's foot-note, p 364). Secondly, it is more probable that if there was any usurpation at all, it was made by Nasir-ud-din's father Muhammad, the younger brother of Ala-ud-din The three brothers Saif-ud-din Súri, Baha-ud-din Sām, and Ala-ud-din Husain, succeeded each other on the throne of Ghor; it is natural, therefore, that during Ala-ud-din's captivity, the fourth brother Shihábud-din Muhammad, should have occupied or attempted to occupy the throne The writer of the Tabaqat must have confused father and son, as he has done also on other occasions (e g, with regard to Ziya-ud-din Muhammad) Thirdly the description of Nasir-ud-din Husain's character "he had a great passion for women and virgins, and had taken a number of the handmaids and slave girls of the Sultán's harem" (Tabaqat p 364), agrees with Chand's story about his intrigue with Chitrarekhá and has evidently a confused recollection of it There can, therefore, be little doubt, that Chand gives substantially the true account of Husain's fortunes It may be added, that both the Tabaqat and other Muhammadan histories give a rather confused relation of an ancestor of this Husain (and of the Ghori royal family generally) who also bore the name of Husain or Hasan, having fled to India, and having lived some time at Delhi (see Tabaqat pp 322, 323, 332) There is perhaps in this a confused recollection of the flight of Husain to Prithiraj, related by Chand."

अभी हमने इस कथा के नायक हुसेन का ही पता अपने पाठकों को बतलाया है किन्तु अन्य जितने योद्धाओं के नाम इस में आये हैं उनका हम पता मुसलमानी तारीखों मे लगा रहे हैं और अन्य विद्वानों से भी उनके विषय में निश्चय कर रहे हैं, अतएव उनके विषय में फिर निवेदन करेंगे। अभी तो हमारा इतना ही काम है कि इस महाकाव्य को इतना शोध कर प्रकाशित करादें कि विद्वान इतिहास वेत्ता उसे अवलोकन कर सकें, इत्यलम् ॥



अथ आषेटक चूक वर्णनं लिष्यते ॥



(दसवां समय)



एक बर्ष बीत गया, परन्तु शहाबुद्दीन के हृदय में पृथ्वीराज का बैर सालता रहा ॥

दोहा ॥ बरष एक बीते कलह । रीस रष्षि सुरतान ॥
उर अंतर अग्गी जलै । चित सल्लै चहुवान ॥ छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

एक महीना पांच दिन गज़नी में रह कर फिर हुसेन का पृथ्वीराज के पास आप जाना ॥

दूहा ॥ मास एक दिन पंच रहि । बद्धि धाइ हूसेन * ॥
पग लग्गौ चौहान कै । राज प्रसन्निय बैन ॥ छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

फिर पृथ्वीराज का आषेटक माड़ना और शहाबुद्दीन का चूक करने को आना ॥

दूहा ॥ फिरि आषेटक मंडि नृप । षट्टू बन घन तास ॥
दूत साहि साहाबदीं । आइ संपत्ते पास ॥ छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

---

१ पाठान्तर-वीतै । सकल । रषि । सुरतांन । अंदर । अगी । सालै । चहुआन ॥

२ पाठान्तर-बधि । वंधि । धाय । धाइ । थाय । हुसेन । लग्यौ । चौहांन । वैन ॥

* यहां "हुसेन" से कवि का अभिप्राय हुसेन कथा नामक समय के चित्ररेखा को लानेवाले हुसेन के बेटे ग़ाज़ी हुसेन से है कि जिसको पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को हाथ पकड़ाकर ग़ज़नी भेज दिया था (हुसेन कथा रूपक ९३) परतु शाह ने ग़ज़नी पहुंचकर उसे भी क़ैद कर दिया था सो वह जेल में कत्ल करके पीछे फिर १ महिने और ५ दिन वहां रह कर पृथ्वीराज की शरण में आ गया ॥

३ पाठान्तर-षटू । दत्त । दी । आय । संपत्ते ॥

मीतिराव क्षत्रिय का शहाबुद्दी को पृथ्वीराज के आषेट का समाचार देना ॥

कवित्त ॥ नीतिराव षत्रीय। चरित्र ग्रेहं चहुआनं ॥
दिल्ली को वर भेद। लिषे कग्गद सुविचानं ॥
वरष उभै षट मास। करै सुविधान पलान्यौ ॥
षट्टू वन घन राज। बीर आषेटक जान्यौ ॥
सामंत सूर सथ्थंन को। वर वीरं तन पेलइय ॥
दैवान जुद्ध चुहुआन भर। भिरि दुरजन भर ठिल्लइय ॥ छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

आषेट का अच्छा अवसर पा कर शहाबुद्दीन का भेद लेने को दूत भेजना, दूत का समाचार देना, शाह का सरदारों को आज्ञा देना कि छिप कर पृथ्वीराज पर चढाई करो ॥

दूहा ॥ इक तप पंग नरिंद कौ। अरु * सुनि अवाज सुरतान ॥
आषेटक प्रथिराज गय। षट्टवन चहुवान ॥ छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ आषेटक बन तक्कि। दूत गज्जनैं सपत्ते ॥
साह जोर साहाब। दिए पुरमान निरत्ते ॥
दसम चय गय मुक्कि। राज षट्टू बन पिल्लै ॥
सामंतनह कौ सथ्थ। भुक्कि गुज्जर दिसि भिल्लै ॥
निकस्यौ द्रव्य साहाब दिय। बर नागौरं ग्रेह धज ॥
इह घात साधि गोरी सुबर। करौ चूक कौ सज्ज रज ॥ छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥

---

४ पाठान्तर-ग्रेहं। चहुवांनं। कगार। कोपि सु। बिहांन। पलांन्यो। पटु। जान्यो। सथह। सथां। कौं। को। पेलईय। दैवांन। दैवानं। चहुआन। दुजन। ठिलइय। ठिलईय ॥

† नीतिराव षत्रिय नामक मुक़बिर था कि जो पृथ्वीराज के यहां की खबरें शहाबुद्दीन को दिया करता था। वाह यह कैसा देशहितैषी पुरुष था!!!

५ पाठान्तर-को * अधिक पाठ है ॥ सुरतान। पृथ्वीराज। पटू। चहुवांन ॥ † यह रूपक सं० १६४७ की प्रति में नहीं है ॥

६ पाठान्तर- गजनै। सपते। दीए। फुरमांन। पटू। पिले। सथ। भुभ। गुजर। मिलै। द्रब। दी। नागौर। सजि ॥

हाजी ख़ां आदि का तयारी करना ॥

चौपाई ॥ आषेटक षट्ट चहुवानं। कहै पूत सो सुष सुविचानं ॥
हाज़ी षां गष्षर मुकताजी। मंत्री तूक महंमद गाजी ॥
छं॰ ॥ ७ ॥ रू॰ ॥ ७ ॥

शहाबुद्दीन का आज्ञा देना कि इस बात का भेद लो कि कितनी सेना चौहान के साथ है क्योंकि बिना भेद कुछ काम नहीं बनता ॥

कवित्त ॥ सें बुझ्झै सुरत्तान। दूत पच्छिम सुबिचानं ॥
आषेटक प्रथिराज। सथ्थ कित्तक चहुआनं ॥
तुम राजन निसांन। राज बिबेक परष्षौ ॥
तुम * स्वामी ध्रंम द्रग स्वामि। स्वामि द्रोही तन लष्षौ ॥
जंगली न्रपति जंपहु चरित। छल बल अंत सु किज्जियै ॥
तत्तार षांन षुरसान षां ॥ हिंदू भेद सुलिज्जियै ॥छं॰॥ ८ ॥रू॰॥ ८ ॥

कवित्त ॥ भेद द्रुग्ग भंजियै। भेद दुज्जन दल भंजै ॥
राजभेद बंधियै। भेद देवन ग्रह रंजै ॥
मंत्र होइ जिन भेद। भेद बिन मतौ न होई ॥
भेद बंध बन होइ। भेद देषै सब कोई ॥
संग्रहौ भेद चहुआन कौ। मुष उचार जो जंपियै ॥
तत्तारषांन षुरसान षां। बलदल दुज्जन चंपियै ॥छं॰॥ ९ ॥रू॰॥ ९

सब सरदारों का मत होना कि बिना धोखा दिए चौहानों का जीतना कठिन हैं ॥

कवित्त ॥ चहुआन जम बान। गेनं सुक्कतें सुक्कुट्टै ॥
कुटिल दिष्ट जिहिं फिरै। तेज आरियन दल पुट्टै ॥

८ पाठान्तर–तुझै। सुरतान। सें बुझै साहाब। साह पछिम सुरतान ॥ प्रथीराज। सर कितक। केतक। चहुवानं। बिवेक। परषौ। * अधिक पाठ है ॥ स्वामि। द्रग। स्वामि सामि। नह। लषौ। ततार। षुरसांन ॥

९ पाठान्तर–द्रुग। भाजीयै। दुजन। बंधीयै। ग्रह। सोई। सोय। देषै। चहुवांन जंपीयै। ततार। षरसान। दुजन। चंपीयै।

प्रवल तेज अस हेज। जुद्ध दैवान देव गति ॥
एक लष्य लेषियै। एक लषियै लष्यन अति
दूह जानि चूक चिंत्यौ न्टपति। दूहै बत्त सुविहान कौं ॥
तत्तार षांन निसुरत्त षां। पूछि षांन षुरसान कौं ॥
छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ १० ॥

कवित्त ॥ षां षुरसान ततार। षांन अरदास समंपिय ॥
चूक मंडि सुरतान। थान चहुआन सुथप्पिय ॥
हाजी षां गाजी सु। बंध्र निज बंधी गप्पर ॥
सुब्बिहान साहाब। साहि षोरं दल पष्पर ॥
निज पान षान षुरसान पति। दश्ध साहि वल वधियै ॥
मिलि मीर मसूरति तत्त किय। चूक साहि अरि संधियै ॥
छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ११ ॥

पृथ्वीराज का बेखटके आनन्द से आषेट खेलना ॥

दूह ॥ रंग रमै राजान बन। नहीं संक मन मांहि ॥
तरु बेली घन गह वरिय। सुभि जल निरमल छांह ॥
छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज के आषेट का वर्णन ॥

कवित्त ॥ सतह पंच दीपीय। एण फंदैत पंच सै ॥
सहस स्वान दस डोरि। अहै पंचान पंच सै ॥
पंच अग्ग पंचास। करु चाव दिसि सज्जे ॥
कुही बाज उत्तंग। पंष आघात सुवज्जे ॥

१० पाठान्तर-चाहुआंन। जमवांन। सुकतैं। जह। लष। लेषीये। एक लेषियै। जानि। चिंत्यौं। दहैं। बिहांन। ततार। निसुरत। पुछि। पुरसांन। कों ॥
११ पाठान्तर-पुरसान। सुरतांन। थांन। चहुवांन। संबंध। सवंध। निबंधी। गपर। सुबिहांन। बिहांन। पपर। पांन। पांन। पुरसांन। बंधीये। अर। संधीये ॥
१२ पाठान्तर-राजांन। तर। बरीय। निर्मल ॥

षरगोस सिंह पंजर गुहा । धनुष धनंषिय धार घन ॥
प्रथिराज राज मंडै रवनि । आषेटक षट्टू सु बन ॥
छं॰ ॥ १३ ॥ रू॰ ॥ १३ ॥

आठ हजार सेना और सरदारों के साथ शहाबुद्दीन का षट्टूबन में छिपकर पहुंचना ॥

कवित्त ॥ षां ततार षुरसांन । षांन हाजी षां गाजी ॥
गष्षर पष्षर साह । मीर महमद षां बाजी ॥
अष्ट सहस असवार । तुंग तिय अग्ग बनाइय ॥
पेसकसी पतिसाह । कूर पर पंचन आइय ॥
सेनाह सज्जि अंदर सिलह । नह पिषै जामें रँचह ॥
करि कूक आइ षट्टू बनह । प्रथीराज चहुआन जहँ ॥
छं॰ ॥ १४ ॥ रू॰ ॥ १४ ॥

सवेरे के समय चढ़ाई करने का विचार करना ॥

कवित्त ॥ दस अराक ताजीय । पंच षुरसान कमानं ॥
तक्यौ साहि गज्जनै । चिंति षट्टू चहुवानं ॥
छल सज्यौ बल हारि । घात नर घात निहानं ॥
लग्यौ चंपि सुरतान । दैर हुस्सेनह षानं ॥
सुविहान आन चहुआन सौं । लै फुरमान समान धरि ॥
सुविहांन हिंदु पुज्जै नहीं । जमन जोर बल बहुत करि ॥
छं॰ ॥ १५ ॥ रू॰ ॥ १५ ॥

---

१३ पाठान्तर–तहांस । रुण । पन । अंच । कह । चावदिसि । सजे । उत्तंग । वजे । सीह । प्रथीराज । मडे । वरन । पटू । स ॥

१४ पाठान्तर–पुरसान । पांन । गषर । पषर । गाज्जी । सन्यह । सज्जि । नहिं । पिष्पै । रचह । चहुआंन । जह ॥

१५ पाठान्तर–दैराक । पुरमांन । कमांनं । षटू । चहुआनं । निम्रानं । सुरतांन । हुसेन सु षांनं । विहांन । आन । चहुवांन । सों । फुरमांन । विहांन । पुज्जै । नही । जवन । जोर ॥

पांच सरदारों को साथ लेकर आषेट को पृथ्वीराज का निकलना॥

कवित्त॥ आषेटक्क संभरिय। राज मेलान न आइय॥
हस्सम हय गय मुक्कि। तक्कि पट्टू वन धाइय॥
के हंका के हक्कि। नथ्थ पक्खिवानह लग्गा॥
सथ्थ पंच सामंत। म्लत चहुआन विलग्गा॥
पंमार सलष अलषह बलिय। चाहुआन रघुवंस हिम॥
रुंध्यौ नरिंद चालुक्क सम। सिंघ विंटि वाराह जिम॥
छं॰॥ १६॥ रू॰॥ १६॥

कवि चन्द का कहना कि हमें शहाबुद्दीन के आने का सन्देह है और खोज करने पर चारों ओर यवनों को पाना॥

कवित्त॥ करि विंटिय चहुआन। षिप्र सब सस्त्र समाहिय॥
सुब्विहान फुरमान। बंचि कविचंद सुनाइय॥
सुबर जोर साहाब। साह से देस सुरंगा॥
तोन कमान प्रमान। दए दस हथ्थ तुरंगा॥
छिन एक छिमा छिम रष्पकें। चावद्दिसि न्रप विंटयौ॥
तब तोन झारि संमुह भए। राज अदब्ब सुमिंटियौ॥
छं॰॥ १७॥ रू॰॥ १७॥

शाह की ओर से आक्रमण आरम्भ होना॥

कवित्त॥ चंपि लहहिय हथ्थ। जमन ठट्ठे चावद्दिसि॥
चूक चिंत चहुवान। कन्ह कढ्ढी सु बंक असि॥
हाजी षान गष्षर नरिंद *। षंति षग षोलि विहथ्थं॥
तेग झार बिभ्भार। सलष घल्ली गल बथ्थं॥

---

१६ पाठान्तर-आईय। हसम। तकि। पटू। धाईय। तथ। पषिवांनह। लगा। सथ। चहुवांन। विलगा। चाहुवांन। चाहुआनि। रुध्यौ। चालुक। वींटि॥

१७ पाठान्तर-वंटिय। चहुआन। सु विहांन। फुरमांन। विंचि। साह संदेस सुरंगा। तोंन। कमांन। प्रमांन। हय। छिमाछिम पकरिकें। चावदिसि। वींटयौ। अदब। मिटयौ॥

घरि अद्ध अद्ध बीभच्छ भय । जग्गि भयानक वीर सम ॥
दुहुलोह कढ्ढि परि थार तें । चूक चिंति कुप्यौ विभ्रम ॥
छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ १८ ॥

युद्धारम्भ, युद्ध वर्णन ॥

छंद विराज ॥ धरं धार कढ्ढी । घनं बीज बढ्ढी ॥ रसं रोस थट्टी । मुषं मुंछ अट्टी ॥ छं० ॥ १९ ॥
परे चट पट्टी । मनों मद्द जट्टी ॥ उनं तेग कढ्ढी । जनौं वज्र टट्टी ॥ छं० ॥ २० ॥
जमं दढ्ढ दट्टी । मनों लोन अट्टी ॥ उकट्टे उकट्टी । घनं घट्ट घ[illegible] ॥ छं० ॥ २[illegible] ॥
कुलालं उलट्टी । उतारंत सट्टी ॥ रटें मार मारं । सुरं आसुरारं ॥ छं० ॥ २२ ॥
परं ते पथारं । कुठारं करारं ॥ बुल्ले घाव तारं । किनारं उघारं ॥ छं० ॥ २३ ॥
इसौ जुद्ध आरं । मची कूह कारं ॥ पर्यो पंच भारं । ....
छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥ १९ ॥

पांच सरदारों का पृथ्वीराज की रक्षा में चारों ओर हो जाना और इन सभों का यवनों के बीच में घिर कर युद्ध करना ॥

कवित्त ॥ पंचानन भैपंच । स्वामि ओडन थप्प रष्षे ॥
इक्क स्वामि रन अग्ग । इक्क उभ्भे दस पिष्षे ॥
सार धार प्राहार । बीय निय उप्पर बाहै ॥
मनों तत्त घरियार । मेघ जल वुट्ठ प्रवाहै ॥
दनु देव जप्प गंध्रब्ब जय । गन हय गय उच्चार हुअ ॥
सुरतान सेन झुक्कि मांहि परि । धनि नरिंद सोमेस सुअ ॥
छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ २० ॥

---

१८ पाटान्तर-हथ । यवन । ठठे । चावद्दिसि । चिति चहुवांन । पां । गपर । * अधिक पाठ है ॥ विहयं । विभार । घला । बयं । वीभछ । भयांनक । दुहुल्लाह । कढि । ते ॥

१९ पाटान्तर-छद रसावला । धर धारं कटी । वटी । थटी । मुछ । अटी ॥ १९ ॥ परं चटपटी । मद्द जटी । वढी । तटी ॥ २० ॥ दठ दठी । लौन अटी । उकटी । घट घटी ॥ २१ ॥ कला[illegible] । उलटी । सटी । आतुरार ॥ २२ ॥ धाव ॥ २३ ॥ पस्यौ । युद्ध ॥ २४ ॥

२० पाटान्तर- भैं । उडन । रप । एक । रिन । एक उभे । पप । तीय । उपर । तत । बुट्टि । अरन । गंध्रब । गन । उचार । सुरतांन ॥

पृथ्वीराज का कमान सँभाल कर यवन सरदारों को गिराना ॥

कवित्त ॥ चाहुआन कमान। पंच लीने सुपंच सर ॥
बष्षर पष्षर सौ पलान। असु ढयौ मीर धर ॥
दूजै बान तकंत। तक्कि भंज्यौ षां गोरी ॥
तीजै बान तकंत। साहि भंजी त्रिय जोरी ॥
कंमान बान चवहथ्थ भिरि। पिजि किरवान विरान कढि ॥
कटि बीर अंग फरकं पचर। रह्यौ नट्ट कुट वसं चढि ॥
छं० ॥ २६ ॥ रु० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का तलवार लेकर यवनों का विनाश करना ॥

कवित्त ॥ षां गाजी चहुआन। दिष्ट मरदां दो उट्ठी ॥
दंग लग्गि जनु अग्ग। घृत्त धारा हर बुट्ठी ॥
दूनों हथ्थ उतंग। तेग कड्ढी दुहु वंकी ॥
मनु घन घटा मझार। बीज कुंडली झलंकी ॥
चहुआन तुच्छ ढट्ठर बह्यिय। ढुरिग मीर बिय सिरढस्यौ ॥
जांनेकि वज्र वज्री सुपति। गिरनि छेद हथ्थह धस्यो ॥
छं० ॥ २७ ॥ रु० ॥ २२ ॥

सुलतानी की ७५५ सेना का कट कर आगे गिरना ॥

अरिल्ल ॥ सुबर सेन संमुष सुरतानं। घेन वच्छ परि जन करि जानं ॥
सत्त पंच परि उप्पर पंचं। तुट्यौ सार धार करि रंचं ॥
छं०॥ २८ ॥ रु० २३ ॥

चालुका का घोर युद्ध करके वीरता के साथ मारा जाना ॥

कवित्त ॥ जूह मंत संमूह। कूह आषेटक बज्जिय ॥
बर चालुक्क नरिंगे। चंपि चावद्दिस गज्जिय ॥

२१ पाठान्तर कमान। पंचि। सपंच। बषर पषर। पलांन। धर्यौ। वांन। तक्कि। वांन। कंमांन। वांन। हथ। क्रिरवांन। विरांन। झुटि। फरक्कुप्प रह। नट ॥
२२ पाठान्तर-चहुआन। दिष्टि। दों। उठिय। अगि। घृत। बुठिय। हथ। दुहुं वक्रिय। मनों। झलक्रिय। चहुआन। तुछ। ढठ। ढरिग। गमीर बीय शिर। सिरट्ठ। ढुयौ जाने। हयह॥
२३ पाठान्तर-बछ। ज्यन। सत। उपर। करिं ॥

छंडि थान पक्खिान। हंकि सैंधव झुकि घाइय॥
गही सेन सुरतान। नेज बाजी जस धाइय॥
विम्माय धाय तन झंझरिय। तुटि पंजर वर धुक्किधर॥
कटि घाइ लष्प पंचौ प्रगट। उड़ि हंसव संमान सर॥

छं०॥ २९॥ रू०॥ २४॥

कवित्त॥ सोलंकी सिर मौर। रेह अनहल पुर रष्पी॥
दोऊ दीन पष्पर प्रमांन *। कित्ति दुअ पष्पह भष्पी॥
धूप दीप साषा * सुगंध। रंभ रानी मिलि गावै॥
नाग पती सुर वधू। केलि करि कलस वँदावै॥
लग्यौ भरम द्रिगपाल धर। जंम भरम जग्गे सुभर॥
कविचंद मरन चालुक्क कौ। मस्यौ न को रवि चक्कतर॥

छं०॥ ३०॥ रू०॥ २५॥

क्रोध करके पृथ्वीराज का तलवार से युद्ध करना, पृथ्वीराज की सब सेना का इकट्ठा हो जाना॥

कवित्त॥ सुधर जुद्ध अवद्दह। जुद्ध कटि सिद्ध समानं॥
मार मार उच्चार। तेग कड्ढी चहुआनं॥
तुटि सिषर उर फुट्टि। वीर अड्डो अध झुल्लै॥
मानुं तुला की डंडि। वीर वानावलि तुल्लै॥
आषेट भग्गि एकठ्ठ हुअ। सवै सेन प्रथिराज जुरि॥
वाजिद षान गप्पर गहर। वांम कोद उभ्भै उसरि॥

छं०॥ ३१॥ रू०॥

२४ पाठान्तर-जूहं मत। चालुक्क। दिसि। थान। पक्खिांन। सैंधव घाईय। धाइ। झंझरिय। लप। उड्डि। समान॥

२५ पाठान्तर-रष्पिय। दोउ। पषर। * अधिक पाठ है॥ * अधिक पाठ है॥ वंदावै। भरंम। द्रिगपाल। चालुक्क। रव

२६ पाठान्तर-युद्ध। युध। उचार। चहुवानं वानावलों। तुलै। एकठ। प्रथीराज। वाजिद। छ

सुलतान का बढ़कर लड़ना, दो घड़ी घोर युद्ध होना ॥

कवित्त ॥ रुप्यौ सेन सुरतान । राज चढ़ि नंषि सुरंगं ॥
कै तिमर भग्ग तपभांन । सिंह हक्कै कि कुरंगं ॥
तब * रुप्यौ राव सिंघरिय । लाज सुविहान षटक्किय ॥
सस्त्र तेज बल बंधि । सेन चहुआंन हटक्किय ॥
द्वै घरिय टोप उप्पर वह्यौ । सार तिरंगा तारयो ॥
जानें कि तिंदु दारुन जरै । जैत पंभ पर झारयो ॥
छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ २७ ॥

दूहा ॥ हय मुक्क्यौ सिरदार दुहु । देखि भयौ न्टप चूक ॥
घरी एक झरि सार बहु । ज्यौं अगि संजुत्ता ऊक ॥
छं० ॥ ३३ ॥ रू० ॥ २८ ॥

यवन सरदारों का माराजाना, पृथ्वीराज की विजय ॥

कवित्त ॥ जुद्ध जुरे सिरदार । राउ रंघह बाजी दह ॥
पालि बथ्थ गल हथ्थ । हहु भंजिय रग गूदह ॥
ज्यौं मुष्टिक चानूर । कन्ह भंजिय अप्पारह ॥
उत्तमंग लै हूर । सूर अपछर उप्पारह ॥
पाजीद षांन झोरी धरिय । धाड पंच रंघर न्टपति ॥
रप्पै जु सांइ मिट्टै कवन । निमष मांहि उतपति षपति ॥
छं० ॥ ३४ ॥ रू० ॥ २९ ॥

हारकर शहाबुद्दीन का ग़ज़नी की ओर लौट जाना ॥

चूक चूक भय असुर सुर । फिरि गज्जन दिसि षांन ॥
चालु गरि जुआरी ज्यौं चलै । कर घट्टै कर जान ॥
कवित्त ॥ जू
छं० ॥ ३५ ॥ रू० ॥ ३० ॥
वर

—सुरतांन । बाजि चढि । भांन । हक्कै । * अधिक पाठ है । रिघरिय ।

२१ पाठान्तर कन्क्किय । घरीय । जानैं ॥

कंमांन । बान । हय । झिरव।न्पगनि । उक ॥

२२ पाठान्तर-चहुआन । दिल्हिहार । रांव । बाजींदह । बय । गर । हय । रंग । अपारह ।

मनों । झलकिय । चहुआन । तुछ । ठठ । छं ॥

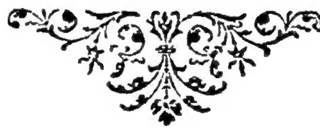
२३ पाठान्तर-बछ । ज्यंन । सत । उपर । के । घठे । जांन ॥

चौहान की विजय पर चन्द कवि का जै जै कार करना ॥

दूहा ॥ जीति राज चहुवांन बन। आषेटक असुरान ॥
जै जै जै कविचंद कहि। चंद सूर बष्यान ॥

छं० ॥ ३६ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके राजा षट्टूबन आषेटक रन सुरतांन चूक करनं नाम दसम प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १० ॥



३१ पाठान्तर—वहुवांन। असुरांन। छ-

उपसंहारणी टिप्पण।

यह समय भी हमारे स्वदेशी इतिहास के लिये बहुत उपयोगी है। क्योंकि एक लड़
"हुसैन कथा" नामक समय में रासो के अनन्द संवत् अर्थात्, पृथ्वीराज के तृतीय साक ११३५ म
शुक्ला १३=११३५+९० । ९१=१२२५ । २६ वर्त्तमान विक्रमी में आगे हो चुकी थी और दूसरी उ
एक बरस पीछे यह "आखेटक चूक" नामक हुई है। इस लड़ाई के होने का समय कवि ने स्पष्
बताकर प्रथम रूपक में-बरष एक बीते कलह-से पहिली के एक वर्ष पीछे इसका होना वर्णन कि
है अर्थात् पहिली के सं० ११३५+९०। ९१=१२२५। २६ में एक जोड़ने से ११३५+१=११३६+९०। ९
१२२६ । २७ वर्त्तमान विक्रमी होता है। वैसे ही "अखेटक" शब्द के नियत समय के अर्थ
"फाल्गुण" मास का होना भी प्रकाश किया है। प्राचीन समय में हमारे देशी राज्यों में वर्ष
के अनेक त्यौहारों में फाल्गुण मास में जिस दिन ज्योतिषी आखेट का महूर्त्त देते थे उस दि
एक बड़ा त्यौहार मनाया जाता था। इसीसे यहां कवि ने "आखेटक" शब्द से फाल्गुन का संके
अर्थ में माना है। अब यह त्यौहार लुप्त सा होता चला जाता है, तथापि वह प्राचीन राज्
उदयपुर में इस समय तक भी माना जाता है और उसको वहां "अहेरिया" वा "महूरत का
शिकार" करके कहते हैं। और उसका सविस्तर वृत्तान्त कर्नैल टौड साहब ने अपने परम प्रसिद्ध
ग्रंथ "राज स्थान" में यह लिखा है॥

"The merry month of Phalgun is ushered in with the Aharea, or spring-hunt
The preceeding day the Rana distributes to all his chiefs and servants either a dress of
green, or some portion thereof, in which all appear habited on the morrow, whenever the
strologer has fixed the hour for sallying forth to slay the boar to Gouri, the Ceres of the
ajpoots. the Aharea is therefore called the *Mahoorut ca sikar* or the chase fixed astrolo-
ally. As then success on this occasion is ominous of future good, no means are neglected
ecure it, either by scouts previously discovering the lair, or the desperate efforts of the
ns to slay the boar when roused With the sovereign and his sons all the chiefs sally
each on his best steed, and all animated by the desire to surpass each other in acts
ss and dexterity It is very rare that in some one of the passes or recesses of the
hog is not found, the spot is then surrounded by the hunters, whose vociferations
the *dhokra* and frequently a drove of hogs Then each cavalier impels his steed,
or sword, regardless of rock, ravine, or tree, presses on the bristly foe, whose
he country is of no avail when thus circumvented, and the ground soon
n which not unfrequently is mixed that of horse or rider On the last
urred fewer casualties than usual, though the Chandawut Hamira
d the "Red Riever," had his leg broken, and the second son of
ar relation of the Rana, had his neighbour's lance driven through
Saloombara was amongt the distinguished of this day's sport
fox-hunter to see the Rajpoots driving their steeds at full
pe over every barrier, the thick jungle covert, or rocky
heir lances balanced in the air, or leaning on the

TOD'S RAJASTHAN, VOL I, PAGE 42-

चूक
चालु...गरि
कवित्त ॥ जू
वर

२१ पाटान्तर कन्हक्रिय ।
कंमांन । वांन । हय । क्रिरवा...गानि ।
२२ पाटान्तर-चहुआन । दोप्पहार ।
मनों । झलक्रिय । चहुआन । तुछ । ठठ । ठं ॥
२३ पाटान्तर-वछ । ज्यन । सत । उपर । वे ।